एक औरत का चेहरा



हेनरी जेम्स

महान उपन्यास THE PORTRAIT OF A LADY

एक औरत का चेहरा

हेनरी जेम्स

अनुवादक : मोहन राकेश

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

THE PORTRAIT OF A LADY by Henry James
का अनुवाद

अनुवादक
मोहन राकेश

प्रथम संस्करण

प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली–६
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, क्वींस रोड, दिल्ली–६

EK AURAT KA CHEHARA by Henry James NOVEL



हेनरी जेम्स
1843-1916

अनुवादकीय

इस उपन्यास के सम्बन्ध में शायद इससे अधिक कुछ भी कहना अपेक्षित नहीं है कि यह विश्व-साहित्य की उन चुनी हुई कृतियों में है जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के साहित्य को उसकी चरम प्रतिष्ठा दी थी। हेनरी जेम्स का यह पहला बृहत् उपन्यास था। बहुत-से आलोचक आज भी इसे हेनरी जेम्स की सर्वश्रेष्ठ कृति मानते हैं—उनकी सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक तो इसे सभी स्वीकार करते हैं।

इज़ाबेल आर्चर की गणना उन औपन्यासिक चरित्रों में है जो अपनी अमिट छाप पढ़ने वाले के मस्तिष्क पर छोड़ जाते हैं। जेम्स ने स्वयं लिखा है कि इस चरित्र की कल्पना के बाद उनके सामने प्रश्न था, "अब यह लड़की करेगी क्या ?" और उपन्यास के पूरे विस्तार में उन्होंने इसी प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयत्न किया है। इस खोज की पृष्ठभूमि है उस समय का यूरोप—इंगलैंड, फ्रांस, इटली—और माध्यम वे सब लोग जो एक के बाद एक उस लड़की की जिन्दगी में आते हैं। स्वयं इज़ाबेल आर्चर और रैल्फ से लेकर ऑसमण्ड तक जितने व्यक्तियों ने उसे चाहा वे सब के सब क्यों एक दुर्भाग्य की छाया में घिरे रहे, यह प्रश्न आगे बहुत-से समाजशास्त्रीय तथा दार्शनिक प्रश्नों की ओर ले जाता है। उन प्रश्नों का उत्तर जो भी हो, उस समय के एक वर्ग का यथार्थ अपनी समग्रता में इस उपन्यास में हमारे सामने है और उत्तर के संकेत उस यथार्थ में से ही खोजे जा सकते हैं।

मुझे स्वीकार करना चाहिए कि इस उपन्यास का अनुवाद-कार्य हाथ में लेते समय मैं इसकी दुरूहता के सम्बन्ध में पूरी तरह सचेत नहीं था। बहुत पहले, कालेज के दिनों में, उपन्यास पढ़ा था और मुझे इतना ही याद था कि उपन्यास मुझे बहुत अच्छा लगा था। इसलिए श्री विश्वनाथ (राजपाल एण्ड सन्ज़) ने जब अनुवाद का सुझाव दिया, तो मैं झट से इसके लिए तैयार हो गया। पर कितना मुश्किल और ज़िम्मेदारी का काम ले लिया है, इसका पूरा एहसास तब हुआ जब लगभग सौ पृष्ठों का अनुवाद कर लिया। उसके बाद कितनी ही बार

हारकर इसे बीच में छोड़ देना चाहा, पर अपने अन्दर की एक चुनौती बार-बार मुझे इसे पूरा करने के लिए उकसाती रही। इससे पहले भी दो-एक उपन्यासों का अनुवाद कर चुका था, पर उसके लिए जितने समय और धैर्य की अपेक्षा रही थी, इसके लिए उससे दस गुना की अपेक्षा थी। एक-एक पृष्ठ, और कई बार एक-एक वाक्य, पूरा दिन ले जाता था। अनुवाद करना मेरी दृष्टि में किसी दूसरे की रचना-प्रक्रिया में से गुज़रते हुए उस प्रक्रिया को अपने में आत्मसात् करके चलना है—ग्रैहम ग्रीन का अनुवाद करने में यह जिस आसानी से सम्भव था, हेनरी जेम्स का अनुवाद करने में नहीं। चुनौती एक तो भाषा के स्तर पर थी—क्योंकि अंग्रेज़ी में लिखने वाले बहुत कम ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्होंने शब्दों के इतने बड़े-बड़े गुंझल उलझाकर उनमें से सहज अर्थों को अभिव्यक्त किया हो। हेनरी जेम्स ने जिस सामर्थ्य के साथ अपनी भाषा का प्रयोग किया है, उसकी एक मांग यह थी कि अनुवाद की भाषा में भी उतनी ही सामर्थ्य हो, और दूसरी कि उसी सामर्थ्य के साथ उसका प्रयोग किया जाए। यह लगभग असम्भव जान पड़ता था—इसमें सीमाएं भाषा की भी थीं और समय की भी। दूसरी चुनौती अनुवाद को अनुवाद की कृत्रिमता से बचाते हुए अपनी भाषा की सहज अन्विति में अर्थ-सम्प्रेषण की थी। चुनौती इसके अतिरक्त भी कई स्तरों पर थी—जैसे मूल लेखक के बिम्ब-विधान को ज्यों का त्यों बनाए रखने के स्तर पर और इन सब चुनौतियों से लड़ते हुए इस कार्य को पूरा करने में एक साल निकल गया। साल के अन्त तक जितनी थकान हो गई थी, उसने और भी छः महीने कुछ काम नहीं करने दिया। फिर भी यह बात मन में बनी रही कि जो मैं चाहता था, उसके लिए अभी कम से कम साल-भर का समय और चाहिए था। परन्तु उतना समय क्या किसी भी स्थिति में मैं दे पाता? और उतना समय दिया जा सके, इसके लिए अपेक्षित आर्थिक सुविधा हो पाती? यह बात हमें हिन्दी में किए जा रहे अनुवाद-कार्य के एक और पक्ष पर ले आती है। बहुत-से अनुवाद हिन्दी में बहुत आसानी से कर दिए जाते हैं—बड़े-बड़े क्लासिक्स के अनुवाद महीनों-हफ्तों में छप-छपाकर सामने आ जाते हैं। परन्तु उन्हें क्या वास्तव में अनुवाद कहा जा सकता है? मुझे लगता है कि ऐसे अनुवाद अनुवाद न होकर एक तरह का दोहरा अन्याय है—हिन्दी के साथ और मूल रचनाओं के साथ। परन्तु यहां क्योंकि अनुवाद-सम्बन्धी दृष्टि ही कुछ दूसरी है—अनुवाद का काम अनुवाद के लिए न होकर कुछ थोड़ा-

बहुत लाभ देने या पाने की सम्भावना से होता है—इसलिए आए दिन विश्व की महानतम रचनाएं तीसरे दर्जे की अपठनीय कृतियों में बदलकर हमारे सामने आती रहती हैं। हमें इससे कुछ नहीं होता, क्योंकि अनुवाद का यह अर्थ हमारे यहां स्वीकृत-सा ही है। अनुवाद होते हैं, पुस्तकें छपती हैं और पुस्तकालयों में चली जाती हैं। कितने लोग इन पुस्तकों को पढ़ते हैं, इसका कुछ अनुमान पुस्तकालयों में इन पुस्तकों की चिटों पर लगी मोहरों को देखकर लगाया जा सकता है। बहुत-सी चिटों पर तो कभी मोहर लगती ही नहीं—पर इससे किसे मतलब है? अनुवाद के प्रॉजेक्ट जिस किसी तरह पूरे होने चाहिए, और वे पूरे हो रहे हैं!

यह 'द पोर्ट्रेट आफ ए लेडी' का पूरा अनुवाद है।

—मोहन राकेश

आर–५२२, न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-५

पूर्वार्ध

१

शाम के चाय-समारोह के लिए सुरक्षित समय, कुछ खास परिस्थितियों में जीवन का सबसे सुखप्रद समय होता है। आदमी चाय पिए या न पिए—उन विशेष परिस्थितियों में इस अवसर का अपना ही एक आनन्द रहता है। मैं जिन परिस्थितियों को मन में रखकर इस साधारण इतिहास का वर्णन करने जा रहा हूं, वे इस मासूम मन-बहलाव के लिए बहुत उपयुक्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करती हैं। सुहावनी गर्मी की ढलती दोपहर के ठीक बीच का समय, और इंग्लैंड के एक पुराने ग्राम-आवास के लॉन में छोटी-सी दावत का साज-सामान। दोपहर कुछ ढल चुकी थी, पर काफी अभी ढलनी रहती थी। उसका सबसे सुन्दर और अद्‌भुत समय अभी आने को था। ठीक से सांझ होने में कई घण्टे थे, पर गर्मी का चमकता ज्वार उतरना शुरू हो गया था। हवा में एक कोमलता भर गई थी, और घनी समतल घास पर साये लम्बे होने लगे थे—हालांकि बहुत धीरे-धीरे। दृश्यपट से उस अवकाश का आभास मिल रहा था जो अभी आने को था, और जो शायद ऐसे समय, इस तरह के दृश्यपट से प्राप्त होने वाले सुख का प्रधान स्रोत होता है। पांच से आठ के बीच का समय कभी-कभी अपनी ही एक अल्प, चिरन्तनता लिए रहता है—और ऐसे अवसर पर तो यह चिरन्तनता केवल सुख की ही चिरन्तनता होती है। उस समय इस इतिहास से सम्बन्धित व्यक्ति वहां खामोशी से इस सुख का उपभोग कर रहे थे। वे सब पुरुष थे; चाय-समारोहों में नियमित रूप से और बढ़-चढ़कर भाग लेने वाली नारी जाति वहां नहीं थी। गदरे लॉन पर सीधे और नुकीले साये पड़ रहे थे। एक साया बेंत की ढालू कुर्सी पर बैठे बुड्ढे का था। उसकी कुर्सी चाय की ठिगनी मेज के पास रखीं थी।

दो साये उन युवकों के थे जो अंट-संट बात करते उसके सामने इधर-उधर टहल रहे थे। बुड्ढा आसपास का जायज़ा लेता हुआ बहुत धीरे-धीरे चाय पी रहा था। काफी देर तक वह आंखें घर की तरफ किए प्याले को अपनी ठोड़ी से सटाए रहा। उसके साथी या तो चाय पी चुके थे, या इस सुयोग के प्रति उदासीन थे। वे टहलते हुए सिगरेट के कश लगा रहे थे। उनमें से एक बुड्ढे के पास से गुज़रते हुए कभी-कभी ध्यान से उसकी तरफ़ देख लेता था। पर बुड्ढा, इससे बेखबर, अपने मकान के खूबसूरत और लाल रंग के बाहरी हिस्से पर आंखें जमाए था। लॉन के पीछे बनी वह इमारत ऐसी थी कि सचमुच देखकर जी नहीं भरता था। उस खालिस इंग्लिस्तानी तस्वीर में, जिसका कि खाका मैंने खींचने की कोशिश की है। इस इमारत की खासियत और हर चीज़ बढ़कर थी।

वह इमारत लन्दन से चालीस मील बाहर टेम्ज़ नदी के किनारे एक छोटी-सी पहाड़ी पर बनी थी। लाल ईंट से बना तिकोना अग्रभाग था जिसके चेहरे पर समय और मौसम के खिलवाड़ से कई तरह की तस्वीरें बन गयी थीं। पर उन तस्वीरों से वह चेहरा पहले से कहीं बेहतर और ज़्यादा खूबसूरत हो उठा था। लॉन से देखने पर उसपर उभरे सिरपेंचे के चकत्ते नज़र आते थे—या पत्तों में लदी चिमनियां, और बेलों से ढकी खिड़कियां। उस घर का अपना ही एक नाम और इतिहास था। जो बुड्ढा चाय पी रहा था, वह किसीको भी खुशी से बताता कि छठे एडवर्ड के राज्य में महान् एलिज़ाबेथ एक रात वहां आकर रही थीं (जिस लम्बे-चौड़े, शानदार, और बेहद नुकीले पलंग पर उनके राजसी व्यक्तित्व ने अपने को फैलाया था, वह अब भी वहां के शयन-कक्षों की सबसे बड़ी विभूति था)। क्रामवेल के युद्धों में इस इमारत की खासी दुर्गति और तोड़-फोड़ हुई थी। फिर रेस्टोरेशन के दौरान उसकी मरम्मत कराके उसमें और हिस्से जोड़े गए थे। आखिर अठारहवीं शताब्दी में नये ढंग से बनवाए और बिगाड़े जाने के बाद, उसकी देखरेख इस घाघ अमरीकन बैंकपति के हाथ आ गयी थी। उसने शुरू में (कुछ ऐसे पेचीदा कारणों से जिनका वर्णन यहां असम्भव है) इसे खरीदा इसलिए था कि यह काफी कम कीमत पर मिल रहा था। खरीदते वक्त वह कुढ़ता रहा था कि मकान काफी कुरूप, पुराना और तकलीफदेह है। पर अब बीस साल गुज़र जाने पर इसे लेकर उसकी सौन्दर्य-भावना जाग्रत् हो उठी थी। उसे पता चल गया था कि इस जगह की अच्छाइयां क्या हैं, और वह हर आदमी

को बता सकता था कि ठीक कहां खड़े होकर उन सबको एक साथ देखा जा सकता है, और ठीक किस समय उसके अलग-अलग उभारों के साये सही अनुपात में तपी हुई जीर्ण-शीर्ण ईंटों पर कहां-कहां पड़ते हैं। इसके अलावा, जैसा कि मैं कह चुका हूं, वह एक के बाद एक उन सब लोगों के बारे में बता सकता था जिनके हाथ उस घर की मलकियत रही थी, या जो वहां आकर बसे थे। उनमें से कई लोग काफी ख्यातिप्राप्त थे। बताते हुए उसे बिना जतलाए भी मन में यह विश्वास रहता कि जिसके हाथ में आज इस घर के भाग्य की बागडोर है, वह भी किसी-से कम सम्मानित नहीं। जिस लॉन का हम ज़िक्र कर रहे हैं, उसकी तरफ पड़ता घर का मुख भाग प्रवेश-द्वार का मुख भाग नहीं था—प्रवेश-द्वार बिल्कुल दूसरी तरफ था। यह भाग अपने में बिलकुल एकान्त था। पहाड़ी की समतल चोटी पर उगी घास का चौड़ा गालीचा घर के अन्दरूनी हिस्से का ही विस्तार जान पड़ता था। ऊंचे-ऊंचे ओक (बतूल) और सफेदा के पेड़ों की घनी छाया मखमली पर्दों की तरह नीचे को आती थी। वहां की सजावट भी एक कमरे जैसी ही थी—गद्देदार मोढ़े, गहरे रंगों के कालीन और घास पर इधर-उधर पड़ी किताबें और कागज़। दरिया कुछ फासले पर था। जहां से ढलान शुरू होती थी, वहां आकर लॉन, सही माने में समाप्त हो जाता था। पर वहां से पानी तक का रास्ता अपने में ही काफी खूबसूरत था।

चाय की मेज़ के पास बैठा बूढ़ा आदमी तीस साल पहले अमरीका से आया था। आते हुए अपने सामान में सबसे ऊपर वह अपना अमरीकन चेहरा-मोहरा रखकर लाया था, और आने के बाद से अब तक उसे सुरक्षित रखे था, जिससे ज़रूरत पड़ने पर विश्वास के साथ उसे अपने देश वापस ले जा सके। मगर अब उसके वहां से उखड़कर जाने की सम्भावना नहीं रही थी। उसकी यात्राएं पूरी हो चुकी थीं और वह अन्तिम विश्राम से पहले का विश्राम कर रहा था। उसका चेहरा छोटा और दाढ़ी-मूंछ से साफ था, नक्श हमवार थे और भाव से कोमलता और कुशाग्रता टपकती थी। स्पष्टतः बहुत तरह के भाव उस चेहरे पर आ ही नहीं सकते थे। इससे उसका सहज आत्म-सन्तोष और बाबपन ज्यादा उभरकर सामने आता था। देखकर जहां यह लगता था कि उसे जीवन में सफलता मिली है, वहां यह भी कि वह सफलता सब दूसरों से अलग और बहुत ईर्ष्याजनक किस्म की नहीं रही बल्कि उससे असफलता की-सी विनम्रता का आभास मिलता था।

उसे, नि:सन्देह, लोगों का काफी अनुभव था, पर उसके लम्बे-दुबले गालों पर खिलती मुस्कराहट में देहातियों की-सी सादगी भी थी। आखिर जब उसने आहिस्ता से और सावधानी के साथ हाथ का बड़ा-सा प्याला मेज़ पर रखा, तो वही मुस्कराहट उसकी विनोद-भरी आंखों में चमक उठी। वह अच्छी तरह ब्रश किया काला सूट बहुत ढंग से पहने था, और एक तह किया शाल उसके घुटनों पर पड़ा था। पैर उसके कशीदा किए मोटे स्लीपरों में छिपे थे। उसकी कुर्सी के पास घास पर लेटा एक काला कुत्ता लगभग उसी कोमल भाव से उसके चेहरे को देख रहा था जिससे वह स्वयं अपने घर की अपेक्षया अधिक भव्य बनावट को देख रहा था। एक कूदता-फांदता छोटा-सा टैरियर शेप दोनों आदमियों के गिर्द चक्कर काट रहा था।

उन दोनों में एक पैंतीस साल का सुडौल व्यक्ति था। उसका चेहरा खालिस इंग्लिस्तानी था। उतना ही जितना कि उस बुड्ढे का चेहरा जिसका खाका ऊपर दिया गया है, उससे अलग तरह का था। वह काफी सुन्दर और ताज़ादम नज़र आता था—गोरा और बेलाग। नक्श सीधे और मजबूती लिए हुए। आंखें भूरी। फबती हुई चेस्टनेट (शाहबलूना) के रंग की घनी दाढ़ी। देखते ही लगता कि वह उन सौभाग्यशाली और प्रतिभावान् व्यक्तियों में से है जो सब दूसरों से अलग नज़र आते हैं, और जिनका खुश मिज़ाजी में रंगा सभ्य संस्कार किसी भी देखने वाले के लिए स्पर्धा का विषय हो सकता है। वह बूट और एड़ से लैस था, जैसे अभी-अभी लम्बी घुड़सवारी से लौटा हो। सिर पर सफेद हैट था जो उसके लिहाज से ज्यादा बड़ा नज़र आता था। हाथ उसने पीठ की तरफ़ मोड़ रखे थे, और उनमें से एक की बड़ी-सी, गोरी-गठी मुट्ठी में वह कुत्ते की चमड़ी के मैले-मुचड़े दस्तानों की जोड़ी लिए था।

उसका साथी, जो उसके साथ-साथ लॉन को नाप रहा था, बनावट में बिल्कुल दूसरी तरह का था। उसे देखकर मन में उत्सुकता भले ही जागती, पर पहले व्यक्ति की तरह, देखते ही, बिना कुछ सोचे, उसकी जगह ले लेने को मन न होता। वह एक लम्बा-दुबला व्यक्ति था—शरीर के जोड़ कमजोर और ढीले-ढाले, चेहरा बेढंगा, बीमार, हंसोड़, पर फिर भी आकर्षक। बड़ी-बड़ी मूंछें और गलमोछे, जो उसके चेहरे पर सजते तो नहीं थे, पर कुछ फबते ज़रूर थे। वह देखने में एकसाथ चतुर और बीमार नज़र आता था, हालांकि इन दोनों गुणों की आपस में संगति

नहीं थी। वह भूरे रंग की मखमली जैकेट पहने था, और दोनों हाथ जेबों में डाले था। उसके अंदाज़ में कुछ ऐसा था जिससे लगता था कि यह उसकी हमेशा की आदत है। उसकी चाल भटकती और टेढ़ी-मेढ़ी-सी थी, और उसकी टांगों में स्थिरता नहीं थी। जैसा कि मैंने कहा है, बुड्ढे के पास से गुज़रते हुए वह आखें उसके चेहरे पर जमाए रहता था। उस समय दोनों चेहरों को साथ-साथ देखने पर आसानी से कहा जा सकता था कि वे बाप-बेटा हैं। आखिर बुड्ढे की आंखें बेटे से मिलीं और उसके चेहरे पर हल्की जवाबी मुस्कराहट आ गई।

"मैं बहुत मज़े में हूं," उसने कहा।

"चाय पी ली ?" बेटे ने पूछा।

"हां, बहुत अच्छी लगी।"

"थोड़ी और दूं ?"

बुड्ढा पलभर इत्मीनान से सोचता रहा "अभी रहने दो, बाद में देखा जाएगा," उसकी आवाज़ में अमरीकन ध्वनि स्पष्ट थी।

"ठण्ड तो नहीं लग रही ?" बेटे ने पूछा।

बाप अपनी टांगों को मलने लगा। "कह नहीं सकता, महसूस होगी, तो बता दूंगा।"

"शायद आपके लिए वह किसी और को महसूस करनी पड़े," कहते हुए बेटा हंस दिया।

"मैं चाहता हूं, मेरे लिए हमेशा कोई और महसूस कर सके। क्यों लॉर्ड वारबर्टन, तुम मेरे लिए कुछ महसूस नहीं करते ?"

"बेहद !" लार्ड वारबर्टन के रूप में सम्बोधित व्यक्ति तुरन्त बोला। "कहना पड़ेगा कि आप इस वक्त बहुत आराम से नज़र आ रहे हैं।"

"हां, काफी हद तक मैं आराम से हूं," कहते हुए बूढ़े व्यक्ति ने अपने हरे शाल की तरफ देखा और उसे अपने घुटनों पर ठीक से फैला लिया। "दरअसल इतने सालों से आराम से रहने की ऐसी आदत हो गई है कि मुझे इसका कुछ पता ही नहीं चलता।"

"आराम से रहने का यही तो दुःख है," लार्ड वारबर्टन बोला, "कि जब तक तकलीफ न हो, तब तक कुछ पता ही नहीं चलता।"

"मुझे लगता है, हम इस चीज़ को ज़रा ज़्यादा ही महत्त्व दे रहे हैं," उसका

साथी बोला।

"हां, यह तो है ही," लार्ड वारबर्टन बुदबुदाया। कुछ देर तीनों खामोश रहे। दोनों युवक खड़े-खड़े बूढ़े की तरफ देखते रहे। बूढ़े ने अब और चाय की मांग की। बेटा बाप का प्याला फिर से भरने लगा, तो लार्ड वारबर्टन ने कहा, "मेरा ख्याल है इस शाल में आपको उलझन हो रही होगी।"

"नहीं-नहीं, शाल इनपर ही रहना चाहिए," मखमली कोट वाला युवक बोला, "इनके दिमाग में इस तरह की बात मत डालो।"

"यह शाल मेरी पत्नी का है," बुड्ढे ने सीधे से कहा।

"ओह, तो यह भावुकता के कारण लिया गया है······" लार्ड वारबर्टन के चेहरे पर क्षमा-याचना का भाव आ गया।

"मेरा ख्याल है उसके वापस आने पर मैं यह उसे लौटा दूंगा," बुड्ढा कहता रहा।

"आप ऐसा बिल्कुल नहीं करेंगे। अपनी कमजोर टांगों को ढकने के लिए आप इसे अपने पास ही रखेंगे।"

"मेरी टांगों को गाली मत दो," बुड्ढा बोला, "तुम्हारी टांगें मुझसे बेहतर नहीं हैं।"

"तो आप चाहे मेरी टांगों को गाली दे लें," बेटे ने चाय उसे देते हुए कहा।

"हम दोनों दो लंगड़ी बत्तखें हैं। कोई खास फर्क नहीं है।"

"बत्तख से तुलना के लिए मैं आपका आभारी हूं। चाय कैसी है?"

"कुछ ज़्यादा गर्म है।"

"यह तो चाय की खूबी मानी जाती है।"

"हां, इसमें यह खूबी कुछ ज़्यादा ही है," बुड्ढा कोमल स्वर में बुदबुदाया। "लार्ड वारबर्टन, मेरा लड़का नर्स का काम बहुत अच्छा करता है।"

"थोड़ा फूहड़ नहीं है?" लार्ड ने फरमाया।

"ना···ना···बेचारा खुद अपाहिज है—इसलिए फूहड़ बिलकुल नहीं है। एक बीमार आदमी की नर्स जितनी अच्छी हो सकती है, उससे ज़्यादा अच्छा है। मैं इसे बीमार नर्स इसलिए कहता हूं कि बेचारा खुद बीमार है।"

"क्या बात करते हो डैडी।" बदशक्ल युवक कुछ ऊंचे स्वर में बोला।

"मैं ठीक कहता हूं, हालांकि चाहता हूं तुम ऐसे न होते। पर तुम इसमें क्या

कर सकते हो ?"

"करने की कोशिश तो कर सकता हूं—यह ख्याल बुरा नहीं है।" बेटे ने कहा।

"लार्ड वारबर्टन, तुम कभी बीमार पड़े हो ?" बुड्ढे ने पूछा।

लार्ड वारबर्टन पलभर सोचता रहा। "हां, एक बार जब परशियन गल्फ में था।"

"यह आपको बना रहा है, डैडी," उसका साथी बोला। "यह एक किस्म का मजाक है।"

"आजकल मज़ाक की किस्में बहुत बढ़ गई हैं," डैडी ने गम्भीर होकर कहा। "पर लार्ड वारबर्टन, तुम्हें देखकर यह नहीं लगता कि तुम कभी बीमार पड़े हो।"

"इसे जिन्दा होना ही एक बीमारी लगती है," लार्ड वारबर्टन का मित्र बोला। "अभी यह मुझे यही बता रहा था। बहुत ज़ोर-शोर से।"

"यह सच बात है ?" बुड्ढे ने बहुत संजीदगी से पूछा।

"बात सच है, तो भी आपके बेटे ने मुझे कोई तसल्ली नहीं दी। ऐसे नकचढ़े आदमी से तो बात करना ही बेकार है। इसे किसी बात पर विश्वास ही नहीं आता।"

"यह एक और मज़ाक है," नकचढ़ेपन का अभियुक्त बोला।

"इसकी सेहत ठीक नहीं रहती न," बुड्ढा लार्ड वारबर्टन को समझाने लगा। "इससे उसके मन पर असर पड़ता है और यह उसी रंग में हर चीज़ को देखने लगता है। इसे लगता है कि इसे ज़िन्दगी में अपने लिए मौका ही नहीं मिला। पर यह बात केवल सोचने तक ही है—इसकी खुशमिजाज़ी पर इसका कोई असर नहीं पड़ता। मैंने कभी नहीं देखा जब यह इस वक्त की तरह चहक न रहा हो। अक्सर यह मुझे भी खुशदिल बनाए रखता है।"

बेटे ने अपना यह वर्णन सुनकर लार्ड वारबर्टन की तरफ देखा और हंसने लगा। "यह मेरी प्रशंसा है या मुझपर छिछोरेपन का अभियोग ? डैडी, तुम चाहोगे कि मैं जैसे सोचता हूं, वैसे ही जीने लगूं।"

"बाई जोव, तब तो पता नहीं क्या-क्या करिश्मे देखने को मिलेंगे !" लार्ड वारबर्टन ने चिल्लाकर कहा।

"तुम अब क्या इसी अंदाज़ से बात किया करोगे ?" बुड्ढा बोला।

"वारबर्टन का बात करने का अंदाज़ मुझसे भी बुरा है। यह ज़ाहिर करना चाहता है कि यह बहुत ऊबा हुआ है। मैं ऊबा हुआ नहीं हूं। मुझे ज़िन्दगी बेहद दिलचस्प लगती है।"

"आह, बेहद दिलचस्प ! पर देखो, तुम्हें उसे ऐसी नहीं होने देना चाहिए।"

"यहां आकर मेरा मन कभी नहीं ऊबता," लार्ड वारबर्टन बोला, "यहां असाधारण रूप से अच्छी बातचीत सुनने को मिलती है।"

"यह भी कोई मज़ाक तो नहीं ?" बुड्ढे ने पूछा। "यूं आदमी के कहीं पर भी ऊबने की कोई वजह नहीं होती। जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तो मैंने ऐसी बात कभी सुनी भी नहीं थी।"

"आपका विकास बहुत देर से हुआ होगा।"

"बल्कि बहुत जल्दी हुआ था, इसलिए। मैं बीस की उम्र को पहुंचने तक बहुत ज़्यादा विकसित हो चुका था। मैं तब सिरतोड़ मेहनत करता था। आदमी के पास करने को काम हो, तो वह कभी नहीं ऊबता। पर तुम युवा लोग बहुत निठल्ले हो। तुम्हें अपनी ऐयाशी का बहुत ध्यान रहता है। तुम लोगों के पास पैसा बहुत है, इसलिए काम है बस बैठे रहना और नुक्ताचीनी करना।"

"क्या बात है !" लार्ड वारबर्टन ऊंचे स्वर में बोला।

"कम से कम आपको दूसरों के पास पैसा बहुत होने की शिकायत नहीं करनी चाहिए।"

"इसलिए कि मैं एक बैंक का मालिक हूं ?" बुड्ढे ने पूछा।

"इसलिए समझ लीजिए, या इसलिए कि आपके पास असीम साधन हैं··· नहीं है ?"

"ये बहुत अमीर नहीं हैं," दूसरा युवक दयालु होकर बुड्ढे का पक्ष लेने लगा। "इन्होंने अपना बहुत-सा पैसा दूसरों को दे डाला है।"

"वह अपना ही पैसा था न ?" लार्ड वारबर्टन बोला। "तो अमीर होने का इससे बड़ा और क्या सबूत हो सकता है ? जो आदमी दूसरों का भला करता है, उसे किसी और की ऐयाशी पर एतराज़ नहीं करना चाहिए।"

"डैडी को ऐयाशी अच्छी लगती है—अगर दूसरे करें तो।"

बुड्ढे ने सिर हिलाया। "मुझे ऐसी कोई गलतफहमी नहीं है कि मैंने अपने वक्त के लोगों को सुख देने के लिए कुछ किया है।"

"आप बहुत विनम्र हैं, डैडी।"

"देखिए, यह भी एक तरह का मज़ाक है," लार्ड वारबर्टन ने कहा।

"तुम युवा लोगों के पास बस मज़ाक ही मज़ाक हैं। मज़ाक न रहे, तो तुम्हारे पास कुछ भी नहीं रहेगा।"

"खुश-किस्मती इतनी ही है कि मज़ाक और-और निकलते आते हैं," बदशक्ल नवयुवक बोला।

"मैं यह नहीं मानता। मेरा ख्याल है दिन-ब-दिन स्थितियां गम्भीर होती जा रही हैं। तुम युवा लोग एक दिन जान जाओगे।"

"स्थितियों का उत्तरोत्तर गम्भीर होते जाना—इसीमें मज़ाक का बहुत मौका है।"

"ऐसे मज़ाक काफी मनहूस होंगे," बुड्ढा बोला। "मेरा विश्वास है कि अब बहुत परिवर्तन होने वाले हैं, जो सब बेहतरी के लिए नहीं होंगे।"

"मैं आपसे बिलकुल सहमत हूं," लार्ड वारबर्टन ने घोषणा की। "मुझे भी विश्वास है कि बहुत-से परिवर्तन होंगे। तरह-तरह की अजीब घटनाएं घटित होंगी। इसीलिए आपकी नसीहत पर अमल करने में मुझे दिक्कत हो रही है। आपने उस दिन कहा था कि मुझे कोई चीज़ 'पकड़ लेनी' चाहिए। अब आदमी ऐसी चीज़ को क्या पकड़े जिसके कि अगले ही क्षण आसमान में उड़ जाने का अंदेशा हो।"

"तुम्हें किसी सुन्दर-सी स्त्री को पकड़ना चाहिए," उसका साथी बोला। फिर अपने पिता की तरफ देखकर उसने समझाने के ढंग से कहा, "यह बहुत कोशिश कर रहा है कि इसे किसी स्त्री से प्यार हो जाए।"

"सुन्दर स्त्रियां भी तो उड़ जा सकती हैं।" लार्ड वारबर्टन तेज़ी से बोला।

"नहीं, वे अपनी जगह कायम रहेंगी," बुड्ढे ने समाधान किया। "जिन सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों की बात मैं कह रहा था, स्त्रियों पर उनका प्रभाव नहीं पड़ेगा।"

"आपका मतलब है उन्हें समाप्त नहीं किया जाएगा? ठीक है, तब तो मैं जल्द-अज़-जल्द किसी एक को हथियाकर तावीज़ की तरह गले से बांध लूंगा।"

"स्त्रियां ही हमारी रक्षा करेंगी," बुड्ढा बोला।

"मतलब जो उनमें सबसे अच्छी हैं, वे—क्योंकि मैं स्त्री और स्त्री में फर्क

मानता हूं। कोई अच्छी-सी स्त्री ढूंढ़कर उससे शादी कर लो, तो तुम्हारी ज़िन्दगी अब से काफी दिलचस्प हो जाएगी।"

दोनों श्रोता शायद इस भाषण की सदाशयता की वजह से ही पल भर खामोश रहे क्योंकि यह बात न बेटे से छिपी थी, न आगन्तुक से कि शादी के मामले में उस व्यक्ति का अपना अनुभव कुछ अच्छा नहीं रहा। उसने जो फर्क की बात कही थी, उसका मतलब इस मामले में अपनी गलती स्वीकार करना हो सकता था। पर पास खड़े दोनों व्यक्तियों का यह कहना बनता नहीं था कि उसने स्वयं जिस स्त्री का चुनाव किया था, वह निःसंदेह सबसे अच्छी स्त्रियों में से नहीं थी।

"आप कहना चाहते हैं कि एक दिलचस्प स्त्री से शादी करके ही ज़िन्दगी चिलचस्प होगी?" लार्ड वारबर्टन बोला, "पर मुझे शादी करने की उतावली नहीं है—आपके लड़के ने मेरी बात ठीक से नहीं कही। पर एक दिलचस्प स्त्री मेरी ज़िन्दगी में आकर क्या न कर देगी, यह नहीं कहा जा सकता।"

"पता नहीं किस तरह की स्त्री तुम्हारे विचार में दिलचस्प होगी," उसका मित्र बोला।

"देखो दोस्त, विचार तुम्हारी समझ से परे की चीज़ हैं—खास तौर पर मेरे जैसे आदमी के ऊंचे और सूक्ष्म विचार। अगर मुझे खुद ही पता चल सके, तो वह काफी बड़ी बात होगी।"

"खैर, तुम जिससे चाहो प्रेम करना—सिर्फ मेरी भांजी को छोड़कर," बुड्ढे ने कहा।

उसका बेटा हंस पड़ा। "इससे लगेगा आप इसे बढ़ावा दे रहे हैं। आप अब्बा-जान, तीस साल से अंग्रेज़ों के बीच रह रहे हैं, और ऐसी बहुत-सी बातें आपने सीख ली हैं जो इन लोगों में कही जाती हैं। पर यह आप कभी नहीं सीख पाएंगे कि कैसी बात इन लोगों में नहीं कही जातीं।"

"मुझे जो अच्छा लगता है, मैं कह देता हूं," बुड्ढा काफी संजीदगी के साथ बोला।

"मुझे आपकी भांजी को जानने का सौभाग्य नहीं मिला," लार्ड वारबर्टन बोला। "यह पहला मौका है जब मैं उसके बारे में सुन रहा हूं।"

"वह मेरी पत्नी की भांजी है। मिसेज़ टाउशेट उसे अपने साथ इंग्लैण्ड ला रही हैं।"

इसकी व्याख्या लड़के ने की, "तुम्हें पता है अम्मां सर्दियों के लिए अमरीका गई थीं। अब वे लौटकर आ रही हैं। उन्होंने लिखा है कि वहां उन्होंने एक भांजी ढूंढ निकाली है, और उसे वे अपने साथ ला रही हैं।"

"अच्छा ? बहुत मेहरबान हैं वे," लार्ड वारबर्टन बोला, "वैसे लड़की दिलचस्प है ?"

"हमें भी तुमसे ज़्यादा पता नहीं है। अम्मां ने खोलकर कुछ नहीं लिखा। वे ज़्यादातर हम लोगों को तार से खबरें भेजती हैं, और उनके तार समझ से परे होते हैं। लोग कहते हैं, स्त्रियों को तार का मज़मून बनाना नहीं आता, पर अम्मां ने संक्षेप में लिखने की कला पर पूरा अधिकार पा लिया है। 'अमरीका, थक गई, गर्म मौसम भयानक, भांजी के साथ इंग्लैण्ड वापस, पहला स्टीमर, बढ़िया केबिन।' इस तरह के उनके सन्देश आते हैं। यह आखिरी सन्देश है, पर इससे पहले एक और सन्देश था जिसमें पहले-पहल उन्होंने भांजी का जिक्र किया था। "होटल बदला, बहुत बुरा, गुस्ताख क्लर्क, इस पते पर लिखो, बहन की लड़की को साथ लिया, पिछले साल मरी थी, यूरोप जाएगी, दो बहनें, काफी स्वतन्त्र।' मैं और अब्बा इसे लेकर अब तक परेशान हैं क्योंकि उसके कितने ही मतलब निकल सकते हैं।"

"इससे एक चीज़ बिलकुल ज़ाहिर है," बुड्ढा बोला, "कि होटल के क्लर्क की उसने खासी मरम्मत की है।"

"यह भी कहा नहीं जा सकता। हो सकता है, क्लर्क ने उन्हें मैदान से भगा दिया हो। हमने पहले सोचा कि जिस बहन का जिक्र है, वह क्लर्क की बहन होगी। पर बाद में भांजी का ज़िक्र होने से लगा कि मुराद मेरी किसी मौसी से है। फिर सवाल था कि बाद की दो बहनें कौन हैं—वहां लगता है मतलब मौसी की दो लड़कियों से है। पर काफी स्वतन्त्र कौन है, और इन शब्दों का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है, यह बात हम अब तक तय नहीं कर पाए। ये शब्द सिर्फ उस भांजी पर ही लागू होते हैं जिसे वे साथ ला रही हैं, या उसकी बहनों पर भी ? और यहां मतलब नैतिक स्वतन्त्रता से है या आर्थिक स्वतन्त्रता से ? और आर्थिक स्वतन्त्रता का मतलब काफी पैसा पास में होना है, या सिर्फ किसीका अहसान सिर पर न लेना ? या इसका मतलब बस इतना ही है कि उन लड़कियों को अपने ढंग से चलना पसन्द है ?"

"और कुछ मतलब हो न हो, पर यह मतलब जरूर है," मिस्टर टाउशेट ने जोड़ा।

"खैर, वह तो सामने आने पर पता चल जाएगा," लार्ड वारवर्टन बोला। "मिसेज टाउशेट कब आ रही हैं ?"

"हम कैसे कह सकते हैं ? जब भी बढ़िया केबिन मिल गया। हो सकता है अभी उसका इन्तजार ही कर रही हों। दूसरी तरफ़ यह भी हो सकता है कि अब तक इंग्लैण्ड में आ उतरी हों।"

"उस हालत में उन्होंने तार न दिया होता।"

"जब आपको इन्तजार हो, तब वह कभी तार नहीं देती। जब न हो, तभी देती है," बुड्ढा बोला। "उसे अचानक मेरे सिर पर आ खड़े होना ही पसन्द है। सोचती है मुझे कुछ गलत काम करते पकड़ेगी। आज तक उसे वैसा मौका नहीं मिला, पर उसने हिम्मत नहीं छोड़ी।"

लड़के ने बात को जरा बेहतर पहलू से पेश किया। "जिस स्वतन्त्रता का वे ज़िक्र करती हैं, वह इनके खानदान में है, इसलिए उनमें भी है। वे लड़कियां चाहे जितनी मनमानी करने वाली हों, अम्मा खुद किसीसे कम नहीं हैं। वे हर काम अपनी मर्ज़ी से करना पसन्द करती हैं। कोई उनकी मदद कर सकता है, इसका उन्हें कतई भरोसा नहीं। मुझे तो वे एक बिना गोंद के डाक-टिकट की तरह समझती हैं। मैं उन्हें लेने लिवरपूल पहुंच जाऊं, इसके लिए वे मुझे कभी माफ नहीं करेंगी।"

"खैर, तुम्हारी कजिन जब भी आए, तुम मुझे पता तो दे दोगे ?" लार्ड वारबर्टन ने पूछा।

"सिर्फ उसी शर्त पर मैंने बतायी थी—कि तुम उससे प्रेम नहीं करने लगोगे" मिस्टर टाउशेट ने उत्तर दिया।

"यह तो बहुत कड़ी शर्त है। क्या आप मुझे उसके लायक नहीं समझते ?"

"मैं तुम्हें बहुत लायक समझता हूं पर उसका तुमसे शादी करना मुझे पसन्द नहीं होगा। मेरा ख्याल है वह यहां पति तलाश करने नहीं आई। बहुत-सी लड़कियां इसी इरादे से यहां आती हैं, जैसे कि अपने देश में उन्हें अच्छे लड़के मिलते ही न हों, फिर हो सकता है उसकी सगाई हो चुकी हो। मैं समझता हूं अमरीकन लड़कियों की अक्सर सगाई हो चुकी होती है। और यह भी कैसे कहा

जा सकता है कि तुम एक अच्छे पति साबित होगे ?"

"बहुत सम्भव है, उसकी सगाई हो चुकी हो," मिस्टर टाउशेट का मेहमान बोला। "मेरा कितनी ही अमरीकन लड़कियों से परिचय हुआ है, और वे सबकी सब सगाई करके ही आई थीं। पर सच कहता हूं, मुझे कभी नहीं लगा कि उससे कुछ फर्क पड़ता है। जहां तक इसका सवाल है कि मैं अच्छा पति साबित होऊंगा या नहीं, मैं खुद भी कुछ नहीं कह सकता। पर आदमी कोशिश कर ही सकता है।"

"कोशिश तुम चाहे जितनी करो, पर मेरी भांजी को लेकर नहीं," बुड्ढा मुस्कराया। उसके विरोध में हंसी की पुट स्पष्ट थी।

"खैर, ठीक है," लार्ड वारबर्टन उससे ज़्यादा खिलकर बोला। "क्या पता वह कोशिश करने लायक हो ही नहीं।"

२

उन दोनों को आपस में मज़ाक करते छोड़कर रैल्फ टाउशेट, पैर दबाकर चलता हुआ थोड़ा परे निकल गया था। हाथ उसके जेबों में थे और उसका छोटा-सा गुस्ताख टैरियर उसके पीछे-पीछे चल रहा था। उसका मुंह घर की तरफ था, पर आंखें सोच में डूबी-सी लॉन पर झुकी थीं। उसे पता नहीं चला कि एक लड़की इस बीच सामने के बड़े दरवाज़े के पास आकर खड़ी हो गई है और उसे देख रही है—उसकी नज़र कुछ क्षण बाद उसपर पड़ी। उस तरफ उसका ध्यान गया कुत्ते की हरकत की वजह से, क्योंकि कुत्ता एकाएक ज़ोर-ज़ोर से भौंकता हुआ उस तरफ को लपक पड़ा, हालांकि उसके भौंकने में अनादर की अपेक्षा स्वागत का भाव ही ज़्यादा था। सामने खड़ी नवयुवती ने फौरन उस छोटे-से जानवर के भाव को भांप लिया। वह तेज़ी से जाकर उसके पैरों के पास खड़ा हो गया था और मुंह उठाए भौंके जा रहा था। लड़की ने झुककर बिना संकोच उसे हाथों में उठा लिया और उसका चेहरा अपने चेहरे के सामने लाकर उसकी तेज़ आवाज़ सुनती रही। कुत्ते के मालिक को इस बीच यह देखने का वक्त मिल गया कि बंची की नई दोस्त एक लम्बी लड़की है जो काली पोशाक पहने है। पहली नज़र में वह उसे सुन्दर

जान पड़ी। उसका सिर नंगा था, जैसे कि वह इसी घर की रहने वाली हो। घर के मालिक का लड़का इससे थोड़ा चकराया क्योंकि वह जानता था कि उसके पिता की सेहत खराब होने के कारण कुछ अरसे से उसके घर में लोगों का आना-जाना बन्द कर दिया गया था। इस बीच बाकी दोनों व्यक्तियों ने भी नवागन्तुक को देख लिया था।

"अरे, यह अजनबी स्त्री कौन है ?" मिस्टर टाउशेट ने सवाल किया था।

"हो सकता है मिसेज़ टाउशेट की भांजी हो—वही स्वतन्त्र लड़की," लार्ड वारबर्टन ने सुझाया, "जिस तरह यह कुत्ते को उठाए है इससे तो यही जान पड़ता है।"

"अब तक कॉली ने भी अपना ध्यान उस तरफ खिंच जाने दिया था। वह भी धीरे-धीरे दुम हिलाता और फुदकता हुआ दरवाज़े में खड़ी लड़की की तरफ़ बढ़ गया।

"तो फिर मेरी बीवी कहां है ?" बुड्ढा बुदबुदाया।

"यह लड़की उन्हें कहीं छोड़ आई होगी। यह भी तो स्वतन्त्रता में आ जाता है।"

उधर लड़की इसी तरह टैरियर को उठाए मुस्कराकर रैल्फ से बोली, "क्यों, यह पिल्ला तुम्हारा है ?"

"अभी क्षण-भर पहले तक मेरा था। पर अब तो एकाएक लग रहा है कि सिर्फ तुम्हारी ही मलकियत है।"

"तो हम इसे बांट नहीं सकते ?" लड़की बोली। "सचमुच कितना अच्छा और कितना प्यारा है।"

रैल्फ पल-भर उनकी तरफ देखता रहा। उसे वह अप्रत्याशित रूप से सुन्दर लगी। "तुम बिलकुल ही रख लो न," उसने कहा।

लड़की के चेहरे से काफी विश्वास झलकता था—अपने में भी और दूसरों के प्रति भी। पर इस आकस्मिक उदारता से वह थोड़ा शरमा गई। "मुझे बताना चाहिए कि मैं शायद तुम्हारी कज़िन हूं," वह कुत्ते को उतारती हुई बोली। फिर एकाएक कॉली पर नज़र पड़ने से उसने जल्दी से कहा, "लो, वह एक और आ गया।"

"शायद।" रैल्फ ने कहा और हंस दिया। "मेरा ख्याल था कि यह बात

तयशुदा है। तुम अम्मां के साथ आई हो ?"

"हां, आधा घण्टा हो गया।"

"तो तुम्हें छोड़कर क्या वे फिर तशरीफ ले गईं ?"

"नहीं, वे सीधी अपने कमरे में गई हैं। मुझसे कह गई हैं कि तुमसे मिलूं, तो कह दूं कि पौने सात बजे तुम्हें उनके पास जाना है।"

रैल्फ ने अपनी घड़ी देखी। "शुक्रिया। मैं वक्त पर पहुंच जाऊंगा," उसने कहा और फिर अपनी कज़िन की तरफ देख लिया। "मैं इस घर में तुम्हारा स्वागत करता हूं। मुझे तुमसे मिलकर बहुत खुशी हुई।"

लड़की की आंखें हर चीज़ को बहुत सहज भाव से ग्रहण कर रही थीं—अपने सामने के व्यक्ति को, दोनों कुत्तों को, पेड़ों के नीचे दिखाई देते दोनों आदमियों को और आसपास के सुन्दर दृश्य को। "ऐसी सुन्दर जगह मैंने आज तक नहीं देखी। मैंने सारा घर घूम लिया है। गजब की जगह है।"

"मुझे अफसोस है कि तुम इतनी देर से यहां हो, और हमें इसका पता ही नहीं चला।"

"तुम्हारी अम्मां ने बताया था कि इंग्लैण्ड में लोग चुपचाप आते हैं, इसलिए मुझे सब ठीक ही लगा। उन दो आदमियों में एक तुम्हारे पिता हैं ?"

"हां, वे जो बड़ी उम्र के हैं, और बैठे हुए हैं," रैल्फ बोला।

लड़की हंसी, "हां, दूसरा तो हो ही नहीं सकता। वह कौन है ?"

"दूसरा मेरा दोस्त है—लार्ड वारबर्टन।"

"मैं सोच ही रही थी कि यहां कोई न कोई लार्ड ज़रूर होगा। बिलकुल जैसे उपन्यासों में होता है।" और फिर एकाएक, "ओ ! कितना अच्छा है बेचारा !" कहते हुए उसने झुककर फिर से छोटे कुत्ते को उठा लिया।

वह अब तक वहीं दहलीज़ के पास खड़ी थी—जहां उनकी भेंट हुई थी। रैल्फ को बहुत सुन्दर और दुबली-सी लग रही थी। यह देखकर कि उसके कदम वहीं रुके हैं और आगे बढ़कर मिस्टर टाउशेट से बात करने का उसका इरादा नज़र नहीं आता, रैल्फ को लगा कि कहीं वह यह आशा न कर रही हो कि मिस्टर टाउशेट स्वयं पास आकर अभिवादन करेंगे। अमरीकन लड़कियों को वैसे ही सम्मान पाने की बहुत आदत होती है और इस एक के ऊंचे स्वभाव की तो सूचना भी मिल चुकी थी। रैल्फ को लगा कि उसके चेहरे से यही चीज़ झलक रही है।

"तुम चलकर अब्बा से परिचय नहीं करना चाहोगी ?" फिर भी उसने साहस करके पूछ लिया। "वे बूढ़े और निर्बल हैं, और कुर्सी से उठते नहीं हैं।

"बेचारे ! कितने अफसोस की बात है।" लड़की तुरन्त आगे बढ़ती हुई बोली, "आपकी अम्मां की बातों से तो मुझे लगा था कि वे बल्कि—बल्कि काफी फुर्तीले हैं।"

रैल्फ पल-भर खामोश रहा। "अम्मां ने उन्हें साल-भर से देखा नहीं है।"

"इनके बैठने की जगह कितनी सुन्दर है। चल, आ पिल्ले !"

"जगह पुरानी है, पर बहुत प्यारी है," उसका युवा साथी पार्श्व से उसे देखता हुआ बोला।

"इस प्राणी का नाम क्या है?" लड़की का ध्यान फिर कुत्ते पर केन्द्रित हो गया था।

"मेरे पिता का नाम ?"

"हां," लड़की कौतुक भरे स्वर में बोली, "पर उनसे कहना नहीं मैंने पूछा था।"

वे अब तक मिस्टर टाउशेट के पास पहुंच गए थे। मिस्टर टाउशेट परिचय करने के लिए धीरे से कुर्सी से उठ खड़े हुए।

"अम्मां आ गई हैं," रेल्फ ने कहा, "और यह है मिस आर्चर।"

बुड्ढे ने दोनों हाथ लड़की के कन्धों पर रख दिए, फिर पल-भर अतिरिक्त स्नेह से उसकी ओर देखते रहकर उसे उत्साह से चूम लिया। "मुझे तुम्हारे यहां आने की बहुत खुशी है। कितना अच्छा होता अगर हमें ठीक से तुम्हारा स्वागत करने का मौका मिला होता।"

"स्वागत में कसर नहीं रही," लड़की बोली। "हाल में आधी दर्जन नौकर थे, और एक बुढ़िया गेट पर ही अभिवादन के लिए खड़ी थी।"

"पहले सूचना मिली होती, तो हम इससे बेहतर स्वागत कर सकते थे।" बुढ्ढा खड़ा-खड़ा मुस्कराया और उसकी तरफ सिर हिलाता हुआ हाथ मलने लगा। "पर मिसेज़ टाउशेट स्वागत पसन्द नहीं करतीं।"

"वे सीधी अपने कमरे में चली गई हैं।"

"और कमरा उसने अन्दर से बन्द कर लिया है। वह हमेशा यही करती है। मुझसे उसकी मुलाकात शायद हफ्ता भर बाद होगी।" कहते हुए मिसेज़

टाउशेट के पति पहले की तरह बैठ गए।

"नहीं, उससे पहले वे डिनर के लिए आएंगी," मिस आर्चर बोली, "आठ बजे।" फिर रैल्फ की तरफ देखकर उसने मुस्कराते हुए कहा, "तुम पौने सात बजे जाना, भूलना नहीं।"

"लड़का खुशकिस्मत है।" बुड्ढा बोला। फिर अपनी पत्नी की भांजी से उसने कहा, "तुम बैठो—थोड़ी-सी चाय ले लो।"

"मुझे अपने कमरे में पहुंचते ही चाय मिल गई थी," लड़की बोली। फिर अपने सम्मानित मेजबान पर आंखें जमाए हुए उसने कहा, "आपकी सेहत के बारे में जानकर मुझे अफसोस हुआ।"

"मैं बुड्ढा आदमी हूं, माई डियर! बुढ़ियाने की मेरी उम्र ही है। पर तुम्हारे आ जाने से मेरी सेहत बेहतर हो जाएगी।"

लड़की आसपास देखने लगी थी—लॉन के बड़े-बड़े पेड़ों को, सरकण्डों के पीछे रुपहले टेम्ज़ को और उस पुराने घर को। पर यह सब देखते हुए सामने के व्यक्तियों से उसकी निगाह हटी नहीं थी—इस तरह एक साथ चारों ओर नज़र रख पाना उस लड़की के लिए अस्वाभाविक नहीं था जो उत्साहित होने के साथ-साथ काफी समझदार भी थी। उसने बैठकर कुत्ते को परे हटा दिया था, गोरे हाथ जुड़कर उसकी काली पोशाक पर आ गए थे। गरदन उसकी तनी हुई थी, आंखें चमक रही थीं। जिस सजगता के साथ वह आसपास का जायज़ा ले रही थी, उसीके अनुसार उसका लचकीला जिस्म सहज भाव से इधर या उधर घूम जाता था। जायज़ा वह बहुत कुछ ले चुकी थी, यह उसकी खुली हुई और सधी हुई मुस्कराहट से स्पष्ट था। "मैंने इतनी सुन्दर जगह आज तक नहीं देखी।"

"जगह सचमुच अच्छी है," मिस्टर टाउशेट ने कहा। "तुमपर इसका कैसा प्रभाव पड़ रहा है, यह मैं सोच सकता हूं। मैं भी इस अहसास से गुज़र चुका हूं। पर तुम खुद बहुत सुन्दर हो।" उसके स्वर में मज़ाक का खुरदुरापन न होकर एक कोमलता थी जिसमें इस अहसास की खुशी शामिल थी कि बड़ी उम्र होने से उसे ऐसी बात कहने का हक हासिल है—एक युवा लड़की से भी, जो कि शायद ये शब्द सुनकर सकपका जाती।

यह लड़की कितना सकपकाई, इसका अंदाज़ा लगाने की ज़रूरत नहीं। वह शरमाकर उठी—उसके भाव में प्रतिरोध बिलकुल नहीं था—और बोली, "हां,

ठीक ही तो है। सुन्दर तो मैं हूं।" और फिर हंसकर उसने जल्दी से पूछ लिया, "यह घर कितना पुराना है, एलिज़ाबेथ के ज़माने का ?"

"ट्यूडर काल के शुरू का," रैल्फ ने उत्तर दिया।

लड़की ने उसकी तरफ मुड़कर उसके चेहरे पर आंखें जमा दीं। "ट्यूडर काल के शुरू का ? कितनी मज़े की बात है ! ऐसे और भी तो कई घर यहां होंगे।"

"इससे अच्छे-अच्छे हैं।"

"ऐसा तो न कहो," बुड्ढे ने बेटे को टोका। "इससे अच्छी कोई जगह नहीं है।"

"मेरा घर काफी अच्छा है," लार्ड वारबर्टन जो अब तक खामोश रहकर ध्यान से मिस आर्चर को देख रहा था, बोला, "बल्कि कई लिहाज से इससे अच्छा है।" कहते हुए वह मुस्कराकर थोड़ा झुका। स्त्रियों को खुश करने में उसका मुकाबला नहीं था। लड़की ने तुरन्त इस चीज़ को भांप लिया। वह भूली नहीं थी कि यह आदमी 'लार्ड' वारबर्टन है। "मुझे बहुत खुशी होगी अगर तुम किसी दिन देखने चल सको," वह कुछ रुककर बोला।

"इसकी बात सुनो," बुड्ढे ने ज़ोर देकर कहा। "कभी मत देखना। वह एक सड़ी हुई पुरानी बैरक है—इस घर के साथ उसका कोई मुकाबला नहीं है।"

"मुझे इसका पता नहीं—मैं कैसे कह सकती हूं ?" लड़की लार्ड वारबर्टन की तरफ देखकर मुस्कराई।

रैल्फ टाउशेट इस बातचीत में कोई भाग नहीं ले रहा था। वह जेबों में हाथ डाले खड़ा उस नई आई कज़िन से जैसे अपनी ही बात जारी रखने की राह देख रहा था। "तुम्हें कुत्तों का बहुत शौक है ?" उसने शुरुआत के लिए पूछा। उसे खुद ही अहसास हुआ कि शुरुआत के इस ढंग में चतुराई नहीं, खासा भोंडापन है।

"बहुत···बहुत ज़्यादा।"

"तो तुम उस टैरियर को रखे रहो," वह उसी भोंडेपन से बोला।

"जब तक यहां हूं, तब तक खुशी से रखे रहूंगी।"

"मुझे आशा है यह अरसा काफी लम्बा होगा।"

"बहुत मेहरबानी। पर मैं कह नहीं सकती। इसका निश्चय आंटी

करेंगी।"

"मैं उनसे तय कर लूंगा—पाने सात बजे।" कहकर रैल्फ ने फिर घड़ी की तरफ देख लिया।

"मेरे लिए तो यहां आना ही खुशी की बात है।"

"मेरा ख्याल है कोई दूसरा तुम्हारे लिए कुछ तय करे, यह तुम्हें पसन्द नहीं।"

"अगर मेरी मर्जी के मुताबिक तय करे, तो मुझे एतराज़ नहीं।"

"पर मैं अपनी मर्जी के मुताबिक तय करूंगा," रैल्फ बोला, "यह भी कोई बात हुई कि आज तक हम तुम्हें जानते ही नहीं थे।"

"मैं तो वहां थी ही······तुम्हें मुझसे मिलने आना चाहिए था।"

"वहां ? वहां से मतलब ?"

"मतलब अमरीका में—न्यूयार्क, एल्बैनी या दूसरे किसी शहर में।"

"मैं वहां सब जगह गया हूं, पर तुमसे मैं कभी नहीं मिला। यह बात मेरी समझ में नहीं आती।"

मिस आर्चर पल-भर संकोच में रही। फिर बोली, "इसकी वजह यह थी कि मेरे बचपन में ही, मां की मृत्यु के बाद, तुम्हारी अम्मां और हमारे अब्बा के बीच कुछ झगड़ा हो गया था। इसलिए हम तुम लोगों से मिलने की आशा भी नहीं करते थे।"

"परमात्मा बचाए ! मैं अम्मां के सब झगड़ों को अपने झगड़े नहीं बनाना चाहूंगा," रैल्फ चमककर बोला। फिर थोड़ा गम्भीर होकर उसने पूछा, "तुम्हारे पिता की मृत्यु हाल ही में हुई है ?"

"हां, साल से ऊपर हो गया। उसके बाद आंटी काफी मेहरबान हो गई हैं। वे खुद ही वहां मुझसे मिलने आईं और बोलीं कि मुझे अपने साथ यूरोप ले चलेंगी।"

"अच्छा," रैल्फ बोला, "तो उन्होंने तुम्हें गोद ले लिया है ?"

"गोद ले लिया है ?" लड़की फिर से शरमाकर उसे ताकती रही। क्षण-भर के लिए उसकी आंखों में जो पीड़ा का भाव झलक आया, उससे रैल्फ थोड़ा सतर्क हो गया। उसने नहीं सोचा था कि उसके शब्दों का ऐसा असर होगा। इस बीच लार्ड वारबर्टन, जो निरन्तर यह चाह रहा था कि मिस आर्चर को और

नज़दीक से देख सके, टहलता हुआ उनके पास आ गया। लड़की उसके चेहरे पर आंखें जमाए बोली, "ना, गोद लेने की कोई बात नहीं। मेरा गोद लिए जाने का इरादा भी नहीं।"

"मैं बहुत-बहुत मांफी चाहता हूं", रैल्फ बुदबुदाया। "मेरा मतलब यह था कि···कि···" पर उसे खुद पता नहीं था कि उसका मतलब क्या था।

"तुम्हारा मतलब था कि उन्होंने मुझे अपना लिया है। हां, किसीको भी अपना लेना उन्हें बहुत पसन्द है। वे मुझपर बहुत मेहरबान हैं, पर···" और स्पष्टतः इस इच्छा के साथ कि कोई ग़लतफ़हमी न रहे, उसने बात पूरी की, "मैं अपनी स्वतन्त्रता खोना पसन्द नहीं करती।"

"तुम मिसेज़ टाउशेट की बात कर रही हो?" बुड्ढा अपनी कुर्सी से बोला। "ज़रा इधर आकर मुझे भी बताओ। कोई मुझे उसके बारे में जानकारी दे, तो मैं उसका बहुत आभार मानता हूं।"

लड़की मुस्कराती हुई पल-भर पुनः संकोच में रही। फिर बोली, "वे सच-मुच बहुत ही उदार हैं।" कहती हुई वह अपने अंकल की तरफ बढ़ गई जो उसकी इस बात से खिल उठे थे।

लार्ड वारबर्टन अब रैल्फ टाउशेट के साथ अकेला रह गया था। पल-भर बाद वह उससे बोला, "कुछ देर पहले तुम जानना चाहते थे न कि किस तरह की स्त्री मेरे विचार में दिलचस्प होगी? यह तुम्हारे सामने है।"

३

मिसेज़ टाउशेट के स्वभाव में कई विलक्षणताएं थीं, जिनका एक उदाहरण था अपने पति के घर लौटकर आने पर उनका व्यवहार। वे जो कुछ भी करती थीं, अपने ढंग से करती थीं। वैसे यह उस चरित्र का बहुत साधारण-सा वर्णन है जो अपने उदार आशय के बावजूद बहुत कम ही कभी एक मधुर प्रभाव पैदा कर पाता था। वे बहुत कुछ भला करके भी किसीको प्रसन्न नहीं कर पाती थीं। उनका अपना ढंग, जो उन्हें बहुत पसन्द था, असल में नाखुशगवार नहीं था—सिर्फ और सबके

ढंग से वह बिलकुल अलग था। उनके व्यवहार की नोकें इतनी तीखी थीं कि जो ज़रा भी नरम होता उसे वे चाकू की तरह चीर जातीं। अमरीका से लौटकर आने के कुछ घण्टों के अन्दर ही उनके व्यवहार का वह रूखा-तीखापन सामने आ गया था। हालांकि चाहिए यह था कि आकर वे सबसे पहले अपने पति और पुत्र से कुशल-क्षेम पूछतीं, पर अपने ही किन्हीं कारणों से मिसेज़ टाउशेट ऐसे अवसर पर सदा हमेशा एकान्त में चली जाती थीं। भावना की बातों को वे तब स्थगित रखती थीं जब तक कि अपनी अस्त-व्यस्त पोशाक को पूरा न बदल लें, हालांकि न वे सुन्दर थीं न घमण्डी, इसलिए इसका ज़्यादा महत्त्व नहीं होना चाहिए था। वे सादा चेहरे की बूढ़ी महिला थीं—न उनमें कोई खास आकर्षण था, न ही ज़्यादा नफासत—पर अपनी पसन्द का उन्हें बहुत मान था। वे अक्सर इसकी व्याख्या करने को तैयार रहती थीं—अगर व्याख्या उनकी कृपा के रूप में चाही जाए। जो कारण वह देतीं, वह उनसे बिलकुल अलग होते थे जो लोग सोचते थे। एक तरह से वह अपने पति से बिलकुल अलग रहती थीं, पर इसमें उन्हें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं लगता था। सहजीवन के प्रारम्भिक दिनों में ही उन दोनों ने यह जान लिया था कि कभी वे एक वक्त पर एक चीज़ नहीं चाह सकते—और इस तथ्य से प्रेरित होकर ही मिसेज़ टाउशेट आपसी मतभेद को दुर्घटना के बेहूदा क्षेत्र से बाहर ले गई थीं। उन्होंने फ्लौरेंस में अलग घर लेकर अपने को वहां स्थापित कर लिया था, और इस तरह मतभेद को एक नियमित रूप देकर इसे एक उदात्त भूमि प्रदान कर दी थी। पति को उन्होंने इंग्लैण्ड में बैंक की वहां की शाखा की देख-रेख के लिए अकेला छोड़ दिया था। यह व्यवस्था उनके विचार में बहुत अच्छी थी। यह वे प्रसन्नतापूर्वक और निश्चय के साथ कह सकती थीं। उनके पति को भी, लन्दन के एक कोहरीले चौक में रहते हुए, यह ऐसे ही लगता था—कभी-कभी यही तथ्य उन्हें सबसे निश्चित जान पड़ता था। पर उन्हें ज़्यादा अच्छा लगता अगर इस तरह की अस्वाभाविक स्थिति को कुछ अस्पष्ट रहने दिया जाता। असहमत होने के लिए सहमत होने में उन्हें बहुत प्रयत्न करना पड़ा था। वे इसके अलावा और किसी भी चीज से सहमत होने को तैयार थे—उन्हें समझ नहीं आता था कि आदमी सहमति या असहमति में इतना अटल क्यों हो। मिसेज़ टाउशेट को उसका न कोई अफसोस था, न आगे की कोई आशा। वे साल में महीने-भर के लिए अपने पति के पास आती थीं और उस दौरान यह अच्छी तरह समझा जाती थीं कि

जो तरीका उन्होंने अपनाया है, वही सबसे अच्छा है। मिसेज़ टाउशेट को अंग्रेज़ों का रहन-सहन पसन्द नहीं था। इसके तीन-चार कारण वे अक्सर बताया करती थीं। वे वहां की पुरानी जीवन-पद्धति सम्बन्धी कुछ छोटी-छोटी बातें थीं, पर मिसेज़ टाउशेट के विचार में वहां न रहने के लिए वे काफी थीं। उन्हें वहां की ब्रेड-सॉस नापसन्द थी। उनके ख्याल में वह पुलटिस जैसी नज़र आती थी और स्वाद उसका साबुन का-सा था। उन्हें एतराज़ था कि उनकी नौकरानियां बियर क्यों पीती हैं। उनका ख्याल था कि ब्रिटेन की धोबिनें अपना काम ठीक से नहीं जानतीं (मिसेज़ टाउशेट अपनी चादरों की सफाई का बहुत ख्याल रखती थीं)। एक खास अरसे के बाद वे अपने देश का चक्कर लगा आती थीं, पर इस बार वे पहले से कहीं ज़्यादा दिन वहां रुकी थीं।

इसमें सन्देह नहीं था कि अपनी भांजी को उन्होंने सचमुच अपना लिया था। वर्तमान घटना से चार महीने पहले, एक भीगी शाम को, वह लड़की अकेली एक किताब लिए बैठी थी। वह उसमें मगन थी—कहने का मतलब है कि अपने अकेलेपन से वह संतप्त नहीं थी। उसकी कल्पना उर्वर थी और जानने की उसमें बेहद भूख थी। फिर भी उस स्थिति में ताज़गी का अभाव था जो एक अप्रत्याशित अतिथि के आने से काफी दूर हो गया। अतिथि के आने की सूचना नहीं थी—लड़की को उसके आने का पता साथ के कमरे में उसके पैरों की आवाज़ से चला। वह एलबैनी का एक पुराना, बड़ा, चौकोर और दोहरा घर था जिसके निचले हिस्से की खिड़कियों में उसके बिकाऊ होने का बोर्ड लगा था। अन्दर आने के दो रास्ते थे जिनमें से एक चाहे इस्तेमाल नहीं होता था, फिर भी उसे हटाया नहीं गया था। दोनों थे बिलकुल एक-से—बड़े-बड़े सफेद दरवाज़े, धनुषाकार चौखट और गली की ईंट की पटरी की तरफ तिरछे जाते लाल पत्थर के स्तूपों पर बनी चौड़ी दो तरफा वत्तियां। बीच की दीवार निकालकर आपस में मिला दिए जाने से दोनों मकान एक ही आवास में बदल गए थे। ज़ीने के ऊपर के ये कमरे संख्या में कितने ही थे। सबका रंग-रोगन एक-सा था—पीलापन लिए सफेद, जो कि वक्त से अब मैला पड़ गया था। तीसरी मंजिल पर एक गुंबदनुमा छत वाली गैलरी थी जो घर के दोनों हिस्सों को जोड़ती थी, और जिसे इज़ाबेल और उसकी बहनें बचपन में गुफा कहा करती थीं। छोटी और अच्छी तरह रोशन होते हुए भी लड़कियों को वह काफी अजीब और अकेली-सी महसूस होती थी—खास तौर से

सर्दियों की शाम को। बचपन में वह अलग-अलग मौकों पर उस घर में रही थी—उन दिनों उसकी दादी वहां रहती थी। फिर दस साल के वकफे के बाद वह अपने पिता की मृत्यु से पहले एलबैनी आई थी। पहले के दिनों में बूढ़ी मिसेज़ आर्चर अपने परिवार के लोगों की विशेष रूप से आवभगत करती थीं—उन हफ्तों की बहुत खुशनुमा यादें इज़ाबेल के मन में थीं। इस घर का रहन-सहन उसके अपने घर से अलग तरह का था—जगह और साज-सामान ज्यादा होने से वहां रहना एक जलसे की तरह लगता था। एक खुशी यह थी कि बच्चों के साथ वहां ज्यादा कड़ाई का बरताव नहीं होता था और बड़ों की बातें सुनने का (जो कि इज़ाबेल के लिए बहुत बड़ा सुख था) वहां काफी मौका मिलता था। लोगों का आना-जाना वहां लगा ही रहता था—दादी के बेटे-बेटियां और उनके बच्चे खुशी-खुशी वहां आकर रहने का निमन्त्रण कबूल करते थे। इससे वह घर एक भरी हुई कस्बाती सराय जैसा लगता था जिसकी बूढ़ी नेक मालकिन बहुत उसासें भरती थी, और किसीसे बिल नहीं लेती थी। इज़ाबेल को बिल की जानकारी तब नहीं थी, पर छोटी होते हुए भी दादी का घर उसे बहुत रूमानी लगता था। पीछे ढके हुए दालान में एक झूला था जिसे झूलने में मज़ा भी आता था, डर भी लगता था। उससे आगे लम्बा ढालू बाग था जो तबेले तक जाता था। बाग के आड़ू के पेड़ बेहद आत्मीय जान पड़ते थे। इज़ाबेल अलग-अलग मौसमों में दादी के यहां आकर रही थी, पर आड़ू की गन्ध वहां उसे हर बार मिली थी। गली के उस पार एक पुराना घर था जिसे डच हाउस कहते थे। वह औपनिवेशिक काल के आरम्भ की एक अजीब-सी इमारत थी जिसकी ईंटों पर पीला रंग था। ऊपर का छज्जा अजनबियों की तरफ मुंह बाये रहता था। आगे लकड़ी की जर्जर छड़ें थीं। वह इमारत बगल की तरफ से गली में पड़ती थी। उसमें लड़के-लड़कियों का एक प्राइमरी स्कूल था जिसे चलाने, या अपने से चलने देने वाली एक तड़क-भड़क वाली महिला थी। इज़ाबेल को मुख्य रूप से उसके सम्बन्ध में इतना ही याद था कि इसके बालों में कनपटियों के पास रात को सोने की अजीब-सी कंघियां लगी रहती थीं और कि वह किसी जाने-माने आदमी की विधवा थी। वहीं पर इस लड़की को अपनी शिक्षा की बुनियाद डालने का अवसर दिया गया था, पर एक दिन काटकर ही उसने वहां के नियमों के प्रति विद्रोह कर दिया था। उससे बाद उसे घर पर रहने की इजाज़त मिल गई थी। सितम्बर के दिनों में जब डच हाउस की खिड़कियां खुली होतीं, तो

वह घर बैठी पहाड़े याद करते बच्चों की आवाज़ें सुना करती। इसमें उसे अपनी आज़ादी का सुख भी मिलता और मन में कटे होने का दुःख भी होता। उसकी शिक्षा की वास्तविक बुनियाद दादी के घर के अकेलेपन में पड़ी। क्योंकि ज़्यादा-तर लोग उस घर में पढ़े-लिखे नहीं थे, इसलिए वह बिना रोक-टोक वहां के पुस्त-कालय की पुस्तकें, जिनके मुखपृष्ठ बहुत सुन्दर थे, पढ़ सकती थी। उन्हें वह एक कुर्सी पर खड़ी होकर ऊपर से उतारती थी। जब उसे अपने मतलब की कोई किताब मिल जाती—और इसका निर्णय वह मुखपृष्ठ देखकर करती—तो वह उसे लेकर पुस्तकालय में आगे के कमरे में, जिसे सब लोग, जाने क्यों, दफ्तर कहते थे, चली जाती। वह किसका दफ्तर था, और किन दिनों, यह वह कभी नहीं जान सकी। उसके लिए इतना ही काफी था कि वहां आवाज़ गूंज कर सुनाई देती थी और उसमें से सीलन की गन्ध आती थी। लकड़ी का पुराना फर्नीचर जिसमें से बहुत-सा टूटा-फूटा नहीं था (और इससे लगता था कि व्यर्थ ही उसे फेंककर उस-के साथ अन्याय किया गया है), वहां भरा रहता था। जैसे कि अक्सर बच्चे किया करते हैं, उसने उस सारे सामान के साथ एक नाटकीय, और लगभग मानवीय, सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। खास तौर से फरदार कपड़े के एक सोफे के साथ जिसे उसने अपने सैकड़ों बाल-दुःख अकेले में सुनाए थे। उस स्थान की उदास रहस्यमयता का एक कारण यह था कि वहां पहुंचने का असली रास्ता दूसरे दरवाज़े से था—उस दरवाज़े से जो इस्तेमाल नहीं होता था और जिसके अर्गल इतने बड़े-बड़े थे कि उन्हें हिला पाना उस जैसी नाज़ुक लड़की के लिए खासा मुश्किल था। वह जानती थी कि यह स्थिर और खामोश सदर दरवाज़ा गली में खुलता है। अगर दोतरफा बत्तियां हरे कागज़ से बन्द न कर दी गई होतीं, तो वह झांककर छोटे-से भूरे स्तूप और खस्ताहाल ईंटों की पटरी को देख सकती थी। पर उसका झांककर देखने को मन न होता क्योंकि देख लेने से उसकी यह धारणा टूट जाती कि दरवाज़े के उस तरफ एक विचित्र-सी अनदेखी जगह है। अलग-अलग मनःस्थिति में, उसकी बाल-कल्पना के अनुसार, वह जगह कभी उसके मन में खुशी और कभी डर भर देती थी।

शुरू वसन्त की उस उदास शाम को भी, जिसका कि मैंने अभी ज़िक्र किया है, इज़ाबेल उस 'दफ्तर' में ही बैठी थी। वह उस समय सारे घर में से कोई भी कमरा चुन सकती थी, पर चुना था उसने यही कमरा जो वहां का सबसे मनहूस

कमरा था। उसने न अर्गल हटाया था और न ही बत्तियों का हरा कागज़ (जिसे दूसरे लोग फिर-फिर लगाते रहे थे)। यह बात वह मन में आने ही नहीं देना चाहती थी कि उसके उस तरफ एक बेहूदी-सी गली है। ज़ोर की बारिश हो रही थी—बेढब और ठण्डी। बसन्त के उन दिनों में एक व्यंग्यपूर्ण और अविश्वसनीय आवेदन-सा था—धीरज रखने के लिए! पर इज़ाबेल मौसम के उतार-चढ़ाव की तरफ बहुत कम ध्यान देती थी। वह किताब पर आंखें जमाए उसीमें ध्यान लगाने का प्रयत्न कर रही थी। उसे इधर लगने लगा था कि उसका मन काफी आवारा है और उसे उसने अपने आदेश के अनुसार फौजी ढंग से बढ़ना, रुकना, पीछे हटना और दूसरे मुश्किल करतब करना सिखाने में बहुत शक्ति खर्च की थी। अभी-अभी उसने अपने मन को आगे बढ़ने का आदेश दिया था और वह जर्मन विचारधारा के इतिहास के रेतीले मैदान में घिसटता हुआ चल रहा था। तभी इज़ाबेल को किसीके कदमों की आहट सुनाई दी—उसकी बौद्धिक गति से कहीं तेज़—और सुनकर उसे लगा कि दफ्तर के साथ के पुस्तकालय में कोई चल रहा है। पहले उसे लगा कि जिसके आने की उसे प्रतीक्षा थी, यह वही है, पर आहट से तुरन्त पता चल गया कि यह कोई स्त्री है जो वहां अजनबी है। जिसकी प्रतीक्षा थी, वह पुरुष था और अजनबी नहीं था। यह आहट उत्सुकतापूर्ण और प्रयोगात्मक किस्म की थी, और लग रहा था कि दफ्तर की दहलीज़ से पहले नहीं रुकेगी। तभी कमरे के दरवाज़े पर एक महिला आ खड़ी हुई। उसकी आंखें गौर से हमारी नायिका को देख रही थीं। वह बड़ी उम्र की सादी-सी औरत थी जो लम्बा-चौड़ा बरसाती लबादा पहने थी। उसके चेहरे का भाव खासा उद्धत था।

"ओह", वह आकर बोली, "तो तुम अक्सर यहीं बैठती हो?" कहते हुए उसने एक नज़र तरह-तरह की कुर्सियों-मेज़ों पर डाल ली।

"जब कोई मिलने आएं, तब नहीं," कहकर इज़ाबेल आने वाली का स्वागत करने उठ खड़ी हुई।

वह उसे साथ लेकर वापस पुस्तकालय की ओर चल दी। उसकी मेहमान चलते हुए भी आसपास देखती रही। "तुम लोगों के पास कितने ही कमरे हैं जो कुछ अच्छी हालत में हैं—पर वैसे हर चीज़ खस्ता हाल नज़र आती है।"

"आप मकान देखने आई हैं?" इज़ाबेल ने पूछा। "नौकरानी आपको दिखा देगी।"

"उसे भेज दो, मुझे मकान नहीं खरीदना है। वह शायद तुम्हें ढूंढ़ती हुई ऊपर की मंज़िल पर गई है। मुझे तो वह बिलकुल फूहड़-सी लगी। इससे कह दो कि अब परेशान न हो।" इज़ाबेल संकोच और आश्चर्य से इसे देखती खड़ी रही। बिन-बुलाई मेहमान अचानक आगे बोली, "तुम बेटियों में से हो न ?"

इज़ाबेल को उसका बेढंग बहुत बेतुका लगा। "यह इसपर निर्भर करता है कि आप किसकी बेटियों के बारे में कह रही हैं।"

"स्वर्गीय मिस्टर आर्चर की—और अपनी बेचारी बहन की !"

"ओह !" इज़ाबेल धीरे से बोली, "तो आप हमारी झक्की मौसी लिडिया हैं !"

"तुम्हारे पिता ने इसी तरह मेरा नाम लेना तुम्हें सिखाया है ? मैं तुम्हारी लिडिया मौसी हूं—पर झक्की मैं बिलकुल नहीं हूं। मुझे कभी दौरे नहीं पड़ते। तुम कौन-सी लड़की हो ?"

"मैं तीनों में सबसे छोटी हूं। मेरा नाम इज़ाबेल है।"

"हां, बाकी दो हैं लिलियन और एडिथ। तीनों में सबसे सुन्दर भी तुम्हीं हो ?"

"यह मैं कैसे कह सकती हूं ?" इज़ाबेल बोली।

"ज़रूर तुम्हीं होगी।" और इस तरह मौसी और भांजी की मित्रता शुरू हुई। बरसों पहले, अपनी बहन की मृत्यु के बाद, मौसी की बहनोई से लड़ाई हो गई थी—इस औरत ने उस आदमी की इस बात को लेकर खासी लानत-मलामत की थी कि अपनी लड़कियों को वह किस तरह पाल रहा है। बददिमाग आदमी होने से उसने इससे कह दिया था कि यह अपने काम से वास्ता रखे, और इसने अक्षरशः इस बात पर अमल किया था। बरसों इसने उस आदमी की खोज-खबर नहीं ली थी, और उसकी मृत्यु के बाद उसकी लड़कियों को भी एक शब्द नहीं लिखा था। लड़कियों को इसके बारे में जो अपमानजनक बातें सिखाई गई थीं, उनका अंदाज़ा उसी बात से हो सकता है जो इज़ाबेल ने अभी-अभी कही थी। मिसेज़ टाउशेट का आचरण, हमेशा की तरह, बिलकुल मनमानी का था। उन्होंने सोचा था कि वे अपने इन्वेस्टमेण्ट की देखभाल करने अमरीका जाएंगी (बहुत अच्छी आर्थिक समझ-बूझ के बावजूद उनके पति का इसमें कोई दखल नहीं था), तो उस मौके का लाभ उठाकर अपनी भांजियों के हालचाल का पता भी कर आएंगी। लिखने

की कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि चिट्ठी से उनके बारे में जो कुछ पता चलता, उसका उनकी नज़र में कोई महत्त्व नहीं था। उनका विश्वास था कि आदमी को हर चीज़ का पता खुद करना चाहिए। पर इज़ाबेल को लगा कि वे उनके बारे में काफी कुछ जानती हैं। दोनों बड़ी लड़कियों की शादी का उन्हें पता था। यह भी पता था कि उनके पिता ने उनके लिए कुछ खास पैसा नहीं छोड़ा—कि एलबैनी का वह घर ही है, विरासत का मिला, जिसे बेचकर लड़कियों को कुछ हासिल हो सकता है। यह भी कि इस काम की ज़िम्मेदारी लिलियन के पति एडमंड लुडलो ने अपने ऊपर ले रखी है। इसी सिलसिले में वे पति-पत्नी, जो मिस्टर आर्चर की बीमारी के दौरान एलबैनी आए थे, अब तक वहां रुके हुए थे, और इज़ाबेल के साथ उस पुराने घर में रह रहे थे।

"तुम्हें इस घर से कितना पैसा मिलने की उम्मीद है?" मिसेज़ टाउशेट ने इज़ाबेल से पूछा जो उन्हें बिठाने के लिए आगे के पार्लर में ले आई थी।

"यह मैं कैसे कह सकती हूं?" इज़ाबेल बोली।

"यह बात तुमने दूसरी बार मुझसे कही है," उसकी मौसी तुनक उठी। "पर चेहरे से तो तुम इतनी मूर्ख नज़र नहीं आतीं।"

"मैं मूर्ख नहीं हूं। पर पैसे के मामले का मुझे कुछ भी पता नहीं।"

"हां, इसी तरह तो तुम्हें पाला गया है—जैसे लाखों की विरासत तुम्हें मिलती हो। वैसे तुम्हें विरासत में मिला कितना है?"

"मुझे सच बिलकुल पता नहीं। आप एडमंड और लिलियन से पूछ लें—वे लोग अभी आधे घण्टे में लौट आएंगे।"

"फ्लोरेंस में हम इसे काफी बुरा मकान कहेंगे," मिसेज़ टाउशेट बोली। "पर यहां मेरा ख्याल है इसकी काफी अच्छी कीमत मिल जाएगी। तुम तीनों के हिस्से अच्छी रकम आनी चाहिए। पर इसके अलावा भी तो कुछ ज़रूर होगा। यह अजीब बात है कि तुम्हें कुछ पता ही नहीं। यह मकान बना अच्छी जगह पर है—शायद लोग इसे गिराकर यहां दुकानें बनवाएंगे। जाने तुम लोग खुद ही क्यों नहीं बनवा लेते? दुकानें किराये पर चढ़ाकर अच्छी आमदनी हो सकती है।"

इज़ाबेल उन्हें ताकती रही। दुकानें किराये पर चढ़ाने की बात उसके लिए नई थी। "मैं चाहूंगी कि लोग इसे गिराएं नहीं। मुझे यह घर बहुत पसन्द है।"

"इसमें पसन्द आने की पता नहीं कौन-सी चीज़ है। तुम्हारे तो पिता की

मृत्यु यहां पर हुई है।"

"हां, पर उससे घर से मुझे नफरत नहीं हो गई," लड़की कुछ अजीब-से लहजे में बोली। "मुझे वे जगहें पसन्द आती हैं जहां घटनाएं हुई हों—चाहे कोई बुरी घटना भी क्यों न हुई हो। कितने ही लोगों की मत्यु यहां हुई होगी। ज़िन्दगी की बेहद हलचल यहां रही है।"

"इसे तुम ज़िन्दगी की हलचल कहती हो ?"

"मेरा मतलब है इस घर को कितना ही अनुभव है—लोगों की भावनाओं का, दुःखों का। और दुःखों का ही नहीं, क्योंकि बचपन से मैंने यहां बहुत खुशी के दिन भी काटे हैं।"

"तुम्हें ऐसे घरों का शौक है जहां घटनाएं हुई हों, विशेष रूप से मृत्यु की, तो तुम्हें फ्लोरेंस जाना चाहिए। मैं वहां एक पुराने महल में रहती हूं जिसमें तीन-तीन खून हुए हैं। तीन का तो खैर पता है, और भी जाने कितने हुए होंगे।"

"पुराने महल में ?" इज़ाबेल ने दोहराया।

"हां-हां, पर इससे वह चीज़ बिलकुल अलग तरह की है। यह तो दुकानदारों का-सा घर है।"

इज़ाबेल थोड़ी भावनापूर्ण हो उठी क्योंकि उसके मन में अपनी दादी के घर के लिए बहुत इज़्ज़त थी। पर उसका भाव कुछ इस तरह का था कि उसके मुंह से निकला, "मैं फ्लोरेंस जाकर एक बार देखना चाहूंगी।"

"तुम ठीक से व्यवहार करो, और जैसा मैं कहूं, वैसा करो, तो मैं तुम्हें साथ ले जाऊंगी," मिसेज़ टाउशेट ने तुरन्त कहा।

इज़ाबेल की भावना पहले से गहरी हो गई। वह थोड़ा शरमाकर मुस्कराती हुई मौसी को देखती रही। "जैसा आप कहें, वैसा करूं, इसका वचन मैं नहीं दे सकती।"

"तुम चेहरे से भी उस तरह की नज़र नहीं आतीं। लगता है तुम्हें अपने ही मन से चलना पसन्द है। पर इसके लिए तुम्हें दोष देने वाली मैं कौन हूं ?"

"फिर भी, फ्लोरेंस चल सकने के लिए", लड़की पल-भर रुककर बोली, "मैं कुछ भी वचन दे सकती हूं।"

एडमंड और लिलियन जल्दी लौटकर नहीं आए, और मिसेज़ टाउशेट घंटा-भर लगातार अपनी उस भांजी से बात करती रहीं। इज़ाबेल को लगा कि उनका

व्यक्तित्व काफी अजीब, पर रोचक है—सही अर्थ में पहला 'व्यक्तित्व' है जिससे उसका परिचय हुआ है। झक्की तो वे उतनी ही थीं जितना कि इज़ाबेल सोचती थी, पर अब तक जब भी उसने किसीके बारे में सुना था कि वह झक्की है, तो उसे लगा था कि वह ज़रूर नोंच-खरोंच करने वाला खतरनाक व्यक्ति होगा। इसके लिए यह शब्द बीभत्स, बल्कि भयानक का संकेत लिए रहा था। पर अपनी मौसी को देखकर उसे लगा कि इस शब्द से वर्णित व्यक्ति अत्यधिक किन्तु सीधे-सादे व्यंग्य और उपहास का ही विषय हो सकता है। साथ ही उसके मन में सवाल उठा कि बातचीत का 'आम' ढंग जिसे उसने आज तक जाना था, क्या कभी दिलचस्प हो सकता है? आज तक किसीने उसके मन को उस तरह आकृष्ट नहीं किया था जिस तरह पतले होंठों और चमकती आंखों वाली यह महिला, जो विदेशी-सी नज़र आती थी, कर रही थी। उसका सारा तौर-तरीका इतना प्रभावशाली था कि उसके आकार की प्रभावहीनता इसमें छिप जाती थी। बरसों की इस्तेमालशुदा बरसाती पहने वह जैसे अपने घर की तरह यूरोप की दरबारों की बातें कर रही थी। मिसेज़ टाउशेट में दिखावट बिलकुल नहीं थी, पर वे सामाजिक स्तर पर किसीको अपने से बड़ा नहीं मानती थी। दुनिया के बड़े से बड़े लोगों के बारे में वे इसी स्वर से बात करती थीं, और एक सरल और संवेदनशील मन पर पड़ते अपनी बातों के प्रभाव की चेतना से मुग्ध थीं। पहले इज़ाबेल उनके कई सवालों का जवाब देती रही, और उसके जवाब सुनकर मिसेज़ टाउशेट उसकी बुद्धिमत्ता से प्रभावित हुईं। उसके बाद इज़ाबेल ने कई सवाल पूछे, और उसकी मौसी ने जिस किसी भी रुख से जवाब दिए, उसमें उसे वे गम्भीर चिन्तन की सामग्री प्रस्तुत करते जान पड़े। मिसेज़ टाउशेट जब तक उन्हें ठीक जान पड़ा, अपनी दूसरी भांजी का इंतज़ार करती रहीं। पर मिसेज़ लुडलो छः बजे तक भी नहीं आई, तो वे जाने के लिए तैयार हो गईं।

"तुम्हारी बहन बहुत बातूनी लगती है। क्या वह इसी तरह घंटों बाहर रहती है?"

"आप भी तो लगभग उतना ही समय बाहर रही हैं," इज़ाबेल बोली। "हो सकता है वह आपके आने से ज़रा ही देर पहले बाहर निकली हो।"

मिसेज़ टाउशेट उसकी तरफ देखती रहीं। उन्होंने बुरा नहीं माना था। बल्कि यह करारा जवाब उन्हें अच्छा ही लगा था। अपनी शिष्टता बनाए रखते

हुए उन्होंने कहा, "पर शायद उसके पास देर तक रुकने का इतना अच्छा कारण नहीं था। खैर, उससे कह देना कि शाम को उस बेहूदा होटल में आकर मुझसे मिल ले। चाहे, तो अपने पति को साथ लेती आए। पर तुम्हें नहीं। तुम बाद में काफी समय मेरे साथ रहोगी।"

४

मिसेज़ लुडलो तीनों बहनों में सबसे बड़ी थीं और सबसे समझदार मानी जाती थी। साधारण वर्गीकरण इस तरह था कि लिलियन व्यावहारिक है, एडिथ सुन्दर है और इज़ाबेल 'इंटलेक्चुअल' होने के नाते उच्चतर। मिसेज़ केज़, जो नम्बर दो पर थी, यूनाइटिड स्टेट्स इंजीनियर्ज़ के एक अफसर की पत्नी थी। क्योंकि इससे आगे हमारे इतिहास का उससे कोई सम्बन्ध नहीं, इसलिए इतना ही कहना काफी होगा कि वह सचमुच काफी सुन्दर थी और एक के बाद एक उन विचित्र फौजी स्टेशनों की—विशेष रूप से अनफेशनेबल पच्छिमी स्टेशनों की—शोभा बढ़ाती थी जहां, उसके मनस्ताप के बावजूद, उसके पति को निर्वासन मिलता रहता था। लिलियन ने न्यूयार्क के एक युवा वकील से शादी की थी जिसकी आवाज काफी ऊंची थी और जिसे अपने पेशे से बहुत लगाव था। चुनाव उसका भी एडिथ से बेहतर नहीं था, पर लिलियन के बारे में अक्सर कहा जाता था कि उसे इसीका शुक्र मनाना चाहिए कि उसकी शादी हो गई। देखने में वह अपनी बहनों की तुलना में बहुत साधारण थी। पर वह बहुत खुश थी। दो जिद्दी लड़कों की मां और फिफ्टी-थर्ड स्ट्रीट में भूरे पत्थर के एक बेमुहार खूंटे की मालकिन होने से अपनी स्थिति इतनी अच्छी समझती थी जैसे ज़िन्दगी में उसे एक बड़ी पनाह मिल गई हो। वह छोटे कद की गठी हुई स्त्री थी जो अच्छी आकृति का दावा तो नहीं कर सकती थी, पर रौबदाब न होने पर भी उसकी मौजूदगी खलती नहीं थी। लोग कहते थे कि शादी के बाद वह पहले से बेहतर हो गई थी। ज़िन्दगी में दो चीज़ों का अहसास उसे सबसे ज़्यादा था—एक अपने पति की तर्कशक्ति का और दूसरे अपनी बहन इज़ाबेल की मौलिकता का। "मैं

कभी इज़ाबेल के बराबर नहीं चल सकी," वह अक्सर कहती, "कोशिश करती, तो मेरा पूरा वक्त उसीमें चला जाता।" पर इसके बावजूद वह उसकी इतनी फिक्र करती थी कि उसे आंख से ओझल नहीं होने देती थी। इज़ाबेल पर उसी तरह उसका ध्यान लगा रहता था जैसे एक महत्त्वपूर्ण स्पेनियल का एक स्वच्छन्द शिकारी कुत्ते पर। "मैं चाहती हूं इसकी ठीक से कहीं शादी हो जाए—बस, यही मैं चाहती हूं," वह अक्सर अपने पति से कहा करती।

"कम से कम मैं उससे कभी शादी न करता," एडमंड लुडलो अक्सर चुभती आवाज़ में कहता।

"मुझे पता है तुम केवल तर्क के लिए ऐसा कहते हो। हमेशा तुम्हें मुझसे उलटी बात कहनी होती है। वह बहुत मौलिक है—इसके अलावा तुम इसके खिलाफ क्या कह सकते हो?"

"मुझे मौलिक चीज़ें पसन्द नहीं, अनुवाद ज्यादा पसन्द हैं", मिस्टर लुडलो ने एक से अधिक बार कहा था। "इज़ाबेल विदेशी ज़बान में लिखी एक किताब है। मेरे कुछ पल्ले नहीं पड़ता। उसे तो किसी आर्मीनियन या पुर्तगाली से शादी करनी चाहिए।"

"मुझे तो डर है कि वह ऐसा कर भी बैठेगी," लिलियन ने ज़ोर देकर कहा। वह समझती थी इज़ाबेल कुछ भी कर सकती है।

उसने बहुत दिलचस्पी के साथ इज़ाबेल से मिसेज़ टाउशेट की आमद के बारे में सुना और शाम होने पर मौसी के आदेश का पालन करने के लिए तैयार हो गई। इज़ाबेल ने उससे क्या कहा, यह तो पता नहीं, पर उससे हुई बात का इतना असर ज़रूर हुआ कि घर से चलने की तैयारी करते समय उसने अपने पति से कहा, "मुझे पूरी आशा है कि वे इज़ाबेल के भले के लिए कुछ न कुछ ज़रूर करेंगी। लगता है लड़की उन्हें बहुत भा गई है।"

"तुम क्या चाहोगी कि वे क्या करें?" एडमंड लुडलो ने पूछा, "उसे कोई बड़ा-सा उपहार ले दें?"

"ना, ऐसा कुछ नहीं। बस इसमें दिलचस्पी लें, इसे हमदर्दी दें। वे ऐसी महिला हैं जो इज़ाबेल को समझ सकती हैं। वे विदेशी समाज में इतना ज़्यादा रही हैं। इज़ाबेल को उन्होंने वे सब बातें बताई हैं। तुम्हीं तो कहा करते हो, इज़ाबेल बहुत कुछ विदेशी-सी है।"

"तो तुम चाहती हो कि वे इसे थोड़ी-सी विदेशी हमदर्दी दें ? तुम्हारा ख्याल है उसे घर पर यह चीज़ कम मिलती है ?"

"नहीं, मेरा ख्याल है उसे विदेश जाना चाहिए," मिसेज़ लुडलो बोली। "ऐसी लड़की का विदेश जाना जरूरी है।"

"और तुम चाहती हो कि बुढ़िया उसे साथ ले जाए, यही न ?"

"उन्होंने कहा है साथ ले जाने के लिए—वे तो उसे साथ ले जाने को बेहद उतावली हैं। जो मैं उनसे चाहती हूं, वह यह है कि वहां पहुंचने पर वे इसे सब तरह की सुविधाएं दें। हमें बस इतना ही देखना है," मिसेज़ लुडलो ने बात पूरी की, "कि इसे ज़िन्दगी में ठीक मौका मिल सके।"

"मौका—किस चीज़ का ?"

"अपना विकास करने का।"

"ओह ईश्वर !" एडमंड लुडलो बोला, "वह और विकास न ही करे, तो बेहतर है।"

"मुझे पता है तुम सिर्फ दलील के लिए ऐसी बातें करते हो। नहीं तो सचमुच मुझे बहुत बुरा लगे," मिसेज़ लुडलो ने कहा, "पर तुम भी जानते हो कि तुम उसे कितना प्यार करते हो।"

"तुम जानती हो मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूं ?" युवा लुडलो ने कुछ देर बाद अपने हैट पर ब्रश करते हुए इज़ाबेल से कहा।

"मुझे इतना ही पता है कि मुझे तुम्हारे प्यार करने या न करने की कोई परवाह नहीं", इज़ाबेल बोली। पर उसके स्वर और मुस्कराहट में वह उद्धतता नहीं थी जो उसके शब्दों में थी।

"हां, मिसेज़ टाउशेंट के आने के बाद से यह अपने को बहुत समझने लगी है," उसकी बहन ने कहा।

पर इज़ाबेल ने काफी गम्भीरता के साथ इस बात का विरोध किया। "देखो, ऐसा मत कहो, लिली ! मैं अपने को बहुत नहीं समझ रही।"

"पर समझो, तो हर्ज भी क्या है ?" लिली समझौते के स्वर में बोली।

"पर मिसेज़ टाउशेंट के आने में ऐसा क्या है जिससे मैं अपने को बहुत समझने लगूं ?"

"ओह !" लुडलो बोला, "यह तो अब और भी बड़ी होकर बात करने लगी।"

"मैं कभी अपने को बड़ी समझूंगी," इज़ाबेल बोली, "तो वह किसी और ही वजह से होगा है।"

अपने को बड़ी समझने न समझने की बात दर-किनार, वह कुछ अलग-सी ज़रूर महसूस कर रही थी—जैसे कि उसके साथ कोई घटना होकर हटी हो। शाम को अकेली रह जाने पर वह कुछ देर रोज़ के काम छोड़कर खाली हाथ लैम्प के पास बैठी रही। फिर उठकर पहले उसी कमरे में, फिर एक कमरे से दूसरे कमरे में टहलने लगी—ज़्यादा वहां रुकते हुए जहां लैंप की धुंधली रोशनी समाप्त होती थी। वह अस्थिर और उत्तेजित थी, और बीच-बीच में थोड़ा कांप जाती थी। जो कुछ हुआ था, उसका महत्त्व उसके लिए घटना की वास्तविकता से कहीं ज़्यादा था—उससे जैसे उसका जीवन ही बदल रहा था। उसमें आगे क्या होने को है, यह अभी अनिश्चित था। पर इज़ाबेल जिस स्थिति में थी, उससे कोई भी परिवर्तन उसके लिए मूल्यवान् था। उसकी इच्छा थी कि अतीत पीछे छूट जाए। वह अपने से कह रही थी कि उसे अब नये सिरे से शुरू करना है। यह इच्छा वर्तमान परिस्थिति से पैदा नहीं हुई थी। वह उतनी ही परिचित थी जितनी खिड़की पर वर्षा की आवाज़ ''इससे पहले भी कितनी बार वह नये सिरे से शुरू कर चुकी थी। खामोश पार्लर के एक झुटपुटे कोने में वह आंखें बन्द किए बैठी रही। पर इसलिए नहीं कि ऊंघ में अपने को भूली रहे, बल्कि इसलिए कि वह बहुत सचेत महसूस कर रही थी और एकसाथ बहुत कुछ देखने से बचना चाहती थी। उसकी कल्पना अजब बेढंगे ढंग से क्रियाशील थी—जब दरवाज़ा बन्द मिलता, तो वह खिड़की से बाहर कूद जाती थी। उसपर अर्गली लगाकर रखने की उसे आदत नहीं थी। कुछ महत्त्वपूर्ण अवसरों पर यदि वह केवल अपनी निर्णय-बुद्धि पर निर्भर करती, तो सही कदम उठाती। पर बिना निर्णय के देखने की अपनी आदत को ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ावा देने से वह मार खा जाती थी। इस समय, इस ख्याल से कि परिवर्तन अब सामने है, धीरे-धीरे उन सब चीज़ों के बिम्ब उसके मन में उभर रहे थे जिन्हें वह पीछे छोड़कर जा रही थी। जीवन के गुज़रे हुए दिन और साल जैसे लौट आए थे। उस खामोशी में जिसे केवल पीतल की दीवार-घड़ी की टिकटिक ही तोड़ रही थी, वह उन्हें सामने से गुज़रते देख रही थी। उसका जीवन काफी हद तक खुशियों से भरा और सौभाग्यपूर्ण रहा था। यही बात सबसे ऊपर उभरकर आ रही थी। उसे

हर चीज़ सबसे अच्छी मिली थी। दुनिया में जहां ज्यादातर लोगों के हालात अच्छे नहीं थे, यह बड़ी बात थी कि उसे किसी बहुत दुःखदायी परिस्थिति का सामना नहीं करना पड़ा। उसे बल्कि लग रहा था कि दुःखदायी परिस्थितियां उसकी जानकारी से कुछ ज्यादा ही दूर रही हैं, क्योंकि साहित्य के अध्ययन से उसने जाना था कि ऐसी परिस्थितियां काफी दिलचस्प और शिक्षाप्रद होती हैं। उसके पिता ने—जो इतने सुन्दर और इतने प्यारे थे—इन्हें उससे दूर रखा था क्योंकि उन्हें सदा इनसे वितृष्णा रही थी। उनकी पुत्री होना अपने में ही एक सौभाग्य था। यह सोचते हुए उसे अपने पिता पर गर्व भी होने लगा। उनकी मृत्यु के बाद उसे लगा था कि अपने बच्चों को वे हमेशा ज़िंदगी का बेहतर रूप ही दिखाते थे, हालांकि वे उसके कुरूप पक्ष से जितना बचना चाहते थे, वस्तुतः बच नहीं पाते थे। पर इससे उनके प्रति उसकी कोमलता और बढ़ रही थी। बल्कि यह सोचकर कुछ पीड़ा का भी अनुभव होता था कि वे कितने उदार, कितने सज्जन तथा कठोर वास्तविकताओं के प्रति कितने उदासीन रहे थे। बहुत-से लोगों का ख्याल था कि यह उदासीनता सीमा से कहीं आगे जाकर थी—विशेष रूप से उनका जिनके वे देनदार थे। इज़ाबेल ऐसे लोगों की सम्मति से ठीक परिचित नहीं थी, पर हम अपने पाठकों को बता सकते हैं कि वे लोग जहां यह मानते थे कि स्वर्गीय मिस्टर आर्चर का मस्तिष्क मेधावी और स्वभाव बहुत ग्रहणशील था (उनमें से एक शायद इसका यह कारण बताता कि वे हमेशा कुछ न कुछ ग्रहण करते रहते थे), वहां उनका यह भी कहना था कि वे अपनी ज़िंदगी का सही उपयोग नहीं कर रहे थे। वे बहुत पैसा उड़ाते थे, इन्तिहा की खुशमिजाज़ी उनमें थी, और वे जी खोलकर जुआ खेलते थे। कुछ कड़े आलोचक तो यहां तक कहते थे कि उन्होंने अपनी लड़कियों को ठीक से नहीं पाला। कि उन्हें न ठीक से शिक्षा मिली और न ही एक स्थायी घर। कि ठीक देखभाल न होने से वे बिगड़ भी गईं। कि वे नर्सों और आयाओं के साथ ही रहती रहीं (जो ज्यादातर बुरी थीं) या फ्रांसीसियों द्वारा चलाए गए फालतू-से स्कूलों में भेजी गईं, जहां से महीना खत्म होते न होते रोती हुई उठा ली गईं। स्थिति का इस रूप में देखा जाना इज़ाबेल को काफी परेशान कर देता क्योंकि उसकी अपनी राय में उसे बहुत ज्यादा अवसर मिले थे। बल्कि एक बार जब उसके पिता ने तीन महीने के लिए लड़कियों को नॉफ़शातेल में

एक फ्रांसीसी सुन्दरी के पास छोड़ दिया, और वह उसी होटल में ठहरे हुए एक सम्भ्रान्त रूसी के साथ भाग गई, तो उस असाधारण परिस्थिति में भी (हालांकि तब वह सिर्फ ग्यारह साल की थी) न वह डरी थी और न ही उसे शरम लगी थी। उसे उसने अपनी उदार शिक्षा की एक रूमानी घटना ही माना था। उसके पिता का जीवन-सम्बन्धी दृष्टिकोण बहुत विशाल था, और उनकी अस्थिरता तथा कभी-कभी का परस्पर-विरोधी व्यवहार उसीका प्रमाण था। वे चाहते थे कि उनकी लड़कियां बचपन में ही ज़्यादा से ज़्यादा ज़िन्दगी देख लें। इसी उद्देश्य से इज़ाबेल के चौदहवां साल पूरा करने से पहले ही उन्हें तीन बार अतलान्तिक के पार ले गए थे, हालांकि हर बार उन्होंने प्रस्तावित विषय को समझने के लिए उन्हें कुछ महीने से ज़्यादा समय नहीं दिया। इससे इज़ाबेल की उत्सुकता शान्त न होकर और बढ़ गई थी। उसे अपने पिता की हिमायत करनी ही थी क्योंकि वह उस तिगड्डे में से एक थी जो उनके जीवन के अनकहे अरुचिकर पक्ष की क्षतिपूर्ति करता था। आखिरी दिनों में साधारणतया वे चाहने लगे थे कि दुनिया को छोड़ जाएं क्योंकि यहां आदमी ज्यों-ज्यों बड़ा होता है, त्यों-त्यों अपनी मर्ज़ी से जी सकने की सम्भावनाएं उसके लिए कम होती जाती हैं। पर इसमें उन्हें एक ही तकलीफ थी, और वह थी अपनी इस चतुर, उच्चतर और असाधारण लड़की से बिछुड़ने की। बाद में जब यूरोप की यात्राएं समाप्त हो गईं, तो भी वे अपनी लड़कियों के हर तरह के लाड़ पूरे करते रहे। अगर पैसे की कमी की वजह से उन्हें परेशानी भी हुई, तो उन्होंने लड़कियों का यह भोला अहसास कम नहीं होने दिया कि उनके पास बहुत कुछ है। इज़ाबेल चाहे बहुत अच्छा नाचती थी, पर न्यूयार्क के नृत्य-समाज की एक सफल सदस्य वह कभी नहीं रही थी। उसकी बहन एडिथ, जैसा कि सभी कहते थे, कहीं ज़्यादा लोकप्रिय थी। एडिथ अत्यधिक सफल थी, और इस सफलता का रहस्य इज़ाबेल से छिपा नहीं था। वह यह भी जानती थी कि एडिथ की तरह एक विशेष प्रभाव के साथ कूदना, थिरकना और चीखना उसके बस का नहीं है। बीस में से उन्नीस व्यक्ति (जिनमें इज़ाबेल भी थी) विश्वास के साथ एडिथ को दोनों में ज़्यादा सुन्दर बताते थे। पर बीसवां व्यक्ति न सिर्फ इससे उलटा सोचता, बल्कि उसे यह भान भी होता कि बाकी लोगों की सौन्दर्य-दृष्टि बाज़ारू किस्म की है। अपने स्वभाव की गहराइयों में इज़ाबेल के अन्दर दूसरों को प्रसन्न करने की अदम्य इच्छा एडिथ से कहीं ज़्यादा थी। पर वे

गहराइयां इतनी दूर पड़ती थीं कि उनके और सतह के बीच आदान-प्रदान, दर्जन भर उथले कारणों से, सम्भव नहीं हो पाता था। वह बहुत-से नवयुवकों को देखती जो कि उसकी बहन से मिलने आते। पर साधारणतया उससे वे डरे रहते—उन्हें जैसे लगता कि उससे बात करने के लिए एक ख़ास तैयारी की ज़रूरत है। वह बहुत पढ़ती है, यह ख्याति पौराणिक देवियों के आसपास की धूमिल ज्योति की तरह उसे घेरे थी। इससे लगता कि उससे कठिन सवाल ही पूछे जा सकते हैं जिससे बातचीत निचले तापमान पर ही रहती। वह चाहती थी कि लोग उसे चतुर समझें, पर किताबी कीड़ा समझे जाने से उसे कोफ्त होती। वह अपनी पढ़ाई अकेले में करती, और याददाश्त अच्छी होने पर भी उद्धरण देने से बचा करती। जानने की गहरी भूख होने पर भी वह चाहती कि छपे शब्दों के बाहर से ही उसे जानकारी हासिल हो सके। जीवन के प्रति उसमें असीम जिज्ञासा थी और वह हर समय देखती और मन में सवाल करती रहती थी। उसके अपने अन्दर जीवन का भरा हुआ कोष था, और उसे सबसे गहरा सुख यह अनुभव करने में मिलता था कि उसकी आत्मा के स्पन्दन और संसार के प्रतिघातों में क्या तारतम्य है। इसीसे उसे भीड़-भाड़ को और दूर-दूर तक के स्थल-विस्तार को देखने का, तथा युद्धों और क्रांतियों के बारे में पढ़ने का शौक था। साथ ही ऐतिहासिक तस्वीरों को देखने का—जिनमें संघटन-दोषों के रहते हुए भी, वह जान-बूझकर, विषय की खातिर, उनकी कलात्मक न्यूनताओं को क्षमा कर देती थी। गृह-युद्ध के दिनों में वह अभी बहुत छोटी थी। पर उस लम्बी अवधि में महीनों वह अति की सीमा तक उत्तेजित रही थी। कभी-कभी तो (उसे खुद समझ न आता कि क्यों) वह दोनों ओर की सेनाओं की वीरता से समान रूप से उत्साहित हो उठती थी। आने वाले युवकों के सन्दिग्ध और आत्म-सीमित रहने का अर्थ यह नहीं था कि वह सामाजिक रूप से बहिष्कृत रहती थी। बहुत-से नवयुवकों ने, जिनके दिल उसके पास आते हुए उतनी मात्रा में ही धड़कते थे कि उनके होश भी साथ कायम रहें, उसे उसकी उम्र और नारीत्व-चेतना के अतिशय नियन्त्रण से मुक्त किया था। उसे वह सभी कुछ मिला था जो किसी भी लड़की को मिल सकता है—प्रशंसा, कोमलता, उपहार, गुलदस्ते, यह चेतना कि वह अपनी ज़िन्दगी के किसी भी अधिकार से वंचित नहीं है। नाचने के असंख्य अवसर, बहुत-सी नई-नई पोशाकें, 'लण्डन स्पेक्टेटर' नई से नई पुस्तकें,

गूनॉद का संगीत, ब्राउनिंग की कविताएं तथा ज्यार्ज इलियट का गद्य।

अब जब कि उसकी याददाश्त इन चीज़ों पर से गुज़र रही थी, वे सब दृश्यों और आकृतियों के एक समूह में ढल गई थीं। भूली चीज़ें याद आ रही थीं और वे जो कुछ देर पहले तक बहुत महत्त्वपूर्ण लग रही थीं, ओझल होती जा रही थीं। लग रहा था जैसे वह एक आले में एक निरन्तर परिवर्तनशील दृश्य देख रही हो। पर किसी पुरुष की चिट लेकर नौकरानी के चले आने से आले की गति रुक गई। आने वाले का नाम था कैस्पर गुडवुड। वह बोस्टन का रहने वाला एक सीधा-सा युवक था जिसका मिस आर्चर से बारह महीने से परिचय था। उसका ख्याल था कि इज़ाबेल अपने समय की सबसे सुन्दर युवती है। पर जो नियम मैंने बताया है, उसके अनुसार उसने यह भी घोषणा की थी कि यह समय इतिहास का एक मूर्खता-पूर्ण काल है। वह कभी-कभी उसे पत्र लिखा करता था और पिछले दो-एक हफ्तों में उसके पत्र न्यूयार्क से आए थे। इज़ाबेल सोच ही रही थी कि शायद वह आए—बल्कि वर्षा का वह पूरा दिन कहीं मन में उसका इन्तज़ार करती रही थी। पर अब उसके आने की सूचना पाकर उसे ऐसी विशेष उत्सुकता नहीं हुई कि उठकर उसका सत्कार करे। वह जितने युवकों से आज तक मिली थी, उनमें वह सबसे बढ़िया था—यूं अपने में भी वह एक प्रशंसनीय युवक था जिसे देखकर इज़ाबेल के मन में एक विशेष और अलग तरह का आदर भाव जाग उठता था। और किसीने यह भाव उसके मन में नहीं जगाया था। लोगों का ख्याल था कि वह इज़ाबेल से शादी करना चाहता है, पर यह बात उन दोनों के अपने बीच की थी। हां, इतना कहा जा सकता है कि वह न्यूयार्क से एलबैनी सिर्फ उससे मिलने के लिए ही आया था। वह कुछ दिन न्यूयार्क में ठहरा था और उसका ख्याल था कि इज़ाबेल उसे वहीं मिल जाएगी। पर वहां उसे पता चला कि वह अभी प्रादेशिक राजधानी में ही है। इज़ाबेल ने उसके पास जाने में थोड़ा समय लिया। मन में नई उलझनें लिए वह कमरे में टहलती रही। आखिर वह उसके सामने आई, तो वह लैम्प के पास खड़ा था। वह लम्बा-तगड़ा और थोड़ी कड़ी चमड़ी का युवक था। दुबला और रंग का भूरा। उसकी सुन्दरता रूमानी ढंग की न होकर बहुत कुछ अवर्णनीय-सी थी। पर उसके निर्माण में कुछ ऐसा था जो अपनी ओर ध्यान खींचता था। उसकी जड़ी हुई-सी नीली आंखों का आकर्षण न्यूनाधिक मात्रा में हरएक के ध्यान को बांधता भी था। वे आंखें उसकी न होकर किसी और ही चेहरे की जान पड़ती थीं। जबड़ा

जिस तरह बाहर को निकला था, उससे उसके दृढ़ निश्चय का आभास मिलता था। इज़ाबेल को लगा कि उस रात उसका दृढ़ निश्चय और भी स्पष्ट है। पर इसके बावजूद, आधे घण्टे में कैस्पर गुडवुड, जो आशा और निश्चय के साथ वहां आया था, हारे हुए मन से वापस अपने निवास-स्थान को लौट गया। यहां यह भी कहना चाहिए कि वह आसानी से हार मानने वाला आदमी नहीं था।

५

रैल्फ टाउशेट स्वभाव से दार्शनिक था, फिर भी (ठीक पौने सात बजे) उसने एक उत्कण्ठा लिए हुए अपनी मां के दरवाज़े पर दस्तक दी। दार्शनिकों के भी अपने पक्षपात होते हैं, और यह स्वीकार करना होगा कि माता-पिता में से वात्सल्य का मधुर भाव उसे पिता से ही प्राप्त हुआ था। वह अक्सर अपने से कहा करता था कि उसके पिता उसके लिए मां की तरह हैं और मां पिता की तरह। उन दिनों के बोलचाल की ज़बान में मां का ही घर में शासन चलता था। फिर भी अपने इकलौते बेटे से उन्हें बहुत प्यार था और उनका हठ रहता था कि वह साल में तीन महीने उनके साथ ज़रूर बिताए। रैल्फ़ उनके इस प्यार का पूरा उपयोग करता था। वह जानता था कि अपनी हर तरह से व्यवस्थित और नौकरों पर आश्रित ज़िन्दगी में उसकी तरफ उनका ध्यान दूसरी छोटी-छोटी परेशानियों से मुक्त होने—मतलब अपने आदेश के अनुसार कुछ छोटे-छोटे काम ठीक वक्त पर करा लेने के बाद ही जाता है। वह पहुंचा, तो वे डिनर की पोशाक में बिलकुल तैयार थीं। फिर भी अपने दस्तानों में ढके हाथों से उसे आलिंगन कर उन्होंने अपने पास सोफे पर बैठने को कहा। बहुत बारीक-बीनी के साथ उन्होंने उससे उसकी और अपने पति की सेहत के बारे में पूछा। दोनों के बारे में ज़्यादा तसल्लीबख्श जवाब न पाकर बोलीं कि उन्हें पहले से ज़्यादा यकीन हो गया है कि इंगलैण्ड की आबो-हवा से अपने को बचाए रखकर उन्होंने कितनी अक्लमन्दी की है। वरना वे भी अब तक पस्त हो जातीं। रैल्फ अपनी मां के पस्त होने की बात पर मुस्कराया, पर इस बात की तरफ उनका ध्यान दिलाने की

कोशिश नहीं की कि उसकी खुद की बीमारी का इंग्लैण्ड की आबो-हवा से कोई ताल्लुक नहीं, क्योंकि साल का ज्यादातर हिस्सा वह वहां से बाहर रहता है।

वह बहुत छोटा था जब उसके पिता डेनियल ट्रेसी टाउशेट, जो बरमौंट प्रदेश के अन्तर्गत रटलैंड के रहने वाले थे, एक बैंकिंग संस्था के छोटे साझीदार के रूप में इंग्लैंड आए थे। दस साल बाद उस संस्था पर उनका प्रमुख अधिकार हो गया था। तब डेनियल टाउशेट को लगा कि अब ज़िन्दगी-भर उन्हें इस अपनाए हुए देश में रहना होगा। पर इस चीज़ को उन्होंने बहुत सादा, सुलझे हुए और विमर्शपूर्ण ढंग से स्वीकार कर लिया। पर अपना अमरीकीपन छोड़ देने का उनका कतई इरादा नहीं था, न ही वे अपने बेटे को यह सूक्ष्म कला सिखाना चाहते थे। बिना अपने को बदले, इंग्लैंड में घुल-मिलकर रहना उनके लिए इतनी आसान बात रही थी कि उनका ख्याल था उनकी मृत्यु के बाद उनका कानूनी वारिस भी उसी आसानी से उस पुराने धुआंरे बैंक को उजली अमरीकन रोशनी में चलाता रहेगा। इस रोशनी की रंगत गाढ़ी करने के लिए उन्होंने लड़के को पढ़ाई के लिए अमरीका भेजा था। कई साल एक अमरीकन स्कूल में पढ़ने के बाद रैल्फ ने एक अमरीकन यूनीवर्सिटी से डिग्री ली। पर वापस आने पर उसके पिता को लगा कि उसमें स्वदेशीपन कुछ ज्यादा ही आ गया है, तो उन्होंने तीन साल उसे आक्सफर्ड में बोर्डिंग में रखा। आक्सफर्ड ने हार्वर्ड को निगल लिया जिससे रैल्फ में आखिरकार काफी अंग्रेजियत आ गई। पर बाहरी तौर पर आसपास के रंग-ढंग से तालमेल रखना एक ऐसा नक़ाब था जिसके नीचे उसके मन की आज़ादी बरकरार थी। किसी चीज़ का उसपर स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता था। व्यंग्य और जोखिम में स्वाभाविक रुचि होने से वह अपने मन को बे-इन्तिहा आज़ादी दिए रहता था। उसे शुरू में काफी होन-हार नवयुवक माना जाता था। आक्सफर्ड में उसे अतिरिक्त सफलता मिली थी जिससे उसके पिता को अकथनीय प्रसन्नता हुई थी। उसके आसपास के लोगों को बहुत-बहुत दुःख था कि ऐसे होनहार युवक को कोई सही पेशा अपनाने का अवसर नहीं मिला। अमरीका जाकर वह कोई ऐसा पेशा अपने लिए चुन सकता था (हालांकि यह भी कुछ संदिग्ध ही है)। मिस्टर टाउशेट उसे अपने से अलग रखने को तैयार हो भी जाते (जो कि वे नहीं थे), तो भी खारे पानी का इतना

बड़ा विस्तार उनके और अपने बीच ले आना उसके लिए आसान न होता,क्योंकि अपने पिता को वह अपना सबसे अच्छा मित्र समझता था। रैल्फ को अपने पिता से केवल लगाव ही नहीं था, वह उनका प्रशंसक भी था और उनकी निकटता से अपने को वंचित नहीं करना चाहता था। उसके विचार में डेनियल टाउशेट अपने विषय के जीनियस थे। बैंक-व्यवसाय के रहस्यों में दिलचस्पी न रहते हुए भी उसने काफी हद तक यह काम इसीलिए सीखा था कि इस क्षेत्र में अपने पिता की देन का सही अन्दाज़ लगा सके। पर उसकी सबसे बड़ी दिलचस्पी इसमें न होकर उनके व्यक्तित्व की मंजी हुई और इंग्लैंड की हवा से निखरी हाथीदांती सतह में थी जिसे भेद सकने का वे किसीको मौका नहीं देते थे। डेनियल टाउशेट स्वयं न हार्वर्ड में पढ़े थे, न आक्सफर्ड में, और यह उनका अपना दोष था जो उन्होंने आधुनिक आलोचना की कुंजी अपने लड़के के हाथ में दे दी थी। रैल्फ अपने पिता की मौलिकता की बहुत कद्र करता था, हालांकि वे बिलकुल नहीं जान पाते थे कि लड़के के दिमाग में क्या-क्या विचार भरे रहते हैं। अमरीकनों की इस बात के लिए प्रशंसा की जाती है कि वे विदेशी वातावरण में बहुत आसानी से अपने को खपा लेते हैं। मिस्टर टाउशेट की आधी सफलता ही इस लचीलेपन पर आश्रित थी। प्रारम्भिक संस्कारों के अधिकतर प्रभाव उनमें ताज़ा बने रहे थे। रैल्फ को हमेशा उनकी आवाज़ में न्यू इंग्लैंड के अति-समृद्ध भागों की ध्वनि पाकर खास खुशी होती। जीवन के अन्तिम छोर पर पहुंचकर अपनी समृद्धि के बराबर ही कोमलता भी उनमें आ गई थी। एक ओर उनमें छा लेने वाली चतुरता थी, तो दूसरी ओर अनायास दोस्त बना लेने की आदत। उनकी सामाजिक स्थिति, जिसकी वे कभी चिन्ता ही नहीं करते थे, एक बेदाग फल की-सी पूर्णता लिए थी। इंग्लैंड की आबो-हवा एक ग्रहणशील अजनबी पर प्राय: जो प्रभाव डालती है, उससे वे अछूते रहे थे—शायद कल्पना या ऐतिहासिक चेतना के अभाव के कारण। कुछ अन्तर से जिनका उन्हें पता ही नहीं चलता था, कुछ आदतें थीं जो उन्होंने कभी सीखी ही नहीं थीं, कुछ अव्यक्त बातें थीं जो जिन्हें उन्होंने कभी लक्ष्य ही नहीं किया था। उन बातों को वे लक्ष्य कर पाते, तो उनका बेटा शायद उनकी उतनी कद्र न करता।

आक्सफर्ड छोड़ने के बाद रैल्फ दो साल घूमता रहा। उसके बाद अपने पिता के बैंक में उसे एक ऊंचा स्टूल संभलवा दिया गया। ऐसे पद की ज़िम्मे-

दारी और इज्जत मेरे ख्याल में स्टूल की ऊंचाई पर निर्भर न करके किन्हीं और चीजों पर निर्भर करती है—और रैल्फ को अपनी टांगों की ऊंचाई की वजह से काम के वक्त खड़े या घूमते रहना ज्यादा पसन्द था। पर इस अभ्यास में वह थोड़ा ही समय लगा सका क्योंकि डेढ़ साल में उसे पता चल गया कि वह भीषण रूप से बीमार है। उसे सख्त नज़ला हुआ था जो उसके फेफड़ों में जम गया था और जिससे फेफड़ों की हालत खराब हो गई थी। कामकाज छोड़कर उसे अपनी देखभाल करने की सख्त ताकीद पर अमल करना पड़ा। शुरू-शुरू में उसने यह काम खासी लापरवाही से किया। जैसे कि जिसकी देखभाल की जानी थी वह व्यक्ति वह स्वयं न होकर एक ऐसा अनमना और गैर-दिलचस्प आदमी हो जिससे उसका कुछ लेना-देना नहीं था। पर परिचय बढ़ने पर यह व्यक्ति उसे पहले से बेहतर लगने लगा और धीरे-धीरे इसके लिए उसने मन में एक अनचाही सहनशीलता और छिपी-सी आदर भावना पैदा होने लगी। दुर्भाग्य अजीब-अजीब लोगों में दोस्ती पैदा कर देता है। रैल्फ ने यह महसूस किया कि इस स्थिति से उसपर कुछ आंच आ सकती है—उसपर, अर्थात् हाज़िरजवाबी की उसकी ख्याति पर। इससे उसने इस बेहूदा धरोहर की तरफ कुछ ज़्यादा ध्यान देना शुरू किया। इसका असर ठीक हुआ और फल यह निकला कि वह ज़िन्दा बच रहा।

उसका एक फेफड़ा काफी ठीक हो गया और दूसरे के ठीक होने की उम्मीद होने लगी। उसे विश्वास होने लगा कि अगर वह ऐसी आबोहवा में रहे जहां कि क्षय के रोगी अक्सर जमा होते हैं, तो बहुत सम्भव है कि वह एक दर्जन सर्दियां काट जाए। क्योंकि लन्दन उसे बहुत प्रिय था, इसलिए अपने निर्वासन की सपाटता को वह कोसता था। पर कोसते हुए भी वह उस क्रम का पालन किए जाता था। धीरे-धीरे उसे लगने लगा कि उसकी इन्द्रिय-संवेदना अधिक गम्भीर अनुशासन की मांग करती है, तो इसे भी उसने हल्के-फुल्के ढंग से अपना लिया। सर्दियां वह, कहावत के अनुसार, समुद्र-पार काटता और वहां धूप तापा करता। हवा चलती, तो घर में बन्द हो रहता। बारिश होती, तो बिस्तर में दुबक जाता। दो-एक बार जब रात को बर्फ पड़ी, तो वह बिलकुल अधमरा-सा हो रहा।

उसके अन्दर उदासीनता का एक गुप्त संचय था—प्यार करने वाली एक नर्स द्वारा बचपन में चुपके से स्कूल के बस्ते में डाल दिए गए बड़े-से केक जैसा—

जिससे कोई भी त्याग करना उसे मुश्किल नहीं लगता था। वह इतना बीमार था कि यह कठिन खेल खेलने के सिवा कुछ कर भी नहीं सकता था। वह अक्सर अपने से कहता कि उसके पास कुछ तो है नहीं जो वह कर सके, इसलिए उदारता के क्षेत्र को भी वह क्यों छोड़े। इन दिनों कभी-कभी प्रतिषिद्ध फल की खुशबू उसके पास से गुज़रती और उसे याद हो आता कि सबसे बड़ा सुख यही है कि आदमी किसी काम में डूबा रहे। जिस तरह वह जी रहा था, उस तरह जीने का अर्थ था एक अच्छी किताब को घटिया अनुवाद में पढ़ना। इससे उस युवक की, जो जानता था कि वह एक अच्छा भाषाविद् हो सकता था, ज़्यादा तसल्ली नहीं होती थी। उसकी कुछ सर्दियां अच्छी बीततीं, कुछ बुरी। जो अच्छी बीततीं, उनमें यह आभास मन को गुदगुदाता कि वह बिलकुल ठीक हो गया है। पर जिन घटनाओं के वर्णन से इस इतिहास की शुरुआत होती है, उनसे तीन साल पहले यह आभास बिलकुल समाप्त हो गया था। उस साल वह पहले से ज़्यादा दिन इंग्लैण्ड में रुका था, और अल्जीरिया पहुंचने से पहले ही खराब मौसम में घिर गया था। जब वह वहां पहुंचा तो उसकी हालत बहुत नाज़ुक थी और कई सप्ताह वह ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलता रहा। फिर भी हालत सुधर गई, यह एक चमत्कार ही था। पर ठीक होते ही उसने अपने को विश्वास दिला लिया कि ऐसे चमत्कार रोज़-रोज़ नहीं होते। उसने अपने से कहा कि उसकी मौत की घड़ी अब पास ही है, इसलिए उसे चाहिए कि इस चीज़ को मन में रखकर चले। साथ ही यह भी कि इस चीज़ के मद्देनज़र बीच का वकफा जितनी अच्छी तरह बिताया जा सके, बिताए। उसकी कार्यशक्तियां छिन जाएंगी, इस आभास से उनका साधारण उपयोग भी उसके लिए एक बड़े सुख का विषय बन गया। उसे लगने लगा कि बैठकर सोचने का सही आनन्द तो उसने जाना ही नहीं। वह समय पीछे रह गया था जब इस ख्याल से उसे तकलीफ होती थी कि अपने को दूसरों से विशिष्ट कर सकने की आशा उसे छोड़ देनी पड़ेगी। यह ख्याल धुंधला होते हुए भी मन से जाता नहीं था। जिस दिल से वह उत्साह के साथ अपनी आलोचना करता था, उसी दिल में साथ इसका बने रहना, कम खुशी की बात नहीं थी। अपने दोस्तों को वह पहले से ज़्यादा खुश नज़र आता था। वे उस निष्कर्ष पर पहुंचकर जानकारों की तरह सिर हिलाया करते थे कि उसका स्वास्थ्य अब ठीक होता जा रहा है। पर उसकी शान्ति एक खंडहर में उगे जंगली फूलों के गुच्छों जैसी ही थी।

एक ऐसी लड़की के चले आने से, जो जाहिर था कि जड़मति नहीं थी, रैल्फ की दिलचस्पी के एकाएक जाग उठने का मुख्य कारण शायद सामने आई चीज़ की अपनी मधुरता ही थी। उसे अन्दर से लगा कि अगर वह इस तरफ मन लगाए, तो बहुत दिनों तक अपने को व्यस्त रख सकता है। संक्षेप में यह भी कहा जा सकता है कि उसके धुंधले मानसिक रेखाचित्र में प्यार करने की कल्पना—प्यार पाने की कल्पना से हटकर—अब भी कहीं स्थान रखती थी। पर इसे कह सकने के दुष्परिणाम से वह अपने को बचाए रखना चाहता था। अपनी कज़िन के मन में न तो वह किसी तरह का आवेश जगाना चाहता था, और न ही, वह चाहे भी तो, उसे अपने मन में आवेश जगाने देना चाहता था। "अच्छा, अब आप उस लड़की के बारे में बताएं," उसने अपनी मां से कहा, "आप उसका क्या करना चाहती हैं ?"

मिसेज़ टाउशेट की ओर से तुरन्त जवाब मिला, "मैं तुम्हारे पिता से कहना चाहती हूं कि उसे तीन-चार हफ्ते गार्डनकोर्ट में ठहरने को कहें।"

"आपको इस तरह के तकल्लुफ में पड़ने की ज़रूरत नहीं," रैल्फ बोला। "अब्बा अपने से ही उससे कहेंगे।"

"यह मैं नहीं कह सकती। वह मेरी भांजी है, उनकी नहीं।"

"मेरे ईश्वर ! आपमें कितनी अधिकार-भावना है। पर अम्मां, यह तो और भी वजह है कि वे उससे कहें। मेरा मतलब उसके बाद से है—यानी तीन महीने के बाद से—क्योंकि उससे सिर्फ तीन-चार हफ्ते रुकने को कहना तो बेजा बात होगी। आप उसके बाद उसका क्या करना चाहती हैं ?"

"मैं उसे पेरिस ले जाऊंगी, और कपड़े खरीदवाऊंगी।"

"हां, वह तो ठीक है। पर उसके अलावा ?"

"मैं उससे कहूंगी कि पतझड़ के दिनों में मेरे साथ चलकर फ्लोरेंस में रहे।"

"आप तो छोटी-छोटी बातों से बाहर ही नहीं आतीं," रैल्फ बोला, "मैं यह जानना चाहता था कि साधारण तौर पर आप उसका क्या करना चाहती हैं ?"

"जो भी फर्ज है, वह करूंगी," मिसेज़ टाउशेट ने घोषणा की। फिर बोलीं, "लगता है तुम्हें उससे बहुत हमदर्दी है।"

"ना, मुझे उससे हमदर्दी नहीं है। वह ऐसी नहीं लगती कि उसे हमदर्दी की ज़रूरत हो। मुझे बल्कि उससे ईर्ष्या है। पर फैसला करने से पहले आप बताएं

तो सही कि आप अपना फर्ज क्या समझती हैं ?"

"मैं उसे यूरोप के चार देशों में ले जाऊंगी, और उससे कहूंगी कि उनमें दो में से एक चुन ले। साथ उसे अपनी फ्रेंच सुधारने का मौका दूंगी। यूं वह अब भी यह ज़बान काफी अच्छी जानती है।"

रैल्फ की भौंहें थोड़ी तन गईं। "उसे दो में से एक देश चुनने का अवसर देना—यह भी सुनने में रूखा-सा लगता है।"

"रूखा-सा लगता है," उसकी मां हंसकर बोली, "तो इज़ाबेल को ही इसे तय करने दो न। वह खुद गर्मियों की बारिश जैसी तेज़ है।"

"तो आप समझती हैं वह बहुत प्रतिभाशाली है ?"

"कितनी प्रतिभाशाली है, यह मैं नहीं जानती। पर काफी होशियार लड़की है। दिमाग बहुत ऊंचा है, और करती अपने मन की है। ऊबकर बैठे रहना उसकी आदत नहीं है।"

"यह तो लगता ही है," रैल्फ बोला। फिर अचानक उसने आगे कहा, "पर आपके साथ उसकी कैसी पटती है ?"

"तुम्हारा मतलब है मैं 'बोर' हूं ? मेरा ख्याल है वह ऐसा नहीं समझती। कुछ लड़कियां समझ भी सकती हैं, पर इज़ाबेल उनसे ज़्यादा समझदार है। उसे मेरा साथ दिलचस्प लगता है। हमारी आपस में पट जाती है क्योंकि मैं समझती हूं वह किस तरह के स्वभाव की लड़की है। न वह कोई बात दिल में रखती है, न मैं रखती हूं। हम दोनों जानती हैं कि हमें एक-दूसरी से क्या उम्मीद करनी चाहिए।"

"अम्मां," रैल्फ बोला, "आपसे क्या उम्मीद करनी चाहिए, यह हर कोई जानता है। मुझे आपकी किसी बात से कभी आश्चर्य नहीं हुआ, सिवाय आज के—जबकि आपने मेरी सुन्दर कज़िन को, जिसके कि अस्तित्व का भी मुझे पता नहीं था, इस तरह सामने ला खड़ा किया।"

"तुम्हें वह बहुत सुन्दर लगती है ?"

"बहुत। पर मैं इसपर ज़ोर नहीं देता। मुझे जो चीज़ खास लगती है, वह यह कि वह अपने में बिलकुल अलग नज़र आती है। आखिर यह अद्भुत लड़की क्या है, कौन है ? आपको यह कहां मिली और आपका इससे परिचय कैसे हुआ ?"

"मुझे यह मिली एलवैनी के एक पुराने घर में, बारिश के दिन, एक सुनसान कमरे में बैठी हुई। एक मोटी-सी किताब पढ़ती हुई यह बुरी तरह बोर हो रही थी। उसे खुद इसका अहसास नहीं था, पर मैंने जब अच्छी तरह उसे समझा दिया कि वह बोर हो रही है, तो उसने इस भलाई के लिए मेरा उपकार माना। तुम कहोगे मुझे उससे यह नहीं कहना चाहिए था और उसे उसके हाल पर ही छोड़ देना चाहिए था। काफी हद तक यह ठीक भी है। पर मैंने जो किया, अपनी आत्मा की गवाही से किया। मुझे लगा कि उसे इससे अच्छी जगह होना चाहिए। इससे सोचा कि उसे अपने साथ ले चलूं और घूमकर दुनिया देखने का मौका दूं, तो यह एक भलाई का काम होगा। अक्सर अमरीकन लड़कियों की तरह वह भी सोचती है कि उसने बहुत कुछ देख रखा है, और अक्सर अमरीकन लड़कियों की तरह ही उसका यह सोचना बेहद गलत है। तुम जानना ही चाहते हो, तो मैं कहूंगी कि मुझे लगा कि उसे साथ रखना मेरे लिए भी श्रेय की बात होगी। मैं चाहती हूं लोग मुझे प्रशंसा से देखें। मेरी उम्र की स्त्री के लिए एक तरह से उससे बड़ी कोई सुविधा नहीं कि कोई सुन्दर-सी भांजी-भतीजी साथ में हो। तुम जानते हो, मैं बरसों अपनी बहन के बच्चों से नहीं मिली क्योंकि उनके पिता को मैं बिलकुल पसन्द नहीं करती थी। पर यह मैं हमेशा सोचती थी कि वह आदमी अपनी जगह पहुंच जाए, तो मैं इन बच्चों के लिए ज़रूर कुछ करूंगी। मैंने पता लगाया कि ये लोग कहां पर हैं, और बिना किसी भूमिका के इनसे जा मिली। इसकी दो बहनें और हैं जो दोनों विवाहित हैं। मुझे उनमें से सिर्फ बड़ी बहन मिली जिसका पति मुझसे पूछो तो बहुत ही बदतमीज़ है। उसका नाम है लिली। वह तो यह सुनते ही उछल पड़ी कि मैं इज़ाबेल के लिए कुछ करना चाहती हूं। बोली कि इस लड़की को यही तो चाहिए कि कोई इसमें दिलचस्पी ले। वह इसका जिक्र इस तरह कर रही थी जैसे कि कोई किसी युवा जीनियस की बात करे जिसे बस प्रोत्साहन और संरक्षण मिलने की ही कसर हो। हो सकता है इज़ाबेल जीनियस हो, पर मुझे उसकी इस खासियत का अभी पता नहीं चला। मिसेज़ लुडलो बहुत उत्सुक थी कि मैं इसे साथ यूरोप ले जाऊं। वहां उन सब लोगों को लगता है जैसे यूरोप उनकी फालतू आबादी के लिए प्रवास, बचाव और शरण की जगह हो। इज़ाबेल खुद आने की बात से बहुत खुश थी इसलिए सब कुछ आसानी से हो गया। खर्च की बात को लेकर थोड़ी कठिनाई जरूर हुई क्योंकि वह किसीका पैसे का अहसान

नहीं लेना चाहती थी। पर उसका थोड़ी-बहुत अपनी आमदनी है और वह यही समझ रही है कि वह अपने खर्च से सफर कर रही है।"

रैल्फ बहुत ध्यान से यह विवेकपूर्ण रिपोर्ट सुनता रहा। सुनकर भी इस विषय में उसकी दिलचस्पी कम नहीं हुई। "ओह, अगर वह सचमुच जीनियस है," वह बोला, "तो हमें उसकी खासियत का पता लगाना चाहिए। कहीं यह खासियत प्यार की चोंचलेबाज़ी को लेकर तो नहीं ?"

"मुझे ऐसा नहीं लगता। शुरू में ऐसा भ्रम हो सकता है, पर यह गलत ही साबित होगा। उसे ठीक से जान पाना इतना आसान नहीं है।"

"तब तो वारबर्टन की बात गलत है।" रैल्फ खुशी से चिल्लाया, "वह बहुत बन रहा था कि उसने इसे पहचान लिया है।"

मिसेज़ टाउशेट ने सिर हिलाया, "वारबर्टन इसे नहीं समझ सकेगा। अच्छा होगा वह कोशिश भी न करे।"

"वैसे वह बहुत समझदार है," रैल्फ बोला, "पर कभी एकाध बार वह भी चक्कर खा जाए, तो बुरा नहीं है।"

"एक लार्ड चक्कर खा जाए, इसमें इज़ाबेल को बड़ा मज़ा आएगा," मिसेज़ टाउशेट ने टिप्पणी की।

उनके बेटे की भौंहें तन गईं। "वह इस बारे में क्या जानती है कि लार्ड क्या होते हैं।"

"बिलकुल कुछ नहीं। इससे वह और भी चकराएगा।"

रैल ने हंसकर इन शब्दों का स्वागत किया और खिड़की से बाहर देखने लगा। "आप अब्बा से मिलने नहीं चल रहीं ?" फिर उसने पूछा।

"पौने आठ बजे," मिसेज़ टाउशेट ने उत्तर दिया।

रैल्फ ने अपनी घड़ी की तरफ देखा। "तब तो अभी पाव घण्टा बाकी है। तब तक इज़ाबेल के बारे में कुछ और बताइए।" पर मिसेज़ टाउशेट ने यह कह-कर टाल दिया कि बाकी उसे खुद पता करना चाहिए। "अच्छा," रैल्फ ने बात नहीं छोड़ी। "यह तो ठीक है कि इसे साथ रखना आपके लिए श्रेय की बात होगी। पर साथ ही उसकी वजह से आपको मुसीबत नहीं उठानी पड़ेगी ?"

"सोचती तो नहीं। पर उठानी भी पड़े तो मैं उससे बचना नहीं चाहूंगी। वह मेरी आदत नहीं है।"

"मुझे तो वह अन्दर-बाहर से एक-सी लगती है।"

"हां, और ऐसे लोगों को लेकर ज़्यादा मुसीबत नहीं उठानी पड़ती।"

"इसका एक उदाहरण आप स्वयं हैं," रैल्फ बोला, "मुझे विश्वास है, आपको लेकर कभी किसीको मुसीबत नहीं उठानी पड़ी। इसके लिए पहले खुद को मुसीबत में डालना होता है। खैर, एक बात पूछता हूं जो ऐसे ही मेरे मन में आ रही है। क्या इज़ाबेल कभी तुनुकमिज़ाजी से पेश आती है?"

"ओह!" उसकी मां ने ऊंचे स्वर में कहा, "तुम एक के बाद एक सवाल पूछते ही जाते हो। यह तुम खुद पता करो न।"

पर रैल्फ के सवाल समाप्त नहीं हुए थे। "आपने यह तो बताया ही नहीं," वह बोला, "कि आप इसका क्या करना चाहती हैं?"

"क्या करना चाहती हूं? तुम तो ऐसे बात कर रहे हो जैसे वह एक गज़ कपड़ा हो। मैं उसका कुछ नहीं करूंगी। जो करना होगा, वह खुद ही करेगी। वह मुझे इसकी चेतावनी दे चुकी है।"

"तो आपने जो अपने तार में लिखा था कि उसका स्वभाव बहुत स्वतंत्र है, उसका यही मतलब था?"

"मुझे खुद नहीं पता कि मेरे तारों का क्या मतलब होता है—खास तौर से उनका जो मैं अमरीका से देती हूं। साफ बात लिखने के बहुत पैसे लगते हैं। चलो, तुम्हारे अब्बा के पास चलें।"

"अभी पौने आठ नहीं हुए," रैल्फ बोला।

"मुझे उनकी बेसब्री का थोड़ा लिहाज करना चाहिए," मिसेज़ टाउशेट ने उत्तर दिया।

रैल्फ जानता था कि उसके पिता कितने बेसब्र होंगे, पर और कुछ न कहकर उसने अपनी बांह अपनी मां की तरफ बढ़ा दी। इससे वक्त से स्याह पड़े ओक के ज़ीने से उतरते हुए—जो कि काफी खुला, नीचा और चौड़ी रेलिंग का था और गार्डनकोर्ट का सबसे बड़ी खासियतों में गिना जाता था—उन्हें बीच के पायदान पर रोक लेना उसे मुश्किल नहीं पड़ा। "आपने उसकी शादी के बारे में कुछ नहीं सोचा?" उसने मुस्कराकर पूछ लिया।

"शादी के बारे में? मैं इस बात को लेकर उसे छलना नहीं चाहूंगी। दूसरे वह खुद ही इतनी लायक है कि अपनी शादी तय कर सके। उसे हर तरह की

सुविधा है।"

"आपका मतलब है उसने अपने लिए पति चुन रखा है ?"

"पति की बात मैं नहीं जानती। मगर बोस्टन में एक युवक है···।"

बोस्टन के युवक के विषय में सुनने की रैल्फ की इच्छा नहीं हुई। इसलिए उसने अपनी ही बात जारी रखी, "अब्बा ठीक कहते हैं कि ये लोग हमेशा सगाई करके आती हैं।"

मां ने कहा था कि उसे और जानकारी स्रोत से हासिल करनी चाहिए—और उसे इसके लिए अवसर की ज़्यादा प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। वे दोनों ड्राइंग-रूम में अकेले रह गए, तो उसने इज़ाबेल से ढेर-सी बातें कर डालीं। लार्ड वारबर्टन दस मील दूर अपने घर से घोड़े पर आया था—डिनर के बाद वह उसी तरह वापस चला गया। घण्टे-भर बाद मिस्टर और मिसेज़ टाउशेट भी, कुछ बात करने को न रह जाने से, थकान का जायज़ बहाना करके अपने-अपने कक्ष में चले गए। रैल्फ और घण्टा-भर अपनी कज़िन के साथ रहा—आधा दिन सफर कर चुकने के बाद भी वह पस्त नहीं लग रही थी। वह जानती थी कि वह बहुत थकी हुई है, और कल इसका फल भी उसे भोगना पड़ेगा, पर उन दिनों उसकी आदत थी कि जब तक बुरी तरह टूट न जाती, तब तक ऊपर का दिखावा बनाए रखती थी। उस समय एक महीन-सा दिखावा बनाए रखना मुश्किल नहीं था और उसे अच्छा भी लग रहा था। वह अपने को एक बहाव में महसूस कर रही थी। रैल्फ से उसने कहा कि वह उसे तसवीरें दिखाएं। घर में काफी तसवीरें थीं जो ज़्यादातर रैल्फ की ही चुनी थीं। सबसे अच्छी तसवीरें ओक की गैलरी में थीं जिसकी बनावट बहुत सुन्दर थी। दोनों ओर बैठने के कमरे थे। शाम को अक्सर उसमें रोशनी रहती थी। पर तसवीरों को ठीक से देख पाने के लिए रोशनी काफी नहीं थी और सम्भव था कि बात कल पर टल जाती। रैल्फ ने यह कहा भी, पर इज़ाबेल के चेहरे पर मुस्कराहट के बावजूद निराशा उभर आई और उसने कहा, "अगर चल सको, तो मैं बस ज़रा-सा ही देखना चाहूंगी।" वह उत्सुक थी और चाहते हुए भी अपनी उत्सुकता छिपा नहीं पा रही थी। 'यह किसीकी सुनती नहीं,' रैल्फ ने अपने से कहा—पर बिना झुंझलाहट के। उसका ज़ोर देना उसे दिलचस्प ही नहीं, अच्छा भी लगा। लैम्प थोड़े-थोड़े फासले पर ब्रेकेटों में लगे थे, और रोशनी काफी न होते हुए भी खुशनुमा लग रही थी। वह गहरे रंगों के अस्पष्ट चौखानों पर,

और भारी चौखटों के बुझे-बुझे गिलट पर फैल रही थी। रैल्फ एक मोमबत्ती लिए अपनी पसन्द की चीजें दिखाता चल रहा था। इज़ाबेल एक के बाद दूसरी तस्वीर की तरफ देखकर कभी हल्के और कभी ऊंचे स्वर में कुछ बोल उठती। रैल्फ को लगा कि उसे तस्वीरों की काफी पहचान है, और एक स्वाभाविक सुरुचि उसमें है। मोमबत्ती अपने हाथ में लेकर वह आहिस्ता से उसे इधर-उधर और ऊपर-नीचे करती। तब रैल्फ गैलरी के बीच में खड़ा अपने को तस्वीरों से ज़्यादा उसकी उपस्थिति को आंखों से आंकते पाता। वैसे अपनी नज़र के भटकने से उसने कुछ खोया नहीं, क्योंकि वह लड़की अधिकांश कलाकृतियों से ज़्यादा दर्शनीय थी। वह असन्दिग्ध रूप से दुबली थी, प्रकट रूप से हल्की और निश्चित रूप से लम्बी—लोग उसकी दोनों बहनों से उसे अलग करने के लिए कहा करते थे कि वह बहुत लचीली है। उसके बाल, जो स्याह होने की हद तक काले थे, बहुत-सी स्त्रियों के लिए ईर्ष्या का विषय थे। हल्की-भूरी आंखें, जो गम्भीर क्षणों में कुछ अधिक ही स्थिर नज़र आती थीं, कई-कई आकर्षक संवेदनाओं का केन्द्र थीं। वे गैलरी की एक तरफ से ऊपर जाकर दूसरी तरफ से नीचे उतर आईं। तब उसने कहा, "शुरू में जितना जानती थी उससे अब मैं ज़्यादा जान गई हूं।"

"लगता है तुम्हारे अन्दर ज्ञान की बहुत भूख है," रैल्फ बोला।

"हां, है तो। ज़्यादातर लड़कियां बहुत अबोध होती हैं न?"

"तुम ज़्यादातर लड़कियों से बहुत अलग नज़र आती हो।"

"कुछ लड़कियां अलग हो सकती हैं, अगर लोग उनसे इस तरह की बातें न करें," इज़ाबेल ने हल्के से कहा। अभी वह अपने बारे में बात नहीं करना चाहती थी। फिर अगले ही क्षण, विषय बदलने के लिए उसने पूछा, "अच्छा बताओ, कोई भूत तो यहां नहीं है?"

"भूत?"

"बड़े घरों में रूहें होती हैं न, वे जो अचानक सामने आ जाती हैं? अमरीका में हम उन्हें भूत कहते हैं।"

"हमें नज़र आएं, तो हम भी उन्हें यही कहते हैं।"

"तो तुम्हें वे नज़र आते हैं न? ज़रूर आते होंगे। इतना पुराना रूमानी घर है यह।"

"यह पुराना रूमानी घर नहीं है।" रैल्फ बोला। "ऐसा समझकर चलोगी,

तो तुम्हें निराशा होगी। यह बहुत नीरस घर है जिसमें कोई रूमानियत नहीं है—सिवाय उसके जो तुम अपने साथ लाई होगी।"

"मैं काफी साथ लाई हूं। मुझे लगता है कि ठीक जगह पर लेकर आई हूं।"

"इस लिहाज से यह ठीक जगह है कि यहां उसे कोई नुकसान नहीं पहुंच सकता—न मुझसे न मेरे अब्बा से।"

इज़ाबेल पल-भर उसे देखती रही। "तुम्हारे और तुम्हारे अब्बा के सिवा यहां कभी कोई नहीं होता?"

"अम्मां होती हैं।"

"तुम्हारी अम्मां को मैं जानती हूं। उनमें ज़रा रूमानियत नहीं है। तुम्हारे और कोई अपने लोग नहीं हैं?"

"बहुत कम।"

"मुझे अफसोस है। मैं चाहती हूं बहुत-से लोगों से मिलूं।"

"तो हम तुम्हारे मनोरंजन के लिए सारा शहर यहां बुला देंगे," रैल्फ बोला।

"तुम मजाक उड़ा रहे हो," लड़की कुछ गम्भीर हो गई। "जब मैं आई थी, तो लॉन में वह आदमी कौन था?"

"वह पास के कस्बे से है, पर यहां ज्यादा नहीं आता।"

"यह भी अफसोस की बात है। मुझे वह आदमी पसन्द है," इजाबेल ने कहा।

"पर मेरा तो ख्याल है तुमने उससे बात तक नहीं की," रैल्फ ने एतराज़ किया।

"उससे क्या होता है? वह आदमी फिर भी मुझे पसन्द है। तुम्हारे अब्बा भी मुझे बहुत पसन्द हैं।"

"उनसे बेहतर आदमी तुम्हें नहीं मिलेगा। मैं उन्हें दुनिया का सबसे प्यारा आदमी समझता हूं।"

'अफसोस की बात है कि वे बीमार हैं।"

"तुम उनकी देखभाल में मेरी मदद करना। मेरा ख्याल है तुम अच्छी नर्सिंग कर सकती हो।"

"लगता नहीं—लोग यही कहते हैं कि नहीं कर सकती। उनका ख्याल है मैं बहुत सिद्धान्त बघारती हूं।" फिर उसने जोड़ा, "पर भूत की बात तो तुमने बताई ही नहीं।"

रैल्फ ने इस बात पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। बोला, "अब्बा तुम्हें पसन्द हैं, और लार्ड वारबर्टन तुम्हें पसन्द हैं। इससे मैं सोचता हूं कि अम्मां भी तुम्हें ज़रूर पसन्द होंगी।"

"तुम्हारी अम्मां मुझे बहुत ही पसन्द हैं क्योंकि···क्योंकि···।" और इजाबेल मिसेज टाउशेट के प्रति अपने स्नेह का कारण ढूंढ़ती रह गई।

"कारण कोई कभी नहीं जानता," रैल्फ हंस दिया।

"मैं हमेशा जानती हूं," लड़की बोली। "वे कभी नहीं चाहतीं कि कोई उन्हें पसन्द करे, बस यही कारण है। कोई पसन्द करे, न करे, इसकी उन्हें परवाह भी नहीं।"

"तो तुम विपरीत बुद्धि से उनकी प्रशंसा करती हो", रैल्फ ने कहा, "तो ठीक है, मैं भी बहुत हद तक अपनी मां पर गया हूं।"

"मैं नहीं मानती। तुम चाहते हो कि लोग तुम्हें पसन्द करें, और इसके लिए अपनी तरफ से कोशिश भी करते हो।"

"गुड हैवन्ज ! कितनी पैनी बुद्धि है तुम्हारी।" रैल्फ के स्वर की निराशा पूरी तरह विनोदात्मक नहीं थी।

"पर मैं तुम्हें फिर भी पसन्द करती हूं," उसकी कज़िन कहती रही। "और इसे निश्चित करने का एक ही तरीका है कि तुम मुझे भूत दिखा दो।"

रैल्फ ने उदासी से सिर हिलाया। "मैं तो तुम्हें दिखा दूं, पर तुम उसे देख नहीं पाओगी। उसे देखने का अधिकार हर किसीको नहीं है—हालांकि यह शेखी की बात नहीं। तुम्हारे जैसे युवा, प्रसन्न-चित्त और भोले व्यक्ति ने उसे कभी नहीं देखा। उसे देखने के लिए पहले दुःख उठाना, बहुत-बहुत दुःख उठाना, और दुःख क्या है, यह ज्ञान प्राप्त करना जरूरी है। तभी आदमी की उसे देखने वाली आंखें खुलती हैं। मैंने बहुत पहले ही उसे देख लिया था।"

"मैंने तुमसे अभी कहा था, न कि मुझे ज्ञान प्राप्त करने में बहुत दिलचस्पी है," इजाबेल बोली।

"हां, ऐसा ज्ञान जो प्रसन्नता दे, सुख दे, पर दुःख तुमने नहीं उठाया। न ही तुम दुःख उठाने के लिए बनी हो। मुझे आशा है कि तुम्हें कभी भूत नजर नहीं आएगा।"

वह ध्यान से उसकी बात सुनती रही थी—होंठों पर मुस्कराहट और आंखों

में खास तरह की गम्भीरता लिए। वह आकर्षक तो उसे लग ही रही थी, साथ ही यह भी लग रहा था कि अपने को वह बहुत समझती है। यह भी, निःसन्देह, उसके आकर्षण में शामिल था। वह अब क्या कहेगी, यह सुनने की रैल्फ के मन में बहुत उत्सुकता थी।

"मैं उससे डरती नहीं हूं," वह बोली। इस बात में भी काफी हद तक 'अपने को कुछ समझने' का भाव था।

"तुम दुःख उठाने से नहीं डरतीं ?"

"दुःख उठाने से डरती हूं, पर भूत से नहीं डरती।" और फिर उसने जोड़ा, "मुझे लगता है लोग बहुत जल्दी अपने को दुःखी समझने लगते हैं।"

"मुझे ख्याल है तुम ऐसा नहीं करतीं," रैल्फ ने जेबों में हाथ डाले उसकी ओर देखते हुए कहा।

"यह कोई दोष नहीं है," इज़ाबेल ने उत्तर दिया। "यह ज़रूरी नहीं कि आदमी दुःख उठाए ही—वह इसके लिए नहीं बना।"

"तुम निश्चय ही नहीं बनीं।"

"मैं अपनी बात नहीं कर रही," कहती हुई वह थोड़ा परे चली गई।

"नहीं, यह दोष नहीं है," रैल्फ बोला। "बल्कि गुण है कि आदमी में सहन-शक्ति हो।"

"आदमी दुःखी न हो, तो लोग कहते हैं वह कड़े छिलके का है," इज़ाबेल ने टिप्पणी की।

गैलरी से वे छोटे ड्राइंग रूम में आ गए थे। उसे पार करके वे हाल में ज़ीने के पास रुक गए। वहां उसने ताक से उठाकर अपनी कज़िन को सोने के कमरे में ले जाने के लिए एक मोमबत्ती भेंट की और कहा, "लोग क्या कहते हैं, इसकी चिन्ता मत करो। आदमी दुःखी हो, तो वे उसे मूर्ख कहते हैं। बडी बात यही है कि आदमी जितना प्रसन्न रह सके, रहे।"

इज़ाबेल ने ज़रा-सा उसकी ओर देखा। मोमबत्ती लेकर उसने एक पैर ओक के ज़ीने पर रख लिया था। "ठीक है," वह बोली। "इसीलिए तो मैं यूरोप आई हूं कि जितनी प्रसन्न रह सकूं, रहूं। गुड नाइट।"

"गुड नाइट। मैं चाहता हूं तुम्हारी मुराद पूरी हो। मैं इसके लिए कुछ कर सकूं, तो मुझे खुशी होगी।"

इज़ाबेल मुड़ गई और वह उसे धीरे-धीरे ज़ीना चढ़ते देखता रहा। फिर हमेशा की तरह हाथ जेबों में डाले वह वापस खाली ड्राइंग रूम में चला गया।

६

इज़ाबेल आर्चर एक ऐसी नवयुवती थी जिसके अपने कई सिद्धान्त थे। उसकी कल्पना बहुत उर्वर थी। यह उसका सौभाग्य था कि जिन लोगों के बीच उसे रहना था, उनमें से अधिकांश से उसका मस्तिष्क अधिक सूक्ष्म था, आसपास की वस्तु-स्थितियों की उसे ज़्यादा समझ थी, और अज्ञात को लेकर उसके मन में अधिक जिज्ञासा थी। अपने समकालीनों के बीच वह असाधरण प्रतिभा की नवयुवती समझी जाती थी। उन लोगों की खुद की समझ जहां तक नहीं जा पाती थी, वहां तक पहुंचने वाली प्रतिभा के प्रति अपना आदरभाव वे छिपाते नहीं थे। उनका ख्याल था इज़ाबेल साधारण ज्ञान की स्वामिनी है जिसने सब बड़े-बड़े पुराने लेखक अनुवाद में पढ़ रखे हैं। उसकी बूआ मिसेज़ बेरियन ने एक बार अफवाह फैला दी थी कि इज़ाबेल एक पुस्तक लिख रही है। मिसेज़ बेरियन पुस्तकों की बहुत कद्र करती थीं और उन्हें विश्वास था कि इज़ाबेल को छपकर बहुत ख्याति मिलेगी। मिसेज़ बेरियन के मन में साहित्य के प्रति वही आदर-भाव था जो अपने अभाव की पूर्ति अन्यत्र देखकर होता है। उनके घर में मोज़ेक की मेज़ें और नक्काशीदार छतें और न जाने क्या-क्या था। कोई चीज़ नहीं थी, तो बस एक पुस्तकालय। छपी हुई पुस्तकों के नाम पर उनके घर में कुछ था, तो सिर्फ आधी दर्जन पतली जिल्दें—और वे भी उनकी एक लड़की के कमरे की शेल्फ पर। उनका साहित्य से परिचय 'न्यूयार्क इंटरव्यूअर' तक सीमित था, और वे ठीक ही कहती थीं कि 'न्यूयार्क इंटरव्यूअर' पढ़ लेने के बाद संस्कृति में आदमी का विश्वास नहीं रह जाता। इस वजह से वह 'इंटरव्यूअर' अपनी लड़कियों के हाथों में नहीं जाने देती थीं। वे चाहती थीं कि लड़कियों का पालन ठीक से हो, इसलिए लड़कियां कुछ भी नहीं पढ़ती थीं। इज़ाबेल के कृतित्व के सम्बन्ध में उनका विचार एक भ्रान्ति ही थी क्योंकि इज़ाबेल ने न कभी कोई पुस्तक लिखने की कोशिश की थी, न ही

उसे लेखिका बनकर यश कमाने का शौक था। उसमें न अभिव्यक्ति की क्षमता थी, न विशिष्ट प्रतिभा की अनुभूति। हां, लोग उसे अपने से बेहतर समझें, यह उसे गलत नहीं लगता था। वह बेहतर हो या न हो, लोग अगर ऐसा समझते थे, तो ठीक ही समझते थे, क्योंकि वह जानती थी कि उसका दिमाग उन सबसे तेज़ है। उससे उसमें एक उतावली आ गई थी जिसे कि आसानी से उसकी विशिष्टता भी समझा जा सकता था। यहां तुरन्त यह भी कह देना चाहिए कि आत्मगर्व का दोष इज़ाबेल में काफी ज़्यादा था। वह अपने स्वभाव की पर्यालोचना बहुत अनमनेपन से करती थी। उसे ज़रा-सा समर्थन पाकर लगने लगता था कि उसीकी बात ठीक होनी चाहिए—कभी-कभी तो वह स्वयं अपनी प्रशस्ति भी कर लेती थी। पर उसके दोप और भ्रान्तियां प्रायः ऐसी होतीं कि एक लेखक को, जो अपने विषय की गरिमा बनाए रखना चाहता हो, उनका उल्लेख नहीं करना चाहिए। उसके विचार अस्पष्ट रेखाओं के गुंझल जैसे थे जिसे अधिकारी व्यक्तियों के निर्णय से सुलझाने का कभी प्रयत्न नहीं किया गया था। राय उसकी हर विषय में अपने मन की होती थी जिससे वह अपने को अजीब भूल-भुलैया में डाल लेती थी। कभी उसे लग जाता कि उससे गलती हो गई है, तो वह हफ्ता-भर अपने को कोसती रहती। उसके बाद उसका सिर और ऊंचा उठ जाता। अपने को बेहतर समझने की ऐसी गहरी प्यास उसके अन्दर थी कि और किसी चीज़ का कोई असर ही न रहता। उसका ख्याल था कि जिन्दगी ऐसी ही स्थिति में जीने लायक हो सकती है कि आदमी दूसरों से बढ़-चढ़कर हो, उसे आभास हो कि उसका निर्माण बहुत सूक्ष्म है (अपने निर्माण की सूक्ष्मता का उसे पता था), वह ज्योति, नैसर्गिक ज्ञान, उत्फुल्ल आन्तरिक उन्मेष और निरन्तर प्रेरणा के क्षेत्र में जिये। अपने पर सन्देह करना उतना ही अनावश्यक है जितना अपने किसी अभिन्न मित्र पर सन्देह करना। आदमी को चाहिए कि स्वयं को ही अपना मित्र बनाए, और इस तरह एक बहुत अच्छा साथी अपने को दे। उसकी कल्पना में एक आभिजात्य था जो उसकी सहायता भी करता था और उसे छलता भी था। उसका आधा समय सुन्दरता, साहस और उदारता के सम्बन्ध में सोचते बीतता। उसके मन में दृढ़ निश्चय था कि दुनिया उजलेपन, उन्मुक्त विस्तार और बेरोक क्रियाशीलता की जगह है, अतः डर और लज्जा से व्यक्ति को घृणा होनी चाहिए। उसे कहीं गहरी आस्था थी कि वह कभी कुछ गलत नहीं करेगी। कभी अपने मन की भी कोई भूल वह पकड़ लेती तो उसे बहुत

ग्लानि होती (वह उससे इस तरह कांपती जैसे एक पाश से बच आई हो जो उसे अपने में लपेटकर कुचल देता)। विशेष अवसर आ पड़ने पर अगर उसे जानते-बूझते हुए किसीको चोट पहुंचानी पड़ जाती, तो वह जैसे दम साधकर रह जाती। उसे लगता इससे बुरी बात उसके लिए हो ही नहीं सकती थी। पर अपने दिमाग में वह बहुत स्पष्ट थी कि क्या-क्या चीज़ें गलत हैं। वह उन्हें ढूंढ़ती नहीं फिरती थी, पर गौर से देखकर वह उन्हें पहचान ज़रूर लेती थी। गलत चीज़ें थीं—कमीनापन, ईर्ष्या, झूठ, निष्ठुरता। उसने दुनिया की गंदगी बहुत कम देखी थी, पर ऐसी स्त्रियों से उसका वास्ता पड़ा था जो झूठ बोलकर एक-दूसरी को नोंचतीं रहती थीं। ऐसी चीज़ें देखकर उसके मन में बेचैनी भर जाती—उसे लगता कि उनकी निन्दा न करना अशिष्टता होगी। उतावले मन को सबसे बड़ा खतरा होता है परिस्थिति के अनुसार न ढल पाने से—जिससे सामने से हथियार डाल दिए जाने पर भी उसका झण्डा फहराता ही रहता है। इज़ाबेल को पता नहीं था कि एक युवा लड़की पर ज़िन्दगी में कैसी बमबारी हो सकती है,—इसलिए उसका ख्याल था कि उसके व्यवहार में ऐसा विरोध कभी नहीं आएगा। उसके व्यक्तित्व का प्रभाव सदा सुखकर रहेगा जिससे ज़िन्दगी की उसके साथ संगति बनी रहेगी। वह वही होगी जो नज़र आएगी और वही नज़र आएगी जो होगी। कभी-कभी तो वह चाहने लगती कि एक दिन उसे मुसीबतें भी उठानी पड़ें जिससे कि वह परिस्थिति के अनुसार साहसशील होकर दिखा सके। अगर कोई उसके स्वभाव का वैज्ञानिक विश्लेषण करने लगे, तो उसे तार-तार कर सकता है, क्योंकि उसका ज्ञान मामूली-सा था और आदर्श बहुत बढ़े-चढ़े थे। उसके विश्वास में एक मासूमियत थी, और कट्टरता भी। स्वभाव में एक कठोरता थी, और कोमलता भी। उसकी उत्सुकता में तुनुक-मिज़ाजी का और सजीवता में उदासीनता का खासा घोलमेल था। वह न सिर्फ अच्छी नज़र आना चाहती बल्कि और भी अच्छी समझी जाना चाहती थी। एक ओर, देखने, कोशिश करने और जानने का उसमें गहरा निश्चय था जिससे वह एक नाज़ुक, भटकती हुई, रूह जैसी जान पड़ती थी जो कभी भी सुलग सकती हो। दूसरी ओर वह परिस्थितियों में ढली एक व्यग्र व्यक्तिमूर्ति जैसी थी। पर यहां वह विश्लेषण हम नहीं देंगे क्योंकि हमारा अभीष्ट पाठक के मन में उसके प्रति अधिक कोमलता और उत्सुकता की भावना जगाना है।

इज़ाबेल आर्चर का एक सिद्धान्त यह भी था कि यह उसका सौभाग्य है वह इतनी स्वतन्त्र है—इसलिए इस स्थिति का उसे बहुत बुद्धिमत्ता से उपयोग करना चाहिए। यह स्थिति उसके लिए एकान्त की नहीं थी, अकेलेपन की तो बिलकुल ही नहीं। स्थिति को इस रूप में बखान उसे घटिया लगता था। फिर उसकी बहन लिली अक्सर उसे पास रहने को बुला लेती थी। उसकी एक मित्र भी थी जिससे उसका परिचय पिता की मृत्यु से कुछ दिन पहले हुआ था। वह लड़की, हेनरीटा स्टैकपोल बहुत उपयोगी रूप से कार्यव्यस्त रहती थी, जिससे वह उसे हमेशा अपना आदर्श मानती थी। हेनरीटा स्टैकपोल की योग्यता को उचित सम्मान भी मिलता था। वह पत्रकारिता में अपने पांव जमा चुकी थी और वाशिंगटन, न्यू पोर्ट, व्हाइट माउंटेन्ज़ तथा अन्य स्थानों से 'इंटरव्यूअर' के लिए लिखे उसके पत्र जगह-जगह उद्धृत होते थे। इज़ाबेल को विश्वास था कि इनका कोई स्थायी महत्त्व नहीं। पर लेखिका के साहस, शक्ति और विनोदप्रियता की वह प्रशंसा करती थी। हेनरीटा के माता-पिता नहीं थे, न ही उसके पास कोई जायदाद थी। फिर भी वह अपनी एक अपाहिज विधवा बहन के तीन बच्चों को पाल रही थी और अपने पारिश्रमिक में से उनकी फीसें अदा करती थी। वह काफी तेज़ी से प्रगति कर रही थी और हर विषय पर उसकी अपनी निश्चित राय थी। उसकी बहुत दिनों से इच्छा थी कि यूरोप आकर वहां से क्रान्तिकारी ढंग से 'इंटरव्यूअर' के लिए कुछ पत्र लिखे। इसमें कठिनाई की सम्भावना कम थी क्योंकि वह पहले से ही जानती थी कि उसकी राय क्या होगी और यूरोप की विभिन्न संस्थाओं पर क्या-क्या फब्तियां कसी जा सकती हैं। उसे पता चला कि इज़ाबेल चल रही है, तो वह भी तुरन्त चलने को तैयार हो गई। उसने सोचा था कि दोनों साथ-साथ घूमेंगी, तो बहुत मज़ा रहेगा। पर किसी वजह से उसे अपना विचार स्थगित करना पड़ा था। वह इज़ाबेल को बहुत मानती थी और अपने कुछ पत्रों में उसने उसकी प्रशंसा भी की थी। पर यह बात उसने इज़ाबेल को बताई नहीं थी क्योंकि वह इसे पसन्द न करती। 'इंटरव्यूअर' इज़ाबेल हर बार नहीं पढ़ती थी। इज़ाबेल के लिए हेनरीटा इस बात का प्रमाण थी कि एक स्त्री आत्मनिर्भर होकर खुश रह सकती है। उसके साधन बहुत साधारण थे, पर वह सोचती कि किसीके पास पत्रकारिता की प्रतिभा—और हेनरीटा के शब्दों में यह अनुमान लगा सकने की योग्यता कि जनता क्या चाहती है—न हो, तो उसका यह मतलब नहीं कि वह व्यक्ति बिना

कोई अच्छा धन्धा या उपयोगी काम किए हल्का और छिछला होकर बैठ रहे। इज़ाबेल का दृढ़ निश्चय था कि वह छिछली ज़िन्दगी नहीं काटेगी। उसका ख्याल था कि आदमी सब्र से इन्तजार करे, तो उसे अपने लायक कोई न कोई सही काम मिल ही जाता है। इसके सिद्धान्तों में विवाह नामक संस्था के लिए भी कुछ विचार सुरक्षित थे। उनमें सबसे ऊपर यह विश्वास था कि इस विषय में ज़्यादा सोचना फूहड़पन है। वह दिल से चाहती थी कि इस विषय में गम्भीरतापूर्वक सोचने से अपने को बचाए रख सके। उसका ख्याल था कि एक स्त्री, अगर वह ज़्यादा ही कमज़ोर मन की न हो, तो पुरुष जाति के एक अपेक्षया अपरिष्कृत व्यक्ति का साथ पाए बिना भी सुख से ज़िन्दगी काट सकती है। उसकी कामना काफी हद तक पूरी होती आ रही थी। उसमें एक ऐसी पवित्रता और गर्व था जिसे विश्लेषण की रुचि रखनेवाला प्रार्थी उसका ठण्डापन और रूखापन कहता। उसीके कारण 'पति' के विषय में बहुत आत्मतोष के साथ सोच सकने का अवसर ही अब तक उसके लिए नहीं आया था। बहुत कम व्यक्ति उसे ऐसे मिले थे जिनपर अपने को व्यय करने का खतरा उठाया जा सकता हो। यह सोचकर वह मुस्करा देती कि क्या उसमें से कोई भी उसकी आशा का प्रोत्साहन, या धीरज का प्रतिदान बन सकता है? उसके मन में कहीं गहरे में—सबसे गहरे में—यह विश्वास था कि एक विशेष तरह का प्रकाश होने पर वह अपने को पूरी तरह समर्पित कर सकती है—पर यह आभास भी उसे उतना आकर्षक नहीं जितना भयावह लगता था। इज़ाबेल के विचार इसके आसपास घूमते, पर इसपर ठहरते नहीं। अन्त में वह इससे आतंकित हो उठती। उसे अक्सर लगता कि वह अपने बारे में बहुत सोचती है, और कोई अगर कभी भी उससे कह देता कि वह बहुत अहंवादी है, तो उसका चेहरा सुर्ख हो उठता। वह हमेशा अपने विकास की योजनाएं बनाती, अपने में पूर्णता लाना चाहती और अपनी प्रगति को देखती रहती। अभियान के कारण उसे अपना स्वभाव एक बाग की तरह लगता जिसमें कि सुगन्ध भी थी और सरसराती टहनियां भी, छायादार कुंज भी और लम्बी-लम्बी वीथियां भी। इससे उसे लगता कि अन्तर्मुख होना भी खुली हवा में किया गया एक अभ्यास ही है, और कि अपने मन की गहराइयों में उतरने में कोई दोष नहीं, अगर आदमी वहां से गोद-भर गुलाब लेकर लौट सके। पर अक्सर वह अपने को यह भी याद दिलाती कि दुनिया में उसके अपने खास मन के अलावा और भी बाग हैं, कि बहुत-सी ऐसी भी जगहें

है जो बाग न होकर कीड़ों से लदे अंधेरे धूल भरे मैदान हैं और जिनमें दुःख और कुरूपता के गहरे झाड़-झंखाड़ उगे हैं। आज वह अपने को एक बहाव में महसूस करती थी जोकि उसकी उत्सुकता का प्रतिदान था। वह उसे पुराने इंग्लैण्ड में ले आया था, और भी आगे ले जा सकता था। वह उस बहाव में अपने को रोककर इन हज़ारों लोगों के बारे में सोचती जो उतने खुश नहीं थे, और इस विचार से उसे अपनी सुन्दर और भरी-पूरी चेतना एक तरह की निर्लज्जता लगने लगती। जब अपनी परिस्थितियां अनुकूल हों, तो व्यक्ति दूसरों के दुःखों का क्या करें ? पर उसका मन इस सवाल पर ज़्यादा न टिकता। वह बहुत युवा थी, जीने को बहुत अधीर, और पीड़ा से बिलकुल अपरिचित। वह घूम-फिरकर इस सिद्धान्त पर लौट आती कि जिस स्त्री को बहुत योग्य समझा जाता हो, उसे जीवन का सामान्य परिचय प्राप्त करने से शुरुआत करनी चाहिए। गलतियों से बचने के लिए यह परिचय ज़रूरी था। उसे प्राप्त करने के बाद ही दूसरों की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति की ओर वह विशेष ध्यान दे सकती थी।

इंग्लैण्ड की जिन्दगी उसके लिए नई चीज़ थी, और वहां आकर उसका मन एक मूक अभिनय देखते बच्चे की तरह बहल गया था। बचपन की यूरोप-यात्राओं में उसने केवल 'कांटिनेंट' देखा था, और वह भी नर्सरी की खिड़की से। उसके पिता का मक्का पेरिस था, लन्दन नहीं, और वहां जिन-जिन चीज़ों में उनकी दिलचस्पी थी, उनमें से ज़्यादा का उनके बच्चों को पता भी नहीं था। फिर उन दिनों के चित्र धुंधले होकर पीछे चले गए थे, इसलिए अब हर चीज़ में जो पुरानी दुनिया का आभास मिलता था, उसकी विचित्रता का अपना आकर्षण था। उसके मौसा का घर एक जीवित हो उठी तस्वीर जैसा था—किसी भी सुखद अनुभव की सूक्ष्मता इज़ाबेल के मन से अछूती नहीं रहती थी। गार्डन कोर्ट में इतना भराव और इतनी पूर्णता थी कि उसमें एक पूरी दुनिया का साक्षात्कार होता था, उससे एक आवश्यकता पूरी होती थी। इज़ाबेल की भावनाओं में उसकी रुचि का बहुत दखल था, और उस घर का सब कुछ उसकी रुचि के बहुत अनुकूल था—नीची छत के बड़े-बड़े कमरे, छतों का भूरा रंग और कोनों में सिमटा अंधेरा, गहरे झरोखे और विभिन्न जालीदार खिड़कियां, पालिश किए स्याह चौखटों पर पड़ती खामोश रोशनी, बाहर की गहरी हरियाली जोकि लगता जैसे अन्दर झांक रही हो, और एक बड़ी इमारत के बीच में सुव्यवस्थित एकान्त। वहां आवाज़ होना

एक सुखद घटना-सी होती। पैरों की आहट को जैसे ज़मीन ही मद्धिम कर देती और हवा ही जैसे चीज़ों की टकराहट और बातचीत के रूखेपन की ध्वनियों को पी जाती। अपने मौसा से उसकी घनिष्ठ मित्रता हो गई थी और अब वे लॉन में कुर्सी निकलवाकर बैठते, तो वह उनके पास जा बैठती। मिस्टर टाउशेट घण्टों हाथ बांधे एक शान्त और आत्मीय गृह देवता की तरह खुले में बैठे रहते थे—ऐसे कार्य-देवता की तरह जो अपना काम पूरा करके उसका वेतन पा चुका हो और अब हमेशा की छुट्टी के दिन-महीने काटने की आदत अपने में डाल रहा हो। इज़ाबेल जितना सोचती थी, उससे कहीं ज्यादा वे उसकी बातों में रस लेते थे। लोगों पर इज़ाबेल की बातों का प्रभाव, जैसा उसे स्वयं लगता था, उससे कहीं अलग पड़ता था। वे अक्सर इज़ाबेल को चहकने का मौका देकर मज़े से चुप बैठे सुनते रहते—उसकी बातचीत को उन्होंने यही शब्द दे रखा था। अमरीकन लड़कियों की बातचीत की वह 'खासियत' उसमें भी बहुत ज़्यादा थी जिससे लोग, और देशों की लड़कियों की अपेक्षा कहीं आसानी से उनकी बात सुनने को तैयार हो जाते हैं। अपने देश की अधिकांश लड़कियों की तरह इज़ाबेल को शुरू से ही खुलकर बात करना सिखाया गया था, उसकी बात ध्यान से सुनी जाती रही थी, और उसकी स्वतन्त्र राय और भावनाओं का सम्मान किया जाता रहा था। बहुत बार उसकी राय ज़्यादा मूल्यवान नहीं होती थी और भावनाएं कई बार शब्दों के साथ ही चुक जाती थीं। पर इससे उसे सोचने और महसूस करने की आदत हो गई थी जिससे, अगर कभी वह सचमुच प्रेरित होकर बात करती, तो उसके शब्दों में एक अनायास स्पष्टता आ जाती। इसीको बहुत-से लोग उसकी विशेषता का चिह्न मानते थे। मिस्टर टाउशेट को उसकी बातों से अपनी पत्नी के प्रारम्भिक यौवन के दिनों की याद हो आती। इजाबेल की-सी ही कुछ विशेषताएं थीं—उसकी ताज़गी और झट से कुछ भी कह-समझ लेने की स्वाभाविक शक्ति—जिनके कारण मिसेज़ टाउशेट से उन्हें प्यार हुआ था। पर उस समानता का ज़िक्र उन्होंने इज़ावेल से नहीं किया, क्योंकि उन दिनों मिसेज़ टाउशेट अगर इज़ाबेल जैसी थीं, तो आज इज़ाबेल बिलकुल मिसेज़ टाउशेट जैसी नहीं थी। मिस्टर टाउशेट का उससे व्यवहार बहुत अच्छा था, और वे कहते थे कि बरसों के बाद वे अपने घर में एक युवा व्यक्ति को देख रहे हैं। यह बात हमारी चहकती-फुदकती, पंख फड़फड़ाती नायिका को बहते पानी की आवाज़ की तरह प्रिय लगती थी। वे

चाहते थे उसके लिए कुछ करना, और वह चाहती थी, उनसे कुछ चाहना। पर उसकी चाह सवाल पूछने तक ही सीमित रहती थी, और सवाल वह बहुत पूछती थी। उसके मौसा के पास भी जवाबों की कमी नहीं थी, हालांकि कभी-कभी उसके दबाव के सामने वे असमंजस में पड़ जाते। वह उनसे इंग्लैण्ड के बारे में, ब्रिटिश संविधान के बारे में, अंग्रेज़ों के चरित्र के बारे में और राजनीतिक राजपरिवार के रीति-रिवाजों, उच्च वर्ग की विशेषताओं तथा पड़ोसियों के रहन-सहन आदि के बारे में पूछती। इन सबकी जानकारी हासिल करते हुए वह यह भी जानना चाहती कि किताबों में लिखी बातों से इनका कितना मेल बैठता है। बुड्ढा आदमी तब टांगों पर फैले शाल के बल निकालता हुआ एक रूखी कोमल मुस्कराहट के साथ उसकी तरफ थोड़ा देख लेता।

"किताबों में ?" एक बार उन्होंने कहा। "देखो, मुझे किताबों के बारे में ज़्यादा पता नहीं। यह तुम्हें रैल्फ से पूछना चाहिए। मैं हमेशा हर चीज़ का पता अपने से करता हूं—स्वाभाविक ढंग से उनकी जानकारी प्राप्त करना चाहता हूं। मैंने भी कभी ज़्यादा सवाल नहीं किए। बस चुप रहकर देखता-परखता रहा। मुझे अवसर बहुत अच्छे मिले। उससे कहीं अच्छे जैसे तुम्हारी जैसी युवा लड़की को आम तौर पर मिल सकते हैं। मेरे स्वभाव में एक जिज्ञासा है, हालांकि मुझे देखकर तुम्हें इसका पता नहीं लगेगा। तुम मुझे जितना भी देखो, मैं तुम्हें इससे ज़्यादा दिखूंगा। मैं इन लोगों को पैंतीस साल से ज्यादा से देख रहा हूं और निःसंकोच कह सकता हूं कि इनके बारे में बहुत कुछ जान गया हूं। यह देश बहुत अच्छा है—उससे कहीं अच्छा जैसा कि हम उस ओर के लोग इसे समझते हैं। बहुत-सी चीज़ों में यहां सुधार होना चाहिए, पर अभी लोग आम तौर पर उसकी आवश्यकता महसूस नहीं करते। आवश्यकता महसूस होने पर ये लोग सुधार कर भी लेते हैं, पर तब तक इन्हें इन्तज़ार करते रहना ही अच्छा लगता है। आने से पहले जितना सोचता था, उससे कहीं ज़्यादा मेरा दिल यहां लग रहा है—शायद इसलिए कि मुझे काफी सफलता मिली है। आदमी को सफलता मिले, तो उसका मन नहीं उखड़ता।"

"आपका ख्याल है कि मुझे सफलता मिले, तो मेरा जीवन लगा रहेगा ?"

"मेरा बहुत कुछ यही ख्याल है, और सफलता तो तुम्हें मिलेगी ही। यहां लोग अमरीकन महिलाओं की बहुत कद्र करते हैं और उनसे बहुत कोमलता से

पेश आते हैं। मगर तुम्हारा जी बहुत ज़्यादा लग जाए यह भी अच्छा नहीं।"

"नहीं, मुझे बिलकुल नहीं लगता कि यहां मुझे सन्तोष मिल सकता है," इज़ाबेल जैसे बात को तौलती हुई ज़ोर देकर बोली। "मुझे यह जगह पसन्द है, पर लोगों के बारे में मैं निश्चय के साथ ऐसा नहीं कह सकती।"

"लोग बहुत अच्छे हैं—खास तौर से अगर आदमी उन्हें पसन्द करने लगे तो।"

"लोग अच्छे हैं, इसमें सन्देह नहीं," इज़ाबेल ने कहा, "पर क्या उनका सामाजिक व्यवहार भी उतना ही अच्छा है? वे मुझे ठगे या पीटेंगे नहीं, पर क्या मेरे साथ घुल-मिल सकेंगे? मैं निधड़क यह कह रही हूं क्योंकि मैं इसी चीज़ की कद्र करती हूं। मुझे लगता है कि इनका लड़कियों से व्यवहार अच्छा नहीं होता—कम से कम उपन्यासों में तो नहीं होता।"

"मैं उपन्यासों के विषय में नहीं जानता," मिस्टर टाउशेट बोले, "मेरा विचार है उपन्यास बहुत योग्यतापूर्वक लिखे जाते हैं, पर वे बिलकुल सही चित्रण करते हों, ऐसा मुझे नहीं लगता। पहले एक बार यहां एक महिला आई थी जो उपन्यास लिखती थी। रैल्फ की मित्र थी और उसने उसे निमन्त्रित किया था। वह एक निश्चय के साथ चलती थी और कुछ भी कर सकती थी, पर किसी वस्तुस्थिति के साक्ष्य के लिए उसपर निर्भर नहीं किया जा सकता था। वह दरअसल अपनी कल्पना को बहुत छूट देती थी। बाद में उसकी एक किताब छपीं जिसमें उसने—एक तरह से व्यंग्य-चित्र के रूप में—इस खाकसार का खाका खींचा था। मैंने वह किताब पढ़ी ही नहीं, पर रैल्फ ने खास-खास अंशों पर निशान लगाकर मुझे दी थी। उसने जो चित्रित करना चाहा था वह था मेरा बातचीत का ढंग—उसका अमरीकीपन, अनुनासिक स्वर, यैंकी धारणाएं, सितारे और धारियां। वह सब बहुत सही नहीं था, उसने शायद ठीक से मुझे सुना ही नहीं था। वह मेरी बातचीत ठीक से प्रस्तुत करती, तो मुझे एतराज़ न होता। पर उसने मुझे सुनने की तकलीफ ही नहीं की। यह मुझे गवारा नहीं हुआ। बात तो मैं एक अमरीकन की तरह करूंगा, या एक हॉटेनटाट की तरह तो नहीं करूंगा? मैं चाहे जैसी बात करता हूं, लोग इसे अच्छी तहर समझ लेते हैं। पर उस महिला के उपन्यास के बुड्ढे की तरह मैं बिलकुल नहीं बोलता। वह तो अमरीकन था ही नहीं—हम वैसे आदमी को वहां जगह दे ही नहीं सकते। मैं सिर्फ इसलिए बता रहा हूं

कि किताबों में सब कुछ हमेशा सही नहीं होता। ठीक है मेरे कोई बेटी नहीं है, और मिसेज़ टाउशेट फ्लोरेंस में रहती हैं, इसलिए युवा लड़कियों के बारे में ज़्यादा जानने का मौका नहीं मिला। फिर भी निम्न वर्ग में तो शायद लड़कियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता, पर उच्च वर्ग में, और कुछ हद तय मध्य वर्ग में, उनकी स्थिति मेरे ख्याल से बेहतर है।"

"तौबा !" इज़ाबेल ने एकाएक कहा, "यहां कितने वर्ग हैं ? पचासेक तो होंगे।"

"मैंने वर्गों की कभी गिनती नहीं की—उनकी तरफ ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। अमरीकन होने का यहां एक यह भी लाभ है कि आदमी किसी भी वर्ग में नहीं आता।"

"अच्छा ही है," इज़ाबेल बोली, "हम अंग्रेजों के किसी वर्ग में क्यों आएं ?"

"मेरा ख्याल है कुछ लोग यहां काफी आराम से रहते हैं—खास तौर पर वे जो चोटी पर हैं। पर मेरे लिए लोगों के कुल दो ही वर्ग हैं—वे जिनपर मुझे विश्वास है, और वे जिनपर नहीं है। इनमें से रानी इज़ाबेल, तुम पहले वर्ग में आती हो।"

"मैं इसके लिए आपकी आभारी हूं," इज़ाबेल जल्दी से बोली, "अपनी प्रशंसा ग्रहण करने का उसका ढंग काफी रूखा-सा था—वह जल्दी से जल्दी उस विषय से छुट्टी पा जाना चाहती थी। कई बार लोग इसे गलत समझ जाते—उन्हें लगता कि उसपर उसका असर ही नहीं होता। पर असलियत यह थी कि वह यह ज़ाहिर नहीं होने देना चाहती थी कि उसे इससे कितनी खुशी होती है। यह जाहिर हो जाने से और भी कितना कुछ ज़ाहिर हो सकता था। "मैं सोचती हूं" उसने आगे कहा, "कि अंग्रेज़ लोग बहुत रूढ़िवादी हैं।"

"ये लोग हर चीज़ निश्चित रखकर चलते हैं," मिस्टर टाउशेट ने सहमति प्रकट की। "इनका सब कुछ पहले से तय रहता है। आखिरी क्षण के लिए ये कोई बात नहीं छोड़ते।"

"हर चीज़ का पहले से तय होना मुझे पसन्द नहीं," लड़की बोली, "मुझे अचम्भा ज़्यादा अच्छा लगता है।"

उसका अपना यह अलग मत रखना उसके मौसा को काफी दिलचस्प लगा।

"पर तुम्हारे लिए यह पहले से तय है," उन्होंने तुरन्त कहा, "कि तुम्हें बहुत सफलता मिलेगी। मैं सोचता हूं, तुम्हें यह चीज़ पसन्द आएगी।"

"अगर लोग जड़ और रूढ़िवादी हैं, तो मुझे यहां सफलता नहीं मिलेगी। मैं जड़ और रूढ़िवादी बिलकुल नहीं हूं। मेरा स्वभाव इसके विपरीत है। यह चीज़ इन्हें अच्छी नहीं लगेगी।"

"यह तुम बिलकुल गलत सोचती हो," मिस्टर टाउशेट बोले, "इन्हें क्या अच्छा लगेगा, यह कहा नहीं जा सकता। ये किसी एक लकीर पर नहीं चलते। यह इनकी सबसे बड़ी खासियत है।"

"तब ठीक है," इज़ाबेल अपनी काली पोशाक की बैल्ट में हाथ उलझाए मौसा के सामने खड़ी, लान पर ऊपर से नीचे तक नज़र डालती हुई बोली, "यह चीज़ मेरे अनुकूल बैठती है।"

७

वे दोनों जब-तब ब्रिटिश जन-समुदाय के व्यवहार के बारे में बातें करते रहते जैसे कि ब्रिटिश जन-समुदाय की इज़ाबेल आर्चर में दिलचस्पी हो। पर ब्रिटिश जन-समुदाय इस लड़की के प्रति, जैसे, रैल्फ के अनुसार, भाग्य ने इंगलैंड के सबसे नीरस घर में ला पटका था, बिलकुल उदासीन था। जोड़-दर्द से पीड़ित उसके मौसा बहुत कम लोगों से मिलते थे और मिसेज़ टाउशेट ने अपने पति के पड़ोसियों से इतनी राह-रस्म ही नहीं रखी थी कि वे लोग उनसे मिलने आते। पर उनकी अपनी एक खास रुचि थी—उन्हें अच्छा लगता था कि लोग उन्हें अपने कार्ड भेजें। जिसे सामाजिक आदान-प्रदान करते हैं, वह चीज उन्हें जरा नहीं भाती थी। पर इससे अच्छी उन्हें कोई चीज़ नहीं लगती थी कि उनके हाल की टेबल पतले गत्ते के सफेद चौकोर, प्रतीतात्मक टुकड़ों से भरी हो। वे अपने को इस बात का मान देती थीं कि वे कभी कोई काम अनुचित नहीं करतीं और इस महान् सत्य की उन्हें उपलब्धि हो चुकी थी कि दुनिया में कुछ भी बिना कीमत नहीं मिलता। गार्डन कोर्ट की मालकिन के रूप में वहां के सामाजिक जीवन में उन्होंने कभी

हिस्सा नहीं लिया था, और यह आशा ही नहीं की जा सकती थी कि आसपास के इलाके में लोग इनके आने-जाने का ठीक हिसाब रखते होंगे। पर यह निश्चय के साथ नहीं कहा जा सकता कि इस तरफ इतना कम ध्यान दिया जाना उन्हें गलत न लगता हो, और न ही यह कि पास-पड़ास के लोगों में अपने लोकप्रिय न होने का सम्बन्ध (हालांकि इसकी उन्हें खुशी ही थी) वे अपनी उन उल्टी-सीधी बातों से जोड़ती हों, जो वे अक्सर इस देश के बारे में कहती रहती थीं। इज़ाबेल अपने को एक अजीब-सी स्थिति में पाती—ब्रिटिश संविधान को अपनी मौसी के आक्षेपों से बचाने में—क्योंकि मिसेज़ टाउशेट की उस 'सम्मानित यन्त्र' में मीन-मेख निकालते रहने की आदत थी। इज़ाबेल यह इसलिए नहीं करती थी कि उनकी इस मीन-मेख से संविधान की पुरानी कड़ी चमड़ी को कोई फर्क पड़ता था, बल्कि इसलिए कि उसके ख्याल में उसकी मौसी अपनी कुशाग्रता का इससे कहीं अच्छा उपयोग कर सकती थी। आलोचना वह स्वयं भी करती थी, पर उसके लिए यह ठीक था, क्योंकि वह युवा थी, फिर एक लड़की थी, और वह भी अमरीकन। पर वह बहुत भावुक भी थी। मिसेज़ टाउशेट के रूखेपन में ऐसा कुछ था जिससे उसके अन्दर के नैतिकता के स्रोत फूट पड़ते थे।

"पर आपका दृष्टिकोण क्या है ?" वह अपनी मौसी से पूछती, "आप जब यहां की हर चीज़ की आलोचना करती हैं, तो आपका कोई न कोई दृष्टिकोण तो होना चाहिए।" यह दृष्टिकोण अमरीकन भी नहीं हो सकता, क्योंकि वहां की हर चीज़ भी आपको इतनी ही नापसन्द थी। मैं आलोचना करती हूं, तो एक दृष्टि-कोण से—और वह ठेठ अमरीकन दृष्टिकोण है।"

"मेरी प्यारी लड़की," मिसेज़ टाउशेट कहतीं, "दुनिया में जितने समझदार लोग हैं, उतने ही दृष्टिकोण हैं। तुम कह सकती हो कि उनकी संख्या बहुत कम ही रहेगी। अमरीकन दृष्टिकोण ? ना ना, यह तो बहुत संकीर्ण बात है। मेरा दृष्टिकोण, शुक्र है, मेरा अपना है।"

इज़ाबेल ने मुंह से नहीं माना, पर यह उत्तर उसे काफी अच्छा लगा। उसके अपने निर्णय करने के ढंग का लगभग इसी रूप में वर्णन किया जा सकता था, हालांकि उसका मुंह से ऐसा कहना ठीक न लगता। मिसेज़ टाउशेट से कम उम्र के और कम तजरुबेकार व्यक्ति की ज़बान से ऐसी बात धृष्टता की ही नहीं, घमण्ड की भी लगती। पर रैल्फ से बात करते हुए उसने यह तीर छोड़ ही दिया।

रैल्फ से उसकी काफी बात होती थी, और बढ़-चढ़कर बात करने की उसमें काफी सम्भावना रहती थी। उसका कज़िन, कहा जाए तो उसे चिढ़ाता रहता था जिससे उसके मन में यह धारणा जम गई थी कि वह उसकी हर बात को मज़ाक में लेता है। रैल्फ ऐसा आदमी नहीं था जो इस तरह की ख्याति से मिलने वाली सुविधाओं का लाभ न उठाता। इज़ाबेल उसपर अभियोग लगाती कि यह उसकी बुरी आदत है कि वह किसी चीज़ को गम्भीरतापूर्वक नहीं लेता, और अपने समेत हर चीज़ पर हंसता रहता है। जो भी थोड़ा-बहुत आदर-भाव उस आदमी के अन्दर था, उसे वह पूरा अपने पिता के लिए सुरक्षित रखता था। बाकी सब पर वह अंधाधुंध अपने मज़ाक आज़माता रहता था—अपने पिता के कमज़ोर फेफड़ोंवाले बेटे पर, अपनी बेमानी ज़िन्दगी पर, अपनी अजीब मां पर, अपने दोस्तों पर (खास तौर से लार्ड वारबर्टन पर), अपने अपनाये हुए हर देश पर, अपने जन्म के देशपर और अपनी नई मिली सुन्दर कज़िन पर। "मेरे बाहर के कमरे में एक म्यूज़िक का बैंड है," एक बार उसने इज़ाबेल से कहा। "उसे बिना रुके बजते रहने का आदेश है। उससे दो काम होते हैं—एक तो बाहरी दुनिया की आवाज़ें अन्दर के कमरों में नहीं पहुंचतीं, दूसरे बाहरी दुनिया को लगता है कि अन्दर नाच चल रहा है।" वाकई रैल्फ के बैंड के पास से गुज़रते हुए हमेशा नाच का संगीत ही सुनाई देता था—सुन्दर से सुन्दर वाल्ज़ हवा में तैरते रहते थे। उस लगातार सुनाई देती बाजे की आवाज़ से कई बार इज़ाबेल चिढ़ उठती थी। उसका मन होता था कि रैल्फ जिसे बाहर का कमरा कहता है, उसे पार करके वह अन्दर के कमरे में झांक सके। रैल्फ का कहना था कि वह कमरा बहुत मनहूस है, पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसे झाड़-बुहारकर और व्यवस्थित करके उसे खुशी होती। उसे उस कमरे से बाहर रखना सच्चा आतिथ्य नहीं था। रैल्फ को इसकी सज़ा देने के लिए वह अपनी सीधी युवा विनोदशक्ति की छड़ी से लगातार वहां दस्तक देती रहती। कहना होगा कि वह अपनी विनोदशक्ति का प्रयोग आत्म-रक्षा के लिए ही करती थी क्योंकि रैल्फ उसे 'कोलम्बिया' कहकर छेड़ता रहता था और कहा करता था कि उसकी देशभक्ति में इतनी उष्णता होती है कि आदमी उससे झुलस सकता है। उसने इज़ाबेल का एक व्यंग्य-चित्र भी बनाया था जिसमें उसे राष्ट्रीय झण्डे की चुन्नटों में प्रचलित फैशन की एक पोशाक पहने दिखाया गया था। अपने विकास के उस काल में इज़ाबेल को सबसे पहला भय यही लगता था

कि उसे कूप-मण्डूक न समझा जाए, और उसके बाद दूसरा यह कि कहीं सचमुच ही वह ऐसी न हो। पर अपने कज़िन के सामने बढ़-चढ़कर ऐसा दिखावा करने में वह संकोच नहीं करती थी और अपने देश के आकर्षणों को हरदम याद करती रहती थी। उसे जितना अमरीकन मानकर रैल्फ को खुशी होती, वह उतनी ही होने का दावा करती रहती थी। वह उसपर हंसना चाहता, तो वह उसके लिए काफी अवसर जुटा देती थी। मिसेज़ टाउशेट के सामने तो वह इंगलैंड के हक में बात करता था, पर रैल्फ उसे चिढ़ाने के लिए इंगलैंड का गुणगान करने लगता, तो वह बात-बात पर उससे अपना मतभेद प्रकट करती थी। वास्तव में इस छोटे और पके हुए देश की मिठास उसे अक्तूबर महीने की नाशपाती के स्वाद जैसी लगती थी––और इस सन्तोष से ही इसका मन इतना उत्साहित रहता था कि वह अपने कज़िन के चिढ़ाने का उसी ढंग से उत्तर दे पाती थी। कभी उसकी विनोद-वृत्ति शिथिल पड़ जाती, तो यह इसलिए न होता कि वह तिरस्कृत महसूस करती—वल्कि इसलिए कि सहसा उसे रैल्फके लिए अफसोस होने लगता। उसे लगता कि वह ऐसे ही अंधा-धुंध बात करता है, दिल से बात नहीं कहता।

"पता नहीं तुम्हें क्या हुआ है?" एक बार इज़ाबेल ने उससे कहा, "मुझे लगता है तुम बहुत ऊल-जलूल बोलते हो।"

"तुम्हें यह कहने का हक है," रैल्फ बोला। इस तीखे ढंग से कोई इससे बात नहीं करता था।

"मैं नहीं जानती तुम किस चीज़ को महत्त्व देते हो। मुझे लगता है किसी भी चीज़ को नहीं देते। तुम इंग्लैंड की प्रशंसा इसलिए नहीं करते कि इंग्लैंड को महत्त्व देते हो, और न ही अमरीका की निन्दा इसलिए करते हो कि अमरीका को महत्त्व देते हो।"

"मैं तुम्हारे सिवाय किसीको महत्त्व नहीं देता, डियर कज़िन," रैल्फ बोला।

"इसपर भी मैं विश्वास कर सकती, तो मुझे बहुत खुशी होती।"

"मुझे आशा करनी चाहिए कि तुम सच कह रही हो," रैल्फ ने ऊंचे स्वर में कहा।

इज़ाबेल इस बात पर विश्वास करती, तो सचाई से ज्यादा दूर न होती। रैल्फ उसके बारे में बहुत सोचता था—उसकी बात हर वक्त उसके मन में रहती थी। ऐसे अवसर पर जबकि उसके विचार उसके लिए एक भारी बोझ बन रहे

थे, इज़ाबेल का अचानक चले आना एक ऐसे उपहार की तरह था जो भाग्य ने, बिना किसी आश्वासन के, खुले हाथों झोली में डालकर उसमें गति और ताज़गी ला दी। उसे न केवल पंख दे दिए थे, बल्कि उड़ने का एक आधार भी जुटा दिया था। बेचारा रैल्फ कई हफ्ते से अवसाद में डूबा था। यूं तो उसका स्वभाव ही झुटपुटा था, पर उसपर एक गहरी घटा की छाया और घिर आई थी। अपने पिता को लेकर उसकी चिन्ता पहले से बढ़ गई थी क्योंकि उनका गठिया, जो पहले टांगों तक सीमित था, अब कुछ मर्मस्थलों की ओर फैलने लगा था। वसन्त में बूढ़ा आदमी सख्त बीमार रहा था और डाक्टरों ने हल्के से रैल्फ को बता दिया था कि अगला दौरा आसानी से नहीं संभलेगा। फिलहाल मिस्टर टाउशेट दर्द के दबाव से मुक्त थे, पर रैल्फ के मन से सन्देह नहीं जाता था कि यह शत्रु का छल-मात्र है और वह इन्हें असावधान पाकर हमला करना चाहता है। शत्रु की युक्ति कारगर होने पर उसका मुकाबला करने की ज़्यादा आशा नहीं की जा सकती थी। रैल्फ हमेशा से यह तय समझता आया था कि वह अपने पिता से पहले चलता होगा—कि उसका नाम उनसे पहले दुःख के साथ लिया जाएगा। पिता-पुत्र में आपस में काफी घनिष्ठता थी, और रैल्फ के लिए यह विचार सुखद नहीं था कि वह अपने नीरस जीवन का शेष भाग अकेले भोगने के लिए रह जाएगा, अपनी हारी हुई बाज़ी को खेलने के लिए वह हमेशा मन में अपने पिता की सहायता पर निर्भर करता आया था। उस मुख्य आधार को खो देने की सम्भावना से उसकी एक प्रेरणा समाप्त हो गई थी। दोनों साथ-साथ चल बसें, यहां तक तो चल सकता था, पर बिना अपने पिता के सहवास का प्रोत्साहन पाए, अपनी बारी का इंतज़ार करने की हिम्मत उसमें नहीं थी। उसकी मां को उसकी ज़रूरत होगी, ऐसा खुशफहमी भी उसे नहीं थी—किसी चीज़ के लिए खेद हो, यह मिसेज़ टाउशेट का सिद्धान्त ही नहीं था। रैल्फ अपने मन में यह भी सोचता था कि यह चाहकर वह अपने पिता के साथ न्याय नहीं करता कि उन दोनों में जो सक्रिय है, वह तो चलता हो और जो निष्क्रिय है वह बिछोह का दुःख सहने से बचा रहे। उसे पता था कि उसके शीघ्र अन्त की बात को उसके पिता एक चतुर भ्रान्ति समझते हैं जिसे पहले अपनी मौत से गलत साबित करके उन्हें खुशी होगी। अपने लड़के की भ्रान्ति को नकारने से उन्हें विजय गर्व होता—साथ इसमें भी कि अपनी सारी क्षीणता के बावजूद इस स्थिति में वे कुछ दिन

और काट सकें क्योंकि इसका भी वे आनन्द लेते थे। इनमें से दूसरा गर्व उन्हें मिले, यह सोचने में रैल्फ को कोई अपराध महसूस नहीं होता था।

ये अच्छे सवाल थे पर इज़ाबेल के आने के बाद उसने इनपर सोचना छोड़ दिया था। उसे यह भी लगने लगा कि अपने पूर्वज की मृत्यु के बाद जीवित रहने की असह्य यन्त्रणा की शायद इससे कुछ क्षति-पूर्ति हो सके। कभी-कभी वह सोचता कि क्या एलबैनी से आई इस नवयुवती से वह प्यार करने लगा है? पर अक्सर वह निर्णय करता कि नहीं, ऐसा नहीं है। उसके सम्पर्क में आने के एक सप्ताह के अन्दर यह बात उसके मन में और पक्की होती जा रही थी। लार्ड वार-बर्टन की उसके बारे में राय बिलकुल ठीक थी—उस लड़की का छोटा-सा व्यक्तित्व काफी दिलचस्प था। रैल्फ को आश्चर्य होता कि उसके मित्र ने कैसे यह इतनी जल्दी जान लिया, और फिर उसे लगता कि यह उसके मित्र की योग्यता का, जिसका वह इतना प्रशंसक है, एक और प्रमाण है। रैल्फ सोचता कि अगर उसकी कज़िन उसके लिए केवल मनोरंजन का ही साधन है, तो यह मनोरंजन काफी ऊंची किस्म का है। 'इस तरह के एक चरित्र को,' वह अपने से कहता, 'एक ऐसी वास्तविक और छोटी-सी आवेशपूर्ण शक्ति को क्रियाशील देखना प्रकृति की सबसे सुन्दर उपलब्धि है। यह सुन्दरतम कलाकृति से भी सुन्दर है—एक ग्रीक नक्काशी के कलश, एक महान टिटियान चित्र या एक गाथिक गिरजे से भी। इस तरह की अनायास प्राप्ति से सुखकर कोई चीज़ नहीं। उसके आने से हफ्ता-भर पहले मैं जितना कुढ़ा और ऊबा हुआ था, उतना पहले कभी नहीं रहा। कोई सुखकर बात हो सकती है, इसकी मुझे रत्ती-भर भी उम्मीद नहीं थी। पर तभी डाक से मुझे अपनी दीवार पर लटकाने के लिए टिटियान चित्र मिल जाता है, अपने चिमनी-पीस पर रखने के लिए एक ग्रीक कलश मिल जाता है। एक सुन्दर भवन की चाबी मेरे हाथ में ठूंस दी जाती है और मुझसे कहा जाता है कि अन्दर जाकर मैं उसपर मुग्ध हो लूं। मेरे दोस्त, तुम बहुत अकृतज्ञ रहे हो, अब बेहतर होगा कि खामोश रहो और बड़बड़ाना छोड़ दो।' इन विचारों की भावना काफी सही थी। पर चाबी उसके हाथ में दे दी गई थी, यह बात पूरी तरह सही नहीं थी। उसकी कज़िन बहुत मेधावी लड़की थी जिसे जानने के लिए, जैसे कि वह स्वयं कहता था, काफी समय की जरूरत थी। पर आवश्यक था उसे 'जानना, जबकि रैल्फ टाउशेट का उसके प्रति दृष्टिकोण चिन्तन-प्रधान और

आलोचनात्मक होते हुए भी विवेकपूर्ण नहीं था। वह भवन को बाहर से देखकर उसपर मुग्ध था, उसकी खिड़कियों में से झांककर उसके निर्माण के सही अनुमान का अन्दाज़ा लगा रहा था। उसे लगता था कि वह अन्दर की बस एकाध झलक ही देख पाया है, कभी उसकी छत के नीचे खड़ा नहीं हो सका। दरवाज़ा बन्द था और चाबियां जेब में रहते हुए भी उसे विश्वास था कि उनमें से कोई वहां लगेगी नहीं। इज़ाबेल समझदार भी थी और उदार भी। स्वभाव काफी खुला और अच्छा था। पर वह अपना करने क्या जा रही थी? यह सवाल कुछ अलग-सा था क्योंकि अक्सर स्त्रियों के बारे में यह नहीं पूछा जा सकता था। ज़्यादातर स्त्रियां तो अपना कुछ भी नहीं करती थीं—वे बड़े मज़े से एक निष्क्रिय-सा भाव अपनाए सिर्फ प्रतीक्षा करती थीं कि कोई पुरुष उनके रास्ते में आकर उन्हें उनके भाग्य से मंडित कर दें। इज़ाबेल की मौलिकता इस बात में थी कि उसे देखकर लगता था वह अपने ही इरादों से चलना चाहती है। "जब भी वह अपने इरादे पूरे करेगी," रैल्फ कहता, "तो मैं चाहूंगा कि मैं उसे देखने के लिए उसके पास रहूं।"

स्वागत-सत्कार की ज़िम्मेदारी रैल्फ पर ही आ पड़ी थी। मिस्टर टाउशेट अपनी कुर्सी से उठ नहीं पाते थे और उनकी पत्नी की स्थिति एक अलग-थलग मेहमान की-सी थी। इसलिए रैल्फ को जो कुछ करना था, वह उसकी ज़िम्मेदारी तो थी ही, साथ उसमें उसकी दिलचस्पी भी शामिल थी। वह ज़्यादा घूमने वाला आदमी नहीं था, पर अपनी कज़िन के साथ वह मैदान में चहलकदमी करता रहता। इस तरह घूमकर वक्त काटने के लिए मौसम लगातार अच्छा बना रहा। इज़ा-बेल उस सम्बन्ध में मन में जो आशंकाएं लेकर आई थी, उनके बिलकुल विपरीत, उन लम्बी शामों में, जिनका विस्तार इज़ाबेल की सन्तुष्ट व्यग्रता जितना ही था, कभी वे नाव लेकर दरिया की सैर को निकल जाते। इज़ाबेल उसे प्यारा छोटा-सा दरिया कहती थी जिसका सामने का किनारा दृश्यपट की पूर्वभूमि का ही एक भाग जान पड़ता था। कभी वे नीची, खुली और चौड़े पहियों की फिटन में बाहर के इलाके में घूमने निकल जाते। पहले यह फिटन मिस्टर टाउशेट के इस्तेमाल में आती थी, पर अब उन्होंने उसका मज़ा लेना छोड़ दिया था। इज़ाबेल को फिटन चलाने में बड़ा मज़ा आता था। उसके रास पकड़ने के ढंग से सईस उसे 'जानकार' समझता था। अपने मौसा के ऊंचे घोड़ों को घुमावदार गलियों और रास्तों में से ले जाते वह थकती नहीं थी। देहात में से जाते हुए, जो घटनाएं हो जाती थीं, वे

वैसी ही थीं जैसा कि उसे विश्वास था होंगी। फूस और लकड़ी की झोंपड़ियों के पास से, रेत के जालीदार शराबघरों के पास से, और पुराने मैदानों और खाली बागों के पास से वह गर्मी में घनी-उगी झाड़ियों के बीच से गुज़रती जाती। जब वे लौटकर घर पहुंचते, तो अक्सर देखते कि लॉन में चाय लग चुकी है, और कि मिसेज़ टाउशेट ने अपने पति को एक प्याली बनाकर देने से दरेग नहीं किया। पर ज़्यादातर पति-पत्नी खामोश बैठे होते। मिस्टर टाउशेट का सिर पीछे को झुका होता और आंखें बन्द होतीं, जब कि मिसेज़ टाउशेट अपनी बुनाई में लगी होतीं—वही असाधारण गम्भीरता ओढ़े जिससे कुछ स्त्रियां अपने हाथ की सलाइयों को चलते देखा करती हैं।

एक दिन कोई मिलने के लिए आया था। रैल्फ और इज़ाबेल घण्टा-भर दरिया की सैर के बाद वापस घर आए, तो आते ही उनकी नज़र लार्ड वारबर्टन पर पड़ी जो पेड़ों के नीचे मिसेज़ टाउशेट से बात करने में मगन था। दूर से ही लगता था कि बात किसी खास विषय पर नहीं हो रही। वह चमड़े का एक थैला लेकर अपने यहां से घोड़े पर आया था—डिनर खाने और रात रहने के इरादे से—जिसके लिए अक्सर बाप-बेटा उसे बुलाया करते थे। इज़ाबेल ने उसे सिर्फ आने के दिन आधे घण्टे के लिए देखा था और उस थोड़े समय में ही उसे लगा था कि वह उस आदमी को पसन्द करती है। उसकी सूक्ष्म ग्रहण शक्ति पर उस आदमी का खासा गहरा प्रभाव पड़ा था और वह कई बार उसके बारे में सोच चुकी थी। उसे आशा थी कि उस आदमी से वह फिर भी मिलेगी। उसे यह भी आशा थी कि वहां औरों से भी मिलेगी। गार्डनकोर्ट नीरस नहीं था। उस जगह की अपनी ही एक समृद्धि थी—उसके मौसा उसे पहले से अधिक एक स्वर्णिम पितामह जैसे लगने लगे थे, और उसका कज़िन हर आम कज़िन से भिन्न था। उसका कोई ऐसा कज़िन होगा, इस बारे में पहले वह निराश ही थी। उसपर पड़ते प्रभाव इतने नये थे और इस तरह जल्दी-जल्दी पड़ रहे थे कि बीच में व्यवधान का कोई अवसर ही नहीं आया था। पर वह अपने को याद दिलाती रहती थी कि उसकी रुचि मानव प्रकृति में है, और कि विदेश आते हुए, उसे सबसे बड़ी आशा यही थी कि वह बहुत-से लोगों से मिल सकेगी। इसलिए जब रैल्फ ने उससे कहा, जैसा कि पहले भी कई बार कह चुका था, कि "मुझे आश्चर्य है तुम यह सब कैसे बर्दाश्त करती हो, तुम्हें हमारे कुछ पड़ौसियों और दोस्तों से ज़रूर मिलना चाहिए,

हालांकि वे हैं बहुत थोड़े ही—इतने थोड़े कि तुम सोच भी नहीं सकतीं", और जब उसने अंग्रेज़ समाज से उसका परिचय कराने के लिए 'बहुत-से लोगों' को बुलाने की बात कही, तो उसने इस आतिथ्य-भावना का सत्कार करते हुए पहले से ही घोषणा कर दी कि वह ज़रूर उस बाढ़ में कूद जाएगी। पर अभी तक रैल्फ ने इस बारे में कुछ किया नहीं था। पाठक को विश्वास में लेकर हम बता सकते हैं कि उसके देर करने का कारण यही था कि अपनी कज़िन के साथ समय बिताने का परिश्रम उसपर इतना भारी नहीं पड़ता था कि उसे किसी बाहरी सहायता की आवश्यकता हो। इज़ाबेल कई बार उससे 'नमूनों' की बात कर चुकी थी—यह एक शब्द उसके मुंह पर बार-बार आता था। वह इससे रैल्फ को समझाना चाहती थी कि कुछ खास-खास 'केस' देखकर वह इंग्लिश समाज से परिचित होना चाहती है।

"लो, वह रहा एक नमूना," दरिया के किनारे से ऊपर आते हुए लार्ड वारबर्टन को पहचानकर रैल्फ ने कहा।

"किस चीज़ का नमूना ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"अंग्रेज़ भद्र व्यक्ति का नमूना।"

"तुम्हारा मतलब है वे सब ऐसे होते हैं ?"

"नहीं, सब ऐसे नहीं होते।"

"तो यह एक बेहतर किस्म का नमूना है," इज़ाबेल बोली, "क्योंकि मुझे विश्वास है, यह अच्छा आदमी है।"

"हां, बहुत अच्छा आदमी है। और बहुत खुशकिस्मत भी।"

खुशकिस्मत लार्ड वारबर्टन ने हमारी नायिका के साथ हाथ मिलाकर उससे कुशल-समाचार पूछा। "पर यह पूछने की ज़रूरत ही नहीं," उसने कहा, "क्योंकि तुम अभी नाव चलाती आई हो ?"

"हां, थोड़ी देर चलाती रहूं," इज़ाबेल बोली, "पर तुम्हें कैसे पता चला ?"

"मुझे पता है रैल्फ नाव नहीं चलाता क्योंकि यह बहुत सुस्त आदमी है," लार्ड वारबर्टन ने हंसते हुए रैल्फ की तरफ देखकर कहा।

"इसके पास सुस्ती के लिए अच्छा बहाना भी है," इज़ाबेल ने ज़रा धीमे स्वर में उत्तर दिया।

"इसके पास हर चीज़ के लिए बहाना है," लार्ड वारबर्टन उसी तरह खिल-

खिलाकर बोला।

"मेरे नाव न चलाने की वजह यह है कि मेरी कज़िन नाव चलाना बहुत जानती है," रैल्फ ने कहा, "यह हर काम अच्छा जानती है, कोई चीज़ नहीं जो इसके छूने से सज न उठे।"

"इससे तो हर आदमी का मन होगा कि तुम उसे छू दो," लार्ड वारबर्टन ने घोषणा की।

"ठीक अर्थ में छुए जा सको तो तुम्हारे हक में अच्छा ही होगा," इज़ाबेल बोली। जहां यह सुनना उसे अच्छा लगता था कि उसमें बहुत-से गुण हैं, वहां वह सहज भाव से यह भी सोचती थी कि यह स्वीकृति एक दुर्बल मन की निशानी नहीं क्योंकि बहुत-सी बातों में सचमुच उसमें अपनी एक विशिष्टता थी। अपने प्रति उसके आदर-भाव में इतनी नम्रता तो थी ही कि इसके लिए उसे प्रमाण की आवश्यकता महसूस होती थी।

लार्ड वारबर्टन रात-भर ही गार्डन कोर्ट में नहीं रहा, उसे अगले दिन के लिए भी रोक लिया गया। दूसरा दिन पूरा होने पर उसने अपना जाना फिर कल पर मुलतबी कर दिया। इस दौरान उसने इज़ाबेल से कई प्रशंसा-वाक्य कहे, और इज़ाबेल ने उसके आदर अभिव्यक्त करने के ये प्रयास बहुत शालीनता के साथ स्वीकार किए। उसे वह व्यक्ति बहुत पसन्द आया था। उसके बारे में उसकी पहली धारणा ही काफी अच्छी थी, पर उसके साथ पूरी शाम बिताकर तो उसे साफ, किन्तु बिना किसी क्लानता के यह आभास होने लगा कि वह एक रूमान का नायक हो सकता है। वह सोने गई, तो उसके मन में सौभाग्य की एक अनुभूति थी, साथ सम्भावित उल्लास की द्रुत चेतना। "कितना अच्छा है दो-दो ऐसे आकर्षक व्यक्तियों को जानना," उसने मन में कहा, 'ऐसे' से उसका अभिप्राय अपने कज़िन और कज़िन के मित्र से था। यह और कहा जा सकता है कि एक ऐसी घटना हो गई जो उसकी सहजता की परख कही जा सकती थी। मिस्टर टाउशेट साढ़े नौ बजे सोने चले गए थे और मिसेज़ टाउशेट इन तीनों के साथ ड्राइंग रूम में बैठी रही थीं। घण्टे-भर से कुछ कम समय तक निगरानी कर चुकने के बाद उन्होंने उठते हुए इज़ाबेल से कहा कि अब उन्हें दोनों युवकों से गुड नाइट कहकर चल देना चाहिए। इज़ाबेल का अभी सोने को ज़रा मन नहीं था। उसे वह दावत बहुत आमोदपूर्ण लग रही थी। उसका ख्याल था कि दावत इतनी

जल्दी समाप्त नहीं होनी चाहिए। सो, बिना और सोचे उसने सिर्फ इतना कहा, "मेरा उठना ज़रूरी है, आंटी ? मैं आधे घण्टे में आ जाऊंगी।"

"मेरे लिए इन्तज़ार करना संभव नहीं," मिसेज़ टाउशेट ने उत्तर दिया।

"आपको इन्तज़ार करने की ज़रूरत नहीं। रैल्फ मेरे लिए मोमबत्ती जला देगा," इज़ाबेल ने चहककर कहा।

"तुम्हारे लिए मोमबत्ती मैं जला दूंगा। मुझे अपनी मोमबत्ती जलाने देना मिस आर्चर," लार्ड वारबर्टन बोल उठा, "सिर्फ मेरी इतनी प्रार्थना है कि आधी रात से पहले नहीं।"

मिसेज़ टाउशेट पल-भर अपनी छोटी-छोटी चमकती आंखें उसपर स्थिर किए रहीं, फिर ठण्डे लहजे में उन्हें अपनी भांजी की तरफ मोड़कर बोलीं, "तुम मर्दों के साथ अकेली नहीं रह सकतीं। तुम यहां,···तुम यहां···अपने प्रिय एलबैनी में नहीं हो, माई डियर।"

इज़ाबेल लजाकर उठ खड़ी हुई। "चाहती हूं वहीं होती," उसने कहा।

"मैं कहता हूं, अम्मां···।" रैल्फ के मुंह से निकला।

"माई डियर मिसेज़ टाउशेट !" लार्ड वारबर्टन बुदबुदाया।

"आपका देश मैंने नहीं बनाया, माई लार्ड," मिसेज़ टाउशेट राजसी ढंग से बोलीं। "मुझे यह जैसा मिला है, उसी रूप में इसे स्वीकार करना है।"

"मैं अपने कज़िन के साथ भी नहीं रुक सकती ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम कि लार्ड वारबर्टन तुम्हारा कज़िन है।"

"शायद मैं सोने चला जाऊं, तो बेहतर है," लार्ड वारबर्टन ने सुझाव रखा, "उससे सब ठीक हो जाएगा।"

मिसेज़ टाउशेट की आंखों में हताशा झलक आई और वे फिर से बैठ गई। "अगर इतना ही ज़रूरी है, तो मैं ही आधा रात तक बैठी रहूंगी।"

इस बीच रैल्फ ने इज़ाबेल को उसकी मोमबत्ती पकड़ा दी थीं। वह गौर से उसे देख रहा था। उसे लग रहा था कि कहीं इज़ाबेल का पारा न चढ़ जाए—वह दुर्घटना अपने में खासी दिलचस्प होती। पर उसने अगर सोचा हो कि वह भड़क उठेगी, उसे निराशा ही हुई क्योंकि इज़ाबेल ने ज़रा-सा हंसकर 'गुड नाइट' की और अपनी मौसी के साथ चली गई। रैल्फ को अपनी मां पर ताव आ रहा था, हालांकि वह जानता था उन्होंने जो किया है, ठीक किया है। ऊपर मिसेज़

टाउशेट के दरवाज़े के पास दोनों महिलाएं अलग हुईं। रास्ते में इज़ाबेल ने कोई बात नहीं की।

"मुझे पता है मेरी दखल-अंदाजी से तुम्हें परेशानी हुई है," मिसेज़ टाउशेट ने कहा।

इज़ाबेल पल-भर सोचती रही। "नहीं, परेशानी मुझे नहीं हुई। पर आश्चर्य ज़रूर हुआ है और काफी अजीब भी लग रहा है। मेरा ड्राइंग रूम में रहना ठीक नहीं था क्या ?"

"हरगिज़ ठीक नहीं था। यहां पर जवान लड़कियां—भले घरों में—रात को मर्दों के साथ अकेली नहीं बैठतीं।"

"तब तो आपने अच्छा किया मुझे बता दिया," इज़ाबेल बोली, "मुझे यह बात समझ नहीं आती। पर पता चल गया, इसकी मुझे खुशी है।"

"मैं तुम्हें हमेशा बताती रहूंगी," उसकी मौसी ने उत्तर में कहा, "जब भी मुझे लगेगा कि तुम ज़रूरत से ज्यादा आज़ादी ले रही हो।"

"हां, ज़रूर। पर यह मत समझिएगा कि मैं आपकी झिड़की को हमेशा ठीक ही समझूंगी।"

"ज्यादातर नहीं समझोगी। तुम्हें अपनी मर्ज़ी से चलना बहुत पसन्द है।"

"हां, मुझे अपनी ही मर्ज़ी से चलना पसन्द है। पर यह मैं हमेशा जानना चाहती हूं कि किस तरह चलना गलत है।"

"ताकि तुम उस तरह चल सको ?" मिसेज़ टाउशेट ने कहा।

"आप जो भी सोच लें," इज़ाबेल ने उत्तर दिया।

८

रूमानी चीज़ों में इज़ाबेल की दिलचस्पी देखकर लार्ड वारबर्टन ने किसी तरह साहस के साथ यह सुझाव दिया कि वह एक दिन आकर उसका घर देखे जो कि अपनी ही तरह की एक पुरानी जगह है। उसने मिसेज़ टाउशेट से वचन ले लिया कि वे अपनी भांजी को साथ लेकर आएंगी। रैल्फ ने भी अपनी रज़ामन्दी

ज़ाहिर की कि उसका अपने पिता के पास रुकना ज़रूरी न हुआ, तो वह भी महिलाओं का साथ देगा। लार्ड वारबर्टन ने इज़ाबेल को विश्वास दिलाया कि इस बीच उसको बहनें आकर उससे मिल लेंगी। इज़ाबेल उसकी बहनों के बारे में जान चुकी थी। गार्डनकोर्ट में जो समय उन्होंने साथ बिताया था, इसके दौरान वह लार्ड वारबर्टन से उसके परिवार के बारे में कितना कुछ पूछती रही थी। जब इज़ाबेल किसीमें दिलचस्पी लेती थी, तो उससे हर तरह के सवाल पूछती थी। लार्ड वारबर्टन बहुत बातूनी था, इसलिए उसका पूछना व्यर्थ नहीं गया था। लार्ड वारबर्टन ने बताया था कि उसकी चार बहनें, दो भाई हैं। मां-बाप मर चुके हैं। बहन-भाई काफी अच्छे लोग हैं। "बहुत ज्यादा होशियार तो नहीं," उसने कहा था, "पर बहुत सभ्य और मिलनसार हैं।" उसका यह भी खयाल था कि इज़ाबेल मिलने के बाद उन्हें अच्छी तरह जान जाएगी। एक भाई पादरी था जो लौकले के पारिवारिक गिरजे से ही सम्बद्ध था। यह गिरजा काफी बड़ा और फैलावदार था। हालांकि इस भाई का हर विषय में उससे मतभेद रहता था, फिर भी वह आदमी बहुत अच्छा था। लार्ड वारबर्टन ने कुछ चीज़ों को लेकर अपने भाई के विचार भी उसे बताए थे, हालांकि वे विचार इज़ाबेल कई और लोगों के मुंह से भी सुन चुकी थी, और जानती थी कि मानव-परिवार के बहुत-से लोग वैसा सोचते हैं। कई विचार उसे लगा था कि स्वयं उसके भी वैसे ही हैं, पर लार्ड वारबर्टन ने उसे विश्वास दिलाया था कि वह गलती पर है कि ऐसी बात सम्भव ही नहीं कि उसे सिर्फ लगता है वह ऐसा सोचती है, और कि वह गौर करे तो उसे लगेगा ऐसा सोचने में कोई तुक ही नहीं है। इसपर इज़ाबेल ने कहा कि उनमें से बहुत-सी बातों पर वह गौर कर चुकी है, तो वह बोला कि इससे यह एक बात, जो वह अक्सर महसूस करता है, और भी साबित होती है कि दुनिया में सबसे तंग दिल कोई लोग हैं, तो अमरीकन हैं। वे सब परले सिरे के 'टोरी' और अंधविश्वासी हैं, और कि अमरीकन पुराणपन्थियों से बढ़कर कोई पुराणपन्थी नहीं हैं। इसका एक सबूत तो इज़ाबेल के अंकल और कज़िन ही हैं—उन दोनों से ज्यादा मध्यकालीन विचार किसीके नहीं हो सकते। उनके जैसे विचार हैं, वैसे विचार आजकल ब्रिटेन में लज्जा का कारण माने जाते हैं। इसपर तुर्रा यह कि वे दोनों समझते हैं कि इस गरीब नामाकूल बूढ़े इंग्लैंड की ज़रूरतों और खतरों के बारे में—और यह कहते हुए लार्ड हंसा—वे उससे ज्यादा जानते हैं, हालांकि वह यहां पैदा हुआ

है और इस देश के खासे बड़े टुकड़े का मालिक है—जो कि अपने में और भी शरम की बात है। इससे इज़ाबेल इस नतीजे पर पहुंची कि लार्ड वारबर्टन नये रंग-ढंग का अमीर आदमी है—सुधारवादी रैडिकल, और पुराने तौर-तरीकों से घृणा करने वाला। उसका तीसरा भाई, जो हिन्दुस्तानी सेना में था, काफी स्वेच्छा-चारी और खर-दिमाग आदमी था। जिसका परिवार के साथ इतना ही सम्बन्ध था कि उसके कर्ज़ वारबर्टन को बड़ा भाई होने के विशेषाधिकार के कारण चुकाने पड़ते थे। "अब मैं उसके और कर्ज नहीं चुकाऊंगा," लार्ड वारबर्टन ने कहा था। "वह मुझसे कहीं ज्यादा मजे में रहता है, ऐसी-ऐसी ऐश करता है जो कभी किसीने सुनी भी न हों, और अपने को मुझसे कहीं बेहतर आदमी समझता है। मैं क्योंकि हर मामले में एक-सा रैडिकल हूं, इसलिए मैं मनुष्यों की समता में विश्वास करता हूं और छोटे भाइयों को बड़े भाइयों से बेहतर नहीं मानता।" चार में से दो—दूसरी और चौथी बहन की शादी हो चुकी थी, जिनमें से एक, लोगों के कथनानुसार बहुत अच्छी रही थी, जबकि दूसरी का चुनाव बस ऐसा ही था। बड़ी का पति लार्ड हैकाक बहुत अच्छा आदमी था, पर दुर्भाग्यवश था भीषण 'टोरी'। और उसकी पत्नी, हर अंग्रेज पत्नी की तरह इस मामले में उससे भी बदतर थी। दूसरी ने नारफोक के एक छोटे-से स्क्वायर को अपना साथी चुना था, और हाल ही में शादी होने पर भी अभी से पांच बच्चों की मां बन चुकी थी। लार्ड वारबर्टन ने अपनी अमरीकन मित्र को यह सब और इसके अलावा भी बहुत कुछ बताया था। बहुत मेहनत से उसने हर चीज़ को स्पष्ट करना चाहा था जिससे इंग्लिश जीवन की खासियतों को उसके सामने खोलकर रख सके। इज़ाबेल को इसमें मज़ा आता था कि वह हर बात पूरी बताना चाहता है और दूसरे के तजुर्बे या कल्पना के लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़ना चाहता। "उसे लगता है", वह कहती, "कि मैं बर्बर समाज से आई हूं, और मैंने कभी छुरी-कांटे तक नहीं देखे।" वह जान-बूझकर उससे अल्हड़-से सवाल पूछ लेती जिससे उसके गम्भीर उत्तर सुनने की खुशी हासिल कर सके। जब वह आदमी जाल में उलझ जाता, तो वह कहती, "कितनी बुरी बात है कि तुम मुझे चेहरा रंगे और पंख लगाए नहीं देख सकते। मुझे पता होता तुम्हें आदिवासियों से इतना प्यार है, तो मैं अपनी देशी पोशाक साथ लेकर आती।" लार्ड वारबर्टन अमरीका में काफी घूमा था और इज़ाबेल से ज़्यादा उस देश के बारे में जानता था। वह भलमनसाहत में यह भी कहता था कि अम-

रीका दुनिया का सबसे सुन्दर देश है। पर वहां के सम्बन्ध में उसकी स्मृतियां कुछ ऐसी थीं कि उसे लगता था अमरीका से इंग्लैण्ड में आए व्यक्तियों को बहुत कुछ समझाना ज़रूरी है। "काश कि अमरीका में तुम मुझे इसी तरह सब कुछ बता सकतीं," वह कहता। "मैं तो तुम्हारे देश में जाकर घबरा ही गया था। सच कहूं तो मेरे होश गुम हो गए थे। जितना ही मुझे चीजें समझाई जातीं, उतनी ही मेरी उलझन और बढ़ जाती। मेरा खयाल है लोग मुझे समझाते ही गलत थे—इस मामले में वहां के लोग बहुत चालाक हैं। पर मेरी बताई हर चीज़ पर तुम विश्वास कर सकती हो। जो कुछ मैं बताता हूं, उसमें कुछ भी गलत नहीं है।" हां, इसमें कुछ भी गलत नहीं था कि वह बहुत समझदार और मंजा हुआ आदमी था और दुनिया की हर चीज़ की जानकारी रखता था। हालांकि उससे प्राप्त होती हर चीज़ की झलक बहुत दिलचस्प और रोमांचकारी होती थी, फिर भी इज़ाबेल को यह नहीं लगता था कि वह अपना रंग जमाने के लिए ऐसा कह रहा है। उस आदमी को ज़िन्दगी में अद्भुत अवसर मिले थे और वह उसे छेड़ती थी कि वह हमेशा ठोकर खाकर वहीं गिरता रहा है जहां बड़ी रकम या बड़ा रुतबा हो। पर उस आदमी को इसका गर्व नहीं था। दुनिया की अच्छी से अच्छी चीजों का उपयोग उसने किया था, पर उसके व्यक्तित्व में विस्तृत अनुभव—जो उसे बहुत आसानी से प्राप्त हुआ था—और लगभग लड़कों जैसी शालीनता का मिश्रित प्रभाव था। साथ ज़िम्मेदारी का कोमल रंग आ जाने से उसकी मिठास में अन्तर नहीं आया था—उसका प्रभाव ऐसा ही पड़ता था जैसे किसी चीज़ को सचमुच चखकर देखा गया हो।

"तुम्हारा अंग्रेज भद्र व्यक्ति का नमूना मुझे बहुत पसन्द आया," लार्ड वारबर्टन के जाने के बाद इज़ाबेल ने रैल्फ से कहा।

"मैं भी उसे पसन्द करता हूं, बल्कि प्यार करता हूं," रैल्फ बोला। "पर उससे ज्यादा उसपर दया करता हूं।"

इज़ाबेल ने एक बार सन्देहपूर्ण दृष्टि से उसकी तरफ देख लिया। "पर मुझे तो उसमें दोष ही यह नज़र आता है कि आदमी उसपर थोड़ी-सी भी दया नहीं कर सकता। उसे तो जैसे सभी कुछ हासिल है, सभी कुछ मालूम है, और वह सभी कुछ है।"

"उसकी हालत खराब है," रैल्फ अपनी बात को पकड़े रहा।

"तुम्हारा मतलब उसकी सेहत से तो नहीं ?"

"सेहत उस मनहूस की बहुत अच्छी है। मेरा मतलब है उसका बहुत बड़ा रुतबा है जिसके साथ वह हर तरह से खिलवाड़ कर रहा है। वह अपने-आपको गम्भीरतापूर्वक लेता ही नहीं।"

"तो क्या वह अपने को एक मज़ाक समझता है ?"

"उससे भी बुरा। वह अपने को एक धोखा, बल्कि एक गाली समझता है।"

"हो सकता है वह हो ही," इज़ाबेल बोली।

"हां, हो सकता है हो ही—हालांकि कुल मिलाकर मुझे ऐसा लगता नहीं। पर हो, तो बताओ एक अनुभूतिप्राण और आत्मचेतन गाली से अधिक दयनीय क्या चीज़ हो सकती है ?—ऐसी गाली से जिसकी जड़ें गहरी हों और जो अपने ही अन्याय की भावना से पीड़ित हो ? मैं उसकी जगह होता, तो बुद्ध की मूर्ति की तरह गम्भीर बना रहता। उसकी स्थिति मेरी कल्पना के अनुसार बहुत अच्छी है—बड़ी ज़िम्मेदारियां, बड़े अवसर, बड़ा सम्मान, बड़ा धन, बड़ी शक्ति और एक बड़े देश के जनकार्य में स्वाभाविक हिस्सा। पर वह अपने बारे में, अपनी स्थिति, अपनी शक्ति और दुनिया की हर चीज़ के बारे में बहुत उलझा हुआ है। वह एक संकट-ग्रस्त युग का शिकार है। अपने में उसे विश्वास रहा नहीं, और यह उसे पता नहीं कि और किसमें विश्वास करे। मैं उसे कुछ बताना चाहता हूं (क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं उसकी जगह होता, तो किस चीज़ में विश्वास करता), तो वह मुझे विगड़ैल कट्टरपन्थी कहता है। मुझे लगता है वह सचमुच मुझे भीषण फिलिस्तीन समझता है—उसका खयाल है मैं अपने समय को नहीं समझता। पर मैं निश्चित रूप से उससे ज़्यादा समझता हूं। वह न तो एक जंजाल समझकर अपने को समाप्त कर सकता है, और न ही एक संस्था समझकर अपनी रक्षा कर सकता है।"

"पर वह ऐसा दुःखी तो नजर नहीं आता," इजाबेल ने टिप्पणी की।

"शायद नहीं। पर मुझे लगता है, इतनी अच्छी रुचि का आदमी होकर भी उसका काफी समय बेचैनी में कटता है। फिर ऐसे आदमी के लिए जिसे इतने अच्छे अवसर प्राप्त हों, क्या इतना ही काफी है कि वह दुःखी नहीं है ? इसके अलावा मुझे विश्वास है कि वह है।"

"मुझे नहीं लगता।"

"अगर नहीं है," रैल्फ बोला, "तो उसे होना चाहिए।"

शाम को इज़ाबेल ने एक घण्टा लॉन में अपने मौसा के साथ बिताया। बुड्ढा आदमी हमेशा की तरह टांगों पर शाल डाले और हल्की चाय का बड़ा प्याला हाथ में लिए वहां बैठा था। बातचीत के दौरान मिस्टर टाउशेट ने उससे पूछा कि उसे उनका अतिथि कैसा लगा।

इज़ाबेल ने झट उत्तर दिया, "मुझे बहुत आकर्षक लगा।"

"वह आदमी अच्छा है," मिस्टर टाउशेट बोले, "पर तुम उससे प्यार करने लगो, इसकी सिफारिश मैं नहीं करूंगा।"

"तो मैं ऐसा नहीं करूंगी। आपकी सिफारिश के बिना मैं कभी किसीसे प्यार नहीं करूंगी।" फिर उसने जोड़ा, "मेरे कज़िन ने तो उसका काफी मनहूस नक्शा खींचा है।"

"सच ? मुझे पता नहीं उसने क्या कहा है, पर याद रखना, रैल्फ को बात करने की बहुत आदत है।"

"उसका ख्याल है कि आपका मित्र बहुत विध्वंसक है, या कि काफी विध्वंसक नहीं है—पता नहीं दोनों में से क्या," इज़ाबेल बोली।

बुड्ढा आदमी सिर हिलाकर मुस्कराया और अपना प्याला उसने नीचे रख दिया। "मुझे खुद पता नहीं। वह बहुत आगे बढ़कर सोचता है, पर हो सकता है काफी आगे न बढ़ पाती हो। वह बहुत-सी चीज़ों को नष्ट करना चाहता है, पर स्वयं वही बना रहना चाहता है, जो है। यह है तो स्वाभाविक, पर बहुत संगत नहीं है।"

"अच्छा है, वह वही बना रहे जो है," इज़ाबेल बोली, "अगर वह नष्ट हो जाए, तो उसके दोस्तों को उसकी कमी बहुत खलेगी।"

"मेरा ख्याल है वह ऐसा ही रहेगा," मिस्टर टाउशेट बोले, "और अपने दोस्तों का दिल बहलाता रहेगा। मुझे सचमुच यहां गार्डन कोर्ट में उसकी कमी बहुत खलेगी। वह जब भी आता है, मेरा मन बहुत लगा रहता है, और मेरा ख्याल है उसका भी मन लगा रहता है। यहां इस समाज में उस जैसे बहुत लोग हैं—आजकल इस चीज़ का बहुत फैशन है। मुझे पता नहीं ये लोग करना क्या चाहते हैं ?—क्रान्ति लाना चाहते हैं या क्या ? जो भी हो, मुझे आशा है मेरे मरने तक ये अपना इरादा स्थगित ही रखेंगे। देखो न, ये हर चीज़ को उखाड़ फेंकना चाहते

हैं—मैं यहां का काफी बड़ा ज़मींदार हूं, और उखाड़कर फेंका जाना नहीं चाहता। मुझे पता होता कि एक दिन में ये लोग ऐसा करेंगे, तो मैं यहां आता ही क्यों ?" बात करते हुए मिस्टर टाउशेट का आह्लाद बढ़ता गया। "मैं तो यही सोचकर यहां आया था कि इंग्लैण्ड एक सुरक्षित स्थान है। अगर ये लोग यहां कोई बड़े परिवर्तन करते हैं, तो मैं तो इसे सीधे-सीधे धोखा कहूंगा। सोचो उससे कितने लोगों को निराशा होगी ?"

"ओह, मैं तो चाहती हूं कि ये लोग क्रान्ति कर डालें !" इज़ाबेल चहकी। "मुझे बड़ा मज़ा आएगा क्रान्ति देखने में।"

"रुको-रुको," उसके मौसा हंसी में बोले, "पहले यह तो बता दो कि तुम नये लोगों के साथ हो या पुरानों के ? मैंने तुम्हारे मुंह से इतनी विरोधी बातें सुनी हैं।"

"मैं दोनों के साथ हूं। मुझे लगता है मैं थोड़ा-बहुत हर चीज़ के साथ हूं। क्रान्ति हो, और ठीक से होने लगे, तो मेरा ख्याल है मैं एक ऊंची, तनी हुई, राज-भक्त बन जाऊंगी। इन लोगों के साथ आदमी को ज़्यादा सहानुभूति होती है क्योंकि उनका व्यवहार बहुत उच्चकोटि का, मेरा मतलब है बहुत चित्रात्मक होता है।"

"चित्रात्मक व्यवहार से तुम्हारा क्या मतलब है, यह मैं नहीं जानता। पर मुझे लगता है, माई डियर, कि तुम्हारा अपना व्यवहार ऐसा ही होता है।"

"कितने अच्छे हैं आप ? काश कि यह बात सच होती !" इज़ाबेल बीच में ही बोल उठी।

"पर तुम अदा के साथ फांसी के तख्ते की तरफ जा सको, इसकी फिलहाल यहां कोई सम्भावना नज़र नहीं आती," मिस्टर टाउशेट ने अपनी बात जारी रखी। "अगर तुम कोई बड़ा काण्ड देखना चाहती हो, तो तुम्हें काफी अरसा हमारे यहां रहना होगा। क्योंकि बात सिरे पर पहुंचने लगे, तो ये लोग नहीं चाहेंगे कि जो ये कहते, वही हो भी जाए।"

"यह आप किनके बारे में कह रहे हैं ?"

"लार्ड वारबर्टन और उसके दोस्तों के बारे में—ये जो उच्च वर्ग के रैडिकल हैं। मैं उसी तरह तुम्हें यह सब बता रहा हूं जैसे कि मुझे लगता है। ये लोग परिवर्तनों की बात तो करते हैं, पर वस्तुस्थिति को ठीक समझते भी हों, ऐसा

मुझे प्रतीत नहीं होता। तुम्हें और मुझे तो पता है कि प्रजातन्त्रीय पद्धति के अन्तर्गत जीना क्या है। मुझे हमेशा यह पद्धति बहुत सुविधाजनक लगी है, पर यह शायद इसलिए कि मुझे शुरू से ही उसकी आदत रही है। फिर मैं कोई लार्ड भी नहीं हूं; तुम लेडी हो माई डियर, पर मैं लार्ड नही हूं। पर यहां वह पद्धति मेरे ख्याल में इनके लिए उतनी स्वाभाविक नहीं है। उसका सम्बन्ध हर दिन और हर घण्टे से होता है और मैं नहीं समझता कि उसे अपना लेने पर इनमें से बहुतों को वह इनकी वर्तमान व्यवस्था जितनी रास आएगी। पर ये लोग आज़माना ही चाहें, तो यह इनका अपना सिर-दर्द है। पर मुझे उम्मीद है कि ये उसके लिए बहुत ज़ोर नहीं लगाएंगे।"

"आपके ख्याल में वे मन से वैसा नहीं चाहते ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"देखो, वे महसूस करना चाहते हैं कि वे बहुत गम्भीर हैं," मिस्टर टाउशेट ने थोड़ी ढील दी। "पर लगता है कि ज्यादातर उन्हें बस सिद्धान्तों की ही समझ है। उनके रैडिकल विचार उनके लिए मनोरंजन का साधन हैं, और मनोरंजन की हर आदमी को ज़रूरत होती ही है। उनकी रुचियां हो सकता है, इससे ज्यादा स्थूल हों। ये सब तबीयत से ऐयाश हैं और प्रगतिशील विचारधारा इनके लिए सबसे बड़ी ऐयाशी है। उससे उन्हें अपने में नैतिकता का अहसास होता है, और उनकी स्थिति को उससे कोई फर्क पड़ता नहीं। अपनी स्थिति का उन्हें बहुत ध्यान रहता है—कोई अगर तुमसे कहे कि नहीं, ऐसा नहीं, तो समझ लो कि वह झूठ बोल रहा है। तुम अगर उस आधार को लेकर चलोगी, तो बहुत जल्द कस दी जाओगी।"

इज़ाबेल बहुत ध्यान से अपने मौसा के तर्कों को सुनती रही जिन्हें वे अपनी खास स्पष्टवादिता के साथ सामने रख रहे थे। चाहे ब्रिटिश भद्र-समाज से वह परिचित नहीं थी, फिर भी वे तर्क उसे मानव-स्वभाव के सम्बन्ध में अपनी सामान्य धारणाओं के अनुकूल लग रहे थे। फिर भी उसे अन्दर से लगा कि उसे लार्ड वारबर्टन की ओर से प्रतिवाद करना चाहिए। "और लोग क्या हैं मैं नहीं कह सकती, पर लार्ड वारबर्टन को मैं पाखण्डी नहीं समझती। मैं लार्ड वारबर्टन को कसौटी पर परखे जाते देखना चाहूंगी।"

"ईश्वर मुझे मेरे दोस्तों से बचाए !" मिस्टर टाउशेट बोले, "लार्ड वारबर्टन बहुत मिलनसार आदमी है—मिलनसार और भला। साल में एक लाख पौंड

की उसकी आमदनी है। पार्लियामेण्ट में उसकी सीट वैसे ही सुरक्षित है जैसे अपनी डिनर-टेबल पर मेरी सीट। उसमें बहुत सुरुचि है— साहित्य, कला, विज्ञान और सुन्दर नवयुवतियां, इन सभीको लेकर। सबसे अधिक सुरुचि उसमें नये विचारों को लेकर है। यह सुरुचि शायद उसे और सब चीज़ों से ज्यादा सुख देती है— केवल नवयुवतियां इसका अपवाद हैं। वह उसका घर है न—क्या नाम है उसका— लौकले ? वह बहुत सुन्दर जगह है, हालांकि इस घर जितनी नहीं। पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उसके पास और भी कई घर हैं। जहां तक मैं देख सकता हूं, उसके विचारों से किसीको कोई नुकसान नहीं पहुंचता, उसे खुद को तो बिलकुल ही नहीं पहुंचता। अगर सचमुच क्रान्ति हो जाए, तो भी वह काफी आराम से रहेगा। वे लोग उसे छुएंगे तक नहीं, बिलकुल ऐसे ही रहने देंगे। उसे बहुत पसन्द किया जाता है।"

"तो वह चाहे भी तो शहीद नहीं हो सकता," इज़ाबेल ने उसांस भरी। "तब तो बेचारे की बहुत खस्ता हालत है।"

"वह कभी शहीद नहीं हो सकता जब तक कि तुम्हीं उसे शहीद न बना दो," बुड्ढे ने कहा।

इज़ाबेल ने जिस विषाद के साथ सिर हिलाया, उसमें कुछ ऐसा था जिसपर हंसा भी जा सकता था। "मेरी वजह से कभी कोई शहीद नहीं होगा।"

"आशा है तुम भी नहीं होगी।"

"मैं भी यही आशा करती हूं। तो आप तो रैल्फ की तरह लार्ड वारबर्टन को दया का पात्र नहीं समझते न ?"

उसके मौसा पल-भर कोमल पर पैनी दृष्टि से उसे देखते रहे। "हां, वह तो मैं भी समझता हूं।"

९

दोनों मिस मालीन्यू, लार्ड वारबर्टन की बहनें, इज़ाबेल से मिलने के लिए आईं। इज़ाबेल को वे दोनों पसन्द आईं और उसे लगा कि उनमें अपनी ही एक विशेषता

है। पर उसने यह बात रैल्फ से कही, तो वह बोला कि यह चीज़ उन लड़कियों के लिए तो बिलकुल कही ही नहीं जा सकती क्योंकि इंग्लैण्ड में पचास हज़ार बिलकुल वैसी ही लड़कियां मिल सकती हैं। इस विशेषता को हटाकर भी उन दोनों के चेहरे-मोहरे में एक मिठास और शरमीलापन था, और इज़ाबेल को लगा था कि उनकी आंखें हम वज़न कटोरियों जैसी हैं—जिरेनियम की फुलवाड़ी के बीचों-बीच 'सजावटी पानी' के दायरों जैसी।

'वे और कुछ भी हों, मन से अस्वस्थ तो नहीं ही हैं।' इज़ाबेल ने अपने से कहा। यह उसे बहुत बड़ा आकर्षण लगा क्योंकि उसकी बचपन की दो-तीन सहेलियां इसी अभियोग की हकदार रही थीं। (बिना इसके वे कितनी अच्छी होतीं!) —यहां तक कि कभी-कभी इज़ाबेल को अपने से भी ऐसी प्रवृत्ति का सन्देह होता था। दोनों मिस मालीन्यू अपने आरम्भिक यौवन में नहीं थीं, पर उनके चेहरों पर एक चमक और ताजगी थी और उनकी मुस्कराहटों में बचपन की झलक थी। उनकी गोल आंखें, जो इज़ाबेल को बहुत पसन्द थीं, खामोश और सन्तुष्ट थीं। उनके शरीर, जिनकी गोलाइयां कुछ कम नहीं थी, सील की चमड़ी की जैकटों से ढके थे। उनकी मित्र-भावना इस तरह···इस तरह···उमड़ी पड़ती थी कि उसे प्रकट करते उन्हें संकोच होता था। दुनिया के उस छोर से आई लड़की से उन्हें भय-सा लगता था और जो सद्भावना वे मुंह से प्रकट नहीं कर पा रही थीं, वह उनकी आंखें प्रकट किए दे रही थीं। पर इज़ाबेल से यह बात कहने में उन्होंने संकोच नहीं किया कि वह लौकले में उनके यहां लंच खाने आए—वे वहीं अपने भाई के साथ रहती थीं—और कि उन्हें आशा है, उसके बाद वे लोग काफी मिलते-जुलते रहेंगे। उन्होंने यह भी पूछा कि क्या वह उनके यहां रात-भर के लिए रुक सकेगी? उनतीस को उनके यहां कुछ मेहमान आ रहे थे। वह भी अगर उन्हीं दिनों आ सके तो बेहतर होगा।

"कोई बहुत खास लोग तो नहीं आ रहे", बड़ी बहन ने कहा, "पर इतना कह सकती हूं कि तुम हमें वैसे ही पाओगी जैसे कि हम लोग हैं।"

"मुझे उस रूप में तुम लोगों से मिलकर बहुत खुशी होगी—मैं तो आज ही तुम लोगों को देखकर तुमपर मुग्ध हूं," इज़ाबेल ने कहा। वह किसीकी प्रशंसा करती थी, तो बेहद करती थी।

लड़कियां इस बात से शरमा गईं। वे चली गईं, तो रैल्फ ने इज़ाबेल से कहा

कि उन बेचारियों से वह इस तरह की बातें करेगी, तो वे समझेंगी वह अपने खुले उच्छृंखल ढंग से उन्हें बना रही है। उसका ख्याल था कि यह पहली बार है जब किसीने उनसे उनपर मुग्ध होने की बात कही होगी।

"मुझे जैसा लगा मैंने कह दिया," इज़ाबेल बोली, "मेरे ख्याल में इस तरह खामोश, संयत और सन्तुष्ट होना बड़ी बात है। मैं खुद ऐसी होना चाहूंगी।"

"ईश्वर न करे," रैल्फ ने ज़ोर देकर कहा।

"मैं उन जैसा बनने की कोशिश करना चाहती हूं," इज़ाबेल कहती रही। "मेरी बहुत इच्छा है कि उन्हें उनके घर में जाकर देखूं।"

कुछ दिन बाद यह अवसर उसे मिल गया। रैल्फ और उसकी मां के साथ वह गाड़ी में लौकले गई। वहां दोनों मिस मालीन्यू उसे एक विशाल ड्राइंगरूम में फीकी छींट के ढेरों गद्दे-पर्दों में घिरकर बैठी मिलीं। (यह उसे बाद से पता चला कि यह वहां के कई ड्राइंग रूम्ज़ में से एक है)। वे काली मखमल की पोशाकें पहने थीं। अपने घर में वे इज़ाबेल को गार्डनकोर्ट से भी ज्यादा अच्छी लगीं और उसकी यह धारणा और भी कुछ पुष्ट हो गई कि वे अस्वस्थ मन की नहीं हैं। उसे पहले यह भी लगा था कि उनमें कोई दोष है तो यही कि उनमें एक मानसिक जड़ता है, पर इस बार उसे लगा कि गहरी अनुभूति की भी शक्ति उनमें है। लंच से पहले कुछ देर वह अकेली उनके साथ कमरे में एक कोने में बैठी रही जबकि कुछ फासले पर लार्ड वारबर्टन मिसेज़ टाउशेट से बातें करता रहा।

"यह सच है कि तुम्हारा भाई इतना बड़ा रैडिकल है?" इज़ाबेल ने पूछा। वह जानती थी कि यह सच है, पर मानव-स्वभाव में रुचि होने के कारण वह उन दोनों लड़कियों को मुंह से सुनना चाहती थी।

"अरे हां, वह बहुत ही आगे बढ़कर सोचने वाला है," छोटी बहन मिलड्रेड बोली।

"इसके अलावा वह विवेक भी कभी नहीं खोता," दूसरी बहन ने कहा।

इज़ाबेल पल-भर कमरे के दूसरे सिरे पर बैठे वारबर्टन की तरफ देखती रही। वह प्रकटतः मिसेज़ टाउशेट को खुश रखने की कोशिश में था। उधर रैल्फ आग के पास झपटते एक कुत्ते का सामना कर रहा था। उन पुरानी अट्टालिकाओं में, इंग्लैण्ड की अगस्त की सर्दी में कुत्ते की यह धृष्टता असह्य नहीं समझी जाती थी। "तुम समझती हो तुम्हारा भाई ईमानदारी से ऐसा सोचता है?" इज़ाबेल ने

मुस्कराकर पूछा।

"ज़रूर ईमानदारी से ही सोचता होगा," मिलड्रेड जल्दी से बोली जबकि बड़ी बहन चुपचाप इज़ावेल को ताकती रही।

"परीक्षा के वक्त वह पीछे तो नहीं हट जाएगा ?"

"परीक्षा के वक्त ?"

"मेरा मतलब है अगर यह सब उसे छोड़ना पड़ जाए, तो।"

"लौकले छोड़ना पड़ जाए ?" मिस मालीन्यू मुश्किल से बोल पाई।

"हां, और दूसरी जगहें भी। उनके क्या क्या नाम हैं ?" दोनों बहनों ने लगभग डरी हुई आंखों से एक-दूसरी की तरफ देखा। "तुम्हारा मतलब है—तुम्हारा मतलब है खर्च की वजह से ?" छोटी ने पूछा।

"वह ऐसी स्थिति में एक या दो घरों में किन्हीं लोगों को रख सकता है," दूसरी ने कहा।

"बिना किराये के ?" इज़ावेल ने सवाल किया।

"वह अपनी जायदाद का हक क्यों छोड़ देगा ?" मिस मालीन्यू बोली।

"तब तो मुझे लगता है कि वह सिर्फ आडम्बर करता है," इज़ाबेल ने कहा, "तुम नहीं समझतीं कि यह धोखे की स्थिति है ?"

दोनों बहनों के, ज़ाहिर है, कि हवास गुम हो गए थे। "मेरे भाई की स्थिति ?" मिस मालीन्यू ने पूछा।

"उसकी स्थिति तो बहुत अच्छी समझी जाती है," छोटी बहन बोली, "देश के इस हिस्से में सबसे ऊंची उसकी स्थिति है।"

"तुम्हें शायद लगता है कि मैं ऐसे ही बकझक कर रही हूं," इज़ावेल को कहने का वक्त मिल गया। "मुझे लगता है कि तुम अपने भाई का बहुत सम्मान करती हो, और उससे डरती भी हो।"

"अपने भाई की इज़्ज़त तो हरएक को करनी हो होती है," मिस मालीन्यू सादगी के साथ बोली।

"तुम उसकी इज़्ज़त करती हो तो वह सच बहुत अच्छा होगा—क्योंकि तुम दोनों तो सचमुच ही बहुत-बहुत अच्छी हो।"

"वह बहुत नेक हैं। जो भलाई वह करता है, उसका किसीको कभी पता भी नहीं चलेगा।"

"सब उसकी योग्यता की कद्र करते हैं," मिलड्रेड ने जोड़ा। "सबका ख्याल है वह बहुत योग्य है।"

"वह मैं देख सकती हूं," इज़ाबेल बोली, "पर मैं उसकी जगह होती, तो आखिरी सांस तक लड़ती रहती—मतलब अपने अतीत के दाय के लिए। मैं उसे कभी न छेड़ती।"

"मेरा ख्याल है व्यक्ति को उदार होना चाहिए," मिलड्रेड हल्के से तर्क करने लगी। "हम लोग शुरू से ही ऐसे रहे हैं—बहुत पहले वक्त से।"

"हां, क्यों नहीं ?" इज़ाबेल बोली, "इसमें तुम लोग बहुत सफल भी रहे हो। मुझे आश्चर्य नहीं कि तुम लोगों को यह चीज़ पसन्द है। मुझे लगता है तुम दोनों को कशीदे का बहुत शौक है।"

लंच के बाद लार्ड वारबर्टन ने उसे अपना घर दिखाया, तो उसे लगा कि वह भव्यता वहां अपेक्षित ही थी। अन्दर से उसमें काफी आधुनिक रंग ला दिया गया था जिससे उसके कुछ सबसे अच्छे स्थलों का अछूतापन समाप्त हो गया था। पर बाग में खड़े होकर एक खामोश चौड़ी खाई के ऊपर खड़े उस मजबूत उभार को देखते हुए, जिसका धुआंरा रंग अत्यधिक कोमल, अत्यधिक गहरा और मौसमों के प्रभाव से अत्यधिक निखरा हुआ था, उस युवा लड़की को लगा जैसे वह किसी पुराणकथा का एक महल देख रही हो। दिन काफी ठण्डा और फीका-सा था। पतझड़ की शुरुआत हो चुकी थी और पिघली-सी धूप के धुंघले और बिखरे चकत्ते खास तौर से जैसे दीवारों के उन्हीं हिस्सों पर रुककर उन्हें धो रहे थे जिनमें प्राचीनता का दर्द सबसे ज़्यादा था और जिन्हें जैसे बहुत कोमलता से चुना गया था। लार्ड वारबर्टन का वह भाई, जो विकर था, लंच पर आया हुआ था और इज़ाबेल पांच मिनट उससे भी बात करती रही थी। इतने ही समय में वह उस आदमी में एक विचारवान ईश्वरवादी की खोज करके निराश हो गई थी। विकर आफ लौकले की मुख्य विशेषताएं थीं—ऊंचा कसरती जिस्म, सरल, स्वाभाविक चेहरा, खासी खूराक और बेमुहार ठहाके लगाने की आदत। बाद में रैल्फ ने इज़ाबेल को बताया कि पादरी बनने से पहले वह आदमी अच्छा-खासा पहलवान था, और अब भी वक्त पड़ने पर—सिर्फ अपने परिवार के मनोरंजन के लिए किसी भी आदमी को धराशायी कर सकता था। इज़ाबेल को वह आदमी पसन्द आया था क्योंकि वह हर चीज़ को पसन्द करने की मनःस्थिति में थी। पर उस आदमी से

किसीको आध्यात्मिक सहायता भी मिल सकती है, यह सोचने के लिए उसे अपनी कल्पनाशक्ति पर बहुत ज़ोर डालना पड़ रहा था। लंच के बाद सारी पार्टी मैदान में घूमने निकल आई, पर लार्ड वारबर्टन ने थोड़ी युक्ति से अपनी सबसे कम परिचित मेहमान को चहलकदमी के लिए दूसरों से अलग कर लिया।

"मैं चाहता हूं कि तुम इस घर को ठीक से और अच्छी तरह देख लो," उसने कहा, "तुम्हारा ध्यान खामखाह की गपबाज़ी में उलझा रहा तो तुम ठीक से नहीं देख पाओगी।" पर उसकी बातचीत (हालांकि वह इज़ाबेल को घर के बारे में, जिसका कि काफी विलक्षण इतिहास था, काफी कुछ बताता रहा) केवल वास्तु-कला तक ही सीमित नहीं रही। बीच-बीच में वह अपेक्षाकृत अधिक व्यक्तिगत विषयों पर भी बात करता रहा—ऐसे विषयों पर जो कि उसके लिए या इज़ाबेल के लिए व्यक्तिगत हो सकते थे। आखिर, कुछ देर की खामोशी के बाद, पल-भर के लिए अपने प्रस्तुत विषय पर आकर उसने कहा, "अच्छा है···मुझे खुशी है··· कि तुम्हें यह पुरानी बैरक पसन्द आई है। मैं चाहूंगा कि एकाध दिन यहां रहकर तुम इसे और अच्छी तरह देख सको। मेरी बहनें तुम्हें बुरी तरह चाहने लगी हैं—अगर इसे तुम एक प्रलोभन समझो तो।"

"प्रलोभनों की यहां कमी नहीं है," इज़ाबेल बोली। "पर मुझे डर है कि मैं ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं बना सकती। मेरा सारा कार्यक्रम मेरी मौसी के हाथ में है।"

"बुरा मत मानना अगर मैं कहूं कि मैं इसपर विश्वास नहीं करता। मुझे पक्का यकीन है कि तुम अपने मन से जो भी चाहो, कर सकती हो।"

"मुझे अफसोस है अगर मुझे देखकर ऐसी धारणा तुम्हारे मन में बनी है—मेरे ख्याल में यह किसीके बारे में अच्छी धारणा नहीं है।"

"इसमें एक अच्छाई तो है ही कि मुझे इससे आशा बंधती है," कहकर लार्ड-वारबर्टन पल-भर चुप हो रहा।

"किस चीज़ की आशा?"

"कि भविष्य में शायद मैं तुमसे अक्सर मिल सकूं।"

"ओह!" इज़ाबेल बोली, "तुम्हारे इस सुख के लिए मेरा बहुत स्वच्छन्द होना ज़रूरी नहीं।"

"निःसन्देह, नहीं। फिर भी मुझे लगता है कि तुम्हारे अंकल मुझे पसन्द नहीं करते।"

"यह तुम्हारा गलत ख्याल है। मैंने उनके मुंह से तुम्हारी बहुत प्रशंसा सुनी है।"

"मुझे खुशी है कि तुम लोग मेरे बारे में बात करते रहे हो," लार्ड वारबर्टन बोला, "पर इसके बावजूद मेरा ख्याल है कि गार्डनकोर्ट में मेरा ज़्यादा आना-जाना वे पसन्द नहीं करेंगे।"

"अंकल की पसन्द-नापसन्द की बात मैं नहीं कह सकती," इज़ाबेल ने उत्तर दिया, "हालांकि जहां तक बन पड़े उसका ध्यान रखना मेरे लिए जरूरी है। पर जहां तक मेरा सवाल है, मुझे तुमसे मिलकर बहुत खुशी होगी।"

"तुमसे यह सुनना मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। सुनकर मेरा मन मुग्ध हो रहा है।"

"लार्ड महोदय, तुम्हारा मन बहुत आसानी से मुग्ध हो उठता है।"

"नहीं, मेरा मन आसानी से मुग्ध नहीं हो उठता।" फिर पल-भर रुककर उसने कहा, "पर तुमने मुझे मुग्ध कर लिया है, मिस आर्चर।"

इन शब्दों की ध्वनि में कुछ ऐसा था जिससे इज़ाबेल चौंक गई। उसे लगा जैसे इसके बाद कोई गम्भीर बात कही जाने वाली हो। यह ध्वनि वह पहले भी सुन चुकी थी, और इसे पहचानती थी। पर इस भूमिका से आगे की कोई बात उस समय कही जाए, इसके लिए वह तैयार नहीं थी। इसलिए उसने यथासम्भव प्रसन्न भाव से, और काफी उत्तेजना के रहते जितनी जल्दी कहा जा सकता था, कहा, "मुझे लगता है मेरे दूसरी बार यहां आ सकने की कोई सम्भावना नहीं है।"

"कभी भी नहीं?" लार्ड वारबर्टन ने पूछा।

"कभी की तो मैं नहीं कहती। ऐसा कहना अतिनाटकीय लगेगा।"

"तो क्या मैं अगले सप्ताह किसी समय वहां आकर तुमसे मिल सकता हूं?"

"निश्चित रूप से। उसमें क्या बाधा है?"

"नज़र तो कोई नहीं आती। पर तुम्हारे बारे में मैं निश्चित नहीं हो सकता। मुझे कहीं लगता है कि तुम जल्दी-जल्दी लोगों को चलता कर देती हो।"

"पर उससे तुम्हें फर्क पड़े, यह ज़रूरी नहीं।"

"तुम्हारी मेहरबानी है जो तुम ऐसा कहती हो। पर फर्क न पड़े, तो भी क्रूर न्याय का मैं पक्षपाती नहीं। क्या मिसेज टाउशेट तुम्हें अपने साथ विदेश ले जा रही हैं?"

"ख्याल यही है।"

"इंग्लैण्ड तुम्हारे लिहाज से काफी अच्छी जगह नहीं है ?"

"यह तुम बहुत कूटनीतिक ढंग से कह रहे हो, इसलिए इसका उत्तर मैं नहीं दूंगी। मैं जितने देशों में बन पड़े, उतने देशों में घूमना चाहती हूं।"

"मतलब तुम लगातार चीज़ों को परखती रहना चाहती हो।"

"साथ आनन्द लेना भी।"

"हां, तुम्हें सबसे ज़्यादा आनन्द इसीमें मिलता है। तुम दरअसल क्या चाहती हो, यह मेरी समझ में नहीं आता," लार्ड वारबर्टन बोला, "लगता है जैसे तुम्हारा कोई रहस्यमय उद्देश्य है—कोई बड़ा नक्शा तुम्हारे दिमाग में है।"

"मैं आभारी हूं कि तुम्हारी मेरे बारे में ऐसी धारणा है। पर इसपर मैं पूरी नहीं उतरती। मेरे देश के पचास हज़ार लोग, विदेशों में घूमकर अपना मानसिक विकास करने के लिए हर साल जिस प्रकट उद्देश्य को लेकर चलते हैं और पूरा करते हैं, उसमें रहस्यमय क्या है ?"

"तुम्हारे मन का और विकास नहीं हो सकता, मिस आर्चर," उसके साथी ने घोषणा की। "वह यन्त्र पहले ही बहुत उग्र है। वह हम सबको छोटा समझता है और हमसे घृणा करता है।"

"घृणा करता है ? तुम मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो ?" इज़ाबेल ने गम्भीर होकर कहा।

"खैर तुम हमें 'अजीब' समझती हो, वह भी तो वही बात है। कोई मुझे 'अजीब' समझे, यह मुझे बर्दाश्त नहीं। मैं 'अजीब' नहीं हूं। मैं इसका विरोध करता हूं।"

"इस विरोध जैसी अजीब बात मैंने आज तक सुनी ही नहीं," कहते हुए इज़ाबेल मुस्करा दी।

लार्ड वारबर्टन कुछ देर खामोश रहा, फिर बोला, "तुम केवल बाहर से परखती हो, और किसी चीज़ की परवाह भी नहीं करतीं। तुम्हारा मतलब केवल अपने मनोरंजन से है।" उसकी आवाज़ में जो ध्वनि इज़ाबेल को पहले सुनाई दी थी, वह अब फिर लौट आई थी—बल्कि अब स्पष्टतः उसमें कुछ कटुता और आ मिली थी। वह कटुता इतनी आकस्मिक और अकारण थी कि लड़की को लगा कहीं सचमुच उसने उसे ठेस तो नहीं पहुंचाई। उसने अक्सर सुना था कि

अंग्रेज़ बहुत सनकी होते हैं और किसी अफलातून लेखक की किताब में उसने यह भी पढ़ा था कि अन्दर से इस कौम जितनी रूमानी कोई कौम नहीं है। तो क्या लार्ड वारबर्टन एकाएक रूमानी हो रहा था ? क्या सिर्फ तीसरी बार मिलने पर, अपने ही घर में, वह एक दृश्य खड़ा करने जा रहा था ? पर शीघ्र ही उसके सुसंस्कृत आचरण की बात सोचकर वह आश्वस्त हो गई। उस आचरण को इससे क्षति नहीं पहुंची थी कि सुरुचि की सीमा का उल्लंघन करके वह एक ऐसी लड़की के प्रति अपनी भावना प्रकट करने से नहीं चूका जो कि विश्वास के साथ उसका आतिथ्य स्वीकार करके वहां चली आई थी। उस व्यक्ति के आचरण पर उसका विश्वास गलत साबित नहीं हुआ क्योंकि तुरन्त ही लार्ड वारबर्टन ने, थोड़ा हंसकर, और बिना उस ध्वनि के रंचमात्र स्पर्श के जिससे कि वह अव्यवस्थित हो उठी थी, कहा, "मेरा यह मतलब नहीं कि छोटी-छोटी बातों में दिलचस्पी लेकर तुम अपना मनोरंजन करती हो। तुम बड़े विषय चुनती हो—मानव-स्वभाव की पीड़ाएं और न्यूनताएं, जातियों की विशेषताएं।"

"ऐसा हो," इज़ाबेल बोली, "तो अपनी ही जाति से मेरा जीवन-भर के लिए मनोरंजन हो सकता है। पर हमें काफी लम्बा रास्ता जाना है, और मुझे लगता है कि आंटी अब जल्दी ही चलना चाहेंगी।" यह कहकर वह दूसरे लोगों की तरफ चल दी। लार्ड वारबर्टन चुपचाप उसके साथ-साथ चलता रहा। पर दूसरे के पास पहुंचने से पहले ही उसने कहा, "मैं अगले सप्ताह तुमसे मिलने आऊंगा।"

इससे इज़ाबेल को स्पष्ट एक धक्का-सा लगा, पर उसका प्रभाव समाप्त होने से पहले ही उसे यह भी लगा कि यह धक्का केवल दुःखदायी नहीं है। फिर भी वारबर्टन की घोषणा का उसने काफी ठण्डे लहजे में उत्तर दिया, "जैसा तुम्हारा मन हो।" यह ठण्डा लहजा नाप-तोलकर प्रभाव पैदा करने की कोशिश नहीं थी। यह खेल, जितना कि उसके आलोचक सम्भव समझते, उससे कहीं छोटे पैमाने पर वह खेलती थी। इस लहजे का कारण उसके अन्दर का एक भय ही था।

१०

लौकले से आने के अगले रोज़ उसे अपनी मित्र मिस स्टैकपोल का एक पत्र मिला —उस पत्र के लिफाफे पर लिवरपूल की मोहर और हेनरीटा की तेज़ लिखाई के सुन्दर अक्षर देखकर उसके मन में उत्साह भर आया। "मैं आ पहुंची हूं, माई डियर," मिस स्टैकपोल ने लिखा था। "बस किसी तरह आखिर चल ही पड़ी। न्यूयार्क छोड़ने से पहली रात को ही तय किया। 'इन्टरव्यूअर' वाले मेरी मांगी रकम देने को तैयार हो गए थे। एक अनुभवी पत्रकार की तरह मैंने बैग में कुछ चीज़ें रखीं, और टैक्सी लेकर स्टीमर तक पहुंच गई। अब तुम कहां हो, और हम कहां मिल सकती हैं ? मेरा खयाल है तुम किसी किले के आसपास घूम रही होगी और अब तक इन लोगों की तरह बोलने लगी होगी। हो सकता है तुमने किसी लार्ड-आर्ड से शादी कर ली हो। अच्छा है अगर सचमुच कर ली हो, क्योंकि मुझे ऊपरी तबके के कुछ लोगों से परिचय करना है और इस सिलसिले में तुमसे कुछ सहायता पाने की आशा कर रही हूं। 'इन्टरव्यूअर' यहां के भद्रसमाज पर कुछ प्रकाश चाहता है। मेरी पहली धारणा (आम लोगों के बारे में) ज़्यादा ऊंची नहीं है, पर वह सब मैं तुम्हें बताना चाहती हूं। तुम जानती हो मैं जैसी भी हूं, कम से कम सतही नहीं हूं। एक और खास बात भी तुमको बतानी है! इसलिए जल्दी से जल्दी मिलने की बात तय करो। या लन्दन चली आओ (सब जगहें हम साथ-साथ देखें, तो मुझे खुशी होगी), या मुझे लिखो, जहां भी तुम हो, मैं वहां आ जाऊं। मैं खुशी से चली आऊंगी। तुम्हें पता है मेरी हर चीज़ में दिलचस्पी है, और जिस हद तक भी अन्दर की ज़िन्दगी देख सकूं, मैं देख लेना चाहती हूं।"

इज़ाबेल ने यह पत्र अपने मौसा को दिखाना ठीक नहीं समझा। पर इसका आशय उसने उन्हें बता दिया। जैसी कि उसे आशा थी, मिस्टर टाउशेट ने तुरन्त कहा कि वह उनकी तरफ से मिस स्टैकपोल को विश्वास दिला दे कि उसके गार्डन-कोर्ट में आने से उन्हें खुशी होगी। "चाहे वह एक साहित्यकार महिला है," वे बोले, "फिर भी अमरीकन होने से वह मेरा वैसा नक्शा नहीं खींचेगी जैसा उस दूसरी ने खींचा था। इसने मेरे जैसे और भी आदमी देख रखे हैं।"

"पर इतना बढ़िया आदमी कोई नहीं देखा होगा," इज़ाबेल ने कहा। हेनरीटा की लिखने-लिखाने की बात को लेकर वह सुस्थित नहीं हो सकी। यह चीज़ उसकी

मित्र के चरित्र का ऐसा भाग थी कि उससे उसे आशंका बनी ही रहती थी। फिर भी हेनरीटा को उसने लिख दिया कि मिस्टर टाउशेट के घर में उसे काफी आराम मिलेगा, और उस चुस्त महिला ने अपने आने की सूचना देने में जरा समय नहीं लिया। वह लन्दन में थी, और उस केन्द्र से उसने गार्डनकोर्ट के सबसे पास के स्टेशन के लिए गाड़ी पकड़ ली। रैल्फ और इज़ाबेल उसे लेने के लिए पहुंच गए थे।

"मैं उससे प्यार करूंगा, या नफरत करूंगा?" जब वे प्लेटफार्म पर टहल रहे थे तो रैल्फ ने पूछा।

"तुम जो भी करो, उसे फर्क नहीं पड़ेगा," इज़ाबेल ने कहा। "उसे रत्ती-भर परवाह नहीं कि कौन मर्द उसके बारे में क्या सोचता है।"

"तब तो एक मर्द होने के नाते मैं उससे नफरत ही करूंगा। वह जरूर एक राक्षसी जैसी लगती होगी। बहुत कुरूप है क्या वह?"

"नहीं, वह वास्तव में बहुत सुन्दर है।"

"एक महिला इन्टरव्यूअर—पेटीकोट पहने रिपोर्टर? मैं उसे देखने के लिए बहुत उत्सुक हूं," रैल्फ ने स्वीकार किया।

"उसका मज़ाक उड़ाना आसान है, पर उस जैसा दिल-गुर्दा रखना आसान नहीं है।"

"सचमुच आसान नहीं है। हिंसाकार्य के लिए और दूसरों के व्यक्तित्व पर हमला करने के लिए काफी कलेजा चाहिए। तुम्हारा क्या खयाल है, वह मुझसे इन्टरव्यू लेगी?"

"कभी नहीं। वह तुम्हें इतना महत्त्वपूर्ण नहीं समझने की।"

"देखना तुम," रैल्फ बोला, "वह बंची समेत हम सबका खाका खींचकर अपने अखबार में भेजेगी।"

"मैं उसे मना कर दूंगी," इज़ाबेल ने जवाब में कहा।

"ता तुम भी सोचती हो न वह ऐसा कर सकती है?"

"बिलकुल!"

"फिर भी तुम्हारी उससे जिगरी दोस्ती है?"

"मेरी उससे जिगरी दोस्ती नहीं है। फिर भी, अपने दोषों के बावजूद, वह मुझे अच्छी लगती है।"

"ओह !" रैल्फ बोला, "मुझे लगता है, अपने गुणों के बावजूद वह मुझे अच्छी नहीं लगेगी।"

"तीन दिन के अन्दर-अन्दर शायद तुम उसके प्रेम में कस जाओगे।"

"ताकि मेरे प्रेम-पत्र 'इंटरव्यूअर' में प्रकाशित हो सकें ? कभी नहीं।" रैल्फ चिल्लाकर बोला।

गाड़ी आ पहुंची और मिस स्टैकपोल जल्दी से नीचे उतर आई। इज़ाबेल की बात सच थी—मिस स्टैकपोल का रंग खासा अच्छा था, हालांकि कुछ-कुछ कस्बाती जान पड़ता था। उसका शरीर साफ और भारी था, कद दरम्याना, चेहरा गोल, मुंह छोटा, चमड़ी नाजुक, सिर के पिछले हिस्से में हल्के भूरे छल्लों का एक गुच्छा, और खास तरह की खुली हैरान-सी नज़र आती आंखें। उसके व्यक्तित्व में सबसे खास चीज़ इन आंखों की स्थिर दृष्टि थी जो सामने की हर चीज़ पर, बिना धृष्टता या अवहेलना के, इस तरह रुकी रहती थी मानो आन्तरिक रूप से अपने एक स्वाभाविक अधिकार का उपभोग कर रही हो। वह रैल्फ पर भी उसी तरह रुकी रही। रैल्फ पहले ही मिस स्टैकपोल के आकर्षक और विश्वस्त भाव से प्रभावित हो चुका था। उसे लग रहा था कि उस महिला को नापसन्द करना उतना आसान नहीं होगा जितना कि उसने सोचा था। वह अपनी फाख्ता रंग की नई पोशाक में सरसराती झलमलाती चल रही थी। रैल्फ को पहली ही नज़र में लगा कि वह उतनी ही ताज़ा, कुरकुरी और चुस्त-दुरुस्त है जितना कि एक पत्रिका का पहला अंक तह होने से पहले होता है। सिर से पैर तक उसमें छपाई की एक भी गलती नहीं थी। वह साफ, ऊंची आवाज़ में बात करती थी—जो आवाज़ वज़नदार न होते हुए भी भारी थी। फिर भी जब वह मिस्टर टाउशेट की गाडी में उनके साथ बैठी तो रैल्फ को वह ज़रा भी उस बड़े टाइप में सेट की हुई नहीं लगी जिसमें भयंकर 'सुर्खियां' दी जाती हैं, हालांकि उसने सोचा ऐसा ही था। इज़ाबेल ने उससे कुछ पूछा, या साहस करके रैल्फ ने उसमें कुछ जोड़ दिया, तो वह बहुत विस्तार और सहजता के साथ उन बातों का जवाब देती रही। फिर मिस्टर टाउशेट से परिचय हो चुकने के बाद (मिसेज़ टाउशेट ने तब तक उसके सामने आना ज़रूरी नहीं समझा था) गार्डनकोर्ट के पुस्तकालय में बैठे हुए उसने अपनी शक्तियों में विश्वास का और भी खुलकर परिचय दिया।

"मैं जानना चाहूंगी कि आप लोग अपने को अमरीकन समझते हैं या अंग्रेज़?"

उसने एकाएक पूछा, "मुझे एक बार पता चल जाए, तो मैं उसी तरह आपसे बात करूं।"

"तुम किसी भी तरह बात करो, हम आभार मानेंगे।" रैल्फ ने उदार भाव से कहा।

वह स्थिर आंखों से रैल्फ की तरफ देखती रही जिससे रैल्फ को पॉलिश किए बड़े-बड़े बटनों की याद हो आई—ऐसे बटनों की जो किसी तने हुए वदन पर इलास्टिक फीते कसने के काम आते हों। साधारणतया बटनों का-सा भाव मानवीय नहीं समझा जाता, पर मिस स्टैकपोल की दृष्टि में कुछ ऐसा था जिससे एक संकोचशील व्यक्ति होने के कारण उसे कुछ-कुछ घबराहट हो रही थी। और वह जितना चाहता था अपने को उससे कम अछूता और ज़्यादा तिरस्कृत महसूस कर रहा था। कहना होगा कि यह अनुभूति दो-एक दिन साथ रह चुकने के बाद काफी हद तक जाती रही, पर पूरी तरह कभी नहीं जा सकी। "मैं नहीं समझती, आप मुझसे मनवाना चाहते हैं कि आप अमरीकन हैं," मिस स्टैकपोल ने कहा।

"तुम्हारी खुशी के लिए मैं अंग्रेज बन सकता हूं। तुर्किस्तानी बन सकता हूं।"

"अगर तुम इस तरह बदल सकते हो, तब तो यह बहुत अच्छी बात है," मिस स्टैकपोल ने जवाब में कहा।

"मुझे विश्वास है कि तुम सब कुछ समझती हो, और जातीय भेद-भाव तुम्हारे लिए कोई रुकावट नहीं है।"

मिस स्टैकपोल एकटक उसे देखती रही। "तुम्हारा मतलब विदेशी भाषाएं जानने से है?"

"भाषाएं कुछ चीज नहीं। मेरा मतलब आत्मा से है—प्रतिभा से।"

"मुझे नहीं लगता कि मैं तुम्हें समझ पा रही हूं," 'इन्टरव्यूअर' की संवाददाता बोली, "पर जाने से पहले तक शायद समझने लगूंगी।"

"यह उन आदमियों में से हैं जिन्हें सर्वदेशीय कहते हैं," इज़ाबेल ने समझाया।

"उसका मतलब है थोड़ा-थोड़ा सब कुछ, पर पूरा कुछ भी नहीं। मेरे ख्याल में देशभक्ति खैरात की तरह है।—उसकी शुरुआत घर से होती है।"

"ओह, पर घर की शुरुआत कहां से होती है मिस स्टैकपोल?" रैल्फ ने पूछा।

"शुरुआत कहां से होती है, यह तो नहीं जानती, पर यह जानती हूं कि समाप्ति कहां पर होती है। वह मेरे यहां पहुंचने से बहुत पहले ही हो चुकी है।"

"यहां आकर तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा ?" मिस्टर टाउशेट ने अपनी बूढ़ी मासूम आवाज़ में पूछा।

"देखिए, मैं अभी तक तय नहीं कर पाई हूं कि मुझे इस बारे में क्या कहना चाहिए। मैं बहुत घुटन-सी महसूस कर रही हूं। लिवरपूल से लन्दन तक की यात्रा में ही मुझे ऐसा महसूस होने लगा था।"

"तुम्हारी गाड़ी में बहुत भीड़ रही होगी," रैल्फ ने जैसे व्याख्या की।

"हां, पर वह दोस्तों की भीड़ थी। एक अमरीकन पार्टी थी जिससे स्टीमर पर मेरा परिचय हुआ था। बहुत बढ़िया ग्रुप था, लिटल रॉक, अरकांसास का। इसके बावजूद मैं घुटी-घुटी महसूस करती रही, जैसे कि कोई चीज़ मुझे दबा रही हो। वह क्या चीज़ थी, मुझे पता नहीं चला। मुझे शुरू से ही पता था कि यहां का वातावरण मुझे मुआफिक नहीं आएगा। पर मेरा खयाल है मैं अपना वातावरण स्वयं बना लूंगी। सही तरीका यही है—तभी आदमी खुलकर सांस ले सकता है। उसे अपना परिवेश आकर्षक लगने लगता है।"

"यहां हमारा ग्रुप बहुत बढ़िया है," रैल्फ बोला, "इन्तज़ार करो—तुम्हें पता चल जाएगा।"

मिस स्टैकपोल का इन्तज़ार करने का पूरा इरादा था, और वह काफी दिन गार्डनकोर्ट में रुकने को तैयार थी। सुबह उठकर वह अपने साहित्यिक परिश्रम में लग जाती। फिर भी इज़ाबेल को उसके साथ कई घण्टे बिताने का मौका मिल जाता, क्योंकि दिन का काम खत्म कर चुकने के बाद अकेले रह पाना उसकी मिस के लिए असह्य, बल्कि असम्भव हो उठता था। इज़ाबेल ने पहला मौका मिलते ही उससे कह दिया था कि वहां के अपने सह-आवास की धूमधाम वह अपने अखबार में न करे, क्योंकि मिस स्टैकपोल के आने की अगली सुबह ही उसने उसे 'इण्टर-व्यूअर' के लिए एक पत्र लिखते देख लिया था, जिसपर उसने अपने बहुत साफ और सुन्दर अक्षरों में (जो कि बिलकुल स्कूल की हस्तलेख पुस्तकों जैसे थे) शीर्षक दे रखा था, 'अमरीकन और ट्यूडर—गार्डनकोर्ट की झलकियां'। क्योंकि मिस स्टैकपोल दुनिया में सबसे साफ दिल की मालिक थी, इसलिए उसने इज़ाबेल से कहा कि वह पत्र सुन ले। इज़ाबेल ने सुनते ही विरोध किया।

"तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। इस जगह का विवरण तुम्हें नहीं देना चाहिए।"

हेनरीटा हमेशा की तरह स्थिर दृष्टि से उसे देखने लगी। "पर लोग यही सब तो पढ़ना चाहते हैं। और यह जगह है भी काफी सुन्दर।"

"सुन्दर होने से ही यह अखबारों में इश्तिहार के लायक नहीं हो जाती। फिर मेरे अंकल को यह चीज़ पसन्द भी नहीं है।"

"यह बात तो तुम कहो नहीं।" हेनरीटा चिल्लाई। "बाद में ये लोग बल्कि खुश होते हैं।"

"मेरे अंकल को इससे खुशी नहीं होगी, न ही मेरे कज़िन को। उन्हें लगेगा कि उनके आतिथ्य का अनुचित लाभ उठाया गया है।"

मिस स्टैकपोल इससे ज़रा भी अव्यवस्थित नहीं हुई। उसने एक छोटे-से सुन्दर अस्त्र से, जो उसी काम के लिए वह साथ रखती थी, अपना पेन साफ किया और अपनी पाण्डुलिपि परे हटा दी। तुम ठीक नहीं समझतीं, तो मैं नहीं भेजूंगी। पर इससे एक खूबसूरत विषय मारा गया।"

"विषयों की यहां कमी नहीं है। चारों तरफ विषय ही विषय बिखरे हैं। मैं तुम्हें गाड़ी में इधर-उधर ले चलूंगी। कुछ बहुत ही बढ़िया दृश्यावली तुम्हें दिखाऊंगी।"

"दृश्यों में मेरी दिलचस्पी नहीं है। मुझे इंसान चाहिए। तुम जानती हो इज़ाबेल, मेरा नज़रिया कितना इंसानी है। हमेशा से रहा है", मिस स्टैकपोल जवाब में बोली, "मैं तो तुम्हारे कज़िन को भी बीच में लाने की सोच रही थी— एक विदेशवासी अमरीकन के रूप में। आजकल विदेशवासी अमरीकन की बड़ी मांग है, और तुम्हारा कज़िन इसका सुन्दर नमूना है। मैं उसकी बहुत खाल उतारती।"

"उस बेचारे की जान निकल जाती।" इज़ाबेल तुरन्त बोली, "खाल उतरने से नहीं, प्रचार की वजह से।"

"उसकी थोड़ी-सी जान निकालकर मुझे खुशी होती। और तुम्हारे अंकल को मैं दूसरी तरह से लेती— कि उनमें अब भी काफी देशभक्ति बाकी है। वे मुझे ज्यादा भद्र किस्म के लगते हैं। वे एक प्रभावशाली बूढ़े व्यक्ति हैं। मैं उनके सम्मान में कुछ लिखती, तो उन्हें क्यों बुरा लगता ?"

इज़ाबेल काफी चकित-सी अपनी मित्र की ओर देखती रही। उसे विचित्र लग रहा था कि जिस स्वभाव के प्रति उसके मन में इतना आदर है, वह कुछ जगह इस तरह टूट भी सकता है, "हेनरीटा," वह बोली, "तुम्हें अन्तरंग बातों का ज़रा भी लिहाज़ नहीं है।"

हेनरीटा का चेहरा सुर्ख हो गया। क्षण-भर के लिए उसकी चमकती आंखें घिरी रहीं, जिससे इज़ाबेल को वह पहले से कहीं असंगत लगी। "तुम मेरे साथ न्याय नहीं कर रहीं," मिस स्टैकपोल गर्व के साथ बोली, "मैंने अपने बारे में एक शब्द भी नहीं लिखा।"

"इसका मुझे विश्वास है। पर मेरा ख्याल है दूसरों के मामले में भी आदमी को थोड़ा लिहाज़ बरतना चाहिए।"

"यह तुमने बहुत अच्छी बात कही है," हेनरीटा जल्दी से अपना पेन उठाती हुई बोली, "ज़रा मुझे नोट कर लेने दो। मैं इसे कहीं स्तेमाल करूंगी।" उसका स्वभाव बहुत सहज था, और आध घण्टा बाद वह फिर उतनी ही मस्त नज़र आ रही थी जितनी कि सामग्री की खोज में आई एक महिला पत्रकार को होना चाहिए। मैं यहां के सामाजिक पक्ष पर लिखने को कहकर आई हूं।" उसने इज़ाबेल से कहा, "यह मैं कैसे कर सकती हूं जब तक कि मैं यहां-वहां से विचार न लूं? इस जगह का वर्णन मैं नहीं कर सकती, तो कोई और ऐसी ही जगह तुम नहीं बता सकतीं जिसका मैं वर्णन कर सकूं?" इज़ाबेल ने उसे वचन दिया कि वह सोचकर बताएगी। अगले रोज़ बातचीत के दौरान उसने अपनी मित्र से लार्ड वारबर्टन के प्राचीन भवन का ज़िक्र किया जहां वह होकर आई थी। "तुम मुझे ज़रूर वहां ले चलो—बस ऐसी ही जगह तो मैं चाहती हूं," मिस स्टैकपोल चिल्लाई, "मुझे भद्रसमाज की एक झलक ज़रूर देखनी है।"

"मैं तुम्हें वहां नहीं ले चल सकती," इज़ाबेल बोली, "पर लार्ड वारबर्टन यहां आ रहा है। तुम्हें यहीं उसे देखने-परखने का मौका मिल जाएगा। अगर तुम्हारा इरादा उसकी बातचीत को छापने का हो, तो इसकी चेतावनी मैं उसे पहले से दे दूंगी।"

"ऐसा मत करना," उसकी मित्र ने याचना की। "मैं चाहूंगी कि वह अपने स्वाभाविक रूप में रहे।"

"अंग्रेज़ अपने वास्तविक स्वाभाविक रूप में तभी होता है जब उसकी ज़बान

बन्द रहती है," इज़ाबेल ने घोषणा की।

तीन दिन गुज़र जाने पर भी इज़ाबेल को अपनी यह भविष्यवाणी सच होने का कोई आसार नज़र नहीं आया कि रैल्फ उसकी मित्र को अपना दिल दे बैठेगा, हालांकि बहुत-सा समय वह मिस स्टैकपोल के साथ बिताता रहा। वे साथ-साथ पार्क में टहलते, पेड़ों के नीचे बैठे रहते। शाम को, जब टैम्ज़ की सैर का लुत्फ लिया जा सकता, तो नाव में सिर्फ उसकी कज़िन ही साथ न रहती, मिस स्टैक-पोल भी पास एक कोने में बैठी होती। इज़ाबेल के अपने साथ बहुत घुलमिल जाने से रैल्फ की उतावली में लगा था कि मिस स्टैकपोल उसके साथ ज़रा भी नहीं घुलमिल पाएगी। पर ऐसा नहीं हुआ। 'इंटरव्यूअर' की संवाददाता की बातें उसके अन्दर एक उल्लास भर देती थीं। यह वह बहुत पहले तय कर चुका था कि उल्लास का अतिरेक ही उसके चुकते दिनों की खुशबू होगा। दूसरी तरफ हेनरीटा भी इज़ाबेल की इस घोषणा पर पूरी नहीं उतरी कि कोई पुरुष उसके बारे में क्या सोचता है, इसके प्रति वह बिलकुल उदासीन रहती है। गरीब रैल्फ उसके लिए एक झुंझला देने वाली समस्या बन गया था जिसे हल करना उसकी नज़र में अपने नैतिक कर्तव्य से हटना था।

"यह आदमी रोज़गार क्या करता है?" आने की शाम को ही उसने इज़ाबेल से पूछा था "बस सारा दिन जेबों में हाथ डाले घूमता रहता है?"

"करता कुछ भी नहीं," इज़ाबेल मुस्कराई। "यह भला आदमी सिर्फ आराम फरमाता है।"

"कितनी शरम की बात है? एक मैं हूं कि कार-कंडक्टर की तरह काम में लगी रहती हूं," मिस स्टैकपोल बोली, "ऐसे आदमी को तो खाल उधेड़ना चाहिए।"

"उसकी सेहत बहुत खराब है। वह कोई काम कर ही नहीं सकता," इज़ाबेल ने समझाना चाहा।

"छिः। यह कोई मानने की बात है? मैं बीमारी में भी काम करती हूं," हेनरीटा चिल्लाई। बाद में दरिया की सैर को चलते हुए नाव में पैर रखते ही उसने रैल्फ से कहा कि उसे लगता है वह उससे नफरत करता है, और उसे डुबा देना चाहेगा।

"नहीं, नहीं," रैल्फ बोला, "मैं अपने शिकार को धीरे-धीरे सताकर मारना पसन्द करता हूं, और तुम्हारे जैसा दिलचस्प दूसरा शिकार मुझे कहां मिलेगा?"

"तुम मुझे सता रहे हो, यह तो मैं भी कह सकती हूं, पर तसल्ली यही है कि मैं भी तुम्हारे पूर्वाग्रहों को ध्वस्त कर रही हूं।"

"मेरे पूर्वाग्रहों को ? पूर्वाग्रह रख सकूं, ऐसा सौभाग्य ही मुझे प्राप्त नहीं है। यहां बौद्धिक दीवालियापन तुम्हारे सामने है।"

"यह और भी शरम की बात है। मेरे मन में तो कितने ही अच्छे-अच्छे पूर्वाग्रह हैं। मुझे पता है अपनी कज़िन के साथ तुम्हारे फ़्लर्टेशन में—या जो कुछ भी तुम इसे कहते हो, उसमें मैं बाधा डाल रही हूं। पर मुझे इसकी परवाह नहीं है क्योंकि इस तरह तुम्हारा पत्ता काटकर मैं इसका हित ही कर रही हूं। इसे पता चल जाएगा तुम दरअसल कितने पानी में हो।"

"ज़रूर पत्ता काटो मेरा।" रैल्फ चिल्लाया, "बहुत कम लोग मेरे लिए इतनी तकलीफ गवारा करेंगे।"

इस कोशिश में मिस स्टैकपोल ने कोई कसर नहीं उठा रखी। ज़्यादातर, ज्यों ही वक्त मिलता, वह तरह-तरह के सवाल पूछने का सहज तरीका अपना लेती। अगले दिन मौसम खराब था। रैल्फ ने घर के अन्दर ही उसका मनोरंजन करने के लिए उसे तस्वीरें दिखाने का सुझाव रखा। हेनरीटा उसके साथ-साथ सारी गैलरी में घूम गई। वह उसे खास-खास तस्वीरें दिखाकर बताता रहा कि वे किनकी बनाई हैं और उनके विषय क्या हैं। मिस स्टैकपोल बिना किसी तरह की राय ज़ाहिर किए चुपचाप तस्वीरें देखती रही। रैल्फ को इस बात से खुशी हुई कि गार्डनकोर्ट में आनेवाले और लोगों की तरह उसने बढ़-चढ़कर पहले से तैयार किए प्रशंसा-वाक्य नहीं कहे। इस महिला के साथ न्याय करना हो, तो कहना होगा कि वह आम लोकाचार की बातें करने की आदी नहीं थी। उसके स्वर में एक ऐसा आन्तरिक और मौलिक स्पर्श रहता था, और कई बार वह इस तरह ज़ोर देकर बात करती थी कि लगता था एक बहुत सुसंस्कृत व्यक्ति विदेशी भाषा में बात कहना चाह रहा है। बाद में रैल्फ को पता चला कि उधर की दुनिया में कुछ दिन वह एक पत्र की कला-समीक्षक के रूप में भी काम करती रही है। पर इसके बावजूद वह अपनी जेब में प्रशंसा-वाक्यों की रेज़गारी नहीं लिए फिरती थी। जब रैल्फ ने उसका ध्यान एक सुन्दर सिपाही की तरफ दिलाया, तो उसने इस तरह घूमकर उसकी तरफ देख लिया जैसे वह खुद भी एक तस्वीर हो।

"तुम हमेशा अपना समय इसी तरह बिताते हो ?" उसने पूछा।

"इतनी अच्छी तरह बहुत कम।"

"तुम जानते हो मैं क्या पूछ रही हूं। तुम कोई रोज़ करने का काम नहीं करते ?"

"ओह !" रैल्फ बोला, "मुझ जैसा काहिल आदमी दुनिया में कोई नहीं है।"

मिस स्टैकपोल की नज़र फिर 'सिपाही' की तरफ चली गई। पर रैल्फ ने उसका ध्यान पास ही लटकते हुए एक छोटे से लैंक्रेट की तरफ दिलाया जिसमें एक आदमी गुलाबी जैकट और मोजा पहने, गुलुबंद लगाए, बाग में एक परी-मूर्त्ति के आधार से टेक लगाकर, घास पर बैठी दो महिलाओं को गिटार सुना रहा था। "मेरी नज़र में रोज़ करने का आदर्श काम यह है," उसने कहा।

मिस स्टैकपोल ने फिर एक बार उसकी तरफ देख लिया। फिर उसकी आंखें उस तस्वीर पर स्थिर हो रहीं। पर रैल्फ को लगा कि वह बात की तह तक नहीं पहुंच सकी। वह उससे कहीं गम्भीर बात सोच रही थी। "मुझे समझ नहीं आता कि तुम्हारी आत्मा इसे कैसे स्वीकार करती है।"

"माई डियर, मेरे आत्मा है ही नहीं।"

"तो तुम्हें उसे पालना चाहिए। अगली बार अमरीका जाओगे, तो वहां उसकी जरूरत पड़ेगी।"

"मैं तो शायद अब कभी जाऊंगा ही नहीं।"

"क्यों, वहां अपना चेहरा दिखाते शरम आती है ?"

रैल्फ हल्के से मुस्कराकर जैसे सोचता रहा। "मेरा ख्याल है आदमी के पास आत्मा न हो, तो उसे शरम भी नहीं आती।"

"तुम्हें बहुत मान है अपना," हेनरीटा ने घोषणा की। "अपने देश को छोड़ देना तुम्हें ठीक लगता है ?"

"अपने देश को आदमी उतना ही छोड़ सकता है जितना अपनी दादी-मां को। दोनों स्थितियों में आदमी की अपनी मर्ज़ी तो कुछ होती नहीं। ये आदमी के निर्माण के तत्त्व हैं जिनसे आदमी कभी अपने को मुक्त नहीं कर सकता।"

"इसका मतलब है कि तुमने कोशिश तो की है, पर सफल नहीं हुए। यहां के लोग तुम्हें किस नजर से देखते हैं ?"

"बहुत खुश रहते हैं मुझसे।"

"क्योंकि तुम उनकी चापलूसी करते हो।"

"थोड़ा-सा श्रेय तो मेरे स्वाभाविक आकर्षण को भी दो," रैल्फ ने लम्बी सांस ली।

"तुम्हारे स्वाभाविक आकर्षण के बारे में मैं कुछ नहीं जानती। अगर तुममें कोई आकर्षण है भी, तो वह स्वाभाविक नहीं है। वह तुमने यहां रहकर विकसित किया है, या कम से कम विकसित करने का प्रयत्न किया है—क्योंकि तुम सफल हुए हो, यह मैं नहीं कहती। तुम किसी तरह अपने को उपयोगी बना लो, तब बात करेंगे।"

"तो बताओ मुझे क्या करना चाहिए?" रैल्फ बोला।

"पहली बात कि वापस अपने देश चले जाओ।"

"ठीक। फिर?"

"कोई चीज़ तुरन्त पकड़ लो।"

"यह भी तो बताओ कि कैसी चीज़?"

"कैसी भी चीज़— मतलब है कि कुछ हो सही। कोई नया विचार, कोई बड़ा-सा काम।"

"ऐसा कुछ पकड़ पाना बहुत मुश्किल है क्या?" रैल्फ ने पूछा।

"दिल से चाहो, तो ज़रा भी नहीं।"

"ओह, दिल से।" रैल्फ बोला, "अगर यह मेरे दिल पर ही निर्भर करता है, तो···।"

"क्यों, तुम्हारे दिल भी नहीं है?"

"था तो सही, कुछ दिन पहले तक। पर इधर मैंने वह खो दिया है।"

"तुम गम्भीर होकर बात नहीं करते," मिस स्टैकपोल बोली, "तुम्हारे साथ यही दिक्कत है।" पर यह कहकर भी दो-एक दिन के अन्दर ही उसने फिर अपना ध्यान रैल्फ की ओर खिंच जाने दिया। पर इस बार अपने रहस्यमय विपरीत भाव का उसने कुछ और ही कारण बताया। "मुझे पता है तुम्हारे साथ क्या दिक्कत है। तुम सोचते हो तुम इतने अच्छे हो कि शादी के लिए कोई लड़की तुम्हारे लायक हो ही नहीं सकती।"

"तुमसे मिलने से पहले तक ऐसा सोचता था मिस स्टैकपोल", रैल्फ जवाब में बोला, "पर तब से एकाएक मेरा विचार बदल गया है।"

"छि: !" हेनरीटा भन्नाई।

"तब से मुझे लगने लगा है," रैल्फ बोला, "कि मैं ही उस लायक नहीं हूं।"

"शादी कर लो, तो आदमी बन जाओगे। फिर यह तुम्हारा फर्ज़ भी है।"

"अच्छा ?" रैल्फ ऊंचे स्वर में बोला, "आदमी के कितने फर्ज़ हैं। यह भी एक फर्ज़ है ?"

"क्यों नहीं ? तुम्हें पहले पता नहीं था ? शादी करना हरेक का फर्ज़ है।"

रैल्फ पल-भर सोचता रहा। उसे निराशा हुई थी। मिस स्टैकपोल में कुछ बात थी जिसे वह पसन्द करने लगा था। उसे लगने लगा था कि वह अगर सुन्दर लड़की नहीं थी, तो कम से कम काफी अच्छी किस्म की ज़रूर थी। उसमें बहुत विशेषता नहीं थी, पर जैसा इज़ाबेल ने कहा था, साहस उसमें ज़रूर था। वह चमकी लगी पोशाकवाले शेर-बाज़ की तरह पिंजरे के अन्दर पहुंचकर चाबुक चला सकती थी। वह बाज़ारू किस्म की बात भी कर सकती है, यह रैल्फ ने नहीं सोचा था। पर उसके आखिरी शब्दों में उसे एक गलत-सी ध्वनि लगी। एक विवाह-योग्य लड़की किसी अविवाहित युवक से कहे कि उसे शादी कर लेनी चाहिए, तो सुननेवाले पर यह प्रभाव नहीं पड़ेगा कि वह परमार्थ-भाव से ऐसा कह रही है।

"हां, पर इस विषय पर बहुत कुछ कहा जा सकता है," रैल्फ बोला।

"कहा जा सकता होगा, पर मुख्य चीज़ वही है। देखने में यह बहुत खास बात लगती है कि आप अकेले घूम रहे हैं, जैसेकि कोई लड़की आपके लायक हो ही नहीं : तुम्हारा ख्याल है तुम दुनिया के सभी लोगों से बेहतर हो ? अमरीका में तो हर आदमी शादी करना फर्ज़ समझता है।"

"अगर यह मेरा फर्ज़ है," रैल्फ ने पूछा, "तो उस हिसाब से क्या यह तुम्हारा भी फर्ज़ नहीं ?"

मिस स्टैकपोल की स्थिर पुतलियां धूप में चमक उठीं।" तुम क्या मेरी दलील में दोष ढूंढ़ना चाह रहे हो ? हां, मुझे भी शादी करने का उतना ही अधिकार है जितना किसी और को।"

"पर मैं कह सकता हूं," रैल्फ बोला, "कि तुम्हें कुंआरी देखकर मुझे ज़रा तकलीफ नहीं हो रही। मुझे बल्कि खुशी हो रही है।"

"तुम अब भी गम्भीर नहीं हो। कभी हो ही नहीं सकते।"

"तुम उस दिन भी मुझे गम्भीर नहीं समझोगी जिस दिन मैं कहूंगा कि मैं अपना अकेले घूमने का अभ्यास छोड़ देना चाहता हूं ?"

मिस स्टैकपोल ने पल-भर इस तरह उसे देखा मानो उसे ऐसा उत्तर देने जा रही हो जिसे तकनीकी भाषा में 'प्रोत्साहन देना' कहते हैं। पर रैल्फ को यह देखकर आश्चर्य हुआ है कि एकाएक उसका भाव आशंका में---बल्कि नाराजगी में बदल गया, "नहीं, उस दिन भी नहीं," उसने रूखे ढंग से कहा, और परे चली गई।

"तुम्हारी सहेली के लिए मेरे मन में अभी प्यार नहीं उमड़ा," रैल्फ ने उस शाम इज़ाबेल से कहा, "हालांकि सुबह काफी देर हम उस विषय में बात करते रहे।"

"तुमने उससे कुछ ऐसा कह दिया है जिससे वह नाराज़ हो गई है," इज़ाबेल बोली।

"रैल्फ इसे ताकता रहा। उसने मेरी शिकायत की है ?"

"कह रही थी उसे लगता है यूरोप के लोग बहुत हल्के स्तर पर स्त्रियों से बात करते हैं।"

"मुझे वह यूरोपियन बता रही थी ?"

"सबसे खराब श्रेणी का। कह रही थी तुमने उससे कुछ ऐसी बात कही है जो एक अमरीकन कभी न कहता। पर बात उसने बताई नहीं।"

"रैल्फ ने मज़े से एक ठहाका लगाया।" वह एक अद्‌भुत सम्मिश्रण है। उसका ख्याल है मैं उससे प्रेम कर रहा था ?"

"नहीं। प्रेम तो अमरीकन भी करते हैं। पर उसे जो बात चुभी है वह यह है कि तुमने उसकी बात का गलत मतलब लगाकर उसमें कोई बुरा इरादा ढूंढ़ने की कोशिश की।"

"मुझे लगा वह मुझसे विवाह का प्रस्ताव कर रही है। मैंने वह स्वीकार कर लिया। बताओ, यह बुरा किया ?"

इज़ाबेल मुस्कराई, "बुरा मेरे साथ किया। मैं तुम्हें शादी नहीं करने देना चाहती।"

"माई डियर कज़िन, आदमी तुम लोगों के हाथ में पड़कर करे तो क्या करे।" रैल्फ बोला, "मिस स्टैंकपोल कहती है कि शादी करना मेरा असली फर्ज़ है, और उसका फर्ज़ यह देखना है कि मैं अपना फर्ज़ पूरा करूं।"

"उसे अपने फर्ज़ का बहुत ख्याल है", इज़ाबेल गम्भीर होकर बोली, "सचमुच

बहुत ज़्यादा ख्याल है, और वह हर बात इसी नज़रिये से करती है। इसीलिए मैं उसे पसन्द करती हूं। वह इसे तुम्हारी नालायकी समझती है कि तुम इतनी सारी चीज़ें अपने पास रखे रहो। यही वह कहना चाहती थी। अगर तुम्हें लगा हो कि वह तुम्हें···तुम्हें रिझाना चाह रही थी, तो यह तुम्हारी गलती थी।"

"ढंग उसका कुछ बेतुका जरूर था, पर मुझे लगा यही था कि वह सचमुच मुझे रिझाना चाह रही है। इस भ्रष्टता के लिए मुझे क्षमा करना।"

"तुम्हें अपना बहुत मान है। उस बेचारी का अपना कोई स्वार्थ नहीं था। न ही उसने सोचा था कि तुम ऐसा समझ बैठोगे।"

"तब तो आदमी को बहुत दीन होकर ऐसी स्त्रियों से बात करनी चाहिए," रैल्फ नम्र स्वर में बोला, "पर है वह बहुत अजीब। खुद इतने व्यक्तिगत स्तर पर बात करती है और चाहती है दूसरे बिलकुल उस स्तर पर बात न करें। खुद बिना दरवाज़े पर दस्तक दिए ही अन्दर चली आती है।"

"हां," इज़ाबेल ने स्वीकार किया, "वह कुण्डियों के अस्तित्व को बिलकुल स्वीकार नहीं करती। बल्कि मुझे यह भी लगता है कि वह उन्हें दिखावे का सामान समझती है। उसका ख्याल है कि आदमी का दरवाज़ा हमेशा खुला रहना चाहिए। फिर भी मैं ज़ोर देकर कहती हूं कि मैं उसे पसन्द करती हूं।"

"और मैं ज़ोर देकर कहता हूं कि वह खामखाह घनिष्ठ होने की कोशिश करती है?" रैल्फ ने कहा—वह इस अहसास से थोड़ा अव्यवस्थित हो गया था कि मिस स्टैकपोल को समझने में उसे दोहरा धोखा हुआ है।

"देखो," इज़ाबेल मुस्कराकर बोली, "मैं कह सकती हूं मेरे उसे पसन्द करने की एक वजह उसका अक्खड़पन भी है।"

"तुम्हारा यह तर्क सुनकर तो वह फूल उठेगी।"

"उससे बात करते हुए मैं इस ढंग से नहीं कहूंगी। मैं कहूंगी कि उसमें 'जन-साधारण' का कुछ अंश है।"

"तुम जन-साधारण के विषय में क्या जानती हो? और बात करो, तो वही क्या जानती है?"

"वह काफी कुछ जानती है। और मैं भी इतना समझने लायक जानती हूं कि वह महान् प्रजातन्त्र का, तथा महाद्वीप, देश और जाति का एक उन्मेष है। मैं यह नहीं कहती कि यह सब कुछ उसमें अन्तर्हित है। यह कहना उससे बहुत अधिक की

आशा करना होगा। पर इस सबका आभास वह देती है, इस सबको स्पष्ट रूपायित वह करती है।"

"तो तुम्हारा उसे पसन्द करने का आधार तुम्हारी देशभक्ति है। पर मुझे कहना होगा कि इसी आधार पर मैं उसे नापसन्द करता हूं।"

"ओह," इज़ाबेल उल्लास से सांस भरकर बोली, "मैं तो एक साथ कई चीज़ों को पसन्द करती हूं। किसी भी चीज़ की अगर मुझपर एक खास छाप पड़ती है, तो मैं उसे स्वीकार कर लेती हूं। डींग नहीं हांकती, मुझे लगता है कि मेरी रुचि काफी बहुमुखी है। मुझे वे लोग भी पसन्द आते हैं जो हेनरीटा से बिलकुल अलग किस्म के हैं—जैसे, उदाहरण के लिए, लार्ड वारबर्टन की बहनें। जितनी देर मैं उन दोनों को देखती रहती हूं, मुझे लगता है लड़कियों को बस ऐसी ही होना चाहिए। तभी हेनरीटा सामने चली जाती है, और मुझे उस जैसी होना ही सही लगने लगता है। "उसके निजीपन की वजह से नहीं, उसके पीछे के संघटन की वजह से।"

"ओह, तुम्हारा मतलब उसके शरीर के पिछले हिस्से से है," रैल्फ ने भाष्य किया।

"वह गलत नहीं कहती," इज़ाबेल बोली, "कि तुम कभी गम्भीर नहीं हो सकते। नदियों और विस्तृत मैदानों में से होकर हरे प्रशान्त सागर तक फैले अपने खिलते-मुस्कराते महान् देश से मुझे प्यार है। एक तेज़, मीठी और ताज़ा गन्ध मुझे उसमें से उठती जान पड़ती है। तुलना के लिए क्षमा करना, पर कुछ वैसी ही गन्ध हेनरीटा के कपड़ों में मुझे मिलती है।"

बात पूरी करते न करते इज़ाबेल कुछ शरमा गई। वह रंगत, उसके क्षणिक आवेश के रंग में मिलकर, इस तरह उसके चेहरे पर खिल उठी कि उसके खामोश हो जाने के बाद भी रैल्फ पल-भर मुस्कराता हुआ उसकी तरफ देखता रहा। "प्रशान्त सागर उतना हरा नहीं है जितना तुम समझती हो," वह बोला, "पर तुम्हारी कल्पना बहुत उर्वर है। हेनरीटा में हां, भविष्य की गन्ध जरूर है—इतनी तेज़ कि आदमी को पस्त कर सकती है।"

११

इसके बाद रैल्फ ने निश्चय कर लिया कि मिस स्टैकपोल चाहे कितने भी व्यक्तिगत स्तर पर बात करे, वह उसके शब्दों में कोई दूसरा अर्थ नहीं ढूंढ़ेगा। सोचकर उसे लगा कि हेनरीटा की नज़र से सब आदमी एक-से सीधे-सादे जीव हैं, और वह स्वयं, अपनी जगह, मानव-स्वभाव का ऐसा विपरीत उदाहरण है कि उसे उस लड़की के साथ एक ही स्तर पर आदान-प्रदान करने का कोई अधिकार नहीं है। अपने इस निश्चय का पालन रैल्फ ने बहुत सावधानी के साथ शुरू किया। उसके बाद उसके सम्पर्क में आने पर हेनरीटा को बेमुहार सवाल पूछने की अपनी प्रतिभा के प्रयोग में, या सामान्य रूप से अपने आत्म-विश्वास के प्रदर्शन में, कोई असुविधा पेश नहीं आई। इज़ाबेल को तो वह पसन्द थी ही, वह भी इज़ाबेल को बहुत पसन्द करती थी।—यहां तक कि इज़ाबेल की उन्मुक्त प्रतिभा के कारण वह उसे अपनी समान-धर्मा मानती थी। मिस्टर टाउशेट वैसे ही सहज सम्मान के अधिकारी थे, और वह कहती थी कि उनका भद्रतापूर्ण स्वर उसे बिलकुल निर्दोष लगता है। इस सबसे गार्डनकोर्ट में उसका आवास बिलकुल आरामदेह रहता, अगर शुरू से ही उसके मन में उस छोटी-सी भद्र महिला के प्रति गहरा अविश्वास न पैदा हो गया होता, जिसे, उसका ख्याल था कि जैसे-कैसे घर की मालकिन मानकर चलना होगा। पर धीरे-धीरे उसे पता चल गया कि इस तरह की कोई मजबूरी नहीं है क्योंकि मिसेज़ टाउशेट इसकी ज़रा चिन्ता नहीं करती थी कि मिस स्टैकपोल वहां कैसे व्यवहार करती है। मिसेज़ टाउशेट ने इज़ाबेल से अलवत्ता कहा था कि उसकी मित्र उन्हें बहुत दु:साहसी और बातूनी लगती है—दु:साहसी ऐसी कि दूसरा सिर्फ उसका मज़ा ही ले सकता है। उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया था कि ऐसी लड़की इज़ाबेल की मित्र कैसे बनी, पर साथ ही तुरन्त यह जोड़ दिया था कि जिस किसीसे भी मित्रता रखना इज़ाबेल की अपनी मर्ज़ी पर है। न वे उसके मित्रों को पसन्द करने के लिए मजबूर है, और न ही उसपर ज़ोर डाल सकती हैं कि वह उनकी पसन्द के लोगों से ही मित्रता रखे।

"मेरी पसन्द के लोगों के अलावा और लोगों से तुम मिलोगी ही नहीं माई डियर," तो बहुत कम लोगों से तुम्हारा परिचय होगा, "मिसेज़ टाउशेट ने स्पष्ट स्वीकार किया।" और मैं किसी भी स्त्री या पुरुष को इतना पसन्द नहीं करती

कि तुमसे उससे मित्रता रखनेको कह सकूं। ऐसा कहना बहुत ज़िम्मेदारी का काम है। तुम्हारी मिस स्टैकपोल को मैं पसन्द नहीं करती। उसकी हर चीज़ से मुझे कोफ्त होती है। वह बहुत बोलती है, और बहुत ऊंची आवाज़ में बोलती है। दूसरे की तरफ इस तरह देखती है जैसे दूसरा उसकी तरफ देखना चाहता हो, जोकि वह नहीं चाहता। लगता है वह सारी उम्र बोर्डिंग हाउस में रही है और मुझे ऐसी जगहों की आज़ादी और रंग-ढंग से नफरत है। मुझसे पूछो, तो मुझे सिर्फ अपना रंगढंग सही लगता है। तुम्हें वह खराब लगता है, मैं जानती हूं। पर मुझे वह बहुत सही जान पड़ता है। मिस स्टैकपोल जानती है कि मैं बोर्डिंग हाउस की सभ्यता से नफरत करती हूं, और उससे नफरत करने के लिए वह मुझसे नफरत करती है, क्योंकि उसके ख्याल में वह दुनिया की सबसे अच्छी सभ्यता है। गार्डनकोर्ट एक बोर्डिंग हाउस होता, तो उसे अब से कहीं ज्यादा पसन्द आता, हालांकि मुझे तो अब भी यह काफी हद तक एक बोर्डिंग हाउस ही नज़र आता है। इसीलिए हम दोनों में कभी पट नहीं सकती। सो कोशिश करना भी बेकार है।"

मिसेज टाउशेट का यह अनुमान सही था कि हेनरीटा उन्हें पसन्द नहीं करती थी। पर उसके ठीक कारण पर वे उंगली नहीं रख पाती थीं। मिस स्टैकपोल के आने के दो-एक रोज बाद एक बार उन्होंने अमरीकन होटलों के विषय में कुछ बुरा-भला कह दिया था जिससे भड़ककर 'इंटरव्यूअर' की संवाददाता उनसे बहस करने लगी थी। वह अपने काम के सिलसिले में पच्छिमी दुनिया की सभी काफिला-गाहों से परिचित हो चुकी थी। हेनरीटा की राय थी कि दुनिया के सबसे अच्छे होटल अगर कहीं हैं, तो अमरीका में हैं। पर मिसेज़ टाउशेट अभी उन होटलों से नई-नई मुठभेड़ करके लौटी थीं, इसलिए दावा कर रही थीं कि उतने खराब होटल कहीं हैं ही नहीं। रैल्फ ने अपनी प्रयोगात्मक नम्रता के कारण बीच-बचाव के तौर पर सुझाव दिया कि सचाई इन दोनों छोरों के बीच में कहीं है, और कि उन होटलों को खासे दरम्याने दर्जे के माना जा सकता है। पर बहस में उसकी यह देन मिस स्टैकपोल ने भौंहें चढ़ाकर अस्वीकार कर दी। वाह, दरम्याने दर्जे के ! अगर वे दुनिया के सबसे अच्छे होटल न माने जाएं, तो सबसे बुरे भले ही मान लिए जाएं, पर कोई भी अमरीकन होटल दरम्याने दर्जे का कभी नहीं कहा जा सकता।

"ज़ाहिर है कि हम लोगों का परखने का नज़रिया अलग-अलग है," मिसेज़

टाउशेट बोलीं, "मैं चाहती हूं मेरे साथ एक 'व्यक्ति' के रूप में व्यवहार किया जाए जबकि तुम लोग अपने को एक 'पार्टी मानकर सन्तुष्ट रहते हो।"

"आपकी बात मैंने नहीं समझी," हेनरीटा ने उत्तर दिया, "मैं चाहती हूं मेरे साथ एक अमरीकन भद्र महिला के रूप में व्यवहार किया जाए।"

"बेचारी अमरीकन भद्र महिलाएं।" मिसेज़ टाउशेट ज़ोर से हंसीं। "वे तो गुलामों की भी गुलाम हैं।"

"वे स्वतन्त्र लोगों की साथिनें हैं," हेनरीटा हल्की से बोली।

"वे सिर्फ अपने नौकरों—आइरिश चेम्बरमेड और नीग्रो वेटर—की साथिनें हैं। काम में उनका हाथ बंटाती हैं।"

"आप अमरीका के घरेलू नौकरों को 'गुलाम' बताती हैं?" मिस स्टैकपोल ने सवाल किया, "अगर आप इसी नज़र से उन्हें देखना चाहती हैं, तब तो यह आश्चर्य की बात नहीं कि अमरीका आपको पसन्द नहीं है।"

"घर में अच्छे नौकर न हों, तो जान आफत में पड़ जाती है," मिसेज़ टाउशेट संजीदगी के साथ बोलीं, "अमरीका में अच्छे नौकर मिलते ही नहीं। फ्लोरेंस से मेरे पास पांच इतने बढ़िया नौकर हैं।"

"पता नहीं आप पांच नौकरों का क्या करती हैं," हेनरीटा से कहे बिना नहीं रहा गया, "पांच आदमी मेरी सेवादारी में लगे रहें, मुझसे तो यह स्थिति कभी बर्दाश्त नहीं होगी।"

"उनकी यह स्थिति मुझे और कई स्थितियों से ज़्यादा अच्छी लगती है," मिसेज़ टाउशेट ने बहुत अर्थपूर्ण ढंग से कहा।

"क्यों डियर, मैं तुम्हारा बटलर बन जाऊं, तो मैं तुम्हें आज से ज़्यादा अच्छा लगूंगा?" उनके पति ने पूछा।

"कतई नहीं। तुममें वह कौशल ज़रा भी नहीं है।"

"स्वतन्त्र लोगों की साथिनें—यह तुमने बहुत अच्छी बात कही मिस स्टैक-पोल," रैल्फ बोला, "मुझे यह वर्णन सुन्दर लगा।"

"स्वतन्त्र लोगों से मेरी मुराद आपसे नहीं है, श्रीमान!"

और रैल्फ को अपने प्रशंसा-वाक्य का बस इतना ही फल मिला। मिस स्टैकपोल सकपका गई थी। मिसेज़ टाउशेट का उस वर्ग के हक में बात करना, जिसे वह मन में सामन्तवाद का एक रहस्यमय अवशेष समझती थी, उसे काफी

हद तक द्रोहपूर्ण लग रहा था। यह धारणा क्योंकि उसे बहुत कचोट रही थी, इसलिए कुछ दिन बात को चुपचाप पिए रहने के बाद एक दिन उसने इज़ाबेल से कहा, "माई डियर, मुझे डर है कि कहीं तुम विश्वासघात तो नहीं करने जा रहीं ?"

"किसके प्रति विश्वासघात ? तुम्हारे प्रति हेनरीटा ?"

"नहीं। यह भी बात बहुत दुःख की होगी, पर मैं यह नहीं कह रही।"

"तो किसके प्रति ? अपने देश के प्रति ?"

"वह मैं समझती हूं तुम कभी नहीं करोगी। पर मैंने तुम्हें लिवरपूल से अपने पत्र में लिखा था कि मुझे तुमसे कुछ खास बात करनी है। तुमने मुझसे आज तक नहीं पूछा वह क्या बात थी ? यह क्या इसलिए है कि तुम्हें बात के सम्वन्ध में पहले से कुछ सन्देह है ?"

"कैसा सन्देह ? आम तौर से मैं तो किसी तरह का सन्देह करती ही नहीं," इज़ाबेल बोली, "मुझे अब याद आ रहा है कि तुमने अपने पत्र में ऐसा कुछ लिखा था, पर सचमुच मुझे यह बात बिलकुल भूल गई थी। बताओ, तुम्हें क्या बात करनी है ?"

हेनरीटा को सुनकर निराशा हुई और उसकी स्थिर आंखों में यह भाव झलक भी आया। "तुम ठीक से नहीं पूछ रहीं। तुम्हें बात महत्त्वपूर्ण लग ही नहीं रही। तुम सचमुच बदल गई हो, और अब दूसरी चीज़ों के बारे में सोचने लगी हो।"

"तुम अपनी बात बताओ, ताकि मैं उसके बारे में सोचूं।"

"तुम सचमुच सोचोगी ? पहले मैं इसका विश्वास पा लेना चाहती हूं।"

"अपने विचारों पर मेरा ज़्यादा वश नहीं है। फिर भी मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगी," इज़ाबेल बोली। हेनरीटा इसपर इतनी देर उसे चुपचाप ताकती रही कि आखिर बेसब्र होकर उसने आगे कहा, "तुम्हारा मतलब है तुम शादी करने जा रही हो ?"

"यूरोप देखने से पहले नहीं," मिस स्टैकपोल बोली, "तुम्हें हंसी किस बात पर आ रही है ?" फिर आगे उसने कहा, "मेरा मतलब है मिस्टर गुडवुड एक ही स्टीमर में मेरे साथ यहां आया है।"

"ओह !" इज़ाबेल के मुंह से निकला।

"यह एक शब्द तुम्हारे मुंह से ठीक निकला है। मेरी उससे काफी बात हुई है। वह तुम्हारे पीछे आया है।"

"उसने तुमसे ऐसा कहा है ?"

"ना, उसने मुझसे कुछ नहीं कहा। इसीसे मैं जानती हूं," हेनरीटा चतुराई के साथ बोली, "उसने तुम्हारे बारे में बहुत कम बात की, पर मैं तुम्हारे बारे में बहुत बात करती रही।"

इज़ाबेल प्रतीक्षा करती रही। मिस्टर गुडवुड के ज़िक्र से वह थोड़ा मुरझा गई थी। "मुझे अफसोस है तुमने ऐसा किया," आखिर उसने कहा।

"मुझे बात करके खुशी हो रही थी और वह जिस तरह सुन रहा था, वह मुझे अच्छा लग रहा था। उस तरह सुननेवाले आदमी से तो मैं बहुत देर बात करती रह सकती थी। वह इतना खामोश, इतना भावुक था—जैसे हर बात को पी रहा हो।"

"तुमने मेरे बारे में क्या कहा ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"मैंने कहा कि तुम जैसी बढ़िया लड़की मैंने आज तक नहीं देखी।"

"इसका भी मुझे अफसोस है। वह पहले ही मुझे जाने क्या समझता है। उसे और प्रोत्साहन देना ठीक नहीं था।"

"वह ज़रा-से प्रोत्साहन के लिए मरा जा रहा है। मैं बात कर रही थी, तो उसका चेहरा जैसा ही रहा था, और उसकी आंखों में जो गहरी तन्मयता नज़र आ रही थी, वह अब भी मेरे सामने है। एक बदसूरत आदमी कभी मुझे इतना खूबसूरत नहीं लगा।"

"वह बहुत सीधा-सादा आदमी है," इज़ाबेल बोली, "और इतना बदसूरत नहीं है।"

"आन्तरिक वासना किसीको भी सीधा-सादा बना देती है।"

"यह आन्तरिक वासना नहीं है। मुझे पक्का विश्वास है कि नहीं है।"

"तुम कह पक्के विश्वास के साथ नहीं रहीं।"

इज़ाबेल के चेहरे पर एक ठण्डी-सी मुस्कराहट आ गई। "मिस्टर गुडवुड के सामने मैं यह ज़्यादा अच्छी तरह कह सकूंगी।"

"वह जल्दी ही इसका मौका तुम्हें दे देगा," हेनरीटा ने कहा। इज़ाबेल ने कोई उत्तर न दिया हालांकि उसकी मित्र ने बात ज़ोर देकर और बहुत विश्वास

के साथ कही थी। "तुम उसे बदली हुई लगोगी," हेनरीटा कहती रही, "अपने नए माहौल से तुम बहुत प्रभावित हुई हो।"

"यह सम्भव है। मुझपर हर चीज़ का प्रभाव पड़ता है।"

"एक मिस्टर गुडवुड को छोड़कर!" मिस स्टैंकपोल ने कुछ तीखे दिल्लगी के स्वर में कहा।

इज़ाबेल उत्तर में मुस्करा भी नहीं सकी। पल-भर बाद उसने पूछा, "उसने मुझसे बात करने के लिए तुमसे कहा था?"

"खुले शब्दों में नहीं। पर उसकी आंखों ने, और विदा लेते समय उसके हैंडशेक ने ज़रूर कहा था।"

"तो इसके लिए धन्यवाद," कहकर इज़ाबेल ने मुंह मोड़ लिया।

"तुम बदल गई हो। यहां आकर दूसरे-दूसरे ख्याल तुम्हारे मन में आने लगे हैं," उसकी मित्र कहती रही।

"ठीक है," इज़ाबेल बोली, "जितने भी नये ख्याल आदमी को मिल सकें, उसे ग्रहण कर लेने चाहिए।"

"हां, पर पुराने ख्याल अगर सही हों, तो उन्हें मन से बाहर निकालकर नहीं।"

इज़ाबेल ने फिर उसकी तरफ मुंह कर लिया। "तुम अगर सोचती हो कि मेरे मन में मिस्टर गुडबुड को लेकर कोई ख्याल रहा है...।" पर अपनी मित्र की कठोर दृष्टि के सामने उसकी ज़बान रुक गई।

"माई डियर चाइल्ड, तुमने उसे प्रोत्साहन तो दिया है।"

इज़ाबेल पल-भर जैसे विरोध करने को हुई, पर उसकी बजाय अपने को सहेजकर उसने उत्तर दिया, "हां, ठीक है। प्रोत्साहन तो मैंने उसे दिया है।" फिर उसने हेनरीटा से पूछा कि क्या मिस्टर गुडबुड ने उसे लिखा है कि अब उसका क्या करने का इरादा है। यह उसने उत्सुकतावश पूछ लिया हालांकि हेनरीटा से इस विषय में बात करना उसे पसन्द नहीं था और वह उसे बहुत उद्धत समझती थी।

"मैंने उससे पूछा था। कह रहा था उसका कुछ भी करने का इरादा नहीं है," मिस स्टैंकपोल बोली, "पर मैं यह नहीं मानती। वह कुछ न करनेवाला आदमी न होकर साहस के साथ पुख्ता कदम उठानेवाला आदमी है। चाहे जो भी सिर पर आ पड़े, वह कुछ न कुछ ज़रूर करेगा, और जो भी करेगा, ठीक करेगा।"

"यह मैं भी मानती हूं।" हेनरीटा चाहे कितनी उद्धत थी, पर उसकी इस घोषणा का इज़ाबेल पर काफी असर पड़ा।

"तो तुम्हें थोड़ी-बहुत परवाह है उसकी," हेनरीटा के मुंह से सुनाई दिया।

"वह जो भी करेगा, ठीक करेगा," इज़ाबेल ने दोहराया, "जब आदमी का निर्माण इतना निर्दोष हो, तो उसे क्या फर्क पड़ता है कि दूसरा कैसे महसूस करता है।"

"उसे न पड़ता हो, पर दूसरे को तो फर्क पड़ता है।"

"मुझे क्या फर्क पड़ता है, इसपर हम बात नहीं कर रहे," इज़ाबेल ने एक ठण्डी मुस्कराहट के साथ कहा।

इसपर उसकी मित्र गम्भीर हो गई। "खैर मुझे क्या है? तुम बदल ज़रूर गई हो। तुम वह लड़की नहीं हो जो कुछ सप्ताह पहले तक थीं। खैर, मिस्टर गुडवुड को खुद ही पता चल जाएगा। वह अब किसी भी दिन यहां पहुंच सकता है।"

"पता चलने पर उसे मुझसे घृणा होगी," इज़ाबेल बोली।

"घृणा करने की योग्यता उसमें कितनी है, यह जितना मैं जानती हूं, उतना ही तुम भी जानती हो।"

इसका इज़ाबेल ने कोई उत्तर नहीं दिया। हेनरीटा की बात सुनकर वह इस आशंका से घिर गई थी कि गुडवुड शायद अब गार्डनकोर्ट आ पहुंचे। पहले तो उसने अपने को बहलाए रखना चाहा कि यह असम्भव है—फिर उसने अपना अविश्वास हेनरीटा पर भी प्रकट कर दिया। पर अगले अड़तालीस घण्टे वह मन ही मन किसी भी समय गुडवुड के आने की सूचना पाने के लिए तैयार रही। यह अनुभूति उसपर छा रही थी। उससे हवा तक भारी हो उठी थी, जैसे कि मौसम बदलने वाला हो। सामाजिक दृष्टि से उसके वहां रहते गार्डनकोर्ट का मौसम इतना अच्छा रहा था कि कुछ भी परिवर्तन होने से वह खराब ही हो सकता था। पर दूसरे ही दिन उसकी आशंका जाती रही। वह बंची के साथ बाग में गई थी। वहां अस्थिर और आकुल भाव से कुछ देर चहलकदमी करने के बाद वह एक बेंच पर बैठ गई। घर सामने था, और उधर फैला हुआ नदी-तट। काले रिबनों से सजी सफेद पोशाक पहने वह कांपते सायों के बीच एक सुन्दर और रची-बसी आकृति-सी लग रही थी। कुछ देर वह छोटे कुत्ते से बातें करके अपना

मनोरंजन करती। रैल्फ के साथ उस कुत्ते की साझीदारी का पालन बिलकुल ठीक से हो रहा था। कुछ फर्क पड़ता था, तो केवल बंची के अस्थिर और निरन्तर बदलते स्वभाव के कारण। इस अवसर पर पहली बार उसे बंची की अपने प्रति विशेष रुचि का सही पता चला—पहले तो वह उसका कुछ अनुमान ही कर पाई थी। आखिर उसे लगा कि वह कोई किताब ले ले तो बेहतर होगा। पहले जब कभी मन भारी होता था, तो वह किसी चुनी हुई पुस्तक की सहायता से अपनी चेतना को विशुद्ध तर्क के बिन्दु पर केन्द्रित कर लेती थी। पर इधर आकर साहित्य की ज्योति उसे फीकी लगने लगी थी। हालांकि उसके मौसा की लाइब्रेरी में उन लेखकों की सभी पुस्तकें थीं जिनकी पुस्तकें किसी भी भले आदमी के संग्रहालय में होनी चाहिए। फिर भी वह लॉन की ठण्डी हरी घास को ताकती, बिना हिले-डुले, खाली हाथ बैठी रही। तभी एक नौकर ने आकर उसे एक चिट्ठी दी, तो उसकी सोच टूटी। चिट्ठी पर लन्दन की मोहर थी। पता परिचित अक्षरों में लिखा था। देखते ही उसके मन में, जो पहले ही उस विषय में सोच रहा था, लेखक का स्वर और चेहरा उभर आया। पत्र छोटा-सा था, इसलिए पूरा यहां दिया जा सकता है।

माई डियर मिस आर्चर—कह नहीं सकता तुम्हें मेरे इंग्लैंड आने का पता है या नहीं। पर पता न हो, तो भी तुम्हें इससे ज़्यादा आश्चर्य नहीं होगा। तुम्हें याद होगा कि तीन महीने पहले एलबेनी में तुमने मुझे ठुकरा दिया था, तो मैंने इस चीज़ को स्वीकार न करके इसका विरोध किया था। तुमने मेरे विरोध को स्वीकार करते हुए यह माना था कि मैं अपनी जगह सही हूं। मैं तुमसे मिलने इसलिए आया था कि शायद तुम्हें अपनी धारणा से सहमत कर सकूं। ऐसी आशा करने का मेरे पास पर्याप्त कारण था। पर तुमने मुझे निराश कर दिया। मुझे तुममें एक परिवर्तन लगा। पर परिवर्तन का कारण तुम मुझे नहीं बता सकीं। तुमने स्वीकार किया था कि तुम ज़्यादती कर रही हो—बस इतना ही तुम मानने को तैयार हुई थीं। पर यह बात ओछी-सी थी, और तुम्हारे स्वभाव के अनुकूल नहीं थी। ना, यह अस्थायित्व और फेर-बदल न तो तुम्हारा स्वभाव है, न ही कभी होगा। इसलिए मुझे विश्वास है कि तुम मुझे फिर अपने से मिलने का मौका दोगी। तुमने कहा था कि मैं तुम्हें नापसन्द नहीं हूं, और मुझे इसपर विश्वास है, क्योंकि मुझे उसका कोई कारण नजर नहीं आता। तुम हमेशा मेरे मन में रहोगी

और किसी के लिए मेरे मन में स्थान नहीं है। मैं इंग्लैंड इसीलिए आया हूं कि तुम यहां पर हो। तुम्हारे चले आने के बाद अपने देश में रहना मुझे सम्भव नहीं लगा। तुम वहां नहीं थीं, इसलिए मुझे उस देश से घृणा होती थी। आज मुझे यह देश अच्छा लगता है—केवल इसलिए कि तुम यहां पर हो। मैं पहले भी इंग्लैंड आया हूं—पर तब मुझे यहां रहकर ज्यादा अच्छा नहीं लगा। क्या मैं आधे घंटे के लिए वहां आकर तुमसे नहीं मिल सकता? तुम्हारे इस शुभचिन्तक की इस समय सबसे बड़ी इच्छा यही है।

कैस्पर गुडवुड

इज़ाबेल पत्र को पढ़ने में इतनी डूब गई थी कि कोमल घास पर अपनी तरफ आती आहट वह नहीं सुन सकी। ज्यों ही पत्र को तह करके उसने अनायास, आंखें ऊपर उठाईं, उसने देखा कि लार्ड वारबर्टन उसके सामने खड़ा है।

१२

पत्र जेब में रखकर वह आगन्तुक के स्वागत के लिए मुस्कराई। अव्यवस्थित वह बिलकुल नहीं हुई और अपनी सहजता पर उसे थोड़ा आश्चर्य भी हुआ।

"मुझे उन्होंने बताया था कि तुम यहां बाहर बैठी हो," लार्ड वारबर्टन बोला। ड्राइंग रूम में कोई था नहीं, और मुझे मिलना तुम्हीं से था, इसलिए मैं बिना तरद्दुद में पड़े सीधा यहां चला आया।"

इज़ाबेल उठ खड़ी हुई थी। उसके मन में क्षण-भर के लिए आया था कि उस आदमी को वहां पास नहीं बैठने देना चाहिए। "मैं बस अन्दर जा ही रही थी!" उसने कहा।

"अंदर मत जाओ, यहां बहुत अच्छा लग रहा है। मैं लौकले से घोड़े पर आया हूं। बहुत अच्छा दिन है यह।" वारबर्टन की मुस्कराहट में एक विशेष प्रसन्नता और मित्रता का भाव था। उसके समूचे व्यक्तित्व से वही सहजता और सद्भाव झलक रहा था जिससे पहले परिचय के दिन ही इज़ाबेल बहुत प्रभावित हुई थी। जून के खुले मौसम की तरह उस भाव ने उसे छा लिया था।

"तो यहीं थोड़ा टहलते हैं," वह बोली। उसे कुछ आभास मिल रहा था कि उस आदमी के मन में क्या बात है। वह उस प्रसंग से बची भी रहना चाहती थी, और उस सम्बन्ध में अपनी उत्सुकता शान्त भी करना चाहती थी। यह आभास उसे पहले भी हुआ था। उस अवसर पर, जैसा कि हम जानते हैं, वह उससे कुछ अशंकित भी हो उठी थी। उस आशंका में कई चीज़ें थीं—और वे सबकी सब अरुचिकर नहीं थीं। उसने कई दिन उनका विश्लेषण करते हुए बिताए थे। लार्ड वारबर्टन अपने प्रति 'आग्रह' में से रुचिकर को अरुचिकर से अलग कर सकने में वह सफल हुई थी। शायद कुछ पाठकों को लगे कि यह नवयुवती स्वयं ही एक चीज़ की भूमिका तैयार करके फिर स्वयं ही उसमें मीन-मेख निकालने लगती थी। पर इनमें जहां दूसरी बात सच थी, वहां पहले अभियोग से उसे मुक्त किया जा सकता था। वह अपने को इस बात का विश्वास दिलाने के लिए बहुत आतुर नहीं थी कि एक भूमिपति, जिस रूप में उसने लोगों से लार्ड वारबर्टन का ज़िक्र सुना था, उसके आकर्षण में उलझ गया है। ऐसे स्रोत से प्रेम की घोषणा से उससे कहीं अधिक मात्रा में प्रश्न पैदा होते जिस मात्रा में कि वह उनके उत्तर दे सकती थी। उसके मन पर उस व्यक्ति का बहुत गहरा प्रभाव एक विशेष व्यक्तित्व के रूप में पड़ा था, और उस रूप में पड़ी छाप की ही वह परीक्षा करती रही थी। उसकी आत्म-पूर्णता को और अतिरंजित करने का खतरा उठाकर भी कहना होगा कि ऐसे 'व्यक्तित्व' द्वारा चाहे जाना उसकी नजर में एक तरह का आघात ही नहीं, तिरस्कार भी था—ऐसा तिरस्कार जिससे मन को असुविधा होती। अब तक उसका किसी ऐसे 'व्यक्तित्व' से परिचय नहीं था। उस अर्थ में उसके जीवन में किसी 'व्यक्तित्व' का प्रवेश नहीं हुआ था। उसके अपने देश में तो शायद इस तरह का कोई व्यक्ति था ही नहीं। 'व्यक्तित्व' के उत्कर्ष की बात वह सोचती थी तो चरित्र और कुशाग्रता के आधार पर ही सोचती थी—एक पुरुष के मन और व्यवहार में केवल यही बात देखी जा सकती थी। वह स्वयं एक 'चरित्र' है, इसकी जानकारी भी उसे थी। पूर्णता-प्राप्त चेतना के सम्बन्ध में उसकी धारणा अब तक नैतिक प्रतिमानों पर ही केन्द्रित रही थी—जिनके सम्बन्ध में प्रश्न यही था कि उनसे उसकी उदात्त आत्मा को कितना परितोष मिलता है। पर लार्ड वारबर्टन का बिम्ब उसके मन में, अपने विशाल और उज्ज्वल रूप में, जिन गुणों और शक्तियों के समुच्चय को लेकर बनता था, उनकी नापजोख इस साधारण नियम

के अनुसार नहीं हो सकती थी। उनके लिए एक अलग तरह के सुरुचि-संस्कार की अपेक्षा थी। उसे लगता था कि जल्दी से और खुले ढंग से निर्णय लेने के कारण इसमें उतना धीरज ही नहीं है। वह आदमी जिस तरह के विवेक की मांग करता था, उसकी आवश्यकता पहले किसी और व्यक्ति को लेकर नहीं पड़ी थी। उसे लगता था कि भूमि, राजनीति और सामाजिकता की दृष्टि से धुरन्धर एक व्यक्ति ने उसे अपनी उस व्यवस्था में समेट लेने की बात मन में सोच ली है जिसमें वह स्वयं ईर्ष्यास्पद ढंग से रहता-जीता है। अंदर की कोई मनोवृत्ति—जो कि दिखावा न होकर एक आग्रह ही था—उसे उस दिशा से रोकती थी। धीमे स्वर में उससे कहती थी कि उसकी अपनी एक अलग व्यवस्था और अलग दायरा है। वह उससे और भी बहुत कुछ कहती थी—ऐसी बातें जो एक-दूसरे की विरोधी भी थीं और पोषक भी—कि ऐसे आदमी के हाथों अपने को छोड़ने से भी बुरा बहुत कुछ हो सकता है; कि ऐसे आदमी की व्यवस्था को उसीके दृष्टिकोण से देख सकना खासा दिलचस्प हो सकता है। और दूसरी ओर कि उस ज़िन्दगी में बहुत कुछ ऐसा होगा जिससे पल-पल की उलझन पैदा हो सकती है, और कुल मिलाकर उस ज़िन्दगी की जड़ता और मूर्खता एक बोझ बन सकती है। फिर अभी-अभी एक युवक अमरीका से आया था जिसकी अपनी कोई व्यवस्था थी ही नहीं। पर यह, वह अपने को नहीं समझा सकती थी कि उस युवक के चरित्र का उसपर कोई खास प्रभाव पड़ा ही नहीं था। जेब में पड़ी चिट्ठी बल्कि उसे इसके विपरीत स्थिति की याद दिला रही थी। फिर भी मैं पाठक से कहूंगा कि वह इस बात पर मुस्कराए नहीं कि एलबेनी से आई यह साधारण नवयुवती अभी से मन में तौल रही थी कि वह उस अंग्रेज लार्ड को स्वीकार करे या नहीं। हालांकि अब तक उसने इसके सामने प्रस्ताव भी नहीं रखा था—और कुल मिलाकर समझती थी कि वह ज़िन्दगी में इससे कहीं अच्छा चुनाव कर सकती है। इस लड़की में सद्भावना पर्याप्त मात्रा में थी। उसके विवेक में अगर कहीं मूढ़ता का अंश था, तो उसके कड़े आलोचकों को यह जानकर सन्तोष मिल सकता है कि आगे चलकर इतनी ज़्यादा मूढ़ता कर चुकने के बाद उसे अक्ल आई कि कोई भी इसके लिए उसपर तरस खा सकता है।

लार्ड वारबर्टन उस समय इज़ाबेल के कहने से टहलने, बैठने या कुछ भी करने को तैयार था। वह सदा की तरह उसपर यह प्रभाव डालना चाहता था कि

सामाजिक शिष्टाचार का पालन करके उसे कितनी प्रसन्नता होती है। फिर भी अपनी भावनाओं पर उसका वश नहीं था। इज़ाबेल साथ टहलते हुए, विना उसे इसका आभास दिए, वह जिस तरह खामोश रहकर पल-पल उसे ताकता रहा, और जिस तरह बेमतलब हंसता रहा, उससे उसकी घबराहट साफ झलकती थी। अब हम फिर से इस बात पर आ गए हैं, तो मैं पल-भर के लिए रुककर कह दूं कि अंग्रेज़ दुनियां की सबसे रोमांटिक कौम है, और लार्ड वारबर्टन अब इसका उदाहरण प्रस्तुत करने जा रहा था। वह एक ऐसा कदम उठाने जा रहा था जिससे उसके सभी मित्रों को आश्चर्य, और बहुतों को दुःख भी होता। ऊपरी तौर पर उसके लिए कोई प्रलोभन नहीं था। घास पर उसके साथ टहलती लड़की एक ऐसे विचित्र देश से आई थी, जिसके बारे में वह बहुत कुछ जानता था। जातिगत विशेषताओं को छोड़कर वह उस लड़की के पूर्वजीवन या अन्य सम्बन्धों के विषय में बहुत कम जानता था। जातिगत विशेषताएं भी उसमें कोई बहुत अलग या बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं थीं। मिस आर्चर के पास न ऐसा धन था, न सौन्दर्य जो लोगों के सामने उसके चुनाव की सार्थकता सिद्ध कर सके। उसने गिना था कि अब तक उसने उस लड़की के साथ कुल छब्बीस घण्टे बिताए हैं। उसका आवेग कितना गलत है, यह भी वह सोच चुका था। पर पर्याप्त अवसर मिलने पर भी वह आवेग शान्त नहीं हुआ था। वह यह भी देख रहा था कि मनुष्य-समाज के बारे में उसका निर्णय कितना गलत है—विशेष रूप से यदि जल्दी से निर्णय लेने वाले उसके आधे भाग को लिया जाए। पर ये सब बातें सामने रहने पर भी उसने उन्हें अपने विचारों से बाहर कर दिया। उसे उनकी उतनी ही परवाह थी जितनी अपने बटन-होल में लगी गुलाब की कली की। यह एक व्यक्ति का सौभाग्य है कि जीवन का अधिकांश भाग वह अपने मित्रों को नाराज़ करने से बिना प्रयत्न बचा रहे, क्योंकि ऐसे में जब इस तरह का अवसर आता है, तो पहले की कोई झुंझला देने वाली स्मृतियां नहीं होतीं।

"मेरा ख्याल है घुड़सवारी में तुम्हें खूब अच्छा लगा होगा," इज़ाबेल ने अपने साथी की हिचकिचाहट को भांपते हुए कहा।

"और किसी बात के लिए नहीं, तो इसलिए तो अच्छा लगा ही कि मैं यहां चला आया।"

"तुम्हें गार्डनकोर्ट बहुत अच्छा लगता है?" इज़ाबेल ने पूछा। उसे और

विश्वास होता जा रहा था कि वह आदमी उससे प्रस्ताव करने जा रहा है। वह सोच रही थी कि यदि वह संकोच करेगा, तो वह उसे उकसाएगी नहीं। और वह बात करने ही लगेगा तो अपने तर्क की स्थिरता हाथ से नहीं जाने देगी। उसे एका-एक लगा कि जिस स्थिति में वह थी, उसे कुछ सप्ताह पहले उसने बहुत रोमांटिक समझा होता—इंग्लिश ग्राम-आवास का एक बगीचा है, उसके आगे के हिस्से को एक 'महान्' (जैसा कि वह सोचती थी) सम्भ्रान्त व्यक्ति अलंकृत किए हैं और वह एक लड़की से प्रणय-निवेदन करने जा रहा है; ठीक से निरीक्षण करने पर लड़की बहुत कुछ उससे मिलती-जुलती जान पड़ती है। पर अब जब कि वह स्वयं इस घटना की नायिका थी, तो भी, वह उसे बाहर से देख सकने में वह कम सफल नहीं थी।

"मुझे गार्डनकोर्ट से कुछ मतलब नहीं है," उसका साथी बोला, "मुझे मतलब तुमसे है।"

"तुम्हारा—मेरा परिचय इतने कम समय का है कि तुम्हें यह कहने का अधिकार नहीं है। मैं नहीं मानती कि तुम यह बात गम्भीर होकर कह रहे हो।"

इज़ाबेल ने ये शब्द ईमानदारी से नहीं कहे। मन में उसे ज़रा सन्देह नहीं था कि वह आदमी कितनी ईमानदारी से यह बात कह रहा है। वह यह भी जानती थी कि उसके अपने शब्द केवल उस रूढ़िवाद को नज़र में रखकर कह गए हैं जिसे लार्ड वारबर्टन की बात से आघात पहुंचना चाहिए था। लार्ड वारबर्टन असंयत ढंग से नहीं सोचता, इस जानकारी के अतिरिक्त इसके शब्दों की सचाई का विश्वास दिलाने के लिए अगर और भी किसी चीज़ की आवश्यकता थी, तो वह भी उस आदमी के स्वर से पूरी हो गई थी।

"व्यक्ति को कितना अधिकार है, इसका नाप समय से नहीं होता मिस आर्चर, भावना से होता है। मैं और तीन महीने प्रतीक्षा करता रहूं, तो उससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। मुझे अपनी बात पर जितना विश्वास आज है, उतना ही तब भी रहेगा। वह ठीक है मैं तुमसे बहुत कम मिला हूं, पर मेरी धारणा उसी समय बन गई थी जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था। बिना समय लिए, मैं तभी से तुम्हें प्यार करने लगा था। उपन्यासों में इसे पहली नज़र का प्यार कहते हैं।—अब मैं जानता हूं कि यह एक बनावटी मुहावरा नहीं है। इससे आगे के लिए उपन्यासों के सम्बन्ध में मेरी धारणा अच्छी हो गई है। दो दिन यहां रहकर मेरे मन में बात

निश्चित हो गई। पता नहीं तुमने जाना था या नहीं, पर मेरा ध्यान उस बीच, मानसिक रूप से, तुम्हीं पर केन्द्रित रहा था। तुम्हारी कही या की कोई ऐसी बात नहीं जो मैंने लक्ष्य नहीं की। जब उस दिन तुम लोकले आईं—या जब तुम वहां से लौटीं—तब मैं मन में बिलकुल निश्चित को चुका था। फिर भी मैंने अपने को समय दिया—इस सम्बन्ध में और सोचने और अपने को ठीक से परखने का। अब मैं वह भी कर चुका हूं।—इतने दिन मैंने और कुछ किया ही नहीं। "ऐसे मामले में मैं गलती नहीं कर सकता, क्योंकि मैं बहुत विवेकशील प्राणी हूं। मैं आसानी से अपने को हाथ से नहीं जाने देता। पर चला जाऊं, तो वह ज़िन्दगी-भर के लिए होता है। ज़िन्दगी-भर के लिए मिस आर्चर, ज़िन्दगी-भर के लिए।" लार्ड वारबर्टन ने जिस मधुर, कोमल और आकर्षक स्वर में यह सब कहा, वैसा स्वर इज़ाबेल ने कभी नहीं सुना था। कहते हुए उसकी आंखों में वासना की ऐसी चमक आ गई थी जिसमें से उस भावना के हीनतर अंश—उष्णता, आक्रामकता और तर्कहीनता—निकल गए थे, और जिसमें एक वातहीन स्थान पर जल रही ज्योति की-सी स्थिरता आ गई थी।

जब वे बात कर रहे थे, तो जैसे एक खामोश समझौते से उनकी चाल धीमी हो गई थी। आखिर वे रुक गए और लार्ड वारबर्टन ने इज़ाबेल का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"सच, लार्ड वारबर्टन, तुम मुझे कितना कम जानते हो," इज़ाबेल ने कोमल स्वर में कहा और उसी कोमलता से अपना हाथ हटा लिया।

"इस तरह मुझे ताना मत दो। मैं तुम्हें ज़्यादा नहीं जानता, इसका पहले ही मुझे कम दुःख नहीं है। पर यह नुकसान मेरा ही है। मैं ज़्यादा जानना ही तो चाहता हूं, और मुझे लगता है कि मैं उसके लिए सही रास्ता अपना रहा हूं। तुम मेरी पत्नी बन जाओ, तो मैं तुम्हें ज़्यादा जान जाऊंगा। और तब मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं तुम्हारी कद्र करता हूं। तब तुम यह नहीं कह सकोगी कि मैं बिना जाने यह बात कह रहा हूं।"

"तुम मुझे कम जानते हो, और मैं तो तुम्हें और भी कम जानती हूं," इज़ाबेल बोली।

"तुम्हारा मतलब है कि मेरी स्थिति तुमसे अलग है—कि मुझे ज़्यादा जानकर भी तुम्हें खास फर्क नहीं पड़ेगा? हां, यह हो सकता है। पर सोचो कि

जिस तरह मैं बात कर रहा हूं, उससे क्या मेरा यह निश्चय नहीं झलकता कि मैं तुम्हें सन्तुष्ट रखने का पूरा प्रयत्न करूंगा ? तुम मुझे थोड़ा पसन्द तो करती हो —नहीं ?"

"मैं तुम्हें बहुत पसन्द करता हूं, लार्ड वारबर्टन," इज़ाबेल ने उत्तर दिया उस क्षण सचमुच वह आदमी उसे बहुत पसन्द आ रहा था।

"यह कहने के लिए धन्यवाद। इसका मतलब है तुम मुझे अजनबी नहीं समझतीं। मैं समझता हूं कि मैंने ज़िन्दगी के और सब रिश्ते बहुत अच्छी तरह निभाये हैं। तो इसी रिश्ते को क्यों नहीं निभा सकूंगा, जबकि मैं स्वयं अपने को तुम्हें सौंप रहा हूं, और इस रिश्ते में मेरा निजी लगाव भी और रिश्तों से कहीं ज़्यादा है। जो लोग मुझे जानते हैं, तुम उनसे पूछ लो। बहुत-से दोस्त हैं जो मेरी तरफ से तुम्हें विश्वास दिला सकते हैं।"

"मुझे तुम्हारे दोस्तों की सिफारिश नहीं चाहिए," इज़ाबेल बोली।

"तुमसे यह सुनकर मुझे खुशी हुई। इसका मतलब है तुम स्वयं मुझपर विश्वास करती हो।"

"पूरी तरह से," इज़ाबेल ने घोषणा की। यह सोचकर कि वह सचमुच विश्वास करती है, उसका मन खुशी से चमक उठा।

लार्ड वारबर्टन की आंखों की चमक एक मुस्कराहट में बदल गई और प्रसन्नता के उच्छ्वास के साथ उसने कहा, "अगर तुम्हारा विश्वास गलत निकले मिस आर्चर, तो मैं अपना सब कुछ खोने को तैयार हूं।"

पल-भर के लिए इज़ाबेल को लगा कि कहीं वह अपनी सम्पत्ति की ओर तो उसका ध्यान नहीं दिला रहा। पर दूसरे ही क्षण उसे लगा कि ऐसा नहीं है। अपनी सम्पत्ति के सम्बन्ध में तो वह स्वयं कहता कि वह उसे डुबो रहा है। यह दायित्व उससे बात करने वाले व्यक्ति पर था—विशेष रूप से उस लड़की पर, जिससे वह विवाह का प्रस्ताव कर रहा था—कि वह इस चीज को याद रखकर चले। इज़ाबेल अपने लिए प्रार्थना कर रही थी कि वह कहीं उत्तेजित न हो जाए, और उसका मन काफी शान्त भी था—हालांकि वह अपने से पूछ रही थी कि क्या कहना उसके लिए सबसे अच्छा होगा। यहां इतनी तो आलोचना उसकी की ही जा सकती है। ठीक क्या कहना चाहिए, यह क्या उसने अपने से पूछा ? उसकी सबसे बड़ी इच्छा यही थी कि कुछ ऐसी बात कहे जो उस व्यक्ति की कही बात से

कम सद्भावपूर्ण न हो। लार्ड वारबर्टन ने अपनी बात पूरे विश्वास के साथ कही थी और इज़ाबेल को लग रहा था कि एक रहस्यमय ढंग से वह सचमुच उस व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण हो उठी है। "तुम्हारे प्रस्ताव के लिए मैं कितनी आभारी हूं, यह मैं बता नहीं सकती," आखिर उसने कहा," मैं इससे बहुत सम्मानित महसूस कर रही हूं।"

"ऐसा मत कहो," लार्ड वारबर्टन ढह पड़ा, "मुझे डर था कि तुम ऐसा ही कुछ कहोगी। पर ऐसी बात तुमसे कैसे जुड़ती है ? आभार तुम्हें नहीं मुझे मानना चाहिए कि तुमने मेरी बात सुन ली है। एक बिना ज़्यादा जाना-पहचाना आदमी और इस तरह सिर पर आ चढ़े ! पर इसमें सन्देह नहीं कि मेरा सवाल बहुत बड़ा है। पर खुद इसका जवाब ढूंढ़ने से मैंने पूछ लेना ही बेहतर समझा। जिस तरह तुमने बात सुन ली है—या सिर्फ इतने से ही कि तुमने बात सुन ली है—मुझे कुछ आशा बंधती है।"

"देखो, बहुत ज़्यादा आशा मत करो," इज़ाबेल के मुंह से निकला।

"ओह, मिस आर्चर।" लार्ड वारबर्टन अपनी गम्भीरता में भी हल्की मुस्कराहट के साथ बुदबुदाया। जैसे कि यह चेतावनी अत्यधिक प्रसन्नता और अतिरिक्त उल्लास का ही एक खेल हो।

"तुम्हें बहुत आश्चर्य होगा अगर मैं तुमसे बिलकुल आशा न करने की प्रार्थना करूं ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"आश्चर्य ? मैं नहीं जानता आश्चर्य से तुम्हारा क्या मतलब है। पर इतना ही नहीं, मुझे इससे कहीं बुरा अनुभव होगा।"

इज़ाबेल फिर चलने लगी। कुछ मिनट वह खामोश रही, "मैं तुम्हारी जितनी कद्र करती हूं, उसे देखते हुए कह सकती हूं कि ज़्यादा जानने का अवसर मिलने पर यह कद्र और बढ़ेगी ही। पर तुम्हें निराशा नहीं होगी, यह मैं नहीं कह सकती। यह मैं लोकाचार की नम्रतावश नहीं कह रही। मैं सचमुच ऐसा महसूस करती हूं।"

"मैं इसका खतरा उठाने को तैयार हूं," लार्ड वारबर्टन बोला।

"तुम खुद कह रहे हो यह सवाल बहुत बड़ा है। बहुत मुश्किल सवाल है यह।"

"तुम अभी मुझे जवाब दो, यह मैं नहीं चाहता। तुम जितनी भी देर चाहो

इस पर सोच लो। अगर इन्तज़ार से कुछ हासिल हो सकता है, तो मैं देर तक इन्तज़ार करने को तैयार हूं। पर इतना ध्यान रखना कि अन्त में मेरी सबसे बड़ी खुशी तुम्हारे जवाब पर निर्भर करेगी।"

"तुम्हें संशय में रखकर मुझे बहुत दुःख होगा," इज़ाबेल बोली।

"इसकी मुझे चिन्ता नहीं है। आज बुरा जवाब पाने से छः महीने बाद अच्छा जवाब पाना ज़्यादा पसन्द करूंगा।"

"पर हो सकता है कि छः महीने बाद भी मैं तुम्हें वह जवाब न दे सकूं जो तुम्हारे ख्याल में अच्छा होगा।"

"तुम सचमुच मुझे पसन्द करती हो, तो ऐसा क्यों होगा ?"

"नहीं, इस बात पर तुम्हें कभी सन्देह नहीं होना चाहिए," इज़ाबेल ने कहा।

"तो मैं नहीं जानता कि तुम और क्या चाहती हो।"

"सवाल मेरे चाहने का नहीं, न दे सकने का है। मुझे नहीं लगता कि मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूं। सचमुच मुझे ऐसा नहीं लगता।"

"इसकी तुम चिन्ता मत करो। यह चीज़ मेरे ऊपर है। तुम्हें राजा से बढ़कर राजतन्त्र की चिन्ता नहीं होनी चाहिए।"

"सिर्फ इतनी ही बात नहीं," इज़ाबेल बोली, "मुझे नहीं लगता कि मैं किसीसे भी विवाह करना चाहती हूं।"

"बहुत सम्भव है तुम नहीं चाहतीं। निःसन्देह बहुत-सी स्त्रियां इसी तरह आरम्भ करती हैं" लार्ड महोदय ने कहा। पर यह कहना होगा कि उसे इस सूक्ति में, जिससे कि उसने अपनी आशंका को ढांपने का प्रयत्न किया, स्वयं ज़रा भी विश्वास नहीं था। पर अक्सर बाद में वे मान जाती हैं।

"यह इसलिए कि वे ऐसा चाहती हैं," इज़ाबेल हल्के से हंस दी।

लार्ड वारबर्टन का चेहरा उतर गया और पल-भर वह खामोश रहकर उसे देखता रहा। "मैं अंग्रेज़ हूं, शायद इसलिए तुम संकोच कर रही हो," अब उसने कहा, "मुझे पता है तुम्हारे मौसा चाहते हैं कि तुम अपने देश में ही विवाह करो।"

इज़ाबेल ने यह बात खासी दिलचस्पी के साथ सुनी। मिस्टर टाउशेट लार्ड वारबर्टन से उसके विवाह की सम्भावनाओं पर विचार-विमर्श करेंगे, ऐसा उसने कभी नहीं सोचा था। "यह उन्होंने तुमसे कहा है ?"

"एक बार ऐसा ज़िक्र उससे सुना था। वे आम अमरीकनों के बारे में बात

कर रहे थे।"

"वे खुद तो इंग्लैंड में रहकर बहुत खुश हैं।" इज़ाबेल ने बात कुछ कुटिल ढंग से कही। पर इससे एक तो यह ज़ाहिर था कि वह अपने मौसा की बाहरी सहजता से परिचित है, और दूसरे यह कि वह स्वभाव से ही किसी चीज़ को तंग-दिली से देखने से बचना चाहती है।

इससे लार्ड वारबर्टन को कुछ आशा हुई। उसने तुरन्त गरमजोशी के साथ कहा, "ओह, माई डियर मिस आर्चर, बूढ़ा इंग्लैंड खासा अच्छा देश है। हम लोग इसे थोड़ा मांज लेंगे, तो यह और भी अच्छा हो जाएगा।"

"इसे मांजो नहीं लार्ड वारबर्टन, ऐसा ही रहने दो। मुझे यह इसी तरह पसन्द है।"

"तुम अगर ऐसा सोचती हो, तो मुझे यह बिलकुल समझ नहीं आता कि मेरे प्रस्ताव से तुम्हें आपत्ति क्यों है।"

"मुझे लगता है कि मैं तुम्हें समझा नहीं सकती।"

"तुम कोशिश तो करो। मैं काफी समझदार हूं। क्या तुम यहां के··· यहां के मौसम से डरती हो? तो कहीं और चलकर रहना हमारे लिए मुश्किल नहीं है। दुनिया में जहां का भी मौसम तुम्हें पसन्द हो, बताओ।"

ये शब्द जिस विश्वास के साथ कहे गए थे, वह शक्तिशाली बांहों के आलिंगन की तरह था। उस व्यक्ति के सांस लेते उजले होंठों से निकलकर जैसे किन्हीं अनजाने बागों की अनजानी खुशबुओं से लदी हवा सीधे उसके चेहरे से आ टकराई हो। अगर वह विश्वास और ईमानदारी के साथ कह सकती कि "लार्ड वारबर्टन, मुझे इस अद्भुत दुनिया में इससे अच्छा और कुछ नहीं मिल सकता कि मैं आभार-पूर्वक अपने को तुम्हारे अनुराग के हाथों में सौंप दूं," तो वह अपनी छिगुनी कटा-कर भी यह कह देती। पर इस अवसर की सराहना करती हुई भी वह एक बड़े-से पिंजरे में बन्द जंगली जीव की तरह उसके सबसे घने साये में हट आई। जो 'आकर्षक' सुरक्षा उसे दी जा रही थी, वह उसकी कल्पना की सबसे बड़ी चीज़ नहीं थी। आखिर उसने जो बात कहने का निश्चय किया, वह बिलकुल और ही थी। उससे उसने उस नाज़ुक स्थिति का तुरन्त सामना करने की अपेक्षा को टाल दिया। "अगर मैं कहूं कि आज इस बारे में और बात मत करो, तो तुम मुझे निष्ठुर नहीं समझोगे।"

"बिलकुल नहीं," उसका साथी बोला, "मैं तुम्हें उकताना बिलकुल नहीं चाहता।"

"तुमने मुझे सोचने को बहुत कुछ दे दिया है। मैं वायदा करती हूं कि मैं इस-पर ठीक से विचार करूंगी।"

"बस मैं इतना ही चाहता हूं। साथ इतना और कहूंगा कि यह मत भूलना कि मेरी सारी खुशी तुम्हारे हाथ में है।"

इज़ाबेल ने यह बात बहुत आदर के साथ सुनी, पर मिनट-भर बाद कहा, "इतना बता दूं कि मुझे कोई ऐसा तरीका ही सोचना है जिससे बिना चोट पहुंचाए तुम्हें यह बता सकूं कि जो तुम चाहते हो, वह असम्भव है।"

"ऐसा कोई तरीका नहीं है, मिस आर्चर। यह मैं नहीं कहता कि तुम इन्कार कर दोगी, तो मैं प्राण दे दूंगा। प्राण मैं नहीं दूंगा। पर मेरी स्थिति उससे भी बदतर होगी क्योंकि मैं तब निरुद्देश्य जीवन जीता रहूंगा।"

"तुम जीते रहकर मुझसे बेहतर स्त्री से विवाह करोगे।"

"यह मत कहो," लार्ड वारबर्टन बहुत संजीदा होकर बोला, "यह हम दोनों के साथ अन्याय है।"

"तो किसी बदतर स्त्री से सही।"

"यदि कोई तुमसे भी बेहतर स्त्री है, तो मैं बदतर को ही पसन्द करूंगा—बस मैं इतना ही कह सकता हूं," उसने उसी व्यग्र स्वर में कहा, "आदमी की रुचि का कोई गणित नहीं होता।"

लार्ड वारबर्टन की संजीदगी से इज़ाबेल भी संजीदा हो उठी। यह उसके कहने से ही प्रकट था कि इस समय उस विषय को अब छोड़ दिया जाए। मैं जल्द ही तुमसे खुद बात करूंगी। या शायद पत्र लिखूंगी।

"जैसे भी तुम्हें सुविधा हो," लार्ड वारबर्टन बोला, "तुम जितना भी समय लोगी, वह मुझे बहुत लम्बा लगेगा। पर मुझे जैसे-जैसे उसे काटना ही होगा।"

"मैं तुम्हें ज्यादा देर संशय में नहीं रखना चाहती। केवल थोड़ा अपने मन को सहेजना चाहती हूं।"

वारबर्टन हाथ पीछे किए अस्थिर ढंग से अपने शिकार के अस्त्र को हल्के-हल्के हिलाता हुआ पल-भर उदास आंखों से उसे देखता रहा। "तुम्हें पता है मुझे इससे बहुत डर लगता है—तुम्हारे इस खास तरह के मन से?"

अपनी नायिका का यह चरित्र लेखक नहीं बता सकता कि क्यों इस सवाल से वह चौंक गई और उसके गालों पर लाली दौड़ गई। वह पल-भर उसे देखती रही, फिर लगभग दया उकसाने के स्वर में कुछ अजीब तरह से बोली, "मुझे भी डर लगता है, माई लार्ड।"

पर लार्ड वारबर्टन की दया इससे नहीं जागी। अपने इस गुण की पूरी आवश्यकता उसे अपने लिए थी। "कुछ तो मेरे हाल पर तरस खाओ," वह बुदबुदाया।

"अब तुम जाओ," इज़ाबेल बोली, "मैं तुम्हें पत्र लिखूंगी।

"अच्छी बात है। पर तुम कुछ भी लिखो, मैं आकर तुमसे मिलूंगा ज़रूर।" फिर कुछ देर वह बंची के घूरते चेहरे पर आंखें टिकाए सोचता-सा खड़ा रहा। बंची जैसे उनके बीच की सारी बात सुनता-समझता रहा था, और उत्सुकता के आवेश में की गई अपनी इस अनधिकार चेष्टा को छिपाने के लिए ही एक बूढ़े ओक की जड़ों की तरफ भाग गया था। "एक बात और," लार्ड वारबर्टन बोला, "अगर तुम्हें लौकले पसन्द न हो, अगर तुम्हें वह जगह पुरानी और सीलनदार लगती हो, तो तुम उससे कोसों दूर रह सकती हो। वैसे वहां सीलन नहीं है, मैं उस घर की पूरी जांच करा चुका हूं। वह बिलकुल ठीक और सुरक्षित है। पर वह तुम्हारे मन के अनुकूल न हो, तो इस चीज़ को लेकर तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। घर बहुत-से हैं। मैंने ऐसे ही इसका ज़िक्र कर दिया है क्योंकि कुछ लोग एक खाई के पास रहना ही पसन्द नहीं करते। गुड बाई।"

"मुझे खाई बहुत अच्छी लगती है।" इज़ाबेल बोली, "गुड बाई।"

लार्ड वारबर्टन ने अपना हाथ बढ़ाया, तो उसने पल-भर के लिए अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया।—उस पल में ही वारबर्टन ने अपना नंगा सुन्दर सिर झुकाकर उसे चूम लिया। फिर अपनी भावना पर काबू पाने की उत्तेजना में अपने शिकार के अस्त्र को हिलाता हुआ वह तेज़ी से वहां से चला गया। प्रकट था कि वह काफी अव्यवस्थित था।

अव्यवस्थित इज़ाबेल भी थी, पर जितनी वह सोचती थी उतनी नहीं। उसके सामने एक बड़े उत्तरदायित्व या चुनाव की कठिनाई का प्रश्न नहीं था—उसे लग रहा था कि चुनाव की उसमें कोई बात नहीं है। लार्ड वारबर्टन से वह विवाह नहीं कर सकती, इस तरह सोचना ही उसकी नजर में गलत था, क्योंकि उसका विचार

स्वच्छन्द रूप से जीवन को देखने-परखने का था। यह विचार पहले भी उसके मन में था—अब और पुष्ट हो गया था। वह लिखकर वारबर्टन को इसका विश्वास दिला दे, यह कर्तव्य अपेक्षया आसान था। पर जो चीज़ उसे बेचैन कर रही थी और जिसपर उसे आश्चर्य भी हो रहा था, वह यह थी कि कितनी आसानी से उसने ऐसे बढ़िया अवसर को ठुकरा दिया। कोई कुछ भी कहे, लार्ड वारबर्टन ने उसे एक बड़ा अवसर देना चाहा था। उस स्थिति में तकलीफें हो सकती थीं, घुटन हो सकती थी, संकीर्णता और जड़ता की सम्भावनाएं भी हो सकती थीं, पर उसका यह सोचना स्त्रीजाति के साथ ज़्यादती नहीं थी कि बीस में से उन्नीस स्त्रियां बिना कोई चुमन महसूस किए इस सबमें अपने को खपा लेतीं। तो फिर वह भी क्यों इस बहाव में नहीं बह गई ?

वह कौन थी, क्या थी, जो अपने को औरों से बेहतर समझती थी ? उसका कौन-सा जीवन-दर्शन था, कौन-सा भाग्य-विधान था, कौन-सी सुख की कल्पना थी जो इस तरह के महान् और समृद्धिपूर्ण अवसर से भी उसे बड़ी लग रही थी ? अगर वह उस व्यक्ति को नहीं अपनाना चाहती, तो उसे कुछ ऐसा करना चाहिए जो और महान्, इससे कहीं महान् हो। वह बार-बार अपने को याद दिलाना चाहती थी कि उसे ज़्यादा घमण्ड नहीं करना चाहिए; दिल से प्रार्थना करती थी कि इस खतरे से बची रहे। घमण्ड से पैदा होने वाला अलगाव और अकेलापन उसकी नज़र में एक भयावह मरुस्थल की तरह था। अगर घमण्ड ही उसे लार्ड वारबर्टन को स्वीकार करने से रोक रहा था, तो यह बहुत गलत स्थिति थी। वह उस व्यक्ति को पसन्द करती है, इस बारे में वह इतनी विश्वस्त थी कि उसे लग रहा था उसका इन्कार एक कोमल और सूक्ष्म विवेक तथा सहानुभूति के कारण ही है। सच यह था कि उस व्यक्ति को पसन्द करने के कारण ही वह उससे विवाह नहीं करना चाहती थी। उसे लग रहा था कि वह जिस तरह उसे देखता है, जिस उज्ज्वल तर्क से यह प्रस्ताव रख रहा है, उस सबके अन्दर ही कहीं इसकी विडम्बना है। पर कहां, इसपर वह सूक्ष्म-सी भी उंगली नहीं रख पा रही थी। जो व्यक्ति इतना कुछ दे रहा हो, उसकी पत्नी हर चीज़ की आलोचना करती हो, यह बहुत शरम की बात नहीं होगी ? उसने लार्ड वारबर्टन से कहा था कि वह इस विषय में सोचेगी। उसके जाने के बाद वह फिर उसी बेंच पर लौट गई जहां वह उसके आने के समय बैठी थी, और सोच में डूब गई, तो बाहर से लग

सकता था। जैसे वह अपने वचन का पालन कर रही हो। पर बात यह नहीं थी। वह सोच रही थी कि कहीं वह एक रूखी, उदासीन और दोप ढूंढ़ने वाली स्त्री तो नहीं है। आखिर जल्दी से उठकर वह घर के अन्दर गई, तो उसे सचमुच अपने से डर लग रहा था—जैसा कि उसने लार्ड वारबर्टन से कहा था।

१३

इसी अहसास की वजह से उसने जो हुआ था, वह सब अपने मौसा को बता दिया। वह उनकी सलाह लेना नहीं चाहती थी—इसकी उसे ज़रा इच्छा नहीं थी। वह सिर्फ किसीसे बात करना चाहती थी, जिससे अपने को अधिक स्वाभाविक और अधिक मानवीय समझ सके। इस दृष्टि से अपनी मौसी या हेनरीटा की अपेक्षा अपने मौसा उसे कहीं अधिक उपयुक्त व्यक्ति जान पड़े। रैल्फ एक और व्यक्ति था जिससे मन की बात कही जा सकती थी, पर इस खास विषय पर उससे बात करने में उसे अपने पर बहुत ज़ोर डालना पड़ता। सो, अगले दिन नाश्ते के बाद उसने मौका ढूंढ़ लिया। शाम तक उसके मौसा अपने कक्ष से बाहर नहीं निकलते थे, पर अपने अन्तरंग मित्रों से वे ड्रेसिंग रूम में मिल लेते थे। इज़ाबेल ने उस श्रेणी में अपनी जगह बना ली थी। इस श्रेणी के और लोग थे बुड्ढे का बेटा, डाक्टर, उसका अपना नौकर और काफी हद तक मिस स्टैकपोल। मिसेज़ टाउशेट इस सूची में नहीं आती थीं जिसका मतलब था कि मिस्टर टाउशेट से अकेले मिलने में एक बाधा कम थी। वे अपनी उलझावदार मशीनी कुर्सी पर बैठे कमरे की खुली खिड़की से बाहर पच्छिम में बाग और दरिया की तरफ देख रहे थे। अखबारों और चिट्ठियों का ढेर उनके पास पड़ा था। वे अभी-अभी नहाकर तैयार हुए थे और उनके सरल विचारमग्न चेहरे पर उनके उदार आशय की रेखाएं नज़र आ रही थीं।

इज़ाबेल सीधे अपने विषय पर आ गई। "मैं आपको बताने आई हूं कि लार्ड वारबर्टन ने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया है। सोचती थी आंटी को भी बता दूं, पर पहले आपको बता देना मैंने उचित समझा।"

बुड्ढे ने आश्चर्य प्रकट नहीं किया। हां, उसके विश्वास के लिए आभार ज़रूर प्रकट किया। "यह भी बताना चाहोगी कि तुमने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है या नहीं ?" उन्होंने पूछा।

"मैंने अपनी ओर से निश्चित उत्तर नहीं दिया। मैंने सोचने के लिए थोड़ा समय लिया है, क्योंकि मैं उसका निरादर नहीं करना चाहती थी। पर मैं उसका प्रस्ताव स्वीकार नहीं करूंगी।"

मिस्टर टाउशेट ने इसपर कोई टिप्पणी नहीं की। उनके भाव से लग रहा था कि सामाजिक शिष्टाचार की दृष्टि से वे चाहे इसमें दिलचस्पी लें, पर वैसे इस मामले में उनका कोई दखल नहीं है। "मैंने तुमसे कहा था कि यहां तुम्हारी बहुत पूछ होगी। अमरीकनों की यहां लोग बहुत कद्र करते हैं।"

"कुछ ज़्यादा ही कद्र करते हैं," इज़ाबेल बोली, "पर यह सुरुचिहीनता लगे या कृतघ्नता, पर मैं नहीं समझती मैं लार्ड वारबर्टन से विवाह कर सकती हूं।"

"खैर", उसके मौसा ने बात जारी रखी, "एक बुड्ढा आदमी एक युवा लड़की के लिए कुछ तय नहीं कर सकता। अच्छा है तुमने निश्चय करने से पहले मुझसे नहीं पूछा।" और फिर आहिस्ता से, जैसे सरसरी तौर पर बोले, "अब मुझे भी तुम्हें बता देना चाहिए। मुझे इस चीज़ का तीन दिन से पता है।"

"लार्ड वारबर्टन के मन की बात के बारे में ?"

"हां, उसके इरादे के बारे में। यहां यही शब्द प्रयोग में लाया जाता है। उसने मुझे एक अच्छा-सा पत्र लिखा था जिसमें इस बात का उल्लेख था। तुम वह पत्र देखना चाहोगी ?" उन्होंने अपनेपन से पूछा।

"धन्यवाद। वह पत्र देखने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं। पर मुझ खुशी है कि उसने आपको लिखा था। उसके लिए ऐसा करना ही उचित था। वह हमेशा उचित काम करता है।"

"तो तुम उसे पसन्द तो करती हो," मिस्टर टाउशेट बोले, "इसमें तुम बहाना नहीं कर सकतीं।"

"वह मुझे बहुत अच्छा लगता है, यह मैं खुले मन से स्वीकार कर सकती हूं। पर फिलहाल मैं किसीसे भी विवाह नहीं करना चाहती।"

"तुम सोचती हो शायद कोई और ऐसा व्यक्ति तुम्हें मिल जाए जिसे तुम ज़्यादा पसन्द कर सको। हां, यह बहुत मुमकिन है," मिस्टर टाउशेट बोले। वे

अपने सद्भाव से जतलाना चाहते थे कि इज़ाबेल का निश्चय स्वाभाविक है और उसके लिए अच्छे-से कारण भी ढूंढ़ देना चाहते थे।

"और कोई मिले या न मिले, इसकी मुझे चिन्ता नहीं है। उस लिहाज़ से मैं लार्ड वारबर्टन को काफी पसन्द करती हूं।" उसकी बात से लगा जैसे उसने सहसा अपना रुख बदल लिया है। उसके इस स्वभाव से अक्सर उससे बात करने वाले लोग चौंक जाते थे और कभी-कभी तो बुरा भी मान जाते थे।

पर उसके मौसा पर ऐसा कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने जैसे प्रोत्साहन देने के स्वर में कहा, "वह आदमी बहुत बढ़िया है। इन कुछ हफ्तों में मेरे पास आए पत्रों में उसका पत्र सबसे अच्छा है। वह पत्र मुझे इसलिए भी अच्छा लगा कि वह सारा तुम्हारे बारे में है—मतलब उतने हिस्से को छोड़कर जो उसके अपने बारे में है। मेरा ख्याल था उसने तुम्हें वह सब बताया होगा।"

"मैं जो कुछ भी पूछती, वह मुझे ज़रूर बता देता," इज़ाबेल ने कहा।

"पर तुमने उत्सुकता नहीं दिखाई ?"

"मैंने उसका प्रस्ताव स्वीकार न करने का निश्चय कर लिया था, इसलिए मेरी उत्सुकता बेमानी होती।"

"वह तुम्हें काफी आकर्षक नहीं लगा ?" मिस्टर टाउशेट ने पूछा।

"वह कुछ देर खामोश रही। "शायद ऐसा ही हो," फिर उसने स्वीकार किया, "पर इसका कारण मैं नहीं जानती।"

"सौभाग्यवश स्त्रियों से कारण की अपेक्षा भी नहीं की जाती," उसके मौसा बोले, "इस प्रस्ताव में काफी आकर्षण भी है, पर मुझे समझ नहीं आता कि अंग्रेज़ लोग क्यों हमारा देश हमसे छुड़ा देना चाहते हैं। यूं हम लोग भी इन्हें वहां खींचने का प्रयत्न करते हैं, पर वह इसलिए कि हमारी आबादी बहुत कम है। यहां तो काफी बड़ी भीड़ है। पर सुन्दर युवा लड़कियों के लिए कहीं भी जगह रहती है।"

"यहां तो आपके लिए भी जगह रही है," इज़ाबेल बाग के बड़े-बड़े खुशनुमा हिस्सों पर आंखें दौड़ाती हुई बोली।

मिस्टर टाउशेट सचेत और शठ भाव से मुस्कराए, "आदमी कीमत अदा कर सके तो उसे कहीं भी जगह मिल सकती है। मुझे तो कभी-कभी लगता है कि मैंने कुछ ज़्यादा ही कीमत अदा की है। तुम्हें भी हो सकता है कि बहुत ज़्यादा

कीमत अदा करनी पड़े।"

"हां, हो सकता है," इज़ाबेल बोली।

अपने विचारों की अपेक्षा इस सुझाव ने उसे सोचने के लिए अधिक ठोस आधार दे दिया। जिस कोमल कुशाग्रता से उसके मौसा ने उसकी दुविधा को लिया, उससे उसे लगा कि वह जीवन की सामान्य भावनाओं से जुड़ी है। केवल मानसिक छटपटाहट और अस्पष्ट महत्वाकांक्षाओं की ही शिकार नहीं है—ऐसी महत्वाकांक्षाओं की जो कि लार्ड वारबर्टन के सुन्दर आग्रह की पहुंच से परे किसी अस्पष्ट और शायद अवांछनीय दिशा की ओर उन्मुख हों। जहां तक इज़ाबेल के व्यवहार के लिए उसपर पड़ते परोक्ष प्रभावों का सम्बन्ध था, उनमें कैस्पर गुडवुड के साथ उसके संपर्क की बात दूर तक नहीं आती थी। अपने अंग्रेज प्रशंसक के हाथों अपने को सौंपने से वह जिस हद तक बची रही थी, उसी हद तक वह बोस्टन से आए नवयुवक के अधिकार में अपने को देने से भी दूर थी। उसका पत्र पढ़ने के बाद वह मन-ही-मन वहां विदेश में आने के लिए उसकी आलोचना करती रही थी। क्योंकि उस आदमी का थोड़ा-बहुत प्रभाव उसपर था, इसलिए उसे लग रहा था कि वह उसकी स्वतन्त्रता उससे छीनना चाह रहा है। वह जिस तरह वहां आ पहुंचा था, उससे उसे एक अवांछित आघात, और एक रूखी उपस्थिति का आभास हो रहा था। कभी-कभी उसे यह सोचकर खतरा-सा महसूस होता था कि वह आदमी उसके आचरण को लेकर क्या कहेगा। उस आदमी को उसका आचरण कैसा लगेगा, इसे वह अब तक और किसी भी व्यक्ति की राय की अपेक्षा ज़्यादा महत्त्व देती थी। कठिनाई यह थी कि कैस्पर गुडवुड उसे और किसी भी व्यक्ति से ज़्यादा—बेचारे लार्ड वारबर्टन से तो कहीं ज़्यादा (इस विशेषण का अधिकार वह लार्ड महोदय को देने लगी थी)—एक कार्यशक्ति का प्रतीक लगता था, जो कि उसे उसकी आंतरिक शक्ति महसूस होती थी। बात उस व्यक्ति की विशेषताओं की नहीं थी, उसकी आंखों में छिपे भाव की थी जो एक खिड़की पर बैठे अनथक पहरेदार का-सा था। उसे अच्छा लगे या न लगे, वह आदमी अपने हठ पर कायम रहता था। उसके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति को इस स्थिति का सामना करना ही पड़ता था। इस समय अपनी स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध की बात उसे विशेष रूप से असह्य लग रही थी, क्योंकि लार्ड वारबर्टन के इतने बड़े प्रलोभन को सामने से ठुकराकर उसने अपनी स्वतन्त्रता को ही बढ़ावा दिया था। कैस्पर गुडवुड जैसे उसके भाग्य का एक संकेत था—उससे हठी आदमी

उसने आज तक नहीं देखा था। उसे लगता था कि आज चाहे वह उस आदमी से बच ले, पर एक-न-एक दिन जरूर उसे उससे उसीकी शर्तों पर समझौता करना पड़ेगा। इस बाध्यता से बचने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार थी। अपनी मौसी का निमन्त्रण झट से स्वीकार कर लेने में उसके लिए यह भी एक कारण रहा था। उन दिनों रोज़ मिस्टर गुडवुड के आने की संभावना रहती थी, जो बात वह निश्चित रूप से कहने वाला था, उसके लिए वह एक निश्चित उत्तर पा लेना चाहती थी। जिस शाम मिसेज़ टाउशेट आई थीं, उस शाम एलबैनी में उसने उस आदमी से कहा था कि इस समय वह इन मुश्किल सवालों पर बात नहीं कर सकती। वह इस बात से चकाचौंध हो गया था कि उसकी मौसी ने एकाएक 'यूरोप' का रास्ता उसके लिए खोल दिया है। फिर भी उसने कहा था कि यह कोई जवाब नहीं है, और अब उससे बेहतर जवाब पाने के लिए ही वह समुद्र पार चला आया था। उस कल्पनाशील युवती के लिए, उस आदमी की हर चीज़ को एक निश्चित तथ्य मानकर, उसे अपने भाग्य के रूप में देखना भले ही काफी हो, पर पाठक को अधिकार है कि वह उसे और पास से देख सके।

गुडवुड मैसेशुसेट्स की एक प्रसिद्ध रुई की मिल के मालिक का लड़का था। उसके पिता ने इस कारबार में काफी रुपया बनाया था। आजकल कैस्पर फैक्टरी की देखभाल करता था। कड़ी होड़ और मन्दी के दिनों में भी उसने अपने गुण और विवेक से अपनी समृद्धि को डांवाडोल नहीं होने दिया था। उसकी कुछ शिक्षा हार्वर्ड कालेज में हुई थी, पर वहां अन्य विविध विषयों की अपेक्षा उसकी अधिक ख्याति नाव चलाने और शारीरिक खेलों के लिए ही थी। बाद में उसे पता चला कि सूक्ष्म बुद्धि के क्षेत्र में भी उछल-कूद और रस्साकशी की जा सकती है, और पुराने रिकार्ड तोड़कर नये झण्डे गाड़े जा सकते हैं। तभी उसे मशीनी रहस्यों से उलझने वाली दृष्टि भी अपने में नज़र आई और उसने रुई कातने की एक बेहतर प्रक्रिया ईजाद की जो कि अब उसके नाम से जानी जाती थी। इस उपयोगी यन्त्र के सिलसिले में उसका नाम अखबारों में छपता था। इसके प्रमाण के तौर पर उसने इज़ाबेल को 'न्यूयार्क इंटरव्यूअर' में गुडवुड पेटैंट के बारे में एक लेख दिखाया था। यह लेख मिस स्टैकपोल का नहीं था—उसकी दिलचस्पी उस आदमी की भावना तक सीमित थी। उसे उलझाने वाले बड़े-बड़े कामों में मज़ा आता था। व्यवस्था, होड़ और शासन में उसे दिलचस्पी थी। वह लोगों से अपनी मर्ज़ी के

मुताबिक काम करा सकता था। उनमें विश्वास पैदा कर सकता था, उन्हें चला सकता था और उनसे अपना अनुमोदन करा सकता था। उसे आदमियों को हाथ में लेना आता था। यह गुण उसकी साहसपूर्ण और चिन्तन-प्रधान महत्वाकांक्षा का एक हिस्सा था। उसे जानने वालों का ख्याल था कि वह रुई की फैक्टरी चलाने से कहीं बड़ा कोई काम करेगा। कैस्पर गुडवुड का व्यक्तित्व रुई नुमा नहीं था और उसके मित्रों का विश्वास था कि जैसे-कैसे और जहां-कहीं भी वह अपने नाम के लिए और बड़े अक्षर खोज लेगा। पर लगता था कि इसके लिए कोई बड़ी; उलझावदार, स्याह और भद्दी घटना उसके साथ होगी क्योंकि वह मरियल-सी शान्ति तथा लोभ और प्राप्ति की उस व्यवस्था से सन्तुष्ट नहीं था जिसकी बुनियाद सर्वव्यापी विज्ञापन शक्ति पर थी। इज़ाबेल को यह सोचकर खुशी होती थी कि वह सरपट दौड़ते घोड़े पर सवार होकर गृहयुद्ध जैसे किसी बड़े आयोजन में कूद सकता है—उस गृहयुद्ध जैसे आयोजन में जिसने उसके सचेत बचपन और गुडवुड के चढ़ते यौवन पर अपनी काली छाया डाले रखी थी।

वह लोगों को चला सकता है, उसकी यह विशेषता इज़ाबेल को उसके व्यक्तित्व और स्वभाव के दूसरे पक्षों से कहीं ज्यादा पसन्द थी। रुई की मिल से उसे कोई मतलब नहीं था और गुडवुड पेटेंट का उसपर ज़रा भी असर नहीं पड़ता था। वह उसकी मरदानगी का वही रूप चाहती थी, पर सोचती थी कि अच्छा होता अगर वह देखने में ज़रा और-सा लगता। उसका जबड़ा कुछ ज़्यादा चौड़ा और मज़बूत था और शरीर कुछ ज्यादा सीधा और सख्त। उससे लगता था कि जीवन की आन्तिरिक लय से उसका सहज साधर्म्य नहीं है। फिर उसे उस आदमी की हमेशा एक-से कपड़े पहनने की आदत भी पसन्द नहीं थी। यह नहीं कि वह हमेशा वही कपड़े पहनता था। उसके कपड़े बल्कि हमेशा बिलबुल नये-से नज़र आते थे। पर वे एक ही टुकड़े से बने लगते थे। इससे उसका व्यक्तित्व बहुत एकतार जान पड़ता था। वह अपने से कहती कि ऐसे महत्त्वपूर्ण आदमी की इस ज़रा-सी त्रुटि पर उसका एतराज़ करना बेमानी है। पर फिर अपने को समझाती कि उसका एतराज़ बेमानी तब हो जब वह उस आदमी से प्यार करती हो। क्योंकि वह उसे प्यार नहीं करती थी, इसलिए उसे अधिकार था कि वह बड़े दोषों के अलावा उसके छोटे-छोटे दोषों की भी आलोचना करे। बड़े दोषों में उस आदमी की अतिशय गम्भीरता थी—या बाहर से ऐसा आभास—क्योंकि वास्तव में शायद कोई भी उतना गम्भीर नहीं

हो सकता था। फिर वह अपनी भूख-प्यास या किसी भी इच्छा को बहुत सादगी और फूहड़पन से व्यक्त कर देता था। कोई अकेला उसके साथ हो, तो वह एक ही विषय पर बहुत ज्यादा देर बात करता रहता था। पर था वह काफी मजबूत और साफ तबीअत का। इज़ाबेल उसके जिस्म के अलग-अलग हिस्सों को उसी तरह अपनी-अपनी जगह पर लगे देखती थी जैसे किसी पोर्ट्रेट में या अजायबघर की फौलाद की प्लेटों पर सोने की नक्काशी से बने योद्धाओं के जिस्म के हिस्से देख रही हो। पर यह बहुत विचित्र-सी बात थी। उसकी धारणाओं और उसके कार्य में कोई भी सूत्र कहां था ? कैस्पर गुडवुड उसे कभी भी खुशमिज़ाज आदमी नहीं लगा था, और उसका ख्याल था कि इसीलिए वह उसकी इतनी कड़ी आलोचना करती है। दूसरी तरफ लार्ड वारबर्टन खुश मिज़ाज ही नहीं, उससे कहीं बढ़कर था। फिर भी उसके प्रस्ताव से भी उसे संतोष नहीं हुआ। सचमुच यह बहुत विचित्र बात थी।

अपने इस अन्तर्द्वन्द्व से कैस्पर के पत्र का उत्तर देने में उसे कोई सहायता नहीं मिली। उसने फिलहाल इसे टाल जाने का ही निश्चय किया। वह आदमी अगर उसके पीछे पड़ा है, तो उसे खुद ही इसका फल भुगतना चाहिए। सबसे पहले उस आदमी को यह पता चलना चाहिए कि उसके गार्डनकोर्ट आने का विचार उसके लिए कितना कम आकर्षण रखता है। एक चाहने वाला यहां पहले ही उसके मस्तिष्क को उलझाए था। दो विपरीत दिशाओं से प्रशंसा पाने का आकर्षण रहते हुए भी, यह चीज़ उसे बेतुकी लग रही थी कि वह एकसाथ दो-दो चाहने वालों का सामना करे—चाहे इससे दोनों को अस्वीकार करने का सुख ही उसे प्राप्त करना हो। मिस्टर गुडवुड को उसने जवाब नहीं दिया, पर तीन दिन बाद लार्ड वारबर्टन को उसने एक पत्र लिखा जिसका हमारे इतिहास में अपना स्थान है :

डियर लार्ड वारबर्टन—उस दिन तुमने कृपापूर्वक जो प्रस्ताव मेरे सामने रखा था, मैं बहुत सोचकर भी उसके सम्बन्ध में अपना मन नहीं बदल सकी। मैं सचमुच बिलकुल भी तुम्हें अपने जीवन-साथी के रूप में नहीं देख सकती, न ही तुम्हारे घर को—किसी एक घर को—अपने अस्तित्व का निश्चित आवास मान सकती हूं। इन चीज़ों पर तर्क नहीं किया जा सकता। मेरी तुमसे हार्दिक प्रार्थना है कि अब इस विषय में और बात मत करना क्योंकि हम पहले ही इसपर काफी

बात कर चुके हैं। हम सब अपने जीवन को अपनी-अपनी दृष्टि से देखते हैं—हर छोटे से छोटे और हीन से हीन व्यक्ति को भी इसका अधिकार है। मैं अपने जीवन को तुम्हारे द्वारा प्रस्तावित रूप में नहीं देखती। तुम बस इतना ही काफी समझ लो। विश्वास रखो कि मैंने तुम्हारे प्रस्ताव को उचित आदर देते हुए इसपर विचार किया है। उसी आदर और सद्भावना के साथ, तुम्हारी,

इज़ाबेल आर्चर

जब पत्र की लेखिका इसे भेजने का निश्चय कर रही थी, तभी हेनरीटा स्टैकपोल स्वच्छन्द रूप से अपना ही एक निश्चय कर रही थी। उसने रैल्फ टाउशेट से अपने साथ बाग में टहलने को कहा। वह ऊंची उड़ान में रहने की अपनी आदत के अनुसार खुशी-खुशी इसके लिए तैयार हो गया, तो उसने उसे बताया कि वह उससे एक अहसान चाहती है। इस बात से वह थोड़ा संकुचित हो गया क्योंकि उसे शुरू से लगा था कि मिस स्टैकपोल दूसरे का लाभ उठाने वाली स्त्री है। पर उसकी आशंका गलत थी। वह किस हद तक ज़्यादती कर सकती है, या किस मात्रा में, इस बारे में वह ठीक से नहीं जानता था। उसने बहुत नम्रता के साथ कहा कि वह उसकी कोई भी सेवा करने को तैयार है। उसे मिस स्टैकपोल से डर लगता था, और यह भी उसने उससे कह दिया, "तुम एक खास नज़र से मेरी तरफ देखती हो, तो मेरे घुटने कांप जाते हैं और मेरी सोच-विचार की शक्ति जवाब दे जाती है। मेरे जिस्म में कंपकंपी दौड़ जाती है और मैं चाहता हूं कि जैसे-कैसे तुम्हारे आदेश का पालन कर दूं। तुम्हारा एक अपना ही तौर-तरीका है जो किसी और स्त्री में मैंने नहीं देखा।"

"खैर," हेनरीटा मज़ाक के ढंग से बोली, "यह तुम मुझे बनाने की कोशिश कर रहे हो। इसका अगर मुझे पहले पता नहीं था, तो अब पता चल गया है। वैसे मुझे बनाना मुश्किल भी नहीं है। क्योंकि मेरा पालन बिलकुल दूसरी तरह के विचारों और रीति-रिवाज़ों के अन्तर्गत हुआ है। तुम्हारे बदलते मानदण्डों से मैं परिचित नहीं हूं। अमरीका में कभी किसीने इस तरह मुझसे बात नहीं की जैसे तुम कर रहे हो। वहां कोई युवक मुझसे ऐसे बात करता, तो मैं घबरा जाती कि वह क्या कह रहा है। वहां हम हर चीज़ को ज़्यादा स्वाभाविक ढंग से लेते हैं, और वैसे भी हम काफी सीधे लोग हैं। मैं जानती हूं, मैं भी बहुत सीधी हूं। तुम इसके

लिए मेरी हंसी उड़ाना चाहो, तो यह तुम्हारी मर्ज़ी पर है। पर मैं तुम्हारे जैसी बनने की जगह अपने जैसी ही बनी रहना चाहूंगी। मैं अपने इस रूप से काफी सन्तुष्ट हूं और अपने को बदलना नहीं चाहती। बहुत-से लोग हैं जो मुझे इस रूप में पसन्द करते हैं—यह ठीक है कि वे सब अमरीकन हैं—भले, ताज़ा और स्वतन्त्र।" इधर हेनरीटा के स्वर में एक असहाय निर्भरता और अतिशय सहिष्णुता आ गई थी। "मैं तुमसे एक छोटी-सी सहायता चाहती हूं," वह कहती रही, "मुझे इसकी चिन्ता नहीं कि उससे तुम्हारा मनोरंजन होगा या क्या।—बल्कि मैं समझती हूं कि बेहतर है, बदले में तुम्हारा कुछ मनोरंजन भी हो सके। मुझे तुमसे इज़ाबेल के सम्बन्ध में थोड़ी सहायता लेनी है।"

"उसने तुम्हें चोट पहुंचाई है क्या ?" रैल्फ ने पूछा।

"ऐसा होता, तो मैं चिन्ता न करती। न तुमसे कहने आती। मुझे उल्टे डर इस बात का है कि वह कहीं अपने को चोट न पहुंचा ले।"

"यह बात काफी हद तक सम्भव है," रैल्फ बोला।

हेनरीटा बाग में चलते-चलते रुक गई। उसने उसी तीखी नज़र से रैल्फ को देखा जिससे वह घबरा जाता था, "तुम्हारा शायद उससे भी मनोरंजन होगा। तुम्हारे बात करने के ढंग का सचमुच जवाब नहीं। मैंने आज तक ऐसा उदासीन व्यक्ति नहीं देखा।"

"इज़ाबेल के विषय में उदासीन ? ना, यह बात गलत है।"

"खैर, मैं समझती हूं तुम उससे प्रेम नहीं करने लगे।"

"यह कैसे हो सकता है—जबकि मैं किसी और से प्रेम करता हूं ?"

"तुम सिर्फ अपने से प्रेम करते हो। यह 'कोई और' खुद तुम्हीं हो," मिस स्टैकपोल ने घोषणा की, "तुम्हारा भला भी इसीमें है। पर तुम ज़िन्दगी में एक बार गम्भीर होना चाहो, तो उसका अवसर मैं तुम्हें दे रही हूं। तुम सचमुच अपनी कज़िन का हित चाहते हो, तो यह एक अवसर है जब तुम इसका प्रमाण दे सकते हो। तुम उसे समझ सको, यह मैं नहीं चाहती क्योंकि ऐसा चाहना तुमसे ज्यादती करना है। मेरी सहायता करने के लिए तुम्हें इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। उसके लिए जितनी समझदारी चाहिए, वह तुम्हें मुझसे मिल जाएगी।"

"मुझे इसमें मज़ा आएगा," रैल्फ बोला, "मैं कैलिबन का पार्ट अदा करूंगा, तुम एरिएल का।"

"तुम कैलिबन की तरह बिलकुल नहीं हो। तुम घाघ आदमी हो। कैलिबन घाघ नहीं था। पर मैं काल्पनिक चरित्रों की बात नहीं कर रही। मैं इज़ाबेल की बात कर रही हूं। वह बहुत वास्तविक है। मैं तुमसे कहना चाहती थी कि मुझे यह लड़की बहुत बदल गई लगती है।"

"मतलब तुम्हारे आने के बाद से ?"

"मेरे आने के बाद से और पहले से। जो अच्छी-सी इज़ाबेल वह पहले थी, अब नहीं रही।"

"जो वह अमरीका में थी ?"

"हां, जो वहां थी। वह उस देश की है, यह तो तुम्हें पता है न ? यह उस बेचारी का कसूर नहीं, पर वह है सो है।"

"तो तुम उसे फिर से बदलना चाहती हो ?"

"ज़रूर चाहती हूं, और उसीके लिए मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए।"

"ओह !" रैल्फ बोला, "मैं सिर्फ कैलिबन हूं, प्रोस्पेरो नहीं हूं।"

"जो वह बन गई है, उसमें तुम ज़रूर प्रोस्पेरो रहे हो। जब से इज़ाबेल आर्चर यहां आई है मिस्टर टाउशेट, तुम उसपर अपना प्रभाव डाल रहे हो।"

"कौन मैं, माई डियर मिस स्टैकपोल ? हरगिज़ नहीं। यह कहो कि वह मुझपर अपना प्रभाव डाल रही है। क्योंकि उसका प्रभाव किसीपर भी पड़ सकता है। पर मैं तो बिलकुल निष्क्रिय रहा हूं।"

"तब तुम कुछ ज़्यादा ही निष्क्रिय रहे हो। बेहतर होगा कि थोड़ा अपने को हिलाओ और सावधान होकर चलो। इज़ाबेल रोज़-बरोज़ बदल रही है—एक समन्दर की तरफ फिसल रही है। मैंने उसे देखा है और जानती हूं। जो खुश मिज़ाज अमरीकन लड़की वह पहले थी, अब नहीं है। उसके विचार बदल रहे हैं, रंग बदल रहा है और वह अपने पुराने आदर्शों से परे हट रही है। मैं उन आदर्शों की रक्षा करना चाहती हूं, मिस्टर टाउशेट, और यहीं मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।"

"निःसन्देह एक आदर्श के रूप में नहीं ?"

"न, ऐसा मेरा ख्याल नहीं, है," हेनरीटा जल्दी से बोली, "मेरे मन में कहीं यह डर है कि कहीं वह इन घृणित यूरोपियनों में से किसी एक से ब्याह न कर ले। मैं इस चीज़ को रोकना चाहती हूं।"

"ओह ! अब समझ में आई बात," रैल्फ चिल्लाया, "इसे रोकने के लिए तुम चाहती हो कि मैं बीच में पड़कर उससे ब्याह कर लूं।"

"हरगिज नहीं। उस हालत में तो इलाज बीमारी से भी बदतर होगा। जिन घृणित यूरोपियनों से मैं उसे बचाना चाहती हूं, तुम भी उन्हींके एक उदाहरण हो। मैं चाहती हूं कि तुम एक ऐसे नवयुवक में दिलचस्पी लो जिसे पहले वह काफी प्रोत्साहन देती रही है, पर अब जिसे वह अपने योग्य नहीं समझती। वह बहुत बढ़िया आदमी है और मेरा बहुत प्यारा मित्र है। मैं चाहता हूं कि तुम उसे यहां आने का निमन्त्रण दो।"

रैल्फ इस अनुरोध से असमंजस में पड़ गया। सुनकर उसे बात उतनी सादा नहीं लगी—इससे उसे साफ मन रखने का श्रेय नहीं दिया जा सकता। उसके विचार में इस अनुरोध के पीछे कहीं एक यन्त्रणा थी। वह नहीं सोच पा रहा था कि मिस स्टैकपोल का यह अनुरोध उतना ही निश्छल हो सकता है जितना कि सुनने में लगता है। उसे समझ नहीं आ रहा था कि असलियत क्या है—एक युवा लड़की क्यों यह चाहती है कि एक युवा पुरुष को, जिसे वह अपना प्रिय मित्र बताती है, एक और युवा लड़की से, जिसका मन भटक रहा है और जिसमें अपना आकर्षण उससे कहीं अधिक है, सम्बन्ध सुधारने का अवसर दिया जाए। पंक्तियों का सहज अर्थ समझने की अपेक्षा उनमें से गूढ़ अर्थ निकालना कहीं आसान था। पर उसका यह सोचना कि मिस स्टैकपोल अपने लिए उस युवक को गार्डनकोर्ट में बुलाना चाहती है, उसके मन की अशिष्टता का नहीं, अव्यवस्था का प्रमाण था। पर अशिष्टता के इस क्षन्तव्य भाव से भी रैल्फ का बचाव हो गया। जिस शक्ति से बचाव हुआ, उसे मैं प्रेरणा ही कह सकता हूं। इस विषय पर बाहर से और प्रकाश न पड़ने पर भी उसे लगा कि 'इंटरव्यूअर' का संवाददाता के साथ यह बहुत बड़ा अन्याय होगा कि उसके किसी कार्य में एक घृणित उद्देश्य ढूंढ़ा जाए। यह विश्वास बहुत तीव्रता के साथ उसके मन में जागा। शायद इसका कारण मिस स्टैकपोल की अबाध दृष्टि से झलकता निर्मल भाव ही था। अपने से बड़े प्रकाश-स्तम्भ के सामने जिस तरह व्यक्ति की भौंहें सिकुड़ जाती हैं, उस तरह भौंहें सिकुड़ने से उसने अपने को प्रयत्न से रोका और पल-भर इस चुनौती को मन में सहेजने के बाद कहा, "यह कौन आदमी है जिसका तुम जिक्र कर रही हो?"

"मिस्टर कैस्पर गुडवुड बोस्टन का रहने वाला है। वह इज़ाबेल के पीछे

पागल है—उसे अपनी जान से ज्यादा चाहता है। वह उसके पीछे-पीछे यहां चला आया है, और इस समय लन्दन में है। उसका पता मेरे पास नहीं है, पर मैं चाहूं तो मुझे मिल सकता है।"

"मैंने कभी उसका नाम ही नहीं सुना।"

"तुमने हरएक का नाम नहीं सुन रखा। उसने भी तुम्हारा नाम नहीं सुना होगा। पर यह कोई वजह नहीं कि इज़ाबेल उससे ब्याह न करे।"

रैल्फ हल्की और अस्पष्ट-सी हंसी हंसा, "लोगों का ब्याह कराने का तुम्हें कितना शौक है। याद है उस दिन तुम मेरा ब्याह कराने के लिए कितनी उत्सुक थीं?"

"वह ख्याल मैंने छोड़ दिया है। तुम ऐसे विचार की कद्र नहीं कर सकते। गुडवुड कर सकता है, और इसीलिए वह आदमी मुझे पसन्द है। वह बहुत बढ़िया और शरीफ आदमी है। यह बात इज़ाबेल भी जानती है।"

"इज़ाबेल उसे काफी पसन्द करती है?"

"नहीं करती, तो उसे करना चाहिए। वह बेचारा तो बिलकुल उसीको दिमाग पर ओढ़े रहता है।"

"और तुम चाहती हो कि मैं उस आदमी को यहां बुलाऊं?" रैल्फ जैसे सोचता हुआ बोला।

"यह तुम सच्चे आतिथ्य का काम करोगे।"

"कैस्पर गुडवुड," रैल्फ कहता रहा, "नाम तो सुनने में खासा अच्छा लगता है।"

"मुझे उसके नाम से कुछ लेना-देना नहीं है। उसका नाम एज़कील जेन्किन्स हो, तो भी मैं यही बात कहूंगी। जितने लोगों को मैं जानती हूं, उनमें यही एक आदमी मुझे इज़ाबेल के योग्य लगता है।"

"तुम बहुत अच्छी मित्र हो," रैल्फ बोला।

"वह तो मैं हूं। तुम अगर यह कुढ़कर कह रहे हो, तो मुझे ज़रा परवाह नहीं है।"

"मैं कुढ़कर नहीं कह रहा। मुझे सचमुच ऐसा लग रहा है।"

"तुम्हारे स्वर में पहले से ज्यादा व्यंग्य है। पर मैं तुमसे कहूंगी कि तुम्हें मिस्टर गुडवुड पर हंसना नहीं चाहिए।"

"विश्वास रखो, मैं बहुत गम्भीर होकर बात कर रहा हूं। तुम्हें इतना तो

समझ ही, लेना चाहिए," रैल्फ ने कहा।

पल-भर में ही मिस स्टैकपोल समझ गई। "अब लग रहा है कि तुम गम्भीर हो—बल्कि कुछ ज़्यादा ही गम्भीर हो।"

"तुम्हें खुश करना बहुत मुश्किल है।"

"सचमुच तुम बहुत ज़्यादा गम्भीर हो। तुम मिस्टर गुडवुड को बुलाओगे नहीं।"

"कह नहीं सकता," रैल्फ बोला, "मैं कई बार अजीब-अजीब काम कर सकता हूं। तुम ज़रा बताओ तो, यह तुम्हारा मिस्टर गुडवुड लगता कैसा है?"

"बिलकुल तुमसे उलट। वह एक बहुत अच्छी रुई-फैक्टरी का संचालक है।"

"मिलनसार आदमी है?" रैल्फ ने पूछा।

"बहुत मिलनसार—अमरीकन ढंग से।"

"हमारे छोटे-से दायरे में वह खप जाएगा?"

"हमारे छोटे-से दायरे से उसे मतलब ही नहीं होगा। वह तो सिर्फ इज़ाबेल के साथ-साथ रहेगा।"

"और मेरी कज़िन को यह कैसा लगेगा?"

"शायद बिलकुल अच्छा न लगे। पर उसकी भलाई इसीमें है। इससे उसकी पुरानी धारणाएं लौट आएंगी।"

"लौट आएंगी? कहां से?"

"विदेशी भागों और दूसरे अस्वाभाविक स्थानों से। तीन महीने पहले तक वह मिस्टर गुडवुड को यह सोचने का अवसर दे रही थी कि वह उसे अस्वीकार नहीं करेगी। यह बात इज़ाबेल के अनुरूप नहीं कि एक नई जगह पर आ जाने से ही वह एक अच्छे मित्र से परे हट जाए। नई जगह पर मैं भी आई हूं। पर मुझपर इसका यही प्रभाव पड़ा है कि अपने पुराने सम्बन्धों का आग्रह मेरे मन में और बढ़ गया है। मेरा विश्वास है कि जितनी जल्दी इज़ाबेल वापस चली जाए, उसके लिए उतना ही अच्छा है। मैं उसे जितनी अच्छी तरह जानती हूं, उससे कह सकती हूं कि यहां वह कभी खुश नहीं रह सकेगी। इसीलिए मैं चाहती हूं कि वह एक ऐसी मजबूत अमरीकन गांठ में बंध जाए जो उसे बचाए रख सके।"

"तुम कुछ ज़्यादा ही जल्दबाज़ी नहीं कर रहीं?" रैल्फ ने पूछा, "गरीब इंग्लैंड में तुम्हें उसे थोड़ा और अवसर नहीं देना चाहिए?"

"किस चीज़ का अवसर ? अपनी अच्छी-खासी जवानी नष्ट करने का ? किसी डूबते इंसान की कीमती जान बचाना कोई जल्दबाज़ी नहीं है ।"

"मैं समझ गया," रैल्फ बोला, "तुम मुझसे यह चाहती हो कि मैं मिस्टर गुडवुड को उसके पीछे तख्ते से धकेल दूं। तुम्हें पता है," उसने फिर कहा, "कि मैंने इज़ाबेल के मुंह से इस आदमी का नाम तक नहीं सुना ?"

हेनरीटा के चेहरे पर मुस्कराहट चमक गई, "मुझे यह जानकर खुशी हुई। इससे पता चलता है कि वह उसके बारे में कितना ज़्यादा सोचती है ।"

रैल्फ को लगा कि इस बात में काफी तथ्य हो सकता है। इस विचार ने उसका विरोध समाप्त कर दिया। मिस स्टैकपोल अब भी अनिश्चित-सी उसकी तरफ देख रही थी। "अगर मैं मिस्टर गुडवुड को बुलाऊंगा," वह बोला, "तो सिर्फ इसलिए कि उसके साथ चोंच लड़ा सकूं।"

"ऐसा मत करना। वह तुमसे बेहतर आदमी साबित होगा।"

"तुम अपनी तरफ से इसमें कोई कसर नहीं छोड़ोगी कि मैं उससे नफरत करने लगूं। मेरा ख्याल है मुझे उसे नहीं बुलाना चाहिए। मुझे डर है मैं कहीं उससे रूखा बरताव न कर बैठूं।"

"यह तुम्हारी मर्ज़ी पर है," हेनरीटा बोली, "मुझे नहीं पता था कि तुम खुद ही उससे प्यार करते हो ।"

"तुम सचमुच ऐसा समझती हो ?" रैल्फ ने भौंहें चढ़ाकर पूछा ।

"तुम्हारे मुंह से यह पहली स्वाभाविक बात मैं सुन रही हूं। मैं ज़रूर ऐसा समझती हूं।" मिस स्टैकपोल धूर्तता के साथ बोली ।

"तो ठीक है," रैल्फ ने बात समाप्त की, "तुम्हें यह बताने के लिए कि यह बात गलत है, मैं उसे बुला लूंगा। पर बुलाऊंगा उसे तुम्हारे मित्र के रूप में ।"

"वह मेरे मित्र के रूप में नहीं आएगा। और न ही तुम मुझपर यह साबित करने के लिए उसे बुलाओगे। तुम उसे बुलाओगे अपने पर यह साबित करने के लिए ।"

मिस स्टैकपोल के अन्तिम शब्दों में (जिनके बाद वे एक-दूसरे से अलग हो गए) कुछ सचाई भी थी जिसे रैल्फ नज़र-अंदाज़ नहीं कर सकता था। पर इस तीव्र अहसास से कि ऐसी स्थिति में अपने वचन का पालन न करना अधिक अनुचित होगा, उसने मिस्टर गुडवुड को छः पंक्तियों का एक पत्र लिख दिया। उसमें

लिखा कि उसके पिता को खुशी होगी अगर वह गार्डनकोर्ट में उनकी उस छोटी-सी पार्टी में शामिल हो सके, जिसकी एक सम्मानित सदस्य मिस स्टैकपोल है। पत्र भेजकर (उस बैंक की मार्फत जिसका नाम हेनरीटा ने बताया था), वह संशयग्रस्त मन से उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा। इस भयास्पद व्यक्ति का नाम उसने पहली बार सुना था। वापस आने पर जब उसकी मां ने जिक्र किया था कि पीछे लड़की का कोई 'चाहने वाला' भी है, तो उसे वह बात अवास्तविक-सी लगी थी। उसने ऐसे सवाल-जवाब की ज़रूरत नहीं समझी थी जिससे खामखाह की टालमटोल सुननी पड़े। पर अब उसकी कज़िन के प्रति वह स्वदेशी चाहत, अधिक वास्तविक हो उठी थी। उसने एक ऐसे युवक का रूप ले लिया था जो उसके पीछे-पीछे लन्दन चला आया था, जिसकी एक रुई की मिल थी, और जो अमरीकन ढंग से काफी मिलनसार भी था। इस आगन्तुक के सम्बन्ध में रैल्फ की दो दृष्टियां थीं। या तो यह प्रेम-चर्चा मिस स्टैकपोल की भावुक कल्पना थी (क्योंकि स्त्रियों में, अपनी जातिगत विशेषता के कारण, एक तरह का समझौता रहता है कि वे हमेशा एक-दूसरी के लिए प्रेमियों की खोज या आविष्कार करती रहें)। उस स्थिति में उस आदमी से डरने की ज़रूरत नहीं थी, और उसके निमन्त्रण स्वीकार करने की भी सम्भावना नहीं थी। दूसरी तरफ, उसके निमन्त्रण स्वीकार कर लेने पर कहा जा सकता था कि वह आदमी इतना बेतुका है कि उसके बारे में कुछ भी सोचना नहीं चाहिए। रैल्फ के तर्क का दूसरा पक्ष कुछ असंगत-सा था, पर उसका विश्वास था कि अगर सचमुच मिस्टर गुडवुड की इज़ाबेल में उतनी ही दिलचस्पी है जितनी कि हेनरीटा बताती है, तो हेनरीटा के बुलाने पर वह गार्डन-कोर्ट नहीं आएगा। 'उस हालत में,' उसने अपने से कहा, 'वह हेनरीटा को अपने फूल का कांटा समझेगा, और सोचेगा कि वह बेढंगे ढंग से खामखाह उसके मामले में दखल दे रही है।'

निमन्त्रण भेजने के दो रोज़ बाद उसे कैस्पर गुडवुड का संक्षिप्त-सा पत्र मिला। उसमें उसने लिखा था कि उसे खेद है कि अन्य व्यस्तताओं के कारण वह इस समय गार्डनकोर्ट नहीं आ सकेगा। पत्र रैल्फ ने हेनरीटा को दिया, तो वह पढ़कर चिल्ला उठी, "मैंने आज तक ऐसी बेमुरव्वती की बात नहीं सुनी।"

"मेरा ख्याल है वह इज़ाबेल के पीछे उतना दीवाना नहीं है जितना तुम समझती हो," रैल्फ बोला।

"यह बात नहीं। इसके पीछे कोई और ही महीन बात है। वह बहुत गहरा आदमी है। पर मैं उसकी गहराई तक ज़रूर पहुंचूंगी और लिखकर पूछूंगी कि आखिर दूसरा मतलब क्या है ?"

उस आदमी के निमन्त्रण अस्वीकार कर देने से रैल्फ अव्यवस्थित हो उठा। वह नहीं आ रहा, यह जानने के क्षण से ही वह आदमी उसे महत्त्वपूर्ण लगने लगा। वह अपने से पूछता कि उसे इससे क्या मतलब है कि इज़ाबेल के चाहने वाले बहुत तेज़ हैं या बहुत सुस्त—आखिर वे उसके तो प्रतिद्वन्द्वी नहीं हैं। उन्हें जैसा ठीक लगता है, वैसा वे करें। फिर भी उसके मन में उत्सुकता जागती कि अब मिस स्टैकपोल ने उसे लिखा होगा, तो वह उसे उत्तर में क्या लिखेगा ? पर यह उत्सुकता शान्त नहीं हो सकी क्योंकि तीन दिन बाद उसने हेनरीटा से इस बारे में पूछा तो उसने बताया कि उसे लन्दन से अपने पत्र का कोई उत्तर नहीं मिला।

"मुझे लगता है वह इस विषय में सोच रहा होगा," हेनरीटा बोली, "वह हर मामले पर अच्छी तरह विचार करता है—जल्दबाज़ वह बिलकुल नहीं है। पर मेरी चिट्ठी का जवाब उसी दिन न आए, तो मुझे बहुत कोफ्त होती है।" इसके बाद हेनरीटा ने इज़ाबेल को सुझाव दिया कि उन्हें तफरीह के लिए साथ-साथ लन्दन चलना चाहिए। "सच कहूं तो यहां मुझे कुछ ज़्यादा देखने को नहीं मिल रहा," वह बोली, "और न ही मैं समझती हूं तुम्हें मिल रहा होगा, तुम्हारे उस अमीरज़ादे से भी मैं नहीं मिली—क्या नाम है उसका,—लार्ड वारबर्टन ? वह तो तुम्हारे पास कभी आता ही नहीं।"

"लार्ड वारबर्टन कल आ रहा है," इज़ाबेल ने उत्तर दिया। उसे अपने पत्र के उत्तर में लौकले के स्वामी का पत्र मिल चुका था। "तुम जैसे चाहो, उसे उधेड़-कर देख लेना।"

"उससे मुझे ज़्यादा से ज़्यादा एक पत्र की सामग्री मिल सकती है, पर मुझे तो पचासों पत्र भेजने हैं। यहां की सारी दृश्यावली का वर्णन मैं कर चुकी हूं, और बूढ़ी स्त्रियों तथा गधों तक की प्रशंसा में लिख चुकी हूं। तुम चाहे जो कहो, पर दृश्यावली के वर्णन से एक मजेदार पत्र नहीं बनता। मुझे लन्दन जाकर वास्तविक जीवन के सम्बन्ध में कुछ धारणाएं बनानी चाहिए। मैं यहां आपने से पहले सिर्फ तीन दिन वहां रही हूं। उतने में तो आदमी को कुछ भी पता नहीं चलता।"

न्यूयार्क से गार्डनकोर्ट आते हुए इज़ाबेल ब्रिटिश राजधानी को इससे भी कम

देख सकी थी, इसीलिए हेनरीटा का यह सुझाव उसे पसन्द आया कि वे कुछ दिन वहां घूम आएं। यह विचार इज़ाबेल को इसलिए भी आकर्षक लगा कि वह लन्दन के सम्बन्ध में ठोस जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक थी—वह चीज़ उसके मन पर बहुत छाई हुई थी। वे दोनों रूमानी ढंग से साथ-साथ समय बिताने की कल्पना से अपनी योजनाएं बनाने लगीं। वे किसी आकर्षक-सी पुरानी सराय में ठहरेंगी—डिकेन्स के उपन्यासों की-सी किसी सराय में। 'हैन्सम' में बैठकर मज़े से सारा शहर घूमेंगी। हेनरीटा साहित्यिक थी, और साहित्यिक होने का एक लाभ यह था कि वह कहीं भी जा सकती थी, कुछ भी कर सकती थी। वे काफी हाउस में खाना खाएंगी और बाद में नाटक देखने जाएंगी। 'एबे' और ब्रिटिश म्यूज़ियम के चक्कर काटेंगी और पता करेंगी कि डाक्टर जानसन, गोल्डस्मिथ और एडिसन कहां रहते थे। इज़ाबेल इससे इतनी उत्कंठित हो उठी कि अपनी यह कल्पना उसने रैल्फ को भी बता दी। रैल्फ बजाय सहानुभूतिपूर्वक इस योजना का समर्थन करने के इसपर खिलखिलाकर हंस दिया।

"योजना बहुत बढ़िया है," वह बोला, "मेरी मानो तो तुम्हें कोवेंट गार्डन में ड्यूक्स हैड में जाकर रहना चाहिए। वह पुराने ढंग की बहुत बेतकल्लुफ-सी जगह है। मैं वहां अपने क्लब में तुम्हारा इंतज़ाम करा दूंगा।"

"तो इसमें भी कुछ अनुचित बात है क्या?" इज़ाबेल ने पूछा, "मेरी तौबा। यहां क्या कोई चीज़ उचित भी समझी जाती है? हेनरीटा के साथ मैं कहीं भी जा सकती हूं। उसे इस तरह की कोई रुकावट नहीं है। वह सारे अमरीकन प्रदेश में घूम चुकी है और इस छोटे-से द्वीप में भी अपना रास्ता ढूंढ़ सकती है।"

"तब तो मुझे भी उसके संरक्षण का लाभ उठाकर लन्दन हो आना चाहिए," रैल्फ बोला, "इतने सुरक्षित ढंग से सफर करने का मौका फिर कब मुझे मिलेगा?"

१४

मिस स्टैकपोल तभी चल देना चाहती थी। पर लार्ड वारबर्टन ने इज़ाबेल को लिखा था कि वह फिर गार्डनकोर्ट आ रहा है, इसलिए इज़ाबेल को लग रहा था

कि वहां रहकर उससे मिल लेना उसका कर्तव्य है। चार-पांच दिन तो लार्ड वारबर्टन ने उसके पत्र का उत्तर ही नहीं दिया था—फिर संक्षेप में लिखा था कि वह दो दिन बाद लंच के लिए गार्डनकोर्ट आ रहा है। उसके इस तरह समय लेने और बिलम्ब करने में कुछ था जो इज़ाबेल को छू गया था। उसे फिर लगा था कि वह आदमी धीरज और लिहाज़ खोना नहीं चाहता और न ही उस पर अनुचित दबाव डालना चाहता है। इससे उसे और भी लग रहा था कि वह आदमी उसे 'सचमुच बहुत चाहता' है। उसने अपने मौसा को भी अपने पत्र और उसके उत्तर के विषय में बता दिया था। इससे मिस्टर टाउशेट उस दिन शाम की बजाय दो बजे की महफिल में शामिल होने बाहर निकल आए। यह उन्होंने निगाह रखने के लिए नहीं किया, बल्कि इस उदार भावना से कि अगर इज़ाबेल उस भले आदमी की बात और सुनना चाहती हो, तो सम्भव है उनकी उपस्थिति से उनके बीच का तनाव कुछ कम हो सके। लार्ड वारबर्टन लौकले से घोड़ागाड़ी में आया। उसकी बहनों में से बड़ी उसके साथ थी जो शायद मिस्टर टाउशेट के-से विचार से ही आई थी। मिस स्टैकपोल लार्ड वारबर्टन के साथ बैठी। दोनों आगन्तुकों से उसका परिचय कराया गया। इज़ाबेल सुस्थित नहीं थी। उस आदमी ने जो सवाल बहुत जल्दी उसके सामने रख दिया था, उसपर वह उससे और बात नहीं करना चाहती थी। पर जिस संयत और विनोदपूर्ण ढंग से वह बात कर रहा था, उसकी वह मन ही मन प्रशंसा कर रही थी। चाहे उस आदमी का मन अन्दर से उसीकी उपस्थिति के विषय में सोच रहा होगा, पर वह उस चीज़ को किसी भी रूप में प्रकट नहीं होने दे रहा था। वह न उसकी तरफ देख रहा था, न उससे बात कर रहा था। उसकी भावना का कोई चिह्न नजर आता था तो वह यही कि वह उससे आंखें चुरा रहा था। दूसरों से पर वह काफी खुलकर बात कर रहा था और खाना भी सहज भाव से और ठीक तरह से खा रहा था। मिस मौलिन्यू, जिसका चिकना माथा एक नन जैसा था और जो गले में चांदी का क्रास लटकाए थी, हेनरीटा स्टैकपोल से बातें करने में व्यस्थ थी। वह इस तरह मिस स्टैकपोल को ताक रही थी कि लगता था उसके अन्दर गहरे अजनबीपन और उत्सुक जिज्ञासा के बीच द्वन्द्व चल रहा है। लौकले की दोनों महिलाओं में यही इज़ाबेल को ज्यादा पसन्द आई थी क्योंकि इसके भाव में एक वंशगत ठहराव था। फिर उसके कोमल माथे और चांदी के क्रास से इज़ाबेल को ऐसा जान पड़ता था जैसे

उन चीज़ों का सम्बन्ध उस देश के किसी जादुई रहस्य से हो, या जैसे वे दीक्षित सम्प्रदाय की पुनःस्थापना का एक संकेत हों। वह सोचने लगी कि मिस मौलिन्यू को अगर यह पता चले कि उसने उसके भाई को अस्वीकार कर दिया है, तो उसे कैसा लगेगा। पर फिर उसे विश्वास होने लगा कि मिस मौलिन्यू को इसका कभी पता नही चलेगा क्योंकि लार्ड वारबर्टन ऐसी बात उसे कभी नहीं बताएगा। उसे अपनी बहन से लगाव था, हमदर्दी थी, पर वह उसे ज़्यादा कुछ बताता नहीं था। कम-से-कम इज़ाबेल का ऐसा ही विचार था। खाने की मेज़ पर जब वह स्वयं बात न कर रही होती, तो आसपास के लोगों के बारे में धारणा बनाती रहती थी। उसे लग रहा था कि अगर मिस मौलेन्यू उसके और लार्ड वारबर्टन के बीच हुई बात को जान जाए, तो उसे यह सोचकर धक्का लगेगा कि यह लड़की ऊपर उठने में इतनी असमर्थ क्यों रही। या बल्कि वह सोचेगी (और अन्तिम बात इज़ाबेल के मन में यही आई) कि यह युवा अमरीकन लड़की उनसे अपनी असमानता की चेतना से कितनी आक्रान्त है।

इज़ाबेल ने अपने को प्राप्त अवसर को चाहे जैसे लिया हो, पर मिस स्टैकपोल को इस समय जो अवसर मिला था, उसकी वह ज़रा भी उपेक्षा नहीं करना चाहती थी। "यह पहला मौका है जब कि मैं किसी लार्ड को देख रही हूं," वह उतावली में वारबर्टन से बोली, "तुम शायद सोचोगे कि मैं बहुत अंधेरे में रही हूं।"

"इसका मतलब है तुम बहुत-से भद्दे लोगों से मिलने से बची रही हो," लार्ड वारबर्टन ने सूनी-सी नज़र से मेज के इधर-उधर देखते हुए कहा।

"वे बहुत भद्दे होते हैं? पर अमरीका में तो हमें बताते हैं कि वे बहुत सुन्दर और रौबीले होते हैं और बहुत बढ़िया चोगे और मुकुट पहनते हैं।"

"चोगे और मुकुट पहनने का अब ज़माना नहीं रहा," लार्ड वारबर्टन बोला, "जैसे तुम्हारे यहां अब कुल्हाड़ों और रिवाल्वरों का ज़माना नहीं रहा।"

"कितने अफसोस की बात है! भद्र समाज को अपनी शान तो रखनी ही चाहिए," हेनरीटा ने कहा, "वह सब अगर नहीं रहा, तो अब उनमें क्या देखा जा सकता है?"

"बस समझ लो कि कुछ भी नहीं," लार्ड वारबर्टन बोला, "तुम एक आलू नहीं लोगी?"

"मुझे ये यूरोपियन आलू अच्छे नहीं लगते। मैं तो तुममें और एक आम अमरीकन भले आदमी में फर्क ही नहीं कर सकती।"

"तुम मुझे वही समझकर बात करो," वारबर्टन बोला, "मुझे समझ नहीं आता कि बगैर आलुओं के तुम कैसे काम चला लेती हो। यहां तुम्हें खाने को और मिलता क्या होगा ?"

हेनरीटा पल-भर खामोश रही—कि कहीं वह आदमी उसे बना तो नहीं रहा।

"यहां आने के बाद से मुझे भूख ही बहुत कम लगती है," आखिर उसने कहा, "इसलिए मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। पर मैं तुम्हारे विरोध में हूं। मेरा ख्याल है मुझे यह बात तुम्हें बता देनी चाहिए।"

"मेरे विरोध में ?"

"हां। शायद पहले कभी ऐसी बात किसीने तुमसे नहीं कही होगी। मैं लार्ड नाम की संस्था का ही विरोध करती हूं। मेरा ख्याल है दुनिया इससे आगे निकल चुकी है—बहुत आगे।"

"ज़रूर विरोध करो। मैं खुद भी अपने को पसन्द नहीं करता। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं, मैं न होता, तो अपनी कितनी छीछालेदर करता। अच्छा है आदमी खामखाह के गुमान में न रहे।"

"तो तुम यह सब छोड़छाड़ क्यों नहीं देते ?" हेनरीटा ने पूछा।

"क्या चीज़ ?" लार्ड वारबर्टन ने उसके कठोर प्रश्न के उत्तर में कोमल-सा प्रश्न किया।

"यह लार्ड होना।"

"वह तो मैं बहुत ही कम हूं। तुम अमरीकन लोग हमेशा याद न दिलाते रहो, तो आदमी इसे बिलकुल भूल भी जाए। बहरहाल, जो थोड़ा-बहुत अंश बाकी है, उसे भी मैं शीघ्र ही छोड़ देना चाहता हूं।"

"मुझे यह देखकर खुशी होगी," हेनरीटा कुछ संजीदगी के साथ बोली।

"मैं उस समारोह पर तुम्हें बुलाऊंगा। सपर और डांस के लिए।"

"खैर, मैं सभी पक्ष देखना चाहती हूं," मिस स्टैकपोल बोली, "कोई वर्ग दूसरों से विशिष्ट हो, इसका मैं विरोध करती हूं।पर यह ज़रूर जानना चाहती हूं कि वे लोग अपने लिए कहते क्या हैं ?"

"बिलकुल कुछ नहीं। तुम देख ही रही हो।"

"मैं तुमसे कुछ और भी सुनना चाहती हूं," हेनरीटा कहती रही, "पर तुम मुझसे आंखें चुरा रहे हो। मुझे लगता है तुम मुझसे बचना चाहते हो।"

"नहीं, मैं तो इन कम्बख्त आलुओं के लिए ही उस तरफ देख रहा हूं।"

"अच्छा, तुम मुझे अपनी बहन के बारे में बताओ। मुझे उसके विषय में बात समझ नहीं आती। वह क्या एक 'लेडी' है ?"

"वह बहुत अच्छी लड़की है।"

"मुझे बात करने का तुम्हारा यह ढंग पसन्द नहीं। लगता है तुम विषय को बदलना चाहते हो। उसकी स्थिति क्या तुम्हारे बराबर की नहीं है ?"

"स्थिति हममें से किसीकी भी कुछ नहीं है। वह एक तरह से मुझसे अच्छी है क्योंकि उसके सिर पर मेरी तरह कोई झंझट नहीं है।"

"हां, उसे देखकर ऐसा नहीं लगता कि उसके सिर पर कोई झंझट है। मैं चाहती हूं कि मुझपर भी इतना ही कम झंझट हो। और चाहे कुछ भी कहा जाए, पर तुम्हारे यहां ऐसे लोग ज़रूर हैं जो खामोश रह सकते हैं।"

"कुल मिलाकर आदमी यहां ज़िन्दगी के बारे में सोचकर ज्यादा परेशान नहीं होता," लार्ड वारबर्टन बोला, "फिर हम लोग काफी जड़बुद्धि भी हैं। जब भी कोशिश करें तभी जड़बुद्धि हो सकते हैं।"

"मैं राय दूंगी कि तुम किसी और चीज़ के लिए कोशिश करो। तुम्हारी बहन इतनी अलग-सी दिखती है कि मुझे समझ ही नहीं आता मैं उससे क्या बात करूं। यह चांदी का क्रास एक तमगा है क्या ?"

"तमगा ?"

"ऊंचे वर्ग का चिह्न।"

लार्ड वारबर्टन की नज़र इधर-उधर भटक रही थी, पर इस बात पर वह हेनरीटा से आ मिली। "हां," उसने पल-भर रुककर कहा, "स्त्रियां इन चीज़ों को महत्त्व देती हैं। एक वाइकाउंट की बड़ी लड़की चांदी का क्रास पहनती है।" यह उसका कोमल-सा प्रतिशोध था—अमरीका में अपनी सादगी का उसे जो फल भोगना पड़ा था, उसका प्रतिशोध। लंच के बाद उसने इज़ाबेल से गैलरी में चलकर तसवीरें देखने का प्रस्ताव किया। यह जानते हुए भी कि वह पहले बीस बार तसवीरें देख चुका है, इज़ाबेल ने उसके इस बहाने को बिना किसी नुक्ताचीनी के

स्वीकार कर लिया। वह मन में बहुत हल्की महसूस कर रही थी—पत्र लिखने के बाद से उसकी आत्मा से जैसे एक बोझ हट गया था। लार्ड वारबर्टन चुपचाप तसवीरें देखता हुआ धीरे-धीरे गैलरी के दूसरे सिरे तक चलता गया। फिर एका-एक उसने कहा, "मैंने नहीं सोचा था कि तुम मुझे उस तरह का पत्र लिखोगी।"

"और कोई तरीका नहीं था, लार्ड वारबर्टन," इज़ाबेल बोली, "तुम इसपर विश्वास करने की कोशिश करो।"

"मैं विश्वास कर सकता, तो तुम्हें और तंग न करता। पर आदमी सिर्फ चाहने से ही तो विश्वास नहीं कर सकता। मैं कहना चाहूंगा कि बात मेरी समझ में नहीं आ रही। तुम मुझे पसन्द न करतीं, तो बात मेरी समझ में आ सकती थी। अच्छी तरह समझ में आ सकती थी। पर जब तुम मानती हो कि···।"

"मैंने क्या माना है ?" इज़ाबेल कुछ फीकी पड़कर बीच में ही बोल उठी।

"कि तुम मुझे अच्छा आदमी समझती हो—नहीं ?" इज़ाबेल को चुप पाकर वह कहता रहा, "तुम्हारे पास मना करने का कोई कारण नहीं है। इससे मुझे लगता है कि तुम मेरे साथ अन्याय कर रही हो।"

"मेरे पास कारण है, लार्ड वारबर्टन," इज़ाबेल ने जिस स्वर में कहा, उससे उसका दिल मसल गया।

"तो मैं वह कारण जानना चाहूंगा।"

"वह मैं फिर कभी बताऊंगी, तब जब बताने को मेरे पास ज्यादा कुछ होगा।"

"तो क्षमा करना, मैं तब तक इसपर सन्देह करता रहूंगा।"

"मुझे तुम्हारी बात से बहुत दुःख हो रहा है," इज़ाबेल ने कहा।

"मुझे इसका अफसोस नहीं है। इससे शायद तुम्हें पता चल सके कि मैं क्या महसूस करता हूं। तुम मेरे एक सवाल का जवाब दोगी ?" इज़ाबेल ने मुंह से स्वीकृति नहीं दी, पर उसकी आंखों के भाव से प्रोत्साहित होकर उसने बात जारी रखी, "क्या तुम किसी और को ज्यादा पसन्द करती हो ?"

"मैं इस सवाल का जवाब नहीं देना चाहूंगीं।"

"इसका मतलब है कि बात सही है," लार्ड वारबर्टन कुछ कटुता के साथ बुदबुदाया।

उस कटुता से प्रभावित होकर इज़ाबेल बोल उठी, "तुम गलती पर हो। यह

बात सही नहीं है।"

वारबर्टन एकाएक मुसीबत में फंसे आदमी की तरह कुछ उद्धत भाव से, बेंच पर बैठ गया, और कुहनियां घुटनों पर टिकाए फर्श की तरफ ताकने लगा। "मुझे यह जानकर खुशी नहीं हुई," आखिर वह पीछे टेक लगाकर बोला, "क्योंकि वह एक बहाना हो सकता था।"

इज़ाबेल की भौंहें आश्चर्य से तन गईं। "बहाना ? मुझे बहाना बनाने की ज़रूरत है क्या ?"

उसने इस सवाल का जवाब नहीं दिया। उसके दिमाग में एक और विचार उभर आया था। "तो क्या तुम मेरे राजनीतिक विचारों के कारण ऐसा सोचती हो ? तुम्हें मेरे विचार बहुत उग्र जान पड़ते हैं ?"

"मुझे तुम्हारे राजनीतिक विचारों पर कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि वे मेरी समझ में ही नहीं आते।"

"तुम्हें मेरे विचारों से कोई वास्ता नहीं है !" वह तीखे स्वर में कहता उठ खड़ा हुआ, "उनसे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता।"

इज़ाबेल गैलरी के दूसरे छोर तक चली गई। अब वारबर्टन की नज़र आ रही थी उसकी सुन्दर पीठ, उसका हल्का इकहरा बदन, सिर झुका होने से उसकी गोरी गरदन की लम्बाई और उसकी घनी स्याह लटें। इज़ाबेल जैसे एक छोटी-सी तसवीर को पास से देखने के लिए रुक गई। उसकी चाल-ढाल में ऐसा खुलापन और ताज़गी थी कि उसकी लचक ही जैसे उस आदमी का उपहास उड़ा रही थी। पर उसकी आंखें देख कुछ भी नहीं रही थीं क्योंकि एकाएक वे आंसुओं से रुंध गई थीं। पल-भर में ही वारबर्टन उसके पास आ पहुंचा, पर तब तक उसने अपनी आंखें पोंछ ली थीं। फिर भी जब उसने वारबर्टन की तरफ मुंह फेरा, तो उसका चेहरा पीला पड़ गया था और आंखों का भाव विचित्र-सा हो रहा था। "जो कारण मैं नहीं बताना चाहती थी, अब सोचती हूं, बता ही दूं। वह कारण यह है कि मैं अपने भाग्य से बच नहीं सकती।"

"अपने भाग्य से ?"

"तुमसे विवाह करना उससे बचने की कोशिश करना होगा।"

"मैं नहीं समझ पा रहा। और चीज़ों के साथ वह भी तुम्हारा भाग्य क्यों नहीं हो सकता ?"

"क्योंकि वह नहीं है," इज़ाबेल खालिस स्त्रियों के-से ढंग से बोली, "मुझे पता है, नहीं है। छोड़ देना मेरा भाग्य नहीं है—हो ही नहीं सकता।"

लार्ड वारबर्टन दोनों आंखों में प्रश्न-चिह्न लिए उसे ताकता रहा। "मुझसे विवाह करने को तुम 'छोड़ देना' कहती हो ?"

"साधारण अर्थ में नहीं। उस अर्थ में तो उसमें बहुत कुछ प्राप्त करना ही है। पर उसका अर्थ दूसरे अवसर छोड़ देना भी है।"

"दूसरे किस चीज़ के अवसर ?"

"मेरा मतलब विवाह के अवसरों से नहीं है," इज़ाबेल बोली। उसके चेहरे की रंगत लौट रही थी। तभी रुककर भौंहें काफी तिरछी किए वह नीचे देखने लगी, जैसे कि अपना अर्थ स्पष्ट कर सकना उसे असम्भव लग रहा हो।

"मेरा यह कहना आत्मश्लाघा नहीं कि जितना तुम खोओगी, उससे ज्यादा प्राप्त करोगी," लार्ड वारबर्टन ने कहा।

"मैं दुःख उठाने से बच नहीं सकती," इज़ाबेल बोली, "तुमसे विवाह करने का अर्थ होगा बचने की कोशिश करना।"

"तुम न भी कोशिश करो, तो बच जाओगी। इतना तो मुझे निष्पक्ष होकर स्वीकार करना ही चाहिए।" वारबर्टन ने उत्सुक हंसी के साथ कहा।

"मुझे नहीं बचना चाहिए। मैं नहीं बच सकती," इज़ाबेल ऊंचे स्वर में बोली।

"खैर, अगर तुम दुःख उठाने पर ही तुली हो, तो मुझे इसकी कोई वजह नज़र नहीं आती कि तुम मुझे क्यों दुःखी बना रही हो। दुःखी जीवन में तुम्हें चाहे आकर्षण लगता हो, मुझे नहीं लगता।"

"मैं दुःख उठाने पर तुली नहीं हूं," इज़ाबेल बोली, "मैं हमेशा दिल से चाहती रही हूं कि सुखी रहूं और अक्सर विश्वास करती हूं ऐसा होना ही ठीक है। लोगों से मैं यह कहती भी रही हूं, तुम उनसे पूछ सकते हो। पर जब-तब मुझे लगने लगता है कि मैं कभी असाधारण रूप से सुखी नहीं रह सकती—मुड़कर या अपने को अलग करके तो बिलकुल ही नहीं।"

"किस चीज़ से अपने को अलग करके ?"

"ज़िन्दगी से। खतरा उठाने के सामान्य अवसरों से। आम लोग जो कुछ सहते-भोगते हैं, उस सबसे।"

लार्ड वारबर्टन के चेहरे पर जो मुस्कराहट आई, उसमें आशा झलक रही थी। "देखो, मिस आर्चर," उसने सहानुभूतिपूर्ण व्यग्रता के साथ कहना शुरू किया, "मैं तुम्हें किन्हीं भी अवसरों या खतरों से मुक्ति का आश्वासन नहीं दे रहा, हालांकि चाहता हूं दे सकता। विश्वास करो मैं ऐसा ही चाहता हूं। मैं चीन का सम्राट् नहीं हूं। मैं तुम्हारे लिए केवल इतना ही कर सकता हूं जिससे तुम सामान्य ज़िन्दगी थोड़ा आराम के साथ जी सको। सामान्य ज़िदगी ? मुझे सामान्य ज़िन्दगी से प्यार है। तुम मेरे साथ बंधना स्वीकार कर लो, तो मैं वचन देता हूं कि उस ज़िन्दगी से तुम्हारा जी भर दूंगा। तुम्हें किसी चीज़ से अपने को अलग नहीं करना होगा। अपनी मित्र मिस स्टैकपोल से भी नहीं।"

"वह इस चीज़ से कभी सहमत नहीं होगी," इस अवान्तर विषय का लाभ उठाते हुए इज़ाबेल हल्की मुस्कराहट के साथ बोली। साथ ही मन-ही-मन इसके लिए उसने अपनी काफी भर्त्सना भी की।

"क्या हम मिस स्टैकपोल की बात कर रहे हैं ?" लार्ड वारबर्टन अधीर होकर बोला, "मैंने और किसीको ऐसे ख्याली आधार पर बातों का निर्णय करते नहीं देखा।"

"मुझे लगता है यह तुम मेरी बात कर रहे हो," इज़ाबेल ने विनम्रता के साथ कहा। फिर वह वहां से मुड़ पड़ी क्योंकि मिस मौलिन्यू हेनरीटा और रैल्फ के साथ गैलरी में आ रही थी।

लार्ड वारबर्टन की बहन ने कुछ भीरुता के साथ उससे कहा कि चाय पर कुछ मेहमान आने वाले हैं, इसलिए उसे समय पर घर वापस पहुंच जाना चाहिए। पर वारबर्टन ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया—मन दूसरी ओर होने से उसने शायद बात सुनी ही नहीं। मिस मौलिन्यू इस तरह उत्तर की प्रतीक्षा करती रही जैसे एक राजा के सामने उसकी परिचारिका खड़ी हो।

"यह भी कोई बात है मिस मौलिन्यू ?" हेनरीटा स्टैकपोल बोली, "मुझे जाना हो, तो इसे मेरे साथ चलना पड़ेगा। मैं अपने भाई से जो भी करने को कहूं, वह उसे करना पड़ेगा।"

"ओह, वारबर्टन से जो कहो, वह कर देता है," मिस मौलिन्यू तुरन्त संकोच-भरी हंसी के साथ बोली। फिर रैल्फ की तरफ मुड़कर उसने कहा, "तुम लोगों के यहां कितनी ढेर सारी तसवीरें हैं।"

"साथ-साथ लगी हैं, इसलिए ज़्यादा लगती हैं," रैल्फ बोला, "पर लगाने का यह ढंग अच्छा नहीं है।"

"मुझे तो बहुत अच्छा लग रहा है। मैं चाहती हूं हमारे यहां लौकले में भी एक ऐसी गैलरी होती।" मिस मौलिन्यू उस बात से नहीं हटी, उसे जैसे डर था कि मिस स्टैकपोल फिर से उससे अपनी बात न करने लगे। हेनरीटा के व्यक्तित्व से वह एकसाथ आकर्षित भी थी और आतंकित भी।

"हां, घर में तसवीरें हों, तो अच्छा लगता है," रैल्फ बोला। उसे पता था कि उस लड़की को किस तरह की बात पसन्द आएगी।

"बाहर वारिश हो रही हो, तब तो बहुत ही अच्छा लगता है," मिस मौलिन्यू ने बात जारी रखी, "इन दिनों काफी बारिश हुई है।"

"मुझे अफसोस है लार्ड वारबर्टन, कि तुम वापस जा रहे हो," हेनरीटा ने कहा, "मैं तुमसे अभी बहुत कुछ जानना चाहती थी।"

"मैं अभी जा नहीं रहा," लार्ड वारबर्टन ने उत्तर दिया।

"तुम्हारी बहन कह रही है, तो तुम्हें जाना ही चाहिए। अमरीका में सब पुरुष स्त्रियों के आदेश का पालन करते हैं।"

"घर पर कुछ लोग चाय पीने आ रहे हैं," मिस मौलिन्यू अपने भाई की ओर देखती हुई बोली।

"तो ठीक है, माई डियर। हम लोग अभी चल रहे हैं।"

"मेरा ख्याल था तुम जाने से मना करोगे," हेनरीटा चिल्लाकर बोली, "मैं देखना चाहती थी कि मिस मौलिन्यू फिर क्या करती है।"

"मैं कभी कुछ न करती," वह लड़की बोली।

'तुम्हारी स्थिति में तो शायद आदमी के लिए बस ज़िन्दा होना ही काफी है," मिस स्टैकपोल ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें तुम्हारे घर पर भी देखना चाहती हूं।"

"तुम फिर कभी लौकले आओ न," मिस मौलिन्यू ने हेनरीटा की बात को नज़र-अन्दाज़ करके बहुत मीठे स्वर में इज़ाबेल से कहा।

इज़ाबेल क्षण-भर उसकी खामोश आंखों में देखती रही। उस क्षण में उसे उन आंखों की भूरी गहराई में वह सब प्रतिबिम्बित दिखाई दे गया जो लार्ड वारबर्टन को अस्वीकार करने में उसने अस्वीकार किया था—शान्ति, सद्भाव, प्रतिष्ठा, अधिकार, गहरी निःशंकता और अत्यधिक अलगाव। उसने मिस मौलिन्यू को चूम

लिया और कहा, "मुझे लगता है अब मैं कभी वहां नहीं आ सकूंगी।"

"कभी नहीं ?"

"मैं अब यहां से जाने ही वाली हूं।"

"यह बहुत अफसोस की बात है," मिस मौलिन्यू बोली, "यह तुम्हारी बहुत ज्यादती है।"

लार्ड वारबर्टन इस बीच उन्हें देखता रहा। फिर मुड़कर एक तसवीर की तरफ देखने लगा। रैल्फ हाथ जेबों में डाले, और तसवीर के आगे की रेलिंग से टेक लगाए, पल-भर से उसे ताक रहा था।

"मैं तुमसे तुम्हारे घर पर मिलना चाहूंगी," हेनरीटा अब लार्ड वारबर्टन के पास आ गई, "मैं घण्टा-भर तुमसे बात करना चाहती हूं। मुझे तुमसे कई सवाल पूछने हैं।"

"मुझे वहां तुमसे मिलकर खुशी होगी," लौकले के मालिक ने कहा, "पर मुझे विश्वास है कि तुम्हारे बहुत-से सवालों के जवाब मैं न दे सकूंगा। तो तुम कब आ रही हो ?"

"जब भी मिस आर्चर ले चले। हम लोग लन्दन जा रही हैं, पर उससे पहले ही हम तुम्हारे यहां आएंगी। मैं तुमसे कुछ-न-कुछ सामग्री लेकर ही रहूंगी।"

"अगर तुम्हारे आने की बात मिस आर्चर पर निर्भर करती है, तो तुम्हें कुछ भी सामग्री नहीं मिलेगी। वह लौकले नहीं आएगी। उसे वह जगह पसन्द नहीं है।"

"वह मुझसे तो कह रही थी कि जगह बहुत सुन्दर है," हेनरीटा बोली।

लार्ड वारबर्टन पल-भर संकोच में रहा। फिर उसने कहा, "फिर भी वह आएगी नहीं। बेहतर होगा कि तुम अकेली ही आओ।"

हेनरीटा की आंखें फैल गईं और वह सीधी होती हुई कुछ तीखे स्वर में बोली, "यह बात तुम एक अंग्रेज महिला से भी कह सकते हो ?"

लार्ड वारबर्टन उसे ताकता रहा, "अगर वह मुझे काफी पसन्द हो, तो जरूर कह सकता हूं।"

"तो तुम ध्यान रखोगे कि वह तुम्हें काफी पसन्द न हो। मिस आर्चर अगर दूसरी बार तुम्हारे यहां नहीं जाना चाहती, तो इसका मतलब यही है कि वह मुझे वहां नहीं ले जाना चाहती। जो वह सोचती है मैं जानती हूं—शायद तुम भी वही सोचते हो—कि मुझे व्यक्तियों पर नहीं लिखना चाहिए।" बात लार्ड वारबर्टन

की समझ में नहीं आई। मिस स्टैकपोल के कार्य का उसे परिचय नहीं दिया गया था, इसलिए वह उस संकेत को नहीं पकड़ सका। "मिस आर्चर ने तुम्हें चेतावनी दे दी होगी," हेनरीटा ने अपनी बात जारी रखी।

"अरे नहीं," लार्ड वारबर्टन ढिठाई से बोला, "ऐसे किसी गम्भीर विषय पर हममें बात नहीं हुई।"

"खैर, तुम बहुत सावधानी बरतते हो। शायद यही तुम्हारा स्वभाव है। मैं यही चीज़ देखना चाहती थी। मिस मौलिन्यू भी ऐसी है—कोई भी बात वह निश्चित रूप से नहीं कहती। तुम्हें तो ज़रूर ही चेतावनी दी गई है," हेनरीटा अब उस लड़की को सम्बोधित करके बोली, "हालांकि तुम्हें चेतावनी देने की कोई ज़रूरत नहीं थी।"

"नहीं, ऐसा तो नहीं," मिस मौलिन्यू ने अस्पष्ट-सी बात कही।

"मिस स्टैकपोल लोगों की बातों के नोट्स लेती है," रैल्फ ने जैसे सहारा देते हुए व्याख्या की, "यह बहुत बड़ी व्यंग्यकार है। यह हम लोगों के अन्दर झांककर देख सकती है और हमें बहुत कुछ कहने के लिए उकसा सकती है।"

"मैं कह सकती हूं कि इतनी बुरी सामग्री एक जगह मैंने पहले कभी नहीं देखा।" हेनरीटा ने इज़ाबेल, लार्ड वारबर्टन, उसकी बहन और फिर रैल्फ की ओर देखते हुए घोषणा की, "तुम सबको जाने क्या हुआ है। सब-के-सब ऐसे मुंह लटकाए हो जैसे कहीं से कोई बुरा-सा तार आ गया हो।"

"तुम सचमुच लोगों के अन्दर झांककर देख लेती हो मिस स्टैकपोल," रैल्फ ने धीमे स्वर में कहा, और सबके साथ गैलरी से बाहर आते हुए जैसे समझदारी के ढंग से हौले से सिर हिलाया, "हम सबको ज़रूर कुछ-न-कुछ हुआ है।"

इज़ाबेल इन दोनों के पीछे थी। मिस मौलिन्यू को वह बहुत पसन्द थी, इसलिए पालिश किए फर्श पर वह उसकी बांह पकड़े चल रही थी। लार्ड वारबर्टन हाथ पीछे किए और आंखें झुकाए दूसरी तरफ चल रहा था। कुछ क्षण वह खामोश रहा। फिर उसने पूछा, "तुम सचमुच लन्दन जा रही हो?"

"मेरा ख्याल है उसका सब इन्तजाम हो चुका है।"

"और वापस कब आओगी?"

"थोड़े दिन बाद। पर बहुत कम अरसे के लिए। फिर मैं अपनी आंटी के साथ पेरिस जा रही हूं।"

"तो मैं तुमसे कब मिल सकूंगा ?"

"अभी तो काफी दिन मुलाकात नहीं होगी," इज़ाबेल बोली, "पर उम्मीद है कभी किसी दिन तो होगी ही।"

वारबर्टन ने चुपचाप कुछ डग भरे। फिर उसने रुककर अपना हाथ आगे बढ़ा दिया, "गुड बाई।"

"गुड बाई," इज़ाबेल ने कहा।

मिस मौलिन्यू ने फिर उसे चूमा और वे दोनों विदा लेकर चले गए। उसके बाद इज़ाबेल, हेनरीटा और रैल्फ के पास न जाकर अपने कमरे में चली गई। डिनर से पहले सैलून की तरफ जाते हुए मिसेज़ टाउशेट को वह वहीं कमरे में मिली। "मैंने सोचा तुम्हें बता दूं," उन्होंने उससे कहा, "कि तुम्हारे अंकल ने लार्ड वारबर्टन के साथ सम्बन्ध को लेकर तुम्हारी सब बात मुझे बता दी है।"

इज़ाबेल सोचने लगी, "सम्बन्ध को लेकर ? पर सम्बन्ध तो कोई है ही नहीं। इसीका तो मुझे आश्चर्य है। वह मुश्किल से कुल तीन-चार बार मुझसे मिला है।"

"तुमने मुझे न बताकर यह बात अपने अंकल को क्यों बताई ?" मिसेज़ टाउशेट ने तटस्थ भाव से पूछा।

लड़की फिर संकोच में पड़ गई। "क्योंकि वे लार्ड वारबर्टन को ज़्यादा जानते हैं।"

"पर तुम्हें मैं बेहतर जानती हूं।"

"यह मैं निश्चय के साथ नहीं कह सकती," कहती हुई इज़ाबेल मुस्कराई।

"खैर, कह तो मैं भी नहीं सकती। खास तौर से जब तुम इस तरह गर्व के साथ मुझे देख रही हो। लगता है तुम अपने से बहुत खुश हो जैसे कि तुमने कोई बड़ा पुरस्कार मार लिया हो। तुमने लार्ड वारबर्टन जैसे व्यक्ति का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया, इसका मतलब है कि तुम इससे बेहतर प्रस्ताव की आशा करती हो।"

"ओह, अंकल ने मुझसे ऐसी बात नहीं कही," इज़ाबेल ऊंचे स्वर में बोली। उसके होंठों पर मुस्कराहट अब भी थी।

१५

तय हुआ था कि दोनों नवयुवतियां रैल्फ के संरक्षण में लन्दन जाएंगी हालांकि मिसेज़ टाउशेट इस योजना के पक्ष में नहीं थीं। उन्होंने कहा कि मिस स्टैकपोल बस ऐसी ही योजना का सुझाव दे सकती थी और पूछा कि क्या वह उन सबको ले जाकर अपने मनपसन्द बोर्डिंग हाउस में ठहराएगी।

"वह कहीं भी हमें ले चले, मुझे इसकी परवाह नहीं—बस वहां कुछ स्थानीय रंगत होनी चाहिए," इज़ाबेल बोली, "हम लोग उसीके लिए लन्दन जा रही हैं।"

"एक अंग्रेज़ लार्ड का प्रस्ताव ठुकराने के बाद एक लड़की कुछ भी कर सकती है," मिसेज़ टाउशेट बोली, "उस बड़ी बात के बाद इन छोटी-छोटी बातों की तरफ ध्यान देना भी गलत है।"

"क्या आप चाहती थीं कि मैं लार्ड वारबर्टन से शादी कर लेती ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"हां, मैं ज़रूर चाहती थी।"

"मेरा ख्याल था कि आप अंग्रेज़ों से काफी नफरत करती हैं।"

"ज़रूर नफरत करती हूं। यह और भी वजह है कि उनका फायदा उठाया जाए।"

"विवाह के संबंध में आपकी यह धारणा है ?" साथ इज़ाबेल ने जोड़ा कि उसे नहीं लगता उसकी आंटी ने मिस्टर टाउशेट का ज़्यादा फायदा उठाया है।"

"तुम्हारा अंकल अंग्रेज़ लार्ड नहीं है—हालांकि अगर वह होता तो भी मैं फ्लोरेंस में अलग घर लेकर ही रहती।"

"आपका ख्याल है कि जैसी मैं हूं, लार्ड वारबर्टन मुझे उससे बेहतर बना सकता था ?" लड़की ने कुछ सजीवता के साथ पूछा, "मेरा यह मतलब नहीं कि मैं इससे बेहतर हो ही नहीं सकती। मेरा मतलब—मेरा मतलब है कि मैं लार्ड वारबर्टन से इतना प्यार नहीं करती कि उससे शादी कर लूं।"

"तब तुमने उसे इन्कार करके ठीक ही किया है," मिसेज़ टाउशेट अपनी सबसे हल्की आवाज़ में बोली, "पर अगली बार कोई तुमसे प्रस्ताव करे, तो

मुझे आशा है कि तुम अपनी कसौटी पर पूरी उतर सकोगी।"

"अगला प्रस्ताव जब आए, तभी उसके बारे में बात करनी चाहिए। चाहती हूं कि फिलहाल और प्रस्ताव न आएं। मुझे इनसे बहुत कोफ्त होती है।"

"तुम स्थायी रूप से बोहीमियन रंग-ढंग अपनाए रखोगी, तो कोई प्रस्ताव आएगा भी नहीं। पर मैं रैल्फ को वचन दे चुकी हूं कि मैं आलोचना नहीं करूंगी।"

"मैं वही करूंगी जो रैल्फ को ठीक लगेगा," इज़ाबेल ने उत्तर दिया, "रैल्फ में मेरा अटूट विश्वास है।"

"इसके लिए उसकी मां तुम्हारे प्रति बहुत आभारी है!" कहकर मिसेज़ टाउशेट रूखी हंसी हंस दीं।

"मेरा ख्याल है उसे आभारी होना ही चाहिए," इज़ाबेल बात को मुंह में रोक नहीं सकी।

रैल्फ ने इज़ाबेल को विश्वास दिलाया था कि उन तीनों के सैर के लिए लन्दन जाने में कोई बुराई नहीं है, पर मिसेज़ टाउशेट की धारणा इससे अलग थी। अन्य बहुत-सी स्त्रियों की तरह जो बहुत दिन यूरोप में रहकर इन मामलों में अपने देश के आचार-विचार को भूल जाती हैं, मिसेज़ टाउशेट भी अब प्रतिक्रिया-स्वरूप यह सोचने लगी थीं कि अमरीका में युवा लोगों को दी जाने वाली स्वतन्त्रता गलत है। इस सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण कुछ ज़्यादा ही अनुदार हो गया था। रैल्फ उन लड़कियों के साथ लन्दन चला गया और वहां पिकेडिली के पास की एक सड़क पर उसने उन्हें एक शान्त-सी सराय में जगह ले दी। पहले उसका इरादा था कि उन्हें विंचेस्टर स्क्वेयर में अपने पिता के मकान में ले जाए। वह एक उदास-सी इमारत थी जो उन दिनों खामोशी और मोटे हालत के आवरण में ढकी रहती थी। पर बाद में यह सोचकर कि खानसामा गार्डन-कोर्ट में है, इसलिए वहां खाने का कोई इन्तज़ाम नहीं होगा, उसने उन्हें प्रैट्स होटल में ठहरा दिया। खुद वह विंचेस्टर स्क्वेयर में ही रहा। वहां उसकी एक अपनी प्रिय 'गुफा' थी और वह ठण्डे बावर्चीखाने से कहीं अधिक गहरे आतंकों से परिचित था। पर सुबह उठकर ही वह अपनी साथिनों से मिलने चला जाता और प्रैट्स होटल के खान-पान का पूरा फायदा उठाता। वहां मिस्टर प्रैट स्वयं, उभरी हुई सफेद बास्कट पहने, उन लोगों का खाना लगाता था। रैल्फ नाश्ते के बाद वहां पहुंचता और वे तीनों उस दिन के मनोरंजन की योजना बनाते। क्योंकि

सितम्बर महीने में लन्दन शहर, पहले की गहमागहमी के कुछ निशानों को छोड़कर, लगभग सुनसान ही रहता है, इसलिए रैल्फ को, जो कभी बात कहने में संकोच नहीं करता था, अपनी कज़िन को बताना पड़ा कि उन दिनों लन्दन में कोई प्राणी नहीं है। मिस स्टैकपोल यह सुनकर चिढ़ उठी।

"तुम्हारा मतलब है कि बड़े लोग इन दिनों यहां नहीं हैं," वह बोली, "पर इससे साबित होता है कि वे लोग बिलकुल ही नदारद हो जाएं, तो भी किसीको उनकी कमी महसूस नहीं होगी। मुझे तो शहर पूरा भरा दिखाई देता है। हां, तीस-चालीस लाख आदमियों को छोड़कर और कोई यहां नहीं हैं। इन्हें तुम लोग क्या कहते हो—निम्न मध्यवर्ग ? ये लोग तो सिर्फ लन्दन की आबादी हैं जिसका कोई महत्त्व नहीं है।"

रैल्फ ने इसपर घोषणा की कि बड़े लोगों के वहां न होने से जो भी खला है, वह उसके लिए मिस स्टैकपोल की उपस्थिति से भर जाता है—और फिर इस समय उस जितना सन्तुष्ट आदमी दुनिया में कोई नहीं है। इसमें उसने झूठ कुछ नहीं कहा क्योंकि उस बड़े से और आधे खाली शहर में वे सितम्बर के दिन अपने में एक ऐसा आकर्षण लिए थे जैसे धूल-भरे कपड़े में एक हीरा लिपटा हो। दिन के कई घण्टे उन उत्सुक लड़कियों के साथ बिताने के बाद रैल्फ विंचेस्टर स्क्वेयर के अपने खाली घर में लौट जाता। वहां अन्दर दाखिल होकर वह हाल की मेज़ से एक मोमबत्ती उठाता और बड़े-से अंधेरे डाइनिंग रूम में चला जाता जहां उस बत्ती के सिवा और कोई रोशनी नहीं होती थी। उस चौराहे पर खामोशी छाई रहती, घर में भी खामोशी छाई रहती। हवा के लिए वह खिड़की ऊंची उठाता, तो नीचे से कान्स्टेबल के जूतों की चरमर सुनाई देती। उस खाली घर में उसके अपने कदमों की भी आवाज़ काफी ऊंची सुनाई देती। उस खाली घर में उसके अपने कदमों की भी आवाज़ काफी ऊंची सुनाई देती। क्योंकि कुछ गालीचे उठा दिए गए थे, इसलिए वह चलता-फिरता, तो एक उदास-सी प्रतिध्वनि वहां गूंजने लगती। वह किसी आराम-कुर्सी पर बैठ जाता। मोमबत्ती की नन्ही-सी रोशनी में डाइनिंग टेबल यहां वहां से चमक जाती। दीवार पर लगी भूरी तस्वीरें अस्पष्ट और असम्बद्ध-सी नज़र आतीं। पहले की दावतों और मिट चुकी टेबल-टॉक के प्रेत अब भी वहां मंडराते जान पड़ते। यह अतिप्राकृतिक स्पर्श शायद इसलिए महसूस होता कि देर-देर तक—सोने का समय हो जाने के बहुत बाद तक—वहां कुर्सी

पर बैठे हुए उसकी कल्पना तरह-तरह की उड़ानें भरती रहती। वह बस बैठा रहता—करता कुछ नहीं, अखबार भी नहीं पढ़ता। उसके कुछ न करने की बात मैं फिर से दोहराऊंगा, हलांकि वह उस समय इज़ाबेल के बारे में सोचता रहता था। उसका इज़ाबेल के बारे में सोचना एक बेकार-सा काम था जिसका किसीको कोई लाभ नहीं था। अपनी कज़िन उसे पहले उतनी सुन्दर नहीं लगी थी जितनी इन दिनों टूरिस्टों की तरह उस बड़े शहर की उथली और गहरी हलचलों का जायज़ा लेते समय लग रही थी। इज़ाबेल में अपनी अवधारणाएं, निष्कर्ष और भावनाएं थीं—वह अगर स्थानीय रंगत की तलाश में आई थी, तो वह रंगत उसे हर जगह मिल रही थी। वह इज़ाबेल के हर सवाल का जवाब नहीं दे पाता था, और ऐतिहासिक कारणों तथा उनके सामाजिक परिणामों को लेकर जो सिद्धान्त वह सामने रखती थी, उन्हें स्वीकार या अस्वीकार करना उसे एक-सा मुश्किल जान पड़ता था। वे लोग एक से अधिक बार ब्रिटिश म्यूज़ियम में गए, एक सुबह उन्होंने एबे में बिताई और पेनी-स्टीमर में बैठकर टॉवर तक गए। उन्होंने पब्लिक तथा प्राइवेट संग्रहालयों में जाकर तसवीरें देखीं और कितनी ही बार केंसिंग्टन गार्डन के पेड़ों के नीचे बैठे। हेनरीटा इन जगहों को देखते अघाती नहीं थी और उतनी ज़्यादा आलोचना भी नहीं करती थी जितनी कि रैल्फ को आशा थी। पर मिस स्टैकपोल को कई जगह निराशा होती थी, क्योंकि वह हर बार अमरीका की नागरिक दृष्टि से वहां की विशेषताओं को याद करके लन्दन को उनकी तुलना में छोटा पाती थी। पर वहां के जर्जर गौरव का वह पूरा लाभ उठा रही थी—बस कभी-कभी एक उसांस भर लेती थी, या उखड़े-से ढंग से कह देती थी, "खैर !"—जिससे बात आगे न बढ़कर वहीं समाप्त हो रहती थी। सचाई यह थी कि वह उन दिनों अपने 'फार्म' में नहीं थी। "मुझे निर्जीव पदार्थों से कोई सहानुभूति नहीं है", उसने नेशनल गैलरी में इज़ाबेल से कहा, वह शिकायत करती रही कि वहां की अन्दरूनी ज़िन्दगी की कुछ विशेष झलक उसे देखने को नहीं मिली। उसे आशा थी कि वह ग्रेटब्रिटेन के जीनियसों और विख्यात व्यक्तियों को डिनर-पार्टियों पर मिल सकेगी—जबकि उसे देखने को मिल रहे थे सिर्फ 'एसीरियन बुल' और टर्नर के लैंडस्केप।

"तुम्हारे यहां के प्रसिद्ध व्यक्ति—बुद्धिजीवी स्त्रियां और पुरुष कहां हैं?" त्राफालगर स्क्वेयर में खड़े-खड़े उसने रैल्फ से पूछा जैसे कि खास उस जगह पर

कुछ-एक ऐसे लोगों को तो होना ही चाहिए था। "यह खम्भे के ऊपर उन्हीं में से एक है न—क्या नाम बताया था तुमने, लार्ड नेल्सन? यह भी एक लार्ड था? वह क्या वैसे कम ऊंचा था जो उसे हवा में सौ फुट की ऊंचाई पर खड़ा करना पड़ा? यह सब तो अतीत है—मुझे अतीत से मतलब नहीं है। मैं यहां की आज की कुछ-एक प्रतिभाओं से परिचित होना चाहती हूं। भविष्य की मैं नहीं कहूंगी क्योंकि तुम लोगों के भविष्य में मेरा ज़्यादा विश्वास नहीं है।" बेचारे रैल्फ का वहां की प्रतिभाओं से बहुत कम परिचय था और उसने कभी किसी विख्यात व्यक्ति के बटन होल में फूल नहीं लगाया था। इससे मिस स्टैकपोल को लगा कि उस आदमी में ज़रा भी उद्यमशीलता नहीं है। मैं अपने देश में होती, तो जिस किसीके भी पास पहुंचकर उससे कहती कि मैंने उसका बहुत नाम सुना है और खुद उसे जानने के लिए उससे मिलने आई हूं। पर तुम्हारी बातों से लगता है कि यहां ऐसा रिवाज नहीं है। तुम्हारे यहां बेकार रिवाज बहुत-से हैं, पर ऐसा रिवाज कोई नहीं है जिससे आदमी को कुछ मदद मिल सके। हम लोग निश्चित रूप से तुम लोगों से आगे हैं। मुझे लगता है कि यहां के सामाजिक जीवन को देखने का विचार मुझे बिलकुल छोड़ देना पड़ेगा।" हालांकि हेनरीटा अपनी गाइडबुक और पेंसिल साथ लिए रही, और इण्टरव्यूअर को उसने वहां से टॉवर के सम्बन्ध में एक पत्र भी भेजा (जिसमें उसने लेडी जेन ग्रे को दी गई फांसी का ज़िक्र किया), फिर भी उसे लगता रहा कि वह अपना वहां का मिशन पूरा नहीं कर पा रही।

गार्डनकोर्ट से चलने से पहले की घटना ने इज़ाबेल के मन पर पीड़ा का एक चिह्न छोड़ दिया था। जब कभी लॉर्ड वारबर्टन की विस्मित सांस एक लहर की तरह उसके मन पर फिर आती, तो वह अपने सिर को ढांपकर उस लहर को गुज़र जाने देती। यह निश्चित था कि जो कुछ उसने किया, उसके अलावा वह और कुछ कर ही नहीं सकती थी। पर वह कलाबाजी खाने की तरह एक अकोमल-सा व्यवहार रहा था जिसके लिए वह अपने को श्रेय नहीं दे सकती थी। पर इस त्रुटिपूर्ण गर्व में उसकी स्वतन्त्रता की अनुभूति मिली थी जो उस बड़े शहर में अपने असमशील साथियों के साथ घूमते हुए विचित्र रूपों में प्रकट होने लगती थी। केंसिग्टन गार्डन में घूमते हुए वह घास पर खेलते बच्चों को (खासतौर से गरीब किस्म के बच्चों को) रोक लेती और उनसे उनके नाम पूछकर उन्हें छः-छः पेंस दे देती। अगर वे सुन्दर होते, तो उन्हें चूम भी लेती। रैल्फ इस विचित्र उदारता को ध्यान

से देखता—उसकी हर चीज़ को ध्यान से देखता। एक शाम रैल्फ ने दोनों लड़कियों को वक्त बिताने के लिए विन्चेस्टर स्क्वेयर में चाय पर बुलाया, और जहां तक बन पड़ा, उस अवसर के लिए घर को व्यवस्थित कर दिया। उनसे मिलने के लिए एक और मेहमान को भी उस दिन उसने बुला लिया। वह रैल्फ का एक पुराना मित्र था जिसे मिस स्टैकपोल के साथ घनिष्ठ होने में न समय लगा, न डर ही महसूस हुआ। मिस्टर बैटलिंग चालीस वर्ष का एक दुबला, पुख्ता और खुशमिज़ाज आदमी था, जो बढ़िया कपड़े पहने था, दुनिया-भर की बातें जानता था और बिला वजह खुश हो जाता था। वह हेनरीटा की हर बात पर खिलखिलाकर हंसता रहा, उसे चाय की प्यालियां पकड़ाता रहा, और उसके साथ मिलकर रैल्फ के घर की छोटी-मोटी सजावट की चीज़ों का जायज़ा लेता रहा। बाद में रैल्फ ने स्क्वेयर में चलने का प्रस्ताव किया, तो मिस्टर बैटलिंग ने हेनरीटा के साथ वहां के कई चक्कर लगाए और उससे दर्जनों तरह की बातें कीं। हेनरीटा ने वहां की अन्दरूनी ज़िन्दगी की बात की, तो वह बहस में खासी दिलचस्पी दिखाता तुरन्त उस विषय पर बात करने लगा।

"ओह ! तो गार्डनकोर्ट तुम्हें काफी खामोश जगह लगी। हां, जब घर में बीमारी हो, तो वहां ज़्यादा हलचल नहीं हो सकती। रैल्फ की अपनी हालत खासी खराब है। डॉक्टर तो इसे इंग्लैण्ड में रहने की सलाह ही नहीं देते। यह सिर्फ अपने पिता की तीमारदारी के लिए यहां आया है। उस बूढ़े आदमी को कोई आधी दर्जन बीमारियां हैं। ये लोग उसे गठिया बताते हैं, पर मेरे खयाल में उसकी इन्द्रियां रोग से इस तरह बेकार हो चुकी हैं कि अब जल्दी ही, किसी भी दिन, उसे बुलावा आ सकता है। सच, ऐसे में घर में एक भयानक जड़ता छा जाती है। पता नहीं इन दिनों, जब ये अपने मेहमानों के लिए कुछ कर ही नहीं सकते, तो उन्हें अपने यहां बुलाते क्यों हैं। फिर मिस्टर टाउशेट और उनकी पत्नी में हमेशा झगड़ा रहता है—वे, तुम लोगों के असाधारण अमरीकन ढंग से, अपने पति से अलग रहती हैं। तुम कोई ऐसा घर चाहती हो जहां हमेशा हलचल रहती हो, तो मैं तुम्हें बेडफोर्डशायर में अपनी बहन लेडी पेंसिल के यहां जाकर ठहरने की सलाह दूंगा। मैं उसे कल पत्र लिख दूंगा और तुम्हें अपने यहां बुलाकर उसे खुशी होगी। मुझे पता है तुम एक ऐसी जगह चाहती हो जहां के लोग थियेटर और पिकनिक वगैरह के शौकीन हों। मेरी बहन इसी तरह की है। वह कुछ न कुछ आयोजन करती

रहती है, और लोग उसे इसका मौका दें, तो उसे खुशी होती है। मुझे विश्वास है कि वह वापसी डाक से तुम्हें निमन्त्रण भेज देगी—बड़े-बड़े लोगों और साहित्यकारों से मिलने का उसे बहुत शौक है। वह स्वयं भी लिखती है, हालांकि उसकी लिखी कोई चीज़ मैंने कभी पढ़ी नहीं। वह अधिकतर कविता लिखती है, और मुझे बायरन को छोड़कर किसीकी कविता पढ़ने का ज़रा शौक नहीं है। मेरा ख्याल है अमरीका में तुम लोग बायरन को काफी पसन्द करते हो," मिस स्टैकपोल के ध्यान से उत्साहित होकर मिस्टर बैंटलिंग लगातार बात करता रहा। बात से बात जोड़ने और विषय बदलने में उसे ज़रा कठिनाई नहीं हो रही थी। फिर भी उस विचार को, जिससे हेनरीटा चकाचौंध हो रही थी—कि वह बेडफोर्डशायर में लेडी पेंसिल के यहां जाकर रहे, उसने आंखों से ओझल नहीं होने दिया। "मुझे पता है तुम क्या चाहती हो। तुम ठेठ इंग्लिश मनोविनोद से परिचित होना चाहती हो! टाउशेट परिवार अंग्रेज़ नहीं है। इनकी अपनी आदतें हैं, अपनी भाषा है और अपना ही खान-पान है। शायद एक बेढंगा-सा अपना ही धर्म भी है। किसीने बताया था कि बूढ़ा टाउशेट शिकार करना बहुत बुरी चीज़ समझता है। तुम थियेटर-सीज़न से पहले मेरी बहन के यहां पहुंच जाओ, तो वह तुम्हें कोई पार्ट भी दे देगी। मेरा ख्याल है तुम काफी अच्छा अभिनय करती होगी। तुम काफी चतुर हो। मेरी बहन चालीस साल की है, सात बच्चों की मां है, फिर भी वह मुख्य भूमिका लेने जा रही है। यूं देखने में साधारण-सी है, पर वह मेक-अप बहुत अच्छा करती है—इतना मैं उसके लिए ज़रूर कहूंगा। पर तुम्हारा मन न हो, तो तुम्हें अभिनय करने की ज़रूरत नहीं।"

विंचेस्टर स्क्वेयर में घास पर टहलते हुए मिस्टर बैंटलिंग यह सब कहता रहा। लन्दन की कालिख से पुती होने पर भी वह घास चहलकदमी के लिए प्रोत्साहन दे रही थी। हेनरीटा को वह सहज भाव से बात करता उत्साहित बेचलर बहुत अच्छा लग रहा था—स्त्री हृदय पर प्रभाव डालने और कई तरह के सुझाव देने की उसमें अद्भुत शक्ति थी। मिस्टर बैंटलिंग जो अवसर देना चाह रहा था, वह हेनरीटा की नज़र में काफी मूल्यवान था। "मैं कह नहीं सकती," वह बोली, "पर तुम्हारी बहन अगर मुझे बुलाएगी, तो मैं ज़रूर जाऊंगी। उस हालत में जाना मेरा कर्तव्य होगा। तुमने उसका नाम क्या बाताया है ?"

"पेंसिल। कुछ अजीब-सा नाम है, पर बुरा नहीं है।"

"नाम तो सब एक-से होते हैं। पर उसका रुतबा क्या है ?"

"वह एक बैरन की पत्नी है। खासा रुतबा है। ऐसा कि आप बड़े भी हैं, और बहुत बड़े भी नहीं हैं।"

"खैर मेरे लिए तो फिर भी वह बहुत बड़ी होगी। जगह का तुमने क्या नाम बताया है—बेडफोर्ड-शायर ?"

"वह ज़रा परे वहां के उत्तरी कोने में रहती है। काफी थकाने वाला इलाका है, पर तुम्हें बुरा नहीं लगेगा। तुम्हारे वहां रहते मैं भी जल्दी से वहां का एक चक्कर लगा लूंगा।"

मिस स्टैकपोल को यह सब बहुत अच्छा लग रहा था इसलिए लेडी पेंसिल के इस नेकबख्त भाई से अलग होने में उसे दुःख महसूस हुआ। पर उससे पहले दिन पिकेडिली में उसकी कुछ ऐसी सहेलियों से भेंट हो गई थी जिनसे वह साल-भर से नहीं मिली थी। वे विलिमंगटन, डेलावेयर, की रहने वाली मिस क्लाइम्बर नाम की दो महिलाएं थीं जो कान्टिनेंट में घूमकर अब घर लौटने की तैयारी कर रही थीं। पिकेडिली के पेवमेंट पर खड़े-खड़े हेनरीटा ने उनका खासा लम्बा इंटरव्यू लिया, पर चाहे तीनों एक साथ बोलती रहीं, फिर भी उनकी बातें समाप्त नहीं हुई थीं। इसलिए तय हुआ था कि हेनरीटा अगले दिन जर्मीन स्ट्रीट में उनके यहां छः बजे डिनर खाने जाएगी, और अब हेनरीटा को उस डिनर की याद हो आई। जर्मीन स्ट्रीट जाने के लिए तैयार होकर पहले उसने रैल्फ और इज़ाबेल से विदा ली। वे दोनों घेरे के एक और हिस्से में बाग की कुरसियों पर बैठे आपस में बातचीत कर रहे थे—हालांकि उनकी बातचीत हेनरीटा और बैंटलिंग की बातचीत की तरह क्रियात्मक और सोद्देश्य नहीं थी। हेनरीटा ने जब इज़ाबेल से यह तय कर लिया कि वे ज्यादा रात जाने से पहले ही प्रैट्स होटल में फिर से मिल जाएंगी, तो रैल्फ ने कहा कि हेनरीटा को जर्मीन स्ट्रीट तक पैदल न जाकर एक कैब ले लेनी चाहिए।

"तुम्हारा मतलब है मेरा अकेली पैदल जाना ठीक नहीं है," हेनरीटा आवेश के साथ बोली, "मेरे ईश्वर ! क्या मैं इस हालत तक आ पहुंची हूं ?"

"तुम्हें अकेली पैदल जाने की बिलकुल ज़रूरत नहीं," मिस्टर बैंटलिंग बीच में बोला, "मुझे तुम्हारे साथ चलकर बहुत खुशी होगी।"

"मेरा मतलब सिर्फ इतना ही था कि तुम डिनर के लिए लेट न हो जाओ,"

रैल्फ बोला, "उन महिलाओं को लगेगा कि हम लोग तुम्हें छोड़ने को तैयार नहीं हुए।"

"हेनरीटा, अच्छा है तुम एक हैन्सम ले लो," इज़ाबेल ने कहा।

"तुम मुझपर भरोसा कर सको, तो मैं तुम्हें हैन्सम ले दूंगा," मिस्टर बैंटलिंग फिर बोला, "गाड़ी मिलने तक हम थोड़ी दूर पैदल चल सकते हैं।"

"मुझे इसपर भरोसा न करने का कोई कारण नज़र नहीं आता—तुम्हें नज़र आता है ?" हेनरीटा ने इज़ाबेल से पूछा।

"मिस्टर बैंटलिंग तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता," इज़ाबेल उपकार करने के स्वर में बोलीं, "पर तुम चाहो, तो हम सब साथ चलकर तुम्हें कैब दिला देते हैं।"

"तुम रहने दो, हम लोग अकेले चले जाएंगे। चलो मिस्टर बैंटलिंग ! और देखो मुझे अच्छी-सी कैब दिलाना।"

मिस्टर बैंटलिंग ने विश्वास दिलाया कि वह पूरा प्रयत्न करेगा, और वे दोनों वहां से चल दिए। इज़ाबेल और उसका कज़िन पीछे स्क्वेयर में रह गए। सितम्बर की निर्मल सांझ स्क्वेयर पर घिरने लगी थी। पूर्ण निस्तब्धता थी और अंधेरे घरों के चतुष्कोण की किसी खिड़की से रोशनी नज़र नहीं आ रही थी क्योंकि उनके आगे चिकें और पर्दे खिंचे थे। पेवमेंट दूर तक खाली थे, और पास के स्लम के दो बच्चों को छोड़कर, जो घेरे के अन्दर असाधारण हलचल का आभास पाकर जंगले की जंगखाई सलाखों में से अपने चेहरे अन्दर घुसेड़ रहे थे, वहां सामने सिर्फ एक ही चीज़ साफ नज़र आ रही थी, और वह था दक्खिन-पूरबी कोने का बड़ा लाल खम्भा।

"हेनरीटा उसे अपने साथ कैब में बैठकर जर्मीन स्ट्रीट तक चलने को कहेगी," रैल्फ बोला। वह हमेशा मिस स्टैकपोल को हेनरीटा कहता था।

"बहुत मुमकिन है," इज़ाबेल बोली।

"या वह नहीं कहेगी," रैल्फ ने बात जारी रखी। "बैंटलिंग उससे साथ अन्दर बैठने को इजाज़त मांगेगा।"

"यह भी काफी मुमकिन है। मुझे खुशी है कि दोनों में इतनी अच्छी दोस्ती हो गई है।"

"हेनरीटा ने उसे जीत लिया है। बैंटलिंग को वह बहुत प्रतिभाशाली स्त्री

लग रही है। यह चीज़ काफी दूर तक जा सकती है।"

इज़ाबेल कुछ देर खामोश रही, "मैं भी हेनरीटा को बहुत प्रतिभाशाली समझती हूं, पर मुझे यह नहीं लगता कि यह चीज़ काफी दूर तक जाएगी। ये लोग कभी एक-दूसरे को ठीक से नहीं जान पाएंगे। मिस्टर बैंटलिंग को हेनरीटा की वास्तविकता का कुछ पता नहीं है, और हेनरीटा को मिस्टर बैंटलिंग के बारे में सही अन्दाज़ा नहीं है।"

"स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध के लिए अक्सर आपसी गलतफहमी से बेहतर कोई आधार नहीं होता। पर बॉब बैंटलिंग को समझ पाना उतना मुश्किल नहीं है। उसका निर्माण काफी सादा है।"

"हेनरीटा का निर्माण और भी सादा है। पर अब मुझे क्या करना है?" कहते हुए इज़ाबेल ने चारों तरफ नज़र डाल ली। मद्धिम पड़ती रोशनी में स्क्वेयर के लैंडस्केप के पेड़ काफी ऊंचे और प्रभावशाली नज़र आ रहे थे। "अब कहीं तुम भी तो यह प्रस्ताव नहीं करने जा रहे कि हम लोग भी अपने मनोरंजन के लिए साथ-साथ हेन्सन में बैठकर लन्दन की सैर करें।"

"तुम्हें एतराज़ न हो, तो क्यों न कुछ देर यहीं बैठें? यहां खासी गर्मी है और अंधेरा होने में अभी आधा घण्टा है। तुम इजाज़त दो, तो मैं एक सिगरेट सुलगा लूं।"

"जैसा तुम्हारे मन में आए करो," इज़ाबेल बोली, "अगर तुम सात बजे तक मेरा मन बहला सको तो। सात बजे मैं वापस जाकर प्रैट्स होटल में थोड़ा सादा-सा खाना अकेले में खाना चाहूंगी—दो पोच्ड अण्डे और मफिन।"

"मैं तुम्हारे साथ खाना नहीं खा सकता?" रैल्फ ने पूछा।

"नहीं। तुम अपने क्लब में खाना खाओगे।"

वे लोग फिर स्क्वेयर के बीचोंबीच अपनी कुर्सियों पर पहुंच गए थे और रैल्फ ने सिगरेट सुलगा लिया था। उसे उस छोटे-से भोज में शामिल होकर खुशी होती जिसका इज़ाबेल ने अभी नक्शा खींचा था, पर वैसा सम्भव न होने पर मना कर दिया जाना भी उसे अच्छा लगा। इस समय यह उसे बहुत अच्छा लग रहा था कि उस भीड़-लदे शहर के बीच गहराती सांझ में वह इज़ाबेल के साथ अकेला है—इससे वह उसपर निर्भर कर रही थी और उसके अधिकार में थी। इस अधिकार का वह अस्पष्ट-सा ही प्रयोग कर सकता था—सबसे अच्छा प्रयोग यही था

कि चुपचाप इज़ाबेल की हर बात मानता जाए, और ऐसा वह भावना के साथ कर रहा था, "मैं तुम्हारे साथ खाना क्यों नहीं खा सकता ?" उसने कुछ रुककर पूछा।

"क्योंकि मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

"मेरा ख्याल है तुम मुझसे ऊब गई हो।"

"घण्टे भर में ऊब जाऊंगी। तुम देख रहे हो मेरे अन्दर पूर्वाभास पा लेने की प्रतिभा है।"

"तो उतनी देर मैं तुम्हें खुश रखूंगा", रैल्फ बोला। पर इसके बाद वह चुप रहा। इज़ाबेल ने भी उत्तर में कुछ नहीं कहा, इसलिए कुछ देर वे खामोश बैठे रहे, और उसका मन बहलाने की रैल्फ की बात झूठी पड़ने लगी। रैल्फ को लग रहा था कि वह कुछ सोच रही है, पर क्या, यह वह नहीं समझ पा रहा था। सोचने की दो-तीन बातें हो सकती थीं। आखिर रैल्फ ही फिर बोला, "आज शाम मेरे साथ से तुम इसलिए तो नहीं बचना चाहतीं कि तुम्हें किसी और के आने की आशा है ?"

इज़ाबेल ने सिर मोड़कर अपनी साफ स्थिर आंखों से उसकी ओर देख लिया," किसी और के आने की ? किसके आने की ?"

रैल्फ किसीका नाम नहीं ले सकता था जिससे उसे अपना प्रश्न बेहूदा और अशिष्ट-सा लगा। "तुम्हारे बहुत-से मित्र होंगे जिन्हें मैं नहीं जानता। तुम्हारा एक परा अतीत है जिससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"तुम मेरे भविष्य के लिए सुरक्षित थे। तुम्हें याद रखना चाहिए कि मेरा अतीत समुद्र के उस पार है। वह यहां लन्दन में नहीं है।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है कि तुम्हारा भविष्य यहां तुम्हारी बगल में बैठा है। अपने भविष्य को इतना पास रखने से बढ़िया क्या बात हो सकती है ?" रैल्फ ने एक और सिगरेट सुलगा लिया और सोचा कि शायद इज़ाबेल का मतलब यह हो कि उसे कैस्पर गुडवुड के पेरिस पहुंचने की सूचना मिल चुकी है। सिगरेट सुलगाकर वह कुछ देर कश खींचता रहा, फिर बोला, "मैंने अभी तुम्हारा दिल लगाए रखने की बात की थी, पर देख रही हो कि मैं अपनी बात पर पूरा नहीं उतर रहा। असलियत यह है कि तुम्हारे जैसी लड़की का दिल लगा रखना आसान बात नहीं है। और मेरे इन छिटपुट प्रयत्नों की तुम्हें परवाह भी क्या है ? इन

मामलों में तुम्हारे विचार बहुत बड़े हैं और तुम्हारा स्तर बहुत ऊंचा है। मैं कम से कम कोई बैंड-बाजा या कुछ-एक मजमेबाज़ों को लाऊं, तो काम बने।"

"मजमेबाज़ एक ही काफी है, और तुम्हींसे काम चल सकता है। तुम बात जारी रखो—देखना अभी दस मिनट में मैं हंसने लगूंगी।"

"मैं बहुत गम्भीर होकर बात कह रहा हूं," रैल्फ बोला, "तुम्हारी मांग सचमुच बहुत बड़ी है।"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझ सकी। मेरी तो कुछ भी मांग नहीं है।"

"तुम कुछ भी स्वीकार नहीं करतीं," रैल्फ ने कहा। इज़ाबेल उसका आशय भांपकर सुर्ख हो उठी। पर वह उससे ऐसी बात क्यों कर रहा था? रैल्फ पल-भर संकोच में रहा, फिर बोला, "एक चीज़ है जो मैं ज़रूर तुमसे कहना चाहता हूं। बल्कि एक सवाल है जो मैं पूछना चाहता हूं। मेरा ख्याल है, मुझे पूछने का अधिकार है क्योंकि उसके जवाब में मेरी कुछ दिलचस्पी है।"

"तुम जो चाहो पछो," इज़ाबेल कोमल भाव से बोली, "मैं सही-सही उत्तर देने का प्रयत्न करूंगी।"

"तो शायद तुम मेरे यह कहने का बुरा नहीं मानोगी कि तुम्हारे और वारबर्टन के बीच जो बात हुई है, वह उसने मुझे बता दी है।"

इज़ाबेल ने अपने को चौंकने से रोका और हाथ के खुले पंखे पर आंखें जमाए रही, "ठीक है। उसका तुम्हें बताना स्वाभाविक ही था।"

"मैं उसकी अनुमति से ही तुम्हें यह बता रहा हूं। उसे अब भी थोड़ी आशा है," रैल्फ बोला।

"अब भी है?"

"कुछ दिन पहले तक थी।"

"अब नहीं रही होगी," इज़ाबेल ने कहा।

"तो मुझे उसके लिए अफसोस है। वह बहुत नेक आदमी है।"

"उसने मुझसे बात करने के लिए तुमसे कहा था?"

"नहीं। उसने मुझसे इसलिए बात की थी कि उससे बात किए बिना रहा नहीं गया। हम पुराने दोस्त हैं, और वह बहुत निराश महसूस कर रहा था। उसने मुझे पत्र लिखकर बुलाया था। जिस दिन वह अपनी बहन के साथ हमारे यहां लंच खाने आया था, उससे पहले रोज़ मैं उससे मिलने लौकले गया था। उसका मन

बहुत भारी था क्योंकि तभी उसे तुम्हारा एक पत्र मिला था।"

"उसने वह पत्र तुम्हें दिखलाया था ?" इज़ाबेल पल-भर के लिए महत्त्वपूर्ण अनुभव करती बोली।

"दिखलाया नहीं। पर उसने बतलाया था कि तुमने इन्कार कर दिया है। मुझे उसके लिए अफसोस हुआ।"

कुछ देर तक इज़ाबेल कुछ नहीं बोली। फिर उसने पूछा, "तुम्हें पता है वह मुझसे कुल कितनी बार मिला है ? पांच या छः बार।

"इसमें श्रेय तुम्हीं को है।"

"मैं इस वजह से नहीं कह रही।"

"तो किस वजह से कह रही हो ? तुम्हारा मतलब निःसन्देह यह नहीं है कि वारबर्टन की वह मनःस्थिति तुम्हें सच ही जान पड़ी थी। मुझे विश्वास है तुमने ऐसा नहीं सोचा होगा।"

इज़ाबेल के लिए यह कह सकना मुश्किल था कि उसने ऐसा ही सोचा था। इसलिए उसने कुछ और ही बात कही, "अगर लार्ड वारबर्टन ने तुमसे अपनी वकालत करने के लिए नहीं कहा, तो तुम खामखाह केवल बहस के लिए बहस कर रहे हो।"

"मैं तुम्हारे साथ बहस बिलकुल नहीं करना चाहता। मैं तुम्हें तुम्हारी मर्जी पर ही छोड़ देना चाहता हूं। मेरी दिलचस्पी तुम्हारी भावनाओं में है।"

"मैं इसके लिए बहुत आभारी हूं," इज़ाबेल अव्यवस्थित-सी हंसी के साथ बोली।

"तुम्हारा ख्याल है कि मैं खामखाह की दखल-अंदाजी कर रहा हूं। पर बिना तुम्हें झुंझलाए या अपने को अव्यवस्थित किए मैं इस विषय में बात क्यों नहीं कर सकता ? तुम्हारा कज़िन होने से क्या मुझे इतना भी अधिकार नहीं है ? बिना किसी प्रतिदान की आशा के तुम्हारा प्रशंसक होने का क्या मुझे इतना पुरस्कार भी नहीं मिल सकता ? अपनी बीमारी और अशक्तता के कारण जिन्दगी के खेल का मैं केवल एक दर्शकमात्र हूं—जब मैंने इस नाटक को देखने की इतनी कीमत अदा की है, तो क्या मैं पूरा नाटक देख भी नहीं सकता ? मुझे बताओ," इज़ाबेल की रुचि बात में जगाकर रैल्फ कहता गया, "जब तुमने लार्ड वारबर्टन को इन्कार किया, तो तुम्हारे मन में क्या बात थी ?"

"मेरे मन में क्या बात थी ?"

"वह कौन-सा तर्क या स्थिति का जायज़ा था जिसने तुम्हें इस कार्य के लिए प्रेरित किया ?"

"मैं उससे ब्याह नहीं करना चाहती थी—बस इतना ही तर्क था।"

"नहीं, यह तर्क नहीं है। इतना मैं पहले भी जानता हूं। इसमें कुछ बात नहीं है। तुमने इस विषय में अपने से क्या कहा था ? निःसंदेह तुमने इतने से कहीं अधिक कहा होगा।"

इज़ाबेल पल-भर सोचती रही। फिर उसने उत्तर में अपनी ओर से प्रश्न किया, "तुम इसे एक विशिष्ट कार्य क्यों कहते हो ? तुम्हारी मां की भी ऐसी ही धारणा है।"

"क्योंकि वारबर्टन इतना अच्छा आदमी है—उस रूप में उसमें कोई दोष नहीं है। फिर उसके पास किसी चीज की कमी नहीं है। उसकी दौलत बेशुमार है और उसकी पत्नी काफी ऊंची हस्ती मानी जाएगी। उस आदमी में आंतरिक और बाह्य दोनों तरह के गुण हैं।"

इज़ाबेल देखती रही कि वह कहां तक जाता है। "तो समझ लो कि उसकी पूर्णता के कारण ही मैंने उसे इन्कार किया है। मैं स्वयं पूर्ण नहीं हूं, और वह मेरे लिहाज़ से ज्यादा ही अच्छा है। फिर उसकी पूर्णता से मुझे झुंझलाहट भी होती।"

"इस बात में स्पष्टता उतनी नहीं जितनी चालाकी है," रैल्फ बोला, "दर-असल तुम्हारा ख्याल है कि दुनियां में कुछ भी तुम्हारे लिहाज़ से पूर्ण नहीं है।"

"तुम मुझे इतनी अच्छी समझते हो ?"

"नहीं। पर बिना अपने को बहुत अच्छी समझे भी तुम्हारी कसौटी बहुत ऊंची है। बहुत ऊंची कसौटी रखने वाली स्त्रियों में भी बीस में से उन्नीस वार-बर्टन को स्वीकार कर लेतीं। तुम्हें अन्दाजा भी नहीं है कि उसे इससे कितना धक्का पहुंचा है।"

"मैं अन्दाज़ा लगाना भी नहीं चाहती। पर मेरा ख्याल है कि एक दिन उसके बारे में बात करते हुए तुमने कुछ अजीब बातें बताई थीं।"

रैल्फ धुआं छोड़ता सोचता रहा। "मुझे आशा है कि जो कुछ मैंने कहा था उसका तुम्हारी नज़र में कोई महत्त्व नहीं था। मैंने उसके दोषों का नहीं, उसकी

स्थिति की कुछ विशेषताओं का ज़िक्र किया था। मुझे पता होता कि वह तुमसे शादी करना चाहता है, तो मैं कभी उनका ज़िक्र न करता। मैंने कहा था कि अपनी स्थिति को लेकर वह आस्थावान नहीं है। यह आस्था तुम उसमें पैदा कर सकती थीं।"

"मैं ऐसा नहीं समझती। न तो मुझे स्थिति का ज्ञान है और न ही ऐसा कोई मिशन मेरे अन्दर है। लगता है तुम्हें काफी निराशा हुई है," इज़ाबेल शिकायत-भरी कोमलता के साथ अपने कज़िन को देखती हुई बोली, "तुम्हें अच्छा लगता अगर मैं यह शादी कर लेती।"

"बिलकुल नहीं। इस मामले में मेरी कोई इच्छा नहीं है। मैं तुम्हें परामर्श देने का बहाना नहीं कर सकता। मेरा सन्तोष इतने में ही है कि गहरी दिलचस्पी के साथ तुम्हारी गतिविधि को देखता रहूं।"

इज़ाबेल ने सचेत भाव से उसांस भरी, "चाहती हूं कि मैं अपनी नज़र में भी उतनी ही दिलचस्प होती जितनी कि तुम्हारी नज़र में हूं।"

"यह भी स्पष्ट बात नहीं है। तुम अपनी नज़र से अपने में बहुत ज्यादा दिलचस्पी लेती हो। पर क्या तुम जानती हो," रैल्फ बोला, "कि तुमने वारबर्टन को जो उत्तर दिया है, अगर वही तुम्हारा आखिरी उत्तर है, तो मुझे इसकी खुशी है? यह खुशी तुम्हारी खातिर नहीं है, और बारबर्टन की खातिर तो बिलकुल ही नहीं है। मुझे खुशी अपनी खातिर है।"

"तो क्या तुम मुझसे प्रस्ताव करने की सोच रहे हो?"

"बिलकुल नहीं। जिस नज़र से मैं बात कर रहा हूं, उसके लिए यह घातक होगा। यह तो उस मुर्गी को मार देने की तरह होगा जिसके अंडों का मैं आमलेट खाना चाहता हूं। मैं उस पक्षी का उल्लेख अपनी भ्रान्तियों के प्रतीक के रूप में कर रहा हूं। मेरा मतलब यह है कि अब मैं यह देखकर रोमांचित हो सकूंगा कि वह लड़की जो लार्ड वारबर्टन को इन्कार कर सकती है, जिन्दगी में क्या कर सकती है।"

"तुम्हारी मां भी इसी बात पर निर्भर कर रही है," इज़ाबेल बोली।

"ओह, तब तो दर्शक कई एक हैं। हम लोग तुम्हारे भविष्य पर मंडराते रहेंगे। मैं सब कुछ तो नहीं देख पाऊंगा, पर सबसे दिलचस्प साल शायद देख सकूंगा। तुम मेरे मित्र से शादी कर लेतीं तो भी तुम्हारा भविष्य बहुत दिलचस्प,

बल्कि बहुत अच्छा होता। पर अपेक्षाकृत वह कुछ रूखा-सा रहता। उसकी रूप-रेखा पहले से बनी होती और उसमें अप्रत्याशित कुछ न होता। तुम जानती हो मुझे अप्रत्याशित चीजें कितनी अच्छी लगती हैं। अब तुमने खेल अपने हाथ में रखा है, तो मुझे आशा है कि काफी अच्छी तरह खेलकर दिखाओगी।"

"मैं तुम्हें ठीक से समझ नहीं पा रही," इज़ाबेल बोली, "पर जितना समझ पा रही हूं, उसे लेकर कह सकती हूं कि तुम्हें मुझसे निराशा होगी।"

"यह तभी हो सकता है यदि तुम्हें स्वयं अपने से निराशा हो जो कि तुम्हारे लिए बहुत कठिन पड़ेगा।"

इसका इज़ाबेल ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया। बात में कुछ ऐसी सचाई थी जिसपर विचार करने की आवश्यकता थी। आखिर वह एकाएक बोली, "मैं नहीं जानती कि मेरी बन्धन-मुक्त रहने की इच्छा में क्या बुराई है। मैं ब्याह से अपने जीवन का आरम्भ नहीं करना चाहती। एक स्त्री और भी बहुत कुछ कर सकती है।"

"उतना अच्छा और कुछ नहीं कर सकती। पर हां, तुम्हारे कई पक्ष हैं।"

"किसीके दो पक्ष हों, तो भी बहुत है," इज़ाबेल बोली।

"बहुपक्षीय व्यक्तियों में तुम सबसे आकर्षक हो," उसका साथी कह उठा। पर इज़ाबेल ने उसकी ओर देखा, तो वह गम्भीर हो गया, और इसे प्रमाणित करने के लिए बोला, "तुम ज़िन्दगी देखना चाहती हो—और युवा पुरुषों की भाषा में कहूं तो, जान की बाज़ी लगाकर देखना चाहती हो।"

"मैं युवा पुरुषों की तरह ज़िन्दगी नहीं देखना चाहती। पर हां, मैं आसपास नज़र दौड़ाना ज़रूर चाहती हूं।"

"तुम अनुभव की प्याली पूरी पीना चाहती हो।"

"नहीं, मैं अनुभव की प्याली को छूना भी नहीं चाहती। वह एक ज़हरीला पेय है। मैं सिर्फ अपनी नज़र से देखना चाहती हूं।"

"तुम देखना चाहती हो, पर महसूस करना नहीं चाहतीं," रैल्फ बोला।

"मैं नहीं समझती कि कोई चेतनावान् व्यक्ति इसमें भेद कर सकता है। मैं बहुत कुछ हेनरीटा की तरह हूं। उस दिन मैंने उससे पूछा कि क्या वह शादी करना चाहती है, तो वह बोली, "तब तक नहीं जब तक मैं पूरा यूरोप न देख लूं। मैं भी पूरा यूरोप देखने तक शादी नहीं करना चाहती।"

"तुम्हें आशा है कि कोई ताजधारी तुमसे आ टकराएगा।"

"नहीं, वह तो लार्ड वारबर्टन से शादी करने से भी बुरा होगा। पर अब अंधेरा हो रहा है और मुझे वापस पहुंचना चाहिए।" वह अपनी जगह से उठ खड़ी हुई, पर रैल्फ चुपचाप बैठा उसे देखता रहा। उसे बैठे देखकर वह भी रुक गई। दोनों की नज़रें आपस में मिलीं तो उनमें एक ऐसा आभास था जिसे शब्दों मे प्रकट नहीं किया जा सकता था। यह आभास रैल्फ की नज़र में अपेक्षया ज़्यादा था।

"तुमने मेरे सवाल का जवाब दे दिया है," आखिर रैल्फ बोला, "जो मैं चाहता था, वह तुमने मुझे बता दिया है। मैं तुम्हारे प्रति बहुत आभारी हूं!"

"मेरा खयाल है मैंने तुम्हें बहुत कम बताया है।"

"बड़ी बात तुमने बता दी है। दुनिया तुम्हें दिलचस्प लगती है और तुम उसमें कूद जाना चाहती हो।"

इज़ाबेल की रुपहली आंखें पल-भर के लिए अंधेरे में चमक उठीं। "मैंने यह बिलकुल नहीं कहा।"

"मेरा खयाल है तुम्हारा मतलब यही था। इसका विरोध मत करो। यह इतना अच्छा लग रहा है।"

"पता नहीं तुम क्या चीज़ मेरे ऊपर लादना चाह रहे हो, क्योंकि मेरे अन्दर ऐसी दुःसाहसी आत्मा नहीं है। स्त्रियां पुरुषों की तरह नहीं होतीं।"

रैल्फ अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और वे साथ-साथ स्क्वेयर के गेट की तरफ चल दिए। "नहीं," वह बोला, "स्त्रियां अपने साहस का ढिंढोरा नहीं पीटतीं। पुरुष यह काम बहुत ज़्यादा करते हैं।"

"पुरुषों के पास ऐसा करने का कारण होता है!"

"वह स्त्रियों के पास भी होता है। तुम्हारे पास काफी कारण है।"

"इतना ही कि कैब में बैठकर प्रैट्स होटल तक चली जाऊं—इससे ज़्यादा नहीं।"

रैल्फ ने गेट की कुण्डी खोली और दोनों के बाहर निकल आने पर फिर से चढ़ा दी। "तुम्हें कैब ढूंढ़ देते हैं," उसने कहा। फिर उस सड़क की तरफ मुड़ते हुए जहां यह खोज परी हो सकती थी, उसने फिर से पूछ लिया कि क्या वह उसे होटल तक पहुंचाने चल सकता है।

"हरगिज़ नहीं," इज़ाबेल बोली, "तुम बहुत थके हो। अब घर जाकर बिस्तर में लेट जाओ।"

कैब मिल गई। इज़ाबेल को उसमें चढ़ाकर रैल्फ पल-भर दरवाज़े के पास रुका रहा। "अगर लोग मेरी बीमारी की बात भूल जाते हैं, तो मुझे प्रायः असुविधा होती है," वह बोला, "पर तब और भी असुविधा होती है जब वे इस बात को याद रखते हैं!"

१६

रैल्फ को अपने साथ चलने से रोकने में उसका कोई छिपा हुआ उद्देश्य नहीं था। सिर्फ उसे लगा था पिछले कई दिनों से रैल्फ के समय का बहुत-सा भाग वह लेती रही है। स्वतन्त्र प्रकृति की अमरीकन लड़की होने के कारण उसे दूसरों से अत्यधिक सहायता पाना बोझ-सा लगता था, इसलिए उसने सोचा कि अब कुछ घण्टे वह अकेली ही रहे तो बेहतर है। फिर बीच-बीच में एकान्त के अन्तराल उसे अच्छे लगते थे और इंग्लैण्ड आने के बाद से उसकी यह आवश्यकता बहुत कम पूरी हुई थी। यह सुख अपने घर में उसे बहुत मिलता था और यहां वह उसके अभाव का अनुभव कर रही थी। पर उस शाम एक ऐसी घटना हुई जिसे देखकर कोई आलोचक वहां होता तो कहता कि उसकी यह धारणा कि वह अकेला होने के लिए अपने कज़िन से बिदा ले रही है, बिलकुल बेबुनियाद थी। नौ बजे के लगभग वह प्रैट्स होटल की मद्धिम रोशनी में दो ऊंची मोमबत्तियों के सहारे एक बड़ी-सी पुस्तक पढ़ने की कोशिश कर रही थी, जो कि वह गार्डनकोर्ट से साथ लाई थी। पर उसमें से जो शब्द वह पढ़ पा रही थी वे छपे हुए शब्द न होकर बिल्कुल दूसरे ही शब्द थे—वे शब्द जो रैल्फ ने उससे कहे थे। सहसा दरवाज़े पर वेटर के ढके हाथों की दस्तक सुनाई दी। फिर एक महान् ट्रॉफी की तरह किसी आगन्तुक के कार्ड का प्रदर्शन करती वेटर की आकृति सामने आ गई। जब आंखें जमाकर इज़ाबेल ने कार्ड पर कैस्पर गुडवुड का नाम पढ़ा, तो उससे कुछ कहते नहीं बना और वेटर चुपचाप सामने खड़ा रहा।

"क्या मैं उस साहब को ले आऊं ?" उसने एक हल्के उत्साहित ढंग से पूछा

इज़ाबेल फिर भी झिझकी और उसने अपने को आईने में देख लिया। "उन्हें अन्दर ले आओ," उसने आखिर कहा। इन्तजार करते वक्त उसने अपने बालों को उतना ठीक नहीं किया जितना अपने उत्साह को संभाला।

कैस्पर गुडवुड अगले ही क्षण उससे हाथ मिला रहा था। लेकिन तब तक वह कुछ नहीं बोला जब तक वेटर कमरे से बाहर नहीं हो गया। "तुमने मेरी चिट्ठी का जवाब क्यों नहीं दिया ?" उसने जल्दी से हल्की और सुनिश्चित आवाज में पूछा—एक ऐसे आदमी की आवाज में जिसके प्रश्न स्वाभाविक तौर पर तीखे और दबाव डालने वाले होते थे।

इज़ाबेल ने एक तैयार प्रश्न से उत्तर दिया, "तुम्हें कैसे पता चला कि मैं यहां हूं ?"

"मिस स्टैकपोल ने मुझे बताया था," कैस्पर गुडवुड ने कहा, "उसने मुझसे कहा था कि सम्भवतः तुम इस शाम अकेली घर पर होगी और मुझसे मिलने की इच्छुक भी।"

"वह तुमसे कहां मिली—तुमसे यह कहने के लिए ?"

वह मुझसे मिली नहीं थी; उसने मुझे पत्र लिखा था।"

इज़ाबेल चुप रही। दोनों में से कोई भी नहीं बैठा था। वे दोनों जैसे परस्पर विरोध की स्थिति में खड़े थे।

"हैनरीटा ने मुझसे नहीं कहा था कि वह तुम्हें लिख रही है", इज़ाबेल ने आखिर कहा, "यह उसके लिए अच्छा नहीं था।"

"क्या तुम्हें मुझसे मिलना इतना नापसन्द है ?" उस नवयुवक ने पूछा।

"मुझे इसका पता नहीं था। मुझे इस किस्म के आश्चर्य पसन्द नहीं हैं।"

"लेकिन तुम्हें मालूम था कि मैं शहर में हूं, यह स्वाभाविक था कि हम लोग मिलते।"

"तुम इसे मिलना कहते हो ? मेरा ख्याल था कि मेरा तुमसे मिलना नहीं होगा। लन्दन जैसे बड़े शहर में यह सम्भव भी था।"

"यह तुम्हारे लिए स्पष्टतः अरुचिकर था कि तुम मुझे लिखतीं," उसका मेहमान कहता गया।

इज़ाबेल ने कोई जवाब नहीं दिया; हेनरीटा स्टैकपोल का धोखा, जैसा कि

उसने उस समय कहा था, उसे भीतर से साल रहा था। "हेनरीटा प्रत्येक शिष्टाचार के लिए आदर्श नहीं है।" उसने कड़ुवाहट के साथ कहा, "यह उसने बहुत स्वतन्त्रता का काम किया है।"

"मेरा ख्याल है मैं भी कोई आदर्श नहीं हूं—इन गुणों का या और किन्हीं का। कसूर मेरा भी उतना ही है जितना कि उसका।"

उसकी ओर देखते हुए इज़ाबेल को लगा कि उसका जबड़ा पहले इतना अधिक चौड़ा नहीं था। यह शायद उसे बुरा लगता, लेकिन उसने दूसरा ही रुख लिया, "नहीं, इसमें तुम्हारी इतनी गलती नहीं है, जितनी उसकी है। तुमने जो किया है वह मेरे ख्याल में तुम्हारे लिए प्राकृतिक ही था।"

"यह तो सच है !" कैस्पर गुडवुड एक सायास हंसी के साथ बोला, "और अब जबकि मैं आ ही गया हूं, तो क्या मैं रुक नहीं सकता ?"

"तुम बैठ सकते हो।"

वह अपना कुर्सी पर वापस लौट आई, जब कि कैस्पर ने पहली ही कुर्सी जो उसे नजर आई, ले ली—उस आदमी की तरह जो ऐसी चीज पर बहुत कम ध्यान देता हो। "मैं हर रोज अपनी चिट्ठी के जवाब की प्रतीक्षा करता रहा। तुम मुझे कुछ पंक्तियां तो लिख ही सकती थीं।"

"लिखने की तकलीफ मुझे नहीं रोक रही; मैं तुम्हें बड़ी आसानी से एक पन्ने की जगह चार पन्ने लिख सकती थी। लेकिन मेरी खामोशी का एक कारण था," इज़ाबेल बोली, "मैंने यही सबसे अच्छा समझा।"

वह बात कर रही थी, तो गुडवुड स्थिर आंखों से उसे ताक रहा था। फिर आंखें झुकाकर उसने उन्हें गालीचे पर एक जगह स्थिर कर लिया। वह बहुत प्रयत्न कर रहा था कि कोई अनुचित बात उसके मुंह से न निकले। वह एक शक्तिशाली आदमी था जो इस समय एक गलत स्थिति में था। वह अच्छी तरह जानता था कि अगर उसने इस समय अपनी शक्ति का खुला प्रदर्शन किया, तो उससे उसकी स्थिति की दुर्बलता ही उजागर होगी। उस जैसे व्यक्ति के सामने अपनी बेहतर स्थिति का मजा लेने से इज़ाबेल चूकने वाली नहीं थी। चाहे वह कोई सख्त बात उसके मुंह पर न कहती, फिर भी वह इतना कहने का सुख ता प्राप्त कर ही सकती थी, "देखो तुम्हें स्वयं मुझे नहीं लिखना चाहिए था !"—और यह कहती भी वह एक विजय-गर्व के साथ।

कैस्पर गुडवुड ने अपनी आंखें फिर उसकी ओर उठाईं। वे उसके टोप के आवरण में से चमकतीं लगीं। उसे न्याय की काफी समझ थी और साल के किसी भी दिन वह इसके लिए तैयार था—इसके अतिरिक्त—अपने अधिकारों के प्रश्नों पर वाद-विवाद करने के लिए भी।" तुमने कहा है कि तुम्हें आशा थी तुम मेरी तरफ से कभी नहीं सुनोगी, यह मैं जानता हूं। लेकिन मैंने अपनी तरफ से ऐसा कोई नियम स्वीकार नहीं किया था। मैंने तुमसे कहा था कि मेरी तरफ से तुम जल्दी ही सुनोगी।"

"मैंने यह कभी नहीं कहा कि मैं तुम्हारी तरफ से कभी नहीं सुनूंगी," इज़ाबेल ने कहा।

"तो पांच साल के लिए कहा होगा, या दस साल के लिए, या बीस साल के लिए। एक ही बात है।"

"क्या तुम्हें ऐसा ही लगता है ? मुझे महसूस होता है कि इसमें काफी फरक है। मैं कल्पना कर सकती हूं कि दस साल के बाद हमारे बीच काफी सुखमय पत्र-व्यवहार हो सकेगा। मैंने अपने पत्र लिखने के ढंग को तब तक काफी परिपक्व कर लिया होगा।"

उसने यह शब्द दूसरी ओर देखते हुए कहे—अपने उत्साही श्रोता से भी अधिक जानते हुए कि उनमें कोई विशेषता नहीं है। उसकी आंखें बहरहाल उसपर लौट आईं। कैस्पर ने बहुत ही असम्बद्ध ढंग से कहा, "क्या तुम अपने अंकल के यहां मज़े में हो ?"

"दरअसल बहुत ही मज़े में हूं।" वह रुक गई। लेकिन फिर फूटी, "तुम्हें मुझपर दवाव डालने से क्या मिलेगा ?"

"तुम्हें न खोने का लाभ।"

"जो तुम्हारा नहीं है उसे खो देने के बारे में बात करने का अधिकार नहीं है। तुम्हारे अपने नज़रिए से भी नहीं," इज़ाबेल ने जोड़ा, "तुम्हें जानना चाहिए कि किसीको किसी वक्त अकेले भी छोड़ देना चाहिए।"

"मैं तुम्हें ज्यादा उबा देता हूं," कैस्पर गुडवुड ने उदासी के साथ कहा—इस तरह से नहीं कि वह उसमें दया जगा दे बल्कि इस तरह जैसे वह अपनी असलियत अपने सामने रखकर चलना चाहता हो।

"हां, तुम मुझे बिलकुल प्रसन्न नहीं कर रहे। तुम इस समय फिट बैठते ही

नहीं—किसी भी तरह से नहीं। और तुम्हारा इसे साबित करने का यह ढंग बहुत खराब और अनावश्यक है।" गुडबुड का स्वभाव इतना कोमल नहीं था कि सूई की चुभन से उसमें से खून निकल आता। गुडवुड के साथ अपने परिचय के आरम्भ से ही उसे उस आदमी के इस भाव के साथ संघर्ष करना पड़ता था—कि वह स्वयं अपनी भलाई को उतना नहीं समझती जितना कि वह समझता है। तभी से उसे पता चल गया था कि वह सबसे अच्छा जो हथियार इस्तेमाल कर सकती है वह है, खुलकर बात करना। उस आदमी की भावना का ख्याल रखने या उससे बचकर निकल जाने का प्रयत्न बेकार था। ऐसा उस आदमी के साथ किया जा सकता था जो बिल्कुल सामने पड़कर रास्ता रोकने वाला न हो। पर कैस्पर गुडवुड के साथ जो दूसरों के दिए किसी भी, और किसी भी तरह के, हत्थे को झपटने के लिए तैयार रहता था, यह अपनी शक्ति का अपव्यय था। यह नहीं कि उस आदमी को कोई चोट पहुंचती ही नहीं थी। पर उसकी बाहरी सतह, अपने निष्क्रिय तथा सक्रिय दोनों रूपों में काफी विशाल और सख्त थी और वह जरूरत के मुताबिक खुद अपने घावों की मरहमपट्टी कर सकता था। उस आदमी के अन्दर पीड़ा और मन्त्रणा की सम्भावनाओं के रहते भी इज़ाबेल को अपना पुराना दृष्टिकोण ही सही लग रहा था कि कुदरत ने ही गुडवुड पर फौलाद की एक पत्ती चढ़ा रखी है और कि उसका वास्तविक निर्माण जैसे आक्रमण सहने के लिए ही हुआ है।

"मैं इससे समझौता नहीं कर सकता," उसने केवल इतना ही कहा। उसमें एक खतरनाक स्वेच्छाचारिता थी। इज़ाबेल ने महसूस किया कि उसके लिए यह कहना कितना सरल है कि उसने उसे हमेशा परेशान नहीं किया।

"मैं भी अपने को तुम्हारी बात के लिए राजी नहीं कर सकती, और यह कोई ठीक व्यवस्था नहीं है जो हमारे बीच बनी रहे। अगर तुम कुछ महीनों के लिए मुझे अपने मन से बिल्कुल निकाल दो तो हम फिर से एक दूसरे के साथ सद्व्यवहार कर सकेंगे।"

"मैं तुम्हारे बारे में एक निश्चित समय तक सोचना बन्द कर सकूं तो मेरा ख्याल है मैं इसे अनिश्चित समय तक भी चला सकूंगा।"

"अनिश्चित समय मेरी मांग से ज्यादा है। यह उससे भी ज्यादा है जितना मुझे पसन्द है।

"तुम जानती हो कि तुम जो चाहती हो वह असम्भव है," उस नवयुवक ने

कहा। उसने अपने विशेषण का इस तरह प्रयोग किया कि उससे इज़ाबेल कुढ़ गई।

"क्या तुम एक व्यवस्थित प्रयास के काबिल नहीं हो ?" उसने पूछा। "तुम और सब बातों से सबल हो ; फिर इसी के लिए क्यों सबल नहीं हो सकते ?"

"एक व्यवस्थित प्रयास किसके लिए ? मैं तुम्हें लेकर किसी चीज़ के काबिल नहीं हूं," वह कहता गया, "सिवाय तुम्हारे साथ व्याकुल प्यार करने के। अगर एक आदमी सबल है तो वह हमेशा उतनी ही सबलता से प्यार करता है।"

"इसमें बहुत कुछ सच है," और सच ही हमारी नवयुवती ने इस तर्क की शक्ति महसूस की। सचाई और कविता के विस्तार में फेंका गया वह तर्क उसका कल्पना के लिए एक प्रलोभन था। लेकिन वह जल्दी ही संभल गई।

"मेरे बारे में सोचो या न सोचो, जैसा भी तुम्हें सम्भव लगे करो। सिर्फ मुझे अकेली छोड़ दो।"

"कब तक ?"

"एक या दो साल के लिए।"

"पर तुम्हारा मतलब क्या है ? एक या दो साल के बीच दुनिया भर का अन्तर है।"

"तो दो ही कहो," इज़ाबेल ने उत्सुक भाव से कहा।

"और उससे मुझे क्या लाभ होगा ?" उसके दोस्त ने बिना हिचकिचाए पूछा।

"तुम मुझपर बहुत एहसान करोगे।"

"और उसके लिए मेरा पुरस्कार क्या होगा ?"

"क्या तुम्हें एक उदार काम के लिए भी पुरस्कार की आवश्यकता है ?"

"हां, जबकि उसमें इतना बड़ा बलिदान देना हो।"

"कोई भी उदार काम बिना बलिदान के नहीं होता। पुरुष लोग ऐसी बातें क्यों नहीं समझते ? अगर तुम यह बलिदान करोगे तो तुम्हें मेरी ओर से पूरी प्रशंसा मिलेगी।"

"मुझे प्रशंसा की धेला-भर परवाह नहीं है—एक तिनका भर भी नहीं। तुम मुझसे शादी कब करोगी ? यही एक प्रश्न है।"

"कभी नहीं—अगर तुम मुझे ऐसा ही महसूस कराते रहोगे, जैसा कि मैं अब

महसूस कर रही हूं।"

"अगर मैं तुम्हें ऐसा महसूस न कराऊं, तो मुझे क्या हासिल होगा ?"

"तुम्हें वही हासिल होगा जो मरने की हद तक मुझे परेशान करके होगा।" कैस्पर गुडवुड की आंखें फिर झुक गईं और वह पल-भर अपने हैट के घेरे में देखता रहा। उसके चेहरे पर गहरी सुर्खी घिर आई थी। इज़ाबेल को लगा कि आखिर उसका तीखापन उस आदमी को जा चुभा है। इसका इज़ाबेल के लिए एक अज्ञात मूल्य था—क्लासिक, रूमानी, उद्धारक। 'शक्तिशाली व्यक्ति का दर्द', मानवीय संवेदना को जगाने की एक विशेष क्षमता रखता था, हालांकि वर्तमान परिस्थिति में उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ रहा था।" तुम मुझे अपने से ये बाते कहने का मौका क्यों देते हो ?" वह कांपती आवाज़ में चीखी, "मैं सिर्फ शिष्ट रहना चाहती हूं—पूर्णतया उदार। यह मुझे अच्छा नहीं लगता कि लोग मेरे बारे में ख्याल करें और लोगों को मना करने के लिए मुझे कोशिश से कारण देने पड़ें। मेरे ख्याल में और लोगों को भी थोड़ा सोचना चाहिए; हमें अपने को भी परखना चाहिए। मैं जानती हूं तुम उतने ही दूरदर्शी हो, जितना कि तुम्हें होना चाहिए; जो कुछ तुम करते हो उसके लिए तुम्हारे पास उचित कारण हैं। लेकिन मैं सच ही तुम्हारे साथ शादी नहीं करना चाहती। उसके बारे में बात ही नहीं करना चाहती। मैं शायद शादी कभी न करूं—मुझे ऐसा सोचने का पूरा अधिकार है, और यह एक स्त्री के साथ कोई भलाई नहीं है कि तुम उसे मजबूर करो—उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध चलने के लिए बाध्य करो। अगर मैं तुम्हें इस समय दुःख दे रही हूं, तो मैं सिर्फ इतना ही कह सकती हूं कि मुझे इस बात का दुःख है। यह मेरी गलती नहीं है; मैं सिर्फ तुम्हें प्रसन्न करने के लिए तुम्हारे साथ शादी नहीं कर सकती। मैं यह नहीं कहूंगी कि मैं हमेशा तुम्हारी मित्र रहूंगी, क्योंकि जब स्त्रियां ऐसी स्थिति में ऐसा कहती हैं, तो यही समझा जाता है कि वे मज़ाक कर रही हैं। लेकिन मुझे किसी दिन आज़मा कर देख लेना।"

कैस्पर गुडवुड ने इस वार्तालाप के दौरान, अपनी नज़र को अपनी टोपी के निर्माता के नाम पर गड़ाये रखा। इज़ाबेल ने बोलना बन्द कर दिया तो उसके कुछ क्षण बाद उसने आंखें ऊपर उठाईं। ऐसा करने पर इज़ाबेल के गुलाबी, सुन्दर, उत्सुक चेहरे को देखकर उसने उसके शब्दों को समझने में दुविधा महसूस की। "मैं अब घर जाऊंगा—और कल लौट जाऊंगा—मैं तुम्हें अकेली छोड़

दूंगा।" वह आखिर बोला, "सिर्फ" उसने भारी आवाज़ में कहा, "मुझे तुम्हें न देख सकने का दुःख होगा।"

"घबराओ नहीं। मैं तुम्हें कोई हानि नहीं पहुंचाऊंगी।"

"तुम किसी और से शादी कर लोगी, यह उतना ही सच है, जितना कि मेरा यहां होना," कैस्पर गुडवुड ने स्पष्ट घोषणा की।

"क्या तुम इसे उचित अभियोग समझते हो?"

"क्यों नहीं? कितने ही पुरुष तुम्हें पत्नी बनाने की कोशिश करेंगे।"

"मैंने तुमसे अभी कहा है न कि मैं शादी करने की इच्छुक नहीं हूं और कि सम्भवतः कभी नहीं करूंगी।"

"मैं जानता हूं कि तुमने ऐसा कहा है, और मुझे तुम्हारा 'सम्भवतः' पसन्द आया है। जो तुम कहती हो उसमें मुझे तनिक भी विश्वास नहीं है।"

"बहुत धन्यवाद। क्या तुम अपने को टालने का मुझपर अभियोग लगा रहे हो? तुम बहुत नाज़ुक बातें करते हो।"

"मैं ऐसा क्यों न कहूं? तुमने मुझसे किसी चीज़ का वायदा नहीं दिया है।"

"नहीं, एक इसी की कमी है।"

"तुम शायद यह भी सोचती होंगी कि तुम सुरक्षित हो—सिर्फ ऐसी इच्छा रखने से ही। लेकिन तुम नहीं हो," वह नवयुवक बोलता गया, मानो वह अपने को सबसे बुरी परिस्थिति के लिए तैयार कर रहा हो।

"ठीक है। हम इसे इस तरह रखते हैं कि मैं सुरक्षित नहीं हूं। जैसा तुम्हें पसन्द हो वैसा समझो।"

"बहरहाल मैं नहीं समझता," कैस्पर गुडवुड बोला, "कि मैं तुम्हें अपनी नज़र के सामने रखकर भी इस चीज़ से रोक सकूंगा।"

"सच में नहीं? मैं तो तुमसे बहुत डरती हूं। क्या तुम सोचते हो कि मैं आसानी से प्रसन्न हो जाती हूं?" उसने अचानक अपनी आवाज़ बदलकर पूछा।

"नहीं—मैं नहीं सोचता, मैं अपने को इसीसे तस्कीन देने की कोशिश करूंगा। लेकिन निःसन्देह दुनिया में काफी प्रभावोत्पादक लोग हैं, और अगर एक भी हो तो काफी है। उनमें सबसे प्रभावोत्पादक व्यक्ति तुम्हें सीधा घेर लेगा। यह निश्चित है कि बिना प्रभावित हुए तुम किसीको स्वीकार नहीं करोगी।"

"अगर प्रभावोत्पादक होने से तुम्हारा मतलब बहुत होशियार होने से है,"

इज़ाबेल बोली, "और मैं कल्पना नहीं कर सकती कि तुम्हारा और क्या मतलब हो सकता है—तो मुझे यह बतलाने के लिए किसी होशियार आदमी की ज़रूरत नहीं है कि कैसे जीना चाहिए। मैं यह खुद ही जान सकती हूं।"

"यही जान सकती हो कि अकेली कैसे रहा जा सकता है ? मैं चाहता हूं कि जब तुम जान जाओ तो मुझे भी सिखा देना।"

उसने एक क्षण के लिए उसे देखा, फिर एक जल्दी की मुस्कराहट के साथ, "ओह, तुम्हें तो शादी करनी ही चाहिए !" उसने कहा।

उसे क्षमा किया जाना चाहिए, अगर एक क्षण के लिए गुडवुड को यह बात नाटकीय-सी लगी। यह निश्चित नहीं है कि जिस उद्देश्य से इज़ाबेल ने यह तीखी बात कही वह बहुत निर्मल ही थी। गुडवुड को इस तरह भूखा और कमज़ोर रह-कर भटकना नहीं चाहिए, इतना उसने उसके लिए आवश्यक महसूस किया था। "ईश्वर तुम्हें क्षमा करे !" गुडवुड अपने दांतों के बीच बुदबुदाता मुड़ पड़ा।

इज़ाबेल के बात करने के लहजे ने हल्के से उसे गलती पर डाल दिया था और एक क्षण के बाद उसने अपने को सही करने की ज़रूरत महसूस की। इसका सबसे सरल तरीका यह था कि वह गुडवुड को उस स्थान पर रखे जहां वह स्वयं थी। "तुम मेरे प्रति बहुत अन्याय करते हो—तुम वह बात कहते हो जिसे तुम जानते नहीं !" वह फूटी, "मैं एक आसान शिकार नहीं हूं—यह मैंने साबित कर दिया है।"

"मुझे लेकर यह बिलकुल ठीक है।"

"मैंने औरों को लेकर भी साबित किया है।" और वह एक क्षण के लिए रुकी। "मैंने पिछले सप्ताह विवाह के एक प्रस्ताव को ठुकराया है—उसे निःसंदेह एक प्रभावोत्पादक व्यक्ति कहा जा सकता है।"

"मुझे सुनकर बहुत खुशी हुई है," नवयुवक ने गम्भीरता से कहा।

"वह एक ऐसा प्रस्ताव था, जिसे बहुत-सी लड़कियां स्वीकार कर लेतीं। उसमें प्रशंसा योग्य सभी बातें थीं।" इज़ाबेल सारी कहानी सुनाने के हक में नहीं थी। लेकिन अब बात शुरू हो गई थी, तो सब कुछ कह देने की तसल्ली से अपने साथ न्याय करने की भावना ने उसपर अधिकार कर लिया था। "मुझे एक महान् रुतबा ओहदा और सम्पत्ति देने का वायदा किया गया था—एक ऐसे व्यक्ति द्वारा जिसे मैं बहुत पसन्द करती हूं।"

कैस्पर ने उसे अत्यन्त कौतुक से देखा। "क्या वह एक अंग्रेज़ है ?"

"वह एक अंग्रेज़ सम्भ्रांत व्यक्ति है," इज़ाबेल ने कहा।

पहले तो गुडवुड ने उसके विवरण को खामोशी से सुना, लेकिन अन्त में बोला, "मैं खुश हूं कि वह निराश हुआ है।"

"फिर तो दुर्भाग्य में भी तुम्हारा कोई साथी है। तुम इससे खुश हो सकते हो।"

"मैं उसे अपना साथी नहीं कहता," कैस्पर ने गम्भीरता से कहा।

"क्यों नहीं—जबकि मैंने उसके प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया है ?"

"यह उसे मेरा साथी नहीं बनाता। इसके अतिरिक्त वह अंग्रेज़ है।"

"कृपा करके बताना क्या अंग्रेज़ इन्सान नहीं होते ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"ओह, वे लोग ? वे मेरी इन्सानियत के अंश नहीं हैं। और मुझे परवाह नहीं कि उनके साथ क्या होता है।"

"तुम बहुत गुस्से में हो," लड़की ने कहा, "हमने इस विषय पर काफी चर्चा कर ली है।"

"हां, मैं बहुत गुस्से में हूं। यह मैं स्वीकार करता हूं।"

इज़ाबेल उसकी तरफ से मुड़कर खुली खिड़की के पास चली गई और पल-भर सड़क के अंधेरे शून्य को देखती खड़ी रही, जहां केवल एक गैस की बत्ती सामाजिक स्पन्दन का प्रतिनिधित्व कर रही थी। कुछ देर दोनों में से कोई नहीं बोला। कैस्पर विषाद भरी आंखों से चिमनी को देखता वहीं खड़ा रहा। इज़ाबेल ने लगभग उससे जाने के लिए कह दिया था—वह यह जानता था। पर घृणास्पद बनने का खतरा उठाकर भी वह अपनी जगह पर बना रहा। इज़ाबेल उसके लिए इतने दिनों की पोषित एक कामना थी जिसे वह आसानी से तिलांजलि नहीं दे सकता था। वह उससे हलका-सा वचन पाने के लिए ही समुद्र लांघकर आया था। अब इज़ाबेल खिड़की से हटकर फिर से उसके सामने आ खड़ी हुई। "तुम मेरे साथ बहुत कम न्याय कर रहे हो—मेरे वह सब कहने के बाद जो कुछ मैंने तुमसे अभी कहा है। मुझे अफसोस है कि मैंने वह सब तुमसे कहा—जबकि तुम्हारे लिए वे सब बातें बहुत कम मतलब रखती हैं।"

"ओह," नवयुवक बोला, "अगर तुम वह सब कहते वक्त मेरे बारे में सोच रही थीं···" और तब वह इस भय से रुक गया कि कहीं इज़ाबेल उसके इस खुशी

के ख्याल को काट न दे।

"हां, मैं तुम्हारे बारे में थोड़ा-सा सोच रही थी," इज़ाबेल बोली।

"थोड़ा-सा ? मैं समझा नहीं। मैं तुम्हारे बारे में क्या सोचता हूं, अगर तुम्हारी नज़र में इसका कुछ भी महत्त्व होता, तो तुम जान सकतीं कि थोड़ा-सा सोचना उसका कुछ भी प्रतिदान नहीं है।"

इज़ाबेल ने अपना सिर इस तरह से हिलाया मानो वह किसी भूल को उड़ा देना चाहती हो। "मैंने एक बहुत ही संभ्रान्त व्यक्ति को इन्कार किया है। इससे ज्यादा से ज्यादा जो सोच सकते हो सोच लो।"

"मैं तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूं," कैस्पर गुडवुड ने गम्भीरता से कहा, "मैं तुम्हारा बहुत शुक्रगुज़ार हूं।"

"और अब तुम्हें घर जाना चाहिए।"

"क्या मैं तुमसे फिर नहीं मिल सकता ?" गुडवुड ने पूछा।

"मेरे ख्याल में न मिलना ही बेहतर होगा। तुम निश्चित रूप से फिर यही बात करोगे, और तुमने देखा है वह बात हमें कहीं नहीं पहुंचाती।"

"मैं तुम्हें वचन देता हूं कि मैं कुछ ऐसा नहीं कहूंगा जो तुम्हें अप्रसन्न करे।"

इज़ाबेल ने थोड़ा सोचा। फिर जवाब दिया, "मैं एक या दो दिन में अपने अंकल के पास लौट जाऊंगी, और मैं तुम्हें वहां आने का सुझाव नहीं दे सकती। वह बहुत असंगत होगा।"

कैस्पर गुडवुड ने अपनी जगह सोचा। "तुम्हें मेरे साथ भी न्याय करना चाहिए। मुझे तुम्हारे अंकल के पास से एक सप्ताह पहले निमन्त्रण आया था जिसे मैंने अस्वीकार कर दिया था।

इज़ाबेल ने आश्चर्य प्रकट किया। "निमन्त्रण किसकी तरफ से था ?"

"मिस्टर रैल्फ टाउशेट की तरफ से, जो कि मैं समझता हूं तुम्हारा कज़िन है। मैंने इसलिए अस्वीकार कर दिया क्योंकि उसे स्वीकार करने की आज्ञा मुझे तुमसे नहीं मिली थी। मिस्टर टाउशेट मुझे निमन्त्रित करे, यह सलाह मेरे ख्याल में मिस स्टैकपोल ने उसे दी होगी।"

"मेरी तरफ से यह सलाह अवश्य ही नहीं थी। हेनरीटा सच ही बहुत दूर तक जाती है," इज़ाबेल ने जोड़ा।

"उसके प्रति बहुत कठोर मत बनो—मुझे दुःख होता है।"

"नहीं। अगर तुमने इन्कार कर दिया है, तो तुमने बिलकुल ठीक किया है और मैं तुम्हें उसके लिए धन्यवाद देती हूं।" और उसने इस हताशा के ख्याल से अपने कन्धे झटक लिए कि लार्ड वारबर्टन और मिस्टर गुडवुड गार्डनकोट में एक साथ मिलते, तो लार्ड वारबर्टन के लिए वह कितना अजीब हो जाता।

"जब तुम अपने अंकल के यहां से चलोगी तो कहां जाओगी ?" गुडवुड ने पूछा।

"मैं अपनी आंटी के साथ समुद्र पार जाऊंगी—फ्लारैन्स और अन्य स्थानों पर।"

इस विवरण की गम्भीरता ने उस नवयुवक के मन में झुरझुरी भर दी; वह इस तरह उसे देख रहा था मानो वह एक ऐसे भंवर में जा पड़ी हो जिससे वह सर्वथा अलग और बाहर हो। फिर भी वह जल्दी से सवाल करता गया, "और तुम अमरीका कब लौटोगी ?"

"शायद काफी देर तक नहीं। मैं यहां बहुत खुश हूं।"

"क्या तुम अपना देश छोड़ देना चाहती हो ?"

"बच्चे मत बनो !"

"खैर, तुम मेरी नज़र से तो ज़रूर परे रहोगी !" कैस्पर गुडवुड ने कहा।

"मैं नहीं जानती," इज़ाबेल ने काफी शान से कहा, "यह दुनिया—अपने उन स्थानों के साथ जो कि एक-दूसरे को छूते हैं—व्यक्ति को बहुत छोटी जान पड़ती है।"

"यह दृश्य मेरे लिए बहुत बड़ा है !" कैस्पर ने इतनी सादगी से यह बात कही कि इज़ाबेल उसे बहुत हृदयस्पर्शी पाती यदि उसका चेहरा थोड़ा मुड़ा न होता।

यह बर्ताव उसके स्वभाव का हिस्सा था—एक सिद्धांत था, जिसे कि उसने अभी ही अपनाया था और समापन के तौर पर उसने एक क्षण के बाद कहा, "मुझे बेरहम मत समझना अगर मैं कहूं कि बात यही है—तुम्हारी आंखों से दूर रहना ही मुझे पसन्द है। अगर तुम भी उसी जगह होते तो मैं महसूस करती कि तुम मुझे देख रहे हो, और यही मुझे पसन्द नहीं है—मुझे अपनी स्वतन्त्रता बहुत पसन्द है। अगर दुनिया में कोई चीज़ है जिसकी मुझे चाह है," वह एक हल्के-से बड़प्पन के साथ कहती गई, "तो वह मेरी निजी स्वतन्त्रता है।"

इज़ाबेल की बात की ऊंचाई के लिए कैस्पर के मन में प्रशंसा तो जागी, पर वह उस बड़प्पन से अचकचाया नहीं। उसने यह कभी नहीं सोचा था कि इज़ाबेल के पास पंख ही नहीं हैं या कि उसे खूबसूरत स्वतन्त्र उड़ानों की आवश्यकता ही नहीं है। उसे अपने लम्बे हाथों और कदमों के कारण उसकी शक्ति से ज़रा भी डर नहीं लगता था। इज़ाबेल के शब्द, अगर उसे भौंचक करने के लिए थे, तो अपने लक्ष्य में वे असफल रहे। यह सोचकर कि दोनों के बीच एक सामान्य भूमि है, वह मुस्करा दिया। "कौन मुझसे कम तुम्हारी स्वतन्त्रता को टोकना चाहेगा? मुझे इससे ज़्यादा क्या खुशी मिल सकती है, कि तुम्हें पूर्णतया स्वतन्त्र देखूं—वह सब करते देखूं जो तुम करना चाहो। तुम्हें स्वतन्त्र रखने के लिए ही मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं।"

"यह एक सुन्दर विरोधाभास है।" उस लड़की ने और भी सुन्दर मुस्कराहट के साथ कहा।

"एक अविवाहिता स्त्री—तुम्हारी उम्र की लड़की—स्वतन्त्र नहीं होती। और कई तरह की चीज़ें हैं, जो वह नहीं कर सकती। उसे हर कदम पर टोका जाता है।"

"यह उसपर निर्भर करता है कि वह प्रश्न को कैसे लेती है," इज़ाबेल ने उत्साह के साथ कहा, "मैं अपने आरम्भिक यौवन में नहीं हूं—मैं जो चाहूं कर सकती हूं—मैं एक काफी स्वतन्त्र वर्ग से सम्बन्ध रखती हूं। मेरा न बाप है न मां है। मैं गरीब और गम्भीर स्वभाव की हूं; मैं सुन्दर नहीं हूं। इसलिए पालतू और रूढ़िवादी होने को बाध्य नहीं हूं; मैं इन सुविधाओं को पा ही नहीं सकती। इसके अतिरिक्त मैं चीज़ों के बारे में स्वयं निर्णय लेने की कोशिश करती हूं। गलत निर्णय लेना मेरे ख्याल में बेहतर है, बिलकुल निर्णय न लेने से। मैं रेवड़ में महज़ एक भेड़ नहीं बनना चाहती; मैं अपना भाग्य स्वयं चुनना चाहती हूं और मानव विषयों के संबंध में उससे ज़्यादा जानती हूं, जितना कि लोग मुझे बताना उचित समझते हैं।" वह एक क्षण के लिए रुकी, लेकिन इतनी देर नहीं कि उसका साथी कुछ जवाब दे सके। वह स्पष्टतः जवाब देने को ही था जब वह आगे बोली, "मुझे अपनी बात कहने दो मिस्टर गुडवुड। तुम इतने अच्छे हो कि तुम्हें मेरे शादी कर लेने का डर है। अगर तुम कभी अफवाह सुनो कि मैं ऐसा करने जा रही हूं—लड़कियों के बारे में ऐसा बाहर जाना सम्भव है—तो याद रखना कि

मैंने तुम्हें अपनी स्वतन्त्रता और साहस के बारे में क्या कहा था ?"

उसकी इस आवाज़ में, जिसमें उसने उसे यह सलाह दी; कुछ आवेश-भरी सच्चाई थी, और उसने गुडवुड की आंखों में एक चमकती लौ भर दी जिसने विश्वास करने में उसे सहायता दी। कुल मिलाकर उसने आश्वस्त महसूस किया। उसके बात करने के ढंग से यह स्पष्ट था। उसने बड़ी उत्सुकता से कहा, "तुम सिर्फ दो साल भ्रमण करना चाहती हो ? मैं दो साल इन्तज़ार करने को तैयार हूं, तुम इस अन्तराल में जो चाहो कर सकती हो। अगर यही सब तुम चाहती हो तो कृपया ऐसा कहो। मैं नहीं चाहता कि तुम रूढ़िवादी बनो। क्या मैं तुम्हें रूढ़िवादी लगता हूं ? तुम अपना मन विकसित करना चाहती हो ? तुम्हारा मन मेरे लिहाज़ से बहुत अच्छा है; लेकिन अगर तुम्हें कुछ समय के लिए घूमना ही अच्छा लगता है और तुम भिन्न-भिन्न देश देखना चाहती हो, तो मुझे पूरी शक्ति से तुम्हारी सहायता करके प्रसन्नता होगी।"

"तुम बहुत मेहरबान हो; पर मेरे लिए यह नई बात नहीं है। मेरी सहायता करने का सबसे बढ़िया तरीका यही है कि हमारे बीच कई हज़ार मील का समुद्र का विस्त.र रहे।"

"कोई समझेगा कि तुम शायद कोई भयंकर काम करने जा रही हो !" कैस्पर गुडवुड ने कहा।

"हो सकता है। मैं ऐसा काम करने के लिए भी स्वतन्त्र रहना चाहती हूं— अगर मेरी ऐसी इच्छा हो तो।"

"ठीक है," गुडवुड ने धीरे से कहा, "मैं अब घर जाऊंगा।" और उसने सन्तुष्ट और आश्वस्त दिखने की कोशिश करते हुए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

इज़ाबेल को कैस्पर में उससे कहीं अधिक विश्वास था जितना कि कैस्पर को उसमें था। कैस्पर यह तो नहीं सोचता था कि वह कोई भयंकर काम कर सकती है, पर मन में सोचते हुए उसे लग रहा था कि इज़ाबेल का यह अधिकार अपने पास रखना एक अपशकुन है। कैस्पर का हाथ अपने हाथ में लेने पर इज़ाबेल का मन आदर से भर गया। वह जानती थी कि कैस्पर उसे कितना चाहता है और उसका दिल कितना वड़ा है। पल-भर वे उसी तरह एक दूसरे की तरफ देखते खड़े रहे। उनके मिले हुए हाथ उन्हें आपस में जोड़े थे—और इज़ाबेल का हाथ

उस समय सर्वथा निष्क्रिय नहीं था। "ठीक है," वह बहुत नम्र और कोमल भाव से बोली, "एक समझदार व्यक्ति बने रहने में तुम्हारा कोई नुकसान नहीं है।"

"लेकिन मैं वापस आऊंगा, जहां पर भी तुम होगी—आज से दो साल बाद," उसने एक स्वाभाविक गम्भीरता से उत्तर दिया।

हमने देखा है कि हमारी नवयुवती अव्यवस्थित थी। इसपर अचानक उसका स्वर बदल गया। "लेकिन याद रखना मैं कोई वचन नहीं दे रही—बिलकुल नहीं।" फिर अपेक्षया कोमलता के साथ जिससे कि उसे विदा लेने में सहायता मिले, "और यह भी याद रखना कि मैं किसीकी सहज शिकार नहीं बनूंगी," उसने कहा।

"तुम अपनी स्वतन्त्रता से तंग आ जाओगी।"

"हो सकता है; यह काफी संभव भी है। जब वह दिन आएगा तो मुझे तुमसे मिलकर प्रसन्नता होगी।"

वह पल-भर उस दरवाज़े की कुण्डी पर हाथ रखे खड़ी रही जो अन्दर के कमरे में खुलता था—इस प्रतीक्षा में कि गुडवुड अब वहां से चलता है या नहीं। पर गुडवुड में जैसे चलने की शक्ति ही नहीं थी। उसके भाव में अनिच्छा और दृष्टि में शिकायत झलक रही थी। "मैं अब तुमसे विदा लूंगी," इज़ाबेल ने कहा, और दरवाज़ा खोलकर दूसरे कमरे में चली गई।

वह कमरा अंधेरा था, पर बाहर होटल के अहाते की धुंधली रोशनी खिड़की से अन्दर आ रही थी। उस रोशनी में वह ढेरों फर्नीचर को, मद्धिम से चमकते आईने को और चार खम्भों वाले पलंग को देख सकती थी। वह पल-भर आवाज़ सुनने के लिए रुकी रही। कुछ देर बाद गुडवुड के ड्राइंग-रूम से निकलकर पीछे दरवाज़ा वन्द करने की आवाज़ सुनाई दी। वह कुछ देर और चुपचाप खड़ी रही—फिर अनायास घुटनों के बल बिस्तर के पास बैठकर उसने अपना चेहरा बांहों में छिपा लिया।

१७

वह प्रार्थना नहीं कर रही थी—सिर से पांव तक कांप रही थी। कंपकंपी उसमें बहुत जल्दी भर जाती थी—अक्सर भर जाती थी—और अब वह छेड़ी गई वीणा की तरह आन्दोलित थी। वह केवल फिर से अपने गिलाफ में ढक जाना चाहती थी—भूरे कपड़े के गिलाफ में। वह चाहती थी कि उसकी उत्तेजना शान्त हो जाए। वह काफी देर उस उपासना की स्थिति में बनी रही, और उसमें उसे शांत होने में सहायता मिली। उसे बहुत खुशी थी कि कैस्पर गुडवुड आकर चला गया था। यह उसी तरह था जैसे मन पर किसी पुराने कर्ज़ का बोझ हो जिसे अदा करके उसने बाकायदा रसीद ले ली हो। अपने में उस सुख का अनुभव करते हुए उसका सिर थोड़ा और झुक गया। वह अनुभूति, वह स्पन्दन, उसकी भावना के एक अंश के रूप में विद्यमान था—पर यह एक लज्जाजनक बात थी; हीन और असंगत। वह दस मिनट उसी तरह घुटनों के बल बैठी रही, और उसके बाद उठ कर वापस ड्राइंग-रूम में आई तो भी अभी उसकी कंपकंपी शान्त नहीं हुई थी। इसके दो कारण थे। एक कारण था कैस्पर गुडवुड से हुई बातचीत, और दूसरा अपनी शक्ति के प्रयोग का आह्लाद। उसने फिर से अपने वाली कुर्सी पर बैठकर पुस्तक उठा ली, पर उसे खोलने का तरद्दुद नहीं किया। उसने हल्की कोमल भावपूर्ण बुदबुदाहट के साथ पीछे टेक लगा ली। यह बुदबुदाहट तब उसके मुंह से निकलती थी जब कोई ऐसी घटना हो जिसका बेहतर पक्ष बाहर से स्पष्ट न हो—इस समय उसका सम्बन्ध एक पखवारे के अन्दर दो उत्सुक प्रार्थियों को ठुकरा देने से था। अपने जिस स्वतन्त्रता-प्रेम का उसने गुडवुड के सामने खाका खींचा था, वह अब तक सर्वथा सैद्धान्तिक था—उसका वह खुलकर उपभोग नहीं कर पाई थी। पर उसे लग रहा था कि उसने कुछ ज़रूर किया है—युद्ध का नहीं, तो विजय का आनन्द तो पा ही लिया है। इस चेतना के प्रकाश में उसे अंधेरे शहर में से होकर घर की ओर जाती हुई गुडवुड की आकृति एक तीव्र भर्त्सना-सी जान पड़ रही थी। इसलिए उसी समय जब दरवाज़ा खुला, तो उसे लगा कि गुडवुड लौट आया है। पर वह हेनरीटा स्टैकपोल थी जो डिनर से लौटकर आई थी।

मिस स्टैकपोल ने आते ही भांप लिया कि इज़ाबेल कोई काम 'समाप्त करके' हटी है—और इस जानकारी के लिए बहुत भेदक दृष्टि की आवश्यकता नहीं थी।

वह सीधी इज़ाबेल के पास आ गई। इज़ाबेल ने उसे देखकर अभिवादन नहीं किया। कैस्पर गुडवुड को वापस अमरीका भेज देने के इज़ाबेल के उत्साह में यह खुशी भी शामिल थी कि वह वहां उससे मिलने के लिए आया था। पर साथ ही उसे यह अहसास भी उसके मन में अब तक बना था कि हेनरीटा स्टैकपोल को कोई अधिकार नहीं था कि वह उसे जाल में फंसाने का प्रयत्न करे। "वह यहां आया था डियर ?" हेनरीटा ने उत्सुकता के साथ पूछा।

इज़ाबेल ने मुंह फेर लिया और कई क्षण कुछ नहीं कहा। "तुमने बहुत गलत काम किया है," आखिर वह बोली।

"मैंने अच्छे के लिए ही ऐसा किया था। मुझे आशा है तुमने भी जो ठीक था, वही किया होगा।"

"तुम कोई निर्णायक नहीं हो। मैं तुमपर विश्वास नहीं कर सकती," इज़ाबेल बोली।

यह बात प्रशंसापूर्ण नहीं थी, लेकिन हेनरीटा इतनी ज्यादा स्वार्थहीन थी कि इस अभियोग की तरफ उसका ध्यान ही नहीं गया। उसे सिर्फ इस बात से मतलब था कि उसके प्रिय मित्र के सम्बन्ध में क्या कहा गया है। "इज़ाबेल आर्चर," उसने आकस्मिक किन्तु गम्भीर ढंग से कहा, "अगर तुम इनमें से किसी एक के साथ शादी करोगी तो मैं तुम्हारे साथ कभी बात नहीं करूंगी।"

"इतनी भयंकर धमकी देने से पहले तुम्हें तब तक इन्तज़ार करना चाहिए जब तक मुझसे कोई प्रस्ताव नहीं करता," इज़ाबेल ने जवाब दिया। मिस स्टैकपोल को लार्ड वारबर्टन के प्रस्ताव के सम्बन्ध में न बताने के कारण अब उसमें उत्साह ही नहीं था कि हेनरीटा के सामने यह बात रखे कि उसने उस सम्भ्रान्त व्यक्ति को ठुकरा दिया है।

"ओह, तुमसे बहुत जल्दी प्रस्ताव किए जाएंगे—बस एक बार तुम कांटिनेंट में पहुंच जाओ। क्लाइम्बर से जब वह इटली में थी, तीन-तीन लोगों ने प्रस्ताव किया था—बेचारी छोटी सीधी-सी एनी से।"

"खैर, एनी क्लाइम्बर अगर नहीं फंसी, तो मैं ही क्यों फंस जाऊंगी ?"

"मैं नहीं सोचती कि एनी पर ज़ोर डाला गया होगा, लेकिन तुमपर ज़रूर ज़ोर डाला जाएगा।"

"यह तो मन खुश रखने की बात है," इज़ाबेल ने बिना आश्चर्य के कहा।

"मैं सच कह रही हूं, तुम्हारा मन खुश नहीं कर रही इज़ाबेल आर्चर !" हेनरीटा ज़ोर देकर बोली, "मेरा ख्याल है तुम्हारा मतलब यह नहीं है कि तुमने मिस्टर गुडवुड को कोई आशा नहीं बंधाई ।"

"मैं नहीं समझती कि मैं तुम्हें क्या कुछ बताऊं। जैसे कि मैंने तुमसे अभी कहा है, मैं तुमपर विश्वास नहीं कर सकती । लेकिन जब तुम मिस्टर गुडवुड में इतनी ज़्यादा दिलचस्पी लेती हो तो मैं तुमसे नहीं छिपाऊंगी कि वह अमरीका लौट रहा है ।"

"तुम्हारे कहने का यह तो मतलब नहीं कि तुमने उसे लौटा दिया है ?" हेनरीटा लगभग चीखी ।

"मैंने उससे मुझे अकेली छोड़ने को कहा है। मैं तुमसे भी यही कहूंगी ।" मिस स्टैकपोल तत्काल निराशा से चमक गई और फिर चिमनी के शीशे तक जाकर उसने अपनी टोपी उतार दी । "मुझे उम्मीद है तुम्हारा डिनर मज़ेदार रहा," इज़ाबेल बोली ।

लेकिन उसकी मित्र छिछली बातों से भटकने वाली नहीं थी । "तुम जानती हो तुम कहां जा रही हो, इज़ाबेल आर्चर ?"

"इस वक्त तो मैं बिस्तर में जा रही हूं," इज़ाबेल ने छिछलेपन को कायम रखते हुए कहा ।

"तुम जानती हो तुम वहां नहीं जा रही हो ?" हेनरीटा ने अपनी टोपी को नज़ाकत से पकड़े हुए बात ज़ारी रखी ।

"नहीं, मुझे ज़रा भी पता नहीं है । और न जानना मुझे अच्छा लग रहा है । एक तेज़ बग्घी अंधेरी रात में, चार घोड़ों द्वारा घुप सड़क पर खड़खड़ाती हुई खींची जा रही हो—मेरी प्रसन्नता का यही आदर्श है ।"

"मिस्टर गुडवुड ने निःसन्देह तुम्हें ऐसी बातें करना नहीं सिखाया—जो एक आदर्शहीन उपन्यास की नायिका जैसी हैं," मिस स्टैकपोल ने कहा, "तुम किसी बड़ी गलती की तरफ बही जा रही हो ।"

इज़ाबेल को हेनरीटा के दखल ने क्रुद्ध कर दिया था। फिर भी उसने यह समझने की कोशिश की कि यह घोषणा किस सचाई का प्रतिनिधित्व करती है । पर वह कुछ भी न सोच सकी और उसने रुख बदलकर कहा, "तुम मुझे बहुत पसन्द करती होगी हेनरीटा, जो तुम इतनी दुर्विनीत होने को तैयार हो ।"

"मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं, इज़ाबेल," मिस स्टैकपोल ने भावना के साथ कहा।

"अच्छा, अगर तुम मुझे बहुत प्यार करती हो, तो मुझे बहुत अकेली रहने दो। मैंने मिस्टर गुडवुड से भी यही मांगा है और मुझे तुमसे भी यही मांगना है।"

"ख्याल रखना कि तुम बहुत ज्यादा अकेली न रह जाओ।"

"यही मिस्टर गुडवुड ने भी मुझसे कहा था। मैंने उससे कहा था कि मुझे इसका खतरा उठाना चाहिए।"

"तुम खतरे की जीव हो—तुम मुझे कंपा देती हो।" हेनरीटा ने आश्चर्य के साथ कहा, "मिस्टर गुडवुड कब अमरीका लौट रहा है?"

"मैं नहीं जानती—उसने मुझे नहीं बताया।"

"हो सकता है, तुमने पूछा ही न हो," हेनरीटा ने नैतिक व्यंग्य के साथ कहा।

"मैंने उसे बहुत कम सन्तुष्ट किया है, इसलिए मुझे उससे प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं था।"

यह दावा मिस स्टैकपोल को एक क्षण के लिए बहुत अवज्ञापूर्ण लगा; लेकिन फिर वह आश्चर्य के साथ बोली, "खैर, इज़ाबेल; अगर मैं तुम्हें न जानती, तो शायद मैं सोचती कि तुम सचमुच हृदयहीन हो!"

"ख्याल रखो," इज़ाबेल बोली, "तुम मुझे बिगाड़ रही हो।"

"मुझे डर है कि ऐसा मैंने पहले ही कर दिया है। मुझे आशा है," मिस स्टैकपोल बोली, "कि वह कम से कम मिस क्लाइम्बर के साथ लौट सकेगा।"

अगले दिन इज़ाबेल को हेनरीटा से पता चला कि उसका अब लौटकर गार्डन-कोर्ट जाने का इरादा नहीं है (हालांकि बूढ़े मिस्टर टाउशेट ने उसे फिर से निमन्त्रण दे दिया था)। वह लन्दन में रुककर मिस्टर बैंटलिंग की बहन लेडी पेंसिल के निमन्त्रण का इन्तज़ार करना चाहती थी। हेनरीटा रैल्फ के उस मित्र के साथ हुई अपनी बातचीत विस्तार से इज़ाबेल को बताया करती और कहती कि अब कुछ ऐसा उसके हाथ लग गया है जिसका कुछ फल ज़रूर निकलेगा। लेडी पेंसिल का पत्र मिलते ही—मिस्टर बैंटलिंग ने उसे आश्वासन दिया था कि वह पत्र अब आता ही होगा—वह तुरन्त बेडफोर्डशायर के लिए चल देगी। वहां के सम्बन्ध में उसके इम्प्रेशन्ज़ इज़ाबेल पढ़ना चाहे, तो वे उसे 'इंटरव्यूअर' में मिल जाएंगे। इस बार हेनरीटा को पूरा विश्वास था कि वह अन्दरूनी ज़िन्दगी का कुछ हिस्सा

देख सकेगी।

"तुम्हें पता है तुस किस तरफ बह रही हो हेनरीटा स्टैकपोल ?" इज़ाबेल ने पिछली रात के उसके स्वर का अनुकरण करते पूछा।

"अमरीकन पत्रकारिता की रानी बनने की दिशा में। 'मेरा अगला पत्र सारे पच्छिम में उद्धृत नहीं हुआ तो मैं अपना कलम तोड़ दूंगी।"

हेनरीटा ने अपनी मित्र एनी क्लाइम्बर से, जिसे कान्टिनेंट में आकर कई प्रस्ताव मिले थे, यह तय किया था कि वह उसके साथ चीज़ें खरीदने के लिए चलेगी। जिस प्रदेश में आकर मिस क्लाइम्बर को कई एक प्रशंसक मिले थे, वहां से बिदा होते हुए वह कुछ चीज़े खरीदना चाहती थी। हेनरीटा अपनी मित्र को साथ लेने जर्मीन स्ट्रीट चली गई। उसके जाने के थोड़ी ही देर वाद रैल्फ टाउशेट के आने की घोषणा हुई। उसके आते ही इज़ाबेल ने भांप लिया कि कोई चीज़ उसके मन पर भारी है। उसने आते ही बात इज़ाबेल को बता दी। उसे अपनी मां का एक तार मिला था कि उसके पिता को अपनी पुरानी बीमारी का सख्त दौरा पड़ा है जिससे वे बहुत घबरा गई है और चाहती हैं कि वह तुरन्त गार्डन कोर्ट लौट आए। कम-से-कम इस अवसर पर मिसेज टाउशेट का तार से प्रेम आलोचना का विषय नहीं था।

"मैंने निर्णय किया है कि मैं पहले उस महान डाक्टर से मिलूंगा, सर मैथ्यू होप से", रैल्फ बोला, "खुशकिस्मती से वह शहर में है। वह मुझे साढ़े बारह बजे मिलेगा, और मैं उससे यह बात तय करूंगा, कि वह गार्डन कोर्ट चले—वह अवश्य चलेगा क्योंकि उसने पहले कई बार मेरे पिता को देखा है। लन्दन से ही। एक एक्सप्रेस दो पैंतालीस पर चलती है, जिसे मैं पकडूंगा। तुम मेरे साथ चलोगी या कुछ दिन और रहना चाहोगी ? वैसे करो जैसे तुम्हें पसन्द हो।"

"मैं अवश्य तुम्हारे साथ ही चलूंगी," इज़ाबेल ने जवाब दिया। "मैं नहीं सोचती कि मैं अपने अंकल के किसी काम आ सकती हूं, लेकिन चूंकि वे बीमार हैं इसलिए मैं उनके पास होना चाहूंगी।"

"मेरा ख्याल है, तुम उन्हें पसन्द करती हो।" रैल्फ ने चेहरे पर एक निश्चित सुख के भाव के साथ कहा। "तुम उनकी प्रशंसा करती हो, जो कि पूरी दुनिया ने नहीं की। यह गुण बहुत बड़ा है।"

"मैं उन्हें काफी पसन्द करती हूं", इज़ाबेल ने एक क्षण के बाद कहा।

"यह बहुत अच्छा है। उनके बेटे के बाद वही तुम्हारे सबसे बड़े प्रशंसक हैं।"

इज़ाबेल ने इस आश्वासन का स्वागत किया; लेकिन उसने एक बड़ी ही रहस्यमयी निवृत्ति की छोटी-सी उसांस भी भरी, कि उसके प्रशंसकों में मिस्टर टाउशेट ही एक ऐसे हैं जो उससे शादी का प्रस्ताव नहीं कर सकते। किन्तु वह यह नहीं था, जो उसने मुंह से कहा। वह रैल्फ़ को बताने लगी कि उसके लन्दन में न रहने के अन्य कारण भी हैं। वह वहां से ऊब गई है, और उस शहर को छोड़ना चाहती है; और कि हेनरीटा भी जा रही है—बैडफोर्ड शायर में रहने।"

"बैडफोर्ड शायर में रहने?"

"लेडी पेन्सिल—मिस्टर बैंटलिंग की बहन के साथ—जो उसे लिखकर निमन्त्रण देगी।"

रैल्फ़ उत्सुक नज़र आ रहा था। लेकिन इसपर वह हंस दिया। अचानक, वह अपने सन्तुलन पर वापस आ गया।

"बैंटलिंग एक साहसी आदमी है। लेकिन अगर वह निमन्त्रण रास्ते में ही खो गया तो?"

"मैं सोचती थी कि इंग्लैण्ड का डाकघर निर्दोष है।"

"बेचारा अच्छा कबूतर तो कभी-कभी सिर हिला भी देता है," रैल्फ बोला, "लेकिन बैंटलिंग कभी नहीं हिलाता। जो भी हो वह हेनरीटा का ख्याल रखेगा।"

रैल्फ समय पर सर मैथ्यू होप से मिलने चला गया, और इज़ाबेल ने प्रैट्स होटल छोड़ने की तैयारी शुरू कर दी। उसके अंकल के जान के खतरे ने उसे छू दिया था। वह अपने खुले बक्से के आगे खड़ी अपने आस-पास बेतुके ढंग से देख रही थी कि उसमें क्या-क्या रखे, कि अचानक उसकी आंखों में पानी भर आया। सम्भव है इसी कारण से, जब दो बजे रैल्फ़ उसे स्टेशन ले जाने के लिए आया, तो वह अभी तैयार नहीं थी। रैल्फ ने मिस स्टैकपोल को ड्राइंग-रूम में देखा। वह अभी खाना खाकर उठी ही थी। इस महिला ने तत्काल उसके पिता की बीमारी को लेकर अफसोस प्रकट किया।

"वे महान व्यक्ति है," उसने कहा, "वे अन्त तक ईमानदार रहने वाले आदमी हैं। लेकिन यह सच ही अन्त है—मेरे संकेत के लिए क्षमा करना, लेकिन तुमने भी कई बार इस संभावना के बारे में सोचा होगा—मुझे अफसोस है कि मैं

गार्डनकोर्ट में नहीं रहूंगी।"

"तुम अपने को बैडफोर्ड शायर में काफी खुश रखोगी।"

"मुझे ऐसे समय खुश होकर दुःख होगा," हेनरीटा ने काफी संगति के साथ कहा। लेकिन उसने जल्दी ही जोड़ा, "मैं उस अन्तिम समय पर एक टिप्पणी लिखना चाहती।"

"हो सकता है मेरे पिता काफी समय जीवित रहें।" रैल्फ ने सादगी के साथ कहा। फिर अधिक सुखकर विषयों पर आते हुए रैल्फ ने मिस स्टैंकपोल से उसकी भविष्य की योजना के बारे में पूछा।

उस समय रैल्फ़ दुःख में था, इसलिए हेनरीटा ने काफी उदारता के साथ उससे बात की। उसने कहा कि वह मिस्टर बैंटलिंग से परिचय कराने के लिए उसके प्रति आभारी है। उसने मुझे कई ऐसी बातें बताई हैं जो मैं जानना चाहती थी," वह बोली। "समाज की और राजपरिवार की बहुत-सी बातें। मुझे नहीं लगता कि राजपरिवार की जो बातें वह बताता है, वे उन लोगों को कोई श्रेय देती हैं, पर वह कहता है कि मेरा उन्हें देखने का ढंग निराला है, इसलिए मुझे ऐसा लगता है। पर मैं उससे तथ्य चाहती हूं। उन्हें पाकर मैं बहुत जल्दी उनका मिलान कर सकती हूं।" फिर उसने बताया कि उस शाम मिस्टर बैंटलिंग उसे साथ बाहर ले जा रहा है।

"कहां ले जा रहा है?" रैल्फ ने पूछ लिया।

"बकिंघम पैलेस। वह मुझे वहां घुमा देगा ताकि मुझे पता चल जाए कि वे लोग कैसे रहते हैं।"

"तुम बहुत अच्छे हाथों में हो," रैल्फ बोला, "अब हमें पता चलेगा कि तुम्हें विंडभर कामल आने का निमन्त्रण मिल गया है।

"वे मुझसे कहेंगे, तो मैं ज़रूर जाऊंगी। मुझे डर नहीं लगता", फिर पल भर बाद वह बोली, "पर इज़ाबेल को लेकर मेरा मन सन्तुष्ट नहीं है।"

"इस बार उससे क्या गुस्ताखी हुई है?"

"मैं तुमसे बात कर चुकी हूं, इसलिए पूरी बात बता सकती हूं। मैं कोई बात आधी नहीं करती। मिस्टर गुडवुड कल रात यहां आया था।"

रैल्फ की आंखें खुली रह गईं। आन्तरिक भावना से वह थोड़ा सुर्ख भी हो उठा। उसे याद था कि विन्चेस्टर स्क्वेयर से प्रैट्स होटल के लिए चलते हुए

इज़ाबेल ने कहा था कि वहां कोई उससे मिलने नहीं आ रहा। वह दोहरी बात कर सकती है, यह सोचकर उसे एक नया दर्द महसूस हुआ। साथ ही उसने अपने से कहा कि इज़ाबेल अपने किसी प्रेमी से अपाइंटमेंट करे, इसमें वह कहां आता हैं? हर युग में क्या यही शिष्टता नहीं रही कि लड़कियां ऐसी मुलाकातें छिपाकर रखें? रैल्फ़ ने हेनरीटा को कूट-सा उत्तर दिया," तुम्हारी उस दिन की बातों को ध्यान में रखते हुए कह सकता हूं कि तुम्हें इसमें काफी तसल्ली हुई होगी।"

"कि वह इज़ाबेल से मिलने आया! इतना तो बिल्कुल ठीक था, जहां तक ऐसा हुआ। यह मेरी छोटी-सी योजना थी; मैंने उसे बताया था कि हम लंदन में हैं। जब यह तय हो गया कि मैं शाम वाहर बिताऊंगी तो मैंने उसे कहला दिया—वह शब्द जो हम किसी 'बुद्धिमान' को कहलाते हैं। मुझे आशा थी कि वह इसे अकेली पाएगा। मैं बहाना नहीं करूंगी—मैं नहीं जानती थी कि तुम भी रास्ते से वाहर रहोगे। वह इससे मिलने आया था, लेकिन इससे अच्छा था वह न ही आता।"

"इज़ाबेल ने कोई क्रूर बात कह दी क्या?"—रैल्फ का चेहरा इस सन्तोष से चमक गया कि उसकी कज़िन ने दोरुखी बात नहीं की।

"मैं ठीक से नहीं जानती कि इनके बीच क्या घटित हुआ। लेकिन इसने उसे कोई सन्तोष नहीं दिया—इसने उसे वापस अमरीका भेज दिया है।"

"बेचारा मिस्टर गुडवुड!" रैल्फ ने सांस भरी।

"लगता है इसका एकमात्र विचार उससे पीछा छुड़ाने का है," हेनरीटा बोलती गई।

"बेचारा मिस्टर गुडवुड!" रैल्फ ने दोहराया। ये शब्द, मानना पड़ेगा कि अनायास ही उसके मुंह से निकल पड़े। ये उसके विचारों को प्रकट नहीं करते थे जोकि दूसरा ही रुख ले रहे थे।

"तुम ऐसे मत कहो जैसे कि तुमने इसे महसूस किया हो। मैं नहीं मानती कि तुम उसकी परवाह करते हो!"

"ओह," रैल्फ बोला, "तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मैं इस दिलचस्प नवयुवक को नहीं जानता—कि मैंने उसे कभी देखा तक नहीं है।"

"बहरहाल मैं उससे मिलूंगी और कहूंगी कि वह इसका पीछा न छोड़े। अगर मैं यह न जानती कि इज़ाबेल आखिर मान जाएगी।" मिस स्टैकपोल ने जोड़ा—

"तो मैं खुद छोड़ देती। मेरा मतलब है मैं इसे छोड़ देती।"

१८

यह सोचकर कि इन हालात में हेनरीटा से विदा लेने में इज़ाबेल कुछ अव्यवस्थित महसूस करेगी, रैल्फ उससे पहले ही होटल के दरवाजे पर पहुंच गया। कुछ देर में इज़ाबेल झिड़की खाकर आने का भाव आंखों में लिए उसके पीछे-पीछे पहुंच गई। गार्डनकोर्ट तक की यात्रा में दोनों प्रायः खामोश रहे। स्टेशन पर उन्हें जो नौकर मिला, उसने भी मिस्टर टाउशेट के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कोई बेहतर सूचना नहीं दी। रैल्फ ने अपने को धन्यवाद दिया कि वह सर मैथ्यू होप से शाम को पांच बजे वहां आने और रात वहीं बिताने का वचन ले आया है। घर पहुंचने पर उसे पता चला कि मिसेज़ टाउशेट इस बीच लगातार अपने पति के पास रही हैं और अब भी वहीं हैं। रैल्फ़ ने अपने से कहा कि उसकी मां को बस अवसर चाहिए था—बेहतर स्वभाव बड़े अवसरों पर ही अपनी चमक दिखाते हैं। इज़ाबेल को अपने कमरे की ओर जाते हुए लगा कि घर भर में एक संकट से पहले की चुप्पी छाई है। घण्टा भर बाद उसकी मिस्टर टाउशेट के सम्बन्ध में जानने की इच्छा हुई। मिसेज़ टाउशेट उसे लाइब्रेरी में नहीं मिलीं। ठण्डा और नीला मौसम अब और भी खराब हो गया था, इसलिए यह सम्भावना भी नहीं थी कि वे बाहर टहलने गई होंगी। इज़ाबेल उनके कमरे से पता कराने के लिए घण्टी बजाने ही वाली थी कि सहसा एक अप्रत्याशित स्वर उसे सुनाई दिया—सैलून से आता हल्के संगीत का स्वर। वह जानती थी कि उसकी आंट कभी प्यानो को छूती भी नहीं, इसलिए बजाने वाला रैल्फ ही हो सकता था जो इस तरह अपना मनोरंजन किया करता था। इस समय रैल्फ के इस तरह दिल बहलाने से ज़ाहिर था कि अपने पिता के सम्बन्ध में उसकी चिन्ता दूर हो गई है। इसलिए मन में सुस्थित होकर वह उस ओर को चल दी जिधर से संगीत सुनाई दे रहा था। गार्डनकोर्ट का ड्राइंग रूम बहुत बड़ा था, और जिस दरवाज़े से वह दाखिल हुई, उससे प्यानो सबसे दूर के कोने में रखा था। इसलिए प्यानो के पास बैठी आकृति ने उसका

आना लक्ष्य नहीं किया। यह आकृति न रैल्फ की थी और न ही उसकी मां की। हलांकि उसकी पीठ दरवाजे की तरफ थी, फिर भी इज़ाबेल को पता चल गया कि वह एक स्त्री है जिससे वह परिचित नहीं है। इस खुली और अच्छी पोशाक से ढकी पीठ को इज़ाबेल पल भर आश्चर्य से देखती रही। यह महिला निःसन्देह एक अतिथि थी जो उसकी अनुपस्थिति में आई थी। पर किसी नौकर ने—उसकी आंट की नौकरानी ने भी जिससे उसकी बात हो चुकी थी—इस अतिथि का ज़िक्र नहीं किया था। इज़ाबेल जान चुकी थी कि नौकर वहां किस संयत भाव से आदेशों का पालन कर रहे हैं। उसे बल्कि अपने प्रति नौकरानी का व्यवहार काफी रूखा लगा था। पर एक नई मेहमान का आना उसके लिए काफी सुखकर था—उसने अभी इस युवा विश्वास से मुक्ति नहीं पाई थी कि हर नया परिचय उसके जीवन पर एक गहरा प्रभाव डाल सकता है। यह सोचते हुए उसने यह भी लक्ष्य किया कि वह महिला प्यानो बहुत अच्छा बजाती है। वह श्यूबर्ट का कोई अंश बजा रही थी—न जाने कौन-सा—पर वह श्यूबर्ट ही है, इतना वह पहचानती थी। प्यानो पर उंगलियां चलाने में उस महिला का अपना ही एक विवेक झलकता था। इज़ाबेल बिना आवाज़ पैदा किए पास की एक कुर्सी पर बैठ गई और संगीत के रुकने का इन्तज़ार करने लगी। संगीत रुका, तो उसका बहुत मन हुआ कि बजाने वाली को धन्यवाद दे और वह उठकर उसके पास चली गई। तभी वह महिला पीछे की ओर मुड़ी, जैसेकि उसे उसके वहां होने का पता हो।

"यह बहुत बढ़िया टुकड़ा है और तुम्हारे बजाने से और बढ़िया लग रहा है," इज़ाबेल ने अपनी पूर्ण युवा कान्ति के साथ कहा, जोकि अक्सर सच बोलते वक्त उसके चेहरे पर आ जाती थी।

"तुम्हारे ख्याल में मैंने मिस्टर टाउशेट को परेशान नहीं किया न?" उस महिला ने उतनी ही मिठास के साथ कहा जितनी कि उस प्रशंसा के बाद आवश्यक थी। "घर इतना विशाल है, और उनका कमरा इतना दूर है कि मैं सोचती हूं मैं इस तरह का साहस कर सकती हूं, विशेषतः जब मैं यह टुकड़ा बजाती हूं।"

"यह एक फ्रेंच महिला है," इज़ाबेल ने अपने से कहा, "यह बोलती ऐसे ही है जैसे कि यह फ्रेंच हो।" इस अनुमान ने उस मेहमान को हमारी कल्पनाशील नायिका के लिए और भी दिलचस्प बना दिया, "मेरा ख्याल है, मेरे अंकल काफी ठीक हैं," इज़ाबेल ने जोड़ा, "मैं सोचती हूं इस प्रकार के सुन्दर संगीत को सुनकर

वे अवश्य बेहतर महसूस करेंगे ।"

वह महिला मुस्कराई और विवेक के साथ बोली, "मुझे डर है कि ज़िन्दगी में कुछ ऐसे क्षण होते हैं, जबकि श्यूबर्ट भी कुछ नहीं कर सकता। हमें मानना चाहिए कि वे क्षण हमारे लिए सबसे बुरे होते हैं।"

"मैं उस स्थिति में नहीं हूं," इज़ाबेल ने कहा, "इसके विपरीत मुझे खुशी होगी अगर तुम थोड़ा और बजाओ।"

"अगर वह तुम्हें प्रसन्नता देगा—तो खुशी से।" उस उदार महिला ने अपनी जगह फिर से ले ली और कुछ सुरों को छेड़ा, जबकि इज़ाबेल यन्त्र के पास बैठ गई। अचानक वह महिला अपनी उंगलियां सुरों पर रखे रुक गई, अपने कन्धों के ऊपर से आधा पीछे को मुड़कर देखती हुई—वह चालीस साल की थी और सुन्दर नहीं थी, फिर भी उसका भाव आकर्षक था। "क्षमा करना," उसने कहा, "लेकिन क्या तुम्हीं वह भांजी हो—वह युवा अमरीकन?"

"मैं आंटी की भांजी हूं," इज़ाबेल ने सरलता से कहा।

प्यानो पर बैठी महिला कुछ क्षण और चुप रही—अपने कन्धों पर से एक उत्सुक दृष्टि पीछे डालती हुई, "यह बहुत अच्छा है; हम एक देशवासी हैं।" और उसने फिर से प्यानो बजाना शुरू कर दिया।

"ओह, यह फ्रेंच नहीं है," इज़ाबेल बुदबुदाई। उस गलत अनुमान ने उसे जितना रूमानी कर दिया था, उससे लग सकता था कि इस नई जानकारी ने शायद उस भाव को शिथिल कर दिया हो। लेकिन असलियत यह नहीं थी। फ्रेंच होने की अपेक्षा इस तरह के गुणों के साथ अमरीकन होना अधिक आकर्षक था।

वह महिला पहले की तरह प्यानो बजाती रही, उतने ही हल्के और शान्त भाव से। जैसे-जैसे वह बजाती गई, कमरे में परछाइयां गहरी होती गईं। बसन्त की सांझ अन्दर गहराती गई। इज़ाबेल अपनी जगह से बारिश को देख सकती थी, जोकि अब ज़ोरों से शुरू हो गई थी—ठंडे नज़र आते बगीचे को धोती और बड़े-बड़े पेड़ों को हवा से लहराती हुई। आखिर जब संगीत रुका, तो उसकी साथिन उठ खड़ी हुई। और एक मुसकराहट के साथ करीब आती हुई—इससे पहले कि इज़ाबेल उसे फिर से धन्यवाद दे पाती—बोली, "मैं खुश हूं कि तुम लौट आई हो। मैंने तुम्हारे विषय में बहुत कुछ सुना है।"

इज़ावेल ने उसे बहुत आकर्षक पाया, लेकिन फिर भी उसने इसके जवाब में एक प्रकार की आकस्मिकता से पूछा, "किससे तुमने मेरे बारे में सुना है ?"

वह अजनबी महिला एक क्षण के लिए झिझकी, और फिर, "तुम्हारे अंकल से," उसने जवाव दिया। "मुझे यहां आए तीन दिन हो गए हैं, और पहले ही दिन उन्होंने मुझे अपने कमरे में मिलने के लिए बुला लिया था। वे सारा समय तुम्हारे ही बारे में बातें करते रहे।"

"तुम मुझे जानती नहीं थीं, इसलिए उस बातचीत ने तुम्हें उबा दिया होगा।"

"उसने मेरे अन्दर तुम्हें जानने की इच्छा जगा दी थी। इसके अतिरिक्त उस समय से—तुम्हारी आंटी चूंकि अधिकतर तुम्हारे अंकल के पास होती हैं—मैं काफी अकेली रही हूं, बल्कि अपने ही साथ से काफी ऊब गई हूं। मैंने यहां आने के लिए ठीक वक्त नहीं चुना।"

एक नौकर शमादान लिए अन्दर आया और उसके तत्काल वाद एक दूसरा नौकर चाय की ट्रे लिए आ पहुंचा। इस आहार के पहुंचने पर मिसेज़ टाउशेट को स्पष्टतः सूचित कर दिया गया, क्योंकि वे वहां आ पहुंचीं और उन्होंने अपने को चायदानी के साथ व्यस्त कर लिया। उनके भोजन के ढक्कन को उठाकर उसके पदार्थों पर नज़र डालने, और अपनी भांजी से अभिवादन करने में कोई खास फ़रक नहीं था। दोनों में से किसी भी व्यवहार में तीव्र उत्सुकता का प्रदर्शन उस समय उचित भी नहीं था। उनसे उनके पति के विषय में पूछा गया। वे यह कहने में असमर्थ थीं कि वे ठीक हैं, लेकिन स्थानीय डाक्टर उनके पास था, और इस भद्र पुरुष और सर मैथ्यू होप के बीच विचार-विमर्श से काफी प्रकाश की आशा की जा सकती थी।

"मुझे आशा है कि तुम दोनों ने आपस में जान-पहचान कर ली है," वे कहती गईं। "अगर नहीं की है तो करने के लिए मैं तुम दोनों से प्रार्थना करूंगी। जब तक हम लोग—रैल्फ और मैं—लगातार मिस्टर टाउशेट के बिस्तर के पास रहेंगे, तव तक तुम्हें एक-दूसरी के अतिरिक्त और किसीका साथ मिलने की सम्भावना नहीं रहेगी।"

"मैं तुम्हारे बारे में और कुछ नहीं जानती, सिवाय इसके कि तुम एक महान संगीतज्ञ हो," इज़ावेल ने उस मेहमान से कहा।

"उससे ज्यादा जानने को बहुत कुछ है," मिसेज टाउशेट ने अपनी खुश्क

आवाज़ में दृढ़ता के साथ कहा।

"मेरा खयाल है, उसका थोड़ा-सा ही हिस्सा, मिस आर्चर के लिए अपेक्षित होगा।" उस महिला ने एक हल्की हंसी के साथ कहा, "मैं तुम्हारी आंटी की एक बहुत पुरानी मित्र हूं। फ्लोरैन्स में बहुत अधिक रही हूं। मैं मैडम मरले हूं।" उसने यह आखिरी व्याख्या इस तरह की मानो वह किसी ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत कर रही हो जो काफी विशिष्ट पहचान रखता हो। इज़ाबेल के लिए बहरहाल यह बात बहुत कम महत्त्व रखती थी। वह केवल यही सोच सकती थी कि मैडम मरले में एक ऐसा आकर्षण है जोकि आज तक उसने किसी-किसी में ही पाया है।

"अपने नाम के बावजूद यह विदेशी नहीं है," मिसेज़ टाउशेट ने कहा, "यह पैदा हुई थी···मैं हमेशा भूल जाती हूं कि यह कहां पैदा हुई थी।"

"तुम्हें बताने से फिर कोई लाभ ही नहीं है।"

"इसके विपरीत," मिसेज़ टाउशेट बोलीं, जो मुश्किल से ही कोई तर्क छोड़ती थीं, "अगर मुझे याद रहे तो तुम्हारा बताना बिलकुल निरर्थक होगा।"

मैडम मरले ने इज़ाबेल को एक ऐसी व्यापक खुली मुस्कराहट के साथ देखा, जो जैसे सभी सीमाओं को पार कर रही थी। "मैं राष्ट्र-चिह्न की छाया में पैदा हुई थी।"

"यह रहस्य की बहुत शौकीन है।" मिसेज़ टाउशेट ने कहा, "यही इसकी सबसे बड़ी कमज़ोरी है।"

"ओह," मैडम मरले बोली, "मुझमें बहुत कमज़ोरियां हैं, लेकिन मैं नहीं सोचती कि यह उनमें से एक है—अवश्य ही यह सबसे बड़ी नहीं है। मैं इस दुनिया में आई थी ब्रुकलीन के नेवी-यार्ड में। मेरे पिता युनाइटिड स्टेट्स नेवी में एक ऊंचे अफसर थे, और उस संस्थान में उनका एक ऊंचा ओहदा था—एक ज़िम्मेदारी का ओहदा। मेरा खयाल है मुझे समुद्र से प्यार होना चाहिए था—लेकिन मैं उससे घृणा करती हूं। इसलिए मैं लौटकर अमरीका नहीं जाती। मुझे स्थल से प्यार है। सबसे बड़ी बात यही है कि व्यक्ति को किसी चीज़ से प्यार हो।"

मिसेज़ टाउशेट ने इस मेहमान का जो वर्णन दिया था, इज़ाबेल उससे प्रभावित नहीं हुई थी। इस महिला का चेहरा भाव और अभिव्यंजनापूर्ण था—ऐसा हरगिज़ नहीं था कि लगे कि वह बातें छिपाकर रखती है। वह चेहरा खुले स्वभाव

का परिचायक था—साथ ही शीघ्र और स्वतन्त्र गति का। यूं उसमें नियमित अर्थ में सौन्दर्य नहीं था, फिर भी वह अत्यधिक मोहक और आकर्षक था। मैडम मरले ऊंचे कद की गोरी-चिकनी महिला थी। उसके व्यक्तित्व का हर हिस्सा गोल और भरा हुआ था—पर ऐसा कुछ कहीं नहीं था जिससे भारीपन का संकेत मिले। उसके नक्श काफी गठे हुए और सुन्दर अनुपात के थे। उसके रंग में एक स्वस्थ शुभ्रता थी। उसकी भूरी आंखों में एक चमक थी, और जड़ता बिलकुल नहीं थी। कुछ लोगों का खयाल था कि उनमें आंसू भी नहीं आ सकते। उसके होंठ खुले और भरे हुए थे। जब वह मुस्कराती तो वे बाईं ओर से इस तरह ऊपर को उठ जाते कि कुछ लोगों को वे विचित्र जान पड़ते, कुछ को बनावटीपन लिए और कुछ को सुन्दर। इज़ाबेल इनमें से अन्तिम श्रेणी में आती थी। मैडम मरले के बाल घने और भूरे थे जिन्हें वह इस तरह क्लासिकल ढंग से बनाती थी कि इज़ाबेल को वह जूनो या निओब की मूर्ति जैसी जान पड़ती थी। उसके लम्बे हाथ ऐसी सुन्दर तराश के थे कि वह स्त्री उनके लिए किसी भी तरह का अलंकरण अनावश्यक समझकर एक जड़ाऊ अंगूठी तक नहीं पहनती थी। हम जानते हैं कि पहले वह इज़ाबेल को फ्रांसीसी लगी थी—पर गौर से देखने पर शायद वह ऊंची नस्ल की जर्मन जान पड़ती—कोई आस्ट्रियन बैरोनेस, काउंटेस या राजकुमारी। यह तो सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह ब्रुकलीन में पैदा हुई थी—हालांकि इस बात को लेकर तर्क नहीं किया जा सकता था कि उसकी विशिष्टता के लक्षण उसके जन्म के साथ मेल नहीं खाते थे। यह सच था कि उसके पालने के ठीक ऊपर राष्ट्रीय झंडा लहराता रहा था और सितारों और धारियों की स्वच्छन्दता का प्रभाव उसके जीवन-सम्बन्धी दृष्टिकोण पर परिलक्षित होता था। फिर भी हवा में फड़फड़ाते झंडे की अस्थिरता उसके स्वभाव में नहीं थी। उसमें एक ऐसा आत्मविश्वास और ठहराव था जो कि विस्तृत अनुभव से ही प्राप्त हो सकता है। किन्तु अनुभव से उसके यौवन की क्षति नहीं हुई थी—इससे उसमें केवल सहानुभूति और कोमलता आ गई थी। एक शब्द में वह तीव्र भावनाओं की स्त्री थी पर उन्हें उसने प्रशंसनीय ढंग से व्यवस्थित कर रखा था। इज़ाबेल इस आदर्श मिश्रण की बहुत सराहना करती थी।

तीनों महिलाएं जब चाय पी रही थीं, तब इज़ाबेल यही सब सोच रही थी। पर शीघ्र ही लन्दन से डाक्टर के आ जाने से उनकी चाय में बाधा पड़ गई।

डाक्टर को सीधे ड्राइंग रूम में ले आया गया। मिसेज़ टाउशेट अकेले में बात करने के लिए उसे लायब्रेरी में ले गईं। मैडम मरले और इज़ावेल डिनर के समय तक के लिए एक दूसरी से अलग हो गई। इस स्त्री से फिर मिलने की आशा ने इज़ाबेल के लिए उस उदासी को कुछ कम कर दिया जो उस समय गार्डनकोर्ट पर छाई थी।

डिनर से पहले वह ड्राइंग रूम में पहुंची तो वहां कोई नहीं था, पर पल-भर बाद ही रैल्फ़ वहां आ गया। अपने पिता के संबंध में उसकी चिन्ता कुछ कम हो गई थी—सर मैथ्यू होप के ख्याल में स्थिति उतनी बुरी नहीं थी। डाक्टर का खयाल था कि अगले तीन-चार घण्टे सिर्फ नर्स को ही मरीज़ के पास रहना चाहिए, इसलिए रैल्फ, मिसेज़ टाउशेट और डाक्टर साथ-साथ खाना खा सकते थे। मिसेज़ टाउशेट और सर मैथ्यू भी वहां आ गए। मैडम मरले सबसे अन्त में आई।

उसके आने से पहले इज़ाबेल ने उसके बारे में रैल्फ से बात की। रैल्फ आग के पास खड़ा था। ''ज़रा बताना यह मैडम मरले कौन है ?''

''तुम्हें छोड़कर मेरी जानकारी में सबसे चतुर स्त्री।'' रैल्फ बोला।

''मेरा खयाल है, वह बहुत अच्छी है।''

''मैं निश्चित जानता था कि तुम उसे अच्छी समझोगी।''

''क्या इसीलिए तुमने उसे निमंत्रित किया है ?''

''मैंने उसे निमंत्रित नहीं किया। जब हम लोग लन्दन से लौटे, तो मैं नहीं जानता था कि वह यहां है। किसीने उसे निमंत्रित नहीं किया। वह मेरी मां की एक मित्र है और जैसे ही तुम और मैं शहर गए, मां को उसकी तरफ से एक चिट्ठी मिली। वह इंग्लैंड आ पहुंची थी (वह अक्सर बाहर ही रहती है, यद्यपि उसने शुरू का और आखिर का काफी समय यहां बिताया है), और उसने कुछ दिन यहां आकर रहने की अनुमति मांगी थी। वह एक ऐसी औरत है, जो ऐसे प्रस्ताव पूरे विश्वास के साथ कर सकती है। जहां जाती है, वहां उसका स्वागत होता है। और उसके मेरी मां से झिझकने का तो कोई प्रश्न ही नहीं है—दुनिया में वह एक ही औरत है, जिसकी मेरी मां बहुत प्रशंसक हैं। अगर मेरी मां अपनी तरह की न होतीं (जो कि वह सबसे ज़्यादा पसन्द करती हैं) तो वे मैडम मरले जैसी तरह बनाना चाहतीं। ऐसा हो जाए, तो सच ही यह एक बहुत बड़ा परिवर्तन होगा।''

"खैर, वह बहुत आकर्षक महिला है," इज़ाबेल बोली, "और वह प्यानो बहुत अच्छा बजाती है।"

"वह सब कुछ बहुत अच्छा करती है। उसमें एक पूर्णता है।"

इज़ाबेल ने एक क्षण के लिए अपने कज़िन की तरफ देखा। "तुम उसे पसंद नहीं करते?"

"इसके विपरीत मैं कभी उससे प्यार करता था।"

"और उसने तुम्हारी परवाह नहीं की। इसलिए तुम उसे अब पसन्द नहीं करते?"

"हम ऐसी बातों पर कैसे विचार कर सकते हैं? मोंश्यो मरले तब जीवित थे।"

"अब क्या उनकी मृत्यु हो चुकी है?"

"वह ऐसा कहती है।"

"तुम इसपर विश्वास नहीं करते?"

"करता हूं। क्योंकि उसकी बातें संभावनाओं के साथ मेल खाती हैं। उम्मीद यही की जा सकती है कि मैडम मरले का पति जीवित न रहे।"

इज़ाबेल ने फिर अपने कज़िन को एकटक देखा। "मैं नहीं जानती तुम्हारा क्या मतलब है। तुम्हारा मतलब वह है—जो तुम्हारा मतलब नहीं है। मोश्यो मरले क्या थे?

"मैडम के पति।"

"तुम बहुत बुरे हो। क्या इसके बच्चे हैं?"

"एक छोटा-सा बच्चा भी नहीं—खुशकिस्मती से।"

"खुशकिस्मती से?"

"मेरा मतलब है बच्चे की खुशकिस्मती से। यह उसे ज़रूर बिगाड़ देती।"

इज़ाबेल तीसरी बार अपने कज़िन से यह कहने जा रही थी कि वह घृणित बात कर रहा है—पर तभी जिस महिला का ज़िक्र हो रहा था, वह वहां आ पहुंची। वह लेट होने के लिए क्षमा मांगती हुई जल्दी से अन्दर आई। उसकी खुली गोरी छाती सामने उभरी नज़र आ रही थी—चांदी का एक विचित्र-सा हार उसे ठीक से ढक नहीं पा रहा था। रैल्फ ने एक पुराने प्रेमी की-सी अतिशय तत्परता के साथ अपनी बांह से उसे सहारा दिया।

रैल्फ अगर अब भी उससे प्रेम करता होता तो भी उस समय उसके पास सोचने के लिए दूसरी चीज़ें थीं। डॉक्टर वह रात गार्डनकोर्ट में काटकर सुबह लन्दन चला गया। स्थानीय डॉक्टर से परामर्श करके रैल्फ़ की इच्छानुसार उसने अगले दिन फिर गार्डनकोर्ट आने का आश्वासन दिया। अगले दिन आकर सर होप ने पहले से अधिक चिन्ता व्यक्त की क्योंकि इस बीच मरीज़ की हालत बदतर हो गई थी। मिस्टर टाउशेट बहुत कमज़ोर हो गए थे और रैल्फ को जो हर वक्त उनके पास रहता था, लगता था कि अब अन्त पास ही है। स्थानीय डाक्टर जिसमें रैल्फ़ को अधिक विश्वास था, हर वक्त वहां रहता था। सर मैथ्यू भी कितनी ही बार आया। मिस्टर टाउशेट ज्यादा वक्त बेहोश रहते थे। वे काफी देर सोते थे और बात नहीं कर पाते थे। इज़ाबेल, जब और लोग (जिनमें मिसेज़ टाउशेट सबसे कम नियमित थीं) विश्राम करने चले जाते, तो उनके पास काफी-काफी देर बैठी रहती। मिस्टर टाउशेट उसे पहचान नहीं पाते थे। इज़ाबेल सोचती कि उसके वहां बैठे-बैठे कहीं उनकी मृत्यु हो गई तो? इस विचार की उत्तेजना से वह जागती रहती। एक बार वे आंखें खोलकर स्थिर दृष्टि से उसे देखते रहे, पर इस ख्याल से कि वे शायद उसे पहचान लें, वह पास गई, तो वे फिर से आंखें मूंद-कर अचेत हो गए। अगले दिन वे कुछ ज्यादा सचेत हुए। उस समय केवल रैल्फ़ उनके पास था। मिस्टर टाउशेट बात करने लगे, तो रैल्फ को काफी सन्तोष हुआ। उसने उनसे कहा कि शीघ्र ही वे उठकर बैठने लगेंगे।

"नहीं मेरे बेटे," मिस्टर टाउशेट बोले, "तब तक नहीं जब तक कि तुम मुझे बैठाकर ही न दफनाना चाहो। जैसे कि प्राचीन लोग—वे प्राचीन लोग ही थे न?—किया करते थे।"

"छोड़ो डैडी, उनके बारे में बात मत करो," रैल्फ़ बुदबुदाया, "आपको इस बात से इन्कार नहीं करना चाहिए कि आप अब बेहतर होते जा रहे हैं।"

"मेरे इन्कार करने की कोई जरूरत नहीं होगी, अगर तुम ऐसी बात न करो तो," उस बूढ़े आदमी ने जवाब दिया, "हम क्यों अन्तिम समय पर अपने को बहकाएं? हमने पहले कभी नहीं बहकाया। मुझे कभी न कभी तो मरना ही है, इसलिए बेहतर है कि आदमी तब मरे जब वह बीमार हो न कि जब स्वस्थ हो। मैं बहुत बीमार हूं—इतना बीमार कि पहले कभी नहीं रहा। मुझे आशा है कि तुम यह सिद्ध नहीं करना चाहते कि मैं इससे भी बदतर हो सकता हूं। वह बहुत

बुरा होगा। तुम ऐसा नहीं चाहते न ? फिर बस।"

इस शानदार नुक्ते के बाद वे चुप कर गए; लेकिन अगली बार जब रैल्फ़ फिर उनके पास था, वे फिर से बातें करने लगे। नर्स खाना खाने गई थी और रैल्फ़ अकेला उनकी देख-रेख कर रहा था। मिसेज़ टाउशेट को उसने अभी-अभी छुट्टी दी थी—वे खाने के वक्त से उनकी देख-रेख कर रही थीं। कमरा सिर्फ कांपती आग से रोशन था, जिसकी कि अब आवश्यकता पड़ने लगी थी। रैल्फ़ की लम्बी छाया पूरी दीवार और छत पर फैली थी। उसकी रूपरेखा निरन्तर बदल रही थी, लेकिन वह हमेशा विकृत नज़र आती थी।

"यह मेरे पास कौन है—क्या यह मेरा बेटा है ?" बूढ़े आदमी ने पूछा।

"हां, यह आपका बेटा ही है, डैडी।"

"क्या यहां और कोई नहीं है ?"

"नहीं, और कोई नहीं है।"

मिस्टर टाउशेट ने कुछ समय के लिए कुछ नहीं कहा। फिर बोले, "मैं थोड़ी बात करना चाहता हूं।"

"क्या यह आपको थका नहीं देगा ?" रैल्फ़ ने पूछा।

"कोई फर्क नहीं पड़ता अगर थका भी दे तो। मैं अब लम्बा विश्राम करूंगा। मैं तुम्हारे बारे में बात करना चाहता हूं।"

रैल्फ़ बिस्तर के करीब आ गया। वह आगे को झुका अपना हाथ अपने पिता के हाथ पर रखे बैठा रहा। "आपको कोई बेहतर विषय चुनना चाहिए।"

"तुम हमेशा कुशाग्र रहे हो; मैं तुम्हारी कुशाग्रता के लिए हमेशा गर्वित रहा हूं। मैं यह सोचना चाहूंगा कि तुम कुछ करोगे।"

"अगर आप हमें छोड़ गए," रैल्फ़ बोला, "तो मैं कुछ नहीं करूंगा। सिर्फ आपका अभाव महसूस करूंगा।"

"बिल्कुल यही बात मैं नहीं चाहता। इसीके विषय में मैं तुमसे बात करना चाहता था। तुम्हें ज़रूर कोई नई दिलचस्पी पैदा करनी चाहिए।"

"मैं कोई भी नई दिलचस्पी नहीं चाहता डैडी। मेरे पास पुरानी दिलचस्पियां ही इतनी हैं कि मैं नहीं जानता उन्हींका क्या करूं।"

बूढ़ा आदमी वहां लेटा-लेटा अपने लड़के को देखता रहा; उसका चेहरा वह चेहरा था, जो एक मरने वाले व्यक्ति का होता है, लेकिन उसकी आंखें—वे आंखें

नहीं थीं जो डेनियल टाउशेट की थीं। लग रहा था कि वे रैल्फ़ की दिलचस्पियों के बारे में सोच रहे हैं।" निःसन्देह तुम्हारे पास तुम्हारी मां है, "आखिर उन्होंने कहा, "तुम उसका ख्याल रखोगे।"

"मेरी मां हमेशा अपना ख्याल आप रखेंगी," रैल्फ़ ने जवाब दिया।

"बहरहाल," उसके पिता ने कहा, "स्वभावतः जब वे बूढ़ी होती जाएंगी, तो उन्हें तुम्हारी थोड़ी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।"

"मै वह नहीं देख पाऊंगा। वे मुझसे ज़्यादा जिएंगी।"

"बहुत सम्भव है कि वे ज्यादा जिएं। लेकिन यह कोई कारण नहीं है—।" मिस्टर टाउशेट ने अपनी बात को मजबूरी की एक उसांस में डूब जाने दिया, हालांकि उसमें करुणा का स्पर्श नहीं था, और एक बार फिर खामोश हो रहे।

"हमारे बारे में सोचकर अपने को दुःखी न करें," उनके बेटे ने कहा, "मैं और मेरी मां आपस में ठीक निभा लेते हैं, आप जानते हैं।"

"तुम लोग हमेशा अलग रहकर निभाते हो; यह स्वाभाविक नहीं है।"

"जब आप हमें छोड़ जाएंगे तो सम्भवतः हम एक दूसरे से ज़्यादा मिलेंगे।"

"बहरहाल," बूढ़े आदमी ने असंगत भटकती नजर से देखते हुए कहा, "कहा नहीं जा सकता कि मेरी मौत तुम्हारी मां के जीवन में ज़्यादा फर्क जाएगी।"

"सम्भव है उससे ज्यादा फर्क लाए जितना कि आप सोचते हैं।"

"खैर उसके पास अब ज़्यादा पैसा होगा," मिस्टर टाउशेट ने कहा, "मैंने उसके लिए एक अच्छी पत्नी का हिस्सा छोड़ा है—जैसे कि वह एक अच्छी पत्नी रही हो।"

"अपने सिद्धान्तों के अनुसार वे एक अच्छी पत्नी रही हैं, डैडी। उन्होंने आपको कभी दुःखी नहीं किया।"

"ओह, कई दुःख बहुत सुखद होते है," मिस्टर टाउशेट बुदबुदाए। "उदाहरण के लिए वे जो तुमने मुझे दिए हैं। लेकिन तुम्हारी मां इधर कम—कम ही—मैं उसे क्या कहूं?—जब से मैं बीमार हूं वह कुछ कम ही परे रही है। मेरा ख्याल है वह यह जानती है कि मुझे इसका पता है।"

"मैं अवश्य ही यह उनसे कहूंगा। मैं खुश हूं कि आपने इसका ज़िक्र किया।"

"इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह मुझे प्रसन्न करने के लिए ऐसा नहीं कर रही—वह कर रही है, प्रसन्न करने के लिए—प्रसन्न करने के लिए—" और

वे पड़े सोचते रहे कि मिसेज टाउशेट ऐसा क्यों कर रही हैं।" वह कर रही हैं, क्योंकि यह उसके अनुकूल पड़ता है," उन्होंने जोड़ा, "पर मैं तुम्हारी बात करना चाहता हूं। रुपये-पैसे के लिहाज से तुम काफी ठीक रहोगे।"

"हां।" रैल्फ़ बोला, "मैं यह जानता हूं। लेकिन मुझे आशा है कि यह बात आप भूले नहीं हैं जो हमारे बीच एक साल पहले हुई थी—जब मैंने आपको ठीक से बता दिया था कि मुझे कितने पैसे की आवश्यकता है और अनुरोध किया था कि शेष का आप कोई अच्छा उपयोग करें।"

"हां-हां, मुझे याद है। मैंने तब एक नई वसीयत बनाई थी—कुछ ही दिन बाद। मेरे ख्याल में वह पहली बार थी जब ऐसी बात हुई हो—कि, एक नवयुवक अपने ही विरुद्ध वसीयत बनवाने की कोशिश करे।"

"वह मेरे विरुद्ध नहीं है," रैल्फ़ ने कहा, "मेरे विरुद्ध यह होगा कि मुझे एक बड़ी जायदाद मिल जाए जिसका मुझे ख्याल रखना पड़े। यह मेरे जैसी सेहत वाले व्यक्ति के लिए असम्भव है कि वह बहुत ज्यादा पैसा खर्च करे, और पर्याप्त पैसा होना एक अच्छी दावत की तरह है।"

"खैर तुम्हारे पास पर्याप्त पैसा होगा—वह दो के लिए काफी होगा।"

"यह बहुत ज्यादा होगा," रैल्फ़ बोला।

"ओह, यह बात मत कहो। सबसे अच्छा काम जो तुम मेरे मरने के बाद कर सकते हो वह यह है कि शादी कर लो।"

"रैल्फ़ ने पहले ही भांप लिया था कि उसके पिता कहां पहुंच रहे हैं। यह सुझाव किसी भी तरह उसके लिए नया नहीं था। यह बहुत पहले से मिस्टर टाउशेट का एक प्रवीण ढंग था जिससे वे अपने बेटे की लम्बी उम्र की कामना करते थे। रैल्फ़ ने हमेशा इसे दिखावटी माना था; लेकिन वर्तमान स्थिति में इसे दिखावटी मानना असंगत था। उसने केवल अपनी कुर्सी से पीछे टेक लगा ली और अपने पिता की स्निग्ध दृष्टि के उत्तर में उन्हें वैसे ही देखता रहा।

"अगर मैं एक ऐसी पत्नी के साथ, जो मुझे ज्यादा पसन्द नहीं करती थी, खुश ज़िन्दगी बिता सका," बूढ़े आदमी ने अपने दिखावे को और आगे ले जाते हुए कहा, "तो सोचो तुम्हारी ज़िन्दगी कैसी होगी अगर तुम एक ऐसी लड़की से शादी करो जो मिसेज़ टॉउशेट से भिन्न हो। उससे भिन्न तरह की लड़कियां ज्यादा होंगी बनिस्बत उस जैसी लड़कियों के।" रैल्फ ने फिर भी कुछ नहीं कहा। थोड़ा

रुकने के बाद उसके पिता फिर धीरे से बोले, "अपनी कज़िन के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

इसपर रैल्फ़ चौंक गया, और प्रयत्न से चेहरे पर मुस्कराहट लाकर बोला, "क्या मैं आपका यह मतलब समझूं कि मुझे इज़ाबेल से शादी कर लेनी चाहिए ?"

"हां, यही तो मतलब निकलता है। क्या तुम्हें इज़ाबेल पसन्द नहीं है ?"

"बहुत पसन्द है।" रैल्फ़ अपनी कुर्सी से उठ गया और आग की तरफ चला गया। वह एक क्षण वहां खड़ा रहा। और ि र झुककर मशीनी ढंग से ससे ऊपर-नीचे करने लगा।

"मैं इज़ाबेल को बहुत ज्यादा पसन्द करता हूं," उसने दोहराया।

"देखो," उसके पिता ने कहा, "मैं जानता हूं कि वह भी तुम्हें बहुत पसन्द करती हैं। उसने मुझे बताया है कि वह तुम्हें कितना ज्यादा पसन्द करती है।"

"क्या उसने यह कहा है कि वह मुझसे शादी करना चाहती है ?"

"नहीं। लेकिन उसके पास तुम्हारे विरोध में कहने को कुछ नहीं होगा। यह उनमें सबसे आकर्षक नवयुवती है जिन्हें मैंने आज तक देखा है। वह तुम्हारे साथ बहुत अच्छी रहेगी। मैंने इस बारे में बहुत सोचा है।"

"मैंने भी सोचा है," रैल्फ़ ने उसके बिस्तर के करीब आते हुए कहा, "मुझे आपसे यह कहने में संकोच नहीं है।"

"तो क्या तुम उससे प्यार करते हो ? मेरा खयाल है ज़रूर करते होंगे। ऐसा लगता है जैसे वह किसी वजह से ही यहां आई हो।"

"नहीं, मैं उससे प्यार नहीं करता। लेकिन मैं ज़रूर उससे प्यार करता—अगर कुछ चीजें भिन्न होतीं।"

"ओह ! चीजें हमेशा उससे मित्र होती हैं जैसा कि उन्हें होना चाहिए," उस बूढ़े आदमी ने कहा, "अगर तुम उनके बदलने का इन्तज़ार करते रहोगे, तो तुम कभी कुछ नहीं कर सकोगे। मैं नहीं जानता कि तुम यह बात जानते हो या नहीं," वे कहते गए; "लेकिन मैं इसमें कोई हानि नहीं समझता कि मैं इस समय इस बात का तुमसे ज़िक्र कर दूं। अभी उस दिन एक आदमी ने उससे विवाह का प्रस्ताव किया था, लेकिन उसने उसे ठुकरा दिया।"

"मैं जानता हूं कि उसने लार्ड वारबर्टन को इन्कार किया है। उसने मुझे स्वयं बताया था।"

"तो इससे यह साबित होता है कि किसी और के लिए अवसर है।"

"उस दिन किसी और ने यह अवसर लन्दन में लिया था—और उसे भी कुछ नहीं मिला।"

"क्या वह व्यक्ति तुम थे?" मिस्टर टाउशेट ने उत्सुकतावश पूछा।

"नहीं, वह उसका एक बहुत ही पुराना दोस्त था। एक भला आदमी जो अमरीका से इसी बात के लिए आया था।"

"खैर, मुझे इसके लिए अफसोस है—वह जो भी था। लेकिन इससे वही बात साबित होती है जो मैं कह रहा हूं—कि तुम्हारे लिए रास्ता खुला है।"

"अगर ऐसा है, तो प्रिय पिता, यह मेरे लिए और भी दुःख का कारण है कि मैं उसपर चलने में असमर्थ हूं। मेरी बहुत ज्यादा धारणाएं नहीं है। लेकिन तीन या चार धारणाएं हैं जिनका मैं बहुत दृढ़ता से पालन करता हूं। एक तो यह कि सामान्य रूप से किसीको कभी अपनी कज़िन के साथ शादी नहीं करनी चाहिए। दूसरी कि बढ़े हुए रोग की पीड़ित अशान्ति में बेहतर है कि व्यक्ति कभी शादी न करे।"

बूढ़े आदमी ने अपना कमजोर हाथ उठाकर अपने चेहरे के आगे इधर-उधर हिलाया। "इससे तुम्हारा क्या मतलब है? तुम चीज़ों को देखते इस तरह से हो कि वे गलत ही नज़र आती हैं। वह कज़िन कैसी कज़िन है जिसे तुमने उसकी ज़िन्दगी के पहले बीस साल कभी देखा ही नहीं? हम सब एक-दूसरे के कज़िन हैं, और अगर हम इसी पर रुक जाएं तो मानव-जाति समाप्त हो जाएगी। यही बात तुम्हारे खराब फेफड़ों को लेकर भी है। तुम अब पहले से बहुत अच्छे हो। तुम्हें सिर्फ इस बात की ज़रूरत है कि तुम स्वाभाविक जिन्दगी जियो। यह कहीं ज्यादा स्वाभाविक है कि तुम एक ऐसी सुन्दर नवयुवती से शादी कर लो जिसे तुम प्यार करते हो। बनिस्वत इसके कि तुम अपने झूठे सिद्धान्तों के साथ अकेले रहते रहो।"

"मैं इज़ाबेल से प्यार नहीं करता," रैल्फ बोला।

"तुमने अभी कहा है कि तुम करते, अगर तुम इसे गलत न समझते। मैं साबित करना चाहता हूं कि यह गलत नहीं है।"

"यह सिफ आपको थका देगा डैडी," रैल्फ ने कहा। वह अपने पिता के इस

आग्रह पर हैरान था और उनकी इस दबाव डाल सकने की शक्ति पर।

"फिर हम सब लोग कहां होंगे ?"

"कहां होंगे, अगर मैं तुम्हारे लिए कुछ न छोड़ जाऊं तो ? तुम्हें बैंक से कोई वास्ता नहीं होगा, और मैं तुम्हारे पास नहीं रहूंगा कि जिसकी तुम्हें देखभाल करनी पड़े। तुम कहते हो कि तुम्हारी बहुत-सी दिलचस्पियां हैं; लेकिन मैं उन्हें नहीं समझ पा रहा।"

रैल्फ बाहें उलझाए कुर्सी की पीठ के साथ सट गया। उसकी आंखें कुछ देर सोच में डूबी रहीं। फिर उस आदमी की तरह जो अपना उत्साह किसी तरह बटोर रहा हो, "मैं अपनी कज़िन में बहुत ज्यादा दिलचस्पी रखता हूं," उसने कहा, "लेकिन उस तरह की दिलचस्पी नहीं, जैसी आप चाहते हैं। मैं बहुत साल नहीं जिऊंगा, लेकिन आशा है उतने साल अवश्य जीऊंगा जितने में यह देख सकूं कि वह अपने साथ क्या करती है। वह मेरी तरफ से पूर्णतया स्वतन्त्र है। मैं उसकी जिन्दगी पर बहुत कम प्रभाव डाल सकता हूं। लेकिन मैं उसके लिए कुछ करना चाहूंगा।"

"क्या करना चाहोगे ?"

"मैं उसके बादबान में थोड़ी हवा भरना चाहूंगा।"

"इससे तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"मैं उसे यह शक्ति देना चाहूंगा कि कुछ चीजें वह जैसे चाहे कर सके। उदाहरण के लिए वह दुनिया देखना चाहती है। मैं उसके बटुवे में पैसा डालना चाहूंगा।"

"ओह, मैं खुश हूं, कि तुमने इसके बारे में सोचा है," बूढ़े आदमी ने कहा, "लेकिन इसके बारे में मैंने भी सोचा है। मैंने उसके लिए कुछ सम्पत्ति छोड़ी है—पांच हज़ार पौंड।"

"यह एक अच्छी रकम है। आपकी बहुत कृपा है। लेकिन मैं इससे थोड़ा अधिक करना चाहूंगा।"

आर्थिक सुझावों को जिस छिपी हुई कुशाग्रता के साथ सुनने की डेनियल टाउशेट की ज़िन्दगी भर की आदत रही थी। वह अब भी उनके चेहरे पर नज़र आ रही थी। रोग ने उनके व्यवसायिक रूप को बिलकुल समाप्त नहीं किया था। "मुझे इसपर विचार करके खुशी होगी," उन्होंने आहिस्ता से कहा।

"देखिए, इज़ाबेल गरीब है। मेरी मां ने मुझे बताया है कि उसे साल में कुछ सौ डालर की ही आमदनी है। मैं उसे धनी बनाना चाहता हूं।"

"धनी से तुम्हारा क्या मतलब है?"

"मैं लोगों को धनी तब कहता हूं, जब वे अपनी कल्पना की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। इज़ाबेल के पास बहुत महान् कल्पना है।"

"तुम्हारे पास भी है, मेरे बेटे।" मिस्टर टाउशेट ने बड़े ध्यान से लेकिन थोड़े असमंजस के साथ सुनते हुए कहा।

"आपने मुझसे कहा है कि मेरे पास दो के लिए काफी पैसा होगा। मैं चाहता हूं कि आप कृपया मेरे अतिरिक्त धन से मुझे छुटकारा दिला दें। मेरी सम्पत्ति के एक-से दो हिस्से कर दें, और दूसरा हिस्सा उसे दे दें।"

"ताकि वह जो चाहे उसके साथ करे?"

"बिलकुल, जैसा वह चाहे।"

"और बिना किसी प्रतिफल के?"

"इसमें प्रतिफल क्या हो सकता है?"

"वही जिसका मैंने ज़िक्र किया है।"

"उसका शादी करना—किसी न किसीके साथ? मेरा खयाल है कि इस तरह की आवश्यकता दूर करने के लिए ही मैं यह सुझाव दे रहा हूं। अगर उसे काफी आमदनी होगी तो वह किसीके साथ केवल सहारे के लिए शादी नहीं करेगी। यही बात मैं चतुराई से रोकना चाहता हूं। वह स्वतन्त्र रहना चाहती है, और आपकी वसीयत उसे स्वतन्त्र बना देगी।"

"लगता है तुमने पूरा सोच रखा है," मिस्टर टाउशेट ने कहा, "लेकिन मैं नहीं जानता कि तुम यह मुझसे क्यों कह रहे हो। पैसा तुम्हारा होगा, और तुम आसानी से स्वयं उसे दे सकते हो।"

रैल्फ खुली नजर से उन्हें ताकता रहा। "ओह, मैं इज़ाबेल को पैसा नहीं दे सकता।"

बूढ़ा आदमी कराहा। "तुम मुझसे यह मत कहो कि तुम उससे प्यार नहीं करते। क्या तुम इसका श्रेय मुझे देना चाहते हो?"

"पूरा! मैं आपकी वसीयत में इसका उल्लेख चाहता हूं, मेरा हल्का-सा भी ज़िक्र किए बिना।"

"क्या तुम चाहते हो कि मैं फिर से नई वसीयत करूं?"

"कुछ शब्द ही काफी हागे। आप यह काम अगली बार कर सकते हैं जब आप कुछ स्वस्थ महसूस करें।"

"तो तुम्हें मिस्टर हिलेरी को तार दे देनी चाहिए, क्योंकि मैं अपने वकील के बिना कुछ नहीं करूंगा।"

"आप मिस्टर हिलेरी से कल मिल सकेंगे।"

"वह समझेगा कि तुम्हारे और मेरे बीच झगड़ा हुआ है," बूढ़े आदमी ने कहा।

"बहुत सम्भव है। मैं चाहूंगा कि हिलेरी ऐसा ही सोचे," रैल्फ ने मुस्कराते हुए कहा, "और इस विचार को पूरा कर दे। मैं आपको पहले ही बता देना चाहता हूं कि मैं आपके साथ बहुत तीखा, रूखा और अजीब व्यवहार करूंगा।"

इस मज़ाक ने इसके पिता को छू दिया। उन्होंने लेटते हुए इसे महसूस किया। "मैं वह सब कुछ करूंगा जो तुम्हें पसन्द है," मिस्टर टाउशेट ने आखिर कहा, "लेकिन मुझे विश्वास नहीं है कि यह सही है। तुम कहते हो कि तुम उसके बादबान में हवा भरना चाहते हो। लेकिन क्या तुम्हें इस बात का डर नहीं है, कि कहीं तुम बहुत ज्यादा हवा तो नहीं भर रहे?"

"मैं उसे हवा से आगे जाते देखना चाहता हूं।" रैल्फ ने जवाब दिया।

"तुम ऐसे बात कर रहे हो जैसे यह तुम्हारे मनोविनोद की चीज़ हो।"

"यह काफी हद तक सही है।"

"बहरहाल मैं नहीं सोचता कि मैं समझ सका हूं," मिस्टर टाउशेट एक उसांस के साथ बोले, "आज के नवयुवक उससे बहुत भिन्न हैं जैसा कि मैं हुआ करता था—तब जब मैं युवा था—तो मैं उसे सिर्फ देखते रहने से कहीं ज्यादा कुछ चाहता। तुममें एक संकोच है जो मुझमें नहीं था। तुम्हारे कुछ विचार हैं जो मेरे नहीं थे। तुम कहते हो कि इज़ाबेल स्वतन्त्र होना चाहती है, और कि उसका धनी होना उसे पैसे के लिए शादी करने से रोके रहेगा। क्या तुम समझते हो कि वह ऐसा करने वाली लड़की है?"

"हरगिज़ नहीं। लेकिन उसके पास अब इतना कम पैसा है कि पहले कभी नहीं रहा। उसके पिता उसे सब कुछ देते थे, क्योंकि वे अपनी पूंजी खर्च करते रहे थे। उसके पास जीने के लिए कुछ भी नहीं है—सिवाय उस दावत के बचे

हुए सूखे टुकड़ों के, जिनके बारे में वह सचमुच नहीं जानती कि वे कितने कम हैं। मेरी मां ने उसके बारे में मुझे सब कुछ बताया है। इजाबेल को पता तब चलेगा जब वह दुनिया में फेंक दी जाएगी। उसका यह जानना मेरे लिए बहुत दुःखकर होगा कि अपनी कितनी इच्छाओं को पूरा करने में वह असमर्थ है।"

"मैंने उसके लिए पांच हजार पौंड छोड़े हैं। इतने से वह काफी इच्छाएं पूरी कर सकती है।"

"ज़रूर कर सकती है। लेकिन सम्भव है कि वह इस रकम को दो या तीन साल में खर्च कर दे।"

"तो तुम्हारा ख्याल है वह बहुत खर्चीली होगी ?"

"निश्चित ही," रैल्फ ने गम्भीरता से मुसकराते हुए कहा।

मिस्टर टाउशेट की कुशाग्रता तेज़ी से असमंजस में बदल रही थी। "तब तो उसके लिए इतनी रकम को खर्च करना केवल समय का ही प्रश्न होगा ?"

"नहीं—यद्यपि मेरा विचार है कि पहले तो वह उसकी खुशी में खो जाएगी। हो सकता है कि वह उसका कुछ हिस्सा अपनी बहनों को भी दे दे। लेकिन उसके बाद वह होश में आ जाएगी, और सोचेगी कि उसके आगे उसकी पूरी ज़िन्दगी है, और उसे अपने साधनों की सीमा में ही रहना है।"

"तुमने सब कुछ सोच रखा है," बूढ़े आदमी ने असमर्थ भाव से कहा, "निःसन्देह तुम्हारी उसमें दिलचस्पी है।"

"आप हमेशा नहीं कह सकते कि मैं बहुत दूर तक जाता हूं। आप ही ने कहा था कि मुझे दूर तक जाना चाहिए।"

"खैर, मैं नहीं जानता," मिस्टर टाउशेट ने जवाब दिया। "मैं नहीं सोचता कि मैं तुम्हारी आत्मा में प्रवेश कर सकता हूं। मुझे यह बात अनैतिक लगती है।"

"अनैतिक, प्रिय डैडी ?"

"मैं नहीं सोचता कि किसी व्यक्ति के लिए सब-कुछ आसान बना देना ठीक है।"

यह अवश्य ही व्यक्ति पर निर्भर करता है। अगर व्यक्ति अच्छा हो, तो चीज़ों को आसान बनाना अपने ही गुण का श्रेय है। इससे भला और क्या काम हो सकता है, कि आप किन्हीं अच्छी प्रवृतियों के साकार होने में योग दें ?"

इसको समझना थोड़ा कठिन था, और मिस्टर टाउशेट ने थोड़ी देर इसपर

विचार किया। आखिर उन्होंने कहा, "इज़ाबेल एक प्यारी-सी छोटी-सी चीज़ है, लेकिन क्या तुम समझते हो कि वह इतनी अच्छी है?"

"वह अपने सबसे अच्छे सुअवसरों जितनी अच्छी है," रैल्फ ने जवाब दिया।

"फिर," मिस्टर टाउशेट ने कहा, "साठ हज़ार पौंड से तो उसे और भी सुअवसर मिलने चाहिए।"

"मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है कि उसे मिलेंगे।"

"मैं अवश्य वही करूंगा जो तुम चाहते हो," बूढ़े आदमी ने कहा, "मैं तो सिर्फ थोड़ा-सा समझना चाहता था।"

"तो प्रिय डैडी, क्या आप अब भी नहीं समझ सके?" उनके बेटे ने उनपर प्यार से हाथ फेरते हुए पूछा, "अगर आप नहीं समझे, तो हम इस बारे में और तकलीफ नहीं उठाएंगे। इसे रहने देंगे।"

मिस्टर टाउशेट काफी देर शान्त लेटे रहे। रैल्फ को लगा कि उन्होंने सोचने का प्रयास छोड़ दिया है। लेकिन अन्त में वे बहुत सचेत-भाव से फिर बोले, "मुझे पहले यह बताओ—क्या तुम्हें यह नहीं सूझता कि एक युवा स्त्री, जिसके पास साठ हज़ार पौंड होंगे, किन्हीं भी धन-लोलुप लोगों की शिकार बन सकती है?"

"वह मुश्किल से किसी एक का शिकार होगी।"

"लेकिन एक भी तो बहुत हो सकता है।"

"निश्चित रूप से यह एक खतरा है, जो मेरे दिमाग में भी आता है। लेकिन मैं सोचता हूं कि खतरा रहते हुए भी यह एक छोटी-सी बात है। मैं इसका सामना करने को तैयार हूं।"

बेचारे मिस्टर टाउशेट की कुशाग्रता दुविधा में बदल गई थी और वह दुविधा अब प्रशंसा में बदल रही थी। "तो तुम इसपर सब सोच चुके हो।" उन्होंने दोहराया, "लेकिन मैं नहीं जानता कि इसमें तुम्हें क्या हासिल होगा।"

रैल्फ अपने पिता के तकिये पर झुक गया और उसे उसने हल्के से सहेज लिया। वह जानता था कि उन दोनों की बात जरूरत से ज्यादा लम्बी हो गई है। "मुझे वही हासिल होगा, जो मैंने कुछ क्षण पहले इज़ाबेल के लिए कहा था। मैं अपनी कल्पना की आवश्यकता पूरी कर सकूंगा। लेकिन मेरे लिए शरम की बात है कि मैं इस तरह आपका लाभ उठा रहा हूं।"

१९

जैसी कि मिसेज़ टाउशेट ने भविष्यवाणी की थी, मिस्टर टाउशेट की बीमारी के दौरान इज़ाबेल और मैडम मरले का बहुत-सा समय साथ-साथ बीता—ऐसे में उनमें घनिष्ठता का न होना सम्भवतः शिष्टाचार का उल्लंघन होता। शिष्टाचार में वे दोनों कुशल थीं—फिर वे एक-दूसरी को पसन्द भी करने लगी थीं। यह कहना गलत होगा कि उनमें प्रगाढ़ मित्रता हो गई थी, पर वे इसके लिए भविष्य को साक्षी मानकर चल रही थीं। इज़ाबेल ऐसा खुले मन से कर रही थी, हालांकि उसके मन में मित्रता की जो आदर्श कल्पना थी, उसे दृष्टि में रखते हुए उसे यह मानने में संकोच था कि अपनी नई मित्र से उसकी वैसी घनिष्ठता है। वह बल्कि सोचती थी कि वह कभी किसीसे घनिष्ठ नहीं हुई, न हो सकती है। अन्य भावनाओं की तरह उसके मन में मित्रता का एक आदर्श था जो इस बार—पहले हर बार की तरह—वास्तविकता में अभिव्यक्त नहीं हो पा रहा था। पर उसका यह भी ख्याल था कि कुछ ऐसे आधारभूत कारण हैं जिनसे व्यक्ति का आदर्श कभी वास्तविकता का रूप ले ही नहीं सकता। यह बात देखने की न होकर मानने की थी—अनुभव का विषय न होकर विश्वास का विषय थी। अनुभव हमें उसकी कुछ अच्छी अनुकृतियों तक ही ले जा सकता था, और बुद्धिमत्ता यही थी कि इतने को ही बहुत माना जाए। कुछ मिलाकर मैडम मरले जैसी खुश-मिज़ाज और दिलचस्प स्त्री से इज़ाबेल का पहले परिचय नहीं हुआ था। उसे पहले ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला था जिसमें वह दोष, जोकि मित्रता में सबसे अधिक बाधा डालता है, उतना कम हो—अर्थात् व्यक्ति के अपने ही चरित्र के उबाऊ, अतिपरिचित बासीपन की पुनरावृत्ति का दोष। इज़ाबेल के विश्वास के द्वार पहले से कहीं ज़्यादा खुल गए थे—वह इस लुभावनी स्त्री से बहुत-सी ऐसी बातें कह सकती थी जो उसने कभी किसीसे नहीं कही थीं। कभी-कभी वह अपनी स्पष्टवादिता से आतंकित भी हो उठती—उसे लगता जैसे उसने अपनी गहनों की पेटी की चाबी एक अजनबी के हाथ में सौंप दी हो। इज़ाबेल के पास जो महत्त्वपूर्ण हीरे थे वे केवल मानसिक ही थे—पर यह और भी कारण था कि उन्हें ध्यान से सुरक्षित रखा जाए। पर बाद में हमेशा उसे ध्यान आता कि व्यक्ति को अपनी उदारता की भूल का कभी खेद नहीं होना चाहिए—और कि मैडम मरले यदि सही पात्र नहीं थी,

तो इसका नुकसान मैडम मरले को ही था। निसन्देह उस स्त्री में कई गुण थे—आकर्षण, सहानुभूति, प्रतिभा और सुरुचि। इससे भी बड़ी बात यह थी कि वह असाधारण, ऊंची और विशिष्ट थी (यह गर्व की बात थी कि जीवन में ऐसी एक स्त्री से उसका परिचय हो सका था।) आकर्षक लोग तो दुनिया में बहुत होते हैं, पर मैडम मरले की खुश-मिज़ाजी में अशिष्टता नहीं थी और उसके विनोद में उच्छृंखलता नहीं थी। वह सोचना जानती थी, जोकि प्रायः स्त्रियां नहीं जानतीं और ठीक ढंग से सोचती थी। फिर उसमें अपना अहसास भी था—इसका पता इज़ाबेल को एक सप्ताह में ही चल गया था। यह मैडम मरले की सबसे बड़ी प्रतिभा, सबसे बड़ी योग्यता थी। ज़िन्दगी उस स्त्री ने जीकर देखी थी। इज़ाबेल को इसमें भी सन्तोष मिलता था कि उसकी कही गम्भीर बातों को भी मैडम मरले जल्दीसे और आसानी से समझ जाती थी। मैडम मरले मानती थी कि अब वह पहले जैसी भावुक नहीं रही—पहले उसकी भावना ऐसे प्रखर रूप में वह चुकी है कि अब उसके प्रवाह में वैसी तेज़ी नहीं रही। वह यह भी कहती कि अब वह कुछ चीज़ें महसूस ही नहीं करती; और खुलकर स्वीकार करती कि पहले वह कुछ-कुछ पागल थी जबकि अब उसका दिमाग बिलकुल सही हो गया है।

"मैं अब पहले से ज़्यादा निर्णय कर सकती हूं," उसने इज़ाबेल से कहा। "पर इसका अधिकार व्यक्ति उपार्जित कर लेता है। चालीस की उम्र तक आदमी निर्णय कर ही नहीं सकता—तब तक वह बहुत उत्सुक, सख्त, क्रूर और ज्ञानहीन रहता है। मुझे खेद है तुम्हें चालीस की होने में अभी बहुत दिन लगेंगे। पर हर उपलब्धि के साथ कोई न कोई हानि भी होती है। मेरा ख्याल है कि चालीस के बाद आदमी महसूस नहीं कर पाता। तब तक ताज़गी और तत्परता चली जाती है। तुममें ये चीज़ें और लोगों की अपेक्षा ज़्यादा दिन बनी रहेंगी—कुछ साल बाद तुम्हें देखकर मुझे बहुस सुख होगा। मैं देखना चाहूंगी कि ज़िन्दगी तुम्हें किस रूप में ढालती है। एक चीज़ निश्चित है। ज़िन्दगी तुम्हें बिगाड़ नहीं सकती—तुम्हें वह हिलाये चाहे कितना भी, पर तुम्हें तोड़ नहीं सकती।"

इज़ाबेल को यह आश्वासन कुछ वैसे ही लगता जैसे किसी छोटी-सी मुठभेड़ से सम्मान सहित लौटकर आए एक सिपाही को अपने कर्नल से पीठ पर थपकी मिल रही हो। यह मान्यता जैसे उसे एक अधिकारी व्यक्ति से प्राप्त हो रही थी। उस स्त्री के छोटे-से शब्द का भी आसरा कैसे न होता जो इज़ाबेल की कही हर बात

पर यह कहने को तैयार थी, "मैं इसमें से गुज़र चुकी हूं, माई डियर ! हर चीज़ की तरह यह भी बीत जाएगा।" बहुत-से बात करने वालों को मैडम मरले के इस भाव से उलझन होती—उस स्त्री को तो जैसे कोई चीज़ चकित करती ही नहीं थी। इजाबेल में भी प्रभाव डालने की इच्छा थी, पर इस समय वह उस इच्छा से मुक्त थी। वह बहुत सहज विश्वास के साथ अपनी विवेकशील मित्र में दिलचस्पी ले रही थी। फिर मैडम मरले ये बातें शेखी या विजय-गर्व के भाव से नहीं कहती थी—उसके मुंह से वे बातें शान्त आत्म-स्वीकृति की तरह लगती थी।

गार्डन कोर्ट में मौसम काफी खराब हो गया था। दिन छोटे हो जाने से लान की चाय-पार्टियां समाप्त हो गई थीं। पर घर के अन्दर इज़ाबेल की मैडम मरले से लम्बी-लम्बी बातें होतीं। वे कभी बारिश में सैर के लिए भी निकल जातीं—इन उपादानों से लैस जिनमें इंग्लिस्तान की आबोहवा और वहां की प्रतिभा ने मिल-कर एक पूर्णता ला दी है। मैडम मरले को सब कुछ पसन्द था—इंग्लिस्तान की बारिश भी। "यहां हमेशा थोड़ी-थोड़ी बारिश होती है और बहुत ज़्यादा कभी नहीं होती," वह कहती। "इससे आदमी भीगता नहीं और इसकी सुगन्ध अच्छी लगती है।" उसका ख्याल था कि सुगन्धों का सुख इंग्लैण्ड में बहुत है—इस अद्भुत द्वीप में कोहरे, बियर और धुएं की विचित्र-सी मिली-जुली गन्ध एक राष्ट्रीय विशेषता है—और यह गन्ध सूंघने में बहुत अच्छी लगती है। वह अपने ब्रिटिश ओवरकोट की बांह उठाकर अपनी नाक उसमें गड़ादेती और ऊन की भीनी सुगन्ध को अपनी सांसों में भरने लगती। पतझड़ आ जाने से बेचारा रैल्फ़ टाउशेट जैसे घर में बन्दी हो गया था। उस खराब मौसम में वह घर से बाहर नहीं निकल सकता था। वह हाथ जेबों में डाले अक्सर किसी खिड़की के पास खड़ा रहता और खेद और आलोचना के मिले-जुले भाव से इज़ाबेल और मैडम मरले को छाते संभाले वीथी से होकर जाते देखता रहता। गार्डन कोर्ट के आस-पास की सड़कें खराब मौसम में भी इतनी पुख्ता रहती थीं कि वे दोनों चमकते चेहरे लिए लौटकर आतीं और अपने मज़बूत और साफ जूतों के तलों को देखती हुई घोषणा करतीं कि उनकी सैर बहुत-बहुत अच्छी रही। सुबह लंच से पहले मैडम मरले अपने में व्यस्त रहती थी। इज़ाबेल को उसकी एकान्त सुबहों के लिए उससे ईर्ष्या होती थी। इज़ाबेल में अपनी विशेष-ताएं थीं और उसे उनका मान भी था। पर मैडम मरले की प्रतिभा, गुणों तथा

अभिरुचियों के आसपास वह इस तरह मंडराती जैसे एक प्राइवेट बागीचे की दीवार के बाहर की तरफ चल रही हो। मैडम मरले बीसियों तरह से उसे एक ऐसा आदर्श लगती जिसका वह अनुकरण करना चाहती। उस स्त्री का एक-एक गुण सामने आने पर वह अपने को कहते पाती, "मुझे बिलकुल ऐसी होना चाहिए।" शीघ्र ही उसे लगने लगा जैसे किसी अधिकारी व्यक्ति से वह सबक ले रही हो। यह स्वीकार करने में उसे समय नहीं लगा कि वह उस स्त्री के प्रभाव में आती जा रही है। "हर्ज क्या है," उसने सोचा, "जब कि प्रभाव अच्छा है? जितना ही व्यक्ति अच्छे प्रभाव में रहे, उतना ही अच्छा है। सिर्फ उसे ख्याल रखना चाहिए कि वह क्या कदम उठाता है और किस दिशा में जाता है। इसका मैं हमेशा ख्याल रखूंगी। मुझे कोई ढाल सकता है, इससे मुझे डरना नहीं चाहिए। यह क्या मेरा दोष नहीं कि मैं ढलने में इतनी असमर्थ रही हूं?" कहा जाता है कि अनुकरण से बड़ी कोई खुशामद नहीं होती। इज़ाबेल अपनी मित्र के हाव-भाव देखकर यदि स्पर्धा और हताशा, का अनुभव करती थी, तो उसका कारण उतना यह नहीं था कि वह स्वयं उसकी तरह चमकना चाहती थी, जितना यह कि वह उसके सामने लैम्प किए रहना चाहती थी। वह मैडम मरले को बहुत पसन्द करती थी—वह आकर्षित उतनी नहीं थी जितनी चुंधियायी हुई थी। वह कई बार अपने से पूछती कि हेनरीटा स्टैकपोल अमरीकन मिट्टी की इस विपरीत उपज को देखकर क्या कहेगी। उसे लगता कि हेनरीटा उसकी कड़ी आलोचना करेगी। यह जानकर भी कि हेनरीटा उसे पसन्द नहीं करेगी, वह इसके कारण नहीं खोज पाती थी। दूसरी तरफ उसे लगता कि मिलने का मौका आ पड़ा, तो मैडम मरले की हेनरीटा के सम्बन्ध में धारणा अच्छी ही होगी—अपने हास्य और निरीक्षण की विशेषता के कारण वह हेनरीटा के साथ अन्याय नहीं करेगी। वह जिस अदा के साथ उस परिचय को निभाएगी, उसका हेनरीटा अनुकरण नहीं कर सकेगी। मैडम मरले के अनुभव ने उसे हर चीज को एक कसौटी दे दी थी—और अपनी स्मृति की बड़ी-सी जेब में उसे हेनरीटा की विशेषता की भी चाबी मिल जाएगी। "यह बहुत बड़ी बात है, इज़ाबेल ने गम्भीर भाव से सोचा। "यह बहुत बड़ा भाग्य है कि व्यक्ति दूसरों का उससे अच्छा मूल्यांकन कर सके जैसा कि दूसरे उसका कर सकते है।" और सोचकर उसे लगता कि आभिजात्य का सार यही है और किसी अर्थ में नहीं, तो इस अर्थ में उसे आभिजात्य का लक्ष्य अपना लेना चाहिए।

मैं यहां शृंखला की उन सब कड़ियों को गिन दूं जिनके कारण इज़ाबेल को मैडम मरले की स्थिति आभिजात्यपूर्ण लगती थी—हालांकि वह महिला कभी किसी संकेत से स्वयं अपने बारे में ऐसी धारणा प्रकट नहीं करती थी। वह बड़ी चीज़ों और बड़े लोगों से परिचित थी, पर स्वयं उसने कोई बड़ा पार्ट नहीं खेला था। वह छोटे लोगों में से थी। उसका जन्म सम्भ्रान्त वातावरण में नहीं हुआ था, और वह दुनिया को इतना जानती थी कि वहां अपनी जगह को लेकर उसे कोई ग़लतफ़हमी भी नहीं थी। वह बहुत-से सौभाग्यशाली व्यक्तियों से मिल चुकी थी और जानती थी कि किस-किस बिन्दु पर उसका भाग्य उन लोगों से अलग पड़ता है। पर अपने मानदण्ड के अनुसार ऊंची पदवी न रखते हुए भी इज़ाबेल की आंखों में उसकी एक निजी महत्ता थी। यह अपने में ही एक महान् स्त्री का लक्षण था कि वह इतनी सुसंस्कृत, सभ्य, प्रतिभाशाली और सहज होते हुए भी इन गुणों को साधारण समझती थी और उसमें उन्हें लेकर कोई गुमान नहीं था। सामाजिक जीवन की सभी कलाएं जैसे उसने संजो रखी थीं, और जहां कहीं भी रहती थी, वहां दूसरों के हित में उनका प्रयोग करती थी। नाश्ते के बाद मैडम मरले रोज कितनी ही चिट्ठियां लिखती थी। उसके पास असंख्य चिट्ठियां आती थीं। मैडम मरले उसके साथ वहां के डाकखाने में चिट्ठियां डालने जाती, तो उनकी संख्या को देखकर उसे आश्चर्य होता। मैडम मरले इज़ाबेल को बताती थी कि वह जरूरत से ज़्यादा लोगों को जानती है और उनके साथ कुछ न कुछ होता रहता है जिसकी वजह से उसे चिट्ठियां लिखनी पड़ती हैं। चित्रकला का मैडम मरले को बहुत शौक था और जितनी आसानी से वह अपने दस्ताने उतारती थी, उतनी ही आसानी से एक स्केच बना डालती थी। गार्डन कोर्ट में घण्टे-भर की धूप पाकर वह अपना कैम्प-स्टूल और रंगों का डब्बा लिए बाहर निकल जाती। उसकी संगीत की क्षमता का इज़ाबेल पहले ही परिचय पा चुकी थी। शाम को वह प्यानो बजाने बैठ जाती, तो सुननेवाले उसकी बातचीत का सुख भूलकर सुनने में मग्न हो रहते। उससे परिचय होने के बाद से इज़ाबेल को अपने संगीत पर शरम आने लगी थी क्योंकि वह उसे अब घटिया जान पड़ता था। घर में चाहे उसे संगीत में निपुण माना जाता था, पर वास्तव में जब वह प्यानो के स्टूल पर बैठकर कमरे की तरफ पीठ कर लेती, तो सामाजिक दृष्टि से लोग लाभ से ज़्यादा हानि महसूस करते थे। जब मैडम मरले लिखने, चित्र बनाने या प्यानो बजाने में न लगी होती,

तो वह गद्दों, परदों और चिमनीपोशों की सुन्दर कढ़ाई में व्यस्त रहती। जितनी तेज उसकी सूई चलती थी, उतने ही नये-नये और साहसपूर्ण नमूने वह ईजाद करती रहती थी। निठल्ली वह कभी नहीं रहती थी। जब वह ऊपर गिनाए गए कामों में से कोई काम न कर रही होती, तो कुछ न कुछ पढ़ती रहती (इज़ाबेल का ख्याल था कि 'सब महत्त्वपूर्ण चीजें' उसने पढ़ रखी हैं), या टहलती रहती, या पेशेंस खेलती रहती या लोगों से बात करती रहती। फिर इस सबके साथ उसमें अपनी सामाजिक विशेषता भी थी—वह कभी अनावश्यक रूप से उपस्थित या अनुपस्थित नहीं रहती थी। वह जितनी आसानी से कोई काम उठाती, उतनी ही आसानी से उसे छोड़ भी देती, हाथ चलाते हुए साथ बात करती रहती, और लगता कि वह अपने किसी काम को ज़रा भी महत्त्व नहीं देती। अपने स्केच और टेपेस्ट्रियां वह बांट देती, सुननेवालों की सुविधा के अनुसार प्यानो पर बैठती या वहां से हट जाती—उसे इसका आभास हमेशा मिल जाता था कि लोग क्या चाहते हैं। संक्षेप में उसके साथ रहना बहुत सुविधाजनक, लाभप्रद और अच्छा लगता था। यदि इज़ाबेल को उसमें कोई दोष लगता था तो यह कि वह स्वाभाविक नहीं थी। इसका यह अर्थ नहीं था कि वह बनती थी या दिखावा करती थी। इन दोषों से वह और किसी भी स्त्री की अपेक्षा कहीं अधिक मुक्त थी। इससे इज़ाबेल का अभिप्राय था कि उसके स्वभाव पर रीतियों का बहुत प्रभाव है और कि उसके कोने काफी झड़ चुके हैं। वह बहुत लचकीली, उपयोगी, परिपक्व और निश्चित थी। एक शब्द में वह पूर्णरूप से उस सामाजिक पशु के रूप में ढल चुकी थी जिस रूप में ढलना स्त्रियों और पुरुषों के लिए अपेक्षित था। उस सजीव जंगलीपन के सब अंश उसने अपने में से निकाल दिए थे जो कंट्री-हाउस सभ्यता से पहले सबसे सौजन्यपूर्ण व्यक्तियों में भी पाया जाता था। इज़ाबेल उसके लिए बेलाग अकेलेपन की कल्पना भी नहीं कर पाती थी—वह स्त्री प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपने सह मर्त्यलोक वासियों के साथ किन्हीं सम्बन्धों में ही जीती थी। यह आश्चर्य का विषय था कि अपनी आत्मा के साथ उसका क्या आदान-प्रदान था। फिर आदमी शायद सोचता कि यह यौवन की भ्रान्तियों में से ही एक है कि ऊपर की आकर्षक सतह वास्तव में उथलेपन का ही आवरण होती है। मैडम मरले में उथलापन नहीं था, बिलकुल नहीं था। वह बहुत गहरी थी—चाहे वह रूढ़िगत भाषा में बात करती थी, फिर भी उसके स्वभाव की यह विशेषता छिपी रहती थी, "बात-

चीत के सिवा भाषा और है ही क्या ?" इज़ाबेल कहती, "उसमें इतनी सुरुचि है कि वह कुछ लोगों की तरह अपनी मौलिकता दिखाने के चक्कर में खामखाह का आडम्बर नहीं करती।"

एक बार किसी अर्थपूर्ण संकेत के उत्तर में उसने मैडम मरले से कहा, "लगता है, तुमने बहुत दुःख उठाया है।"

"यह तुम्हें किस बात से लगता है ?" मैडम मरले ने 'बूझो तो जानें' का खेल खेलते व्यक्ति की तरह रुचि के साथ मुस्कराकर कहा, "मुझे आशा है कि मेरी बातें वहुत ज़्यादा ऐसी भ्रान्ति पैदा नहीं करतीं।"

"नहीं। पर कभी-कभी तुम कुछ ऐसी बातें कहती हो जिनका बिना दुःख उठाए व्यक्ति को पता चल ही नहीं सकता।"

"मैं हमेशा सुखी नहीं रही," मैडम मरले कृत्रिम गम्भीरता के साथ मुस्कराती हुई बोली, जैसे एक बच्चे को कोई रहस्य की बात बतला रही हो, "कितनी अद्‌भुत बात है यह !"

इज़ाबेल उस व्यंग्य तक उठ आई, "बहुत-से लोगों को देखकर मेरी यह धारणा बनती है कि उन्होंने कभी एक क्षण के लिए भी कुछ महसूस नहीं किया।"

"यह सच है। दुनिया में लोहे के बरतन चीनी मिट्टी के बरतनों से कहीं ज़्यादा हैं। पर विश्वास मानो, हरेक पर कुछ न कुछ निशान ज़रूर होता है। सख्त से सख्त बरतन में भी कोई एक खरोंच या सूराख तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा। मैं अपने को काफी मज़बूत समझती हूं, पर सच पूछो तो मेरी भी बहुत तोड़-फोड़ हुई है। मैं काम लायक फिर भी हूं क्योंकि मेरी ढंग से मरम्मत हो सकी है। मैं ज़्यादा से ज़्यादा वक्त कबाट में बनी रहती हूं—पुराने मसालों की गन्ध से भरे अंधेरे कबाट में। पर जब मुझे तेज़ रोशनी में बाहर आना पड़ता है, तो मेरी सूरत भयंकर नज़र आती है !"

पता नहीं इस अवसर पर या किसी और अवसर पर ऐसी बातचीत के दौरान उसने इज़ाबेल से कहा कि वह किसी दिन उसे अपनी कहानी सुनाएगी। इज़ाबेल ने कहा कि उसे सुनकर खुशी होगी और कितनी ही बार उसने उसे इसकी याद दिलाई। मैडम मरले हर बार और वक्त मांगती रही और आखिर उसने कहा कि उन्हें तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए जब तक कि वे एक-दूसरी को और ज़्यादा

नहीं जान जातीं। इसका अवसर जरूर आएगा क्योंकि उनकी मित्रता काफी लम्बी चलेगी। इज़ाबेल सहमत हो गई, पर साथ ही उसने पूछ लिया कि क्या मैडम मरले को उसपर विश्वास नहीं है—क्या वह समझती है कि वह उसका भेद रख नहीं सकेगी।

"मुझे यह डर नहीं है कि तुम मेरी बात किसीसे कह दोगी," मैडम मरले बोली, "मुझे बल्कि डर है कि तुम उसे बहुत ज्यादा अपने मन में रखे रहोगी। तुम मुझे कड़ी नज़र से देखने लगोगी क्योंकि तुम्हारी उम्र क्रूरता की है।" फिलहाल वह इज़ाबेल से उसीके बारे में बातें किया करती—उसके इतिहास, भावनाओं, धारणाओं और सम्भावनाओं में अत्यधिक रुचि प्रकट करती। इससे इज़ाबेल अपने को बड़ी और महत्त्वपूर्ण समझती। वह इससे बहुत प्रभावित थी कि मैडम मरले का बड़े-बड़े लोगों से परिचय रहा है, और जैसाकि मिसेज़ टाउशेट कहती थीं," वह यूरोप के श्रेष्ठतम लोगों के साथ रह चुकी है। ऐसी स्त्री की कृपापात्र होना, जो बहुत विस्तृत क्षेत्र में लोगों के साथ उसकी तुलनाकर सकती थी, इज़ाबेल के लिए गर्व का विषय था। अक्सर इस तुलना का लाभ उठाने के लिए ही वह मैडम मरले से उसके पुराने संस्मरण सुनना चाहती। मैडम मरले बहुत-से देशों में रही थी और बाहर अलग-अलग देशों में उसके सामाजिक सूत्र बिखरे थे। "मैं शिक्षित होने का दावा नहीं करती," वह कहती, "पर अपने यूरोप को मैं जानती हूं।" एक दिन वह किसी पुराने मित्र के यहां स्वीडन जाने की बात करती, तो दूसरे दिन किसी नये परिचित से मिलने मालटा जाने की बात। इंग्लैण्ड में वह बहुत रही थी और वहां से बहुत अच्छी तरह परिचित थी। इज़ाबेल के लाभ के लिए वह उस देश के रीति-रिवाज़ों पर काफी प्रकाश डालती रहती। वह अक्सर कहती कि साथ रहने के लिहाज से उस देश के लोग सबसे अच्छे हैं।

"तुम्हें इसपर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वह इन दिनों, जबकि मिस्टर टाउशेट मृत्यु-शैय्या पर पड़े हैं, यहां क्यों है," एक दिन मिसेज़ टाउशेट ने इज़ाबेल से कहा, "वह गलत काम कभी नहीं करती। मेरी जानकारी में वह दुनिया की सबसे चतुर स्त्री है। वह मेरी वजह से और कई बड़े घरों में जाना टालकर यहां रुकी हुई है।" मिसेज़ टाउशेट यह कभी नहीं भूल पाती थीं कि इंग्लैण्ड में रहते उनका सामाजिक मूल्य दो-तीन डिग्री कम हो जाता है, "वह अच्छी से अच्छी

जगह जा सकती है—उसे जगहों की कमी नहीं है। पर मैंने उसे रोक रखा है, ताकि तुम उसे जान सको। यह तुम्हारे हक में अच्छा होगा। सेरेना मरले में एक भी दोष नहीं है।"

"मैं उसे पहले से न जानती, तो इस वर्णन से घबरा जाती," इज़ाबेल बोली।

"वह कभी ज़रा भी अव्यवस्थित नहीं होती। मैं तुम्हें साथ लाई हूं, और तुम्हारे लिए सब कुछ करना चाहती हूं। तुम्हारी बहन लिली ने मुझसे कहा था कि उसे आशा है मैं तुम्हें पर्याप्त अवसर दूंगी। एक अवसर यही है कि मैंने मैडम मरले से तुम्हारा सम्बन्ध स्थापित कर दिया है। वह यूरोप की सबसे प्रतिभाशाली स्त्रियों में से है।"

"मुझे आपका वर्णन उतना अच्छा नहीं लग रहा जितनी अच्छी वह स्वयं लगती है," इज़ाबेल ने फिर अपनी बात दोहरा दी।

"तुम्हारा ख्याल है तुम्हें उसमें आलोचना करने को कुछ मिल जाएगा? जब ऐसा हो, मुझे पता दे देना।"

"यह क्रूरता होगी—आपके साथ।"

"तुम मेरी चिन्ता मत करो। तुम्हें उसमें कोई दोष नहीं मिलेगा।"

"हो सकता है। पर कोई भी दोष मेरी नज़र से बचा नहीं रहेगा।"

"दुनिया में जो कुछ जानने को है, वह सब जानती है," मिसेज़ टाउशेट बोली।

बाद में इज़ाबेल ने मैडम मरले से कहा कि उसे शायद पता होगा कि मिसेज़ टाउशेट उसे निर्दोष रूप से पूर्ण समझती हैं। इसपर मैडम मरले ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे प्रति आभारी हूं। पर मेरा ख्याल है, तुम्हारी आंटी की नज़र में ऐसी कोई त्रुटि नहीं है जो घड़ी में सामने नज़र न आ जाती हो।"

"तुम्हारा मतलब है कि तुम्हारा एक उद्दण्ड पक्ष भी है जिसका उन्हें पता नहीं है।"

"नहीं। मेरा ख्याल है मेरा सबसे अंधेरा पक्ष वह है जो सबसे विनीत है। पर किसीके निर्दोष होने से तुम्हारी आंट का मतलब इतना ही है कि व्यक्ति डिनर के समय पर—मतलब उनके डिनर के समय पर—ठीक से पहुंच जाए। जिस दिन तुम लन्दन से आई थीं, उस दिन भी मैं डिनर के लिए लेट नहीं हुई थी—घड़ी में ठीक

आठ बजे थे जब मैं कमरे में पहुंच गई थी। पर तुम सब लोग वक्त से पहले आ पहुंचे थे। उनका मतलब यह भी है कि आदमी को जिस दिन किसीकी चिट्ठी आए, वह उसी दिन उसका जवाब दे दे, जब उनके यहां रहने के लिए आए तो ज्यादा सामान साथ न लाए और ध्यान रखे कि आकर बीमार न पड़े। मिसेज़ टाउशेट इन्हीं चीज़ों को गुण समझती हैं—यह सौभाग्य की बात है कि व्यक्ति गुणों को इन तत्त्वों तक सीमित कर ले।"

मैडम मरले अपनी बातचीत में काफी आलोचना कर लेती थी, पर वह आलोचना अपने प्रभाव के बावजूद इज़ाबेल को बुरे स्वभाव की उपज नहीं लगती थी। यह उसे कभी नहीं लगता था कि मैडम मरले मिसेज़ टाउशेट की निन्दा कर रही है। एक तो इज़ाबेल बात की सही रंगत को पकड़ सकती थी, दूसरे मैडम मरले की बातों से लगता था कि जितना कहना चाहिए, उतना वह नहीं कह रही, और तीसरे उसके खुलेपन से अपने प्रति उसकी आत्मीयता का आभास मिलता था। पारस्परिक आदान-प्रदान की यह घनिष्ठता दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई—इसमें सबसे ज्यादा अहसास इज़ाबेल को इस बात का था कि मैडम मरले ज्यादा बात उसीके बारे में करना चाहती है। वह अपने जीवन की घटनाओं की ओर भी, प्रायः संकेत करती थी, पर संक्षेप में। उसमें भोंडा अहंभाव उतना ही कम था जितनी खामखाह गप करने की आदत।

"मैं बूढ़ी, बासी और मुरझाई हुई हूं," मैडम मरले अक्सर कहती, "मेरा महत्त्व उतना ही है जितना पिछले सप्ताह के समाचारपत्र का। तुम युवा हो, ताज़ा हो, और आज की हो। तुममें बड़ी चीज़ है आज की वास्तविकता। कभी वह मुझमें भी थी—घड़ी-भर के लिए सभी में होती है। पर तुममें यह ज्यादा देर रहेगी। इसलिए आओ, तुम्हारी बात करें। तुम्हारी कोई ऐसी बात नहीं जो मैं नहीं सुनना चाहूंगी। मैं अपने से छोटों से बात करना चाहती हूं, यह मेरे बुढ़ियाने की निशानी है। यह अपने में ही एक बड़ी क्षति-पूर्ति है। अपने में यौवन न हो, तो व्यक्ति को वह अपने से बाहर मिल सकता है—यौवन को देखने और महसूस करने का यह बेहतर तरीका है। हां, हमें उससे सहानुभूति होनी चाहिए जो मुझ हमेशा रहेगी। बूढ़े लोगों से भी मैं बद-सलूकी कभी नहीं करूंगी—कुछ बूढ़े लोग ऐसे भी हैं जिन्हें मैं बहुत चाहती हूं। पर युवा लोगों की मैं अत्यधिक प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकती क्योंकि वे मेरे मन को बहुत छूते हैं। तुम्हें मेरी तरफ से

खुली छुट्टी है—तुम चाहे कितनी भी धृष्टता मुझसे करो, मैं उसे नज़र अन्दाज़ करके तुम्हें बिगाड़ती रहूंगी। तुम कहोगी कि मैं सौ बरस की बूढ़ियों की तरह बात कर रही हूं। पर मैं हूं उतनी बूढ़ी—मेरा जन्म फ्रेंच क्रान्ति से पहले हुआ था। माई डियर, मैं सचमुच पुरानी दुनिया की हूं। पर मैं उसकी नहीं, नई दुनिया की बात करना चाहती हूं। तुम मुझे अमरीका के बारे में और बताओ—तुम कभी मुझे ज्यादा नहीं बतलातीं। मैं बचपन में एक असहाय बच्ची के रूप में यहां लाई गई थी, और तब से मैं यहीं हूं। यह दुर्भाग्य की बात है कि मैं उस देश के बारे में कुछ भी नहीं जानती जो सब देशों से बड़ा और अद्भुत है। मुझ जैसे बहुत से लोग यहां हैं और हम सब दयनीय प्राणी हैं। व्यक्ति को रहना अपने ही देश में चाहिए क्योंकि वहां उसका जैसा भी हो, अपना एक स्वाभाविक स्थान होता है। हम अच्छे अमरीकन नहीं हैं तो यूरोपियन तो और भी बुरे हैं क्योंकि यहां हमारा कोई स्वाभाविक स्थान नहीं है। हम लोग सतह पर मंडराती जोंकें हैं जिनके पैर ज़मीन में नहीं हैं। व्यक्ति को इस सम्बन्ध में कम से कम कोई भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। एक स्त्री का तो फिर भी गुज़ारा हो सकता है क्योंकि मेरा ख्याल है एक स्त्री का स्वाभाविक स्थान कहीं भी नहीं होता। उसे जहां भी जगह मिल जाए, वहीं सतह पर रहकर उसे रेंगना पड़ता है। यह बात तुम्हें बुरी लग रही है, डियर ? तुम्हारा ख्याल है तुम कभी नहीं रेंगोगी ? मैं भी तुम्हारे रेंगने की कल्पना नहीं करती—तुम बहुत-सी स्त्रियों से ज़्यादा तनकर रहती हो। खैर, मैं समझती हूं, तुम्हें रेंगने की नौबत नहीं आएगी। पर पुरुष अमरीकनों का यहां आकर क्या होता है ? उन्हें अपने को खपाते देखकर मुझे स्पर्धा नहीं होती। तुम रैल्फ टाउशेट को ही ले लो—कैसी लगती है तुम्हें यह आकृति ? सौभाग्यवश वह अन्दर से रोगी है। मैं सौभाग्यवश इसलिए कहती हूं कि उसके पास कुछ तो करने को है। उसका रोग एक तरह का केरियर है, रुतबा है। तुम कह सकती हो, 'ओह, मिस्टर टाउशेट अपने फेफड़ों की देखभाल करता है; उसे अलग-अलग मौसमों की बहुत अच्छी जानकारी है।' पर बिना बीमारी के वह क्या है, किसका प्रतिनिधित्व करता है ? 'मिस्टर रैल्फ टाउशेट—एक यूरोपवासी अमरीकन'—इसका क्या अर्थ है ? कुछ भी नहीं। लोग कहते हैं, 'वह व्यक्ति बहुत सुसंस्कृत है; उसके पास सुंघनी के डब्बों का अच्छा संग्रह हैं।' इस तरह के संग्रह से ही तो व्यक्ति दयनीय लगता है। मुझे यह शब्द सुनकर ही उबकाई आती है। रैल्फ के पिता की बात अलग है। उनका

अपना एक स्थान है और काफी बड़ा स्थान है। वे एक बड़े आर्थिक संस्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं, और आज के ज़माने में यह चीज़ उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी कि और कोई भी चीज़। एक अमरीकन के लिए यह काफी अच्छी स्थिति है। पर तुम्हारे कज़िन के लिए यह बहुत अच्छा है कि उसे एक संक्रामक रोग है–बस उससेबे चारे की मृत्यु नहीं होनी चाहिए। सुंघनी के डब्बों से यह कहीं अच्छी चीज़ है। तुम कहोगी कि वह बीमार न होता तो ज़रूर कुछ काम करता—बैंक में अपने पिता की जगह ले लेता। मुझे इसमें सन्देह है क्योंकि बैंक में उसकी ज़रा दिलचस्पी नहीं है। पर तुम उसे ज्यादा अच्छी तरह जानती हो—हालांकि कभी मैं भी उसे काफी अच्छी तरह जानती थी—और उसे सन्देह का लाभ दिया जा सकता है। इसका सबसे बुरा उदाहरण मेरा एक ऐसा अमरीकन मित्र है जो इटली में रहता है (उसे भी बचपन में ही वहां ले आया गया था)। उतना लुभावना आदमी मैंने आज तक नहीं देखा। कभी मैं उससे तुम्हारा परिचय कराऊंगी। उसे जानकर तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं क्या कहना चाहती हूं। उसका नाम है, गिलबर्ट ऑसमण्ड और परिचय इतना ही है कि वह इटली में रहता है। बहुत प्रतिभाशाली आदमी है जोकि ज़िन्दगी में कुछ कर सकता था, पर आज इसके अलावा उसका कुछ परिचय नहीं कि वह मिस्टर गिलबर्ट ऑसमण्ड है जो इटली में रहता है। न कोई केरियर, न नाम, न स्थिति, न सम्पत्ति, न अतीत, न भविष्य, न कुछ और। हां, वह मेरी तरह थोड़ा पेंट ज़रूर करता है—वाटर कलर्ज़ में। मुझ-से अच्छा पेंट करता है। यूं उसकी पेंटिंग काफी खराब है, और मुझे इसकी खुशी है। सौभाग्यवश वह इतना निठल्ला है कि उसका निठल्लापन ही एक तरह का रुतबा है। वह कह सकता है, "मैं कुछ भी नहीं करता क्योंकि मैं बहुत आलसी हूं। कुछ करने के लिए ज़रूरी है कि आदमी सुबह पांच बजे उठे।' इससे वह एक अप-वाद बन जाता है। लगता है कि वह बस सुबह उठ सकता, तो ज़रूर कुछ कर सकता था। वह प्राय: लोगों से अपनी पेंटिंग की बात नहीं करता—इतनी समझ उसमें है। पर उसके एक लड़की है, छोटी-सी लड़की, जिसकी वह अक्सर बात करता है। उसे वह बहुत चाहता है। अगर अच्छा पिता होना ही एक केरियर हो, तो उसमें वह बहुत विशिष्ट है। पर मेरा ख्याल है यह भी सुंघनी के डब्बों से बेहतर चीज़ नहीं, बल्कि कुछ बदतर ही है। अच्छा बताओ, अमरीका में लोग क्या करते हैं? 'मैडम मरले ने यह सब एक-साथ नहीं कहा—केवल पाठक की

सुविधा के लिए हमने सब बातों को यहां इकट्ठा कर दिया है। वह फ्लोरेंस की बातें करती जहां मिस्टर ऑसमण्ड रहता था और जहां मिसेज़ टाउशेंट ने एक मध्य-कालीन महल ले रखा था। रोम की बातें करती जहां उसने अपनी एक जगह ले रखी थी और जहां उसके पास पुराने रेशम के कुछ टुकड़े थे। वह विभिन्न स्थानों, लोगों और 'विषयों' की चर्चा करती। कभी-कभी वह नेक मिस्टर टाउशेट और उनके बीमारी से ठीक होने की भी बात करती। शुरू से ही मैडम मरले को इसकी ज्यादा आशा नहीं थी। जिस निश्चित, विवेकपूर्ण और अधिकारी ढंग से वह उस व्यक्ति के शेष दिनों का जायज़ा लेती, वह इज़ाबेल को बहुत प्रभावपूर्ण लगता। एक शाम मैडम मरले ने निश्चित घोषणा कर दी कि मिस्टर टाउशेट अब बचेंगे नहीं।

"सर मैथ्यू होप ने जितने साफ शब्दों में बताना उचित था, मुझे बता दिया है," उसने कहा, "अभी डिनर से पहले यहां आग के पास खड़े-खड़े। वह डॉक्टर बहुत अच्छे ढंग से बात करता है। उसने सीधे तौर पर ऐसा कुछ नहीं कहा, पर उसका बात करने का अपना तरीका है। मैंने उससे कहा कि मुझे इन दिनों यहां रहना अच्छा नहीं लग रहा क्योंकि मैं उपचार में कुछ मदद नहीं कर सकती। 'तुम्हें अभी रुकना चाहिए, ज़रूर रुकना चाहिए,' उसने कहा, 'क्योंकि तुम्हारी ज़रूरत बाद में पड़ेगी।' यह इस बात को कहने का बहुत नफीस ढंग नहीं है कि बेचारे मिस्टर टाउशेट की जान अब ज्यादा दिन नहीं रहेगी, और कि यहां सांत्वना देने के लिए मेरी ज़रूरत पड़ेगी? यूं मैं उस रूप में भी ज़्यादा उपयोगी नहीं हो सकूंगी। तुम्हारी आंट स्वयं अपने को सांत्वना दे लेंगी क्योंकि अकेली वही जानती हैं कि उन्हें कितनी सांत्वना की आवश्यकता होगी। दूसरा कोई उन्हें सांत्वना की खूराक दे, यह बहुत मुश्किल काम होगा। तुम्हारे कज़िन की बात दूसरी है क्योंकि उसे अपने पिता का अभाव बहुत अखरेगा। पर मैं मिस्टर रैल्फ से सहानुभूति प्रकट नहीं कर सकूंगी क्योंकि हमारा सम्बन्ध ऐसा नहीं है।" मैडम मरले कई बार रैल्फ टाउशेट के साथ अपने सम्बन्ध की बाधा की ओर संकेत कर चुकी थी। इज़ाबेल ने उससे पूछ लिया कि क्या उन दोनों में मित्रता नहीं है।

"बहुत मित्रता है। पर वह मुझे पसन्द नहीं करता।"

"तुमने उसका क्या बिगाड़ा है?"

"कुछ भी नहीं। पर इसके लिए आदमी को कारण की ज़रूरत नहीं

होती।"

"तुम्हें नापसन्द करने के लिए ? मैं समझती हूं कि बहुत अच्छे कारण की जरूरत है।

"यह तुम्हारी कृपा है। पर जिस दिन तुम शुरू करो, उस दिन के लिए एक कारण ढूंढ रखो।"

"तुम्हें नापसन्द करना शुरू करूं ? ऐसा कभी नहीं होगा।"

"आशा करती हूं कि नहीं होगा। पर एक बार शुरू हो जाए, तो उसका कोई अन्त नहीं होगा। तुम्हारे कज़िन के साथ यही बात है। उसका अब बस नहीं है। यह एक स्वभावगत विरोध है—केवल एक-तरफा भाव को अगर ऐसा कहा जा सके। मेरे मन में उसके खिलाफ कुछ नहीं है और न ही इस बात की शिकायत है कि वह मेरे साथ न्याय नहीं करता। मैं केवल न्याय चाहती हूं। मैं उसे एक भला आदमी समझती हूं और सोचती हूं कि वह मेरे बारे में कभी कोई ओछी बात नहीं कहेगा। फिर भी, 'मैडम मरले ने पल भर बाद जोड़ा, "मैं उससे डरती नहीं हूं।"

"मुझे इसकी पूरी आशा है," साथ इज़ाबेल ने कहा कि रैल्फ जैसा भला आदमी शायद और कोई है ही नहीं। उसे याद था कि मैडम मरले का ज़िक्र होने पर पहली बार रैल्फ ने उससे जो बात कही थी, वह अस्पष्ट होते हुए भी मैडम मरले को चोट पहुंचाती। इज़ाबेल का ख्याल था कि उन दोनों के बीच कोई बात है, पर इससे ज़्यादा इस विषय को उसने महत्त्व नहीं दिया। अगर कोई बड़ी बात थी, तो उसे उसका सम्मान करना चाहिए था और अगर कोई साधारण बात थी, तो उत्सुकता की कोई आवश्यकता नहीं थी। जानने की चाह होते हुए भी वह परदे उठाकर अंधेरे कोनों में झांकने से कतराती थी। उसके मन में जानने की भूख का अनजान बने रहने की क्षमता के साथ अच्छा सह-अस्तित्व था।

पर मैडम मरले की कुछ बातों से चौंककर उसकी भवें तन जाती थीं और वह बाद में उनके बारे में सोचती रहती थी, "तुम्हारी उम्र की होने के लिए मैं क्या नहीं कर सकती।" एक बार मैडम मरले ने ऐसी कटुता के साथ कहा जो उसकी स्वाभाविक सहजता की पुट रहते भी उससे पूरी तरह ढक नहीं पाई, "अगर मैं फिर से शुरू कर सकती—मेरी पूरी ज़िन्दगी मेरे आगे होती!"

"तुम्हारी ज़िन्दगी अब भी तुम्हारे आगे है," इज़ाबेल ने एक अस्पष्ट-सा भय

महसूस करते हुए कोमल स्वर में उत्तर दिया।

"नहीं, इसका सबसे अच्छा भाग गुज़र चुका है—बिलकुल व्यर्थ जा चुका है।"

"व्यर्थ हरगिज़ नहीं," इज़ाबेल बोली।

"क्यों नहीं—मेरे पास है क्या? न पति, न बच्चा, न सम्पत्ति, न स्थिति और न ही सौन्दर्य का अवशेष, क्योंकि सुन्दर तो मैं कभी थी ही नहीं।"

"तुम्हारे कितने ही मित्र हैं।"

"मैं निश्चित नहीं कह सकती!" मैडम मरले बोली।

"तुम गलत कहती हो। तुम्हारे पास स्मृतियां हैं, अपना रंग-ढंग है, प्रतिभा है…।"

मैडम मरले ने उसकी बात काट दी, "अपनी प्रतिभा से मुझे क्या मिला है? यही कि अब भी उसे इस्तेमाल करके किसी तरह दिन-साल काटती रहूं, एक अवचेतन गति की छलना से अपने को छलती रहूं? जहां तक मेरे रंग-ढंग और स्मृतियों का सम्बन्ध है, उनकी जितनी कम बात की जाए, उतना ही अच्छा है। तुम भी तभी तक मेरी मित्र रहोगी जब तक तुम्हें अपनी मित्रता का कोई बेहतर उपयोग नहीं मिल जाता।"

"तो यह तुम्हें देखना है कि ऐसा न हो।"

"हां, मैं प्रयत्न करूंगी," मैडम मरले की दृष्टि गम्भीर हो गई, "तुम्हारी उम्र की होने से मेरा मतलब है तुम्हारे जैसी होना—स्पष्ट, उदार और ईमानदार। उस स्थिति में मेरे जीवन का बेहतर उपयोग हो सकता।"

"ऐसा क्या है जो तुम नहीं कर सकीं और करना चाहती हो?"

मैडम मरले ने संगीत की एक कापी उठा ली। वह प्यानो के पास बैठी थी और ऊपर की बात करते हुए उसने अचानक स्टूल को घुमा लिया था। अब वह मशीनी ढंग से पन्ने पलटने लगी, "मैं बहुत महत्त्वाकांक्षी हूं!" उसने आखिर कहा।

"और तुम्हारी महत्त्वाकांक्षाएं पूरी नहीं हुईं? तब तो वे बहुत बड़ी रही होंगी।"

"हां, थीं बहुत बड़ी। मैं उनकी बात करने लगूं, तो हास्यास्पद लगूंगी।"

इज़ाबेल को आश्चर्य हुआ। क्या मैडम मरले सिर पर ताज पहनना चाहता

थी ? "सफलता की तुम्हारी क्या धारणा है, मैं नहीं जानती । पर मेरी नज़र में तुम एक सफल स्त्री हो—बल्कि सफलता की प्रतिमूर्ति हो ।"

मैडम मरले ने मुस्कराते हुए संगीत के पन्ने रख दिए, "तुम्हारी सफलता की धारणा क्या है ?"

"तुम्हें वह बहुत साधारण लग रही होगी । मेरी धारणा है अपने यौवन के किसी सपने की पूर्ति ।"

"ओह !" मैडम मरले बोली, "मेरे लिए वह कभी नहीं हुई ! पर मेरे सपने बहुत महान, बहुत असम्भव-से थे । ईश्वर क्षमा करे, मैं अब भी सपने में जी रही हूं !" और प्यानो की तरफ मुड़कर वह आवेश के साथ उसे बजाने लगी । अगले दिन उसने इज़ाबेल से कहा कि उसकी सफलता की परिभाषा बहुत सुन्दर थी, फिर भी बहुत उदास करनेवाली थी । इस माप से कौन कभी सफल हुआ है ? यौवन के सपने बहुत मोहक, बहुत दिव्य होते हैं ! उनकी पूर्ति किसने देखी है ?

"मैंने देखी है—कुछ एक की," इज़ाबेल ने साहस के साथ उत्तर दिया ।

"देख भी ली ? वे बीते कल के सपने होंगे ।"

"मैं बहुत छोटी उम्र से सपने पालने लगी थी," इज़ाबेल मुसकराई ।

"तुम्हारा मतलब बचपन की आकांक्षाओं से तो नहीं—कि एक गुलाबी दोपट्टा हो और एक आंखें मूंदनेवाली गुड़िया ।"

"मेरा इन चीज़ों से मतलब नहीं ।"

"या इससे कि सुन्दर मूंछों वाला एक नवयुवक हो जो तुम्हारे सामने घुटने टेके ।"

"इससे भी नहीं," इज़ाबेल ने और ज़ोर देकर कहा ।

मैडम मरले ने उसकी उत्सुकता को लक्ष्य किया । "मेरा ख्याल है तुम्हारा मतलब इसीसे है । मूंछोंवाले युवक की बात हम सभी सोचती हैं । वह सपना सबका होता है और उसका कोई महत्त्व नहीं ।"

इज़ाबेल कुछ देर चुप रही, फिर अपने विशिष्ट ढंग से बोली, "महत्त्व क्यों नहीं है ? युवक और युवक में अन्तर होता है ।"

"तुम्हारा मतलब है तुम्हारा युवक आदर्श था ?" मैडम मरले ने हंसकर पूछा, "अगर तुम्हें बिलकुल अपने सपने जैसा युवक मिल गया है, तो तुम सफल

रही हो, और मैं तुम्हें बधाई देती हूं। उस हालत में तुम उसके साथ एपेनाइन्ज के महल में क्यों नहीं चली गईं ?"

"उसका एपेनाइन्ज में कोई महल नहीं है।"

"तो क्या है ? फौर्टियेथ स्ट्रीट में एक भद्दा-सा ईंटों का मकान ? यह मत कहना—इसे मैं आदर्श नहीं मानूंगी।"

"मुझे उसके मकान की ज़रा परवाह नहीं है," इज़ाबेल बोली।

" यह तुम भोंडी बात कह रही हो। मेरे जितना जी लो, तो तुम्हें पता चल जाएगा कि हर इन्सान का एक छिलका होता है और छिलके को नज़र-अन्दाज़ नहीं किया जा सकता। छिलके से मेरा मतलब परिस्थितियों के पूरे आवरण से है। कोई भी स्त्री या पुरुष अपने में कटा हुआ नहीं होता—हम सबका निर्माण उपकरणों के एक समूह से होता है। हम अपना 'आत्म' किसे कहेंगे ? उसका आरम्भ कहां से होता है ? अन्त कहां पर होता है ? वह हमारे सब व्यापारों में संचारित होकर फिर वापस बह आता है। मैं अपना बहुत-सा अंश उन कपड़ों में पहचानती हूं जिन्हें मैं पहनने के लिए चुनती हूं। वस्तुओं के लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है। दूसरों के लिए व्यक्ति का 'आत्म' है उस आत्म की अभिव्यक्ति; और बहुत कुछ अभिव्यक्त होता है उसके मकान से, साज-सामान से, कपड़ों से, उन पुस्तकों से जिन्हें वह पढ़ता है, और उन लोगों से जिनके साथ वह रहता है।"

बात काफी अमूर्त-सी थी—पर मैडम मरले की बहुत-सी बातें इससे भी अमूर्त्त होती थीं। इज़ाबेल को अमूर्त्त बातों का शौक था, पर मानव-व्यक्तित्व के इस विश्लेषण में वह अपने को अपनी मित्र के साथ नहीं पा रही थी।" मैं तुम से सहमत नहीं हूं। मैं बिलकुल दूसरी तरह से सोचती हूं। मैं अपने को अभिव्यक्त कर सकती हूं या नहीं, मैं नहीं जानती । पर यह जानती हूं कि और कोई चीज़ मुझे अभिव्यक्त नहीं कर सकती। मेरी कोई चीज़ मेरा माप नहीं है—वह बल्कि एक सीमा, एक बाधा है जिसका केवल आनुषंगिक महत्त्व है। जो कपड़े मैं चुनती हूं, वे निःसन्देह मुझे अभिव्यक्त नहीं करते—और ईश्वर न करे कि कभी ऐसा हो !"

"तुम्हारे कपड़े बहुत अच्छे होते हैं," मैडम मरले ने हल्के ढंग से कहा।

"सम्भव है, पर मैं उन्हें अपनी परख का आधार नहीं मानती। वे मेरे ड्रेस

मेकर पर प्रकाश डाल सकते हैं, मुझपर नहीं। सबसे पहली बात तो यही है कि कपड़े पहनना ही मेरा अपना चुनाव नहीं है। वे मेरे ऊपर समाज द्वारा लादे गए हैं।"

"तो तुम क्या बिना कपड़ों के रहना चाहोगी?" मैडम मरले ने ऐसे स्वर में पूछा कि उसमें यह बातचीत वहीं समाप्त हो गई।

यहां मुझे कहना होगा—हालांकि इससे मैडम मरले के प्रति इज़ाबेल के लगाव में थोड़ा दोष जान पड़ेगा—कि उसने लार्ड वारबर्टन या कैस्पर गुडवुड के सम्बन्ध में उस महिला को कुछ नहीं बताया था। उसने यह बात नहीं छिपाई थी कि उससे विवाह के प्रस्ताव हुए थे और कि वे कितने अच्छे थे। लार्ड वारबर्टन लौकले छोड़कर अपनी बहिनों के साथ स्कॉटलैंड चला गया था। वहां से उसने एक पत्र लिखकर रैल्फ से मिस्टर टाउशेट के स्वास्थ्य के बारे में पूछा था। वह वहां मौजूद होता और स्वयं हालचाल पूछने आता, तो इज़ाबेल को जो असुविधा होती, उससे वह बची रही थी। अपने अच्छे संस्कारों के बावजूद गार्डन कोर्ट आकर अगर वह मैडम मरले से मिलता, तो उससे मित्रता होते ही वह उसे बता देता कि वह उसकी युवा मित्र से प्रेम करता है। इससे पहले मैडम मरले कभी उतने दिन वहाँ नहीं रही थी, और तब लार्ड वारबर्टन या लौकले से बाहर गया था, या गार्डन कोर्ट नहीं आया था। इसलिए उस इलाके के एक बड़े आदमी के रूप में लार्ड वारबर्टन के नाम से परिचित होते हुए भी मैडम मरले को सन्देह नहीं हो सकता था कि उस आदमी ने मिसेज़ टाउशेट की नई इम्पोर्ट हुई भांजी से प्रेम-प्रस्ताव किया होगा।

"तुम्हारे पास अभी बहुत समय है," मैडम मरले ने इज़ाबेल के सीमित विश्वास के उत्तर में कहा। इज़ाबेल को पूरी बात कहने का दावा भी नहीं था, और हम देख चुके हैं कि बीच-बीच में उसे ज़रूरत से ज़्यादा बात कह देने के लिए खेद होने लगता था।" मुझे खुशी है कि तुमने अब तक ब्याह नहीं किया और अभी आगे चलकर करोगी। यह अच्छा ही है कि एक लड़की दो एक अच्छे प्रस्तावों को ठुकरा दे—जब तक कि यह सम्भावना न हो कि उनसे अच्छे प्रस्ताव उससे नहीं होंगे। क्षमा करना अगर मेरी बात तुम्हें भ्रष्ट लगे—आदमी को कभी दुनियादारी के ढंग से भी सोचना चाहिए। सिर्फ इन्कार करने के लिए ही इन्कार मत करती रहना। अपनी शक्ति का प्रयोग बहुत अच्छा है, पर स्वीकार करना भी तो आखिर शक्ति का ही एक प्रयोग है। इसका हमेशा खतरा रहता है कि

कहीं जरूरत से एक बार ज़्यादा इन्कार न किया जाए। मैं अपनी जगह 'उस एक बार' नहीं फंसी—मैंने जितना चाहिए था, उतना इन्कार नहीं किया। तुम एक अद्‌भुत लड़की हो, और मैं चाहूँगी कि तुम्हारी शादी किसी प्राइम मिनिस्टर के साथ हो। फिर भी तुम जानती हो कि तुम वह नहीं हो जिसे एक 'पार्टी' कहते हैं। तुम बहुत सुन्दर और बहुत चतुर हो, अपने में बहुत विशिष्ट हो। अपनी दुनियावी सम्पत्ति के सम्बन्ध में तुम्हारी कोई स्पष्ट धारणा नहीं है, पर जितना कि मैं जान सकी हूं, किसी तरह की आय का बखेड़ा तुम्हारे साथ नहीं है। अच्छा होता अगर तुम्हारे पास अपना कुछ पैसा भी होता।"

"मैं भी चाहती हूँ कि होता," इज़ाबेल ने सादगी के साथ कहा। उस क्षण वह भूल गई थी कि दो-दो उदार युवकों ने उसकी निर्धनता को दोष नहीं माना।

सर मैथ्यू होप की उदारतापूर्ण सिफारिश के बावजूद मैडम मरले कथित परिस्थिति के अन्त तक वहाँ नहीं रही। उसने और लोगों को जो वचन दे रखे थे, वे उसे आखिर परे करने ही थे। वह यह कहकर गार्डन कोर्ट से चली गई कि इंग्लैंड छोड़ने से पहले वह वहीं या लन्दन में मिसेज़ टाउशेट से एक बार फिर मिलेगी। इज़ाबेल से उसकी विदा, उनकी भेंट से कहीं अधिक पारस्परिक मित्रता की सूचक रही। "मैं एक के बाद एक छः जगह जा रही हूँ, पर तुम-सा आकर्षक व्यक्ति मुझे और कोई नहीं मिलेगा। वे सब पुराने मित्र हैं—मेरी उम्र में आदमी नये मित्र नहीं बना पाता। तुम्हें मैंने अपवाद माना है। तुम इसे याद रखना और मेरे बारे में अच्छी बातें सोचा करना। मुझमें विश्वास रखकर ही तुम मुझे प्रतिदान दे सकती हो।"

उत्तर में इज़ाबेल ने उसे चूम लिया। यद्यपि कुछ स्त्रियों के चुम्बन बहुत सहज होते हैं, फिर भी चुम्बन और चुम्बन में अन्तर है। इज़ाबेल के आलिंगन से मैडम मरले को सन्तोष हुआ। इसके बाद हमारी नवयुवती काफी अकेली पड़ गई। अपनी आंट और कज़िन से वह केवल खाने के वक्त मिलती। उसने पाया मिसेज़ टाउशेट जब नज़र नहीं आतीं, तब भी वे बहुत कम अपने बीमार पति के पास होती हैं। अधिकांश समय वे अपनी अपार्टमेंट में—जहां उनकी भांजी को भी जाने की इजाज़त नहीं थी—न जाने किन रहस्यपूर्ण और अभेद्य प्रयोगों में उलझी रहतीं। खाने की मेज़ पर वे गम्भीर और खामोश रहतीं। इज़ाबेल देख सकती थी कि उनकी गम्भीरता एक दृष्टिकोण नहीं, एक विश्वास है। उसे आश्चर्य

होता कि क्या उसकी आंट को इतनी मन मर्ज़ी का जीवन बिताने के लिए अब पश्चात्ताप है—पर बाहर से इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता था। न आँसू, न उच्छ्वास न उत्साह का अतिरेक—जैसे जो था, उनकी नज़र में पर्याप्त था, मिसेज़ टाउशेट की केवल मात्र आवश्यकता जैसे यही थी कि बातों को सोचकर वे अपने निष्कर्ष निकाल लें। उनका एक छोटा-सा नैतिक बहीखाता था जिसमें साफ-साफ लकीर खिंची थीं और जिसका कब्ज़ा फौलाद का था—वे उसे बहुत संभाल से रखती थीं। उनकी बातें बहुत प्रैक्टिकल होती थीं। "मुझे पहले इसका पता होता, तो मैं अभी तुम्हें अपने साथ न लाती", मैडम मरले के जाने के बाद उन्होंने इज़ाबेल से कहा, "मैं इंतज़ार करती और तुम्हें अगले साल बुलाती।"

"जिससे मैं अंकल से मिल ही न पाती? मुझे बहुत खुशी है कि मैं इन दिनों आई हूं।"

"यह ठीक है, पर मैं तुम्हें तुम्हारे अंकल से मिलाने यूरोप नहीं लाई थी।" बात बिलकुल सच होते हुए भी इज़ाबेल को समय के अनुकूल नहीं लगी। इन बातों को सोचने के लिए उसके पास काफी समय था। वह रोज़ अकेली घूमने जाती और कई-कई घण्टे लाइब्रेरी में किताबों के पन्ने पलटती रहती। जिन विषयों पर वह सोचती, उनमें एक था मिस स्टैकपोल का परिभ्रमण। हेनरीटा से उसका नियमित पत्र-व्यवहार चलता था। इज़ाबेल को उसकी आपसी पत्रों की शैली अखबारी पत्रों की शैली से ज्यादा पसन्द थी—मतलब उसका ख्याल था कि उसके अखबारी पत्र अगर छापे न जाते, तो कहीं अच्छे होते। पर अपनी व्यक्तिगत सुविधा के लिहाज़ से भी हेनरीटा का केरियर उतना सफल नहीं रहा था जितना कि वह चाहती थी। ग्रेट ब्रिटेन के अन्दरूनी जीवन की जो झलक पाने के लिए वह उत्सुक थी, वह उसके लिए एक छलना ही बनी रही थी। न जाने किस रहस्यमय कारण से लेडी पेंसिल का निमन्त्रण उसे मिला ही नहीं था। मिस्टर बैंटलिंग, अपनी सारी मित्र भावना से, इसकी व्याख्या नहीं कर सका था कि उसके भेजे पत्र की पहुंच तक क्यों नहीं आई। वह हेनरीटा के काम को बहुत गम्भीरतापूर्वक ले रहा था और उसे लगता था कि हेनरीटा के बेडफोर्डशायर न जा सकने की क्षति-पूर्ति उसे करनी चाहिए। "उसका ख्याल है मुझे कॉन्टिनेंट जाना चाहिए।" हेनरीटा ने लिखा था, "क्योंकि वह स्वयं भी वहां चलना चाहता है, इसलिए उसका परामर्श मुझे सही लगता है। वह कहता

है कि मैं वहां जाकर फ्रांसीसी जीवन को क्यों नहीं देखती, और सचमुच मेरी उस नए गणतन्त्र को देखने की बहुत इच्छा है। मिस्टर बैंटलिंग को गणतन्त्र में दिलचस्पी नहीं है, फिर भी वह पेरिस चलने की बात सोच रहा है। वह जितना मैं चाहती हूं, उतने ध्यान से मेरी बात सुनता है—अच्छा है नम्र स्वभाव का एक तो अँग्रेज मुझे मिला है। मैं उससे कहती हूं कि उसे तो एक अमरीकन होना चाहिए था, और वह इससे बहुत खुश होता है। जब मैं यह कहती हूं, तो हमेशा एक ही बात उसके मुंह से निकलती है, "अच्छा, बताओ तुम सच कह रही हो ?" कुछ दिन बाद उसने लिखा कि सप्ताह के अन्त में वह पेरिस जा रही है और कि शायद मिस्टर बैंटलिंग डोवर तक उसे छोड़ने चले। वह इज़ाबेल के आने तक पेरिस में इन्तज़ार करेगी। हेनरीटा ने मिसेज़ टाउशेट का उल्लेख नहीं किया—जैसे कि उसे इज़ाबेल के अकेली कॉन्टिनेंट की यात्रा पर निकलने की आशा हो। हेनरीटा में रैल्फ की दिलचस्पी जानते हुए, इन पत्रों के कई एक अंश इज़ाबेल ने उसे सुना दिए। रैल्फ को यह जानने की बहुत चाह थी कि इंटरव्यूअर की प्रतिनिधि क्या करने जा रही है।

"यह वह बहुत अच्छा कर रही है", वह बोला, "जो एक भूतपूर्व लांसर के साथ पेरिस जा रही है ! अगर वह कुछ लिखना चाहती है, तो उसे इसी घटना का वर्णन करना चाहिए।"

"ठीक है ऐसा प्रचलन नहीं है," इज़ाबेल बोली, "पर अगर तुम समझते हो कि हेनरीटा सर्वथा निश्छल भाव से ऐसा नहीं कर रही, तो तुम गलती पर हो। तुम हेनरीटा को कभी नहीं समझ पाओगे।"

"क्षमा करना, मैं उसे अच्छी तरह समझता हूं। पहले नहीं समझ पाया था, पर अब मेरी दृष्टि साफ है। पर मेरा ख्याल है बैंटलिंग की दृष्टि उतनी स्पष्ट नहीं है और उसे दो-चार बार आश्चर्य हो सकता है। मैं हेनरीटा को ऐसे जानता हूं जैसे मैंने अपने हाथों से उसे बनाया हो !"

इज़ाबेल को ऐसा नहीं लगता था। पर उसने और सन्देह प्रकट नहीं किया, क्योंकि उन दिनों वह अपने कज़िन के प्रति काफी उदारता बरत रही थी। मैडम मरले के जाने के पांच-छः रोज़ बाद एक शाम वह एक किताब लिए लाइब्रेरी में बैठी थी, पर उसका ध्यान उस समय पढ़ने में नहीं था। खिड़की के पास की बेंच पर बैठी वह बाहर खामोश सीलनदार पार्क को देख रही थी। लाइब्रेरी

प्रवेश-द्वार के दाईं तरफ थी, इसलिए उसे वहां से डाक्टर की गाड़ी नजर आ रही थी जो दो घण्टे से बाहर खड़ी थी। गाड़ी का इतनी देर खड़ी रहना उसे कुछ अजीब लग रहा था। तभी डाक्टर पोर्टिको में निकल आया और पल भर अपने दस्ताने चढ़ाता और घोड़े की टाँगों को देखता रुका रहा, फिर गाड़ी में बैठकर चला गया। इज़ाबेल और आधा घण्टा अपनी जगह पर बनी रही। घर में गहरी खामोशी छाई थी। खामोशी इतनी गहरी थी कि कुछ देर बाद जब कमरे के ग़ालीचे पर उसने हल्के कदमों की आहट सुनी, तो वह चौंक गई। वह जल्दी से खिड़की से मुड़ी, तो रैल्फ टाउशेट उसके सामने खड़ा था। उसके हाथ जेबों में थे, पर चेहरे पर उसकी हमेशा की मुस्कराहट का आभास तक नहीं था। वह उठी, तो उसकी चाल और दृष्टि जैसे अपने में ही एक प्रश्न थी।

"सब समाप्त हो गया," रैल्फ बोला।

"तुम्हारा मतलब है मेरे अंकल···?" और इज़ाबेल रुक गई।"

"घण्टा भर पहले मेरे पिता का देहान्त हो गया है।"

"ओह, मेरे बेचारे रैल्फ!" वह अपने दोनों हाथ उसकी तरफ बढ़ाकर धीमे से कराह उठी।

२०

इससे लगभग पन्द्रह रोज़ बाद मैडम मरले एक हेन्सम में विन्चेस्टर स्क्वेयर स्थित घर पर पहुंची। गाड़ी से उतरकर उसने देखा कि डाइनिंग रूम की खिड़कियों के दरम्यान एक बड़ी और साफ-सी लकड़ी की तख्ती लटक रही है जिसके ताज़ा स्याह रोगन पर सफेद अक्षरों में लिखा है: "यह भव्य फ्रीहोल्ड भवन बिकाऊ है।" साथ उस एजेंट का नाम था जिसे अर्ज़ी दी जानी चाहिए थी।

पीतल की बड़ी घण्टी बजाकर दरवाज़ा खुलने की राह देखते हुए उसने मन में कहा, "ये लोग ज़रा वक्त नहीं गंवाते। बहुत प्रेक्टिकल देश है यह!" घर के अन्दर पहुंचकर ड्राइंग रूम का जीना चढ़ते हुए उसे कई चीज़ों से लगा कि उस घर को अब छोड़ा जा रहा है। तसवीरें दीवारों से हटाकर सोफों पर रख दी गई थीं।

खिड़कियों से पर्दे और फर्श से कालीन हटा दिए गए थे। उसका स्वागत करते हुए मिसेज़ टाउशेट ने दो-चार शब्दों में ही यह स्पष्ट कर दिया कि अफसोस ज़ाहिर करना ज़रूरी नहीं है।

"मुझे पता है तुम क्या कहोगी—कि वे बहुत अच्छे आदमी थे। पर मैं यह बात और लोगों से ज़्यादा जानती हूं, क्योंकि मैंने उन्हें अपनी अच्छाई दिखलाने का भरपूर अवसर दिया था। इस लिहाज़ से मैं एक अच्छी पत्नी रही हूं।" मिसेज़ टाउशेट ने यह भी कहा कि अन्त में उसके पति इस बात को जान गए थे। "उन्होंने मेरे प्रति बहुत उदारता दिखाई है," वे बोलीं, "मेरी आशा से अधिक उदारता दिखाई है, ऐसा मैं नहीं कहूंगी क्योंकि कोई आशा मैंने की ही नहीं थी। तुम जानती हो कि साधारणतया मैं आशा नहीं करती। पर मेरा ख्याल है वे यह जतलाना चाहते थे कि मेरे ज़्यादातर बाहर रहने और काफी खुलकर विदेशी जीवन में घुल-मिल जाने के बावज़ूद उन्हें पता था कि उन्हें छोड़कर और किसीके प्रति मेरे मन में कभी जरा भी भावना नहीं रही।"

"सिर्फ अपने को छोड़कर," मैडम मरले ने मन में कहा, पर यह बात बाहर बिलकुल सुनाई नहीं दी।

"मैंने और किसीकी खातिर अपने पति का बलिदान नहीं किया," मिसेज़ टाउशेट अपने खास चुभते लहजे में कहती रहीं।

"नहीं-नहीं," मैडम मरले ने सोचा, "तुमने और किसीकी खातिर कभी कुछ नहीं किया!"

इन खामोश टिप्पणियों में जो अविश्वास था, उसकी व्याख्या करने की आवश्यकता है। यह इसलिए और भी आवश्यक है कि ये टिप्पणियां न तो मैडम मरले के उस चरित्र के साथ मेल खाती हैं जो—चाहे कुछ सतही रूप से—अब तक हमारे सामने आया है और न ही मिसेज़ टाउशेट के इतिहास के तथ्यों के साथ। फिर इसलिए भी कि मैडम मरले की यह निश्चित धारणा थी कि मिसेज़ टाउशेट की कहीं आखिरी बात परोक्ष रूप से स्वयं उसीपर एक व्यंग्य नहीं है। सच यह है कि उस घर की दहलीज़ लांघते ही उसे यह अहसास हुआ था कि मिस्टर टाउशेट की मृत्यु के कुछ सूक्ष्म परिणाम हैं जो कुछ खास-खास व्यक्तियों के लिए, जिनमें वह स्वयं नहीं है, काफी लाभदायक हैं। ऐसी घटना के परिणाम होना तो यूं स्वाभाविक ही था—गार्डन कोर्ट में रहते कई बार उसने इस चीज़

की कल्पना की थी। पर इस चीज की मानसिक कल्पना अलग बात थी और उसके स्थूल प्रमाणों को प्रत्यक्ष देखना बिलकुल अलग बात। सम्पत्ति का—बल्कि वह कहती कि उपलब्धियों का—वह वितरण उस समय उसके दिमाग पर हावी था और स्वयं उसकी भागीदार न होने से उसे झुंझलाहट भी हो रही थी। मैं उसे साधारण भीड़ के एक भूखे मुंह या ईर्ष्यालु हृदय के रूप में चित्रित नहीं करना चाहता, पर यह हम पहले ही जान चुके हैं कि उसके मन में कुछ इच्छाएं थीं जो पूरी नहीं हुई थीं। यदि उससे पूछा जाता, तो वह एक लुभावनी और गम्भीर मुसकराहट के साथ यह स्वीकार करती कि मिस्टर टाउशेट के अवशेषों पर उसका रंचक-मात्र भी अधिकार नहीं है, "हम दोनों के बीच कुछ भी नहीं था," वह कहती, "उस बेचारे का मुझसे कुछ भी लेना-देना नहीं था!" कहते हुए वह अपने अंगूठे और बड़ी उंगली को हिलाती। मुझे जल्दी से यह भी कह देना चाहिए कि इस समय इस विपरीत इच्छा से मुक्त न होते हुए भी वह सावधान थी कि यह बात उसके हाव-भाव से प्रकट न हो। आखिर उसे मिसेज़ टाउशेट की प्राप्ति से उतनी ही सहानुभूति थी जितनी अपनी क्षति से।

"वे यह घर मुझे दे गए हैं," उस नई-नई विधवा हुई स्त्री ने कहा, "पर मैं यहां रहूंगी नहीं। मेरे पास फ्लोरेंस में इससे कहीं अच्छा घर है। वसीयतनामा खुले कुल तीन दिन हुए हैं और मैंने अभी से इसे बिकाऊ घोषित कर दिया है। बैंक में भी मेरा हिस्सा है, पर पता नहीं मुझे उसे बैंक में ही रखना होगा या क्या। गार्डनकोर्ट रैल्फ को मिला है, पर मुझे नहीं लगता कि उस घर को चला सकने के साधन उसके पास होंगे। उसे यूं काफी पैसा मिला है, पर उसके पिता बहुत-सा धन दूसरों को दे गए हैं। धन के कुछ हिस्से वरमौंट में उनके दूर के कज़िन्ज़ के लिए हैं। पर रैल्फ को गार्डनकोर्ट से बहुत प्यार है और वह—गर्मियों में—एक नौकरानी और माली के लड़के के साथ वहां रह सकता है। मेरे पति की वसीयत में एक खास बात है। वे एक काफी अच्छी रकम मेरी भांजी के लिए छोड़ गए हैं।"

"काफी अच्छी रकम?" मैडम मरले ने आहिस्ता से दोहराया।

"इज़ाबेल को सत्तर हज़ार पौंड के लगभग पैसा मिला है।"

मैडम मरले ने अपने हाथ उलझाकर गोदी में रख रखे थे। इसपर उसके हाथ, उसी तरह उलझे हुए, उठकर छाती तक आ गए और पल भर वहीं रुके रहे। उसकी आंखें फैलकर मिसेज़ टाउशेट के चेहरे पर स्थिर हो रहीं, "ओह," वह

बोली, "कितनी चतुर है वह !"

मिसेज टाउशेट ने तीखी नजर से उसे देखा, "इससे तुम्हारा मतलब ?"

पल भर के लिए मैडम मरले सुर्ख हो उठी, और उसकी आंखें झुक गईं, "बिना प्रयत्न किए ऐसी उपलब्धि, यह चतुरता ही तो है !"

"उसने निःसन्देह कोई प्रयत्न नहीं किया। और तुम इसे उपलब्धि नहीं कह सकतीं।"

मैडम मरले कभी अपनी बात वापस लेने की भद्दी स्थिति में नहीं पड़ती थी। उसकी कुशाग्रता इसीमें थी कि वह अपनी बात पर दृढ़ रहकर उसे अच्छी रोशनी में पेश कर सकती थी, "देखो, इज़ाबेल यदि दुनिया की सबसे आकर्षक लड़की न होती, तो उसे सत्तर हज़ार पौंड कभी विरासत में न मिलते। उसके आकर्षण में ही उसकी चतुराई है।"

"मुझे विश्वास है कि उसे सपने में भी ख्याल नहीं था कि मेरे पति ऐसा करेंगे। मुझे भी नहीं था क्योंकि उन्होंने कभी मुझसे इस सम्बन्ध में बात नहीं की," मिसेज टाउशेट बोलीं, "इज़ाबेल का उनपर कोई हक नहीं था। मेरी भांजी होना, यह उसकी कोई बड़ी विशेषता नहीं थी। उसे जो भी उपलब्धि हुई है, अनजाने में ही हुई है।"

"ओह," मैडम मरले ने उत्तर दिया, "सबसे बड़ी उपलब्धियां ऐसी ही होती हैं।"

मिसेज़ टाउशेट ने इसपर विचार प्रकट नहीं किए "यह मैं मानती हूं कि लड़की खुशकिस्मत है। पर इस समय तो वह विमूढ़-सी हो रही है।"

"तुम्हारा ख्याल है उसे समझ नहीं आ रहा कि इतने पैसे का क्या करे ?"

"इसपर तो उसने शायद विचार ही नहीं किया। उसे यही नहीं समझ आ रहा कि इस बारे में क्या सोचे। उसे लग रहा है जैसे एक तोप उसके पीछे से दाग दी गई है और वह अभी नहीं देख पाई कि उससे उसे चोट तो नहीं पहुंची। मुख्य एक्सीक्यूटर ने तीन दिन पहले स्वयं आकर उसे इसकी सूचना दी थी। बाद में उसने मुझे बताया कि उसकी बात सुनकर वह सहसा रो पड़ी। उसका पैसा बैंक में लगा रहेगा, और उसे उसपर ब्याज मिलता रहेगा।"

मैडम मरले ने अब समझदारी और उदार भाव से सिर हिलाया, "कितनी बढ़िया बात है। दो तीन बार रो लेने के बाद स्थिति उसके लिए सहज हो जाएगी।

फिर पल भर खामोश रहकर उसने एकाएक पूछा, "तुम्हारा लड़का इस सम्बन्ध में क्या सोचता है ?"

"वह वसीयत खुलने से पहले ही इंग्लैंड से चला गया था। चिन्ता और थकान ने उसकी बुरी हालत कर दी थी, इसलिए वह जल्दी से दक्षिण की तरफ निकल गया। वह रिवीरा जा रहा है और अभी मुझे उसकी कोई चिट्ठी नहीं आई। पर अपने पिता की किसी बात पर वह आपत्ति करे, ऐसी अम्भावना नहीं है।"

"तुमने बताया है न कि उसका अपना हिस्सा कुछ कट गया है।"

"उसकी इच्छा से। मुझे पता है उसीने अपने पिता को अमरीकी रिश्तेदारों के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित किया था। उसे पहले नम्बर के उत्तराधिकारी के हितों का ज्यादा मोह नहीं है।"

"यह इसपर निर्भर करता है कि वह पहला नम्बर किसे देता है!" मैडम मरले ने कहा। फिर आंखें फर्श की ओर झुकाए वह पल-भर कुछ सोचती रही, "क्या तुम्हारी खुशकिस्मत भांजी से मैं नहीं मिल सकती ?" फिर उसने आंखें उठाकर पूछा।

"मिल सकती हो, पर वह तुम्हें खुश नजर नहीं आएगी। पिछले तीन दिन से वह सिमाब्यू मैडौना की तरह गम्भीर लग रही है।" और मिसेज़ टाउशेट ने नौकर को बुलाने के लिए घण्टी बजाई।

फुटमैन बुलाने गया, तो इज़ाबेल कुछ ही देर में वहां चली आई। उसे देखकर मैडम मरले को लगा कि मिसेज टाउशेट की तुलना गलत नहीं थी। लड़की गम्भीर और पीली नज़र आ रही थी—गहरे मातम ने भी इस प्रभाव को कम नहीं किया था। पर मैडम मरले को देखते ही अपने सबसे सजीव क्षणों की मुसकराहट उसके चेहरे पर आ गई। मैडम मरले ने उठकर उसके कन्धे पर हाथ रखा, और पलभर देखने के बाद उसे चूम लिया, जैसे कि गार्डन कोर्ट में उससे मिला चुम्बन अब वह लौटा रही हो। अपने सुरुचिपूर्ण ढंग से मैडम मरले ने उस समय लड़की को मिली सम्पत्ति की ओर उस समय और कोई संकेत नहीं किया।

मिसेज टाउशेट के लिए लन्दन में रुककर घर की बिक्री का इंतज़ार करना बेमानी था। वहां से वे चीज़ें चुनकर जो वे अपने दूसरे घर भेजना चाहती थीं, उन्होंने बाकी चीजें नीलाम के लिए छोड़ दीं और कॉन्टिनेण्ट के लिए रवाना हो गईं। इस यात्रा में इज़ाबेल उनके साथ थी। उसके पास अब काफी समय था

कि उस आकस्मिक विरासत के अनुपात, वज़न और अन्य पक्षों पर विचार कर सके। वह अक्सर इस सम्बन्ध में सोचती, इसे हर तरह की रोशनी में रखकर देखती। पर हम इस समय उसके विचारों का अनुकरण करते हुए इस बात की व्याख्या करने का प्रयत्न नहीं करेंगे कि यह नई चेतना शुरू-शुरू में उसे एक भार की तरह क्यों लग रही थी। पर सुख को तुरन्त स्वीकार कर सकने की यह स्थिति अधिक देर नहीं रही। पर शीघ्र ही उसे निश्चय हो गया कि धनी होना एक गुण है क्योंकि उसका एक अर्थ है कुछ करने की शक्ति, जो कि अपने में एक मधुर चीज़ थी। यह चीज दुर्बलता—विशेषरूप से स्त्रैण दुर्बलता—के मूर्खतापूर्ण पक्ष के विपरीत एक आकर्षक स्थिति थी। यूँ तो दुर्बलता का एक अपना आकर्षण था, पर इज़ाबेल ने अपने से कहा कि एक आकर्षण उससे भी बड़ा है। इस समय करने को अधिक कुछ नहीं था—लिली और गरीब एडिथ को वह एक-एक चेक भेज चुकी थी। वह इस बात के लिए आभारी थी कि अपने मातम और अपनी आंट के वैधव्य के कारण उसे कुछ महीने उनके साथ एक खामोशी में काटने थे। जो शक्ति उसे प्राप्त हुई थी, उसीने उसे गम्भीर बना दिया था। वह एक कोमल क्रूरता से अपनी इस शक्ति का जायज़ा ले रही थी, पर उसका उपयोग करने के लिए उत्सुक नहीं थी। पर अपनी आंट के साथ कुछ सप्ताह पेरिस में रहने के बाद वह उसका उपयोग भी करने लगी, पर ऐसे ढंग से कि उसका कोई खास महत्त्व नहीं था। यह ढंग एक ऐसे शहर में खामखाह आ जाता है जहां की दुकानों की दुनिया प्रशंसा करती हो। यह ढंग उसने मिसेज़ टाउशेट के खुले निर्देशन में अपनाया था—अपनी भांजी के सहसा एक निर्धन लड़की से धनी बन जाने को मिसेज़ टाउशेट बहुत प्रैक्टिकल दृष्टि से ले रही थीं। "अब तुम धनी हो, तो तुम्हें यह पार्ट अदा करना आना चाहिए—अच्छी तरह अदा करना आना चाहिए।" उन्होंने इज़ाबेल को एकबार में समझा दिया और कहा कि उसका पहला कर्तव्य यह है कि वह हर चीज सुन्दर खरीदे। "तुम्हें अपनी चीज़ों का ध्यान रखना नहीं आता, मगर तुम्हें यह सीखना चाहिए," उन्होंने कहा। यह इज़ाबेल का दूसरा कर्तव्य था। इज़ाबेल ने बात मान ली, पर अभी वह इस विषय में उत्साहित नहीं हुई। वह अपने लिए अवसर चाहती थी. पर अवसरों से उसका यह अभिप्राय नहीं था।

मिसेज़ टाउशेट अपनी योजनाएं नहीं बदलती थीं। अपने पति की मृत्यु से पहले ही उन्होंने निश्चय कर रखा था कि वे सर्दियों का कुछ हिस्सा पेरिस में

रहेंगी, और उन्हें कोई कारण नज़र नहीं आता था कि क्यों वे अपने को—या अपने से ज़्यादा अपनी भांजी को—इस सुविधा से वंचित करें। चाहे उन्हें काफी अलग-अलग रहना था, फिर भी वे चाम्प्स एलिसीज़ के सिरे पर रहनेवाले अमरीकनों के छोटे-से समुदाय से तो उसका परिचय करा ही सकती थीं। इनमें से अधिकांश मिलनसार प्रवासियों से मिसेज़ टाउशेट का घनिष्ठ परिचय था—वे उन लोगों के प्रवास, धारणाओं, मन बहलाव तथा जड़ता की सहभागी थीं। इज़ावेल उन लोगों को विशेष आग्रह के साथ अपनी आंट के होटल में आते देखती, और अपनी तात्कालिक मानवीय भावना के आवेश में बहुत कुशाग्रता से उनके सम्बन्ध में अपना मत व्यक्त करती। उसे लगा कि उन लोगों का जीवन समृद्धिशाली होते हुए भी सारहीन-सा है। एक शाम जब वे लोग एक-दूसरे के यहां जाकर इतवार की शाम बिता रहे थे, उसने यह बात कहकर उन्हें नाराज़ भी कर दिया। हालांकि उसके श्रोता लोग ऐसे थे कि उनके खानसामओं और दर्जियों ने उन्हें स्वभाव से काफी मिलनसार बना रखा था, फिर भी उनमें से दो-तीन को उसकी सर्व-सम्मत प्रतिभा नए रंगमंचीय अभिनयों की तुलना में निचले स्तर की जान पड़ी। "आप लोग जो इस तरह यहां रहते हैं, यह आपको कहां ले जाता है?" इज़ाबेल ने पूछ लिया, "मुझे तो लगता है कि यह कहीं नहीं ले जाता और मेरा ख्याल है आप लोग इससे ऊब जाएंगे।"

मिसेज़ टाउशेट को यह बात हेनरीटा स्टैफपोल जैसी लगी। उन्हें हेनरीटा पेरिस में मिल गई थी, और अक्सर उनकी उससे भेंट होती रहती थी। इसलिए मिसेज़ टाउशेट का यह सन्देह अकारण नहीं था कि अगर इज़ावेल मौलिक रूप से इस तरह की चतुराई की बात नहीं कह सकती, तो ज़रूर उसने फब्ती कसने की यह शैली हेनरीटा स्टैंकपोल से उधार ली होगी। पहली बार इज़ाबेल ने यह बात तब कही जब वे दोनों मिसेज़ टाउशेट की एक मित्र मिसेज़ लूस से मिलने गईं—मिसेज़ लूस अकेली स्त्री थीं जिनसे मिसेज़ टाउशेट पेरिस आकर मिलने जाती थीं। मिसेज़ लूस लूई फिलिप के दिनों से पेरिस में रहती थीं। वे अक्सर मज़ाक में कहती थीं कि वे १८३० की पीढ़ी की हैं। लोग इसका आशय हमेशा नहीं समझ पाते थे। तब मिसेज़ लूस को व्याख्या करनी पड़ती, "ओह, मैं तो रोमांटिक लोगों में से हूं।" उन्हें फ्रांसीसी ज़बान ठीक से नहीं आई थी। वे हर इतवार को लोगों को घर पर बुलाती थीं और हर बार प्रायः उन्हीं हमदर्द अमरीकनों से घिरी रहती

थीं। यूं उनका घर हमेशा खुला रहता था, और वे उस चमकते शहर के गद्देदार छोटे-से कोने में बैठी अद्भुत सचाई के साथ बैल्टीमोर के अपने घरेलू स्वर को ज्यों का त्यों उतारती रहती थीं। उनके पति मिस्टर लूस लम्बे, दुबले ठसकेदार आदमी थे जो सोने का चश्मा लगाते थे और अपना हैट सिर पर काफी पीछे की तरफ को पहनते थे। उनका बस इतना काम रहता था कि वे पेरिस के 'मनोविनोदों' का ज़िक्र करें। यह ज़िक्र बार-बार उनके मुंह पर आता था—चाहे इसका अनुमान लगाना असम्भव था कि वे किन चिन्ताओं से भागकर उनका आश्रय खोजते हैं। इनमें से एक अमरीकन बैंकर का आफिस था जहां एक डाकखाना भी था जो कि किसी भी अमरीकन कस्बे के डाकखाने की तरह मिलने-जुलने और खुश-गप्पियां करने की जगह थी। वे (अच्छे मौसम में) एक घण्टा चाम्प्स एलेसीज़ में बिताते और घर के मोमिया फर्श पर रखी मेज़ पर उठकर खाना खाते। मिसेज़ लूस का विचार था कि उनके फर्श का पोलिश फ्रांसीसी राजधानी के किसी भी घर के पोलिश से बेहतर है। कभी-कभी वे एक-दो दोस्तों के साथ काफे आंग्ले में खाना खाते। वहां आर्डर देने में वे इतने दक्ष थे कि उनके साथी इसे एक बड़ी सुविधा मानते थे और वहां का हेडवेटर भी इसकी प्रशंसा करता था। बस, प्रकटत: उनके यही मनोविनोद थे और इन्हीं में उन्होंने आधी सदी से ऊपर समय बिता दिया था, और उन्हीं के आधार पर वे घोषणा करते रहते थे कि दुनिया में पेरिस जैसी कोई जगह नहीं है। और कहीं मिस्टर लूस इन शर्तों पर ज़िन्दगी का मज़ा लेने का दावा नहीं कर सकते थे। पेरिस जैसी कोई जगह नहीं थी, पर यह भी कहना होगा कि अपने इस उपभोग-स्थल को लेकर मिस्टर लूस की प्रशंसा भावना अब पहले से कम हो गई थी। हां, उनके उपकरणों में उनकी राजनीतिक सम्मतियों को भी स्थान देना चाहिए क्योंकि इनसे उनके जीवन का बहुत-सा सूना समय स्पन्दित होता रहता था। वहां बसे अधिकांश अमरीकनों की तरह मिस्टर लूस बहुत ऊंचे—बल्कि गहरे—कंज़र्वेटिव थे, और फ्रांस की हाल की बनी सरकार को कुछ समझते ही नहीं थे। उन्हें विश्वास नहीं था कि वह सरकार ज्यादा दिन टिकेगी और हर साल वे दूसरों को विश्वास दिलाते रहते थे कि उसका अन्त बस अब पास ही है। "इन्हें दबाकर रखना चाहिए साहब, दबाकर। एक सख्त हाथ—एक फौलादी चोट—के सिवा इनका कोई इलाज नहीं," वे अक्सर फ्रांसीसी जनता के सम्बन्ध में कहते। अच्छे चतुर, सम्पन्न शासन की उनकी धारणा का आदर्श था

वहां का साम्राज्य जो परास्त हो चुका था। "पेरिस अब उतना आकर्षक नहीं रहा जितना सम्राट् के दिनों में था। बस वही जानते थे कि एक शहर को आकर्षक कैसे बनाया जाता है," मिस्टर लूस प्रायः मिसेज़ टाउशेट से कहते। मिसेज़ टाउशेट की अपनी भी वही धारणा थी। वे सोचतीं कि गणतन्त्रों से बचने के लिए ही तो आदमी अतलांतिक पार करके इतनी दूर आता है।

"मैं चाम्प्स एलिस में पैलेस आफ इंडस्ट्री के सामने बैठा राजभवन की गाड़ियों को दिन में सात-सात बार सामने से आते-जाते देखता था। एक दफा तो नौ बार देखा। अब क्या है ? बात करने को भी कुछ नहीं। वह नफासत अब रही ही नहीं। नेपोलियन को पता था कि फ्रांस के लोग क्या चाहते हैं। पेरिस पर, हमारे पेरिस पर, तब तक काली घटा घिरी रहेगी जब तक फिर से साम्राज्य स्थापित नहीं हो जाता।

इतवार को मिसेज़ लूस के यहां आनेवाले लोगों में एक ऐसा युवक भी था जिससे इज़ाबेल की काफी बात होती थी और जिसकी जानकारी उसे काफी मूल्यवान् जान पड़ती थी। मिस्टर एडवर्ड रोज़ियर,—उसे पुकारा जाता था नेड रोज़ियर के नाम से—न्यूयार्क का रहनेवाला था पर पला पेरिस में था। उसके पिता स्वर्गीय मिस्टर आर्चर के मित्र थे। नौफचातेल में जब उनकी नर्स रूसी शाहज़ादे के साथ भाग गई थी और मिस्टर आर्चर कुछ दिन न जाने कहां गायब रहे थे, तो उन्होंने उनकी देख-भाल की थी। (वे अपने लड़के के साथ यात्रा करते हुए संयोगवश उसी होटल में ठहरे हुए थे।) इज़ाबेल को उस बबुआ की अच्छी तरह याद थी जिसके बालों से हमेशा सुगन्ध आती थी और जिसकी अपनी एक नर्स थी। नर्स को आदेश था कि किसी भी हालत में लड़के को आंख से ओझल न होने दे। उन दोनों के साथ झील के किनारे टहलते हुए इज़ाबेल को वह लड़का एक फरिश्ता-सा नज़र आता। यह एक रूढ़िगत धारणा नहीं थी। इज़ाबेल के मन में यह स्पष्ट था कि एक फरिश्ते के नक्श कैसे होने चाहिए और यह लड़का उसका उदाहरण था। एडवर्ड उससे कहता कि उसकी नर्स ने उसे झील के सिरे पर जाने से मना कर रखा है, और उसे इस आदेश का पालन करना ही चाहिए। अब चाहे उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी, और वह नर्स भी नहीं थी, फिर भी वह उनकी शिक्षा का पालन करता था और झील के सिरे तक नहीं जाता था। वह एक सुरुचि-सम्पन्न युवक था जो चीनी के पुराने सामान, अच्छी शराब, अच्छे होटलों और

गाड़ियों के समय आदि का अच्छा ज्ञान रखता था। डिनर का आर्डर देने में वह उतना ही कुशल था जितने मिस्टर लूस, और यह सम्भव था कि थोड़ा और अनुभव प्राप्त हो जाने पर वह पूरी तरह मिस्टर लूस की जगह ले ले क्योंकि वह अपनी कोमल मासूम आवाज़ में मिस्टर लूस की राजनीति का भी समर्थन करता था। उसके पास पेरिस में एक आकर्षक घर था जिसकी स्पेनिश सजावट से उसकी मित्रों को स्पर्धा होती थी। उनका खयाल था कि उसके चिमनी-पीस की सिलाई इतनी अच्छी है कि किसी डचेस के गाउन की भी नहीं होती। वह हर साल सर्दियों का कुछ हिस्सा पाउ में बिताता था और एक बार दो महीने के लिए अमरीका भी गया था।

वह भी इज़ाबेल में काफी दिलचस्पी लेता था। उसे अच्छी तरह याद था कि उन दिनों साथ टहलते हुए वह कैसे झील के सिरे तक जाने का हठ किया करती थी। ऊपर इज़ाबेल के जिस प्रश्न का उल्लेख किया गया है, उसमें भी इस विपरीतता की झलक थी। रोज़ियर ने उसका उत्तर अपेक्षा से अधिक विनम्रता के साथ दिया। "तुम पूछती हो यह कहां ले जाता है ? पेरिस में रहना सभी जगह ले जा सकता है। जो आदमी पहले यहां न आए, वह और कहीं नहीं जा सकता। यूरोप आनेवाले हर आदमी को यहां से गुज़रना पड़ता है। पर तुम्हारा यह अभिप्राय नहीं है। तुम्हारा मतलब है इससे व्यक्ति को क्या लाभ पहुंचता है ? पर आदमी भविष्य को भेदकर कैसे देख सकता है ? कैसे कह सकता है कि आगे क्या है ? रास्ता अच्छा हो, तो इससे मुझे कोई मतलब नहीं कि वह कहां ले जाता है। मैं इस जगह से प्यार करता हूं। यहां रहकर आदमी थकता नहीं, कोशिश करके भी नहीं। तुम्हारा ख्याल है तुम थक जाओगी, पर यह ख्याल गलत है। यहां हमेशा एक नयापन और ताज़गी रहती है। तुम होटल द्रुओत को लो। वहां कई बार हफ्ते में तीन-चार बार सेल होती है। वैसी चीज़ें तुम्हें और कहां मिल सकती हैं ? फिर आदमी को ठीक जगहों का पता हो, तो यहां चीज़ें सस्ती भी हैं। मुझे बहुत-सी जगहों का पता है, लेकिन मैं किसीको बताता नहीं। तुम चाहो, तो मैं सिर्फ तुम्हें बता दूंगा, पर तुम और किसीको मत बताना। मुझे वचन दो कि मुझसे पूछे बिना तुम कहीं कुछ खरीदने नहीं जाओगी। आमतौर से किसी बूलवार पर मत जाओ—वहां कुछ भी नहीं मिलता। सच कहता हूं मुझसे ज्यादा पेरिस को कोई नहीं जानता। किसी दिन तुम और मिसेज़ टाउशेट मेरे यहां नाश्ते

के लिए आओ, तो मैं तुम्हें अपनी चीज़ें दिखाऊंगा। लोग इधर लन्दन की बहुत बात करने लगे हैं—यह एक फैशन ही हो गया है। वहां है क्या, सिवाय क्वीन एनी के? क्वीन एनी के ज़माने का सामान—उसे आदमी बेडरूम और बाथरूम में रख सकता है। पर सैलोन में वह सब नहीं रखा जा सकता।" इज़ाबेल के एक और प्रश्न के उत्तर में रोज़ियर ने कहा, "मैं अपना सारा समय नीलामघर में बिताता हूं? नहीं तो, मेरे पास इतने साधन ही नहीं हैं। होते, तो क्या बात थी। तुम मुझे फालतू-सा आदमी समझती हो। यह तुम्हारे चेहरे से झलक रहा है—तुम्हारा चेहरा सब कुछ कह देता है। बुरा मत मानना, मैं सिर्फ तुम्हें होशियार कर रहा हूं। तुम समझती हो मुझे कुछ करना चाहिए। पर मैं काम करता हूं, पर क्या, इसे अस्पष्ट ही रहने दो। इसपर बात और आगे नहीं बढ़ सकती। मैं अमरीका वापस जाकर दूकानदारी नहीं कर सकता। तुम्हारा ख्याल है मेरे पास गुण है? तुम मेरी ज़्यादा ही कीमत लगा रही हो। मुझे खरीदना आता है, बेचना नहीं। जब मैं कभी कुछ चीज़ बेचने की कोशिश करता हूं, तब तुम देखो। खुद खरीदने से दूसरों के हाथ कुछ बेचने के लिए कहीं अधिक योग्यता चाहिए। सोचता हूं जो लोग मेरे हाथ चीज़ें बेचते हैं, वे कितने चतुर होंगे। न, न, न मैं दूकानदारी कर सकता हूं, न डाक्टरी। मुझे घिन आती है। मैं पादरी भी नहीं हो सकता क्योंकि मेरा कोई विश्वास नहीं है। फिर बाइबल में आए नामों का मैं ठीक से उच्चारण भी नहीं कर पाता। बहुत मुश्किल नाम हैं—खासतौर से ओल्ड टेस्टामेंट के। मैं वकील भी नहीं हो सकता क्योंकि—क्या कहते हैं उसे—अमरीकन दण्डविधि मेरी समझ में ही नहीं आती। और एक भला आदमी अमरीका में क्या कर सकता है? मैं एक कूटनीतिज्ञ बनना चाहता, पर अमरीकन कूटनीति—वह भी भले आदमियों का पेशा नहीं है। तुमने अगर देखा होता कि—"

हेनरीटा स्टैकपोल अक्सर उस समय इज़ाबेल के पास होती थी जब शाम को रोज़ियर उसके यहां आता था। जब वह इस तरह की बात करने लगता, तो यहां आकर हेनरीटा उसे टोक देती और एक अमरीकन नागरिक के क्या कर्त्तव्य हैं, इसपर उसे भाषण पिला देती। उसे वह आदमी बहुत अस्वाभाविक लगता—रैल्फ टाउशेट से भी बुरा। हेनरीटा उन दिनों बहुत ज़्यादा आलोचना करने लगी थी, क्योंकि उसकी आत्मा इज़ाबेल को लेकर बहुत आतंकित हो उठी थी। उसने नई सम्पत्ति मिलने पर इज़ाबेल को बधाई नहीं दी थी और ऐसा न करने के लिए

उससे क्षमा चाही थी।

"मिस्टर टाउशेट ने तुम्हें यह सम्पत्ति देने के लिए मुझसे परामर्श किया होता," उसने साफ कहा, "तो मैं उनसे कहती, 'हरगिज़ नहीं' !"

"तुम्हारा ख्याल है," इज़ाबेल बोली, "कि यह एक छिपा हुआ अभिशाप सिद्ध होगा। शायद हो भी।"

"मैं उनसे कहती कि यह पैसा किसी ऐसे व्यक्ति के लिए छोड़ जाइए जिसे आप कम प्यार करते हों।"

"जैसे तुम्हारे लिए ?" इज़ाबेल ने मज़ाक किया। फिर, "तुम्हें सचमुच लगता है कि यह मेरा नाश कर देगा ?" उसने दूसरे स्वर में पूछा।

"नाश चाहे न करे, पर तुम्हारी खतरनाक मनोवृत्तियों को बढ़ावा ज़रूर देगा।"

"इससे तुम्हारा मतलब फिज़ूलखर्ची और आमोद-प्रमोद से है ?"

"नहीं", हेनरीटा बोली, "मेरा मतलब नैतिक दृष्टि से पैदा होनेवाली सम्भावनाओं से है। आमोद-प्रमोद का मैं समर्थन करती हूं—व्यक्ति को अच्छी तरह तो रहना ही चाहिए। तुम हमारे पच्छिमी शहरों के आमोद-प्रमोद को लो—उसकी तुलना यहां कहां हो सकती है ? मुझे यह भी पता है कि तुम शारीरिक रूप से कभी भ्रष्ट नहीं होगी, पर उससे भी मैं नहीं डरती। पर तुम्हारे साथ खतरा यह है कि तुम बहुत ज़्यादा सपनों की दुनिया में रहती हो। यथार्थ के साथ—मेहनत, भूख, दुःख और यहां तक कि पाप के साथ भी—तुम्हारा काफी सम्पर्क नहीं है। तुम बहुत नुक्ताचीनी करती हो, और बहुत-सी सुन्दर भ्रान्तियां तुम्हारे मन में हैं। तुम्हारी यह नई सम्पत्ति तुम्हें कुछ थोड़े-से स्वार्थी और हृदयहीन लोगों तक सीमित कर देगी जिनकी दिलचस्पी यही होगी कि इन चीज़ों को बढ़ावा देते रहें।"

इस अंधियारे दृश्य की कल्पना से इज़ाबेल की आंखें फैल गईं। "मेरी भ्रांतियां कौन-सी हैं ?" उसने पूछा, "मैं बहुत कोशिश करती हूं कि किसी तरह की भ्रांतियां न पालूं।"

"देखो," हेनरीटा बोली, "तुम सोचती हो कि तुम एक रोमांटिक ज़िन्दगी बिता सकती हो—कि स्वयं खुश रहकर दूसरों को खुश रख सकती हो। तुम जान जाओगी कि यह तुम्हारी गलती है। आदमी जो भी करे, उसे उसमें अपनी पूरी

आत्मा लगानी पड़ती है, और ऐसा करते ही उसमें रोमांस नहीं रह जाता, वह गंभीर यथार्थ बन जाता है। और आदमी हमेशा अपने को खुश नहीं रख सकता, उसे कभी दूसरों को भी खुश करना पड़ता है। मैं मानती हूं कि यह योग्यता तुममें है, पर कभी आदमी को दूसरों को नाखुश भी करना पड़ता है। उसे इसके लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए—कभी इससे संकोच नहीं करना चाहिए। यह तुम्हारे स्वभाव में नहीं है। तुम हमेशा दूसरों की प्रशंसा पाना चाहती हो—चाहती हो कि वे तुम्हारे बारे में अच्छा सोचें। तुम समझती हो कि रोमांटिक दृष्टिकोण रखकर दु:खदाई कर्त्तव्यों से बचा जा सकता है—यह तुम्हारी एक बहुत बड़ी भ्रान्ति है। यह सम्भव नहीं है। आदमी को जीवन में ऐसे बहुत-से अवसरों के लिए तैयार रहना चाहिए जब वह किसीको खुश नहीं कर सकता—अपने को भी नहीं।"

इज़ाबेल ने उदासी से सिर हिलाया। वह व्यथित और भयभीत नज़र आ रही थी। "तुम्हारे लिए हेनरीटा", उसने कहा, "यह एक ऐसा ही अवसर होना चाहिए।"

यह सच था कि पेरिस में मिस स्टैकपोल सपनों की दुनिया में नहीं रह रही थी, हालांकि कारबारी दृष्टि से पेरिस उसके लिए लन्दन की अपेक्षा अधिक लाभप्रद रहा था। मिस्टर बैंटलिंग पहले चार सप्ताह उसके साथ वहां बिताकर अब लन्दन लौट गया था, और मिस्टर बैंटलिंग ज़रा भी सपनों में जीनेवाला आदमी नहीं था। इज़ाबेल को पता चला था कि उन दोनों का समय काफी घनिष्ठता में बीता है। हेनरीटा के लिए यह विशेष रूप से लाभदायक रहा था क्योंकि बैंटलिग पेरिस से बहुत अच्छी तरह परिचित था। वह उसे सब कुछ समझाता रहा था, उसे सब जगह ले गया था, और लगातार उसका पथ-प्रदर्शक और इंटरप्रेटर बना रहा था। वे साथ-साथ खाते-पीते और थियेटर जाते रहे थे—एक तरह से साथ-साथ रहते रहे थे। हेनरीटा ने कितनी ही बार इज़ाबेल से कहा कि बैंटलिंग उसे एक सच्चा मित्र लगा है—वह कभी सोच भी नहीं सकती थी कि वह किसी अंग्रेज़ को इतना पसन्द कर सकती है। इज़ाबेल को इस मेल से न जाने क्यों एक आह्लाद का अनुभव हो रहा था। उसका यह भी ख्याल था कि वह मेल दोनों के लिए ही श्रेयस्कर है। इज़ाबेल को यह भी सन्देह होता कि दोनों एक-दूसरे की सादगी के शिकार हैं। हेनरीटा को लगता था कि बैंटलिंग उसकी पत्रकारिता में दिलचस्पी

ले रहा है जबकि बैंटलिंग को शायद ख्याल था कि हेनरीटा की पत्रकारिता उसके संचित स्नेह की ही एक अभिव्यक्ति है। एक तरह से दोनों एक-दूसरे के आन्तरिक अभाव की पूर्ति कर रहे थे। बैंटलिंग खुद ढीला-ढाला और सुस्त-सा आदमी था और उसे एक फुरतीली, उत्सुक और स्थिर स्त्री का साथ अच्छा लगता था। उसे हेनरीटा की चमक, चुनौती भरी नज़र और बैंड बॉक्स की-सी ताजगी प्रभावित करती थी। यूं नीरस नज़र आनेवाली जिन्दगी में इससे उसे कुछ रस मिलता जान पड़ता था। दूसरी तरफ हेनरीटा को वह विचित्र प्रक्रिया से बना आदमी अपने अनुकूल जान पड़ता था जो काफी आरामपसन्द तबीयत का था और एक हांफती साथिन के लिए एक वरदान की तरह था। फिर उस आदमी के पास हर सामाजिक और क्रियात्मक प्रश्न के लिए एक आसान और परम्परागत उत्तर था चाहे वह कितना ही अधूरा क्यों न हो। हेनरीटा को बैंटलिंग के उत्तर बहुत सुविधाजनक लगते थे, और अपना लेख डाक में डालने की जल्दी में वे उन्हें दूर की जनता तक पहुंचा देती थी। लगता था कि वह आभिजात्य की उन्हीं खाइयों की तरफ बढ़ती जा रही है, जिनकी इज़ाबेल ने उसे चेतावनी दी थी। इज़ाबेल के लिए भविष्य में खतरा हो सकता था, पर हेनरीटा को उस वर्ग में स्थायी विश्राम मिल जाएगा जोकि अब पुरानी मान्यताओं से जुड़ा था, यह भी सन्देह का विषय था। इज़ाबेल अब भी उसे सचेत करती रहती—बहुत बार वह—अप्रासंगिक रूप से ही लेडी पेंसिल के भाई का ज़िक्र ज़बान पर ले आती। हेनरीटा इज़ाबेल के व्यंग्यों से चमककर उत्साहित हो उठती और घण्टों 'दुनिया के सबसे पूर्ण व्यक्ति' का गुणगान करती रहती। फिर कुछ देर में यह भूलकर कि वे मज़ाक में बात कर रही थीं, वह गम्भीर भाव से बैंटलिंग के साथ कहीं की यात्रा के विषय में बतलाने लगती, "ओह, मुझे वार्सेल्ज़ का सब पता है। मैं वहां बैंटलिंग के साथ गई थी। मैं जगह अच्छी तरह देखना चाहती थी। मैंने चलते समय ही उससे कह दिया था कि मैं सब कुछ अच्छी तरह देखना चाहूंगी। हम लोग तीन दिन होटल में ठहरे, और सब जगह घूमते रहे। मौसम अच्छा था—भारत की गर्मियों की तरह —हालांकि उतना अच्छा नहीं। हम जैसे, उस पार्क में ही रहे। सच, वार्सेल्ज़ के बारे में ऐसा कुछ नहीं है जो मैं नहीं जानती।" हेनरीटा ने वसन्त में अपने उस उदार मित्र से इटली में मिलने की योजना बना रखी थी।

२१

मिसेज़ टाउशेट ने पेरिस पहुंचने से पहले ही अपने चलने का दिन निश्चित कर लिया था और फरवरी के मध्य में वे दक्षिण-यात्रा पर चल दीं। रास्ते में वे भूमध्य सागर के इतालवी किनारे पर सानरेमो में अपने बेटे से मिलने के लिए रुकीं, जो धीरे-हिलते सफेद छाते के नीचे अपनी एकान्त और धूप-भरी सर्दियां बिता रहा था। इज़ाबेल भी स्वाभाविक रूप से उनके साथ ही थी, हालांकि मिसेज़ टाउशेट ने उसके सामने दो-एक विकल्प रखे थे।

"देखो, अब तुम खुद अपनी मालकिन हो, और डाल के पंछी की तरह स्वतन्त्र हो। मेरा यह मतलब नहीं कि पहले तुम स्वतन्त्र नहीं थीं, पर अब तुम्हारी स्थिति दूसरी है—निर्धनता अपने में एक रुकावट होती है। अमीर होने से तुम अब वह ऐसे काम कर सकती हो, जो गरीबी में किए जाएं तो आलोचना का विषय बन जाते हैं। तुम जहां चाहो आ जा सकती हो, घूम सकती हो, अपनी जगह ले सकती हो। मतलब अगर किसी अधेड़-सी औरत को अपने साथ रख लो तो—जो रफू किया कश्मीरा पहने, बाल रंगे, मखमल पर तसवीरें बनाती हो। तुम ऐसा नहीं चाहोगी? खैर यह तुम्हारी मर्जी है। मैं तुम्हें इतना ही बतलाना चाहती हूं कि तुम्हें अब कितनी स्वतन्त्रता है। तुम चाहो तो मिस स्टैकपोल को अपनी साथी बना लो—वह लोगों को दूर रखने में बहुत सहायक होगी। फिर भी, चाहे कोई बाध्यता नहीं है, मेरे ख्याल में बेहतर यही है कि तुम मेरे साथ रहो। तुम्हारी रुचि को छोड़कर इसके कई कारण हैं। मैं नहीं समझती कि तुम्हारी इसमें रुचि होगी, फिर भी मैं तुमसे यह त्याग करने के लिए कहूंगी। मैं जानती हूं कि मेरे साथ में जो भी कुछ नवीनता रही होगी, वह अब तक समाप्त हो चुकी है और मैं अब तुम्हें वैसी ही नज़र आती हूं जैसी कि मैं हूं—अर्थात् एक जड़, अक्खड़, तंगदिल बुढ़िया।"

"मैं आपको जड़ बिलकुल नहीं समझती," इज़ाबेल ने उत्तर दिया।

"मतलब अक्खड़ और तंगदिल ज़रूर समझती हो? मैंने कहा था न!" मिसेज़ टाउशेट जैसे अपनी बात सही निकलने से उत्साहित होकर बोलीं।

इज़ाबेल फिलहाल अपनी आंट के साथ रही क्योंकि अपने सनकीपन के बावजूद वे उचित-अनुचित का बहुत विवेक रखती थीं, और बिना किन्हीं संबन्धियों के एक युवा लड़की की स्थिति बिना पत्तियों के एक फूल जैसी थी। यह ठीक था कि

मिसेज़ टाउशेट की बातचीत में फिर कभी उतनी प्रतिभा नज़र नहीं आई थी जितनी एल्बेनी की पहली शाम को, जब गीली बरसाती में बैठी वे उन सम्भावनाओं का खाका खींचती रही थीं जो यूरोप में एक सुरुचि-संपन्न युवा लड़की के लिए खुल सकती थीं। इसमें ज़्यादा दोष इज़ाबेल का अपना था। उसे अपनी आंट के अनुभव की झलक मिल चुकी थी, और वह उस स्त्री की भावनाओं और निर्णयों के संबन्ध में पहले से ही कल्पना कर लेती थी—जबकि मिसेज़ टाउशेट में यह गुण नहीं था। पर इससे हटकर मिसेज़ टाउशेट में एक और गुण था—वे एक कुतुबनुमा की तरह ईमानदार थीं। उनके दृढ़-निश्चित भाव में एक सुविधा थी—व्यक्ति को हमेशा पता रहता था कि वे किस जगह खड़ी हैं और आकस्मिक मुठभेड़ या टकराव की कोई सम्भावना नहीं रहती थी। अपनी जगह पर वे हमेशा स्थिर रहती थीं, पर पड़ौसी के इलाके को लेकर ज़्यादा उत्सुकता उन्हें नहीं रहती थी। इससे इज़ाबेल के मन में उनके प्रति एक अवरुद्ध-सी दया जागने लगी थी—उसे यह स्थिति बहुत शोचनीय जान पड़ती थी कि मानवीय सम्पर्क की अभिवृद्धि के लिए किसीके पास इतनी सीमित सतह, इतना छोटा चेहरा, हो। कोई कोमलता या संवेदना वहां आधार नहीं पा सकी थी—न कोई हवा का बोया अंकुर, न ही किसी तरह की नरमानेवाली परिचित काई। दूसरे शब्दों में उनका प्रकट व्यक्तित्व सूई की नोक बराबर था। इज़ाबेल को लगता था कि बढ़ते जीवन के साथ वे उस भाव के लिए, जो सुविधा में सर्वथा अलग होता है, उससे ज़्यादा उदारता बरतने लगी थीं जितनी कि उनके लिए बरती जाती थी। अपनी नियमितता का वे विशिष्ट परिस्थिति जैसे हीनतर भाव के लिए काफी कुछ बलिदान करने लगी थीं। अपने बीमार बेटे के साथ कुछ दिन बिताने के लिए फ्लोरेंस जाने का सबसे लम्बा रास्ता अपनाना उनके बंधे हुए नियमों में एक व्याघात था—हमसे पहले उनकी यह निश्चित धारणा थी कि रैल्फ यदि उनसे मिलना चाहे, तो उसे पता होना चाहिए कि पालाज़ो क्रेसेतीनी में एक बड़ा-सा अपार्टमेंट हमेशा उसके लिए सुरक्षित रहता है।

"मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूं," सानरेमो पहुंचने के अगले रोज़ इज़ाबेल ने रैल्फ से कहा, "एक ऐसी बात जो मैंने कई बार लिखकर पूछने की सोची थी, पर चिट्ठी में लिख नहीं पाई। सामने आकर मुझे अपना सवाल काफी आसान लग रहा है। क्या तुम्हें इस बात का पता था कि तुम्हारे पिता मेरे लिए इतना

पैसा छोड़कर जा रहे हैं !"

रैल्फ की टांगें हमेशा से थोड़ा ज़्यादा फैल गईं और उसकी दृष्टि हमेशा से थोड़ा ज़्यादा सामने के समुद्र पर स्थिर हो रही। "मेरे जानने न जानने से क्या फर्क पड़ता है, माई डियर इज़ाबेल ! मेरे पिता बहुत हठी आदमी थे।"

"तो तुम्हें पता था," लड़की बोली।

"हां, उन्होंने मुझे बताया था। इसपर हमारी थोड़ी बात भी हुई थी।"

"उन्होंने ऐसा क्यों किया ?" इज़ाबेल ने सहसा पूछ लिया।

"क्यों—एक तरह की सराहना के रूप में।"

"किस चीज़ की सराहना ?"

"इतने सुन्दर ढंग से जीने की।"

"वे मुझे ज़रूरत से ज़्यादा ही पसन्द करते थे," अब इज़ाबेल ने कहा।

"यह ढंग हम सब लोगों का है।"

"मुझे इसका विश्वास हो जाए, तो मुझे बहुत दुःख होगा। सौभाग्यवश मुझे इसका विश्वास नहीं है। मैं केवल चाहती हूं कि मेरे साथ जीवन में न्याय हो—इसके अलावा कुछ नहीं।"

"यह बहुत अच्छी बात है। पर तुम्हें याद रखना चाहिए कि एक सुन्दर प्राणी के प्रति न्याय भी अपने में एक रंगीन भावना है।"

"मैं एक सुन्दर प्राणी नहीं हूं। तुम उसी समय यह कैसे कह सकते हो जब मैं यहां खड़ी तुमसे ऐसा भोंडा सवाल पूछ रही हूं। तुम्हें कितनी कोमल लग रही होऊंगी मैं !"

"तुम मुझे अव्यवस्थित लग रही हो।"

"हां, हूं अव्यवस्थित मैं।"

"किस बात को लेकर ?"

पल-भर इज़ाबेल ने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर बोली, "तुम समझते हो कि एकाएक इस तरह गंभीर बन जाना मेरे लिए अच्छा है ? हेनरीटा ऐसा नहीं समझती।"

"हेनरीटा जाए जहन्नुम में !" रैल्फ खुरदरे स्वर में बोला। "तुम मुझे पूछो, तो मुझे इसकी खुशी है।"

"क्या इसीलिए तुम्हारे पिता ने यह किया है—तुम्हारे मनोरंजन के लिए ?"

"मेरा मिस स्टैकपोल से मतभेद है," रैल्फ अधिक गम्भीर होकर बोला, "मेरा ख्याल है कि पास में कुछ साधन होना तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है।"

इज़ाबेल गम्भीर आंखों से उसे देखती रही। "पता नहीं तुम किस हद तक जानते हो कि मेरे लिए क्या अच्छा है, और किस हद तक इसकी परवाह करते हो।"

"अगर मैं जानता हूं, तो विश्वास रखो कि मैं परवाह भी करता हूं। तुम्हें बताऊं क्या अच्छा है तुम्हारे लिए? अपने को दुःखी न करना।"

"शायद तुम्हारा मतलब है तुम्हें दुःखी न करना।"

"वह तुम नहीं कर सकतीं। मुझपर कोई असर नहीं होता। तुम चीज़ों को ज़रा सहज भाव से लो। अपने से बहुत ज़्यादा मत पूछो कि तुम्हारे लिए यह अच्छा है, या वह अच्छा है। अपने विवेक से ज़्यादा सवाल मत करो—नहीं तो वह एक अनाड़ी के छुए प्यानो की तरह बेसुरा हो जाएगा। अपने सवाल बड़े अवसरों के लिए रखो। अपने चरित्र को इतना ढालने की कोशिश मत करो—यह प्रयत्न एक ताज़ा कोमल गुलाब को खोलकर देखने की तरह है। अपनी पसन्द के मुताबिक जियो—उससे तुम्हारा चरित्र अपने आप अपने को ढाल लेगा। ज़्यादातर चीज़ें तुम्हारे लिए अच्छी हैं। इसमें अपवाद बहुत थोड़े हैं, और अच्छी आय उनमें से एक नहीं है।" रैल्फ मुस्कराता हुआ रुका; इज़ाबेल आतुर भाव से सुन रही थी।" तुम्हारे पास बहुत ज़्यादा चिन्तन शक्ति है, और उससे भी ज़्यादा विवेक है", रैल्फ ने जोड़ा। "तुम्हें बिला वजह बहुत-सी चीज़ें गलत लगती हैं। अपनी घड़ी जेब में रखो, अपना बुखार कम करो, अपने पंख फैलाओ और ज़मीन से ऊपर उठ जाओ। ऐसा करना हरगिज़ गलत नहीं है।"

इज़ाबेल आतुर भाव से सुन रही थी और जल्दी समझ जाना उसका स्वभाव ही था। "तुम समझ रहे हो तुम क्या कर रहे हो? अगर समझ रहे हो, तो जानते हो कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले रहे हो?"

"तुम मुझे थोड़ा डराए दे रही हो, पर मेरा ख्याल है मैं सही हूं", रैल्फ ने अपना प्रसन्न भाव बनाए रखा।

"फिर भी जो तुम कह रहे हो, वह ठीक है", इज़ाबेल ने बात जारी रखी। इससे सही बात तुम नहीं कह सकते थे। मैं बहुत ज़्यादा अपने में डूबी रहती हूं—मैं ज़िन्दगी को एक डॉक्टरी नुस्खे की तरह देखती हूं। हम क्यों हमेशा यह सोचते

रहें कि क्या हमारे लिए अच्छा है—जैसे कि हम अस्पताल में पड़े मरीज़ हों ? मुझे गलत काम करने का इतना डर क्यों हो ? जैसे कि मेरे कुछ भी सही या गलत करने से दुनिया को कुछ फर्क पड़ता हो !"

"सलाह देने के लिए तुमसे अच्छा व्यक्ति नहीं मिल सकता", रैल्फ बोला। "तुम तो मेरी ही हवा निकाले दे रही हो।"

इज़ाबेल ने इस तरह उसकी तरफ देखा जैसे उसकी बात उसने सुनी न हो—रैल्फ ने जो विचार उसके मन में जगा दिया था, वह उसीका अनुसरण कर रही थी। "मैं चाहती हूं कि अपने से ज्यादा दुनिया के बारे में सोचूं, पर हमेशा मैं अपने पर लौट आती हूं। इसका कारण यह है कि मैं डरती हूं।" वह रुकी—उसकी आवाज़ थोड़ा कांप गई। "हां, मैं डरती हूं—इतना मैं तुम्हें बता सकती हूं। बड़ी सम्पत्ति का अर्थ है स्वतन्त्रता, और मैं उससे डरती हूं। सम्पत्ति इतनी अच्छी चीज़ है, और व्यक्ति इसका इतना अच्छा उपयोग कर सकता है। न कर सके, तो यह उसके लिए शरम की बात होगी। और आदमी को साथ सोचते रहना चाहिए—वह तो एक निरन्तर परिश्रम है। मैं नहीं कह सकती कि शक्ति-हीन होना इससे बड़ा सुख है।"

"कमज़ोर लोगों के लिए वह ज़्यादा बड़ा सुख है। कमज़ोर लोगों की घृणा से बचे रहने के लिए कितना बड़ा प्रयत्न करना पड़ता होगा।"

"और यह तुम कैसे जानते हो कि मैं कमज़ोर नहीं हूं ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"ओह", रैल्फ ने ऐसी उत्तेजना के साथ कहा जो इज़ाबेल से छिपी नहीं रही। "अगर तुम कमज़ोर हो, तो मैं अपने को बिलकुल नाकारा महसूस करूंगा।"

भूमध्यसागर का आकर्षण इज़ाबेल के लिए उत्तरोत्तर बढ़ता गया। वह समुद्र इटली की दहलीज़ था—प्रशंसा भाव का द्वार। इटली, जिसे उसने अभी पूरा देखा और महसूस नहीं किया था, एक सम्भावनाओं से भरे प्रदेश के रूप में उसके सामने फैला था—वहां उसकी सौन्दर्य चेतना को अनन्त ज्ञान का सुख प्राप्त हो सकता था। अपने कज़िन के साथ समुद्र तट पर टहलते हुए—वह रोज़ शाम की सैर के समय उसके साथ रहती थी—वह उत्सुक दृष्टि से समुद्र पार वहां देखती रहती जहां जेनोआ था। यहां अपने बड़े अभियान की दहलीज़ पर कुछ देर के लिए रुकना उसे अच्छा लग रहा था—इस आरम्भिक फड़फड़ाहट का

एक अपना ही मज़ा था। यह उसके आशाओं, आकांक्षाओं, कल्पनाओं, आशंकाओं तथा संभावनाओं से भरे नाटकीय जीवन में जैसे एक शान्त मध्यान्तर था—कुछ देर के लिए नगाड़े और तुरही की आवाज़ रुक जाने की तरह। मैडम मर्ले ने मिसेज़ टाउशेट से कहा था कि आधी दरजन बार अपनी जेब में हाथ डालने पर इज़ाबेल को अपने उदार अंकल की कृपा से उसे भरी पाने की आदत हो जाएगी, और हमेशा की तरह उस महिला की भविष्यवाणी सच हो रही थी। रैल्फ टाउशेट ने इस बात के लिए इज़ाबेल की प्रशंसा की थी कि उसमें एक नैतिक तत्परता है—वह किसीकी अच्छी सलाह तुरन्त स्वीकार कर लेती है। रैल्फ की सलाह ने भी उसकी सहायता की, और सानरेमो से चलने तक उसे अपना धनी होना स्वाभाविक लगने लगा। अपने बारे में उसकी धारणाओं का जो घना झुरमुट था, उसमें इस धारणा ने भी अपना सुविधापूर्ण स्थान बना लिया। वह इन कल्पनाओं की भूलभुलैयों में उलझने लगी कि मानवीय दृष्टिकोण रखने-वाली एक स्वतन्त्र धनी लड़की समुदाय-हित के लिए क्या-क्या कर सकती है। इस तरह उसकी दृष्टि में उसका धन उसके बेहतर व्यक्तित्व का एक हिस्सा बन गया जिससे उसे एक महत्ता, और काफी हद तक एक आदर्श सौन्दर्य मिल गया था। दूसरों की इस सम्बन्ध में क्या कल्पना थी, यह एक अलग विषय है जिसपर हम समय आने पर प्रकाश डालेंगे। इज़ाबेल की कल्पनाओं में कुछ एक द्वन्द्व भी शामिल थे। वह अतीत की अपेक्षा भविष्य के विषय में सोचना अधिक पसन्द करती थी, पर भूमध्यसागर की तरंगों की कोमल ध्वनि सुनते हुए उसकी कल्पना कई बार पीछे की ओर चली जाती। वहां उसे दो स्पष्ट आकृतियां नज़र आतीं जिन्हें पहचानने में कोई कठिनाई नहीं थी—वे दो व्यक्ति थे कैस्पर गुडवुड तथा लार्ड वारबर्टन। विचित्र बात थी कि कितनी जल्दी ये आकृतियां उसके जीवन की पृष्ठभूमि में चली गई थीं। जो कुछ अनुपस्थित हो उसकी वास्तविकता में विश्वास खो देना इज़ाबेल का स्वभाव था। आवश्यकता पड़ने पर वह प्रयत्न से इस विश्वास को वापस भी ले आती थी, पर यथार्थ चाहे सुन्दर भी रहा हो, फिर भी यह प्रयत्न उसके लिए कष्टप्रद होता था। अतीत उसे मरा हुआ जान पड़ता था और उसे फिर से जगाना, उसपर कयामत की रोशनी डालने की तरह। फिर उसे यह भी नहीं लगता था कि दूसरों के मन में उसकी याद ताज़ा होगी—उसे विश्वास नहीं था कि वह अपने पीछे न बुझने-

वाले निशान छोड़ सकती है। यह जानकर उसे आघात पहुंचता कि दूसरे उसे भूल गए हैं—पर अपनी जो स्वतन्त्रता उसे सबसे मधुर लगती थी, वह थी भूल जाने की स्वतन्त्रता। कैस्पर गुडवुड या लॉर्ड वारबर्टन को उसने भावना की दृष्टि से एक शिलिंग तक नहीं दिया था, फिर भी उन्हें वह अपने प्रति काफी ऋणी महसूस करती थी। उसे ख्याल आता कि गुडवुड उसे फिर भी लिखेगा—पर यह डेढ़ एक साल बाद होगा, और तब तक जाने क्या-क्या हो चुका हो। वह यह नहीं मान पाती थी कि कैस्पर गुडवुड किसी और लड़की से प्रेम करने लगेगा—और किन्हीं लड़कियों को लेकर यह कितना भी सुविधाजनक क्यों न हो, कैस्पर को सुविधा की बात आकर्षित नहीं कर सकती थी। फिर वह यह भी सोचती कि हो सकता है एक दिन वह आज से बदलकर अपनी ही नज़र में तिरस्कृत हो—हो सकता है आज उसे कैस्पर से हटकर जिन चीज़ों का मोह है (और वे कम नहीं थीं), उनसे वह ऊब जाए, और कैस्पर की उपस्थिति, जो आज उसे अपनी स्वतन्त्र सांस में एक बाधा लगती है, उसे तब विश्राम देती जान पड़े। सम्भव था कि यह बाधा किसी दिन एक वरदान सिद्ध हो—ग्रेनाइट की चट्टानों से घिरी एक शान्त बन्दरगाह की तरह। पर ऐसा दिन अपने ही क्रम से आ सकता था—वह हाथ बांधे उसकी प्रतीक्षा नहीं कर सकती थी। पर लॉर्ड वारबर्टन भी मन में उसकी तसवीर पाले रहे, इसका सामना वह अपनी उदात्त नम्रता या चेतन अभिमान से नहीं कर पाती थी। उसके और अपने बीच की बात को सर्वथा मन से मिटा देने का वह पक्का निश्चय किए थी और सोचती थी कि उस व्यक्ति को भी बदले में ऐसा ही करना चाहिए। यह केवल एक व्यंग्य नहीं था, इज़ाबेल को वास्तव में विश्वास था कि हिज़ लॉर्डशिप अपनी निराशा पर काबू लेगा। उस व्यक्ति पर असर गहरा हुआ था, इसका उसे विश्वास था, और इस विश्वास से उसे खुशी भी होती थी। पर यह एक बेमानी-सी बात थी कि इतना सम्पन्न और प्रतिभावान् व्यक्ति किसी भी ज़ख्म का गहरा निशान देर तक अपने पर रहने दे। इज़ाबेल अंग्रेज़ों को आरामपसन्द लोग समझती थी, और लॉर्ड वारबर्टन को इसमें क्या आराम मिल सकता था कि वह बहुत दिनों तक एक ऐसी आत्मनिर्भर अमरीकन लड़की के बारे में सोचता रहे जिससे उसका बस हल्का-सा ही परिचय था? इज़ाबेल का ख्याल था कि किसी भी दिन उसे पता चले कि लॉर्ड महोदय ने अपने ही देश की किसी अधिक योग्य लड़की से शादी कर ली है, तो उसे ज़रा भी आश्चर्य

नहीं होगा। इससे साबित होगा कि वह आदमी उसे अपनी जगह कितनी दृढ़ समझता है, और यही वह चाहती है। इसीसे उसके अभिमान को सन्तोष मिलेगा।

२२

बूढ़े मिस्टर टाउशेट की मृत्यु के लगभग छः महीने बाद फ्लोरेंस के रोमन गेट के बाहर की जैतून-लदी पहाड़ी पर बने एक पुराने विला के कई कमरों में से एक में एक छोटा-सा ग्रुप एकत्रित था जिसके विन्यास को अगर एक चित्रकार देखता, तो उसकी प्रशंसा करता। विला एक सूनी-सी लम्बी इमारत थी जिसकी छत टस्कैनी को आकर्षित करनेवाले ढंग से आगे को निकली हुई थी। दूर से देखने पर वह विला तीन-तीन, चार-चार के झुरमुटों में पहाड़ी पर उगे ऊंचे स्याह साइप्रेसों के बीच एक समकोण बनाता है। घर के आगे चोटी के कुछ भाग में खुला, घास-लदा देहाती पिआज़ा है। घर के आगे की खिड़कियां कुछ अनियमित-सी हैं। वहां एक लम्बी-सी पत्थर की बेंच है जहां सुस्तानेवाले दो-तीन लोग, जिनकी और जगहों से ज़्यादा इटली में कद्र है, आराम से पड़े रह सकते हैं। फिर भी घर के इस भव्य, ठोस, पुराने अग्रभाग में कुछ था जो अपने में रुंधा-सा जान पड़ता था—जैसे कि घर के चेहरे पर एक नकाब चढ़ा हो। घर का चेहरा दरअसल दूसरी तरफ था—पीछे के खुले विस्तार की तरफ। उसमें एक छोटा-सा बाग था जिसमें खास तौर से जंगली गुलाब उगते थे और जहां की काई लदी पत्थर की बेंचों पर धूप चमकती रहती थी। हमें यहां घर के बाहरी भाग से मतलब नहीं। भरे बसन्त की उस सुबह को घर के लोगों को दीवारों के अन्दर रहना पसन्द था। निचली मंज़िल की खिड़कियां निर्माण की दृष्टि से उत्कृष्ट होती हुई भी ऐसी लगती थीं जैसे उनका काम बाहर की झलक देना न होकर इस झलक को रोकना हो। उनके आगे लोहे की सलाखें लगी थीं, और पैर उठाकर भी उनके अन्दर झांकने की उत्सुकता उन तक नहीं पहुंच पाती थी। एक कमरे में, जिसमें तीन ऐसी खिड़कियां थीं, एक नवयुवती और दो धार्मिक सिस्टर्ज़ के साथ बैठा था। कमरा अंधेरा नहीं था क्योंकि उसमें एक ऊंचा दरवाज़ा भी था जो बाग की ओर खुलता था और जिसमें से खुली

इतालवी धूप अन्दर आ सकती थी। वह कमरा आराम और आमोद का स्थान था जिसकी व्यवस्था बहुत सूक्ष्म सुरुचि का परिचय देती थी। वहां पुराने रेशम के परदे और टेपेस्ट्रियां थीं, ओक की पालिश की हुई नक्काशीदार अलमारियां और खाने थे, जड़ी हुई पुरानी तसवीरें थीं और घास और मिट्टी के मध्यकालीन बर्तन थे जिनका इटली में काफी बड़ा संचय है। ये सब चीजें ऐसी आधुनिक फरनीचर के साथ सजाई गई थीं जो आज की आरामपसन्द नस्ल के अनुकूल पड़ता है। कुर्सियां गहरी और गद्देदार थीं। एक बड़ी-सी लिखने की मेज़ थी जिसपर लन्दन तथा उन्नीसवीं शताब्दी की स्पष्ट छाप थी। वहां ढेरों पुस्तकें, मैगजीनें और अखबार तथा कुछ छोटी-छोटी अजीब-सी वाटरकलर की तसवीरें थीं। इनमें से एक ईज़ल पर थी। जिस समय का हम उल्लेख कर रहे हैं, उस समय वह नवयुवती उसके सामने खड़ी थी और खामोश रहकर तसवीर को देख रही थी।

उसके साथी बिलकुल खामोश नहीं थे, पर उनकी बातचीत में थोड़ा अटपटापन आ गया था। धार्मिक सिस्टर्ज़ अपनी कुर्सियों पर ठीक से नहीं बैठी थीं। उनके चेहरे गम्भीर और संयत थे। वे सादा नक्शों की साधारण स्त्रियां थीं जिनके चेहरों पर व्यावसायिक-सी नम्रता थी। उनके कलफदार कपड़े कीलों से शरीर पर जड़े-से जान पड़ते थे। उनमें से जो बड़ी थी और चश्मा लगाए थी, काफी ताज़ा और गदराई हुई थी। उसके भाव में दूसरी सिस्टर से ज्यादा विवेक और दायित्व बोध था—यह दायित्व उस नवयुवती को लेकर था। लड़की सिर पर सजावटी हैट पहने थी जो उसके उम्र के हिसाब से छोटे मलमल के गाउन से मेल नहीं खाता था। पुरुष जो उन सिस्टर्ज़ से बात कर रहा था, अपनी स्थिति की कठिनाई को समझ रहा था क्योंकि विनीत लोगों से बात करना उतना ही मुश्किल है जितना शक्तिशाली लोगों से। फिर उसका ध्यान लड़की की तरफ भी था। लड़की की पीठ उसकी तरफ थी और उसकी आंखें लड़की के छोटे-से दुबले शरीर पर टिकी थीं। उसकी उम्र चालीस के लगभग थी, और उसके सुन्दर सिर पर घने बाल छोटे-छोटे काटे गए थे। उसका चेहरा छोटा, तराशा हुआ और संयत था जिसका एकमात्र दोष यह था कि वह कुछ ज्यादा ही नुकीला जान पड़ता था। इसमें काफी देन उसकी दाढ़ी की भी थी। सोलहवीं शताब्दी की तसवीरों के ढंग से कटी हुई दाढ़ी जिसके ऊपर भूरी नोकदार मूंछें थीं, उस व्यक्ति की सुरुचि और परम्परा-प्रेम का परिचय देती थीं। उसकी सचेत उत्सुक आंखें एक साथ अस्पष्ट और पारदर्शिनी,

प्रतिभा सम्पन्न और कठोर, निरीक्षकशील तथा स्वप्निल थीं और उनसे पता चलता था कि उस व्यक्ति की धारणा के अनुसार सुरुचि की कुछ निर्धारित सीमाएं थीं और उन सीमाओं तक वह हर चीज़ पा लेता था। उस व्यक्ति के चेहरे-मोहरे से उसके देश और वातावरण का अनुमान लगाना मुश्किल था—उसमें कोई ऐसे बाहरी चिह्न नहीं थे जिनसे इस तरह के सवाल का आसानी से उत्तर दिया जा सकता। अगर उसमें अंग्रेज़ खून था, तो शायद साथ थोड़ा इतालवी या फ्रांसीसी सम्मिश्रण भी था। वह सोने का एक सुन्दर सिक्का था जिसपर कोई ऐसी टक-साली मोहर नहीं थी जो उसे आम प्रचलन की चीज़ बना दे—वह किसी विशेष अवसर पर तैयार किए गए एक सुन्दर और विशिष्ट पदक की तरह था। वह बदन का हल्का-फुल्का, दुबला और शिथिल-सा आदमी था जो न ज़्यादा लम्बा था, न छोटा। उसकी पोशाक में केवल इतनी ही दिलचस्पी झलकती थी कि उसे कोई सस्ती रुचि की चीज़ नहीं पहननी चाहिए।

"तो माई डियर, तुम इस सम्बन्ध में क्या सोचती हो?" उसने उस युवा लड़की से पूछा। उसने इतालवी ज़बान का बहुत सहजता से प्रयोग किया; लेकिन किसीको फिर भी यह न लगता कि वह इतालवी है।

उस बच्ची ने बड़ी गम्भीरता से अपना सिर एक तरफ से दूसरी तरफ किया। "यह बहुत खूबसूरत है पापा। क्या यह आपने ही बनाई है?"

"अवश्य, मैंने ही बनाई है। क्या तुम नहीं समझतीं कि मैं इतना कुशल हूं?"

"हां पापा, आप बहुत कुशल हैं। मैंने भी तसवीरें बनानी सीखी हैं।"

"तुम्हें अपनी कृतियों का नमूना मेरे लिए लाना चाहिए था।"

"मैं बहुत-से लाई हूं; वे मेरे बक्से में हैं।"

"यह बहुत—बहुत ही ध्यान से चित्र बनाती है," बड़ी नन ने फ्रांसीसी भाषा में कहा।

"मुझे सुनकर बहुत खुशी हुई। क्या तुम्हींने इसे सिखाया है?"

"नहीं," उस नन ने थोड़ा झेंपकर कहा, "मैं कुछ नहीं सिखाती। मैं यह काम उन लोगों के लिए छोड़ देती हूं जो ज़्यादा समझदार हैं। हमारे पास एक बहुत अच्छा ड्राइंग मास्टर है, मिस्टर—मिस्टर—क्या है उसका नाम?" उसने अपनी साथिन से पूछा। उसकी साथिन ने गालीचे पर इधर-उधर देखा। "वह एक जर्मन नाम है", उसने इतालवी भाषा में कहा। जैसे कि उसका अनुवाद करने की

जरूरत हो।

"हां", दूसरी बोलती गई, "वह जर्मन है और काफी अरसे से हमारे पास है।"

युवा लड़की जोकि यह वार्तालाप नहीं सुन रही थी, चलते-चलते उस कमरे के खुले बड़े दरवाज़े तक जाकर बाहर बगीचे की ओर देखने लगी थी। "और तुम सिस्टर, फ्रेंच हो," उस भद्र पुरुष ने कहा।

"जी हां", उस मेहमान ने शालीनता के साथ कहा। "मैं अपनी शिष्याओं के साथ अपनी ही भाषा में बात करती हूं। मुझे कोई अन्य भाषा नहीं आती। लेकिन हमारे पास दूसरे देशों की सिस्टर्ज़ हैं—अंग्रेज़, जर्मन, आयरिश। वे सब अपनी-अपनी ही भाषा बोलती हैं।"

वह भद्र व्यक्ति मुस्कराया। "क्या मेरी बेटी किसी आयरिश महिला की देख-रेख में रही है ?" और तब यह देखकर कि उन्हें इसमें मज़ाक का संदेह हो रहा है, यद्यपि वे उसे समझने में असमर्थ हैं, "आप लोग सर्वथा पूर्ण हैं", उसने तभी जोड़ा।

"जी हां, हम पूर्ण हैं। हमारे पास सब कुछ है और सब कुछ बहुत बढ़िया है।"

"हमारे यहां जिमनास्टिक भी है", वह इतालवी नन कहती रही। "लेकिन वह खतरनाक नहीं है।"

"मुझे उम्मीद है कि वह खतरनाक नहीं है।" "क्या यह तुम्हारा विभाग है ?" यह एक ऐसा प्रश्न था जिसने उन दोनों महिलाओं को हंसी से गुदगुदा दिया। इसके समाप्त होने पर उस व्यक्ति ने अपनी बेटी की तरफ देखते हुए कहा कि वह बड़ी हो गई है।

"हां, लेकिन मेरे ख्याल में यह और नहीं बढ़ेगी। यह ऐसी ही रहेगी—बहुत बड़ी नहीं होगी," उस फ्रेंच सिस्टर ने कहा।

"मुझे अफसोस नहीं है। मुझे स्त्रियां किताबों की तरह पसन्द हैं—बहुत अच्छी, लेकिन बहुत बड़ा नहीं। लेकिन मैं ऐसा कोई विशेष कारण नहीं जानता कि मेरी बच्ची क्यों छोटे कद की रहेगी।"

उस नन ने स्वभाव के अनुसार अपने कंधे हिलाए, जैसे कि वह बताना चाहती हो कि ऐसी बातों के विषय में उसे कोई ज्ञान नहीं है। "वह काफी स्वस्थ है, यही सबसे बड़ी बात है।"

"हां, वह पूर्णतया स्वस्थ नजर आती है।" और उस युवा लड़की के पिता ने एक क्षण के लिए उसे ध्यान से देखा। "तुम बागीचे में क्या देख रही हो ?" उसने फ्रांसीसी भाषा में पूछा।

"मैं बागीचे में फूल देख रही हूं", लड़की ने बहुत ही मधुर लेकिन धीमी आवाज़ में कहा, जिसकी ध्वनि उतनी ही अच्छी थी जितनी कि वह स्वयं।

"लेकिन वे ज्यादा अच्छे नहीं हैं। बहरहाल जैसे भी हैं तुम बाहर जाकर इन महिलाओं के लिए थोड़े-से चुन लाओ।"

बच्ची ने अपने पिता की तरफ प्रसन्नता की मुसकान के साथ देखा, "क्या सचमुच ले आऊं ?"

"हां, क्यों नहीं, जब मैंने कह दिया है", उसके पिता ने कहा।

लड़की ने सबसे बड़ी नन की तरफ देखा, "क्या सच ही मैं लाने जा सकती हूं मदर ?"

"अपने आदरणीय पिता की आज्ञा का पालन करो, मेरी बच्ची", उस सिस्टर ने एकबार और झेंपकर कहा।

वह बच्ची अधिकार से सन्तुष्ट, दरवाजे से नीचे उतरी और तुरन्त आंखों से ओझल हो गई। "आप बच्चों को बिगाड़ती नहीं हैं", लड़की के पिता ने बहुत प्रसन्नता से कहा।

"प्रत्येक चीज़ के लिए उन्हें आज्ञा लेनी पड़ती है। यही हमारा तरीका है। आज्ञा बहुत आसानी से मिल जाती है, लेकिन उनका मांगना आवश्यक है।"

"मुझे आपके ढंग पर कोई एतराज़ नहीं है। मुझे ज़रा सन्देह नही कि वह बहुत अच्छा है। मैंने अपनी बेटी को आपके पास इसीलिए भेजा था कि आप उसे कुछ बना दें। मुझे पूरा विश्वास था।"

"व्यक्ति को विश्वास अवश्य होना चाहिए", सिस्टर ने अपने चश्मे में से देखते हुए कहा।

"तो क्या मेरे विश्वास की कुछ उपलब्धि है ? आपने इसे क्या बनाया है ?"

सिस्टर ने एक क्षण के लिए अपनी आंखें झुका लीं। "एक अच्छी ईसाई मोंश्यो।"

उसके मेज़बान ने भी अपनी आंखें झुका लीं; लेकिन दोनों की इस चेष्टा का अलग-अलग कारण था। "अच्छा, और क्या बनाया है ?"

उस व्यक्ति ने कॉन्वेंट की महिला को आर ध्यान से देखा—सम्भवतः यह सोचते हुए कि वह कहेगी कि एक अच्छा ईसाई होना सब कुछ होना है, लेकिन अपनी पूरी सादगी के साथ भी वह महिला इतनी जड़ नहीं थी। "एक आकर्षक युवा लड़की—एक वास्तविक छोटी-सी स्त्री—एक ऐसी बेटी, जिससे आपको संतुष्टि ही मिलेगी।"

"वह मुझे बहुत ही शालीन नज़र आती है।" लड़की के पिता ने कहा, "वह सच ही सुन्दर भी है।"

"वह पूर्ण है। उसमें कोई त्रुटि नहीं है।"

"बचपन में भी उसमें कोई त्रुटि नहीं थी और मुझे खुशी है कि आपने भी कोई पैदा नहीं होने दी।"

"हम इसे बहुत प्यार करती हैं," उस चश्मेवाली सिस्टर ने बहुत ही शालीनता के साथ कहा, "और जहां तक त्रुटियों का सवाल है, वे हम इसमें कैसे आने देतीं, जबकि वे हममें ही नहीं हैं। वह हमारी भी उतनी ही बेटी है कि जितनी आपकी है। यह हमारे पास तब से है जब वह इतनी-सी थी।"

"उन सब लड़कियों में से, जो इस साल हमारे पास से जा रही हैं, यह हमें सबसे ज़्यादा याद आएगी," छोटी महिला आहिस्ता से बोली।

"जी हां, हम लोग उसके बारे में बहुत समय तक बातें करते रहेंगे।" दूसरी ने कहा, "हम इसकी मिसाल दूसरी लड़कियों के सामने रखेंगे।" इसपर उस सिस्टर को अपना चश्मा कुछ धुंधला नज़र आया। उसकी साथिन ने क्षण-भर टटोलने के बाद झट से एक खुरदरा रूमाल जेब से निकालकर उसे दे दिया।

"यह ज़रूरी नहीं है कि यह तुम्हारे पास से चली आएगी। अभी कुछ तय नहीं है," उनके मेज़बान ने सहसा कहा—उनके आंसुओं को रोकने के इरादे से नहीं, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के लहजे में जो अपनी पसन्द की बात करना चाहता हो।

"हमें यह मानकर बहुत खुशी होगी। पन्द्रह की उम्र इसके हमारे पास से आने के लिए बहुत छोटी है।"

"लेकिन यह मेरी इच्छा नहीं है कि इसे वहां से निकाल लूं," वह व्यक्ति पहले से अधिक उत्साह के साथ बोला, "मैं तो चाहता हूं कि आप हमेशा के लिए उसे अपने पास रखें।"

"ओह, मोंश्यो," बड़ी सिस्टर ने मुस्कराकर उठते हुए कहा, "वह अच्छी लड़की है, और इस दुनिया के लिए ही बनी है।"

"अगर सभी अच्छे लोग कॉन्वेट में जा छिपते तो दुनिया कैसे चलती ?" उसकी साथिन ने भी उठते हुए आहिस्ता से कहा।

इस प्रश्न में उससे कहीं बड़ी बात थी जितनी कि उस भली महिला ने सोची थी; चश्मेवाली महिला ने इसका बेहतर पक्ष लेते हुए कहा, "खुशकिस्मती से दुनिया में हर जगह अच्छे लोग होते हैं।"

"आप जा रही हैं, तो यहां दो अच्छे व्यक्ति कम हो जाएंगे," उनके मेज़बान ने मज़ाक में कहा।

इस खुले मजाक के लिए उसकी सादा मेहमानों के पास कोई जवाब नहीं था। उन्होंने एक-दूसरी की तरफ विनम्रता से देखा, लेकिन उनकी परेशानी शीघ्र ही ठीक हो गई, क्योंकि वह छोटी लड़की दो बड़े गुलाब के गुच्छे लिए लौट आई—एक में सब सफेद फूल थे, दूसरे में लाल।

"मैं चाहती हूं आप स्वयं ही चुन लें ममा कैथरीन," उस बच्ची ने कहा, "इनका सिर्फ रंग ही भिन्न है ममा जस्टीन; लेकिन दोनों गुच्छों में एक ही जितने गुलाब हैं।"

दोनों सिस्टर्ज़ ने एक-दूसरी की तरफ मुस्कराते, लेकिन झिझकते हुए देखा। "तुम कौन-सा लोगी ?" और "नहीं, तुम्हीं को पसन्द करना चाहिए" के भाव से।

"मैं लाल लूंगी, धन्यवाद," चश्मेवाली मदर कैथरीन ने कहा, "मैं खुद कितनी लाल हूं। ये हमें रोम तक सुख देंगे।"

"ये वहां तक नहीं चलेंगे," छोटी लड़की ने कहा, "मैं चाहती थी कि आपको कुछ ऐसी चीज़ देती जो अन्त तक आपके पास रहती।"

"हमारी बेटी, तुमने हमें अपनी प्यारी यादें दी हैं, जोकि अन्त तक हमारे पास रहेंगी।"

"मैं चाहती हूं कि सिस्टर्ज़ खूबसूरत चीज़ें पहन सकतीं। मैं आपको अपना नीला हार दे देती," वह बच्ची बोलती गई।

"क्या आप आज रात ही रोम लौट रही हैं ?" उसके पिता ने पूछा।

"हां, हम अब फिर से गाड़ी पकड़ेंगी। हमें जाकर बहुत काम करना है।"

"क्या आप थकी नहीं हैं ?"

"हम कभी नहीं थकतीं।"

"नहीं सिस्टर, कभी-कभी थक जाती हैं," छोटी नन बुदबुदाई।

"लेकिन आज तो बिल्कुल नहीं थकीं। हमने यहां बहुत आराम कर लिया है। जब वे उसकी बेटी के साथ चुम्बनों का आदान-प्रदान कर रही थीं, तो उनका मेज़बान उस दरवाज़े को खोलने के लिए आगे बढ़ गया, जिसमें से उन्हें गुज़रना था। लेकिन ज्योंही उसने ऐसा किया, वह हल्का-सा आश्चर्य प्रकट करके सामने देखता रह गया। वह दरवाज़ा एक छोटे-से बन्द कमरे में खुलता था, जोकि एक चेपल जितना ऊंचा और मेहराबदार था और जिसका लाल ईंटों का फ़र्श था। इसी छोटे-से कमरे में एक नौकर एक महिला को साथ लेकर आ रहा था। वह लड़का बहुत ही गन्दे कपड़े पहने था और इस महिला को उस कमरे की तरफ ला रहा था जिसमें हमारे मित्र एकत्रित थे। दरवाज़े पर खड़ा वह भद्रपुरुष, आश्चर्य प्रकट करने के बाद चुप रहा। वह महिला भी चुपचाप आगे बढ़ी। उस व्यक्ति ने उससे आगे उसे कोई अभिवादन नहीं किया और न ही उसकी तरफ अपना हाथ ही बढ़ाया। बल्कि एक तरफ खड़े होकर उसने उसे कमरे के अन्दर आने के लिए रास्ता दे दिया। दरवाज़े पर वह महिला हिचकिचाई। "क्या अन्दर कोई है ?" उसने पूछा।

"हां है जिससे तुम मिल सकती हो।" वह अन्दर आई तो उसने अचानक देखा कि दो नन्स के बीच उनकी शिष्य, अपना एक-एक हाथ दोनों को पकड़ाए चली आ रही हैं। उस नई मेहमान को देखकर वे सभी रुक गए। वह महिला, जो स्वयं भी रुक गई थी, खड़ी-खड़ी उन्हें देखती रही। उस छोटी लड़की ने हल्की-सी खुशी की चीख के साथ कहा, "ओह, मैडम मरले !"

वह मेहमान थोड़ा घबरा गई थी, लेकिन अगले ही क्षण उसका व्यवहार काफी शालीन हो गया। "हां, मैडम मरले, जो तुम्हारे घर पहुंचने पर तुम्हें अभिवादन करने आई है।" और उसने दोनों बांहें उस लड़की की तरफ बढ़ा दीं, जो तत्काल उसकी ओर बढ़ आई—अपना माथा आगे बढ़ाए हुए ताकि उसे चूमा जा सके। मैडम मरले ने उस आकर्षक बच्ची को अभिवादन किया और फिर सीधी होकर दोनों नन्स की तरफ मुस्कराई। उन्होंने एक भद्र अभिवादन के साथ उसकी मुस्कराहट का जवाब दिया, लेकिन उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से इस प्रभावशाली और चतुर महिला का निरीक्षण नहीं किया, क्योंकि वह उन्हें अपने साथ बाहरी दुनिया की कुछ चमक लाती-सी लग रही थी।

"ये महिलाएं मेरी बेटी को घर लाई हैं और अब वे कॉन्वेंट वापस लौट रही हैं," उस व्यक्ति ने कहा।

"अच्छा, तो आप लोग वापस रोम जा रही हैं ? मैं अभी वहीं से आई हूं। आजकल वहां मौसम बहुत अच्छा है," मैडम मरले बोली।

उन अच्छी सिस्टर्ज़ ने बांहें उलझाए हुए, बिना अपना कोई विचार प्रकट किए यह सुना। उस मकान के मालिक ने अपनी नई मेहमान से पूछा कि उसे रोम छोड़े कितने दिन हो गए हैं। "ये मुझसे कॉन्वेंट में मिलने आई थीं", इससे पहले कि वह महिला जवाब देती, वह छोटी लड़की बोल उठी।

"मैं एक से ज़्यादा बार आई थी, "पैंजी," मैडम मरले ने कहा, "क्या मैं रोम में तुम्हारी सबसे प्रिय मित्र नहीं हूं ?"

"मुझे पिछली बार की सबसे अच्छी तरह याद है," पैंज़ी बोली, "क्योंकि आपने कहा था कि मैं अब वहां से चली आऊं।"

"क्या तुमने इससे यह कहा था ?" उस बच्ची के पिता ने पूछा।

"मुझे ठीक याद नहीं। मैंने वही कहा होगा जो मेरा ख्याल होगा इसे अच्छा लगेगा। मैं फ्लोरेंस में एक सप्ताह से हूं। मेरा ख्याल था कि तुम मुझसे मिलने आओगे।"

"मैं ज़रूर आता अगर मुझे पता होता कि तुम यहां हो। किसीको बैठे-बैठे इलहाम से ही तो चीज़ों का पता नहीं चल जाता—यद्यपि मैं चाहता हूं कि ऐसे ही पता चल जाया करे। अच्छा तुम बैठ तो जाओ।"

ये दोनों बातें एक विशेष स्वर में कही गई थीं—ऐसे स्वर में जो कुछ हल्का और सचेत भाव से शान्त था—लेकिन वह स्वर स्वाभाविक नहीं था, विशेष कारण से ऐसा नहीं था। मैडम मरले ने बैठने की जगह चुनने के लिए आसपास देखा। "तुम इन महिलाओं को दरवाज़े तक छोड़ने जा रहे हो ? तो मुझे तुम्हारे काम में दखल नहीं देना चाहिए। अच्छा विदा।" उसने फ्रेंच में उन नन्स से कहा, जिससे वे चली जाएं।

"यह महिला हमारी घनिष्ठ मित्र हैं। आपने इन्हें कॉन्वेंट में भी देखा होगा," मेज़बान ने कहा, "मुझे इनके निर्णय में बहुत विश्वास है; ये मुझे इस बात का निश्चय करने में सहायता देंगी कि मेरी बेटी को छुट्टियों के बाद वापस आपके पास कॉन्वेंट में लौटना चाहिए या नहीं।"

"मुझे आशा है कि आप हमारे हक में फैसला देंगी, मैडम," उस चश्मेवाली सिस्टर ने साहस करके कहा।

"यह तो मिस्टर ऑसमंड की इच्छा पर निर्भर करता है। मैं कुछ भी फैसला नहीं करती," मैडम मरले ने यह बात प्रसन्न भाव से कही। "मेरा विश्वास है कि आपका स्कूल बहुत अच्छा है। लेकिन मिस ऑसमंड के मित्रों को भूलना नहीं चाहिए कि वह इस समाज के लिए बनी है।"

"यह बात मैंने मोंश्यो से कही थी," सिस्टर कैथरीन ने जवाब दिया, "उसे बिलकुल दुनिया के ही उपयुक्त बनाना है," वह कुछ दूर खड़ी पैंज़ी की तरफ देखकर बुदबुदाई जो गौर से मैडम मरले की बढ़िया पोशाक को देख रही थी।

"तुम सुन रही हो, पैंज़ी ? तुम स्वभावतः दुनिया के लिए बनी हो," पैंजा के पिता ने कहा।

वह बच्ची एक क्षण को अपनी निश्छल छोटी आंखों से एकटक अपने पिता को देखती रही, "क्या मैं आपके लिए नहीं बनी हूं पापा ?"

पापा तुरन्त हल्की-सी हंसी हंसे, "इसमें कोई बाधा नहीं है ! मैं भी दुनिया का ही हिस्सा हूं पैंज़ी।"

"कृपया हमें जाने की आज्ञा दें," सिस्टर कैथरीन ने कहा, "जैसे भी हो तुम भली, बुद्धिमान और प्रसन्न बनी रहो, मेरी बच्ची।"

"मैं अवश्य ही लौटकर आपसे मिलूंगी," पैंज़ी ने जवाब दिया और फिर से उन्होंने आलिंगन करना आरम्भ कर दिया, जिसमें मैडम मरले ने अब दखल दिया, "तुम मेरे पास रुको मेरी बच्ची," उसने कहा, "तुम्हारे पिता इन भद्र महिलाओं को दरवाज़े तक छोड़कर आते हैं।"

पैंज़ी निराश होकर, लेकिन बिना विद्रोह किए देखती रही। समर्पण उसका स्वभाव था—हर ऐसे व्यक्ति के प्रति समर्पण जो अधिकार के दावे से बात करे। "क्या मैं ममा कैथरीन को गाड़ी में नहीं बिठा सकती ?" उसने बहुत ही कोमल भाव से पूछा।

"अगर तुम मेरे साथ रहोगी तो मुझे अधिक प्रसन्नता होगी," मैडम मरले ने कहा। मिस्टर ऑसमंड और दोनों महिलाएं, जो एकबार फिर उस मेहमान के सामने आदर से झुकी थीं, अब दूसरे कमरे में चले गए थे।

"अच्छा, मैं आपके पास रहूंगी," पैंज़ी ने जवाब दिया। वह मैडम मरले के

पास खड़ी रही, अपने छोटे-से हाथ का समर्पण किए, जिसे उस महिला ने पकड़ लिया था। वह खिड़की से बाहर देखती रही। उसकी आंखें आंसुओं से भरी थीं।

"मैं प्रसन्न हूं कि उन्होंने तुम्हें आज्ञापालन सिखाया है," मैडम मरले ने कहा, "हर भली लड़की को ऐसा ही करना चाहिए।"

"जी हां, मैं अच्छी तरह आज्ञापालन करती हूं," पैंज़ी ने हल्की उत्सुकता लेकिन गर्व से कहा, मानो वह अपने प्यानो बजाने की बात कर रही हो। फिर उसने हल्की-सी उसांस भरी जोकि साफ सुनी जा सकती थी।

मैडम मरले ने उसके पकड़े हुए हाथ को अपनी खूबसूरत हथेली की तरफ बढ़ाया और उसे देखने लगी। यह बहुत गौर का देखना था, लेकिन उसने कुछ भी निराशाजनक नहीं पाया। उस बच्ची का छोटा हाथ नाजुक और सुन्दर था, "मुझे उम्मीद है कि वे ध्यान रखती थीं कि तुम हमेशा दस्ताने पहनो," उसने क्षण-भर बाद कहा, "छोटी लड़कियां अधिकतर उनसे घृणा करती हैं।"

"मैं भी पहले उनसे घृणा करती थी। लेकिन अब वे मुझे पसन्द हैं," बच्ची ने जवाब दिया।

"यह बहुत अच्छा है। मैं तुम्हें एक दर्जन भेंट करूंगी।"

"मैं आपका धन्यवाद करती हूं। वे कौन-कौन से रंगों के होंगे?" पैंज़ी ने उत्सुकता से पूछा।

मैडम मरले ने सोचकर कहा, "उपयोगी रंगों के।"

"लेकिन बहुत खूबसूरत?"

"क्या तुम्हें खूबसूरत चीज़ों का बहुत शौक है?"

"हां, लेकिन—लेकिन बहुत ज्यादा नहीं", पैंज़ी ने साधुता के भाव से कहा।

"बहरहाल, वे ज्यादा सुन्दर नहीं होंगे," मैडम मरले ने हंसकर कहा। उसने बच्ची का दूसरा हाथ भी पकड़ लिया और उसे अपने और नज़दीक खींच लिया; जिसके बाद, वह एक क्षण उसकी तरफ देखती रही, "क्या तुम्हें मदर कैथरीन का विच्छेद बहुत सताएगा?"

"हां—जब, जब उनकी याद आएगी।"

"तो कोशिश करो कि याद न आए। सम्भव है किसी दिन," मैडम मरले ने

जोड़ा, "तुम्हें एक दूसरी मदर मिल जाए ?"

"मैं नहीं समझती कि इसकी कोई ज़रूरत होगी," पैंज़ी ने फिर से मुलायम उसांस भरकर कहा, "मेरे पास कॉन्वेंट में बीस से ज्यादा मदर थीं।"

उसके पिता की पदचाप फिर से साथ के कमरे में सुनाई दी, और मैडम मरले उस बच्ची को छोड़कर खड़ी हो गई। मिस्टर ऑसमंड ने अन्दर आकर दरवाज़ा बन्द कर दिया, और मैडम मरले की तरफ देखे बिना एक-दो कुर्सियों को वापस अपनी जगह पर कर दिया। उसकी मेहमान ने, उसके इधर-उधर जाने-आने पर पलभर उसके बात करने की प्रतीक्षा की। फिर बोली, "मेरा ख्याल था कि तुम स्वयं रोम आओगे। सोचा था कि तुम स्वयं पैंज़ी को वहां से ले आने के लिए उत्सुक होंगे।"

"यह एक स्वाभाविक अनुमान था; लेकिन मुझे डर है कि यह पहली बार नहीं जब मैंने तुम्हारे अनुमान के विरुद्ध काम किया हो।"

"हां," मैडम मरले ने कहा, "तुम बहुत उल्टे हो।"

मिस्टर ऑसमंड ने एक क्षण के लिए अपने को उस कमरे में व्यस्त रखा—वहां घूमने के लिए काफी स्थान था—उस ढंग से जिससे एक आदमी किसी सकपकानेवाली स्थिति से बचने के बहाने ढूंढ़ता है।

पर अब वे बहाने समाप्त हो चुके थे। उसके आस-पास अब कुछ भी शेष नहीं था—जब तक कि वह कोई किताब ही न उठा लेता—सिवाय इसके कि वह अपने हाथों को पीठ के पीछे किए पैंज़ी को देखने लगे।

"तुम अन्तिम बार ममा कैथरीन से मिलने क्यों नहीं आई ?" उसने अचानक फ्रेंच में पूछ लिया।

पैंज़ी, मैडम मरले की तरफ देखती हुई एक क्षण के लिए हिचकिचाई, "मैंने इससे रुकने के लिए कहा था," उस महिला ने कहा जोकि फिर से एक दूसरी जगह पर बैठ गई थी।

"हां, यही बेहतर था," ऑसमंड ने समर्थन किया। इसके साथ ही वह एक कुर्सी पर बैठ गया और मैडम मरले को देखता रहा। फिर अपनी कोहनियों को कुर्सी की बांहों पर टिकाकर अपने हाथों को एक-दूसरे में उलझाए वह थोड़ा आगे को झुक गया।

"यह मुझे कुछ दस्ताने देंगी," पैंज़ी ने कहा।

"तुम्हें यह बात सभी को बताने की ज़रूरत नहीं है, मेरी प्यारी बच्ची," मैडम मरले बोली।

"तुम उसके प्रति बहुत कृपालु हो," ऑसमंड बोला, "उसके पास वह सब कुछ है जिसकी उसे आवश्यकता है।"

"मेरा ख्याल है यह नन्स के पास बहुत रह चुकी है।"

"अगर हमें इस विषय में बात करनी है तो बेहतर है, यह कमरे से बाहर चली जाए।"

"इसे यहीं रहने दो," मैडम मरले बोलीं, "हम कोई और बात करेंगे।"

"अगर आप चाहते हैं, तो मैं बात नहीं सुनूंगी," पैंज़ी ने विश्वस्त भाव से खुलकर कहा।

"तुम सुन सकती हो, प्यारी बच्ची, क्योंकि तुम समझ नहीं सकोगी," उसके पिता ने जवाब दिया। वह बच्ची दरवाज़े के पास बैठ गई जहां से वह अपनी मासूम उत्सुक आंखों से बाहर बगीचे को देख सकती थी; और मिस्टर ऑसमंड बहुत बेतुके ढंग से अपनी बात करता रहा।

"तुम बहुत स्वस्थ नज़र आ रही हो।"

"मेरा खयाल है मैं हमेशा एक-सी रहती हूं," मैडम मरले बोली।

"तुम हमेशा एक-सी रहती हो। तुम कभी नहीं बदलतीं। तुम एक अद्‌भुत स्त्री हो।"

"हां, मेरा ख्याल है मैं हूं।"

"तुम कभी-कभी अपना मन बदल लेती हो। तुमने इंग्लैंड से लौटने के बाद मुझसे कहा था कि तुम फिलहाल रोम नहीं छोड़ोगी।"

"मुझे प्रसन्नता है कि तुम मेरी बातें अच्छी तरह याद रखते हो। मेरा इरादा यही था। मैं फ्लोरेन्स कुछ मित्रों से मिलने आई थी जो अभी हाल ही यहां पहुंचे हैं और जिनके आने के सम्बन्ध में उस समय कुछ निश्चित नहीं था।"

"यह तुम्हारे लिहाज़ से विशेष कारण हैं। तुम हमेशा अपने मित्रों के लिए कुछ न कुछ करती रहती हो।"

मैडम मरले अपने मेज़बान की तरफ सीधे देखकर मुस्कराई, "यह उससे कम विशेष है जितना कि तुम्हारी आलोचना से लगता है—जोकि बिलकुल झूठी है। बहरहाल मैं उसमें कोई कसूर नहीं समझती," उसने जोड़ा, "क्योंकि जब व्यक्ति को

अपनी कही बात में विश्वास न हो, तो उसे विश्वास के साथ बात करने को कहा ही क्यों जाए ? मैं अपने मित्रों के पीछे अपने को बरबाद नहीं करती। मुझे तुम्हारी सराहना की आवश्यकता नहीं है। मैं बहुत ज्यादा अपना ख्याल रखती हूं।"

"बिल्कुल सही है; लेकिन तुम्हारा अपना आप बहुत-से और लोगों को शामिल करता है—अन्य सभी लोगों और सभी चीज़ों को। मैंने आज तक किसी और ऐसे व्यक्ति को नहीं जाना है जिसकी अपनी ज़िन्दगी इतने ज्यादा लोगों के साथ जुड़ी हो।"

"तुम व्यक्ति की जिन्दगी से क्या अर्थ लेते हो ?" मैडम मरले ने पूछा, "अपना शरीर, अपनी चेष्टाएं अपने धन्धे, अपना समाज ?"

"मैं तुम्हारी ज़िन्दगी का अर्थ तुम्हारी महत्वाकांक्षाएं कहूंगा," ऑसमंड बोला।

मैडम मरले ने एक क्षण पैंज़ी की तरफ देखा, "मुझे आश्चर्य है कि यह इस बात को समझती तो नहीं," वह बुदबुदाई।

"यह हमारे साथ नहीं बैठ सकती।" और पैंज़ी का पिता नीरस भाव से मुस्कराया, "बेटे, बागीचे में जाओ और मैडम मरले के लिए एक-दो फूल तोड़ लाओ," उसने फ्रेंच में कहा।

"मैं बिलकुल यही करना चाहती थी," पैंज़ी ने सहसा निःशब्द उठकर जाते हुए कहा। उसका पिता उसके साथ खुले दरवाज़े तक गया, एक क्षण खड़ा उसे जाते देखता रहा, और फिर वापस आकर खड़ा रहा, बल्कि आगे-पीछे टहलने लगा, मानो वह अपने में एक आज़ादी का अनुभव कर रहा हो, जोकि दूसरी स्थिति में नहीं मिल सकती थी।

"मेरी महत्त्वाकांक्षाएं मुख्य रूप से तुम्हारे लिए हैं," मैडम मरले एक विशेष प्रकार के साहस के साथ उसकी तरफ देखती हुई बोली।

"बात वही है जो मैं कह रहा हूं। मैं तुम्हारी ज़िन्दगी का एक हिस्सा हूं—मैं और कई हज़ार लोग। तुम स्वार्थी नहीं हो—मैं यह मानता हूं। अगर तुम स्वार्थी हो, तो मैं क्या हूं ? मेरा बखान तब किस विशेषण से किया जाएगा ?"

"तुम आलसी हो। मेरे लिहाज़ से तुममें यही सबसे बड़ी खामी है।"

"मुझे डर है कि यही बात मुझमें सबसे अच्छी है।"

"तुम किसी चीज़ की परवाह नहीं करते," मैडम मरले ने गम्भीरता के साथ कहा।

"नहीं। मैं नहीं समझता कि मैं किसी चीज़ की जरा भी परवाह करता हूं। पर यह कैसा दोष हैं? मेरा आलस ही एक कारण था कि मैं रोम नहीं गया। लेकिन यह कई कारणों में से एक था।"

"यह कोई महत्त्व की बात नहीं है—कम से कम मेरे लिए—कि तुम नहीं गए; हालांकि मैं तुम्हें वहां देखकर खुश होती। मैं खुश हूं कि तुम इन दिनों रोम में नहीं हो—जोकि तुम सभम्वतः होते। इन दिनों मैं चाहती हूं कि तुम एक काम फ्लोरेन्स में करो।"

"कृपया मेरे आलसी होने की बात याद रखना," ऑसमंड बोला।

"मुझे बिलकुल याद है। लेकिन मैं तुमसे अनुरोध करती हूं कि तुम उसे भूल जाओ। उस तरह तुम्हें यह गुण और इसका पुरस्कार दोनों मिल जाएंगे। इसमें बहुत मेहनत की ज़रूरत नहीं है, लेकिन यह लाभकर सिद्ध हो सकता है। कितनी देर हुई जब से तुम्हारी कोई नई मित्रता नहीं हुई?"

"मैं नहीं समझता कि मैंने तुम्हारे बाद किसीको अपना मित्र बनाया है।"

"फिर तो ठीक समय है कि तुम किसी और से मित्रता करो। मेरी एक मित्र हैं कि जिसे मैं चाहती हूं कि तुम जानो।"

मिस्टर ऑसमंड टहलता हुआ फिर उस खुले दरवाज़े तक चला गया था, और अपनी बेटी को बाहर तेज धूप में घूमते देखने लगा था। "मुझे इससे क्या लाभ होगा?" उसने एक प्रकार की शिष्ट रुखाई के साथ पूछा।

मैडम मरले थोड़ा रुकीं। "इससे तुम्हें प्रसन्नता होगी।" इस बात में कोई रुखाई नहीं थी; यह अच्छी तरह सोचकर कही गई थी।

"तुम ऐसा कहती हो, तो जानती हो कि मैं इसे मान लूंगा।" ऑसमंड ने उसकी तरफ बढ़ते हुए कहा, "कुछ विषय ऐसे हैं जिन्हें लेकर मुझे तुम पर पूरा विश्वास है। उदाहरण के लिए मैं अच्छी तरह जानता हूं कि बुरे और अच्छे समाज का फर्क तुम्हें मालूम है।"

'समाज तो सारा बुरा है।"

"क्षमा करना, यह साधारण ढंग से प्राप्त होनेवाला ज्ञान नहीं है। यह तुम्हें अनुभव से प्राप्त हुआ है। तुमने ढेरों असम्भव लोगों की एक-दूसरे के साथ तुलना

करके देखा है।"

"तो मैं तुम्हें अपने ज्ञान से लाभ उठाने के लिए निमन्त्रित करती हूं।"

"लाभ उठाने के लिए ? क्या तुम्हें यकीन है कि मैं लाभ उठा सकूंगा ?"

"मैं तो यही आशा करती हूं। यह तुमपर भी निर्भर करेगा। केवल यदि मैं तुम्हें इस प्रयास में प्रोत्साहित कर सकूं !"

"हां, अब तुमने ठीक बात की है। मैं जानता था कि यह कुछ परिश्रम का काम है। दुनिया में कुछ भी, जो यहां हो सकता है, क्या प्रयास के लायक है ?"

मैडम मरले का चेहरा एकदम सुर्ख हो उठा, मानो उसे जान-बूझकर चोट पहुंचाई गई हो। "बेवकूफ मत बनो ऑसमंड। तुमसे बेहतर कोई नहीं जानता कि प्रयास करने के लिए कौन-सी चीज़ सही है। क्या मैंने तुम्हें पहले के दिनों में नहीं देखा ?"

"मैं कुछ चीज़ों के बारे में जानता हूं। लेकिन उनमें से कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो मेरी इस ज़िन्दगी में संभव हो सके।"

"यह प्रयास ही है, जो किसी चीज़ को सम्भव बनाता है," मैडम मरले बोलीं।

"इसमें कुछ तथ्य है। यह तुम्हारी मित्र कौन है ?"

"वही व्यक्ति जिससे मैं मिलने फ्लोरेन्स आई थी। वह मिसेज़ टाउशेट की भांजी है—मिसेज टाउशेट को तुम भूले नहीं होगे।"

"भांजी ? शब्द भांजी ही यौवन और मासूमियत को व्यक्त करता है। मैं समझ रहा हूं कि तुम क्या चाहती हो।"

"हां, वह युवा है—तेईस साल की। वह मेरी बहुत अच्छी मित्र है। मैं उससे पहली बार कई महीने पहले इंग्लैंड में मिली थी, और हममें प्रगाढ़ मित्रता हो गई थी। मैं उसे बहुत पसन्द करती हूं, और वह करती हूं जो मैं रोज़-रोज़ नहीं करती —मैं उसकी प्रशंसा करती हूं। तुम भी ऐसा ही करोगे।"

"लेकिन अगर मैं न कर सका, तो नहीं करूंगा।"

"ठीक। लेकिन तुम करने से बच नहीं सकोगे।"

"क्या वह सुन्दर, चतुर, अमीर आकर्षक, अतिशय बुद्धिमान और असाधारण रूप से गुणवान है ? केवल इन्हीं शर्तों पर मैं उससे परिचय कर सकता हूं। तुम जानती हो कुछ समय पहले मैंने तुमसे कहा था कि जो लड़की इस वर्णन से

मेल न खाती हो उसके बारे में मुझसे कभी बात मत करना। मैं बहुत-से भद्दे लोगों को जानता हूं, और अब वैसे और लोगों को नहीं जानना चाहता।"

"मिस आर्चर भद्दी नहीं है। वह सुबह की तरह उज्ज्वल है। वह तुम्हारे वर्णन से मेल खाती है; इसीलिए मैं चाहती हूं कि तुम उसे जानो। वह तुम्हारी सभी जरूरतों पर पूरी उतरती है।"

"हां, थोड़ी-बहुत जरूर उतर सकती है।"

"नहीं, पूरी तरह उतरती है। वह सुन्दर, गुणवान और उदार है—अमरीकन होने के लिहाज से कुलीन भी है। वह बहुत चतुर, और मिलनसार है, और उसके पास बहुत बड़ी पूंजी भी है।"

मिस्टर ऑसमंड खामोशी से सब कुछ इस तरह सुन रहा था, मानो वह सुनने के साथ-साथ अपने मन में इसपर सोच रहा हो। उसकी आंखें मैडम मरले के चेहरे पर टिकी थीं। "तुम उसे लेकर क्या करना चाहती हो ?" उसने अन्त में पूछा।

"तुम जो भी कर सको। तुम उसे अपने रास्ते पर ला सकते हो।"

"क्या वह इससे बेहतर किसी चीज के लायक नहीं है ?"

"मैं इस बात को जानने का बहाना नहीं करती कि लोग किस चीज के लायक हैं," मैडम मरले ने कहा, "मैं सिर्फ इतना जानती हूं कि मैं उनके लिए क्या कर सकती हूं।"

"मुझे मिस आर्चर के लिए अफसोस है," ऑसमंड बोला।

मैडम मरले खड़ी हो गई। "अगर तुम्हारी उसमें रुचि लेने का यही आरम्भ है, तो मैंने बात जान ली है।"

दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े रहे। मैडम मरले ने अपने वस्त्रों को ठीक किया, और उन्हें नीचे तक देखती रही। "तुम बहुत अच्छी लग रही हो," ऑसमंड ने एक बार और दोहराया। "तुम्हें कोई विचार सूझा है। तुम इतनी अच्छी कभी नहीं लगतीं जब तक तुम्हें कोई विचार नहीं सूझता। विचार हमेशा तुम्हें मुआफिक आते हैं।"

इन दोनों व्यक्तियों के व्यवहार और लहजे में, जब भी वे कभी किसी अवसर पर पहली बार मिलते—विशेषतया लोगों की उपस्थिति में—तो एक प्रकार का परोक्ष और चौकन्ना भाव होता, मानो वे एक-दूसरे से बस ऐसे ही मिले हों।

मैडम मरले अपने मित्र की अपेक्षा बेहतर ढंग से अपने पर से व्याकुलता को झाड़ देती थी, लेकिन वह भी इस अवसर पर अपने को उस फार्म में नहीं ला सकी जिसमें लाना चाहती थी—ताकि अपने मेज़बान पर अपने आत्म-नियन्त्रण का पूरा प्रभाव डाल सके। एक विशेष अवसर पर, जो भी वह हो, उनका मनस्तत्व उन्हें एक-दूसरे के इस तरह सामने ला देता जिस तरह किसी और के सामने कभी न होता। यही अब भी हुआ था। वे एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते हुए वहां खड़े रहे—एक-दूसरे के अपने बारे में जानने की असुविधा की पूर्ति अपनी जानकारी से करते हुए। "मैं बहुत चाहती हूं कि तुम इतने हृदयहीन न होते," मैडम मरले ने धीरे-से कहा, "यह बात हमेशा तुम्हारे विपरीत रही है, और इस समय भी तुम्हारे विपरीत पड़ेगी।"

"मैं उतना हृदयहीन नहीं हूं, जितना कि तुम समझती हो। पर कुछ बातें मुझे समय-समय पर छू जाती हैं—उदाहरण के लिए तुम्हारा अभी यह कहना कि तुम्हारी महत्त्वकांक्षाएं मेरे लिए हैं। मैं इसे नहीं समझ सकता। मैं नहीं समझ सकता कि कैसे और क्यों ऐसा हो। लेकिन साथ ही यह बात मुझे छू रही है।"

"जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, तुम सम्भवतः और भी कम समझोगे। कुछ बातें ऐसी हैं, जिन्हें तुम कभी नहीं समझोगे। इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है कि तुम समझो।"

"तुम आखिर स्त्रियों में सबसे प्रखर हो," ऑसमंड बोला, "तुममें अन्य स्त्रियों की अपेक्षा सब कुछ ज्यादा ही है। मैं नहीं समझता कि तुम क्यों सोचती हो कि मिसेज़ टाउशेट की भांजी का मेरे लिए महत्त्व होगा—जबकि—जबकि—" लेकिन वह एक क्षण के लिए रुक गया।

"जबकि मैं ही बहुत कम महत्त्व की सिद्ध हुई हूं ?"

"निश्चय ही मेरे कहने का मतलब यह नहीं है। मैंने तुम्हारे जैसी स्त्री को जाना और उसकी प्रशंसा की है।"

"इज़ाबेल आर्चर मुझसे बेहतर स्त्री है," मैडम मरले ने कहा।

उसका साथी हंस पड़ा। "उसके बारे में यह बात कहते हुए तुम उसके विषय में कितना बुरा सोचती होगी।"

"क्या तुम समझते हो कि मैं ईर्ष्यालु हूं ? कृपया मेरी इस बात का जवाब दो।"

"मेरे सम्बन्ध में ? नहीं, लेकिन सामान्य रूप से मैं नहीं कह सकता।"

"तो दो दिन बाद मुझसे मिलने आना। मैं प्लाज़ो क्रेसेंतीनी में मिसेज़ टाउशेट के पास ठहरी हूं। वह लड़की भी वहीं होगी।"

"लेकिन तुमने उस लड़की का ज़िक्र किए बिना ही ऐसा क्यों नहीं कहा ?" ऑसमंड बोला, "वह लड़की तो वहां हर हालत में होती ही।"

मैडम मरले ने उसकी तरफ एक ऐसी स्त्री की तरह देखा कि जिसके पास प्रत्येक प्रश्न का उत्तर रहता है। "तुम जानना चाहते हो क्यों ? क्योंकि मैंने तुम्हारे विषय में उससे बात की है।"

ऑसमंड ने एक दु:ख की उसांस भरी और दूसरी तरफ मुड़ गया। "बेहतर है कि मैं न जानूं।" फिर एक क्षण बाद उसने ईज़ल की तरफ इशारा किया जिस-पर वाटर कलर की तसवीर टंगी थी।

"क्या तुमने यह देखी है—मेरी नई तस्वीर ?"

मैडम मरले करीब आकर देखने लगी। "यह वेनीशियन एल्प्स तो नहीं—तुम्हारे पिछले वर्ष के खाकों में से एक ?"

"हां—लेकिन तुम कैसे चीज़ों की याद रखती हो !"

वह कुछ और देर देखती रही फिर मुड़ गई। "तुम जानते हो मुझे तुम्हारे चित्रों की ज़्यादा परवाह नहीं है।"

"मैं जानता हूं, लेकिन मुझे इस बात पर हमेशा आश्चर्य होता है। वे कभी-कभी अन्य लोगों के चित्रों से ज़्यादा अच्छे होते हैं।"

"ज़रूर होते होंगे। लेकिन चूंकि यही एक काम तुम करते हो—इसलिए यह बहुत कम है। मैं तुम्हें और भी बहुत-सी चीज़ें करते देखना चाहती थी; वही मेरी महत्त्वाकांक्षाएं थीं।"

"हां, तुमने कई बार यह बात मुझसे कही है।"

मैडम मरले ने कमरे में चारों ओर देखा—उन पुरानी अलमारियों, पर्दों, तसवीरों और घिसे रेशम की सलवटों को।" कम से कम तुम्हारे कमरे तो ठीक से सजे हैं। मैं जब भी आती हूं हमेशा इससे प्रभावित होती हूं, मैंने इससे अच्छा घर और कहीं नहीं देखा। तुम इस चीज़ को इतनी अच्छी तरह जानते हो कि और कहीं के भी लोग नहीं जानते।"

"मैं अपनी इस प्रशंसनीय सुरुचि से बहुत तंग आ गया हूं," गिलबर्ट ऑसमंड

ने कहा।

"तुम्हें हर हालत में मिस आर्चर को यहां लाकर यह सब दिखाना चाहिए। मैंने उसे इस सबके बारे में बता रखा है।"

"मुझे अपनी चीजें दिखाने में कोई एतराज नहीं है—अगर देखनेवाले बेवकूफ न हों तो।"

"तुम यह सजावट बहुत अच्छी करते हो। अपने अजायबघर का प्रदर्शन करने में तुम्हें एक विशेष प्रकार का लाभ है।"

मिस्टर ऑसमंड ने इस प्रशंसा के उत्तर में कुछ और भी नीरस पर उन्मुख-भाव से कहा, "तुमने कहा है कि वह काफी धनी है ?"

"उसके पास सत्तर हज़ार पौंड हैं।"

"वह उसकी अपनी पूंजी है ?"

"उसकी पूंजी के बारे में मुझे ज़रा भी सन्देह नहीं है। मेरा यह कहना उतना ही सच है, जैसे कि मैंने यह अपनी आंखों से देखा हो।"

"सन्तोषप्रद स्त्री !—मेरा मतलब तुमसे है। और अगर मैं उससे मिलने जाऊं, तो क्या मुझे उसकी मां से भी मिलना होगा ?"

"मां ? उसकी मां नहीं है—न ही पिता है।"

"तो फिर उसकी आंटी से—क्या कहा था तुमने—मिसेज़ टाउशेट से ?"

"उसे मैं आसानी से रास्ते से अलग रख सकती हूं।"

"मुझे उसपर कोई एतराज़ नहीं है," ऑसमंड बोला, "मुझे बल्कि मिसेज़ टाउशेट पसन्द हैं। उनका पुराना तौर-तरीका है जो अब समाप्त होता जा रहा है—वह एक स्पष्ट पहचान है। लेकिन वह उसका लड़का—क्या वह भी वहीं है ?"

"वह वहीं है, लेकिन वह तुम्हें तंग नहीं करेगा।"

"वह पूरा गधा है।"

"मेरे ख्याल में तुम्हें गलती लगी है। वह बहुत समझदार आदमी है। लेकिन उसे मेरी मौजूदगी में वहां रहना अच्छा नहीं लगता, क्योंकि वह मुझे पसन्द नहीं करता।"

"इससे ज्यादा मूर्खता और क्या हो सकती है ? क्या तुमने कहा है कि वह सुन्दर है ?" ऑसमंड कहता गया।

"हां, लेकिन मैं यह बात फिर से नहीं दोहराऊंगी। इसलिए कि कहीं तुम उससे निराश ही न हो जाओ। तुम आकर शुरूआत करो; मैं तुमसे सिर्फ यही चाहती हूं।"

"किस चीज़ की शुरुआत?"

मैडम मरले कुछ देर खामोश रही। "मैं चाहती हूं कि तुम उससे विवाह कर लो।"

"अन्त की शुरुआत? बहरहाल मैं स्वयं ही देख लूंगा। क्या तुमने यह बात उससे की है?"

"तुम मुझे क्या समझते हो? वह इतनी भोंडी मशीनरी की नहीं है—और न ही मैं हूं।"

"सच," ऑसमंड ने थोड़ा सोचकर कहा, "मैं तुम्हारी महत्त्वाकांक्षाओं को नहीं समझ पा रहा।"

"मेरा ख्याल है मिस आर्चर से मिल लेने के बाद तुम मेरी इस महत्त्वाकांक्षा को समझ जाओगे। अपने निर्णय को तब तक टाले रहो।" मैडम मरले यह कहती हुई बागीचे के दरवाजे तक आ गई, जहां खड़ी होकर वह बाहर देखने लगी। "पैंज़ी सच ही बहुत सुन्दर निकल रही है," अब उसने जोड़ा।

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

"लेकिन उसने कॉन्वेंट में बहुत रह लिया है।"

"मैं नहीं जानता," ऑसमंड बोला, "लेकिन जैसी भी उन्होंने इसे बनाया है मुझे बहुत पसन्द है। वह बहुत ही आकर्षक है।"

"यह कॉन्वेंट की वजह से नहीं है। यह तो बच्ची का स्वभाव ही है।"

"मेरे ख्याल में यह दोनों का सम्मिश्रण है। वह एक मोती की तरह निर्मल है।"

"वह फूल लेकर वापस क्यों नहीं आई?" मैडम मरले ने पूछा, "वह जल्दी में नहीं है।"

"हम जाकर ले आते हैं।"

"वह मुझे पसन्द नहीं करती," वह महिला बुदबुदाई और उसने अपना छाता ऊंचा कर लिया। वे दोनों निकलकर बाग में चले गए।

२३

मैडम मरले मिसेज़ टाउशेट के फ्लोरेन्स पहुंचने पर उनका निमन्त्रण पाकर वहां आ गई—मिसेज टाउशेट ने उसे पालाज़ो क्रेसेंतीनी में महीना-भर मेहमान बन-कर रहने के लिए बुलाया था। अब मैडम मरले ने फिर से इज़ावेल से गिलबर्ट ऑसमंड के विषय में बात की, और यह आशा प्रकट की कि उसका उस आदमी से परिचय हो जाएगा। पर ऑसमंड से इज़ावेल के विषय में बात उसने जिस बिन्दु से उठाई थी, उसका संकेत इज़ावेल से की गई बात में नहीं था। इसका कारण शायद यह था कि इज़ावेल ने मैडम मरले के प्रस्ताव का ज़रा भी विरोध नहीं किया। इंग्लैंड की तरह इटली में भी इस महिला के असंख्य मित्र थे, देश-वासियों में भी, और बाहर से आए विभिन्न लोगों में भी। उसने इज़ाबेल से बहुत से लोगों का ज़िक्र किया था जिनसे वह "मिलना" चाहेगी—कहा था कि इज़ावेल दुनिया में जिससे चाहे, उससे परिचय कर सकती है—और अपनी सूची के लग-भग शिखर पर उसने गिलबर्ट ऑसमंड का नाम रखा था। गिलबर्ट उसका पुराना मित्र था—उसे वह कोई बारह साल से जानती थी। वह सबसे चतुर और खुश-मिज़ाज व्यक्तियों में से था—खास तौर से यूरोप के। वह सम्भ्रान्त वर्ग के और लोगों से कहीं ऊपर था, बिलकुल अलग तरह का था। दूसरों को लुभाना उसका पेशा नहीं था—वह किसी पर क्या प्रभाव डालता है, यह बहुत कुछ उसकी मन:स्थिति पर निर्भर करता था। जब वह अच्छे मूड में न होता, तो हद दरजे तक नीचे उतर सकता था—बचाव यही कि ऐसे समय वह एक निर्वासित और अव्यवस्थित शाह-ज़ादे की तरह नज़र आता था। पर अगर उसका ध्यान खींचा जा सके या उसमें दिलचस्पी पैदा की जा सके, या उसे ठीक से चुनौती दी जा सके—और यह चुनौती मात्रा से अधिक नहीं होनी चाहिए—तो उसकी चतुराई और विशेषता का अनु-भव किया जा सकता था। बहुत-से दूसरे लोगों की तरह उसके ये गुण अपने को गुमसुम रखने पर निर्भर नहीं करते थे। उसमें अपने दोष थे—जोकि इज़ाबेल को हर जानने लायक आदमी में मिलेंगे—और वह हरएक के सामने अपनी पूरी रोशनी में नहीं चमक पाता था। पर मैडम मरले इज़ावेल को इस बात का विश्वास दिला सकती थी कि उसके सामने ऑसमंड की पूरी प्रतिभा खुल सकेगी। यूं वह बहुत जल्दी ऊब जाता था, और जड़ व्यक्ति उसे अव्यवस्थित कर देते थे, पर

इज़ाबेल जैसी कुशाग्र और सुसंस्कृत लड़की उसके जीवन में वह प्रेरणा ला सकती थी जिसका कि उसमें अभाव था। बहरहाल उससे मिलना तो चाहिए ही था—इटली में रहकर आदमी गिलबर्ट ऑसमंड से न मिले, यह ठीक नहीं था क्योंकि दो-एक जर्मन प्रोफेसरों को छोड़कर कोई भी इस देश को गिलबर्ट से ज्यादा नहीं जानता था। वे लोग इससे कुछ ज्यादा जानते थे, तो इसके पास उनसे कहीं अधिक सुरुचि और ग्रहणशीलता थी, क्योंकि इसका व्यक्तित्व, सिर से पैर तक कलात्मक था। इज़ाबेल को याद था कि गार्डनकोर्ट के सहवास में घनिष्ठ बातचीत के दौरान मैडम मरले ने इस आदमी का ज़िक्र किया था। उसे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि वह कौन-सा सूत्र है जो इन दो महान् आत्माओं को आपस में बांधे है। इज़ाबेल की धारणा थी कि मैडम मरले के हर सूत्र का कुछ इतिहास है—इस असाधारण स्त्री का कुछ ऐसा ही प्रभाव उसके मन पर था। पर मैडम मरले ने ऑसमंड के और अपने सम्बन्ध के बारे में इतना ही कहा कि उन दोनों की बहुत पुरानी सहज मित्रता है। इज़ाबेल ने इसपर कहा कि उसे उस आदमी से मिलकर खुशी होगी जो इतने साल मैडम मरले का विश्वास-भाजन रहा है। "तुम्हें ज्यादा से ज्यादा पुरुषों से मिलना चाहिए," मैडम मरले बोली, "ज्यादा पुरुषों से मिलकर ही तुम्हें उनकी आदत पड़ेगी।"

"आदत ?" इज़ाबेल ने उस गम्भीर भाव से आंखें स्थिर करके कहा जिससे कभी-कभी उसकी विनोद-शक्ति की न्यूनता का आभास मिलता था। "मुझे उनसे डर नहीं लगता। मुझे उनकी उतनी ही आदत है जितनी एक बावर्ची को कसाइयों की होती है।"

"आदत से मेरा मतलब उनसे घृणा करने से है। ज्यादातर आदमियों को लेकर यही भाव मन में पैदा होता है। अपने साथ के लिए तुम कुछ थोड़े-से लोग चुन लोगी जिनसे तुम्हें घृणा नहीं होगी।"

ऐसा अविश्वास भाव प्रायः मिसेज़ मरले की बातों में नहीं रहता था। पर इज़ाबेल इससे आतंकित नहीं हुई। वह जानती थी कि अधिक दिन जीकर व्यक्तियों के प्रति आदर-भाव किसीके मन में बढ़ता नहीं है। हां यह भाव सुन्दर फ्लोरेंस शहर ने उसके मन में ज़रूर जगा दिया था—वह उतना ही सुन्दर था जितना मैडम मरले ने बताया था। अकेली वह वहां के सब आकर्षणों का अनुमान नहीं लगा पाती थी, तो उसके कई चतुर साथी थे जो उस रहस्य के पादरियों की

तरह थे। उनके सौन्दर्य-बोध को जगानेवालों की कमी नहीं थी। रैल्फ के मन में उसका पथ-प्रदर्शक बनने की अपनी पुरानी इच्छा फिर जाग आई थी। मैडम मरले घर पर रहती थी। वह फ्लोरेंस के आकर्षणों को बार-बार देख चुकी थी, और दूसरे कामों में व्यस्त रहती थी। पर हर चीज़ के बारे में उसकी स्मृति बहुत स्पष्ट थी। उसे बड़े पेरुजिनों के दायें कोने की याद थी, और उसके साथ की तसवीर में सेंट एलिजाबेथ के हाथों की स्थिति की भी। अलग-अलग कलाकृतियों के बारे में उसकी रैल्फ से भिन्न अपनी धारणा थी जिसकी वकालत वह चतुराई और विनोद-भाव से करती थी। इज़ाबेल उन दोनों की बात इस तरह सुनती जैसे उससे वह काफी लाभ उठा सकती हो और उसे लगता कि यह चीज़ उसे एल्बेनी में रहकर नहीं मिल सकती थी। मई की चमकती सुबह के वक्त, नाश्ते से पहले—नाश्ता मिसेज़ टाउशेट के यहां बारह बजे लगाया जाता था—वह अपने कज़िन के साथ फ्लोरेंस की तंग गलियों में घूमने निकल जाती। कभी वे लोग किसी ऐतिहासिक गिरजाघर घर की गहरी छाया में या किसी सुनसान कॉन्वेंट के महराबदार कमरों में विश्राम कर लेते। वह महलों और गैलरियों में जाती—उन तसवीरों और मूर्तियों को देखती जिनकी उसने बहुत ख्याति सुन रखी थी। उनके सम्बन्ध में उसकी पूर्व-धारणा प्रायः निर्मूल सिद्ध होती और उसका स्थान वास्तविकता का ज्ञान ले लेता जिसकी अपनी सीमाएं होतीं। इटली में आनेवाले हर व्यक्ति की तरह वह अपने यौवन और उत्साह में उन आकृतियों के सामने मानसिक रूप में साष्टांग प्रणाम करती। अपने को अमर प्रतिभा के सामने पाकर उसका दिल धड़कने लगता और उस मधुर आभास से उसकी आंखों में आंसू भर आते जिससे दीवारों के फीके चित्र और स्याह हुए संगमरमर धुंधले पड़ जाते। पर हर रोज़ घर से जाने से घर लौटकर आना अधिक सुखकर होता—उस बड़े से घर के खुले ऊंचे अहाते में लौटकर आना जिसे कई साल पहले से मिसेज़ टाउशेट ने अपना आवास बना रखा था और जहां के ठण्डे कमरों के सजावटी शहतीर और दीवारों पर बने सोलहवीं शताब्दी के बड़े-बड़े चित्र नीचे विज्ञापन युग के परिचित साज-सामान को ताका करते थे। मिसेज़ टाउशेट एक तंग-सी गलीमें बने एक ऐतिहासिक भवन में रहती थीं जिसका नाम ही मध्यकालीन द्वन्द्वों की याद दिला देता था। वहां के अग्रभाग के अंधेरे की क्षतिपूर्ति किराया कम होने से हो जाती थी—और उस उजले बाग से जहां पर प्रकृति उतनी ही प्राचीन और रूखी नज़र आती थी जितना कि उस घर का

निर्माण था। बाग की खुशबू इस्तेमाल के सब कमरों में भरी रहती थी। ऐसे एक कमरे में रहना इज़ाबेल के लिए अतीत के सागर की एक सीपी को हर समय कान से लगाए रखने की तरह था। यह अस्पष्ट शाश्वत सरसराहट उसकी कल्पना को जाग्रत रखती थी।

गिलबर्ट आसमंड मैडम मरले से मिलने आया, तो उन्होंने इज़ाबेल से, जो उस समय कमरे के दूसरे सिरे पर टहल रही थी, उसका परिचय कराया। इस अवसर पर इज़ाबेल ने बातचीत में बहुत कम भाग लिया—दूसरों के अपनी तरफ देखने पर वह मुसकराई भी नहीं। वह ऐसे बैठी रही जैसे बड़ी रकम देकर एक नाटक देखने आई हो। मिसेज टाउशेट वहां उपस्थित नहीं थीं, और वे दोनों अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखाने के लिए, अपने ढंग से बात करते रहे। वे फ्लोरेंस की, रोम की और सार्वभौम दुनियां की बातें करते रहे—जैसे दो अच्छे अभिनेता एक धर्मार्थ शो में भाग ले रहे हों। उस बातचीत में ऐसी समृद्धि और तत्परता थी जैसी रिहर्सल से ही आ सकती थी। मैडम मरले उससे भी ऐसे बात कर रही थी जैसे वह भी स्टेज पर हो—पर दृश्य को बिगाड़े बिना वह क्यू से हटकर चल रही थी। इससे वह मैडम मरले को बहुत गलत स्थिति में डाल रही थी क्योंकि मैडम मरले ऑसमंड से कह चुकी थी कि इज़ाबेल पर निर्भर किया जा सकता है। यह इस समय की ही बात नहीं थी। अगर इससे कहीं बड़ी चीज़ की बाज़ी होती, तो भी वह प्रभाव डालने की कोशिश न करती। आगन्तुक में कुछ ऐसा था जिसने उसे रोककर संशय में डाल दिया था—वह उस समय प्रभाव डालने की अपेक्षा प्रभाव ग्रहण करना चाह रही थी। फिर प्रत्याशित प्रभाव पैदा करने की सामर्थ्य ही उसमें नहीं थी। दूसरे को चुंधिया देना बहुत सुखकर था, पर पहले से तय करके ऐसा करने की उसमें जरा इच्छा नहीं थी। मिस्टर ऑसमंड के साथ न्याय किया जाय, तो कहना होगा कि उसके चेहरे पर कुछ भी आशा न करने का अभिजात भाव था—एक ऐसी सहजता जो हर चीज को ढक सकती थी—अपनी प्रतिभा के प्रथम-प्रदर्शन को भी। यह श्लाघ्य था क्योंकि उसका सिर और चेहरा भावपूर्ण था। वह सुन्दर नहीं था, पर उफिज़ी-पुल के ऊपर की गैलरी के रेखाचित्रों की तरह आकर्षक लगता था। उसकी आवाज़ भी अच्छी थी, हलांकि साफ होते हुए भी मीठी नहीं थी। इज़ाबेल के बातचीत में दखल न देने में उसका भी कुछ योग था। ऑसमंड की आवाज़

कांच के कांपने जैसी थी—उसपर उंगली रखकर वह उसके पिच को बदलना या संगीत को समाप्त करना नहीं चाहती थी। फिर भी ऑसमंड के जाने से पहले उसे बात करनी पड़ी।

"मैडम मरले पहाड़ी की चोटी पर बने मेरे मकान पर अगले सप्ताह किसी दिन चाय पीने आने के लिए राज़ी हो गई है," उसने कहा, "तुम साथ आ सको, तो मुझे बहुत खुशी होगी। जगह सुन्दर समझी जाती है—वहां से नज़ारा बहुत अच्छा है। मेरी लड़की को बहुत खुशी होगी—पर वह भावनाओं की दृष्टि से अभी बहुत छोटी है, इसलिए कहूंगा कि मुझे बहुत, बहुत खुशी होगी।" और बात बीच में ही छोड़कर ऑसमंड थोड़ा अव्यवस्थित-सा हो रहा। "मुझे बहुत खुशी होगी अगर तुम मेरी लड़की से मिल लो," उसने पल भर बाद कहा।

इज़ाबेल ने कहा कि उसे मिस ऑसमंड से मिलकर बहुत खुशी होगी, और मैडम मरले उसे पहाड़ी की चोटी तक ले चले, तो वह आभार मानेगी। ऑसमंड यह आश्वासन पाकर चला गया। इज़ाबेल को पूरी आशा थी कि अब उसकी मित्र उसे डांटेगी कि वह ऐसे मूर्ख बनकर क्यों बैठी रही। पर उसे आश्चर्य हुआ जब मैडम मरले ने, जो कभी लोकाचार की बात नहीं करती थी, कुछ क्षण बाद कहा, "तुम बहुत आकर्षक व्यवहार कर रही थीं, माई डियर। बिलकुल वैसा जैसा मैंने कहा था। तुम कभी मुझे निराश नहीं करतीं।"

डाटें खाकर इज़ाबेल को झुंझलाहट होती, हालांकि अधिक सम्भव यही था कि वह उसे अच्छे भाव से लेती। पर जो शब्द मैडम मरले ने इस्तेमाल किए, उनसे पहली बार अपनी इस मित्र की किसी बात से क्षोभ हुआ। "मेरा इरादा ऐसा बिलकुल नहीं था," उसने ठण्डे लहजे में जवाब दिया। "अपने जाने मुझपर कोई ऐसी बाध्यता नहीं है कि मैं मिस्टर ऑसमंड को आकर्षित करूं।"

मैडम मरले प्रकटतः सुर्ख हो उठी, पर हम जानते हैं कि बात वापस लेने की उसे आदत नहीं थी।" माई डियर, मैं उस आदमी की नज़र से बात नहीं कर रही थी, तुम्हारी नज़र से कर रही थी। सवाल उसके तुम्हें पसन्द करने का नहीं है। उसने तुम्हें पसन्द किया या नहीं, इसे मैं महत्त्व नहीं देती। पर मेरा खयाल है तुम्हें वह ज़रूर पसन्द आया है।"

"हां," इज़ाबेल ने ईमानदारी से कहा, "पर मेरी समझ में नहीं आया कि इसका भी क्या महत्त्व है।"

"तुमसे सम्बन्धित हर चीज़ मेरे लिए महत्त्वपूर्ण है," मिसेज़ मरले अपनी उदात्तता के साथ बोली," "खास तौर से जब एक और पुराना मित्र भी उसमें आता हो।"

ऑसमंड को लेकर इज़ाबेल की जो भी बाध्यता रही हो, उससे उसने रैल्फ से ऑसमंड के बारे में दो-एक सवाल ज़रूर पूछ लिए। उसे रैल्फ के निर्णय कुछ विकृत लगे, पर उसने अपने से कहा कि इतनी आज़ादी उसे रैल्फ को देनी ही चाहिए।

"मैं उसे जानता हूं ?" रैल्फ बोला "हां मैं 'जानता' हूं उसे। बहुत ज्यादा तो नहीं, फिर भी काफी जानता हूं। मैंने कभी उससे मित्रता बढ़ाने की कोशिश नहीं की, और न ही उसे मेरी मित्रता अपने सुख के लिए अनिवार्य जान पड़ी है। वह कौन है, क्या है ? वह बिना किसी अते-पते का एक अनजाना अमरीकन है जो लगभग तीस साल से इटली में रहता है। मैं उसे अनजाना क्यों कहता हूं ? अपने अज्ञान को ढांपने के लिए। मुझे उसके परिवार का, या आगे-पीछे का कुछ पता नहीं। क्या पता वह कोई छद्म राजकुमार ही हो। लगता वह ऐसे ही है जैसे एक राजकुमार नाक चढ़ाकर गद्दी छोड़ आया हो, और तबसे हताश घूम रहा हो। पहले वह रोम में रहता था, पर अब उसने यहां मकान ले लिया है। मैंने उसे कहते सुना है कि रोम अब सुसंस्कृत नहीं रहा। उसे सुसंस्कृत न होने से चिढ़ है। यही उसकी विशेषता है—इसके अलावा उसकी और कोई विशेषता मैं नहीं जानता। वह अपनी आमदनी पर गुज़ारा करता है जो बेहूदा रूप से ज्यादा नहीं है। वह एक गरीब और ईमानदार भला आदमी है—अपने को वह यही कहता है। उसने काफी पहले शादी की थी। बीवी गुज़र गई है, और शायद उससे एक लड़की है। उसकी एक बहन भी है जिसकी यहां के किसी काउंट-आउंट से शादी हुई है। पहले कभी मैं उससे मिला भी हूं। वह इससे अच्छी है, पर उसके साथ चल सकना असम्भव है। उसकी कई कहानियां प्रचलित रही हैं, और मैं तुम्हें उससे परिचय करने का सुझाव नहीं दे सकता। पर तुम इन लोगों के बारे में मैडम मरले से क्यों नहीं पूछतीं ? वह इन्हें मुझसे कहीं ज्यादा जानती है।"

मैं तुमसे इसलिए पूछ रही हूं कि मैं उसके अलावा तुम्हारी भी राय जानना चाहती हूं" इज़ाबेल बोली।

"मेरी राय को मारो काठ। तुम ऑसमंड से प्रेम करने लगी, तो तुम्हारे लिए

मेरी राय की क्या कीमत रह जाएगी ?"

"शायद ज़्यादा नहीं। पर तब तक इसकी अपनी कीमत है। अपने खतरे के बारे में आदमी को जितनी जानकारी रहे, उतना ही अच्छा है।"

"मैं इससे सहमत नहीं हूं—इससे बल्कि खतरे पैदा हो सकते हैं। आजकल हम लोगों के बारे में बहुत ज्यादा जानते हैं, बहुत ज़्यादा सुनते हैं। हमारे कान, मन, मुंह, सब लोगों की चर्चा से भरे रहते हैं। तुम्हें कौन किसके बारे में क्या बताता है, इसकी कभी परवाह मत करो। हर चीज़ और हर आदमी के बारे में अपनी निजी राय बनाओ।"

"उसी की मैं कोशिश करती हूं," इज़ाबेल बोली। पर ऐसा करने पर लोग आदमी को घमण्डी समझने लगते हैं।

"तुम्हें उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए—मेरा यही तो कहना है। न इसकी परवाह करो कि लोग तुम्हारे बारे में क्या कहते हैं, और न ही इसकी कि वे तुम्हारे किसी दोस्त या दुश्मन के बारे में क्या कहते हैं।"

इज़ाबेल सोचती रही। "तुम ठीक कहते हो। पर कुछ चीज़ें हैं जिन्हें मैं महत्त्व देती हूं—अपने मित्र पर आक्षेप को, और अपनी प्रशंसा को।"

"हर आलोचक के सम्बन्ध में राय बनाने का तुम्हें अधिकार है," रैल्फ ने जोड़ा, "तुम लोगों को आलोचकों के रूप में देखो, तो वे सब तुम्हें घटिया लगेंगे ?"

"मैं मिस्टर ऑसमंड को स्वयं परखूंगी," इज़ाबेल बोली, "मैंने उसे उसके यहां जाने का वचन दिया है।"

"उसके यहां जाने का ?"

"उसके घर, उसकी तसवीरों और उसकी लड़की को देखने के लिए—या जाने और क्या। मैडम मरले मुझे वहां ले जाएगी। वह कहती है कि बहुत-सी महिलाएं उससे मिलने वहां जाती हैं।"

"ओह, मैडम मरले के साथ तुम कहीं भी जा सकती हो। सब अच्छे-से-अच्छे लोगों से उसका परिचय है।"

इज़ाबेल ने ऑसमंड की और बात नहीं की। पर उसने अपने कज़िन से कहा कि मैडम मरले के बारे में उसकी बात का स्वर उसे पसन्द नहीं आया। "लगता है तुम किसी खास मतलब से उसके बारे में बात करते हो। तुम्हारा मतलब मेरी समझ में नहीं आया, पर या तो तुम उसके बारे में मुझसे खुलकर

बात करो, या फिर बिलकुल कुछ मत कहो।"

रैल्फ ने अपने स्वभाव से अधिक तत्परता के साथ अपने आक्षेप के लिए खेद प्रकट किया। "मैं मैडम मरले के बारे में वैसे ही बात करता हूं जैसे स्वयं उससे करता हूं—ज़रा अतिरंजित आदर के साथ।"

"मुझे इसी की तो शिकायत है।"

"यह मैं इसलिए करता हूं क्योंकि मैडम मरले के गुण काफी अतिरंजित रूप में पेश किए जाते हैं।"

"कौन करता है ? मैं ? अगर ऐसा है, तब तो मैं उसके साथ भला नहीं करती।"

"वह स्वयं करती है।"

"मुझे इसपर एतराज़ है," इज़ाबेल गम्भीर स्वर में बोली, "अपनी विशेषताओं के बारे में कम से कम बात करनेवाली कोई स्त्री यदि है तो···!"

"तुम बात पर आ पहुंची हो" रैल्फ ने उसे टोका, "उसकी विनम्रता भी अतिरंजित है। उसे कम बात करने का कोई हक नहीं—उसे ज्यादा बात करनी चाहिए।"

"इसका मतलब है उसके गुण बड़े हैं। तुम स्वयं अपना विरोध कर रहे हो।"

"उसके गुण बहुत बड़े हैं," रैल्फ बोला, "वह अवर्णनीय रूप से निर्दोष है—गुणों का एक मार्गहीन मरुस्थल। वह अकेली स्त्री है जो कभी किसीको मौका नहीं देती।"

"मौका किस चीज़ का ?"

"इसका कि कोई उसे मूर्ख कह सके !" मेरी जानकारी में वह अकेली स्त्री है जिसमें बस इतना-सा ही दोष है।"

इज़ाबेल ने बेसब्री से मुंह मोड़ लिया। "मैं तुम्हें नहीं समझ पा रही। तुम्हारे ये विरोधाभास मेरे सादा दिमाग में नहीं जा रहे।"

"मुझे व्याख्या करने दो। उसके अतिरंजना करने से मेरा मतलब किसी तरह की डींग, शेखी या बनकर दिखाने की कोशिश से नहीं है। मेरा केवल मतलब इतना ही है कि वह अपनी पूर्णता की खोज को बहुत दूर तक ले जाती है—कि उसके गुण कुछ ज़्यादा ही प्रयत्न से लाए गए लगते हैं। वह जरूरत से ज़्यादा नम्र, चतुर, शिक्षित और सुसंस्कृत है—सब कुछ जरूरत से ज़्यादा है। एक शब्द

में वह ज़रूरत से ज़्यादा पूर्ण है। सच कहता हूं उसे देखकर मेरी नसें झनझना उठती हैं, और मुझे कुछ वैसा ही लगता है जैसा एरिस्टाइड्स दि जस्ट को देखकर एथीनियन को लगता होगा।"

इज़ाबेल ने गौर से अपने कज़िन को देखा; पर उसके शब्दों में यदि मज़ाक की छाया थी भी, तो इस अवसर पर उसके चेहरे से वैसा कोई आभास नहीं मिल रहा था। "तुम चाहते हो मैडम मरले को देश-निकाला दे दिया जाए ?"

"हरगिज़ नहीं। साथ के लिए वह बहुत अच्छी है। मुझे उससे मिलकर खुशी होती है !" रैल्फ टाउशेट ने सादगी के साथ कहा।

"तुम बहुत बुरे हो !" इज़ाबेल चिल्लाई। फिर उसने पूछा कि क्या रैल्फ मैडम मरले के बारे में कोई असम्मानजनक बात जानता है।

"बिलकुल नहीं। पर यही तो मैं कह रहा हूं। और हरेक के चरित्र में तुम्हें कहीं एक स्याह धब्बा मिल सकता है। मैं किसी दिन आधा घण्टा लगाऊं, तो तुम्हारे चरित्र में भी ढूंढ़ सकता हूं। जहां तक मेरा सवाल है, मैं तो चीते की तरह चितकबरा हूं। पर मैडम मरले पर एक भी, एक भी, एक भी दाग नहीं है।"

"मेरा भी यही ख्याल है !" इज़ाबेल सिर हिलाकर बोली, "इसीलिए मैं उसे इतना पसन्द करती हूं।"

"तुम्हारे लिहाज़ से वह सचमुच बहुत अच्छी है। तुम दुनिया देखना चाहती हो, तो उसके लिए तुम्हें इससे बेहतर गाइड नहीं मिल सकता।"

इनसे तुम्हारा मतलब है कि वह दुनियादार है ?"

"दुनियादार ? नहीं," रैल्फ बोला, "वह अपने में पूरी गोल दुनिया है।"

उसके यह कहने पर कि उसे मैडम मरले से मिलकर खुशी होती है, इज़ाबेल ने सोचा था कि यह बात उसके द्वेष का ही परिष्कृत रूप है। पर ऐसा नहीं था। रैल्फ अपने लिए जहां कहीं से भी ताज़गी ढूंढ़ लेना चाहता था, और वह अपने को कभी क्षमा न करता अगर सामाजिक कला की इस आचार्य से वह बिलकुल बचा रह जाता। कुछ सहानुभूतियां और वितृष्णाएं बहुत गहरी होती हैं—और यह संभव है कि मौखिक रूप से उसके साथ न्याय करने पर भी, अपनी मां के घर से उस महिला की अनुपस्थिति उसके लिए ज़िन्दगी को रूखी न बना देती। पर रैल्फ ने बिना नुक्ताचीनी के चीज़ों पर ध्यान देना सीख लिया था और ध्यान देने के लिए मिसेज़ मरले के अभिनय से अधिक अविरत उसे और कोई चीज़ नहीं मिल

सकती थी। वह हल्के घूंटों में उसका ज़ायका लेता था—वह एक ऐसे व्यवस्थित ढंग से उसे अपने सामने रखता था कि स्वयं मैडम मरले उस व्यवस्था से आगे नहीं बढ़ सकती थी। कई ऐसे भी क्षण आते थे जब उसे मैडम मरले के लिए अफसोस होता था, पर विचित्र बात थी कि ऐसे क्षणों में वह उसके प्रति सब से कम दया दिखा पाता था। उसे विश्वास था कि मैडम मरले में उत्कट महत्त्वाकांक्षा रही है, और कि अपनी उपलब्धियां उस स्त्री की दृष्टि में अपने आन्तरिक मान से बहुत कम रही हैं। उसने अपने को पूरी ट्रेनिंग दी थी, फिर भी उसे इसका कोई पुरस्कार नहीं मिला था। वह केवल मैडम मरले ही रही थी—एक स्विस की विधवा जिसकी आमदनी कम और परिचय बहुत अधिक था, जो बहुत ज़्यादा लोगों के यहां रहती थी और जिसे अच्छे ट्रैश की एक नई जिल्द की तरह सब लोग 'पसन्द' करते थे। इस स्थिति और उन आधी दर्जन स्थितियों के अन्तर में, जिनमें रैल्फ का ख्याल था कि उस स्त्री ने अपने को देखने की आशा की होगी, कहीं एक दुःख-दायी-सा स्पर्श था। मिसेज़ टाउशेट का ख्याल था कि रैल्फ की मैडम मरले से अच्छी पटती होगी। उनके अनुसार दो ऐसे व्यक्तियो में, जिनके मानव-व्यवहार के सम्बन्ध में अपने-अपने कौशलपूर्ण सिद्धान्त हों, काफी समानता होनी चाहिए थी। रैल्फ ने मैडम मरले के साथ इज़ाबेल की घनिष्ठता के बारे में बहुत सोचा था और काफी पहले यह निश्चय कर लिया था कि बिना विरोध किए वह अपनी कज़िन को केवल अपने तक सीमित नहीं रख सकता था। अपने स्वभाव के अनुसार वह हर बुरी स्थिति की तरह इसे स्वीकार करके चलना चाहता था। उसका ख्याल था कि यह स्थिति हमेशा नहीं चलेगी, अपने आप ठीक हो जाएगी। ये दोनों उदात्त महिलाएं एक-दूसरी को उतना नहीं जानती थीं जितना कि वे समझती थीं। इसलिए एक-दूसरी के बारे में एकाध महत्त्वपूर्ण बात का पता चलते ही दोनों में दरार चाहे न पड़े, पर सहजता आ जाने की संभावना ज़रूर थी। इस बीच वह इतना स्वीकार करता था कि युवा लड़की के लिए प्रौढ़ स्त्री की बातचीत काफी लाभप्रद हो सकती है क्योंकि उस लड़की को अभी बहुत कुछ सीखना था। यह सब वह युवा लोगों के अन्य शिक्षकों की अपेक्षा मैडम मरले से बेहतर सीख सकती थी। इज़ाबेल को चोट पहुंचे, इसकी संभावना नहीं थी।

२४

सचमुच यह सोच पाना मुश्किल था कि पहाड़ी की चोटी पर मिस्टर ऑसमंड के यहां जाने में उसे क्या चोट पहुंच सकती है। यह अपने में एक बहुत आकर्षक अवसर था—भरपूर टस्कन वसन्त की वह एक कोमल-सी शाम थी। इज़ाबेल और मैडम मरले रोमन गेट के भव्य शिखर के नीचे से होकर जो कि उस द्वार के सुन्दर तोरण की शोभा है और अपनी नग्नता में बहुत प्रभावशाली नज़र आता है, बाहर निकलीं। ऊंची दीवारोंवाली घुमावदार गलियों में से होती हुई जहां खिले बागीचों की भरपूर हरियाली अपनी सुगन्ध बिखेर रही थी, वे छोटे-से टेढ़े-मेढ़े कस्बाती पिआज़ा में पहुंच गईं। वहां मिस्टर ऑसमंड के विला की लम्बी भूरी दीवार सबसे मुख्य—या कम से कम सबसे भव्य—वस्तु नज़र आती थी। इज़ाबेल अपनी मित्र के साथ एक खुले अहाते में से गुज़री जहां एक साफ छाया नीचे पड़ रही थी। ऊपर आमने-सामने बनी दो हल्की महराबदार गैलरियां थीं जिनके पतले खम्भे और जिनमें सजे फूलदार पौधे धूप में चमक रहे थे। उस स्थान में गम्भीर और कठोर-सा कुछ था जिससे आभास होता था कि एक बार अन्दर पहुंच जाने के बाद फिर बाहर आने के लिए विशेष शक्ति की आवश्यकता पड़ेगी। पर इज़ाबेल को उस समय बाहर आने का नहीं, केवल अन्दर की तरफ बढ़ने का ही ध्यान था। मिस्टर ऑसमंड उन्हें ठण्डे एण्टी-चेम्बर में मिला। मई का महीना होने पर भी वह चेम्बर ठण्डा था। ऑसमंड उन दोनों को साथ उस कमरे में ले गया जिससे हमारा पहले परिचय हो चुका है। मैडम मरले उन दोनों से आगे थी। वे दोनों बात करते हुए ज़रा पीछे रुके रहे, तो मैडम मरले ने आगे बढ़कर अन्दर सैलून में बैठी दो स्त्रियों को अभिवादन किया। इनमें एक थी पैंज़ी जिसे उसने चूम लिया। दूसरी स्त्री के सम्बन्ध में ऑसमंड ने इज़ाबेल को बताया कि वह उसकी बहन है—काउंटेस जेमिनी। और वह मेरी नन्ही-सी बच्ची है," वह बोला, "जो अभी-अभी कॉन्वेंट छोड़कर आई है।"

पैंज़ी ने हल्की-सी सफेद पोशाक पहन रखी थी, और अपने बाल ढंग से एक जाली में बांध रखे थे। अपने छोटे-छोटे जूते उसने सैंडलों की तरह टखनों के गिर्द फीतों से बांध रखे थे। वह रूढ़िगत ढंग से इज़ाबेल के सामने हल्के-से झुकी, और फिर चुम्बन पाने के लिए आगे बढ़ आई। काउंटेस ने बैठे-बैठे सिर हिला दिया।

इज़ाबेल को लगा कि वह बहुत फैशन करनेवाली स्त्री है। वह एक दुबली और सांवली-सी स्त्री थी जो सुन्दर बिलकुल नहीं थी। नक्श गरम देशों के किसी पक्षी जैसे थे—लम्बी चोंच जैसी नाक, छोटी-छोटी चपल आंखें, और धंसता-सा मुंह और ठोड़ी। गनीमत थी कि हठ, आश्चर्य, आतंक और खुशी की गहनता के कारण उसका भाव अमानवीय नहीं था। आकृति से लगता था कि वह अपने को समझती है और अपनी विशेषताओं का पूरा लाभ उठाना जानती है। उसकी भारी और नफीस पोशाक, जिसका आकर्षण बाहर फूटा पड़ता था, एक चमकती कलगी-सी नज़र आती थी। उसकी गतिविधि में वही आकस्मिकता और हल्कापन था जो टहनियों पर उछलनेवाले प्राणियों में होता है। उसमें रंग-ढंग बहुत था। इज़ाबेल ने पहले किसी में इतना रंग-ढंग नहीं देखा था, इसलिए उसने तुरन्त उसे बहुत ज़्यादा बननेवाली स्त्रियों की श्रेणी में रख लिया। उसे याद था कि रैल्फ ने उस स्त्री को परिचय के लायक नहीं बताया था। उसने स्वीकार किया कि सरसरी तौर से देखने पर उस स्त्री में कहीं कोई गहराई नज़र नहीं आती। उस स्त्री का दिखावा सामान्य युद्धविराम के झण्डे को ज़ोर-ज़ोर से हिलाने की तरह था—सफेद रेशम के फड़फड़ाते झण्डे को हिलाने की तरह।

"तुमसे मिलकर मुझे खुशी हुई। तुम्हें यह जानकर इसपर विश्वास आ जाएगा कि मैं सिर्फ यह जानकर ही यहां आई हूं, कि तुम यहां आ रही हो। अपने भाई से मिलने मैं यहां नहीं आती—उसे मैं अपने यहां बुलाती हूं। इस पहाड़ी पर चढ़ना असम्भव है। पता नहीं क्या चीज़ उसे यहां बांधे है। सच ऑसमंड, तुम एक दिन मेरे घोड़ों की जान ले लोगे। अगर वे मर गए, तो तुम्हें मुझे नई जोड़ी खरीदकर देनी होगी। आज ही वे खरर्-खरर् सांस ले रहे थे—सच, ले रहे थे। गाड़ी में बैठकर घोड़ों का खरर्-खरर् करते सुनना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। लगता है जैसे घोड़े न होकर वे कुछ और हों। मैंने हमेशा अच्छे घोड़े रखे हैं। और चाहे जिस चीज़ की मुझे कमी रहे, अच्छे घोड़ों का प्रबन्ध मैं जैसे-तैसे कर ही लेती हूं। मेरा पति अपनी छोटी-सी बुद्धि के अनुसार हमेशा इंगलिश चीजें खरीदता है जोकि आम इतालवी नहीं करते। मेरे घोड़े भी इंगलिश हैं—यह बहुत दुःखदायी बात होगी कि वे मर जाएं।" फिर इज़ाबेल को सम्बोधित करके वह बोली, "मैं तुम्हें यह भी बता दूं कि ऑसमंड मुझे ज़्यादा अपने यहां नहीं बुलाता। इसे मेरा आना पसन्द नहीं है। आज भी मैं यहां अपनी मर्ज़ी से आई हूं। मुझे नए

लोगों से मिलना अच्छा लगता है, और मुझे विश्वास है कि तुम बहुत नई हो। वहां मत बैठो, वह कुर्सी जैसी नजर आती है, वैसी नहीं है। यहां कुछ सीटें बहुत अच्छी हैं, पर कुछ तो बस बिलकुल कबाड़ा ही हैं।"

ये बातें उसने तीखी आवाज में और हल्के झटकों में कहीं। उसका स्वर ऐसा था कि लगता था जैसे अच्छी अंग्रेजी या अच्छी अमरीकन जबान मुसीबत में हो।

"क्या कह रही हो, मुझे तुम्हारा आना पसन्द नहीं है?" उसका भाई बोला, "मेरी नजर में तुम्हारी बहुत कद्र है।"

'मुझे यहां कहीं कबाड़ा नजर नहीं आता," इजाबेल ने आसपास देखते हुए कहा, "मुझे यहां की हर चीज सुन्दर और मूल्यवान लग रही है।"

"कुछ अच्छी चीजें मेरे यहां हैं," ऑसमंड बोला, "और बहुत बुरी कोई चीज नहीं है। प्रर जैसी चीजें मैं चाहता था, वैसी यहां नहीं हैं।"

वह मुस्कराता और आसपास देखता हुआ कुछ अव्यवस्थित-सा खड़ा रहा—उसके भाव में तटस्थता और लगाव का एक विचित्र मिश्रण था। वह जैसे संकेत करना चाहता था कि सही 'मूल्यों' के अतिरिक्त कोई चीज महत्त्वपूर्ण नहीं। इजाबेल ने जल्दी से निष्कर्ष निकाल लिया—सादगी उस परिवार का गुण नहीं था। कॉन्वेंट से आई उस लड़की में—मिस्टर ऑसमंड की उस छोटी-सी बच्ची में भी, जो अपने छोटे-से चेहरे पर समर्पण का भाव लिए और दोनों हाथ उलझाए अपनी साफ और सफेद पोशाक में वहां खड़ी थी, एक ऐसा 'फिनिश' था कि उसे सर्वथा अकलात्मक नहीं कहा जा सकता था।

"तुम्हें पसन्द होतीं उफिज़ी और मिट्टी की कुछ चीजें—वही तुम्हें पसन्द होतीं न?" मैडम मरले ने कहा।

"बेचारा ऑसमंड! इसके पुराने परदे और सलीब!" काउंटेस जेमिनी बोली। वह अपने भाई को उसके पारिवारिक नाम से ही बुलाती थी। उसने बात किसी विशेष चीज को लक्ष्य करके नहीं कही थी। कहते हुए वह मुस्कराई और उसने इजाबेल को सिर से पैर तक देख लिया।

उसके भाई ने उसकी बात नहीं सुनी थी। वह सोच रहा था कि उसे इजाबेल से क्या बात कहनी चाहिए। "तुम थोड़ी चाय नहीं लोगी? तुम बहुत थकी हुई लग रही हो," आखिर उसने कहा।

"नहीं, मैं थकी हुई बिलकुल नहीं हूं। थकान की कोई वजह ही नहीं है।" इज़ाबेल को लग रहा था कि उसे बिना किसी दिखावे के बिलकुल सीधी बात ही करनी चाहिए। वहां के वातावरण में न जाने क्यों उसे कुछ ऐसा लग रहा था जिससे उसका बढ़कर बात करने को मन नहीं हो रहा था। स्थान, समय और उपस्थित व्यक्तियों के संघटन में उससे कहीं अधिक कुछ था जितना कि सतह से नज़र आता था। वह समझना चाहती थी—केवल शिष्टाचार की मौखिक बातें नहीं करना चाहती थी। इज़ाबेल नहीं जानती थी कि बहुत-सी स्त्रियां अपने निरीक्षण को छिपाने के लिए ही शिष्टाचार की मौखिक बातें करती रहतीं। यह मानना होगा कि उसका अभिमान थोड़ा आशंकित हो उठा था। एक ऐसे व्यक्ति ने उसे घर पर बुलाया था जिसकी चर्चा लोगों से सुनकर मन में दिलचस्पी जागती थी और जो बहुत विशिष्ट होने की योग्यता रखता था—उसे जो संयत स्वभाव की एक युवा लड़की थो, अब उसे बुला लेने पर उसके मनोरंजन का दायित्व उस व्यक्ति की प्रतिभा पर था। इज़ाबेल ने लक्ष्य किया, और बिलकुल तटस्थ भाव से लक्ष्य किया कि मिस्टर ऑसमंड उतनी सहजता से इस बोझ को नहीं उठा पा रहा जितनी कि उससे आशा की जा सकती थी। इज़ाबेल को लगा जैसे वह अपने मन में कह रहा हो, "यह क्या बेवकूफी की है मैंने खामखाह अपने को इस मुसीबत में डालकर।"

"यह तुम्हें अपनी सब कलात्मक चीज़ें दिखाने लगेगा और उनमें से एक-एक पर भाषण देने लगेगा, तो वापस घर जाने तक तुम ज़रूर थक जाओगी," काउंटेस जेमिनी बोली।

"मुझे इसका डर नहीं है। अगर मैं थकूंगी, तो कुछ न कुछ सीख भी तो जाऊंगी।"

"बहुत थोड़ा। पर मेरी बहन तो कुछ भी सीखने से पनाह मांगती है," ऑसमंड ने कहा।

"यह मैं स्वीकार करती हूं। मैं और कुछ भी नहीं जानना चाहती—पहले ही मैं इतना कुछ जानती हूं। आदमी जितना ज़्यादा जाने, उतना ही दुःखी होता है।"

"पैंज़ी की शिक्षा अभी पूरी नहीं हुई—तुम्हें उसके सामने ज्ञान की निन्दा नहीं करनी चाहिए," मैडम मरले मुस्कराकर बोली।

"पैंज़ी कभी किसी बुराई को नहीं जान सकेगी," लड़की के पिता ने कहा, "पैंज़ी कान्वेंट का एक छोटा-सा फूल है।"

"ओह, कॉन्वेंट, कॉन्वेंट !" काउंटेस अपनी चुन्नटें फड़फड़ाती बोली। "कान्वेंट की बात मुझसे करो। वहां रहकर सब कुछ सीखा जा सकता है—मैं भी तो कान्वेंट का ही एक फूल हूं। मैं अच्छी होने का दिखावा नहीं करती जोकि वहां की सिस्टर्ज़ करती हैं। तुम मेरा मतलब समझ रही हो न ?" उसने समर्थन के लिए इज़ाबेल की तरफ देखा।

इज़ाबेल को निश्चय नहीं था कि वह समझ सकी है। उसने उत्तर दिया कि वह दलीलें ठीक से नहीं समझ पाती। इसपर काउंटेस ने कहा कि उसे खुद दलीलबाज़ी से नफरत है, पर उसके भाई को इसका बहुत शौक है, और वह हर चीज़ पर बहस करता रहता है। "मैं तो कहती हूं," वह बोली, "कि या तो आदमी किसी चीज़ को पसन्द करे, या न करे। हर चीज़ को तो खैर कोई भी पसन्द नहीं कर सकता। पर उसे उसके कारण नहीं ढूंढ़ने चाहिए—पता नहीं उसका क्या नतीज़ा निकल आए। कुछ अच्छी भावनाओं के कारण बहुत बेहूदा हो सकते हैं—नहीं ? फिर कुछ बहुत बुरी भावनाएं हैं जिनके कारण बहुत अच्छे होते हैं। तुम मेरी बात समझ रही हो न ? मैं कारणों की कभी चिन्ता नहीं करती। मुझे पता है, मुझे क्या अच्छा लगता है।"

"यही बड़ी बात है," इज़ाबेल मुसकराकर बोली। उसे लग रहा था कि इस हल्की मनोवृत्ति की स्त्री के साथ किसी तरह के बौद्धिक आदान-प्रदान की उसे आशा नहीं करनी चाहिए। काउंटेस को दलीलों से चिढ़ थी, तो इज़ाबेल के मन में उस समय उनके लिए ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। उसने अपना हाथ पैंज़ी की तरफ बढ़ा दिया—सोचा कि इस चेष्टा से उसपर मतभेद का कोई आरोप नहीं लगाया जा सकता। गिलबर्ट ऑसमंड को अपनी बहन का स्वर बहुत अखर रहा था। उसने बातचीत का विषय बदल दिया। वह अपनी बेटी के दूसरी तरफ की कुर्सी पर बैठ गया। पंज़ी संकोच के साथ इज़ाबेल की उंगली को अपनी उंगली से सहला रही थी। ऑसमंड ने लड़की को उसकी कुर्सी से खींचकर अपने घुटनों के सामने कर लिया, और उसके दुबले शरीर को बांहों में लेकर साथ सटा लिया। पैंज़ी स्थिर उदासीन दृष्टि से इज़ाबेल को ताक रही थी। उस दृष्टि में कोई इरादा नहीं था, फिर भी एक आकर्षण की चेतना थी।

मिस्टर ऑसमंड कई विपयों पर बात करता रहा। मैडम मरले ने कहा था कि वह जब चाहे तब अपने को लुभावना बना सकता है। उस दिन कुछ ही देर में यह स्पष्ट हो गया कि वह न सिर्फ ऐसा चाहता है, बल्कि उसका निश्चय किए है। मैडम मरले और काउंटेस जेमिनी अलग बैठी बातें कर रही थीं—ऐसे व्यक्तियों की तरह जो घनिष्ठ परिचय के कारण एक-दूसरे के साथ बहुत सहजता महसूस करते हैं। बीच-बीच में इज़ाबेल को काउंटेस की आवाज़ सुनकर लगता कि वह उसी तरह मैडम मरले की चेतना में डुबकी लगाने की चेष्टा करती है जैसे एक पूडल कुत्ता फेंकी गई छड़ी को झपटने की कोशिश करती है। मैडम मरले जैसे देखना चाह रही थी कि काउंटेस कितनी दूर तक जा सकती है! मिस्टर ऑसमंड बात कर रहा था फ्लोरेंस की, इटली की, वहां रहने के सुख की और उस सुख के उपकरणों की। वहां की कई विशेपताएं भी थीं और कई कमियां भी—कमियां काफी ज़्यादा थीं, हालांकि अजनबियों को वह दुनिया काफी रोमांटिक नज़र आ सकती थी। फिर भी वहां रहने के कई लाभ थे जिनमें बहुत सौन्दर्य खोजा जा सकता था। कुछ 'भाव' तो केवल वहीं प्राप्त हो सकते थे। कुछ जीवन के लिए उपयोगी 'भाव' वहां मिल ही नहीं सकते थे, कुछ बहुत खराब 'भाव' भी वहां से ग्रहण किए जा सकते थे। किन्तु समय-समय पर व्यक्ति कोई ऐसा 'भाव' प्राप्त हो जाता था जो हर चीज़ की क्षति-पूर्ति कर देता था। फिर भी इटली में रहकर आदमी ज़्यादातर खराब ही होता था—उसे यह भी विश्वास था कि वह इतना ज़्यादा इटली में न रहता, तो शायद इससे बेहतर आदमी होता। यहां रहकर आदमी आलसी, आवारा और घटिया हो जाता था। यहां चरित्र पर कोई नियन्त्रण नहीं था, और वह सफलतापूर्ण सामाजिक संस्कार और साहस आदमी को यहां नहीं मिल सकता था जिसका विकास लन्दन और पेरिस में रहकर होता है। "हम लोग अच्छे-खासे देहाती हैं," ऑसमंड बोला, "और मेरा ख्याल है मैं भी बिना ताले की चाबी की तरह यहां रहकर जंग खा गया हूं। तुमसे बात करके मुझमें थोड़ी चमक आ रही है, हालांकि मैं यह कहने का साहस नहीं कर सकता कि तुम्हारी प्रतिभा के संश्लिष्ट ताले को मैं एक फेर दे सकता हूं। पर मैं तुमसे तीन बार मिल सकूं, इससे पहले ही तुम चली जाओगी और फिर शायद कभी मेरी तुमसे मुलाकात नहीं होगी। मुझे काफी धोखा मिला है, इसलिए अब मैं अपने को किसीसे लगाव नहीं होने देता, किसीके आकर्पण

में नहीं पड़ने देता। तुम यहीं रहना-बसना चाहती हो ? यह बहुत अच्छा रहेगा। हां, तुम्हारी आंट एक तरह की गारंटी हैं—उनपर निर्भर किया जा सकता है। वे पुरानी फ्लोरेंसवासी हैं—सचमुच पुरानी—वे आज के नए आए अजनबियों में से नहीं हैं। वे मदिसी की समकालीन हैं। शायद सावानारोला के जलाए जाने के समय भी वे यहां रही होंगी—हो सकता है कि उस आग में उन्होंने स्वयं भी एकाध लकड़ी डाली हो। उनका चेहरा पुराने चित्रों के चेहरों जैसा है—छोटे, रूखे और निश्चित चेहरों जैसा जो काफी भावपूर्ण रहे होंगे, पर हमेशा एक ही भाव लिए हुए। मेरा ख्याल है घिर्लांदायो के किसी दीवार-चित्र में मैं तुम्हें उनका चेहरा दिखा सकता हूं। मुझे आशा है मेरे मुंह से अपनी आंट के बारे में इस तरह की बात सुनना तुम्हें बुरा नहीं लग रहा। मेरा ख्याल है नहीं लग रहा। विश्वास रखो मेरे मन में तुम दोनों में से किसीके भी प्रति असम्मान का भाव नहीं है। तुम्हें पता होगा कि मैं मिसेज़ टाउशेट का बहुत प्रशंसक हूं।"

जब इज़ाबेल का मेज़बान इस तरह व्यक्तिगत ढंग से उसका मन बहलाने का प्रयत्न कर रहा था, तब बीच-बीच में इज़ाबेल की आंख मैडम मरले से मिल जाती थी। मैडम मरले सरसरी-सी मुस्कराहट के साथ उसे देखती—उस मुस्कराहट में ऐसा कोई कष्टप्रद संकेत नहीं था कि वह ऑसमंड से बात करती अच्छी लग रही है। आखिर मैडम मरले ने काउंटेस से बाहर बाग में चलने का प्रस्ताव किया। काउंटेस अपने पंख फड़फड़ाती उठ खड़ी हुई और सरसराती हुई दरवाज़े की तरफ बढ़ी। "बेचारी मिस आर्चर !" वह दूसरी टोली को भावपूर्ण दया के साथ देखती हुई बोली, "वह तो बिलकुल इस परिवार में ले आई गई जान पड़ती है।"

"जिस परिवार की तुम सदस्य हो, उससे मिस आर्चर की सहानुभूति होना स्वाभाविक ही है," मिस्टर ऑसमंड ने हंसकर कहा। उस हंसी में उपहास की ध्वनि के अतिरिक्त धैर्य का स्पर्श भी था।

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझ सकी। मुझे विश्वास है कि उसे मुझमें उसके सिवा कोई दोष नज़र नहीं आएगा जो तुम उसे बता दोगे। यह जो बताएगा, मैं उससे कहीं अच्छी हूं, मिस आर्चर," काउंटेस कहती रही, "सिर्फ मैं बेवकूफ और 'बोर' हूं। इसने इतना ही बताया है न ? ओह, तब तो इसका मिज़ाज ठिकाने पर है। यह अपने प्रिय विषय पर बात करने लगा है न ? दो-तीन ही विषय हैं जो इसे बहुत प्रिय हैं। अच्छा है, उस हालत में तुम अपना बॉनेट उतारकर बैठो।"

"मुझे नहीं पता मिस्टर ऑसमंड के प्रिय विषय कौनसे हैं," कहती हुई इज़ाबेल उठ खड़ी हुई।

काउंटेस उंगलियां मिलाकर माथे को दबाए हुए पल-भर जैसे गम्भीर भाव से कुछ सोचती रही। "मैं तुम्हें बताती हूं। एक विषय है मेचियावेली। दूसरा है विटोरिया कोलोना। तीसरा मेतास्तासियो।"

मैडम मरले काउंटेस की बांह में हाथ डालकर उसे जैसे बाग की तरफ चलाती हुई बोली, "मेरे साथ मिस्टर ऑसमंड कभी ऐसे ऐतिहासिक विषयों पर बात नहीं करता।"

"तुम," काउंटेस उसके साथ चलती हुई बोली, "तुम तो स्वयं मेचियावेली हो, स्वयं विटोरिया कोलोना हो।"

"अब सुनने को मिलेगा कि मैडम मरले मेतास्तासियो है!" गिलबर्ट ऑसमंड ने जैसे हारकर सांस भरी।

इज़ाबेल इस ख्याल से उठी थी कि शायद उन लोगों को भी बाग में चलना है। पर ऑसमंड वहीं खड़ा रहा—कमरे से चलने का उसका कोई इरादा नज़र नहीं आ रहा था। उसने हाथ अपने जैकट की जेबों में डाल रखे थे और पैंज़ी की एक बांह में अपनी बांह डालकर उसे अपने से सटा रखा था। पैंज़ी कभी उसकी और कभी इज़ाबेल की तरफ देख रही थी। इज़ाबेल मौन आत्म-तोष के भाव से प्रतीक्षा करती रही थी कि उसे किधर चलने को कहा जाता है। उसे मिस्टर ऑसमंड की बातचीत और साथ अच्छा लग रहा था—उसमें उसके लिए एक व्यक्तिगत स्पन्दन था, और एक नए सम्बन्ध की चेतना। उस बड़े कमरे के खुले दरवाज़े से वह मैडम मरले और काउंटेस को बाग की महीन घास पर टहलते देख रही थी। फिर वहां से मुड़कर उसकी आंखें आसपास की चीज़ों पर भटकने लगीं। मिस्टर ऑसमंड ने अपनी बहुमूल्य वस्तुएं उसे दिखानी थीं—पर वहां के चित्र और खाने सब बहुमूल्य लग रहे थे। पल-भर बाद इज़ाबेल एक तसवीर को ज्यादा अच्छी तरह देखने के लिए उसकी तरफ बढ़ गई। पर तभी एकाएक ऑसमंड ने कहा, "मिस आर्चर, मेरी बहन के बारे में तुम्हारी क्या राय है?"

इज़ाबेल ने आश्चर्य के साथ उसकी तरफ देखा। "ओह, यह मुझसे मत पूछो। मैंने अभी उसे बहुत कम जाना है।"

"हां, तुमने उसे बहुत कम जाना है। पर तुम्हें पता चल गया होगा कि उसमें

जानने को बहुत ज्यादा है भी नहीं। तुम्हें हमारा पारिवारिक स्वर कैसा लगता है ?" ऑसमंड एक ठण्डी मुस्कराहट के साथ कहता रहा। "मैं जानना चाहता हूं कि एक ताज़ा और पूर्वाग्रहहीन मन को वह कैसा लगता है। मैं जानता हूं तुम क्या कहोगी—कि तुमने अभी ठीक से देखा ही नहीं है। ठीक है, तुम्हें अभी एक झलक ही मिली है। पर आगे कभी अवसर मिले, तो इसपर ज़रा ध्यान देना। मुझे कई बार लगता है कि यहां हमारी स्थिति अच्छी नहीं रही। यहां हम पराई चीज़ों और पराये लोगों के बीच रहे हैं, बिना किसी लगाव या ज़िम्मेदारी के। हमें बांधने या संभालनेवाली कोई चीज़ यहां नहीं रही। हमने विदेशियों से विवाह किए, कृत्रिम रुचियां बनाईं और अपने स्वाभाविक मिशन के साथ खिलवाड़ करते रहे। यह सब मैं अपनी बहन से ज्यादा अपने लिए कह रहा हूं। वह काफी ईमानदार महिला है—जितनी नज़र आती है, उससे कहीं ज्यादा। वह सुखी नहीं है, पर गम्भीर मनोवृत्ति की न होने से वह इस चीज़ को ट्रेजिक रूप में प्रकट नहीं करती, कॉमिक रूप में प्रकट करती है। इसका पति निहायत बेतुका है, हालांकि यह उससे ज्यादा वास्ता नहीं रखती। मैडम मरले इसे काफी अच्छा परामर्श देती रहती है, पर यह उसी तरह है जैसे भाषा सीखने के लिए एक बच्चे के हाथ में शब्दकोष दे दिया जाए। उसमें वह शब्द ढूंढ तो सकता है, पर उनका प्रयोग नहीं कर सकता। मेरी बहन को ज़रूरत है एक व्याकरण की, पर दुर्भाग्यवश व्याकरण उससे दूर की चीज़ है। माफ करना कि मैं यह सब तुम्हें इतने विस्तार से बता रहा हूं। मेरी बहन ठीक कह रही थी कि तुम इस परिवार में ले आई-गई हो। यह तसवीर मैं उतार देता हूं। तुम्हें ज्यादा रोशनी की ज़रूरत होगी।"

वह तसवीर को उतारकर खिड़की के पास ले गया, और उसके बारे में कुछ विचित्र बातें बताता रहा। इज़ाबेल ने अन्य कलाकृतियों को भी देखा। ऑसमंड उनके बारे में उसे और भी बहुत कुछ बताता रहा—ऐसी बातें जो गर्मी की दोपहर में घर पर आनेवाली एक युवा लड़की के मन को अच्छी लग सकें। ऑसमंड की तसवीरें, तमगे और टेपेस्ट्रियां काफी रोचक थीं। पर शीघ्र ही इज़ाबेल को ऑसमंड स्वतन्त्र रूप से उन सबसे अधिक रोचक लगने लगा हालांकि वे चीज़ें उसे बुरी तरह घेरे थीं। जितने लोगों को इज़ाबेल जानती थी, वह उन सबसे अलग था। ज्यादातर लोगों को छः-आठ तरह के वर्गों में रखकर देखा जा सकता था। इसमें दो-एक अपवाद थे। उदाहरण के लिए अपनी आंट लिडिया को

वह किसी भी वर्ग में रखकर नहीं देख सकती थी। कुछ और लोग थे जो अपेक्षाकृत मौलिक थे—कहना चाहिए सौजन्यतः मौलिक—जैसे मिस्टर गुडवुड उसका कज़िन रैल्फ, हेनरीटा स्टैकपोल, लार्ड वारवर्टन और मैडम मरले। पर यदि आधारभूत वास्तविकता को देखा जाए, तो इनके अपने वर्ग थे जिनसे उसका मन पहले से परिचित था। पर उसके मन में ऐसा कोई वर्ग नहीं था जिसमें वह मिस्टर ऑसमंड को रखकर देख सके—वह अपना नमूना आप ही था। यह नहीं कि इन वास्तविकताओं को उसने उसी समय जान लिया, पर वे क्रमशः उसके मन में तभी स्पष्ट होने लगीं। उस समय उसने अपने से इतना ही कहा कि यह "नया संबंध" उसके लिए सबसे विशिष्ट सिद्ध होगा। यूं विशिष्टता का स्वर मैडम मरले में भी था, पर एक पुरुष में उसकी झंकार कितनी शक्तिशाली लग सकती थी! वह जो कुछ कह या कर रहा था, उसमें उसका उतना आभास नहीं था जितना उसमें जो वह अपने तक सीमित रखे था। उसमें विशिष्टता के वही निशान थे जो उन पुरानी प्लेटों के नीचे या सोलहवीं शताब्दी की उन तस्वीरों के कोने में बने थे जो वह उसे दिखा रहा था। उसमें सामान्य से हटकर कोई विचित्रता नहीं थी—वह बिना अद्भुत हुए मौलिक था। इतने सूक्ष्म रेशों के किसी आदमी से वह पहले नहीं मिली थी। सबसे पहले यह विशेषता शारीरिक थी, फिर अमूर्तताओं में विस्तीर्ण हो जाती थी। उस आदमी के घने कोमल बाल, दुबले मंजे हुए नक्श, साफ चमड़ी जो पककर भी खुरदरी नहीं हुई थी, उसकी एकसार उगी दाढ़ी, और उसके निर्माण की हल्की व्यवस्थित दुदलाहट जिससे उसकी एक उंगली का हिलना भी एक भावपूर्ण संकेत जान पड़ता था—ये सब व्यक्तिगत गुण इस संवेदनशील लड़की को विशेषता और गहनता के चिह्न लग रहे थे और उसके मन में दिलचस्पी जगा रहे थे। वह निश्चित रूप से आलोचना और नुक्ताचीनी करनेवाला आदमी था—शायद जल्दी झुंझला भी जाता था। उसकी समझ-बूझ उसका शासन करती थी—शायद ज़रूरत से ज़्याद शासन करती थी। सामान्य विपत्तियों को लेकर उसके मन में धीरज नहीं था। इसीसे वह एक अपनी ही अलग-थलग, गिनी-नापी और व्यवस्थित दुनिया में अकेला रहने लगा था जहां वह कला, सौंदर्य और इतिहास के विषय में सोचता रह सकता था। वह हर चीज़ में अपनी सुरुचि से परामर्श लेता था—शायद केवल अपनी सुरुचि से—जैसे एक रोगी, जिसे पता हो कि उसका रोग असाध्य है, केवल अपने वकील से परामर्श लेता

है। यही चीज़ थी जो उसे और सबसे अलग करती थी। यह गुण कुछ हद तक रैल्फ में भी था—वह भी सोचता था कि ज़िन्दगी पारखी बनकर ही जी जा सकती है। पर रैल्फ में जहां यह एक विरोध,या एक तरह की हास्यवृत्ति थी, वहां ऑसमंड का मुख्य स्वर यही था और उसकी हर चीज़ का इसके साथ सामंजस्य था। इज़ाबेल अभी उसे पूरी तरह समझ पाने में समर्थ नहीं थी क्योंकि उसकी बात का हर अर्थ स्पष्ट नहीं होता था। उदाहरण के लिए यह जानना मुश्किल था कि वह अपने देहाती पक्ष की बात क्यों करता है—यह एक पक्ष था जिसका उसमें सबसे ज़्यादा अभाव नज़र आता था। क्या यह एक निर्दोष-सा विरोधाभास था जो केवल उसे चुंधियाने के लिए था ? या कि ऊंची संस्कारशीलता का यह अन्तिम परिष्कार था ? इज़ाबेल को विश्वास था कि समय पाकर वह यह जान जाएगी और यह जानना काफी दिलचस्प होगा। वह सामंजस्य यदि देहातीपन था, तो राजधानी की पूर्णता फिर क्या थी ? यह जानते हुए भी कि उसका मेज़बान संकोचशील स्वभाव का है, वह यह प्रश्न पूछने से अपने को नहीं रोक सकी। उसे लगा कि यह संकोचशीलता—सूक्ष्मबोध से पैदा होनेवाली संकोचशीलता अच्छे भरण-पोषण के साथ पूरी तरह मेल खाती है। सामान्य से हटकर जो मान और कसौटियां हैं, वह लगभग उनका प्रमाण थी। वह सहज आत्म-विश्वास रखनेवाला आदमी नहीं था जो धड़ल्ले से बातचीत और गपबाज़ी करता जाए। वह दूसरों की तरह अपनी भी आलोचना करता था, और दूसरों को सराहने से पहले उनसे बहुत अधिक की अपेक्षा रखता था। जो कुछ स्वयं दे सकता था, उसके प्रति भी उसका दृष्टिकोण व्यंग्यपूर्ण रहता था। यह इस बात का भी प्रमाण था कि उसे खामखाह का कोई घमण्ड नहीं था। वह अगर संकोचशील न होता, तो शायद इतनी धीमी, सूक्ष्म और सफल बातचीत न कर सकता—यह बातचीत इज़ाबेल को आह्लादकर भी लग रही थी और रहस्यपूर्ण भी। उसका एकाएक उससे काउंटेस जेमिनी के बारे में उसकी राय पूछ लेना इस बात का प्रमाण था कि वह उसमें दिलचस्पी ले रहा था—यह पूछकर अपनी बहन के बारे में उसकी जानकारी बढ़ नहीं जानी थी। उसकी यह दिलचस्पी एक प्रश्नशील मन का प्रमाण थी, हालांकि यह कुछ अजब-सा लगता था कि वह बहन-भाई के रिश्ते से अधिक अपनी उत्सुकता को महत्त्व दे। अब तक एक यही बात उसने बेतुकी की थी।

जिस कमरे में इज़ाबेल को बैठाया गया था, उसके अलावा दो और कमरे

रूमानी चीज़ों से भरे थे। इज़ाबेल ने लगभग पाव घण्टा उन कमरों में बिताया। हर चीज़ हद की खूबसूरत और कीमती थी। मिस्टर ऑसमंड एक बहुत अच्छे पथ-प्रदर्शक की तरह उसे एक चीज़ से दूसरी चीज़ की तरफ ले जाता रहा। अपनी लड़की को वह अब भी हाथ से पकड़े था। उसकी भद्रता हमारी नवयुवती को चकित कर रही थी। उसे आश्चर्य था कि वह व्यक्ति क्यों उसके लिए इतना कष्ट उठा रहा है। आखिर वह ज्ञान और सौन्दर्य के उस संग्रह का, जिससे उसे परिचित कराया जा रहा था, एक भार-सा महसूस करने लगी। आज के लिए इतना काफी था—अब वह ऑसमंड की बात ठीक से सुन नहीं पा रही थी। ऑसमंड शायद उसे वास्तविकता से अधिक तत्पर, चतुर और ग्रहणशील समझ रहा था। उसे लगा कि मैडम मरले ने उसके बारे में बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बात की होगी। यह दुःख की बात थी क्योंकि अन्त में उसकी वास्तविकता ऑसमंड के सामने अवश्य खुल जाएगी, और तब उसकी वास्तविक प्रतिभा भी उस व्यक्ति के मन से अपनी गलती का पश्चात्ताप नहीं मिटा सकेगी। इज़ाबेल की उछाल का कुछ कारण अपने को मैडम मरले के बखान जितनी प्रतिभाशाली दिखाने का प्रयत्न भी था—और यह डर (जोकि उसके लिए असाधारण बात थी) कि उसकी ग्रहणशक्ति की स्थूलता प्रकट न हो जाए—उसका अज्ञान प्रकट हो, इसकी चिन्ता वह अपेक्षया कम करती थी। उसे बुरा लगता अगर वह ऐसी किसी चीज़ की प्रशंसा कर देती जिसे ऑसमंड अपने बेहतर ज्ञान के कारण उतनी प्रशंसनीय न समझता—या किसी ऐसी चीज़ को अनदेखा कर जाती जिसमें एक सुरुचिशील मन रमा रहता। वह उस बीभत्स स्थिति से बची रहना चाहती थी जिसमें उसने अन्य स्त्रियों को लड़-खड़ाते देखा था। इसलिए वह अपने शब्दों के सम्बन्ध में बहुत सावधान थी—उस सम्बन्ध में भी कि वह क्या देखती है और क्या नहीं। वह इतनी सावधान पहले कभी नहीं रही थी।

वे उस पहले कमरे में लौट आए जहां अब चाय रख दी गई थी। पर क्योंकि शेष दोनों महिलाएं अभी टैरेस पर थीं, और इज़ाबेल ने वहां का दृश्य अभी देखा नहीं था, इसलिए बिना और देर किए मिस्टर ऑसमंड उसे बाग की तरफ ले चला। मैडम मरले और काउंटेस ने कुर्सियां बाहर निकलवा ली थीं। शाम सुहा-वनी थी, इसलिए काउंटेस ने प्रस्ताव किया कि चाय वहीं खुले में बैठकर पी जाए। पैंज़ी को भेजा गया कि वह नौकर से सब सामान वहीं लिवा लाए। सूरज ढल

रहा था। सुनहरी रोशनी में अब गहरी रंगत आ रही थी। पहाड़ियों पर और उनके नीचे फैले मैदान पर ढेरों जामुनी छाया चमक रही थी—साथ ही वे स्थान भी जिनपर वह पड़ रही थी। उस दृश्य में एक असाधारण आकर्षण था। हवा में एक गम्भीर निःस्तब्धता थी और लैंडस्केप का खुला विस्तार, अपनी भव्य रूप-रेखा और एक बाग जैसे संस्कार के साथ, अपनी उर्वर घाटी और हल्की झाड़ियों-वाली पहाड़ी के साथ, तथा अपने जीव-समूह के मानवीय-से स्पर्श के साथ, सार्व-कालिक शोभा के सुन्दर सामंजस्य में सामने बिखरा था। "तुम इतनी खुश नज़र आ रही हो कि लगता है तुम फिर भी यहां आना चाहोगी," ऑसमंड ने इज़ाबेल को टैरेस के एक कोने की तरफ ले जाते हुए कहा।

"मैं निःसन्देह फिर भी यहां आऊंगी," इज़ाबेल बोली, "चाहे तुम कितना ही कहो कि इटली रहने के लिए बहुत खराब जगह है। व्यक्ति के स्वाभाविक मिशन के बारे में तुमने क्या बात कही थी ? मुझे नहीं लगता कि मैं फ्लोरेंस में रहने लगूं, तो अपने स्वाभाविक मिशन से हट जाऊंगी।"

"एक स्त्री का स्वाभाविक मिशन वहां रहना है जहां उसकी सबसे अधिक प्रशंसा हो।"

"जानने की बात तो यह होती है कि वह जगह कौन-सी है।"

"हां, प्रायः वह बहुत-सा समय इसका पता करने से गंवा देती है। लोगों को यह चीज़ उसे बहुत स्पष्ट करके बता देनी चाहिए।"

"मुझे तो यह चीज़ बहुत ही स्पष्ट करके बतानी होगी," इज़ाबेल मुस्कराई।

"तुम्हारी एक जगह बसने की बात जानकर खैर मुझे खुशी हुई। मैडम मरले की बातों से मुझे लगा था कि तुम काफी घुमक्कड़ स्वभाव की हो। वह शायद बता रही थी कि तुम्हारी योजना सारी दुनिया में घूमने की है।"

"मुझे अपनी योजनाओं पर शरम आती है। हर रोज़ मैं एक नई योजना बना लेती हूं।"

"इसमें शर्म आने की क्या बात है ? यह तो सबसे बड़ा सुख है।"

"मुझे यह अस्थिरता जान पड़ती है," इज़ाबेल बोली, "आदमी को ध्यान से एक चीज़ चुननी चाहिए, और उसपर स्थिर रहना चाहिए।"

"इस नियम के अनुसार मैं अस्थिर नहीं रहा।"

"क्या तुमने कभी योजानाएं नहीं बनाईं ?"

"कई साल पहले एक योजना बनाई थी, और उसी पर मैं आज अमल कर रहा हूं।"

"बहुत अच्छी योजना रही होगी वह," इज़ाबेल ने अपने को कह लेने दिया।

"बहुत साधारण योजना थी। वह यह कि जितना सम्भव हो, उतना खामोश रहूं।"

"खामोश ?" इज़ाबेल ने दोहराया।

"हां, न चिन्ता करूं, न प्रयत्न करूं, न संघर्ष। बस हर चीज़ को स्वीकार किए रहूं। थोड़े से संतोष कर लूं। वह बीच-बीच में व्यवधान देकर धीरे-धीरे ये वाक्य बोलता रहा। साथ ही एक ऐसे व्यक्ति के-से सचेत भाव से जो किसीके सामने आत्म-स्वीकृति कर रहा हो, वह अपनी मेधावी दृष्टि इज़ाबेल की दृष्टि पर स्थिर किए रहा।

"इसे तुम साधारण कहते हो ?" इज़ाबेल ने हल्के व्यंग्य के साथ पूछा।

"हां, क्योंकि यह नकारात्मक है।

"क्या तुम्हारा जीवन नकारात्मक रहा है ?"

"तुम चाहो तो इसे स्वीकारात्मक कह लो। पर इसने मेरी उदासीनता को ही स्वीकृति दी है। पर यह मेरी स्वाभाविक उदासीनता नहीं है, ऐसी उदासीनता मुझमें नहीं थी। यह इच्छा और प्रयत्न से किया गया त्याग है।"

इज़ाबेल उसे समझ नहीं पा रही थी। वह दुविधा में थी कि कहीं वह मज़ाक ही तो नहीं कर रहा। वह व्यक्ति, जो उसे बहुत संयत जान पड़ा था, क्यों एका-एक क्यों इस तरह अपना मन खोलकर रखने लगा था ? खैर यह उस आदमी की इच्छा पर था और वह जो कुछ कह रहा था, वह काफी दिलचस्प था। "मैं नहीं समझ पा रही कि तुमने यह त्याग क्यों किया ?" वह पल-भर बाद बोली।

"क्योंकि मैं और कुछ नहीं कर सकता था। मैं जीनियस तो था नहीं, गरीब भी था, और कोई सम्भावनाएं मेरे सामने नहीं थी। कोई खास प्रतिभा भी नहीं थी। मैंने ज़िन्दगी के शुरू में ही अपनी नाप-जोख कर ली थी। दुनिया में सिर्फ दो-एक ही आदमी थे जिनसे मुझे स्पर्धा थी—उदाहरण के लिए रूस का सम्राट् और टर्की की सुलतान। कभी-कभी मुझे रोम के पोप से भी स्पर्धा होती थी—उसे जो आदर मिलता है, उसे देखते हुए। उतना आदर पाकर मुझे खुशी होती। पर वह क्योंकि सम्भव नहीं था, इसलिए और किसी चीज़ की मैंने चिन्ता नहीं

की। तय कर लिया कि मैं कोई सम्मान नहीं चाहूंगा। निर्धन से निर्धन भद्र व्यक्ति भी अपना सम्मान स्वयं कर सकता है, और मैं दुर्भाग्यवश निर्धन होते हुए भी एक भद्र व्यक्ति था। इटली में रहकर मैं कुछ नहीं कर सकता था—एक इतालवी देश-भक्त भी नहीं बन सकता था। ऐसा करने के लिए मुझे इस देश को छोड़ना पड़ता। मैं इस देश को इतना पसन्द करता था कि छोड़कर जाना नहीं चाहता था। साथ ही कुल मिलाकर यहां से इतना सन्तुष्ट भी था कि जैसा भी यह देश तब था, मुझे इसका बदलना पसन्द नहीं था, इसलिए मैंने कई साल यहां उस खामोश योजना के अनुसार काट दिए हैं, जिसका मैंने जिक्र किया था। मैं इससे दुःखी नहीं रहा। मेरा यह मतलब नहीं कि मैंने किसी भी चीज़ की चिन्ता नहीं की, पर जिन चीज़ों की मैंने चिन्ता की है, वे बहुत निश्चित और सीमित रही हैं। मेरे जीवन की घटनाओं को सिवाय मेरे कभी किसी ने लक्ष्य नहीं किया। इस बीच कभी किसी अच्छे सौदे में मैंने चांदी का एक सलीब खरीद लिया (कभी कोई महंगी चीज़ मैंने नहीं खरीदी), या कभी एक पैनेल में कोरेगियो का एक स्केच ढूंढ लिया जिसपर किसी गधे ने अपनी प्रेरणा में पुताई कर डाली थी।

इज़ाबेल इसपर पूरा विश्वास कर लेती, तो मिस्टर ऑसमंड के जीवन का यह वृत्तान्त उसे काफी रूखा नज़र आता। पर उसकी कल्पना ने उसमें वे मानवीय अंश भर दिए जिनका उसके ख्याल में अभाव नहीं रहा था। ऑसमंड जितना स्वीकार कर रहा था, उससे कहीं अधिक उसका जीवन दूसरों के जीवन में घुला-मिला रहा था—इज़ाबेल को आशा भी नहीं थी कि वह उस पक्ष पर प्रकाश डालेगा। इस समय वह उसे और बातें बताने के लिए नहीं उकसाना चाहती थी। उससे यह कहना कि उसने उसे सब कुछ नहीं बतलाया, उसकी अपनी इच्छा से कहीं अधिक घनिष्ठ और कम विचारपूर्ण बात होती—बल्कि अत्यधिक अशिष्ट बात जान पड़ती। ऑसमंड ने जितना बतलाया था, वही काफी था। इस समय उसकी इच्छा केवल कुछ नपी-तुली सहानुभूति प्रकट करने की हुई कि उस आदमी ने अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा बहुत सफलतापूर्वक की है। "यह बहुत सुखकर ज़िन्दगी है," वह बोली, "कि आदमी कोरेगियो को छोड़कर और हर चीज़ का त्याग कर दे।"

"हां, अपने ढंग से मैंने इसे एक अच्छा रूप ले लिया है। यह मत समझो कि मैं इसकी शिकायत कर रहा हूं। आदमी अगर सुखी न हो, तो यह दोष उसका

अपना है।"

यह ज़रा बड़ी बात थी, इसलिए इज़ाबेल ने अपने को इससे छोटी बात तक सीमित रखा। "क्या तुम हमेशा यहीं रहे हो?"

"नहीं, हमेशा नहीं। मैं काफी अरसा नेपल्ज़ में रहा हूं और कई साल रोम में रहा हूं। पर बहुत दिनों से मैं यहां हूं। कुछ और करने के लिए शायद मुझे यहां से जाना पड़े। मुझे अब केवल अपनी ही चिन्ता नहीं है। मेरी लड़की बड़ी हो रही है, और वह शायद कोरेगियो और सलीबों की मेरे जितनी चिन्ता नहीं करेगी। मुझे वही करना होगा जो पैंज़ी के लिए सबसे हितकर होगा।"

"तुम्हें ऐसा ही करना चाहिए," इज़ाबेल बोली, "वह इतनी प्यारी-सी, छोटी-सी लड़की है।"

"ओह!" गिलबर्ट ऑसमंड ने सुन्दर ढंग से कहा, "वह स्वर्ग की एक मूर्ति है। वह मेरा सबसे बड़ा सुख है।

२५

जब यह घनिष्ठ वार्तालाप चल रहा था (जोकि हमारे हट जाने के बाद भी कुछ देर चलता रहा), तो मैडम मरले और काउंटेस जेमिनी कुछ देर खामोस रहने के बाद, फिर आपस में बात करने लगी थीं। वे ऐसे भाव से बैठी थीं जैसे दबे-दबे किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रही हों—यह भाव काउंटेस जेमिनी के चेहरे पर ज़्यादा स्पष्ट था। स्वभाव से ज़्यादा नर्वस होने के कारण वह अपनी बेसब्री को मैडम मरले जितनी सफलता से नहीं छिपा पाती थी। वे किस चीज की प्रतीक्षा कर रही थीं, यह बाहर से प्रकट नहीं हो रहा था, और शायद उनके अपने मन में भी बहुत स्पष्ट नहीं था। मैडम मरले प्रतीक्षा कर रही थी कि कब ऑसमंड उसकी युवा मित्र को अपनी बातचीत से खाली करता है—और मैडम मरले प्रतीक्षा कर रही थी, शायद इसीलिए काउंटेस भी प्रतीक्षा कर रही थी। प्रतीक्षा करते-करते काउंटेस को अपनी विपरीत प्रकृति की सुन्दर अभिव्यक्ति के लिए एक अनुकूल अवसर मिल गया। उसे सामने रखने के लिए उसे कुछ मिनटों का समय और

चाहिए था। उसका भाई इज़ाबेल के साथ टहलता हुआ बाग के अन्त तक चला गया था। काउंटेस की आंखें वहां तक उनका पीछा करती रहीं।

"माई डियर," उसने तब मैडम मरले से कहा, "तुम मुझे क्षमा करोगी अगर मैं तुम्हें बधाई न दूं, तो।"

"ज़रूर। क्योंकि मैं नहीं जानती तुम बधाई दो ही क्यों।"

"क्या तुम्हारी एक छोटी-सी योजना नहीं है जिसे तुम बहुत बढ़िया समझती हो?" और काउंटेस ने अपना सिर उस जोड़े की तरफ देखकर हिलाया।

मैडम मरले की आंखों ने भी उसी दिशा में रुख किया। फिर उसने बड़ी गंभीरता के साथ अपनी पड़ौसिन की तरफ देखा। "तुम जानती हो मैं तुम्हें कभी भी ठीक से नहीं समझ पाती," वह मुस्कराई।

"तुम समझना चाहो तो तुमसे बेहतर कोई नहीं समझ सकता। मुझे पता है कि इस समय तुम समझना नहीं चाहतीं।"

"तुम मुझसे ऐसी बातें करती हो, जो और कोई नहीं करता?" मैडम मरले ने गम्भीरता से कहा, यद्यपि अब तक उसकी बात में कड़ुवाहट नहीं थी।

"तुम्हारा मतलब है ऐसी बातें जो तुम्हें पसन्द नहीं हैं? क्या ऑसमंड कभी ऐसी बातें नहीं करता?"

"तुम्हारा भाई जो बातें करता है, उनका कुछ अर्थ होता है।"

"हां, कभी-कभी एक ज़हरीला अर्थ भी। अगर तुम्हारा मतलब यह है कि मैं उस जितनी होशियार नहीं हूं, तो तुम्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि मुझे इस अन्तर से कोई फर्क पड़ता है। लेकिन बेहतर यही है कि तुम मुझे समझ जाओ।"

"ऐसा क्यों?" मैडम मरले ने पूछा, "इससे किस चीज़ में सहायता मिलेगी?"

"अगर मैं तुम्हारी योजना से सहमत नहीं होती, तो तुम्हें इस खतरे से सचेत रहना चाहिए कि मैं उसमें दखल दे सकती हूं।"

मैडम मरले इस तरह नज़र आ रही थी जैसे वह यह मानने को तैयार हो कि इसमें कुछ बात है। लेकिन एक क्षण बाद उसने आहिस्ता से कहा, "तुम मुझे उससे अधिक हिसाबी समझती हो जितनी कि मैं हूं।"

"यह तुम्हारा हिसाबी होना नहीं है, जो मुझे बुरा लगता है; बल्कि यह तुम्हारा गलत हिसाब लगाना है। तुमने यही इस विषय में किया है।"

"तुमने स्वयं भी यह जानने के लिए बहुत हिसाब लगाए होंगे।"

"नहीं, मेरे पास समय नहीं है। मैंने इस लड़की को पहली बार ही देखा है," "काउंटेस बोली, "और यह अन्देशा अचानक मेरे मन में उठ आया है। लड़की मुझे बहुत पसन्द है।"

"मुझे भी है," मैडम मरले ने कहा।

"लेकिन तुम्हारा इसे ज़ाहिर करने का यह अजीब तरीका है।"

"मैंने ही उसे तुमसे मिलने का मौका दिया है।"

"अवश्य," काउंटेस बोली, "यह सबसे अच्छी बात थी जो उसके लिए की जा सकती थी !"

मैडम मरले ने कुछ देर कुछ नहीं कहा। काउंटेस का व्यवहार बहुत घृणित, बहुत घटिया था; लेकिन वह उसकी पुरानी आदत थी। वह अपनी आंखें मौंट मोरेलो की बैंजनी ढलान पर टिकाए कुछ सोचती रही। "माई डियर," अन्त में वह बोली, "मैं तुम्हें परामर्श देती हूं कि तुम व्याकुल मत होओ। जिस विषय की ओर तुम्हारा संकेत है, उससे सम्बन्धित तीन व्यक्ति तुमसे अधिक उसे लेकर उत्सुक हैं।"

"तीन व्यक्ति ? तुम और ऑसमंड अवश्य। लेकिन क्या मिस आर्चर भी उस विषय में उतनी ही उत्सुक है ?"

"हां, उतनी ही जितने कि हम हैं।"

"तब तो," काउंटेस ने एक चमक के साथ कहा, "मैं उसे विश्वास दिला दूं कि उसकी बेहतरी इसी में है कि वह तुमसे बची रहे, तो वह अवश्य ही बड़ी सफलता से ऐसा कर सकेगी।"

"हमसे बची रहे ? तुम अपने को इतनी भद्दी क्यों बनाती हो ? उसे न तो मजबूर किया जा रहा है, और न ही धोखा दिया जा रहा है।"

"मुझे इसका विश्वास नहीं है। तुमसे और ऑसमंड से हर चीज की आशा की जा सकती है। मेरा मतलब न तो अकेले ऑसमंड से है और न ही अकेली तुमसे है। लेकिन तुम दोनों साथ मिलकर बहुत भयंकर हो सकते हो—किन्हीं कैमिकल्ज के सम्मिश्रण की तरह।"

"बेहतर है कि तुम हमें अकेला छोड़ दो," मैडम मरले मुस्कराई।

"मेरा इरादा तुम लोगों को छूने का नहीं है—लेकिन मैं उस लड़की से बात

करूंगी।"

"मेरी प्रिय एमी," मैडम मरले बुदबुदाई, "मैं नहीं समझ सकती कि तुम्हारे दिमाग में क्या समा रहा है।"

"मुझे उस लड़की में रुचि है--यही मेरे दिमाग में समा रहा है। वह मुझे पसन्द है।"

मैडम मरले एक क्षण के लिए हिचकिचाई। "मैं नहीं समझती कि वह तुम्हें पसन्द करती है।"

काउंटेस की चमकीली छोटी आंखें फैलकर गंभीर हो गई थीं। "ओह, तुम बहुत भयानक हो--अकेली भी।"

"अगर तुम चाहती हो कि वह तुम्हें पसन्द करे, तो तुम उसके सामने अपने भाई की निन्दा मत करना," मैडम मरले बोली।

"मैं नहीं मानती कि तुम यह कहना चाहती हो कि दो ही मुलाकातों में वह उससे प्रेम करने लगी है।"

मैडम मरले ने एक क्षण के लिए इज़ाबेल की तरफ देखा और फिर घर के मालिक की तरफ। वह दीवार से पीठ लगाए, इज़ाबेल की तरफ मुंह किए, अपनी बांहों को एक दूसरी में उलझाए खड़ा था; और इज़ाबेल स्पष्टत: उस दृश्य में नहीं खोई थी जिसकी तरफ वह गौर से देख रही थी। जैसे ही मैडम मरले ने उसे देखा, उसने अपनी आंखें झुका लीं। वह संभवत: एक अजीब-सी परेशानी के साथ बात सुन रही थी। मैडम मरले अपनी कुर्सी से उठ गई। "हां, मेरा यही ख्याल है," उसने कहा।

एक गन्दा-सा नौकर आकर बाहर घास पर एक मेज़ रख गया, और फिर वापस अन्दर चाय की ट्रे लाने चला गया। उसके बाद वह फिर से दो कुर्सियां लाने के लिए अदृश्य हो गया। पैंज़ी ने वह सब बहुत गहरी रुचि के साथ देखा। वह अपने दोनों छोटे हाथ एक-दूसरे में उलझाए, अपने छोटे-से फ्राक के अगले हिस्से पर उन्हें रखे खड़ी थी; लेकिन उसने सहायता करने की बात नहीं सोची। जब चाय की मेज़ लग गई तो वह बड़ी शालीनता से अपनी आंटी के पास गई।

"क्या आप समझतीं हैं कि पापा मेरे इस वक्त चाय बनाने पर नाराज़ होंगे?"

काउंटेस ने बिना जवाब दिए उसकी तरफ जान-बूझकर आलोचनात्मक

दृष्टि से देखा। "मेरी बेचारी भतीजी," उसने कहा, "क्या यही तुम्हारा सबसे बढ़िया फ्राक है?"

"जी नहीं," पैंज़ी ने जवाब दिया, "यह तो साधारण अवसरों के लिए एक छोटा-सा फ्राक है।"

"क्या तुम इसे साधारण अवसर कहती हो। जब मैं तुमसे मिलने आती हूं —मैडम मरले और उस दूर खड़ी महिला की बात तो छोड़ ही दो।"

पैंज़ी ने एक क्षण के लिए सोचा, फिर घूमकर एक के बाद दूसरे व्यक्ति की तरफ गंभीरता से देखा। फिर उसका चेहरा एक मुस्कराहट के साथ खिल गया। "मेरे पास एक सुन्दर-सा फ्राक है, लेकिन वह भी बहुत साधारण है। मैं उसे क्यों आपके खूबसूरत कपड़ों के सामने निकालूं?"

"क्योंकि वह तुम्हारा सबसे सुन्दर ड्रेस है। मेरे लिए तो तुम्हें सबसे सुन्दर ड्रेस ही पहनना चाहिए। अगली बार अवश्य पहनना। मुझे ऐसा लगता है कि वे लोग तुम्हें ठीक से कपड़े नहीं पहनाते।"

उस लड़की ने अपने छोटे-से फ्राक को सीधा किया। "यह चाय बनाने के लिए अच्छा फ्राक है—आपके ख्याल में नहीं है? क्या आप सोचती हैं कि पापा मुझे चाय बनाने की इजाज़त देंगे?"

"मेरे लिए कहना असंभव है, मेरी बच्ची," काउंटेस बोली, "मेरे लिए तुम्हारे पिता के विचार बहुत गहरे हैं। मैडम मरले उन्हें बेहतर समझती हैं। उससे पूछो।"

मैडम मरले अपनी स्वाभाविक शालीनता के साथ मुस्कराई। "यह एक बड़ा प्रश्न है—मुझे सोचने दो। मेरा ख्याल है कि यह एक पिता को अच्छा लगेगा कि वह अपनी छोटी-सी सावधान बेटी को अपने लिए चाय बनाते देखें। यह घर की लड़की का ही उचित कर्तव्य है—जब वह बड़ी हो जाती है।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है, मैडम मरले!" पैंज़ी बोली, "आप देखेंगी कि मैं कितनी बढ़िया चाय बनाती हूं। सभी के लिए एक-एक चम्मच चीनी।" और उसने अपने को मेज़ पर व्यस्त कर लिया।

"मेरे लिए दो चम्मच चीनी," काउंटेस बोली, जो एक क्षण मैडम मरले के साथ उसे देखती रही थी। "मेरी बात सुनो पैंज़ी," काउंटेस अब फिर से बोली, "मैं जानना चाहूंगी कि अपनी इस मेहमान के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है।"

"ओह, वे मेरी नहीं—पापा की मेहमान हैं," पैंज़ी ने एतराज किया।

"मिस आर्चर तुमसे भी मिलने आई हैं," मैडम मरले ने कहा।

"मैं यह सुनकर बहुत खुश हूं। वे मेरे साथ बहुत अच्छी रही हैं।"

"तो क्या तुम उसे पसन्द करती हो?" काउंटेस ने पूछा।

"वे बहुत आकर्षक हैं—बहुत आकर्षक," पैंज़ी ने अपनी प्यारी-सी स्वाभाविक आवाज़ में कहा, "मुझे वे हर तरह से पसन्द हैं।"

"और तुम्हारा क्या ख्याल है कि वह तुम्हारे पिता को कैसी लगती हैं?"

"छोड़ो भी न काउंटेस!" मैडम मरले बुदबुदाई। "जाओ और उन्हें चाय के लिए बुला लाओ," उसने बच्ची से कहा।

"आप ज़िम्मेदार होंगी, अगर उन्हें बुरा लगा!" पैंज़ी बोली; और उन दोनों को बुलाने चली गई, जो अब भी टैरेस के सिरे पर रुके थे।

"अगर मिस आर्चर को इसकी मां बनना है तो यह जानना आवश्यक है कि वह उसे कैसी लगती है," काउंटेस बोली।

"अगर तुम्हारा भाई फिर से शादी करेगा तो वह पैंज़ी के लिए नहीं करेगा," मैडम मरले ने जवाब दिया, "वह बहुत जल्दी सोलह की हो जाएगी और उसके बाद उसे पति की आवश्यकता होगी, न कि एक सौतेली मां की।"

"और क्या तुम उसके लिए पति की भी व्यवस्था करोगी?"

"मैं अवश्य ही एक अच्छे व्यक्ति के साथ इसके विवाह में रुचि लूंगी। मैं कल्पना कर सकती हूं कि तुम भी ऐसा ही चाहोगी।"

"नहीं मैं नहीं चाहूंगी।" काउंटेस ऊंचे स्वर से बोली, "मैं क्यों ऐसी औरत बनूंगी जो पति नाम की चीज़ को इतना महत्त्व देती हो?"

"तुम्हारा ब्याह अच्छा नहीं रहा; मैं उसीकी बात कर रही हूं। जब मैं पति का ज़िक्र करती हूं तो मेरा मतलब एक अच्छे पति से होता है।"

"पति कोई भी अच्छा नहीं होता। ऑसमंड तो बिलकुल अच्छा पति नहीं होगा।"

मैडम मरले ने एक क्षण के लिए आंखें मूंद लीं, "तुम इस समय अव्यवस्थित हो; मैं नहीं जानती क्यों," उसने फिर कहा, "मैं नहीं सोचती कि तुम सच में ही अपने भाई की या अपनी भतीजी की शादी पर एतराज़ करोगी, मतलब जब भी ऐसा मौका आएगा। और जहां तक पैंज़ी का सम्बन्ध है, मुझे विश्वास है कि एक

दिन तुम और मैं एक साथ उसके लिए पति खोजने का सुख प्राप्त करेंगी। तुम्हारी विस्तृत जान-पहचान इस चीज़ में सहायक होगी।"

"हां, मैं अव्यवस्थित हूं," काउंटेस ने जवाब दिया, "तुम मुझे अक्सर अव्यवस्थित कर देती हो। तुम्हारी अपनी शान्ति प्रशंसनीय है। तुम एक अजीब औरत हो।"

"यह बेहतर होगा कि हम हमेशा साथ-साथ काम किया करें," मैडम मरले बोलती गई।

"तुम्हारा इरादा धमकी देने का है?" काउंटेस ने उठते हुए पूछा।

मैडम मरले ने अपना सिर खासे विनोद भाव से हिलाया, "नहीं सच ही, तुममें मेरी जैसी शान्ति नहीं है।"

इज़ाबेल और ऑसमंड अब बहुत धीरे-धीरे उनकी तरफ बढ़ रहे थे। इज़ाबेल ने पैंजी का हाथ पकड़ रखा था।

"क्या तुम यह मानने का ढोंग करती हो कि ऑसमंड उसे प्रसन्न रखेगा?" काउंटेस ने पूछा।

"अगर वह मिस आर्चर से शादी कर लेता है तो मेरा ख्याल है वह एक भले आदमी की तरह व्यवहार करेगा।"

काउंटेस ने एक ही झटके से एक के बाद एक कई बातें कह दीं, "क्या तुम्हारा मतलब है कि जैसे अधिकतर भले आदमी करते हैं? इसके लिए उसके प्रति बहुत आभारी होना होगा। यह सच है कि आसमंड भला आदमी है; उसकी बहन को इस बात की याद दिलाने की जरूरत नहीं है। लेकिन क्या वह यह समझता है कि वह हर उस लड़की से शादी कर सकता है जिसपर वह हाथ रख ले? ऑसमंड अवश्य ही भला आदमी है; लेकिन मुझे विश्वास है कि मुझे कभी ऑसमंड के मिथ्याभिमान की वजह समझ नहीं आई। वह किन बातों पर टिका है। यह मेरी समझ से बाहर की बात है। मैं उसकी सगी बहन हूं। मेरा यह जानना स्वाभाविक होना चाहिए। वह क्या है, तुम बता सकती हो? उसने कभी भी कुछ करके दिखाया है? अगर उसमें जन्म से ही कोई महानता होती—वह किसी बढ़िया मिट्टी का बना होता—तो मेरा ख्याल है मुझे उसका आभास होता। अगर हमारे परिवार का कोई महान रुतबा या शान होती तो अवश्य ही मैं भी उसका फायदा उठाती; वह बात काफी हद तक मेरे अनुकूल होती। लेकिन उसमें कुछ

बिलकुल कुछ, नहीं है। हमारे मां-बाप अवश्य अच्छे थे, लेकिन वैसे ही तुम्हारे भी रहे होंगे, मुझे इसमें सन्देह नहीं है। आजकल हर आदमी अच्छा होता है—यहां तक कि मैं भी अच्छी हूं। हंसी नहीं, यह सच में ही किसीने मुझसे कहा था। जहां तक आसमंड का सम्बन्ध है, वह तो समझता है कि वह देवताओं की सन्तान है।"

"तुम्हें जो अच्छा लगे, कह सकती हो," मैडम मरले ने कहा। उसने उसके इस तरह फट पड़ने से उसकी बातों को बड़े गौर से सुना, हालांकि उसकी आंखें काउंटेस से हटकर दूर भटक गई थीं और उसके हाथ अपनी ड्रेस पर बने रिबन को व्यवस्थित करने में व्यस्त हो गए थे। "तुम ऑसमंड लोग एक बहुत अच्छे वंश से हो—तुम्हारा खून अवश्य ही किसी पवित्र स्रोत से आया है। तुम्हारे भाई को एक बुद्धिमान व्यक्ति होने के नाते इस बात का विश्वास है, चाहे उसके पास इसके लिए प्रमाण नही हैं। तुम इसके सम्बन्ध में विनीत हो, लेकिन तुम स्वयं बहुत असाधारण हो। तुम अपनी भतीजी के बारे में क्या सोचती हो? वह बच्ची एक छोटी-सी शाहजादी है," मैडम मरले ने आगे जोड़ा, "आसमंड के लिए मिस आर्चर से शादी करना आसान नहीं होगा। लेकिन फिर भी वह कोशिश कर सकता है।"

"मुझे विश्वास है कि वह उसे इन्कार कर देगी। यह मिस्टर ऑसमंड को थोड़ा नीचे ले आएगा।"

"हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वह सबसे चतुर आदमियों में से है।"

"मैंने यह तुमसे पहले भी सुना है, लेकिन मैंने अब तक नही देखा कि उसने किया क्या है।"

"उसने किया क्या है? उसने ऐसा कुछ नहीं किया जो करके लौटाना पड़े। फिर उसने प्रतीक्षा करना जाना है।"

"मिस आर्चर के पैसे की प्रतीक्षा करना? कितना पैसा है उसके पास?"

"मेरा मतलब इससे नहीं है," मैडम मरले ने कहा, "मिस आर्चर के पास सत्तर हजार पौंड हैं।"

"फिर तो यह दुःख की बात है कि वह सुन्दर भी है," काउंटेस बोली, "बलिदान होने के लिए कोई भी लड़की काफी थी। उसे इसके लिए इतनी महान होने की जरूरत नहीं थी।"

"अगर वह महान न होती तो तुम्हारा भाई उसकी तरफ देखता भी नहीं। उसे सबसे बढ़िया लड़की चाहिए।"

"हां," काउंटेस ने उन लोगों से मिलने के लिए आगे बढ़ते हुए कहा, "उसे सन्तुष्ट करना बहुत कठिन है। यही बात मुझे इज़ाबेल की ख़ुशी के ख्याल से कंपा देती है।"

२६

गिलबर्ट ऑसमण्ड फिर से इज़ाबेल से मिलने पालाज़ो क्रेसेंतीनी में आया। वहां उसके और मित्र भी थे, और मिसेज़ टाउशेट तथा मैडम मरले से वह एक-सा कोमलतापूर्ण व्यवहार करता था। मिसेज़ टाउशेट ने लक्ष्य किया कि पन्द्रह दिन में वह पांच बार वहां आया है, और इसकी तुलना उन्होंने एक और चीज़ से भी की जिसे याद करने में उन्हें कठिनाई नहीं हुई। अब तक मिसेज़ टाउशेट की खातिर वह साल में सिर्फ दो बार वहां आता था। नियमित अन्तराल के बाद वह जब भी वहां आता, ऐसे दिनों में कभी नहीं आता था जब मैडम मरले भी वहां हो। वह मैडम मरले की खातिर कभी वहां नहीं आता था। वे दोनों पुराने मित्र थे और ऑसमण्ड उस महिला के लिए इस तरह का तरद्दुद नहीं उठाता था। रैल्फ से उसे चिढ़ थी--यह स्वयं रैल्फ ने ही उन्हें बतलाया था—और यह नहीं सोचा जा सकता था कि अचानक रैल्फ के लिए उसके मन में प्रेम उमड़ आया होगा। रैल्फ इससे अव्यवस्थित नहीं होता था। उसमें एक ढीली-ढाली-सी शालीनता थी जो उसे एक बेढंगे ओवरकोट की तरह ढके रहती थी और जिसे वह कभी उतारता नहीं था। उसे मिस्टर ऑसमण्ड का साथ बुरा नहीं लगता था, और वह कभी भी उसे एक अतिथि के रूप में देखने को तैयार था। पर वह यह मानने को तैयार नहीं था कि उस आदमी के अब बार-बार वहां आने का उद्देश्य अपने पहले के अन्याय की क्षति-पूर्ति करना है--उसके सामने स्थिति इससे अधिक स्पष्ट थी। ऑसमण्ड के लिए इज़ाबेल ही एकमात्र आकर्षण थी, और यह आकर्षण काफी बड़ा था। ऑसमण्ड एक आलोचक और सौन्दर्य का उपासक

था––यह स्वाभाविक ही था कि ऐसी अद्भुत आकृति को लेकर उसके मन में उत्सुकता हो। इसलिए जब मिसेज़ टाउशेट ने रैल्फ से कहा कि उन्हें स्पष्ट लग रहा है कि ऑसमण्ड के मन में क्या है, तो वह तुरन्त उनसे सहमत हो गया। बहुत पहले से यह आदमी मिसेज़ टाउशेट की छोटी-सी सूची में अपना स्थान बना चुका था––यद्यपि वे आश्चर्य करती थीं कि किस कला या प्रक्रिया से वह व्यक्ति हर जगह एक प्रभाव पैदा कर लेता है। नकारात्मक होते हुए भी ऑसमण्ड की कला में एक चातुर्य था। क्योंकि वह कभी बेमौके का मेहमान बनकर नहीं आता था, इसलिए उसके अप्रिय होने का कोई अवसर नहीं आया था। उसके रंग-ढंग से मिसेज़ टाउशेट को यह आभास होता था कि जैसे वे उसके बिना रह सकती हैं, वैसे ही वह भी उनके बिना रह सकता है। किसी भी व्यक्ति में यह गुण मिसेज़ टाउशेट को उससे सम्बन्ध बनाए रखने में सहायता देता था। पर इस बात ने मिसेज़ टाउशेट को कोई सन्तोष नहीं दिया कि ऑसमण्ड ने उनकी भांजी से विवाह करने का विचार अपने दिमाग में बैठा लिया है। इज़ाबेल का इस तरह के सम्बन्ध को स्वीकार करना विपरीत बुद्धि की एक बीभत्स-सी बात होती। मिसेज़ टाउशेट यह भूली नहीं थीं कि इस लड़की ने एक अंग्रेज़ लॉर्ड के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था। वह युवती जिसके साथ लार्ड वारवार्टन सफलता नहीं पा सका, कैसे एक ख्यातिहीन अमरीकन कला-प्रेमी के साथ—एक अधेड़ विधुर के साथ —सन्तुष्ट रह सकती थी जिसकी एक औघड़-सी लड़की थी, और आय बहुत कम थी। यह बात मिसेज़ टाउशेट की सफलता-सम्बन्धी धारणा के अनुकूल नहीं थी, वे विवाह को भावना की नहीं, उपयोगिता की दृष्टि से परखती थीं, और यह दृष्टिकोण अपने में काफी अच्छा था। "मुझे विश्वास है कि वह ऑसमण्ड की बात सुनने की गलती नहीं करेगी", उन्होंने अपने बेटे से कहा। रैल्फ ने उत्तर में कहा कि इज़ाबेल का उसकी बात सुनना अलग चीज़ है, और उसका जवाब देना बिलकुल अलग चीज़। वह जानता था कि अपने पिता के शब्दों में उसने जीवन में बहुत-सी 'पार्टियों' की बात सुनी है, पर बदले में उन्हें अपनी बात भी सुनाई है। उसे यह मनोरंजक लग रहा था कि इज़ाबेल को जानने के कुछ महीनों के अन्दर ही एक और प्रार्थी उस लड़की के दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ है। इज़ाबेल ज़िन्दगी देखना चाहती थी और भाग्य उसकी इस रुचि को पूरा कर रहा था। एक के बाद एक भला आदमी उसके सामने घुटने टेक रहा था। यह उतना

ही अच्छा था जितना और कुछ भी हो सकता था। रैल्फ को आशा थी कि इसके बाद चौथा, पांचवां और दसवां प्रार्थी भी आएगा—उसे विश्वास नहीं था कि इज़ाबेल तीसरे आदमी पर ही रुक जाएगी। वह अपना दरवाज़ा खुला रखेगी और वहीं से बात करती रहेगी—निःसन्देह वह इस तीसरे नंबर के आदमी को अन्दर दाखिल नहीं होने देगी। उसने अपनी यह धारणा कुछ इसी तरह अपनी मां के सामने प्रकट की, तो उन्होंने इस तरह इसे देखा जैसे कि वह उनके सामने एक अलबेला नाच नाच रहा हो। रैल्फ का बात करने का ढंग इतना कल्पनाशील और चित्रात्मक था कि वह उन्हें बहरे-गूंगों की भाषा में भी अपनी बात समझा सकता था।

"मैं नहीं जानती तुम क्या कहना चाहते हो," वे बोलीं, "तुम इतनी आलंकारिक भाषा में बात करते हो, और ये रूपक कभी मेरी समझ में नहीं आते। भाषा के जिन दो शब्दों की मैं सबसे ज़्यादा कद्र करती हूं, वे हैं 'हां' और 'न'। इज़ाबेल ऑसमण्ड से शादी करना चाहेगी, तो तुम्हारी सारी उपमाओं के बावजूद कर लेगी। जो कुछ वह करती है, उसके लिए उपमा स्वयं उसीको ढूंढ़ने दो। मैं उस अमरीका वाले युवक के बारे में बहुत कम जानती हूं। मैं नहीं समझती कि यह उसके बारे में ज़्यादा सोचती होगी, और मेरा ख्याल है कि वह भी इसका इन्तजार कर-करके थक गया होगा। अगर यह एक खास नजर से मिस्टर ऑसमण्ड को देखती है, तो दुनिया की कोई चीज़ इसे उससे विवाह करने से नहीं रोक सकती। यह सब तो ठीक है, क्योंकि मुझसे ज़्यादा कोई इस चीज को नहीं मानता कि आदमी को सिर्फ अपनी ही खुशी की बात सोचनी चाहिए। पर इस लड़की को जाने कैसी-कैसी अजीब चीज़ों में खुशी मिलती है। वह मिस्टर ऑसमण्ड से सिर्फ इसलिए शादी कर सकती है कि वह इतने अच्छे ढंग से कुछ चीज़ों के बारे में अपनी राय प्रकट करता है, या कि उसके पास माइकेल एंजेलो का ऑटोग्राफ है। वह उदासीन रहना चाहती है, जैसे कि उदासीन न रह सकने का खतरा सिर्फ उसीको हो। पर क्या जब इज़ाबेल का पैसा उसे खर्च करने को मिल जाएगा, तो ऑसमण्ड भी इतना ही उदासीन रह सकेगा? तुम्हारे पिता की मृत्यु से पहले इस लड़की के मन में यही भाव था और तब से इसका आकर्षण उसके मन में और भी बढ़ गया है। इसे किसी ऐसे ही व्यक्ति से शादी करनी चाहिए जिसकी उदासीनता के सम्बन्ध में यह निश्चित हो सके—और इस चीज़ का इससे अच्छा कोई प्रमाण

नहीं हो सकता कि उस व्यक्ति के पास अपनी सम्पत्ति हो।"

"मुझे इसका डर नहीं है," रैल्फ ने उत्तर दिया, "वह हम सबको बेवकूफ बना रही है। वह करेगी ज़रूर अपने मन की, पर वह ऐसा करेगी मानव-स्वभाव को बहुत पास से देखते हुए भी अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करके। वह एक खोज-सम्बन्धी यात्रा पर निकली है और मैं नहीं समझता कि यात्रा के आरम्भ में ही मिस्टर ऑसमण्ड से एक सिग्नल पाकर वह अपना रास्ता बदल देगी। हो सकता है थोड़े समय के लिए उसकी रफ्तार कम हो जाए, पर हमें पता भी नहीं चलेगा कि कब वह फिर से एकाएक रफ्तार पकड़ लेगी। क्षमा करना मैं फिर एक रूपक इस्तेमाल कर रहा हूं।"

"मिसेज़ टाउशेट ने उसे क्षमा तो शायद कर दिया, पर इतनी आश्वस्त नहीं हुई कि अपना भय मैडम मरले के सामने प्रकट करने से अपने को रोके रहतीं। "तुम सब कुछ जानती हो, उन्होंने कहा, इसलिए इसका भी तुम्हें पता होगा कि वह विचित्र प्राणी कहीं सचमुच ही तो मेरी भांजी से प्रेम नहीं करने लगा।"

"कौन, गिलबर्ट ऑसमंड ?" मैडम मरले की आंखें फैल गईं, और पूरे सचेत भाव से यह कह उठी, "ईश्वर बचाए ! कैसा ख्याल है !"

"तुम्हें यह ख्याल नहीं आया ?"

"मैं अपने को बेवकूफ लग रही हूं, पर सचमुच यह ख्याल मुझे नहीं आया। मुझे नहीं लगता कि इज़ाबेल को भी ऐसा ख्याल आया होगा।"

"मैं अब उससे पूछूंगी," मिसेज़ टाउशेट बोलीं।

मैडम मरले सोचती रही। "यह ख्याल उसके दिमाग में मत डालो। इससे बेहतर है मिस्टर ऑसमंड से पूछ लिया जाए।"

"उससे मैं नहीं पूछ सकती," मिसेज़ टाउशेट ने कहा, "मुझे यह बरदाश्त नहीं होगा कि वह अपने उस खास अन्दाज़ में मुझसे सवाल करे कि मैं इसमें कौन होती हूं ?"

"उससे मैं पूछ लूंगी", मैडम मरले ने साहस के साथ कहा।

"पर उस आदमी के लिहाज़ से तुम इसमें कौन होती हो ?"

"मैं कोई नहीं होती, इसीलिए मैं पूछ सकती हूं। मेरा इस चीज़ से इतना कम सरोकार है कि वह मुझे कुछ भी कहकर टाल सकता है। पर वह जिस ढंग से बात करेगा, उसीसे मुझे पता चल जाएगा।"

"तो तुम," मिसेज़ टाउशेट बोलीं, "मुझे अपनी खोज का परिणाम बतला देना : मैं उससे बात चाहे नहीं कर सकती, पर इज़ाबेल से तो बात कर ही सकती हूं।"

इस पर मैडम मरले ने उन्हें चेतावनी दी। "इस मामले में जल्दी न करो। उस लड़की की कल्पना को भड़काओ नहीं।"

"मैंने अपनी ज़िन्दगी में कभी किसीकी कल्पना को नहीं छेड़ा। पर मुझे विश्वास है कि वह ऐसा कुछ भी कर सकती है जो मैं नहीं करूंगी।"

"हां, तुम्हें यह चीज़ पसन्द नहीं आएगी," मैडम मरले ने बिना प्रश्नात्मक स्पर्श के कहा।

"पसन्द आने की कोई वजह मुझे बता सकती हो ? मिस्टर ऑसमंड के पास उसे देने को कोई भी ठोस चीज़ नहीं है।"

मैडम मरले ख़ामोश रहीं। उसकी विचारपूर्ण मुस्कराहट ने उसका मुंह हमेशा से कहीं आकर्षक ढंग से बाईं तरफ को मोड़ दिया। "देखो, हमें अन्तर समझ लेना चाहिए। गिलबर्ट ऑसमंड उसके जीवन में आने वाला पहला व्यक्ति नहीं है। अनुकूल परिस्थितियों में वह व्यक्ति गहरा प्रभाव डालने की योग्यता रखता है। जहां तक मैं जानती हूं, वह पहले कितनी ही बार ऐसा प्रभाव डाल चुका है।"

"मुझे उसके ठण्डे दिल के प्रेम-प्रसंगों के बारे में मत बतलाओ। मुझे उनसे कोई मतलब नहीं है," मिसेज़ टाउशेट ऊंचे स्वर में बोलीं, "जो तुम कह रही हो, ठीक उसी वजह से मैं चाहती हूं कि वह यहां आना बन्द कर दे। यहां तक मैं जानती हूं, उसके पास कुछ भी नहीं है, सिवाय दो-एक दर्जन पुराने महान् कलाकारों की कृतियों के और उस छोटी-सी मुंहज़ोर लड़की के।

"पुरानी कलाकृतियां अब बहुत बहुमूल्य हैं," मैडम मरले ने कहा, "और वह लड़की बेचारी बहुत छोटी, बहुत भोली और बहुत निर्दोष है।"

"दूसरे शब्दों में वह एक छोटी-सी जड़ लड़की है। यही तुम्हारा मतलब है न ? पास में धन न होने से वह उस तरह शादी करने की आशा नहीं कर सकती जैसे यहां की जाती है। इसलिए इज़ाबेल को या तो उसे दहेज़ देना पड़ेगा, या ख़र्चा।"

"इज़ाबेल को लड़की के लिए कुछ करना बुरा नहीं लगेगा। मेरा ख़्याल है

वह बेचारी लड़की उसे पसन्द है।"

"यह और भी वजह है कि मिस्टर ऑसमण्ड यहां न आए ! नहीं तो हफ्ते भर में मेरी भांजी की धारणा बन जाएगी कि उसके जीवन का मिशन यह प्रमाणित करना है कि एक सौतेली मां का कर्तव्य आत्म-बलिदान करना है—और कि इसे प्रमाणित करने के लिए उसे पहले एक सौतेली मां बनना चाहिए।"

"वह बहुत सुन्दर सौतेली मां होगी," मैडम मरले मुस्कराई, "पर मैं यहां तुमसे सहमत हूं कि उसे बहुत जल्दबाज़ी में अपना मिशन तय नहीं करना चाहिए। अपने मिशन का रूप बदलना व्यक्ति के लिए उतना ही मुश्किल है जितना अपनी नाक का आकार बदलना। आदमी के चरित्र या चेहरे के बीचों-बीच ये चीज़ें अपनी जगह पर जड़ी रहती हैं—उनकी शुरुआत बहुत पीछे से होती है। खैर मैं पता लगाकर तुम्हें बताऊंगी।"

ये बातें इज़ाबेल के परोक्ष में हो रही थीं। उसे आभास तक नहीं था कि ऑसमण्ड के साथ उसके सम्बन्ध को लेकर इस तरह की चर्चा हो रही है। मैडम मरले ने उसे कोई चेतावनी नहीं दी थी। वह ऑसमण्ड का उससे ज़्यादा ज़िक्र नहीं करती थी जितना कि फ्लोरेंस के रहने वाले अन्य स्थानीय तथा विदेशी पुरुषों का, जो काफी बड़ी संख्या में मिस आर्चर की आंट से मिलने आते रहते थे। इज़ाबेल को ऑसमण्ड दिलचस्प आदमी लगता था—वह उसके बारे में इसी रूप में सोचती थी। पहाड़ी की चोटी पर बने उसके घर से वह जो बिम्ब मन में लेकर आई थी, वह उसे बाद में ज़्यादा जानकर बुझा नहीं था। उस उसमें और अन्य इष्ट तथा कल्पित चीज़ों में, इतिहास-गर्भित इतिहासों में, एक विशेष सामंजस्य नज़र आता था। यह बिम्ब एक खामोश, चतुर, संवेदनशील तथा विशिष्ट व्यक्ति का था जो बाल द'आर्नो के ऊपर अपने काई-लदे टैरेस पर टहलता रहता था, और अपनी उस छोटी-सी लड़की का हाथ पकड़े रहता था जिसकी घण्टी जैसी साफ आवाज़ शैशव को एक नया ही सौन्दर्य प्रदान करती थी। इस चित्र में कोई गहरे रंग नहीं थे, पर इज़ाबेल को यह हल्का रंग ही पसन्द था—साथ ही गर्मी की सांझ का वह वातावरण जो उसे छाए था। इसमें उसके लिए एक व्यक्तिगत स्पर्श था जो बहुत अंतरंग था। यह एक चुनाव था—वस्तुओं या सम्पर्कों के—उसे क्या कहना चाहिए—हल्के और गहरे सम्बन्धों के बीच। यह चुनाव था एक सुन्दर देश में अध्ययनशील जीवन का, एक पुराने-

से दुःख का जिसकी पीड़ा आज भी बनी थी, एक गर्वभावना का जो शायद अतिरंजित होते हुए भी अपने में एक तरह की उदात्तता लिए थी, और सुन्दरता तथा पूर्णता की एक ऐसी दृष्टि का जो प्राकृतिक होते हुए भी संस्कारशील थी। पालाज़ो क्रेसेंतीनी में भी मिस्टर ऑसमण्ड का भाव वही बना रहता था—संकोचशील और बहुत आत्मचेतन। इसके साथ इस दोष को दूर करने का प्रयत्न भी रहता था। जिसे केवल सहानुभूतिपूर्ण आंख ही देख सकती थी। इस प्रयत्न का परिणाम प्रायः होता था काफी सहज, सजीव, निश्चित और लगभग आक्रामक, भावपूर्ण बातचीत। मिस्टर ऑसमण्ड की बातचीत में प्रभाव डालने की इच्छा का संकेत नहीं मिलता था। इज़ाबेल को उस व्यक्ति की ईमानदारी को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं होती थी जो हर बात विश्वास के आग्रह के साथ करता था। वह उसी आग्रह-के साथ अपने पक्ष में कही गई बात की प्रशंसा भी करता था, विशेष रूप से यदि वह बात इज़ाबेल की कही हो। जिस चीज़ की इज़ाबेल को ज्यादा खुशी होती थी, वह यह थी कि मनोरंजन के लिए बात करते हुए भी कभी 'प्रभाव डालने' के लिए बात नहीं करता था। वह अपने विचार, जो काफी विचित्र जान पड़ते थे, ऐसे प्रकट करता था जैसे वह उनका आदी हो, और उनके साथ जिया हो। एक दिन ऑसमण्ड अपनी लड़की को साथ ले आया। इज़ाबेल को उस लड़की से फिर से मिलकर बहुत खुशी हुई। पैंज़ी ने उस समुदाय के हर व्यक्ति का चुम्बन पाने के लिए अपना माथा आगे बढ़ाया, तो इज़ाबेल को एक फ्रांसीसी नाटक की एक भोली-भाली लड़की की याद हो आई। इज़ाबेल ने इस तरह की कोई लड़की पहले देखी ही नहीं थी—अमरीकन लड़कियां बिलकुल अलग तरह की होती थीं, और इंग्लैण्ड की लड़कियां भी बिलकुल दूसरी तरह की थीं। पैंज़ी दुनिया में अपनी छोटी-सी जगह पाने के लिए ठीक से ढाली और तैयार की गई थी, फिर भी कल्पना में वह बहुत भोली और बच्ची-सी जान पड़ती थी। वह सोफे पर इज़ाबेल के पास बैठी थी। उसने छोटा-सा ऊनी शाल ले रखा था, और मैडम मरले के दिए उपयोगी दस्ताने पहन रखे थे—वे एक बटन वाले छोटे-छोटे दास्ताने थे। वह खाली कागज़ के एक शीट की तरह थी—विदेशी कथा-साहित्य की आदर्श बालिका जैसी। इज़ाबेल को आशा थी कि इतने साफ और चिकने पन्ने पर कोई गौरवपूर्ण लिपि ही लिखी जाएगी।

काउंटेस जेमिनी भी इज़ाबेल से मिलने आई, पर उसकी बात बिलकुल

दूसरी थी। वह कोरा पन्ना नहीं थी—उसपर अलग-अलग हाथों ने कितनी ही लिपियां लिखी थीं। मिसेज़ टाउशेट को उसके आने से खुशी नहीं हुई। उन्होंने जतलाया कि उसकी सतह पर कितने ही धब्बे साफ देखे जा सकते हैं। काउंटेस को लेकर मिसेज टाउशेट और मैडम मरले में खासी बहस हो गई। मैडम मरले (जो इतनी मूर्ख नहीं थी कि हर बात में दूसरों से सहमत होकर उन्हें झुंझला दे) बहुत खुलकर अपनी असहमति प्रकट करती रही—यह अधिकार उसे मिसेज़ टाउशेट से उसी मात्रा में मिल जाता था जिस मात्रा में वह इसका उपयोग करना चाहती थी। मिसेज़ टाउशेट की नज़र में यह उस स्त्री की गुस्ताखी थी कि वह दिन में ऐसे वक्त पालाज़ो क्रेसेंतीनी जैसे घर के दरवाज़े पर आ पहुंचे जहां कि उसे बहुत पहले से पता था कि उसकी ज़रा भी इज़्ज़त नहीं है। इज़ाबेल को पता चल चुका था कि इस स्त्री के सम्बन्ध में उस घर के लोगों की क्या धारणा है। उस धारणा के अनुसार काउंटेस एक ऐसी स्त्री थी जिसका अशिष्ट आचरण इतना अव्यवस्थित था कि उसका कोई सूत्र ही नहीं बनता था—ऐसे मामले में कम से कम इतनी आशा तो की ही जाती थी। पर काउंटेस का स्वच्छन्द आचरण विध्वस्त ख्याति के छोटे-छोटे टुकड़ों में इस तरह फैला था कि सामाजिक स्तर पर उसकी चर्चा भी नहीं की जा सकती थी। उसकी मां ने, जो कि अधिक अधिकारपूर्ण थी, उसका ब्याह विदेशी उपाधियों के मोड़ में पड़कर एक इतालवी भद्र व्यक्ति से कर दिया था—पर काउंटेस ने अब तक उन सब उपाधियों को उतार फेंका था। उस आदमी ने शायद विवाहित जीवन के अतिक्रमण का कुछ कारण भी इसे दे दिया था। इसने अतिक्रमण इस मात्रा में किया था कि इसके कृत्यों के विस्तार में कारण बेचारे गुम होकर रह गए थे। काउंटेस ने पहले भी मिसेज़ टाउशेट के यहां आना-जाना चाहा था, पर मिसेज़ टाउशेट ने कभी उसे इसके लिए बढ़ावा नहीं दिया था। फ्लोरेंस चाहे बिलकुल पवित्र आचरण करने वालों का शहर नहीं था, फिर भी मिसेज़ टाउशेट का कहना था कि उस स्त्री को कहीं तो लकीर खींचनी चाहिए थी।

मैडम मरले ने बहुत उत्साह और कौशल से उस अभागी स्त्री की वकालत की। कहा कि मिसेज टाउशेट नाहक उस निर्दोष स्त्री को निशाना बना रही हैं, जो बेचारी अच्छा काम सिर्फ गलत ढंग से करती रही है। आदमी को लकीर ज़रूर खींचनी चाहिए, मगर सीधी लकीर खींचनी चाहिए। एक बहुत टेढ़ी-मेढ़ी चाक

की लकीर ही काउंटेस जेमिनी को अलग कर सकती थी। ऐसा ही है, तो मिसेज टाउशेट को चाहिए कि अपने घर के दरवाज़े बिलकुल बन्द रखें—फ्लोरेंस में रहते उनके लिए यही रास्ता अपनाना ठीक होगा। आदमी को खामख्वाह का भेद नहीं करना चाहिए। काउंटेस दुर्विनीत रही थी, अन्य स्त्रियों की तरह उसने चालाकी नहीं बरती थी। वह स्वभाव की अच्छी थी, चतुर बिलकुल नहीं थी। पर इसीके लिए क्या किसीको अच्छे समाज से बाहर रखा जा सकता था ? बहुत दिनों से उस बेचारी के बारे में कुछ भी नहीं सुना जा रहा था। उसके गलत रास्ते से हट जाने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता था कि वह मिसेज टाउशेट के सर्कल की सदस्य बनना चाहती थी ? इज़ाबेल ने इस दिलचस्प बहस में भाग नहीं लिया; उस तरफ ध्यान भी नहीं दिया। उसने अपने को उस अभागी स्त्री का मित्रतापूर्ण ढंग से स्वागत करने तक सीमित रखा। उसमें चाहे कितने दोष हों, आखिर थी तो वह मिस्टर ऑसमण्ड की बहन ! इज़ाबेल को लगता था कि वह भाई को पसन्द करती है, तो उसे बहन को भी पसन्द करने की कोशिश करनी चाहिए—बढ़ती उलझनों के बावजूद वह इन आदिम संगतियों को मन में रख सकती थी। ऑसमंड के विला में काउंटेस से मिलने पर उसके मन पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा था, इसलिए वह उस प्रभाव को सही करने के इस अवसर के लिए आभारी थी। मिस्टर ऑसमण्ड ने क्या यह नहीं कहा था कि यह एक सम्माननीय महिला है ? मिस्टर ऑसमण्ड के मुंह से यह बात कुछ भोंड़ी-सी लगी थी, पर मैडम मरले ने थोड़ा पालिश लगाकर उसे चमका दिया था। ऑसमण्ड ने काउंटेस के बारे में इज़ाबेल को जितना बतलाया था, उसने उससे कहीं ज्यादा बतलाते हुए काउंटेस के ब्याह और उसके बाद का इतिहास भी सुनाया। काउंटेस एक प्राचीन टस्कन परिवार का सदस्य था। पर उसकी सम्पत्ति इतनी सीमित थी कि उसने खुशी से एमी ऑसमण्ड से ब्याह कर लिया। एमी का संदिग्ध सौन्दर्य तब तक उसकी स्वीकार्यता में बाधक नहीं बना था। उसके साथ दहेज़ की रकम बहुत थोड़ी-सी थी—लगभग उतनी ही जितनी कि उसके भाई को पैतृक दाय-भाग के रूप में मिली थी। उसके बाद काउंट को कुछ पैसा विरासत में मिल गया था, और अब, काउंटेस की फिज़ूलखर्ची के बावजूद, इतालवी दृष्टि से उनका स्तर काफी अच्छा था। काउंट एक हीन स्तर का पशु था जिसने एमी को हर शिकायत का मौका दिया था। एमी के कोई बच्चा नहीं था। तीन बच्चे पैदा होने से साल-भर के अन्दर गुज़र गए थे। एमी की मां,

जिसे बहुत पढ़ी-लिखी होने का दावा था, और जो इंग्लिश साप्ताहिक पत्रिकाओं में अपनी वर्णनात्मक कविताएं तथा इतालवी जीवन सम्बन्धी लेख छपाती थी, उसके विवाह के तीन साल के अन्दर परलोक सिधार गई थी। उसके पिता की, जिनकी ख्याति एक धनी और उद्दण्ड व्यक्ति के रूप में थी, बहुत पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। मैडम मरले का कहना था कि गिलबर्ट ऑसमण्ड को देखकर ही पता चल जाता है कि उसे एक स्त्री ने पाला है। फिर भी ऑसमण्ड के साथ न्याय करने के लिए कहना होगा कि वह स्त्री उसकी मां से, जो अपने को अमरीकन कोरिन कहती थी, कहीं अधिक समझदार होनी चाहिए थी। अपने पति की मृत्यु के बाद मिसेज़ ऑसमण्ड अपने बच्चों को इटली ले आई थी। मिसेज़ टाउशेट को उसके आने के बाद का पहला साल याद था। वह स्त्री उन्हें बहुत नकचढ़ी जान पड़ी थी। मिसेज़ टाउशेट के लिहाज़ से यह राय कुछ असंगत-सी थी, क्योंकि मिसेज़ ऑसमण्ड भी उन्हींकी तरह व्यावहारिक शादियों के पक्ष में थी। काउंटेस साथ के लिए काफी अच्छी स्त्री थी, और उतनी मूर्ख नहीं थी जितनी कि जान पड़ती थी। उसके साथ चलने का एक ही तरीका था कि आदमी उसके कहे एक शब्द पर भी विश्वास न करे। मैडम मरले उसके भाई की खातिर हमेशा उससे निभाती आई थी। एमी के प्रति सद्व्यवहार ऑसमण्ड को अच्छा लगता था, क्योंकि उसे लगता था कि एमी उनके पारिवारिक नाम को छोटा कर रही है। स्वभावतः ऑसमण्ड को एमी की शैली, तीखी आवाज़, अहंकार और सुरुचि तथा सचाई का उल्लंघन पसन्द नहीं था। उसपर ऑसमण्ड को बहुत गुस्सा आता था—वैसी स्त्री उसे पसन्द नहीं थी। ऑसमण्ड को कैसी स्त्री पसन्द थी? वैसी जो काउंटेस के बिलकुल विपरीत हो, जो स्वभावतः सचाई की पवित्रता में विश्वास रखती हो। इज़ाबेल अनुमान लगाने में असमर्थ थी कि आधे घण्टे में ही कितनी बार काउंटेस ने इसका उल्लंघन किया है—उसे बस वह एक सादा और मूर्ख-सी स्त्री नज़र आ रही थी। ज़्यादातर काउंटेस अपने ही बारे में बात करती रही थी। बताती रही थी कि मिस आर्चर को ठीक से जानकर उसे कितनी खुशी होगी। कि एक अच्छी मित्रता पाकर वह कितना आभार अनुभव करेगी कि फ्लोरेंस के लोग कितने कमीने हैं। कि वह वहां से कितना ऊब गई है। कि उसे कहीं और—पेरिस या लन्दन में—रहना कितना अच्छा लगेगा। कि पुरानी लेस को छोड़कर इटली में पहनने की कोई अच्छी चीज़ ढूंढ़ लेना कितना मुश्किल है। कि सब जगह महंगाई कितनी बढ़ती

जा रही है; और कि उसने कैसा दुःख और अभावपूर्ण जीवन बिताया है। मैडम मरले रुचि के साथ इज़ाबेल के इस विवरण को सुनती रही। चिन्तामुक्त होने के लिए उसे इसकी आवश्यकता नहीं थी। कुल मिलाकर वह काउंटेस की ओर से आशंकित नहीं थी—और इस स्थिति में सबसे अच्छी बात वह यही कर सकती थी कि किसी तरह की आशंका ज़ाहिर न करे।

एक और महिला भी इज़ाबेल से मिलने आई हुई थी जिससे उसकी अनुपस्थिति में भी ऊंचे नहीं उठा जा सकता था। हेनरीटा स्टैकपोल, मिसेज़ टाउशेंड के सान रेमो के लिए रवाना होने पर पेरिस चली गई थी। फिर इटली के उत्तरी शहरों में से होती हुई मई के मध्य में आर्नो के तट पर पहुंच गई थी। मैडम मरले ने एक ही नज़र में उसे सिर से पैर तक भांप लिया, और निराशा की एक चुभन के बाद उसे बरदाश्त करने का निश्चय कर लिया। उसने बल्कि तय किया कि वह हेनरीटा के साथ प्रसन्न भाव बनाए रहेगी। वह उसे एक गुलाब की तरह सूंघ नहीं सकती थी, पर एक बिच्छू-बूटी की तरह हाथ में लिए रह सकती थी। मैडम मरले ने उसके प्रति एक कोमल उदासीनता अपना ली, तो इज़ाबेल को लगा कि अपनी इस मित्र की प्रतिभा में उसका विश्वास गलत नहीं था। हेनरीटा के आने की सूचना उसे बैंटलिंग से मिली थी। वह हेनरीटा से मिलने नाइस से फ्लोरेंस आया था, पर हेनरीटा तब तक अभी वेनिस में थी। हेनरीटा को वहां न पाकर बैंटलिंग अपनी निराशा प्रकट करने पालाज़ो क्रेसेंतीनी में चला आया था। हेनरीटा स्वयं दो दिन बाद वहां प्रकट हुई। इससे मिस्टर बैंटलिंग के मन में जो अत्यधिक भावना जाग उठी, उसका कारण यह था कि वार्सेल्ज़ के सहवास की समाप्ति के बाद से वह उससे नहीं मिला था। इस स्थिति को सब लोगों ने विनोद में लिया, पर अपना विनोद शब्दों में केवल रैल्फ ने प्रकट किया। अपने कमरे के एकान्त में, जब बैंटलिंग उसके सामने बैठा सिगार पी रहा था, उसने सर्व-निर्णायिका हेनरीटा और उसके पिष्ट-पोषक बैंटलिंग को लेकर न जाने क्या-क्या चुटकियां लीं। बैंटलिंग ने मज़ाक का बुरा नहीं माना, और खुलकर स्वीकार किया कि उसकी नज़र में यह एक बौद्धिक साहस-यात्रा है। उसे मिस स्टैकपोल बहुत पसन्द थी। उसका ख्याल था कि हेनरीटा एक अद्भुत मस्तिष्क की स्वामिनी है, और इस स्त्री के संसर्ग में उसे बहुत सुख मिलता है जो इस बात की कभी परवाह नहीं करती कि जो कुछ वह करे या वे दोनों करे—(और उन दोनों ने बहुत कुछ किया था!)—उस सबको लोग कैसे

देखते हैं, और उस बारे में क्या, कहते हैं। क्या किसे कैसा लगता है, इसकी मिस स्टैकपोल को ज़रा चिन्ता नहीं थी—और जब मिस स्टैकपोल को चिन्ता नहीं थी, तो वही क्यों चिन्ता करे ? पर वह यह जानने को उत्सुक था कि क्या वह कभी चिन्ता नहीं करेगी ? जिस हद तक हेनरीटा जा सकती थी, उस हद तक वह भी जाने को तैयार था—पहले थककर परे हट जाने का उसका इरादा नहीं था।

हेनरीटा के थकने का कोई लक्षण नज़र नहीं आ रहा था। लन्दन छोड़ने के बाद उसे अपने लिए अधिक सम्भावनाएं नज़र आने लगी थीं और वह अब अपने विशाल साधनों का खुलकर उपयोग कर रही थी। हां, अन्दरूनी जीवन देखने की आशा उसने छोड़ दी थी। कान्टिनेंट में सामाजिक पक्ष को लेकर उससे कहीं अधिक कठिनाइयां थीं जितनी कि इंग्लैंड में उसके सामने आई थी। पर कांटिनेंट का अपना बाह्य जीवन था जो हर जगह दृश्य और गोचर था और जिसे इंग्लैंड के पुराने द्वीपवासियों के रीति-रिवाजों की अपेक्षा अधिक सुविधा से साहित्यिक उपयोग में ढाला जा सकता था। वह बहुत विलक्षण भाव से कहती कि विदेशों में और हर जगह व्यक्ति घर से बाहर निकलकर टेपेस्ट्री को सीधी तरफ से देख सकता था, पर इंग्लैंड में उसकी सिर्फ उल्टी तरफ ही सामने आती थी जिससे उसपर बनी आकृति का ठीक अनुमान नहीं होता था। यह स्वीकृति इस इतिहासकार को कष्ट दे रही है, पर सच यही है कि आन्तरिक जीवन की ओर से निराश होकर हेनरीटा अब बाह्य जीवन की ओर अधिक ध्यान देने लगी थी। वेनिस में दो महीने रहकर वह इसी पक्ष का अध्ययन करती रही थी। वहां से उसने इंटरव्यूअर को इसका विस्तृत विवरण भेजा था जिसमें गोंडोला थे, पिआज़ा थे, ब्रिज आफ साई'ज़ था, कबूतर थे, और तासो गाने वाला युवा माझी था। इंटरव्यूअर को शायद इससे निराशा हुई थी, पर कम से कम हेनरीटा तो यूरोप देख ही रही थी। अब उसका इरादा मलेरिया शुरू होने से पहले रोम जाने का था—उसका शायद ख्याल था कि वहां मलेरिया एक खास तारीख से शुरू होता है। इस योजना के अनुसार वह बस कुछ ही दिन फ्लोरेंस में रुकना चाहती थी। मिस्टर बैंटलिंग को उसके साथ रोम जाना था। हेनरीटा ने इज़ाबेल से कहा कि सीज़रों के उस शहर में बैंटलिंग उसके लिए बहुत उपयोगी साथी सिद्ध होगा, क्योंकि एक तो वह पहले वहां जा चुका था, और यूं भी फौजी आदमी था, और दूसरे उनसे क्लासिकल शिक्षा प्राप्त कर रखी थी—उसकी पढ़ाई एटन में हुई थी जहां हेनरीटा के अनुसार

सिवाय लेटिन और व्हाइट-मेलविल के कुछ पढ़ाया ही नहीं जाता। इसी समय रैल्फ के दिमाग में यह ख्याल उठा कि इज़ाबेल को भी, उसके संरक्षण में, रोम का चक्कर लगा आना चाहिए। ठीक है इज़ाबेल ने अगली सर्दियों का कुछ हिस्सा वहां बिताने का निश्चय कर रखा था—पर उससे पहले एक बार जगह की जांच-परख कर लेने में कोई हर्ज नहीं था। मई महीने के अभी दस दिन बाकी थे—रोम के चाहने वालों के लिए यह महीना सबसे कीमती होता है। यह तो पहले से ही कहा जा सकता था कि इज़ाबेल जरूर रोम को चाहने लगेगी। एक विश्वास-पात्र स्त्री-मित्र भी उसके साथ होगी, और क्योंकि हेनरीटा का ध्यान और कई चीज़ों में बंटा रहेगा, इसलिए उसके साथ का इज़ाबेल पर ज्यादा बोझ नहीं पड़ेगा। मैडम मरले मिसेज़ टाउशेट के पास रहेगी—वह गर्मियों के लिए रोम से चली आई थी और अभी लौटकर नहीं जाना चाहेगी। मैडम मरले ने स्वयं भी कहा कि उसे फ्लोरेंस की शान्ति में रहना ही अधिक पसन्द होगा। वह अपना अपार्टमेंट बन्द करके अपनी बावर्चिन को पैलेस्ट्रीना भेज आई थी। उसने इज़ाबेल से कहा कि उसे रैल्फ का प्रस्ताव स्वीकार कर लेना चाहिए—रोम से परिचित होना अपने में अच्छी बात थी। इज़ाबेल अपनी ओर से भी उत्साहित थी, इसलिए वे चारों इस यात्रा के लिए तैयार हो गए। मिसेज़ टाउशेट ने इस अवसर पर एक परिचारिका का अभाव सहना स्वीकार कर लिया—हम जानते हैं कि उनका विश्वास था कि इज़ाबेल को अब अकेली खड़ी होना चाहिए। अपनी तैयारी के सिलसिले में इज़ाबेल ने चलने से पहले गिलबर्ट ऑसमण्ड से मिलकर उसे अपने इस इरादे की बात बताई।

"मुझे भी तुम्हारे साथ रोम चलकर खुशी होगी," ऑसमण्ड बोला, "उस अद्भुत ज़मीन पर तुम्हें देखना मुझे बहुत अच्छा लगेगा।"

इज़ाबेल थोड़ा अटककर बोली, "तो तुम भी चलो न।"

"पर तुम्हारे साथ बहुत-से लोग होंगे।"

"हां," इज़ाबेल बोली, "मैं अकेली तो नहीं रहूंगी।"

पल-भर ऑसमण्ड ने और कुछ नहीं कहा। फिर बोला, "तुम्हें वह शहर अच्छा लगेगा। इन लोगों ने उसे बहुत खराब कर दिया है, फिर भी तुम्हें वह बहुत अच्छा लगेगा।"

क्या मुझे अच्छा न लगने का यह कारण हो सकता है कि उसे—नि'ओब ऑफ्

नेशन्ज़ को—खराब किया जा चुका है ? इज़ाबेल ने पूछा।

"इसलिए नहीं। उसे तो बहुत बार खराब किया जा चुका है," ऑसमण्ड मुसकराया, "मैं वहां चलूं, तो अपनी लड़की का क्या करूंगा ?"

"उसे तुम अपने विला पर नहीं छोड़ सकते?"

"यह मुझे पसन्द नहीं होगा, हालांकि एक बूढ़ी औरत वहां उसकी देखभाल के लिए है। गवर्नेस रखने की मेरी तौफीक नहीं है।"

"तो लड़की को भी अपने साथ ले चलो," इज़ाबेल ने तत्परता के साथ कहा।

मिस्टर ऑसमण्ड गम्भीर हो गया, "वह पूरी सर्दियां रोम में रही है—अपने कान्वेंट में। इन आमोद-यात्राओं के लिए वह अभी बहुत छोटी है।"

"तुम उसे बाहर लाना नहीं चाहते ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"नहीं। मेरा ख्याल है छोटी लड़कियों को दुनिया से बाहर ही रखना चाहिए।"

"मेरा पालन इससे बिलकुल अलग पद्धति के अनुसार हुआ है।"

"तुम्हारा ? तुम एक अपवाद हो, इसलिए तुम्हारे साथ वह पद्धति सफल रही है।"

"मैं ऐसा नहीं मानती," इज़ाबेल ने कहा। पर वह निश्चित नहीं थी कि ऑसमण्ड की कही बात में बिलकुल सचाई नहीं है।

ऑसमण्ड ने व्याख्या नहीं की। केवल कहा, "अगर मुझे विश्वास होता कि रोम के समाज में जाकर वह तुम्हारे जैसी हो जाएगी, तो मैं उसे कल ही वहां ले चलता।"

"उसे मेरे जैसी मत बनाओ," इज़ाबेल बोली, "जैसी वह है, वैसी ही रहने दो।"

"मैं उसे अपनी बहन के यहां भेज सकता हूं", मिस्टर ऑसमण्ड ने कहा। उसका भाव ऐसा था जैसे वह परामर्श चाह रहा हो। मिस आर्चर से अपने घरेलू मामलों की बात करना उसे अच्छा लगता था।

"हां," इज़ाबेल ने सहमति प्रकट की, "इससे मेरे जैसी होने से वह काफी बची रहेगी !"

इज़ाबेल के फ्लोरेंस से जाने के बाद गिलबर्ट ऑसमण्ड की काउंटेस जेमिनी के यहां मैडम मरले से भेंट हुई। वहां और लोग भी थे—काउंटेस का ड्राइंगरूम

अक्सर भरा रहता था। कुछ देर सामान्य बातचीत होती रही, फिर ऑसमण्ड अपनी जगह छोड़कर मैडम मरले की कुर्सी के आधा पीछे, आधा बगल में रखी एक गद्देदार चौकी पर आ बैठा, "उसने मुझे अपने साथ रोम आने को कहा है," वह धीमी आवाज़ में बोला।

"साथ आने के लिए ?"

"मतलब उसके वहां रहते वहां आने के लिए। उसीने कहा था।"

"तुम्हारा मतलब है तुमने कहा था और उसने मान लिया।"

"हां, मैंने उसे मौका दिया था। पर वह मेरा उत्साह बढ़ा रही है—बहुत बढ़ा रही है।"

"मुझे यह सुनकर खुशी हुई। पर अभी से इसे अपनी विजय मत समझ बैठो। हां, तुम्हें रोम जाना चाहिए।"

"ओह !" ऑसमण्ड बोला, "तुम्हारे इस विचार के लिए मुझे क्या कुछ करना पड़ रहा है।"

"यह मत कहो कि तुम्हें इसमें अच्छा नहीं लग रहा। ऐसे कृतघ्न मत बनो। पिछले कई साल में तुम्हें इतना अच्छा कोई काम नहीं मिला।"

"तुम इसे बहुत सुन्दर ढंग से रखती हो," ऑसमण्ड बोला, "मुझे इसके लिए कृतज्ञ होना चाहिए।"

"बहुत ज़्यादा नहीं," मैडम मरले ने उत्तर दिया। वह कुर्सी की पीठ से टेक लगाए, कमरे में चारों तरफ नज़र दौड़ाती हुई अपनी हमेशा की मुसकराहट के साथ बात कर रही थी। "तुमने बहुत अच्छा प्रभाव डाला है और मैं देख रही हूं कि तुमपर भी उसका कम अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। तुम सिर्फ मुझपर उपकार करने के लिए सात दफा मिसेज़ टाउशेंट के यहां नहीं आए।"

"लड़की बुरी नहीं है," ऑसमण्ड ने हल्के-से स्वीकार किया।

मैडम मरले की आंखें पल भर उसकी तरफ झुकी रहीं जिस बीच उसके होंठ कसकर बन्द हो रहे। "क्या उस अद्भुत लड़की के बारे में तुम सिर्फ इतना ही कह सकते हो ?"

"सिर्फ इतना ही ? यह क्या काफी नहीं है ? और कितने लोगों के बारे मैं इससे ज़्यादा कभी कहा है ?"

मैडम मरले ने इसका उत्तर नहीं दिया, पर कमरे को अपनी बात करती

आकृति के सुख से वंचित नहीं किया, "तुम्हारी थाह पाना मुश्किल है," वह आखिर बुदबुदाई, "डरती हूं कि मैंने उस बेचारी को न जाने किस शून्य में धकेल दिया है।"

ऑसमण्ड ने इसे प्रसन्न लहजे में लिया, "अब तुम पीछे नहीं हट सकतीं क्योंकि तुम बहुत आगे बढ़ चुकी हो।"

"ठीक है। पर बाकी काम खुद तुम्हींको करना होगा।"

"वह मैं करूंगा," गिलबर्ट ऑसमण्ड बोला।

मैडम मरले खामोश रही और ऑसमण्ड ने फिर अपनी जगह बदल ली। पर जब वह वहां से चलने को हुई, तो उसने भी विदा ले ली। मिसेज़ टाउशेट विक्टोरिया अहाते में मैडम मरले का इंतज़ार कर रही थी। उसे गाड़ी में बिठाकर भी ऑसमण्ड कुछ देर उसे रोके रहा, "तुम विवेकशील नहीं हो," मैडम मरले ने थके स्वर में कहा, "तुम्हें मेरे साथ ही बाहर नहीं निकलना चाहिए था।"

ऑसमण्ड ने अपना हैट उतार लिया था। वह माथे पर हाथ फेरता हुआ बोला, "मैं हमेशा भूल जाता हूं। अब मुझे आदत नहीं रही।"

"तुम्हारी थाह नहीं पाई जा सकती," मैडम मरले ने ऊपर घर की खिड़कियों की तरफ देखते हुए दोहराया। वह शहर के नये हिस्से में बना एक आधुनिक मकान था।

ऑसमण्ड इस बात की तरफ ध्यान न देकर अपने ही ख्याल में बोला, "वह सचमुच बहुत सुन्दर है। मैंने आज तक इतनी आकर्षक लड़की नहीं देखी।"

"तुम्हारा यह कहना मुझे अच्छा लग रहा है। तुम उसे जितना पसन्द करो, मेरे लिए उतना ही अच्छा है।"

"मैं उसे बहुत पसन्द करता हूं। तुमने जो कुछ बताया था, वह सब तो उसमें है ही—साथ ही मुझे लगता है कि उसके स्वभाव में बहुत लगाव भी है। उसमें दोष सिर्फ एक ही है।"

"वह क्या है?"

"उसके अपने विचार बहुत ज़्यादा हैं।"

"मैंने तुमसे कहा था कि वह बहुत प्रतिभाशाली है।"

"सौभाग्यवश वे सब विचार काफी खराब हैं," ऑसमण्ड बोला।

"यह सौभाग्य की बात कैसे है?"

"क्योंकि उन सबका बलिदान जो होगा !"

मैडम मरले ने सीधा सामने देखते हुए पीछे टेक लगा ली। फिर उसने कोचमेन को चलने का आदेश दिया। पर उसका मित्र अब भी उसे रोके रहा, "मैं अगर रोम जाऊं, जो मुझे पैंजी का क्या करना चाहिए ?"

"मैं जाकर उससे मिल आऊंगी," मैडम मरले ने कहा।

२७

मुझे यह बात विस्तार से बताने की ज़रूरत नहीं है कि हमारी नवयुवती को रोम कितना पसन्द आया था। उसके उस अहसास का विश्लेपण करने जो फोरम की पटरी पर चलते हुए उसे हुआ, या उसके स्पन्दनों की गणना करने जो सेंट पीटर की देहरी से गुजरते हुए उसे उसने महसूस किया, मैं यहां नहीं रुकूंगा, यहां इतना ही बता देना आवश्यक है कि उसकी मुद्रा वैसी ही थी जैसी कि एक उत्सुक और ताज़ा दम व्यक्ति से आशा की जा सकती थी। उसे हमेशा ही इतिहास में रुचि रही थी और यहां तो सड़कों के पत्थरों और धूप में चमकते कणों में भी एक इतिहास था। उसके पास ऐसी कल्पना थी जोकि महान् घटनाओं के नाम परही चमक उठती थी और जहां पर भी वह जाती वहां किसी न किसी महान् घटना का इतिहास होता। इन चीज़ों ने उसे बहुत चकित किया, लेकिन केवल भीतरी तौर पर ही। उसके साथियों को लगा कि वह सामान्य से भी कम बोल रही है। जब रैंल्फ टाउशेट उसकी तरफ उदासीनता और अनमनेपन से देख रहा होता, तो वास्तव में वह उस समय उसका बड़ी गहराई के साथ निरीक्षण कर रहा होता। अपने जाने वह बहुत खुश थी। वह इस बात को मानने के लिए भी तैयार हो सकती थी कि वह उसके ख्याल में उसके जीवन का सबसे खुशनुमा समय था। मानव जाति का भयंकर अतीत उसके दिमाग पर हावी था, लेकिन कोई भी समसामयिक बात जानकर यह भारीपन एकदम पंख लगाकर हवा में गुम हो सकता था। उसकी चेतना इतनी मिली-जुली थी कि वह नहीं जानती थी कि उसके भिन्न-भिन्न अंश उसे कहां ले जाएंगे। चिन्तन की एक दबी हुई प्रसन्नता के भाव

से वह इधर-उधर घूमती रही। कई बार वह चीज़ों में वह कुछ देखती थी जोकि उनमें नहीं था—कई चीजें अभी देखनी रहती थीं। रोम, जैसा कि रैल्फ ने कहा था, कुछ मनोवैज्ञानिक क्षणों के बहुत अनुकूल पड़ता था। प्रतिध्वनित होता यात्रियों का झुण्ड जा चुका था और अधिकतर शान्त जगहें अब फिर से शान्त हो गई थीं। नीला आकाश बहुत चमक रहा था और फव्वारों की छप्-छप् ने काई लगे झरोखों में, झुरझुरी से मुक्ति पा, अपना संगीत दुगुना कर लिया था। गर्म, चमकती सड़कों के कोनों पर लोग फूलों से ढेरों के साथ टकरा जाते थे। एक दोपहर को हमारे दोस्त—यह उनका वहां तीसरा दिन था—'फोरम' में सबसे नई खुदाई देखने गए। यह काम कुछ समय से बहुत ज़्यादा फैल गया था। वह आम सड़क से होते हुए पुनीत स्थान के समानान्तर आ गए जहां वे बड़े सम्मान भाव के साथ घूमते रहे—लेकिन ऐसा सब लोगों ने नहीं किया। हेनरीटा स्टैकपोल इस बात से हैरान थी कि प्राचीन रोम बहुत कुछ न्यूयार्क की तरह बना था। उसे वहां की पुरानी सड़कों पर रथों के पहियों के गहरे निशानों में और उन झनझनाती लोहे की पटरियों में जो अमरीकन ज़िन्दगी की तेज़ी को व्यक्त करती थीं, भी एक सादृश्य लग रहा था। सूरज ढल रहा था, और हवा में सुनहरा कुहासा था। टूटे मीनार और धूमिल चौकी की छाया उन उजाड़ से खंडहरों पर फैलने लगी थी। हेनरीटा मिस्टर बैंटलिंग के साथ इधर-उधर घूमती रही, जिसे यह बताने में आनन्द आ रहा था कि जूलियस-सीज़र एक 'वृष्ट ओल्ड बाय था'। रैल्फ ऐसे विवरण देता रहा जो वह हमारी दत्तचित्त नायिका को देना चाहता था। एक विनीत-सा पुरातत्वज्ञ जो उस जगह घूम रहा था, उन दोनों के साथ हो लिया उसने अपना पाठ इतनी सरलता से दोहराया कि उस ढलते मौसम की क्षीणता का उसपर कोई असर नहीं लगा। उस मैदान के एक कोने में खुदाई चल रही थी। उसने तत्काल उनसे कहा कि अगर वे वहां जाकर देखना पसन्द करें, तो अवश्य ही उन्हें कुछ रोचक चीजें दिखेंगी। यह प्रस्ताव इज़ाबेल से ज़्यादा रैल्फ को पसन्द आया। इज़ाबेल घूमने-फिरने से बहुत थक चुकी थी। इसलिए उसने अपने साथी से कहा कि वह जाकर अपनी उत्सुकता मिटा ले—और कि वह तब तक आराम से वहीं उसका इन्तज़ार करेगी। समय और स्थान बिलकुल उसकी रुचि के अनुकूल थे—उसे थोड़ी देर वहां बिलकुल अकेली बैठना अच्छा लगता। रैल्फ उस प्रदर्शक के साथ चला गया, तो इज़ाबेल उस कैपिटल की नींव के निकट ऊंचे खम्भे के पास

बैठ गई। वह अधिक तो नहीं, पर थोड़ी देर के लिए अकेली होना चाहती थी। उसकी रोमन अतीत के उन टूटे-फूटे अवशेषों में बहुत रुचि थी जो उसके आगे-पीछे फैले थे, और जिनमें शताब्दियों के ध्वंस के बावजूद अभी व्यक्ति जीवन का बहुत कुछ इतिहास बाकी था। थोड़ी देर इस विषय में सोचने के बाद उसका ध्यान भिन्न-भिन्न बातों की शृंखलाओं में भटक गया। अतीत का रोमन-काल और इज़ाबेल आर्चर का भविष्य—यह एक लम्बी छलांग थी, लेकिन उसकी कल्पना ने एक ही उड़ान में सब कुछ नाप लिया और अब वह जैसे धीरे-धीरे घूमती हुई पास के और अपेक्षया अधिक समृद्ध विषयों की ओर आने लगी। वह अपने ख्यालों में इतनी डूबी थी, और उसकी नज़र पैरों के पास के टूटे हुए पत्थरों पर इस तरह जमी थी कि वह नज़दीक आती पदचाप को तब तक नहीं सुन सकी, जब तक कि एक छाया उसकी आंखों के सामने नहीं फैल गई। उसने अपनी आंखें उठाईं और एक भद्र व्यक्ति को सामने देखा—वह भद्र व्यक्ति रैल्फ नहीं था जोकि यह बताने वापस आया हो कि वह खुदाई बहुत नीरस-सी थी। इज़ाबेल और वह व्यक्ति दोनों सहसा स्तब्ध से हो रहे। वह व्यक्ति सामने खड़ा इज़ाबेल के पीले आश्चर्य-चकित चेहरे को देखता रहा।

"लार्ड वारबर्टन।" इज़ाबेल ने उठते हुए आश्चर्य प्रकट किया।

"मुझे तो इसका अन्दाज़ा भी नहीं था कि यह तुम होगी। मैं मोड़ मुड़ा ही था कि सामने तुम नज़र आ गईं।"

इज़ाबेल ने उसे समझाने के लिए आगे-पीछे देखा, "मैं इस समय यहां अकेली हूं, लेकिन मेरे साथी अभी-अभी यहां से गए हैं। मेरा कज़िन उधर खुदाई का काम देखने गया है।"

"अच्छा, अच्छा।" और लार्ड वारबर्टन ने हल्के से उस तरफ देख लिया जिधर इज़ाबेल ने इशारा किया था। अब वह उसके सामने दृढ़ता से खड़ा था। उसने अपने को फिर से सन्तुलित कर लिया था और यही वह शायद इज़ाबेल को दिखाना चाहता था, "मुझे बाधा नहीं बनना चाहिए," वह उस उदास-से खम्भे की तरफ देखता बोला, "मेरे ख्याल में तुम थकी हुई हो।"

"हां, मैं थकी हुई हूं।" वह एक क्षण के लिए झिझकी, और फिर से बैठ गई, "मुझे तुम्हें परेशान नहीं करना चाहिए," उसने साथ ही कहा।

"अरे, मैं तो बिलकुल अकेला हूं, और मेरे पास करने को कुछ भी नहीं है।

मुझे तो इस बात का ख्याल भी नहीं था कि तुम रोम में हो। मैं अभी-अभी पूरब से आया हूं और यहां से केवल गुज़रकर जा रहा था।"

"तुम तो एक लम्बी यात्रा पर थे," इज़ाबेल बोली। उसे रैल्फ से पता चला था कि लार्ड वारबर्टन इंग्लैण्ड में नहीं है।

"हां, मैं छः महीने के लिए समुद्र पार आया था—उसके तुरन्त बाद जब तुम से मिला था। मैं टर्की और एशिया माइनर गया था। दो-एक दिन पहले ही मैं एथेन्स से आया हूं।" उसने कोशिश की कि वह सन्तुलित रहे, लेकिन वह सहज न हो सका। काफी देर इज़ाबेल को देखने के बाद ही वह कुछ स्वाभाविक हो सका। "क्या तुम चाहोगी कि मैं चला जाऊं—हालांकि थोड़ी देर मैं रुक सकता हूं?"

इज़ाबेल ने इसे बहुत ही कोमल भाव से लिया, "मैं नहीं चाहती कि तुम चले जाओ, लार्ड वारबर्टन। मुझे तुमसे मिलकर बहुत खुशी हुई है।"

"इसके लिए धन्यवाद। क्या मैं बैठ सकता हूं?"

उस खम्भे के तख्ते पर इतनी जगह थी कि उसपर कई लोग बैठकर आराम कर सकें—यहां तक कि एक ऊंचे स्तर का भद्र पुरुष भी उसपर बैठ सकता था। तो उच्च श्रेणी का वह व्यक्ति हमारी नवयुवती के साथ वहां बैठ गया और पांच मिनट के वार्तालाप में उसने उससे ढेर-से प्रश्न पूछ लिए। उनमें से कई उसने दो-दो बार पूछे। ऐसा लग रहा था मानो वह जवाब सुनने से चूक जाता हो। उसने अपने बारे में भी उसे बहुत कुछ बताया जिसका इज़ाबेल के स्त्री-हृदय पर कुछ कम असर नहीं हुआ। उसने कई बार कहा कि उसे इज़ाबेल से मिलने की आशा नहीं थी। यह स्पष्ट था कि इस तरह की अचानक मुलाकात के लिए वह पहले से तैयार हो सकता, तो बेहतर था। वह बड़े ही स्वभाविक ढंग से छोटी बातों से गम्भीर बातों पर आ गया। वह धूप में बुरी तरह झुलस गया था। उसकी बड़ी-सी दाढ़ी भी एशिया की तपिश से चमक गई थी। उसने एक ढीला-सा चोगा पहन रखा था, जिससे विदेश में एक अंग्रेज यात्री सुविधा से घूम सकता है और अपनी राष्ट्रीयता का दावा भी बनाए रख सकता है। अपनी लुभावनी स्थिर आंखों, कसकुटके रंग की तह में छिपी ताजगी, मर्दाना शरीर, न्यूनतम चेष्टाओं वाले व्यवहार और एक भद्र व्यक्ति तथा खोज करने वाले व्यक्ति के-से सामान्य तौर-तरीके से उसे किसी भी प्रदेश में अंग्रजों के प्रति प्रशंसाभाव रखने वाले लोगों द्वारा

उस जाति के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया जा सकता था। इज़ाबेल का ध्यान भी इन चीज़ों की तरफ गया और उसे खुशी हुई कि उसने हमेशा लार्ड वारबर्टन को पसन्द किया है। चोटें खाने के बाद भी लार्ड वारबर्टन ने अपने सम्पूर्ण गुणों को कायम रखा था—मानो वे एक शालीन घराने की वस्तुएं हों, या वे घर के ऐसे कीमती जेवर और साज-सामान हों जिन्हें छोटी-छोटी बातों से नहीं, बल्कि कोई बड़ी दरार पड़ने पर ही हिलाया जा सकता हो। उन्होंने बारी-बारी से बातें कीं—उसके अंकल के देहान्त के बारे में, रैल्फ के स्वास्थ्य के बारे में और इन बातों को लेकर कि इज़ाबेल ने सर्दियां कैसे बिताई, उसकी रोम यात्रा कैसी रही, वह फ्लोरेंस कब वापस जाएगी और उसकी गर्मियों की योजना क्या है। उस होटल के बारे में भी बात हुई जहां वह रह रही थी। उसके बाद लार्ड वारबर्टन की यात्राओं, कामकाज, विचारों, प्रभावों और वर्तमान निवास-स्थान के बारे में बातें हुई। आखिर खामोशी छा गई। उस खामोशी ने कही गई बातों से इतना अधिक कुछ व्यक्त किया कि लार्ड वारबर्टन के इन अन्तिम शब्दों की ज़रा भी आवश्यकता नहीं थी, "मैंने तुम्हें कई पत्र लिखे थे।"

"मुझे लिखे थे ? मुझे तुम्हारे पत्र नहीं मिले।"

"मैंने उन्हें भेजा नहीं। जला दिया था।"

"अरे !" इज़ाबेल हंसी, "इसकी जगह तुम पत्र भेज देते तो बेहतर था।"

"मैंने सोचा कि तुम्हें उनकी परवाह नहीं होगी," वह इतनी सरलता से कह गया कि बात इज़ाबेल को छू गई। "मुझे लगा कि तुम्हें पत्रों से परेशान करने का मुझे कोई अधिकार नहीं है।"

"मुझे तुम्हारी तरफ से समाचार मिलने से बहुत खुशी होती। तुम जानते हो मैंने कितना चाहा था कि···कि···" लेकिन वह रुक गई। उसे लगा कि इस विचार को प्रकट करना कितना सपाट लगेगा, "मैं जानता हूं तुम क्या कहने जा रही हो। तुमने चाहा था कि हम हमेशा अच्छे मित्र रहें।" यह फार्मूला लार्ड वारबर्टन के मुंह से बहुत सपाट-सा लगा। पर वह चाहता भी यही था कि वह उस तरह लगे।

इज़ाबेल ने अपने को महज यह कहते पाया, "उन सब बातों को अब रहने दो।" यह बात भी पहले कही गई बात से बेहतर नहीं थी।

"यह तो मेरे लिए एक तुच्छ-सी सान्त्वना है," उसके साथी ने थोड़ा जोर देकर कहा।

"मैं तुम्हें सान्त्वना देने का बहाना नहीं कर सकती," उस लड़की ने कहा, कहते हुए उसने पीछे टेक लगा ली। छः महीने पहले उस आदमी को उसने जो उत्तर देकर निराश किया था, उसकी चेतना से उसे हल्का विजयगर्व-सा महसूस हुआ। लार्ड वारबर्टन सुन्दर और शक्तिशाली था, उदार था। उससे बेहतर और कोई व्यक्ति नहीं था। फिर भी उसका जवाब अब भी वही था।

"यह बहुत अच्छा है कि तुम मुझे सान्त्वना देने की कोशिश नहीं कर रहीं। यह तुम्हारे बस का भी नहीं है।" इज़ाबेल ने अपने विचित्र-से उत्साह में उसे कहते सुना।

"मैं चाहती थी कि हम फिर भी मिलेंगे। क्योंकि मैंने यह नहीं सोचा था कि तुम मुझे इस बात का अहसास कराओगे कि मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया था। लेकिन अब जब तुम ऐसा कर रहे हो, तो मुझे खुशी की जगह तकलीफ ही ज्यादा हो रही है।" वह एक सचेत शालीनता के साथ उठी, और अपने साथियों के लिए इधर-उधर देखने लगी।

"मैं तुम्हें उस बात का अहसास नहीं कराना चाहता, यह मैं नहीं कह सकता। मैं सिर्फ तुमसे दो-एक बातें कहना चाहता हूं—अपने साथ न्याय करने के लिए। मैं इस विषय पर फिर नहीं लौटूंगा। जो बात मैंने तुमसे पिछले साल कही थी, उसके बारे में मैं बहुत गम्भीर था। मैं और किसी बात के विषय में सोच ही नहीं सका। मैंने पूरे मन से तुम्हें भूलने की कोशिश की। मैंने किसी अन्य में रुचि लेने की भी कोशिश की। मैं तुम्हें यह बात इसलिए बता रहा हूं कि तुम जान जाओ कि मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया है। लेकिन मैं सफल नहीं हुआ। इसी वजह से मैं विदेश भी गया—जितनी दूर तक जाना सम्भव हो सका। लोग कहते हैं कि यात्रा मन को झटका देती है, लेकिन उसने मेरे मन को नहीं भटकाया। तुम्हें पिछली बार मिलने के बाद से मैं तुम्हारे बारे में लगातार सोचता रहा हूं। मैं अब भी बिलकुल वैसा ही हूं। मैं अब भी तुम्हें बिलकुल उतना ही प्यार करता हूं और जो कुछ मैंने तब तुमसे कहा था, वह अब भी उतना ही सच है। इस समय भी, जब मैं तुम्हारे साथ बात कर रहा हूं, बदकिस्मती से तुम मुझे उतनी ही आकर्षक लग रही हो। इस बात को लेकर—मैं इससे कम नहीं कह सकता। मेरा मतलब ज़ोर डालने से फिर भी नहीं है, यह तो सिर्फ इस वक्त की बात है। इसके अतिरिक्त, जब मैंने तुम्हें यहां कुछ देर पहले देखा, तो मुझे इस बात की ज़रा भी

उम्मीद नहीं थी कि तुम मुझे यहां मिलोगी, पर मेरा मन उस समय भी यही जानने की कामना लिए था कि तुम कहां होगी।" उसने अपना सन्तुलन पहले से ठीक कर लिया था, और जैसे-जैसे वह बात करता गया वह और ठीक होता गया। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी कमेटी में भाषण दे रहा हो—अपनी महत्त्वपूर्ण बात को बड़ी शांति और सफाई से रखते हुए और बीच-बीच में अपनी टोपी में छिपे कागज़ पर नोट की बातों पर नज़र डालते हुए। कमेटी ऐसे में अवश्य ही उसकी बात से सहमत हो जाती।

"मैं तुम्हारे बारे में अक्सर सोचती रही हूं, लार्ड वारबर्टन," इज़ाबेल ने जवाब दिया, "तुम्हें इस बात का विश्वास रखना चाहिए कि मैं आगे भी ऐसा करती रहूंगी," उसने यह बात ऐसे लहजे में की, कि उससे भद्रता तो बनी रहे पर बात का आशय दबने न पाए! इसमें दोनों में से किसीको भी हानि नहीं है।

वे साथ-साथ चलने लगे। इज़ाबेल ने उससे उसकी बहनों के बारे में पूछा और अनुरोध किया कि वह अपनी बहनों को बताए कि उसने उन्हें याद किया था। लार्ड वारबर्टन ने उसके बाद अपने प्रश्न को फिर नहीं दोहराया, और जैसे अपने अन्दर के गहरे और सुरक्षित पानी में डुबकी लगा गया। लेकिन वह यह जानना चाहता था कि वह रोम से कब जा रही है। इज़ाबेल ने जब उसे बताया, तो वह खुश हुआ कि वह काफी समय यहां रहेगी।

"तुम इस बात से क्यों खुश हो, जबकि तुम तो यहां से केवल गुजरकर जा रहे हो?" इज़ाबेल ने थोड़ी बेचैनी के साथ पूछा।

"जब मैंने यह कहा था कि मैं यहां से गुज़रकर जा रहा हूं तो मेरा यह मतलब नहीं था कि व्यक्ति रोम को क्लैपहैम जंक्शन की तरह लेता है। रोम से गुज़रने का मतलब होता है कि व्यक्ति यहां एक-दो सप्ताह रुककर आगे जाता है।"

"साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि तुम तब तक यहां रहना चाहते हो, जब तक कि मैं यहां हूं?"

वारबर्टन की झेंप-भरी मुस्कराहट ने क्षणभर जैसे इज़ाबेल का जायज़ा लिया, "तुम्हें यह अच्छा नहीं लगेगा। तुम्हें डर है कि तुम मुझसे बहुत ज्यादा मिलोगी।"

"इस बात को जाने दो कि मुझे क्या अच्छा लगेगा। पर मैं इस बात की

अपेक्षा नहीं कर सकती कि तुम मेरे कारण यह सुन्दर जगह छोड़ जाओ। लेकिन मैं यह जरूर स्वीकार करूंगी कि मुझे तुमसे डर लगता है।"

"इस बात से डरती हो कि मैं कहीं फिर से वह बात शुरू न कर दूं ? मैं तुम्हें वचन देता हूं कि मैं इसका पूरा-पूरा ख्याल रखूंगा।"

वे चलते हुए धीरे-धीरे रुक गए थे। एक क्षण के लिए वे एक-दूसरे की तरफ मुंह किए खड़े रहे, "गरीब लार्ड वारबर्टन," इज़ाबेल ने एक ऐसे दर्द के साथ कहा जिसमें दोनों की भलाई की भावना थी।

"सच हूं तो मैं गरीब ही। लेकिन मैं सावधान रहूंगा।"

"तुम चाहे दुःखी रहो, लेकिन तुम मुझे दुःखी नहीं करोगे। उसकी मैं इजाजत नहीं दूंगी।"

"अगर मुझे इस बात का यकीन होता कि मैं तुम्हें दुःखी कर सकता हूं तब तो शायद मैं प्रयत्न करता भी।" इसपर इज़ाबेल ने चलना शुरू कर दिया और वह भी उसके साथ चलने लगा, "मैं एक शब्द भी ऐसा नहीं कहूंगा जिससे तुम्हें अप्रसन्नता हो।"

"ठीक है। लेकिन अगर तुमने ऐसा किया, तो हमारी मित्रता अवश्य टूट जाएगी।"

"सम्भवतः किसी दिन—थोड़े समय के बाद—तुम मुझे इसकी छूट दे दोगी।"

"मुझे अप्रसन्न करने की छूट ?"

वह हिचकिचाया, "इस बात की कि मैं तुम्हें फिर से बता सकूं···" लेकिन उसने अपने को रोक लिया, "मैं इस बात को छोड़ दूंगा। हमेशा के लिए छोड़ दूंगा।"

खुदाई को देखने के लिए मिस स्टैकपोल और उसका साथी रैल्फ के साथ हो लिए थे। अब वे तीनों मिट्टी और पत्थरों के ढेरों में से निकलकर इज़ाबेल और उसके साथी की नजरों के सामने आ गए थे। रैल्फ अपने दोस्त से आश्चर्य और प्रसन्नता के साथ मिला। हैनरीटा ने ऊंची आवाज़ में आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "अरे,देखो, यह तो वे लार्ड महोदय हैं।" रैल्फ और उसका अंग्रेज साथी उसी स्नेह से मिले जिससे अंग्रेजी पड़ौसी लम्बी जुदाई के बाद एक-दूसरे से मिलते हैं। मिस स्टैकपोल ने एक लम्बी बौद्धिक दृष्टि से उस धूप खाए यात्री को देखा। लेकिन

जल्दी ही उसने स्थिति से अपने को सम्बन्धित कर लिया, "मेरा ख्याल है आपने मुझे नहीं पहचाना है, सर।"

"मैंने अवश्य पहचाना है," लार्ड वारवर्टन बोला, "मैंने तुमसे कहा था कि मुझसे आकर मिलना, लेकिन तुम आई ही नहीं।"

"जहां-जहां मुझे बुलाया जाता है, मैं वहां सब जगह नहीं जाती," मिस स्टैकपोल ने रूखेपन से जवाब दिया।

"अच्छा, तो मैं आगे से तुमसे नहीं कहूंगा," लॉकले के मालिक ने हंसकर कहा।

"अगर तुमने कहा तो मैं चली आऊंगी, इस बात का यकीन रखना।"

लार्ड वारवर्टन को उस समय की खुश मिज़ाजी में भी इस बात का पूरा यकीन था। मिस्टर बैंटलिंग लार्ड वारवर्टन से पहचान ज़ाहिर किए बिना खड़ा रहा था। अब उसने सिर हिलाकर अभिवादन किया, तो लार्ड वारवर्टन ने मित्रता-पूर्ण जवाब दिया, "तुम यहां बैंटलिंग ?" और दोनों ने हाथ मिलाया।

"अच्छा," हैनरीटा बोली, "मैं नहीं जानती थी कि तुम इससे परिचित हो।"

"मुझे यकीन है कि तुम उन सबको नहीं जानती जिनसे मैं परिचित हूं," मिस्टर बैंटलिंग ने जवाब दिया।

"मैंने सोचा था कि जब कोई व्यक्ति एक अंग्रेज अधिपति को जानता है, तो वह हमेशा यह बात दूसरों को बताना चाहता है।"

"अरे, मुझे डर है कि मिस्टर बैंटलिंग मेरे बारे में बात करके शर्मिन्दा होता," लार्ड वारवर्टन एक बार फिर हंसा। इज़ाबेल को इस लहजे से थोड़ा सुख मिला। जब उन लोगों ने घर का रास्ता लिया, तो उसने छुटकारे की हल्की-सी उसांस भरी।

अगले दिन इतवार था। इज़ाबेल ने अपनी सुबह दो लम्बे पत्र लिखने में बिताई—एक अपनी बहन लिली के नाम और दूसरा मैडम मरले के नाम। लेकिन इनमें से किसी पत्र में उसने इस बात का ज़िक्र नहीं किया कि एक अस्वीकृत प्रस्तावक ने उससे एक बार फिर प्रस्ताव किया है। इतवार की दोपहर को सभी भले रोमन (सबसे भले रोमन उत्तर प्रदेश के बर्बर लोग हैं) परम्परा के अनुसार सेन्ट पीटर्स में जाते हैं। हमारे दोस्तों में तय हुआ था कि दोपहर के खाने के बाद

वे गाड़ी में उस बहाने चर्च हो आएंगे। लंच के बाद, बग्घी के आने से घण्टा भर पहले, लार्ड वारबर्टन होटल डी पैरिस में उन दोनों युवतियों से मिलने आया। रैल्फ टाउशेट और मिस्टर बैंटलिंग दोनों बाहर गए थे। आगन्तुक का इरादा शायद बीती शाम इज़ाबेल को दिए वचन को निभाने का यकीन दिलाने का था। वह सावधान और सहज दोनों ही रहा—बिना किसी हठ या जड़ता के बहुत ही सामान्य। उसने यह इज़ाबेल पर छोड़ दिया कि वह खुद ही अनुमान लगाए कि महज़ अच्छे दोस्त के रूप में वह कैसा हो सकता है। उसने अपनी फारस और तुर्किस्तान की यात्राओं के किस्से सुनाए। मिस स्टैकपोल ने उससे पूछा कि वह उन देशों में जाए तो क्या उसे इससे कोई लाभ हो सकता है? लार्ड वारबर्टन ने उसे विश्वास दिलाया कि ऐसे स्थान महिला-यात्रियों को बहुत कुछ प्रतिदान दे सकते हैं। इज़ाबेल उसके सामने संयत रही। लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि अपनी सद्भावना का बेहतर पक्ष उजागर करने में उसका क्या उद्देश्य है और वह इससे क्या लाभ हासिल करने की सोचता है। अगर उसे आशा हो कि वह उसे अपने इस सद्व्यवहार से पिघला देगा, तो उसे अपने को इस तकलीफ से बचाना ही चाहिए। वह हर चीज़ में उसके बेहतर पक्ष से परिचित थी—इस दृष्टि को बदलने के लिए वह कुछ नहीं कर सकता था। लार्ड वारबर्टन का रोम में होना उसे एक गलत प्रकार की समस्या लग रहा था—उसे सही प्रकार की समस्याएं ही अच्छी लगती थीं। बातों के अन्त में लार्ड वारबर्टन ने कहा कि वह भी सेन्ट पीटर्स आयेगा और वहां इज़ाबेल से और उसके मित्रों से मिलेगा। इज़ाबेल को मजबूरन कहना पड़ा कि उसे अपनी सुविधा के अनुसार कार्य करना चाहिए।

चर्च के मोज़ेक के फर्श पर चलते हुए उसकी भेंट सबसे पहले लार्ड वारबर्टन से ही हुई। वह उन महान यात्रियों में से नहीं थी जिन्हें सेन्ट पीटर्स अपनी ख्याति की तुलना में छोटा लगता है। जब वह पहली बार उस चमड़े के परदे के नीचे से गुज़री जोकि प्रवेश करने पर ज़ोर-से खुलता और आवाज़ के साथ बन्द होता है, और पहली बार जब उसने उस बड़े मेहराब के नीचे खड़ी होकर गन्ध-धूम से भरी हवा में हल्के-हल्के छनकर आती रोशनी को देखा जो गिल्ट और संगमरमर में प्रतिबिम्बित हो रही थी। वह उस सबको एक बच्चे, या एक देहाती की तरह चकित होकर देखती रही। फिर उसने सामने के उदात्त सत्त्व को अपनी मौन श्रद्धांजलि अर्पित की। लार्ड वारबर्टन उसके साथ-साथ चलता

हुआ उसे कानस्टेनटीनोपल के सेंट सोफिया गिरजे के बारे में बताता रहा। इज़ाबेल को डर था कि कहीं लार्ड वारबर्टन बात का अन्त अपने इस आदर्श-व्यवहार की ओर संकेत करके न करे। प्रार्थना अभी शुरू नहीं हुई थी, फिर भी सेंट पीटर्स में और बहुत कुछ देखने को था। उस स्थान के विस्तार में धर्मेतर-सी कुछ चीज है जोकि शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के अभ्यास के लिए उपयुक्त है। वहां अलग-अलग तरह के व्यक्ति और समुदाय—मिलेजुले उपासक तथा दर्शक अपनी-अपनी मनःस्थितियों का अनुसरण बिना किसी अन्तर्द्वन्द्व या 'स्कैण्डल' के कर सकते हैं। उस विशाल सन्दर्भ में व्यक्तिगत तुच्छता ज़्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं जान पड़ती। पर इज़ाबेल और उसके साथियों पर ऐसा कोई दोष नहीं आता था। हां, हैनरीटा के मन में यह कहने का साहस ज़रूर आया कि माइकेल एंजेलो का डोम वाशिंगटन के कैपिटल की तुलना में घटिया है—पर यह बात वह केवल मिस्टर बैंटलिंग को हल्के से सुनाकर रह गई। विशेष आग्रह के साथ इसका प्रतिपादन उसने 'इंटरव्यूअर' के लिए सुरक्षित रख रखा। इज़ाबेल ने लॉर्ड वारबर्टन के साथ गिरजे का चक्कर लगाया। वे प्रवेश द्वार के बाईं तरफ कॉयर के पास पहुंचे तो दरवाज़े के बाहर खड़ी भीड़ के सिरों के ऊपर से पोप के गायकों की आवाज़ उन तक पहुंचने लगी। वे कुछ देर भीड़ के सिरे पर रुके रहे। भीड़ में रोमन लोगों के अलावा उतने ही विदेशी भी थे। पवित्र संगीत चल रहा था। रैल्फ, हैनरीटा और मिस्टर बैंटलिंग भीड़ के अन्दर थे। इज़ाबेल सामने की भीड़ से आगे सांझ की रोशनी को देख रही थी। संगीत स्वर में घुला-मिला गन्ध-धूम उस रोशनी को रूपहला बना रहा था और नक्काशीदार खिड़कियों में से होकर गुज़र रहा था। कुछ देर बाद संगीत रुक गया और लार्ड वारबर्टन का मन उसके साथ वहां से चल देने को होने लगा। इज़ाबेल उसके साथ चल देती—पर तभी उसे गिलबर्ट आसमण्ड सामने दिखाई दे गया। वह स्पष्टतः उनसे कुछ ही फासले पर पीछे खड़ा था। वह अब पूरी औपचारिकता के साथ आगे बढ़ आया—स्थान के अनुसार उस अवसर पर उसकी औपचारिकता कई गुना बढ़ गई थी।

"तो तुमने आने का फैसला कर ही लिया?" कहते हुए इज़ाबेल ने हाथ आगे बढ़ा दिया।

"हां मैं कल रात आया हूं। दोपहर को तुम्हारे होटल गया था। वहां पर पता चला कि तुम यहां आई हो। मैं तुम्हें देखने यहां चला आया।"

"और लोग भीड़ में खड़े हैं," इज़ाबेल ने उसे बता दिया।

"मैं और लोगों से मिलने नहीं आया," आसमण्ड ने तुरन्त उत्तर दिया।

इज़ाबेल ने आंखें हटा लीं। लार्ड वारबर्टन उन दोनों को देख रहा था। उसने शायद यह सुन भी लिया था। इज़ाबेल को याद आया कि जिस दिन वारबर्टन गार्डनकोर्ट में उससे विवाह का प्रस्ताव करने आया था, उस दिन उसने भी उससे यही बात कही थी। मिस्टर आसमण्ड के शब्दों से उसके गालों पर जो रंग आ गया था, वह इस विचार से दूर नहीं हुआ। उसने क्षतिपूर्ति के लिए दोनों को एक-दूसरे के नाम का परिचय दिया। सौभाग्यवश उसी समय मिस्टर बैंटलिंग अपने ब्रिटिश उत्साह से भीड़ को चीरता बाहर निकल आया। रैल्फ और हैनरीटा भी उसके साथ थे। मेरा इसे सौभाग्यवश कहना शायद सतही बात भी है क्योंकि फ्लोरेंस के उस भद्रव्यक्ति को देखकर रैल्फ टाउशेट को खुशी नहीं हुई। पर शिष्टाचारवश वह आगे बढ़ आया और उसने जैसे उदारतापूर्वक इज़ाबेल से कहा कि अब शीघ्र ही उसके सब मित्र वहां उसके पास हो जाएंगे। मिस स्टैकपोल मिस्टर ऑसमण्ड से फ्लोरेंस में मिल चुकी थी। वह उस आदमी को इज़ाबेल के अन्य प्रशंसकों—टाउशेट, वारबर्टन या पेरिस के मिस्टर रोज़ियर—से बेहतर नहीं समझती थी, "पता नहीं ऐसा क्या है तुममें," उसने सहज भाव से इज़ाबेल से कहा था, "पर इतनी अच्छी होते हुए भी प्रशंसक तुम्हें बहुत अस्वाभाविक-से ही मिलते हैं। मैं उनमें से सिर्फ मिस्टर गुडवुड की ही कद्र करती हूं और वही आदमी तुम्हें पसन्द नहीं है।"

"सेंट पीटर्स के बारे में तुम्हारी क्या राय है?" इस बीच मिस्टर ऑसमण्ड ने इज़ाबेल से पूछा।

"बहुत विशाल और रोशन जगह है," इज़ाबेल ने उत्तर में कहा।

"ज्यादा ही विशाल जगह है। यहां आकर आदमी को अपना आप परमाणु-सा लगने लगता है।"

"सबसे बड़े मानवीय मन्दिर में आकर क्या ऐसा अनुभव करना ही उचित नहीं है?" कहते हुए इज़ाबेल को अपने शब्द अच्छे लगे।

"व्यक्ति अकिंचन हो तो सभी जगह ऐसा अनुभव करना उचित लग सकता है। लेकिन मुझे यह अहसास जितना खराब और जगह लगता है, उतना ही एक गिरजे में भी लगता है।"

"तुम्हें तो सच पोप होना चाहिए था," साथ ही इज़ाबेल को उसकी फ्लोरेंस में कही एक बात याद हो आई।

"तब तो बड़ा मज़ा आता," गिलबर्ट ऑसमण्ड बोला।

रैल्फ टाउशेट और लार्ड वारबर्टन इस बीच चहलकदमी करते हुए थोड़ा परे चले गए थे, "यह आदमी कौन है जो मिस आर्चर से बात कर रहा है?" लार्ड वारबर्टन ने पूछा।

"उसका नाम है गिलबर्ट ऑसमण्ड—फ्लोरेंस में रहता है", रैल्फ ने कहा।

"इसके अलावा और परिचय ?"

"कुछ भी नहीं। हां, वैसे अमरीकन है, हालांकि चालढाल से लगता बिलकुल नहीं है।"

"मिस आर्चर को बहुत दिनों से जानता है ?"

"तीन-चार सप्ताह से।"

"वह उसे पसन्द करती है ?"

"वह यह जानना चाह रही है।"

"और इसकी सम्भावना है ?"

"जानने की ?"

"नहीं पसन्द करने की ?"

"तुम्हारा मतलब है कि क्या वह उसे स्वीकार कर लेगी ?"

"हां," लार्ड वारबर्टन ने क्षण-भर बाद कहा, "मेरा ख्याल है मेरा छिपा हुआ मतलब यही है।"

"कोई रोकने की कोशिश करेगा, तो शायद नहीं करेगी," रैल्फ ने उत्तर दिया।

वारबर्टन पल-भर देखता रहा। फिर आशंकित स्वर में बोला, "इसका मतलब है हमें बिलकुल खामोश रहना चाहिए।"

"हां, एक कब्र की तरह खामोश। इसीसे कुछ सम्भावना हो सकती है।"

"कि वह स्वीकार करले ?"

"कि न करे।"

लार्ड वारबर्टन सुनकर पहले खामोश रहा। फिर बोला, "बहुत चतुर आदमी है वह ?"

"बहुत," रैल्फ ने कहा।

वारबर्टन सोचता रहा, "और कुछ ?"

"और तुम क्या चाहते हो ?" रैल्फ बुदबुदाया।

"तुम्हारा मतलब है 'वह' और क्या चाहती है ?"

रैल्फ ने बांह से पकड़कर उसे मोड़ लिया। उन्हें बाकी लोगों के पास पहुंचना था। "वह ऐसा कुछ नहीं चाहती जो हम उसे दे सकें।"

"ओह ! अगर वह तुम्हें भी नहीं चाहती, फिर तो···।" लार्ड वारबर्टन ने चलते हुए एक लोच के साथ कहा।

उत्तरार्ध

२८

अगले दिन शाम को लॉर्ड वारबर्टन फिर अपने दोस्तों से उनके होटल में मिलने गया। वहां उसे पता चला कि वे सब आपेरा देखने गए हैं। वह इस ख्याल से अपनी गाड़ी में आपेरा चला गया कि वहां वह इतालवी फैशन के अनुसार उनके बॉक्स में उनसे मिल लेगा। जब वह आपेरा के अन्दर दाखिल हुआ—वह एक घटिया किस्म का थियेटर था—तो उसने उस बड़ी-सी खाली और बहुत कम रोशनी वाली जगह में इधर-उधर नज़र डाली। अभी एक ही अंक समाप्त हुआ था, इसलिए उसके पास ढूंढ़ने के लिए काफी समय था। दो या तीन बॉक्सों में देख चुकने के बाद एक अतिरिक्त बड़े बॉक्स में उसे एक महिला का चेहरा दिखा। उसने तुरन्त उसे पहचान लिया। मिस आर्चर स्टेज की तरफ मुंह किए बैठी थी। उसका चेहरा आंशिक रूप से उस बॉक्स के पर्दे से ढका था। उसके बगल में ही थोड़ा-सा पीछे की तरफ गिलबर्ट ऑसमण्ड अपनी कुरसी के पीठ से टेक लगाए बैठा था। लगता था कि वे उस समय वहां अकेले हैं। लॉर्ड वारबर्टन ने सोचा कि शेष साथी बाहर के अतिरिक्त ठंडेपन का लाभ उठाने मध्यान्तर की वजह से बरामदे में चले गए होंगे। वह कुछ देर उत्सुक नज़र से उस दिलचस्प जोड़ी को देखता खड़ा रहा। उसने अपने से पूछा कि क्या उसे उनके पास जाकर उनका एकांत भंग करना चाहिए। लेकिन उसने देखा कि इज़ाबेल ने उसे देख लिया है और इस घटना ने उसका निश्चय बना दिया। वह ऊपर चला गया। वहां रास्ते में रैल्फ टाउशेट उसे नज़र आया जो धीरे-धीरे सीढ़ियों से उतर रहा था। उसकी टोपी जड़-सी सिर पर टिकी थी और हाथ हमेशा की तरह अपनी जगह पर थे।

"एक क्षण पहले मैंने तुम्हें नीचे देखा था और तुम्हीं से मिलने नीचे आ रहा था। मैं यहां अकेला महसूस कर रहा हूं और मुझे एक साथ की आवश्यकता है," कहता हुआ रैल्फ उससे मिला।

"तुम्हारे पास बहुत अच्छा साथ है लेकिन तुमने इस समय उसे छोड़ रखा है।"

"तुम्हारा मतलब मेरी कज़िन से है ? अरे, उसके साथ एक मेहमान है और उसे मेरी ज़रूरत नहीं है। मिस स्टैकपोल और बैंटलिंग बाहर कैफे में आइसक्रीम खाने गए हैं—मिस स्टैकपोल को आईसक्रीम बहुत अच्छी लगती है। मेरे ख्याल में उन्हें भी मेरे साथ की आवश्यकता नहीं है। यह आपेरा तो बहुत ही बुरा है। वह औरत धोबिन की तरह नजर आती है और मोर की तरह नाचती है। मुझे बेहद घटिया लग रहा है।"

"बेहतर है, तुम घर चले जाओ," लॉर्ड वारबर्टन ने बिना सहानुभूति के कहा।

"और अपनी युवा कज़िन को इस उदास-सी जगह पर अकेली छोड़ जाऊं ?" रैल्फ ने अपनी हंसोड़ उदासी के साथ कहा।

"अगर वह तुम्हें पास नहीं चाहती तो सम्भवतः वह मेरा भी वहां जाना पसन्द नहीं करेगी।"

"नहीं, तुम्हारी बात अलग है। तुम चलकर बॉक्स में बैठो। मैं तब तक थोड़ा घूम आता हूं।"

लॉर्ड वारबर्टन बॉक्स में चला गया। वहां इज़ाबेल ने इसका स्वागत एक बहुत पुराने सम्मानित मित्र की तरह किया। इससे वारबर्टन ने सोचा कि यह कौन-सी दुनियादारी वह दिखा रही है। उसने मिस्टर ऑसमण्ड के साथ अभिवादन का आदान-प्रदान किया। उससे उसका परिचय एक दिन पहले ही हुआ था, और उसके आ जाने से वह आदमी अब दूर, अलग, खामोश-सा हो गया, मानो उन सब सम्भावित विषयों से वह अपने को दूर समझता हो जिन पर अब बातें होनी थी। लॉर्ड वारबर्टन को लगा कि क्रियात्मक स्थितियों में इज़ाबेल के चेहरे पर एक खास चमक और एक हल्की-सी उमंग आ जाती है। पर तीखी और स्फूर्तिभरी नज़र और सहज प्रफुल्लता, क्योंकि इज़ाबेल का स्वभाव ही था, इसलिए वारबर्टन की यह धारणा काफी गलत हो सकती थी। इसके

अतिरिक्त इज़ाबेल की बातों से लगता था कि वह पूरी तरह से सुस्थित है, उनकी कोमलता में ऐसी सचेत व्यवहार-कुशलता थी कि लगता था उसकी चेतना पूरी तरह उसके काबू में है। बेचारा लॉर्ड वारबर्टन कुछ क्षण बहुत अचम्भे में रहा। इज़ाबेल ने उसे पहले ही इतना निरुत्साह कर दिया था जितना कि कोई भी स्त्री किसी को कर सकती थी। फिर उस छलनाभरी सहजता का—इस क्षतिपूर्ति का जो कि एक तैयारी-सी लगती थी—क्या अर्थ था? उसकी आवाज़ में मीठी चतुराई थी, लेकिन यह खेल उसके साथ क्यों खेला जा रहा था? बाकी लोग वापस आ चुके थे। वह सतही, परिचित और घटिया आवेग फिर से शुरू हो गया था। बॉक्स बड़ा था, इसलिए उसके लिए भी वहां जगह थी—अगर वह थोड़ा पीछे होकर अन्धेरे में बैठना चाहता। वह आधा घण्टा वहां बैठा रहा। मिस्टर ऑसमण्ड इस बीच अपनी कोहनियों को घुटने पर टिकाए, आगे को झुका, इज़ाबेल के पीछे बैठा रहा।

लॉर्ड वारबर्टन को कुछ सुनाई दे रहा था—हाल की हल्की रोशनी में उस नवयुवती के नक्शों के अतिरिक्त उस अंधेरे कोने में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। जब दूसरा मध्यान्तर हुआ तो उनमें से कोई नहीं उठा। मिस्टर ऑसमण्ड, इज़ाबेल के साथ बातें करता रहा और लॉर्ड वारबर्टन अपने कोने में बैठा रहा। पर थोड़ी ही देर ऐसे बैठे रहने के बाद उसने दोनों महिलाओं से विदा ली। इज़ाबेल ने उससे ठहरने के लिए नहीं कहा,—इससे लॉर्ड बारबर्टन फिर से उद्विग्न हुए बिना न रह सका। क्यों वह उसके गुण को इतना महत्व देती है—जो कि गलत है—जबकि उसे दूसरे गुण से कोई वास्ता ही नहीं है, जो कि कहीं सही गुण है? उसे अपने उद्विग्न होने पर क्रोध आया, और फिर क्रोध आने पर क्रोध आया। वर्दी के संगीत ने उसे कोई सान्त्वना नहीं दी, और थियेटर से निकलकर वह घर की तरफ चल दिया—रोम की उन दुःखदायी और दुःखपूर्ण सड़कों पर से होता हुआ जिनका वह रास्ता भी नहीं जानता था, और जिनके आसमान के नीचे लोगों ने उससे भी बड़े दुःख ढोये थे।

"कैसा आदमी है यह?" उसके जाने के बाद ऑसमण्ड ने इज़ाबेल ने पूछा।

"आधे इंगलैंड का यह मालिक है। यही इसकी विशेषता है," हैनरीटा बोली, "इसीको ये लोग एक स्वतंत्र देश कहते है।"

"ओह, तब तो यह बहुत बड़ा आदमी है? खुशकिस्मत है कम्बख्त।"

गिलवर्ट ऑसमण्ड बोला।

"क्या तुम्हारे ख्याल में कंगाल लोगों का मालिक होना खुशकिस्मती है ?" मिस स्टैकपोल चीखी, "इसके हज़ारों किरायेदार हैं। अपनी चीज होना अच्छी बात है, लेकिन मेरे लिए, निर्जीव वस्तुएं ही ठीक हैं। मुझे मांस, खून, हृदयों और आत्माओं की मलकियत नहीं चाहिए।"

"मुझे लगता है कि तुम्हारे अधिकार में भी दो एक आदमी हैं," मिस्टर बैंटलिंग ने मज़ाक में कहा, "मुझे विश्वास नहीं कि वह अपने किरायेदारों पर ऐसे हुक्म चलाता होगा जैसे तुम मुझ पर चलाती हो।"

"लॉर्ड वारबर्टन एक महान् रेडिकल हैं" इज़ाबेल बोली। "उसके विचार बहुत ही ऊंचे है।"

"उसकी पत्थर की दीवारें बहुत ऊंची है। उसके बगीचे के इर्द-गिर्द कोई तीस मील लम्बी लोहे की जाली है," हैनरीटा ने मिस्टर ऑसमण्ड की जानकारी के लिए कहा। "मैं चाहूंगी कि वह हमारे बोसटन के कुछ रेडिकल लोगों के साथ बातचीत करके देखें।"

"क्या वे लोग लोहे की जालियों के पक्ष में नहीं है ?" मिस्टर बैंटलिंग ने पूछा।

"सिर्फ बुरे कंज़र्वेटिव्ज़ को बन्द करने के लिए। मुझे हमेशा लगता है जैसे मैं तुमसे एक कटावदार शीशे के साफ-सुथरे ढक्कन वाली किसी चीज़ के बारे में बात कर रही हूं।"

"क्या तुम इस अन-सुधरे सुधारक को अच्छी तरह जानती हो ?" ऑसमण्ड, इज़ाबेल से प्रश्न करता रहा।

"उतना ही जानती हूं जितने की मुझे ज़रूरत है।"

"और वह ज़रूरत कितनी है ?"

"मुझे उसे पसन्द करना पसन्द है।"

"पसन्द करना पसन्द है—अरे, यह तो एक प्रकार का लगाव है।" ऑसमण्ड बोला।

"नहीं,"—इज़ाबेल ने सोचकर कहा, "लगाव नापसन्द करने की पसन्द में है।"

"तो क्या तुम उसके प्रति इस तरह का लगाव रखने के लिए मुझे उकसा रही हो ?"

इज़ाबेल ने एक क्षण के लिए कुछ नहीं कहा। थोड़ा रुककर उसने उस सहज प्रश्न का बहुत ही गम्भीर उत्तर दिया, "नहीं, मिस्टर ऑसमण्ड, मैं कभी तुम्हें इस रूप में नहीं उकसाना चाहूंगी। लार्ड वारबर्टन बहुत ही अच्छा आदमी है।" यह उसने अधिक आसानी के साथ कहा।

"बहुत योग्य है वह ?" उसके मित्र ने पूछा।

"बहुत योग्य। वह उतना ही अच्छा है जितना कि देखने में लगता है।"

"तुम्हारा मतलब है कि उतना ही अच्छा जितना कि खूबसूरत है ? कितना खुशकिस्मत है वह—एक महान अंग्रेज पूंजीपति, ऊपर से योग्य और खूबसूरत, और इससे भी ऊपर तुम्हारा कृपापात्र। यह एक आदमी है जिससे मैं स्पर्धा कर सकता हूं।"

इज़ाबेल दिलचस्पी के साथ उसे देखती रही, "तुम हमेशा किसी न किसी से स्पर्धा करते हो। कल पोप से कर रहे थे, बेचारे लार्ड वारबर्टन से कर रहे हो।"

"मेरी स्पर्धा खतरनाक नहीं है, वह एक चूहे को भी नुकसान नहीं पहुंचा सकती। मैं लोगों को तबाह नहीं करना चाहता—मैं तो केवल उन जैसा होना चाहता हूं। इस तरह तबाही होगी, तो मेरी ही होगी।"

"तुम पोप बनना चाहोगे ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"मुझे वह बहुत पसन्द होता—लेकिन वह मुझे बहुत पहले बन जाना चाहिए था। लेकिन···" ऑसमण्ड फिर उसी बात पर लौट आया, "तुम अपने मित्र को बेचारा क्यों कहती हो ?"

"औरतें,—वे बहुत अच्छी होती हों तो—कभी-कभी उन मर्दों पर तरस दिखाती हैं, जिन्हें उन्होंने चोट पहुंचाई हो। यह उनका दया करने का तरीका है," रैल्फ पहली बार बात में हिस्सा लेता हुआ बोला। उसका व्यंग्य इतना चतुराई-भरा था कि बिलकुल मासूम जान पड़ता था।

"बताओ, क्या मैंने लार्ड वारबर्टन को चोट पहुंचाई है ?" इज़ाबेल ने अपनी आंखों को ऊपर उठाते हुए इस तरह पूछा जैसे यह बात उसके लिए बिलकुल नई हो।

"अगर तुमने ऐसा किया है तो उसके लिए यही ठीक भी था," हेनरीटा बोली। तभी बैले का परदा उठ गया।

इज़ाबेल अगले चौबीस घंटे अपने गुणवान प्रशंसक से नहीं मिली। लेकिन

आपेरा की भेंट के दूसरे दिन वह उसे कैपिटल की गैलरी में अकस्मात मिल गया। वहां वह संग्रह की सबसे मुख्य वस्तु, मरते पहलवान की मूर्ति के सामने खड़ा था। इज़ाबेल अपने साथियों के साथ अन्दर आई थी, जिनमें इस बार भी गिलबर्ट आॅसमण्ड शामिल था। वे लोग सीढ़ियां चढ़कर सबसे आगे के और सबसे सुन्दर कमरे में चले गए। लार्ड वारबर्टन ने इज़ाबेल से काफी सहज भाव से बात की। लेकिन क्षण-भर बाद ही उसने कहा कि वह गैलरी से जा रहा है, "और मैं रोम से भी जा रहा हूं," उसने जोड़ा, "मुझे तुमसे विदा लेनी चाहिए।" इज़ाबेल को सरसरी तौर पर यह सुनकर दुःख हुआ। शायद इसलिए कि उसे अब इस बात का डर नहीं रह गया था कि वह फिर से उससे प्रस्ताव करेगा। वह अपना खेद शब्दों में प्रकट करने ही जा रही थी कि उसने अपने को रोक लिया, और केवल अच्छी यात्रा के लिए उसे शुभकामनाएं दीं। इससे लार्ड वारबर्टन ने उसकी तरफ निराशा के साथ देखा, "मुझे लगता है, तुम मुझे बहुत अस्थिर चित्र समझोगी। मैंने तुमसे उस दिन कहा था मैं अभी रुकना चाहता हूं।"

"नहीं, तुम अपना मन बदल भी सकते हो।"

"यही मैंने किया है।"

"तो शुभ यात्रा।"

"तुम मुझसे छुटकारा पाने की बहुत जल्दी में हो," वारबर्टन ने कहा।

"बिलकुल नहीं। पर मुझे विदाइयां अच्छी नहीं लगतीं।"

"लेकिन मैं क्या करता हूं, इसकी तुम्हें चिन्ता नहीं है," वह दुःख के साथ बोला।

इज़ाबेल क्षण-भर उसे देखती रही, "देखो," वह बोली, "तुम अपना वचन नहीं निभा रहे।"

वह पन्द्रह साल के लड़के की तरह झेंप गया, "अगर मैं अपना वचन नहीं निभा रहा तो इसका मतलब है कि मैं नहीं निभा सकता। और इसीलिए मैं जा रहा हूं।"

"तो गुड बाई।"

"गुड बाई," लेकिन वह फिर भी थोड़ी देर रुका रहा, "अब फिर तुमसे मुलाकात होगी?"

"इज़ाबेल थोड़ा हिचकिचाई। लेकिन जल्दी ही उसे बात सूझ गई, "तुम्हारा

विवाह हो जाने के बाद।"

"वह सम्भव नहीं है। हां, तुम्हारा विवाह हो जाने के बाद कहा जा सकता है।"

"ठीक है, यही सही। गुड बाई।"

उन दोनों ने हाथ मिलाए, और वारवर्टन इज़ाबेल को पुराने चमकते पत्थरों से जड़े उस खूबसूरत कमरे में अकेली छोड़कर चला गया। इज़ाबेल मूर्तियों के केन्द्र में जाकर बैठ गई और अपनी धूमिल-सी नजर उनके सुन्दर और सूने-से चेहरों पर जड़ाए जैसे उनकी सार्वकालिक खामोशी की आवाज़ सुनने लगी। कम से कम रोम में यह असम्भव है कि व्यक्ति इतनी ग्रीक मूर्तियों के बीच घिरकर भी उनकी शालीन शान्ति से प्रभावित न हो—वह खामोशी जैसे एक ऊंचे बन्द दरवाज़े के भीतर गहरी शान्ति की तरह आत्मा को धीरे-धीरे छा लेती है। मैं रोम का नाम इसलिए विशेष रूप से ले रहा हूं कि वहां की हवा ही इस प्रकार के प्रभावों के लिए एक उत्कृष्ट माध्यम है। वहां की सुनहरी रोशनी मन पर पड़ते प्रभावों में घुलमिल जाती है। अतीत की गहरी खामोशी जोकि अभी तक काफी स्पष्ट है, यद्यपि अब उसमें ढेर-से नामों के अतिरिक्त कुछ नहीं रह गया, उनपर एक गम्भीर-सा जादू छोड़ती लगती है। केपिटल की खिड़कियों की चिकें अंशत: बन्द थीं और एक साफ और प्यारी-सी छाया उन मूर्तियों पर पड़ रही थी जोकि उन्हें अतिरिक्त कोमल मानवीय रूप दे रही थीं। इज़ाबेल काफी देर उन मूर्तियों की आकर्षक स्थिर शालीनता के बीच वहां बैठी रही, और इस बात पर आश्चर्य करती रही कि क्या-क्या अनुभव उनकी आज अनुपस्थित आंखों को हुए होंगे और आज के अजनबी कानों को उनके मुंह की ध्वनि कैसी लगेगी। कमरे की लाल सुर्ख दीवारें मूर्तियों की एकतारता को तोड़ रही थीं। ज़मीन का चकता संगमरमर उनके सौन्दर्य को प्रतिबिम्बित कर रहा था। इज़ाबेल ने यह सब कुछ पहले देख रखा था, लेकिन अब उसे दोबारा उन सबको देखने में सुख मिल रहा था। इसमें अधिक खुशी उसे इसलिए हो रही थी कि वह इस समय फिर एक बार बिलकुल अकेली थी।

आखिर उसका ध्यान जिन्दगी की एक और गहरी लहर ने बंटा दिया। एक यात्री अन्दर आया, कुछ देर उस मरते पहलवान को ध्यान से देखता रहा, फिर समतल फर्श पर आवाज़ पैदा करता दूसरे दरवाज़े से बाहर निकल गया। कोई आधे घण्टे के बाद गिलबर्ट ऑसमण्ड वहां आया जो स्पष्टत: और साथियों से आगे

था। वह अपने हाथ पीछे को किए अपनी साधारण प्रश्नात्मक लेकिन अप्रिय-सी मुस्कराहट के साथ धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ा, "तुम्हें अकेली देखकर मुझे आश्चर्य है। मेरा ख्याल है तुम्हें यहां साथ मिल गया था।"

"साथ तो मेरे पास है—और सब से बढ़िया साथ है।" और इज़ाबेल ने एंटिनस तथा फॉन की तरफ नज़र डाल ली।

"क्या तुम उन्हें एक अंग्रेज़ सामन्त से बेहतर साथी मानती हो?"

"मेरा, अंग्रेज़ सामन्त थोड़ी देर पहले चला गया है।" जानबूझ कर रूखे स्वर में कहती वह उठ खड़ी हुई।

मिस्टर ऑसमण्ड ने उसके रूखेपन को लक्ष्य किया जिससे उसकी प्रश्न में रुचि और भी बढ़ गई। "मेरा ख्याल है कि मैंने जो कुछ कल सुना था वह सच है। तुम उस भले आदमी के प्रति काफी निष्ठुर हो।"

इज़ाबेल एक क्षण मरते पहलवान की तरफ देखती रही। "यह सच ही है। मैं उसके साथ बहुत नम्रता बरतती हूं।"

"मेरे कहने का मतलब भी ठीक यही है," गिलबर्ट ऑसमण्ड ने कहा। उसके मज़ाक में एक ऐसा आह्लाद था जिसकी यहां व्याख्या करनी चाहिए। यह हमें मालूम ही है कि उसे मौलिक असाधारण, महान् और उत्कृष्ट चीज़ों का शौक था। अब जब कि उसने अपने ही वर्ग, जाति और अभिरुचि के व्यक्ति लॉर्ड वारबर्टन को देखा, तो उसके मन में यह ख्याल एक नया ही आकर्षण बन गया कि इस भद्र व्यक्ति के प्रस्ताव को ठुकराने वाली यह लड़की अब उसके चुनी हुई वस्तुओं के संचय में शामिल होने जा रही है। गिलबर्ट ऑसमण्ड के मन में ऐसे कुलीन वंश के लिए एक विशेष आदर था—उतना उसकी विशेषता के लिए नहीं जितना उसकी ठोस वास्तविकता के लिए। उसने अंग्रेज़ ड्यूक न बन सकने के लिए कभी अपने भाग्य को क्षमा नहीं किया था, और वह वारबर्टन के प्रति इज़ाबेल के इस अनपेक्षित व्यवहार के गम्भीर अर्थ का अनुमान लगा सकता था। यह कितना सही होगा कि जिस स्त्री से वह शादी करे, वह इस प्रकार का व्यवहार कर चुकी हो।

रैल्फ टाउशेट ने अपने अच्छे दोस्त से बात करते हुए गिलबर्ट ऑसमण्ड के व्यक्तिगत गुणों की काफी मीन-मेख के साथ चर्चा की थी, लेकिन रोम में बिताए शेष दिनों में उस व्यक्ति के व्यवहार को देखकर सम्भवतः उसने अपने को कुछ

अनुदार महसूस किया होगा। ऑसमण्ड हर दिन का काफी हिस्सा इज़ाबेल और उसके साथियों के साथ बिताता था, और अन्त में उन पर यही प्रभाव छोड़ता था कि साथ समय बिताने के लिए वह सबसे सरल और सीधा व्यक्ति है। कौन नहीं समझ सकता था कि चातुरी और विनोद दोनों पर उसका पूरा अधिकार है? शायद इसीलिए रैल्फ को उसकी पुराने ढंग की ढोंगी सामाजिकता से वितृष्णा हुई थी। पर अब इज़ाबेल का वह सनकी साथी भी यह बात मानने लगा था कि साथ के लिए ऑसमण्ड बहुत प्यारा आदमी है। उसका उत्तेजनाहीन विनोद, उसका यथार्थ ज्ञान, उसका सही शब्दों का इस्तेमाल, सब कुछ उतना ही सुविधाजनक था जितनी कि मुंह में लगे सिगरेट के लिए एक दोस्त की माचिस की आग। स्पष्टतः ऑसमण्ड का सब चीज़ों से मनोरंजन होता था और आश्चर्य करने वाला व्यक्ति न होने के कारण वह खुलकर हर चीज़ की सराहना भी करता था। वह बहुत उत्साहित होता हो, ऐसी बात नहीं थी—युद्ध-संगीत में वह नगाड़े को उंगली से भी छूने वाला आदमी नहीं था। बहुत ऊंचे स्वर की अभिव्यक्ति से उसे चिढ़ थी। उसे बल्कि लगता था कि मिस आर्चर के स्वभाव में कहीं बहुत उतावली है। उसका यह दोष दुःख का विषय था—क्योंकि सिवाय इसके उसमें और कोई दोष था ही नहीं। यह दोष भी न होता, तो वह उसे अपने उतनी ही अनुकूल लगती जितना हथेली के लिए हाथी-दांत का हत्था। ऑसमण्ड में यह दोष नहीं था, बल्कि अपनी एक गहराई थी। रोम की मई के उन अन्तिम दिनों में वह सन्तुष्ट भाव से विला बोर्घीस की छोटी-छोटी फूलों की क्यारियों के आस-पास और काई लगे संगमरमर पर अनिश्चित ढंग से धीरे-धीरे टहलता रहता। उसे हर चीज़ अच्छी लगती—पहले कभी उसे इतनी चीज़ें एक-साथ अच्छी नहीं लगी थीं। पुरानी स्मृतियां, पुराने दिन, जैसे फिर सजीव हो उठे थे। एक शाम सराय के अपने कमरे में वापस पहुंचकर उसने एक सॉनेट लिखा 'रोम में वापसी'। दो-एक दिन बाद उसने यह शुद्ध और चमत्कारिक रचना इज़ाबेल को दिखाई। साथ ही बताया कि जीवन के कुछ स्मरणीय अवसरों को छन्दोबद्ध करने का यह इतालवी ढंग है।

वह अकेलेपन में सुख पाता था। वह इसे स्वयं भी स्वीकार करता कि उसे यह अनुभूति रहती थी कि आसपास कहीं कुछ गलत है, भद्दा है। प्रकट सहजता की शबनम बहुत कम कभी उसकी आत्मा पर उतरती थी। पर इस समय वह

प्रसन्न था—इतना कि जीवन में कभी नहीं रहा था। इस अनुभूति का एक ठोस आधार भी था। वह आधार था मानव मन की सबसे अच्छी भावना—सफलता की भावना। ऑसमण्ड को अधिक सफलता कभी नहीं मिली थी—वह इस सम्बन्ध में बहुत सचेत था कि इस अहसास से उसे उलझन भी होती है। वह मन ही मन दोहराता, "मैं बिगड़ा नहीं हूं—नहीं मैं बिगड़ा नहीं हूं। अगर मरने से पहले मुझे सफलता मिलती है, तो वह पूर्णतया मेरा अधिकार होगा।" उसका तर्क यही कहता था कि देर तक उस चीज को चाहते रहने के कारण ही उसे उसका अधिकार प्राप्त हो गया है। यूं उसके जीवन में सफलता का सर्वथा अभाव नहीं रहा था—देखने वाले को उसके जीवन में जहां तहां उपलब्धि के कुछ अंश नजर आ सकते थे। पर कुछ सफलताएं बहुत पुरानी पड़ चुकी थीं, और कुछ बहुत आसान रही थीं। इस बार भी उसे बहुत कष्ट नहीं उठाना पड़ा। सफलता उसे आसानी से मिल गई—मतलब जल्दी से—क्योंकि उसने अपनी सामर्थ्य से कहीं अधिक और अतिरिक्त प्रयत्न इसके लिए किया था। उसका यौवन के दिनों से ही सपना रहा था कि कुछ उसके पास हो जो वह दूसरों को दिखा सके, पर समय बीतने के साथ उत्कर्ष के साथ जुड़ी शर्तें उसे घृणास्पद लगने लगी थीं—जैसे कि अपना पियक्कड़पन जाहिर करने के लिए कोई गिलास के गिलास बियर के पीता चला जाए। आज उसे वैसा ही सुख मिल रहा था जैसा किसी अजायबघर की दीवार पर बने एक चित्र को अचानक यह जानकर मिलता कि उसे उसकी शैली से ही एक महान् कलाकार की रचना मान लिया गया है। इज़ाबेल को उसकी शैली पहचानने में किसी से सहायता नहीं लेनी पड़ी थी—और अब वह स्वयं उसका आनन्द लेने के साथ-साथ सारी दुनिया को इसका महत्त्व बता सकती थी। अगर इज़ाबेल ऐसा करे, तो उसकी प्रतीक्षा व्यर्थ नहीं जाएगी।

वहां से चलने के निश्चित समय से पहले इज़ाबेल को मिसेज टाउशेट का यह तार मिला: "४ जून को फ्लोरेंस से बोलागियों के लिए रवाना। तुम्हारा और कार्यक्रम न हो तो तुम्हें साथ ले जाऊंगी। पर तुम रोम में रुकी रहो, तो प्रतीक्षा नहीं करूंगी।" रोम में रुकने का अपना सुख था, पर इज़ाबेल का दूसरा विचार था। उसने अपनी मौसी को लिखा था कि वह तुरन्त उनके साथ चल पड़ेगी। गिलबर्ट ऑसमण्ड को उसने यह बात बताई, जो वह बोला कि वह कई एक सर्दियां और गर्मियां इटली में बिताने के कारण अभी कुछ दिन सेंट पीटर्स

की छाया में रुकना चाहेगा। वह अभी दस दिन फ्लोरेंस नहीं जाएगा, और तब तक वह वहां से चल चुकी होती। इस तरह कई महीने बाद ही वे लोग मिल सकेंगे। यह बात उस होटल के बड़े से सजे हुए ड्राइंग रूम में हुई—जहां हमारे मित्र ठहरे थे। शाम गहरी हो चुकी थी और अगले दिन रैल्फ को इज़ाबेल के साथ फ्लोरेंस के लिए रवाना होना था। ऑसमण्ड को तब वह अकेली वहां मिल गई थी। मिस स्टैकपोल ने चौथी मंजिल पर ठहरे एक खुशमिजाज़ अमरीकन परिवार से मित्रता कर ली थी और लम्बा जीना चढ़कर उनसे मिलने गई थी। हेनरीटा सफर में लोगों से बहुत जल्दी दोस्ती कर लेती थी और उसकी कई घनिष्ठ मित्रताएं रेलगाड़ियों में हुई थीं। रैल्फ कल की यात्रा की तैयारी कर रहा था और इज़ाबेल पीले परदों और गद्दों के बीच अकेली बैठी थी। कुरसियां-सोफे नारंगी रंग के थे और दीवारों और खिड़कियों को जामुनी परदों से ढका गया था। तसवीरों और आईनों के चौखटे बड़े-बड़े थे और छत गहरी महराबदार थी जिस पर परियों और फरिश्तों के नगे चित्र बने थे। ऑसमण्ड को वह जगह भयावह रूप से भौंडी लग रही थी। वह सारा थोथा प्रदर्शन शेखी की झूठी बातों की तरह था। इज़ाबेल के हाथ में एम्पेयर की एक जिल्द थी जो रोम आने पर रैल्फ ने उसे भेंट की थी। वह उंगली बीच में रखकर किताब को गोदी में लिए थी, पर पढ़ने के लिए उतावली नहीं थी। पास की मेज पर गुलाबी टिशू-पेपर से ढका लैम्प जल रहा था जिससे सारे दृश्य पर एक पर एक पीला गुलाबीपन फैला था।

"तुम कहती हो कि तुम वापस आ जाओगी, लेकिन कौन जानता है ?" गिलबर्ट ऑसमण्ड बोला। "मेरे ख्याल में तुम पूरी दुनिया की यात्रा शुरू कर दोगी। तुम वापस लौटने के लिए किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं हो। तुम ठीक वही कर सकती हो कि जो कि तुम चाहो—तुम स्पेस में भी घूम आ सकती हो।"

"मेरे ख्याल में तो इटली भी स्पेस का ही एक हिस्सा है," इज़ाबेल ने जवाब दिया। "मैं रास्ते में वहां भी आ सकती हूं।"

"दुनिया का चक्कर लगाने के बीच ? नहीं, ऐसा मत करना। हमें परिशिष्ट में मत डाल देना—हमें एक अलग अध्याय देना। मैं तुमसे तुम्हारी यात्राओं के बीच नहीं मिलना चाहता। मैं बल्कि तुम्हें उनकी समाप्ति पर ही मिलना चाहूंगा। मैं तुम्हें थकी और सन्तुष्ट देखना चाहूंगा," आसमण्ड ने क्षण भर बाद जोड़ा। "मैं तुम्हें ऐसी स्थिति में देखना अधिक पसन्द करूंगा।"

इज़ाबेल ने झुकी आंखों से, एम्पियर के पन्नों पर अपनी उंगलियां फिराईं। "तुम कई बार चीज़ों को मज़ाक में डाल देते हो। मैं समझती हूं तुम्हारी स्वयं ऐसी कोई इच्छा नहीं होती, यह भी नहीं, तुम्हारे मन में मेरी यात्राओं के लिए कद्र नहीं है—तुम उन्हें बेकार समझते हो।"

"किस बात से तुम्हें ऐसा लगता है ?"

वह अपने उसी लहजे में बात करती गई, और अपनी किताब के कोने को पेपर-नाइफ से छेड़ती रही। "तुम केवल मेरे अज्ञान और त्रुटियों को देखते हो कि किस तरह मैं यहां-वहां आती जाती हूं जैसे कि यह दुनिया मेरी अपनी हो। और यह भी केवल इसलिए कि ऐसा करने की मुझमें सामर्थ्य है। तुम्हारे विचार में एक औरत को ऐसा नहीं करना चाहिए। तुम्हारे ख्याल में यह एक साहसिक और शालीनता रहित काम है।"

"मुझे तो यह बहुत अच्छा लगता है," आसमण्ड बोला, "तुम मेरे विचार जानती हो—मैंने तुम्हें उनके बारे में बहुत कुछ बतलाया है। तुम्हें याद नहीं मैंने तुमसे कहा था कि व्यक्ति को अपना जीवन कलात्मक बनाना चाहिए ? पहले तो तुम चकित हो गई थी, लेकिन मैंने तुमसे कहा था कि तुम मुझे अपने जीवन के बारे में बिल्कुल वैसा ही करती लगती हो।"

इज़ाबेल ने किताब से आंखें उठाकर ऊपर देखा। "तुम दुनिया में जिस चीज़ से नफरत करते हो, वह है बेकार की कला।"

"सम्भवतः। लेकिन तुम्हारी कला, तो मुझे बिल्कुल निर्दोष नज़र आती है।"

"अगर अगली सर्दियों में मैं जापान चली जाऊं तो तुम मुझपर हंसोगे," वह कहती गई।

ऑसमण्ड गम्भीर भाव से मुस्कराया। लेकिन वह हंसा नहीं, क्योंकि बात मज़ाक में नहीं हो रही थी। इज़ाबेल निःसन्देह गम्भीर थी, ऑसमण्ड ने उसे इस तरह पहले भी देखा था। "तुम्हारे पास ऐसी कल्पना है जो किसीको भी भौंचक कर सकती है।"

"यही तो मेरा मतलब है। तुम्हें यह ख्याल ही बेहूदा लगता है।"

"मैं जापान जाने के लिए कुछ भी कुरबान कर सकता हूं। वह उन देशों में है कि जिन्हें मैं देखना चाहता हूं। क्या तुम पुरानी चीज़ों में मेरी दिलचस्पी देखते हुए यह बात नहीं मान सकती ?"

"पर मेरे पास पुरानी चीज़ों के प्यार का बहाना नहीं है," इज़ाबेल बोली।

"तुम्हारे पास इससे बेहतर बहाना है—कि तुम्हारे पास जाने के साधन हैं। तुम्हारा यह ख्याल बिल्कुल गलत है कि मुझे तुम्हारे वहां जाने से हंसी आएगी। मैं नहीं जानता वह बात तुम्हारे दिमाग में कैसे आई है।"

"तुम्हारे पास साधन नहीं है, और मेरे पास हैं—इसे तुम उपहासास्पद समझो तो मुझे आपत्ति न होगी, क्योंकि तुम सब कुछ जानते हो और मैं कुछ भी नहीं जानती।"

"यह और भी कारण है कि तुम्हें यात्रा करनी चाहिए और सीखना चाहिए।" इसके साथ ही, उसने जोड़ा, मानो यह भी एक विशेष बात हो, "मैं सब कुछ नहीं जानता।"

इज़ाबेल उसके इस गम्भीरता से बात करने से हैरान नहीं हुई। वह सोच रही थी कि उसकी ज़िन्दगी के यह कुछ सुखद क्षण—उसे रोम में बिताए ये कुछ दिन इसी तरह लगे थे मानो वह पुराने वक्तों की कोई छोटी-सी राजकुमारी हो जिसने बहुत ही कीमती वस्त्र पहने हों और जिसके पीछे की ओढ़नी को गुलामों या इतिहासकारों ने हाथों में उठा रखा हो—अब समाप्ति पर आ गए थे। इसमें से अधिकतर सुखद समय का श्रेय मिस्टर आसमण्ड को जाता था, पर इसे स्वीकार करने की तकलीफ में वह इस समय नहीं पड़ना चाहती थी। उसने पहले ही इस विषय के साथ काफी न्याय किया था। लेकिन उसने अपने से कहा कि अगर यह खतरा है कि वे फिर नहीं मिलेंगे तो सम्भवतः यह अच्छा ही है। सुखद समय बार-बार नहीं आता, और उसके साहसिक क्षणों का चेहरा अभी से बीच समुद्र के उस रोमानी टापू की तरफ मुड़ गया था जहां से जामुनी अंगूर खाने के बाद, हवा के चलते ही वह रवाना हो रही थी। उसके इटली लौटने तक सम्भव था आसमण्ड बदल जाए—उसे यह अनोखा व्यक्ति इसी रूप में पसन्द था—और वैसा खतरा मोल लेने से बेहतर था कि वह उससे मिले ही नहीं। लेकिन अगर उसे वहां नहीं लौटना था, तो यह काफ़ी दुःखद बात थी कि वह अध्याय वहीं समाप्त हो रहा था। उसकी आंखों में आंसू उमड़ने लगे। इस अनुभूति ने उसे चुप कर दिया। गिलबर्ट आसमण्ड भी चुप रहा। वह उसकी तरफ देख रहा था "सभी जगह जाना," उसने आखिर धीमी और कोमल आवाज़ में कहा, "सभी कुछ करना, और ज़िन्दगी में से सभी कुछ हासिल करना। खुश रहना—और विजय पाना।"

"विजय पाने से तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"कि वही करना जो तुम्हें पसन्द हो।"

"तब तो विजय पाने का अर्थ है असफल होना। ऐसी फिजूल बातें करना जो व्यक्ति को पसन्द हों, कभी-कभी उसे बहुत थका देता है।"

"यह ठीक है" आसमण्ड ने हल्की तेज़ी के साथ कहा। "जैसा कि मैंने अभी कहा था, तुम एक दिन थक जाओगी।" वह थोड़ी देर रुका, फिर बोला, "मैं नहीं जानता कि जो कुछ मैं तुमसे कहना चाहता हूं, उसे कहने के लिए मुझे तब तक इंतजार करना चाहिए या नहीं।"

"उस बात को जाने बिना मैं तुम्हें कोई सलाह नहीं दे सकती। लेकिन मैं उस समय बहुत बदमिज़ाज होती हूं जब मैं थकी होती हूं," इज़ाबेल ने कहा।

"मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता। तुम्हें कभी-कभी गुस्सा ज़रूर आता होगा—यह मैं मान सकता हूं, यद्यपि मैंने गुस्से में तुम्हें कभी देखा नहीं। लेकिन तुम बदमिज़ाज कभी नहीं हो सकती।"

"तब भी नहीं जब मेरा पारा चढ़ा हो ?"

"पारा तुम्हारा कभी नहीं चढ़ सकता। तुम संभल जाती हो, और यही बात सबसे खूबसूरत है।" आसमण्ड संयत ईमानदारी के साथ बोला। "वे क्षण देखने में सचमुच बहुत महान् होंगे।"

"काश कि वे क्षण अभी आए होते," इज़ाबेल अपना सन्तुलन खोती बोली।

"मुझे भय नहीं है। मैं बांह समेटकर खड़ा तुम्हारी प्रशंसा कर सकता हूं। मैं बहुत ही गम्भीरता से बात कर रहा हूं।" वह अपने घुटनों पर हाथ रखे आगे को झुक गया। कुछ क्षणों के लिए उसने अपनी आंखें ज़मीन पर गड़ा दीं। "जो बात मैं तुमसे कहना चाहता हूं," उसने आंखें ऊपर उठाकर कहा, "वह यह है कि मैं तुमसे प्रेम करता हूं।"

इज़ाबेल तत्काल खड़ी हो गई। "इस बात को तब तक अपने तक रखो जब तक मैं थक नहीं जाती।"

"औरों के मुंह से यही बात सुन-सुनकर ?" आसमण्ड ने बैठे-बैठे आंखें उसकी तरफ उठा दीं। "देखो या तो तुम यह बात अभी सुनोगी या फिर कभी नहीं। जैसी तुम्हारी इच्छा हो। कुछ भी हो मुझे यह बात अभी कहनी है।" इज़ाबेल मुड़ चुकी थी, पर उसने उसी रूप में अपने को रोक लिया था और अपनी नज़र

को आसमण्ड पर ठहरा लिया था। वे दोनों कुछ क्षण इसी स्थिति में एक-दूसरे को देखते रहे—एक ऐसी लम्बी और सचेत नज़र से जो ज़िन्दगी के ऐसे नाज़ुक क्षणों में ही सामने आती है। फिर आसमण्ड उठकर उसकी तरफ आया—एक ऐसे गहरे आदर के साथ जैसे कि उसे भय हो कि वह बहुत घनिष्ठ बनने की कोशिश कर रहा है। "मैं तनमन से तुमसे प्यार करता हूं।"

उसने इस बात को बहुत ही निरपेक्ष और विवेकपूर्ण भाव के साथ दोहराया था—एक ऐसे व्यक्ति की तरह जो कि बहुत कम की इच्छा रखता हो, और अपने ही सन्तोष के लिए बात कर रहा हो। इज़ाबेल की आंखों से आंसू बाहर आ गए। वे दर्द के तीखेपन को संभाल नहीं सके। उसे लगा जैसे एक सुन्दर-सी कुण्डी थी जो हिल गई है। आगे को या पीछे को, यह वह नहीं कह सकती थी। जो शब्द आसमण्ड ने वहां खड़े-खड़े कहे थे वे उसे बहुत ही खूबसूरत और कोमल लगे थे—प्रारम्भिक बसंत की सुनहरी हवा की तरह। लेकिन एक नैतिक दवाव से वह पीछे हट गई—अब भी आसमण्ड की तरफ मुंह किए—जैसे कि वह पहले ऐसे अवसरों पर पीछे हटी थी। "कृपया, ऐसा न कहो," उसने एक ऐसे गहरे भय के साथ कहा जैसे एक बार फिर सोचने और निर्णय लेने की मजबूरी उसपर आ पड़ी हो। सबसे अधिक भय उसे उस बात की शक्ति से लगा था हालांकि उससे भय का निर्वासन हो जाना चाहिए था। उसमें कहीं गहरे में भीतर एक सहज और सच्ची वासना थी जिसे बस उकसाने की ज़रूरत थी। वह बैंक में जमा एक बड़ी-सी राशि की तरह थी—जिसे व्यय करने के विचार से ही उसे डर लगता था। एक बार छूने से ही वह सारी की सारी राशि बाहर निकल आ सकती थी।

"मुझे ज़रा भी अनुमान नहीं है कि तुम्हें इससे फर्क पड़ता है या नहीं," आसमण्ड बोला। "मेरे पास देनेको बहुत ही कम है। जो कुछ भी मेरे पास है, मेरे लिए काफी है, लेकिन तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं है। मेरे पास न धन है, न नाम है और न ही किसी प्रकार की आधारभूत सुविधाएं हैं। इसलिए मैं कुछ भी देने की बात नहीं कहता। मैं यह सब कुछ इसलिए कह रहा हूं कि मुझे विश्वास है, तुम्हें यह बात बुरी नहीं लगेगी। हो सकता है कि किसी दिन तुम्हें सुख ही दे। मुझे यह सुख देती है, इसका मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं," वह उसके सामने खड़ा, कहता गया। काफी हद तक वह उसकी तरफ झुका था और हाथ में पकड़ी टोपी को धीरे-धीरे गोल घुमा रहा था। उसमें एक शिष्ट कम्पन था, लेकिन ज़रा भी बेतुकापन नहीं

था। उसका दृढ़ और सुसंस्कृत चेहरा थोड़ा विकृत हो गया था, "मुझे यह बात दुःख नहीं देती, क्योंकि यह एक बहुत सरल-सी बात है। मेरे लिए तुम दुनिया की सबसे महत्त्वपूर्ण स्त्री रहोगी।"

इज़ाबेल ने अपने को इस रूप में देखा—ध्यान से देखा। उसे लगा कि वह एक शालीनता के साथ इस चरित्र को निभा रहा है। लेकिन जो कुछ उसने कहा उसमें इस भाव का स्पर्श नहीं रहा था। "तुमने मुझे कोई चोट नहीं पहुंचाई। लेकिन तुम्हें इन बात का ध्यान रखना चाहिए कि बिना चोट खाए भी व्यक्ति परेशान हो सकता है, दुःखी हो सकता है और उखड़ सकता है।" उसने अपने को यह अन्तिम शब्द कहते सुना, तो उसे यह शब्द बहुत ही गलत लगा। लेकिन यही शब्द था जो अपनी बेअक्ली में उस समय उसे सूझा।

"मुझे अच्छी तरह ध्यान है। तुम बहुत ही हैरान और भौंचक हो रही हो। लेकिन अगर यह कुछ और न होकर इतना ही है, तो यह बीत जाएगा। हो सकता है कि यह अपने पीछे कुछ ऐसा ही छोड़ जाए जिसके लिए मुझे शर्मिन्दा न होना पड़े।"

"मैं नहीं जानती कि वह क्या छोड़ जाएगा," इज़ाबेल ने एकदम कहा। "तुमने देखा है कि मैं विभोर नहीं हुई।" वह एक फीकी-सी मुस्कान के साथ कहती गई। "मेरा दिमाग इतना प्रभावित नहीं हुआ कि मैं कुछ सोच ही न सकूं। मैं खुश हूं कि हम लोग अलग हो रहे हैं—कि मैं कल रोम से चली जाऊंगी।"

"मैं इस बात पर तुमसे सहमत नहीं हूं।"

"मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं समझ पा रही," इज़ाबेल ने एकाएक कहा। फिर सहसा उसका रंग सुर्ख हो गया, क्योंकि लगभग साल-भर पहले यही बात उसने लार्ड वारबर्टन से कही थी।

"अगर तुम जा न रही होतीं, तो शायद तुम मुझे बेहतर समझ सकतीं।"

"मैं ऐसा फिर किसी दिन करूंगी।"

"मुझे ऐसी ही उम्मीद है। मुझे समझना बहुत आसान है।"

"नहीं, नहीं," इज़ाबेल ने ज़ोर देकर कहा, "यहां तुमने ईमानदारी नहीं बरती। तुम्हें जानना आसान नहीं है। किसीको भी जानना आसान नहीं है।"

"ठीक है," वह हंसा। "लेकिन मैंने यह बात इसलिए कही है कि मैं अपने को जानता हूं।"

"सम्भव है। लेकिन तुम बहुत समझदार हो।"

"तुम भी हो मिस आर्चर !" आसमण्ड बोला।

"मुझे ऐसा इस समय महसूस नहीं हो रहा। फिर भी मैं इतनी समझदार अवश्य हूं कि यह सोच सकूं कि इस समय यही बेहतर है कि तुम चले जाओ। गुड नाइट।"

"गॉड ब्लैस यू।" गिलबर्ट आसमण्ड ने उसका हाथ पकड़कर कहा जिसे आगे बढ़ाने में वह असफल रही। उसके बाद वह बोला : "अगर हम फिर मिले, तो तुम मुझे बिल्कुल वैसा ही पाओगी, जैसा तुम मुझे छोड़कर जा रही हो। अगर हम नहीं भी मिले, तो भी मैं बिल्कुल ऐसा ही रहूंगा।"

"धन्यवाद। गुड बाई।"

इज़ाबेल के इस मेहमान के बारे में एक बात बिलकुल निश्चित थी—वह अपनी इच्छा से तो जा सकता था, लेकिन उसे भेजा नहीं जा सकता था, एक बात और है। "मैंने तुमसे कुछ भी नहीं चाहा—यह भी नहीं कि तुम भविष्य में एक बार भी मेरे बारे में सोचो। तुम्हें मेरे साथ इतना तो न्याय करना ही चाहिए। लेकिन एक छोटा-सा काम है जो मैं चाहता हूं तुम करो। मैं काफी समय तक घर नहीं लौटूंगा। रोम बहुत ही प्यारी जगह है, और मेरी मनःस्थिति के व्यक्ति के लिए बहुत अनुकूल है। मैं जानता हूं कि तुम्हें इसे छोड़ने का दुःख है, लेकिन तुम्हारा अपनी आंटी की इच्छानुसार चलना ही ठीक है।"

"वह तो ऐसा नहीं चाहती," इज़ाबेल अजीब ढंग से फूट पड़ी।

ऑसमण्ड स्पष्टतः कुछ ऐसे शब्द कहने जा रहा था कि जो इस बात का उत्तर दे सकते, लेकिन उसने अपना मन बदलकर महज़ इतना ही कहा, "यह उचित ही है कि तुम उनके साथ जाओ। यह बहुत ही उचित है। सब कुछ वही करो जो उचित हो, मैं यही चाहूंगा। क्षमा करना कि मैं तुम्हारा इतना हितैषी बन रहा हूं। तुम कहती हो कि तुम मुझे नहीं जानतीं; लेकिन जब तुम मुझे जानने लगोगी, तो तुम्हें पता चलेगा कि सद्व्यवहार का मैं उपासक हूं।"

"तुम रूढ़िवादी नहीं हो ?" इज़ाबेल ने गम्भीरता से पूछा।

"जिस ढंग से तुमने यह कहा है, मुझे वह बहुत पसन्द आया। नहीं, मैं रूढ़िवादी नहीं हूं। लेकिन मैं स्वयं एक रूढ़ि हूं। तुम यह नहीं समझ पाईं न ?" और वह मुस्कराता हुआ एक क्षण के लिए रुका रहा, "मैं इस बात को समझाना

चाहूंगा।" फिर एक आकस्मिक, तीव्र और शुभ्र स्वाभाविकता के साथ उसने अनुनय किया, "वापस ज़रूर आना, बहुत-सी बातें हैं जो मैं तुमसे करना चाहता हूं।"

इज़ाबेल आंखें झुकाए खड़ी रही। "वह कौन-सा काम था जो अभी तुमने कहना चाहा था?"

"फ्लोरेंस छोड़ने से पहले मेरी छोटी-सी बेटी से मिल आना। वह विला में अकेली है। मैंने उसे अपनी बहन के पास नहीं भेजा क्योंकि उसके और मेरे विचार बिल्कुल एक-से नहीं हैं। उससे कहना कि उसे अपने गरीब पिता से बहुत-बहुत प्यार करना चाहिए," गिलबर्ट ऑसमण्ड ने कोमलता के साथ कहा।

"उससे मिलने जाना मेरे लिए बहुत सुखकर होगा," इज़ाबेल ने जवाब दिया, "मैं तुम्हारी बात उससे कह दूंगी। एक बार फिर गुड-बाई।"

इसके साथ ही ऑसमण्ड ने बहुत शीघ्र लेकिन सम्मानपूर्ण ढंग से विदा ली। जब ऑसमण्ड चला गया, तो इज़ाबेल एक क्षण के लिए अपने आस-पास देखती खड़ी रही। फिर जैसे कोशिश करके बैठ गई। वह वहां, अपने हाथ जोड़े उस बदसूरत से गालीचे को देखती तब तक बैठी रही जब तक कि उसके साथी वापस नहीं आ गए। उसकी व्याकुलता—जोकि कम नहीं हुई थी—बहुत गहरी थी। जो अभी घटित हुआ था उसका सामना करने की कल्पना वह एक सप्ताह पहले से कर रही थी। लेकिन अब जबकि वह क्षण आ गया था, तो वह सहसा रुक गई थी—उसका वह दृढ़ निश्चय किसी तरह बिखर गया था। इस युवा लड़की का स्वभाव कुछ अजीब-सा था। मैं उसका वर्णन वैसे ही कर रहा हूं जैसे मैं उसे देखता हूं, बिना इस आशा के कि वह स्वाभाविक लगे। जैसा मैंने कहा है, उसकी कल्पना वहीं रुक गई थी। सामने एक अस्पष्ट-सा खला था जिसे वह पार नहीं कर पा रही थी—वह एक धुंधला और अनिश्चित-सा खला था जोकि उसे संशयपूर्ण और खतरनाक लग रहा था—जैसेकि सर्दी की शाम में सामने एक दलदल फैला हो। लेकिन उसे वह पार करना था।

३०

इज़ाबेल अगले ही दिन अपने कज़िन के साथ फ्लोरेंस लौट गई। यद्यपि रैल्फ टाउशेट रेल-यात्रा के बन्धन से व्याकुल हो जाता था, फिर भी उसे गाड़ी में बिताए वे घंटे अच्छे लगे जो उसकी कज़िन को तेज़ी से उस शहर से दूर ले जा रहे थे जहां गिलबर्ट ऑसमण्ड की उपस्थिति एक विशेषता बन गई थी। वे घंटे यात्रा की एक लम्बी योजना का पहला भाग थे। मिस स्टैकपोल पीछे रुक गई थी। वह नेपल्स की एक छोटी-सी यात्रा की योजना मिस्टर बैंटलिंग के साथ बना रही थी। इज़ाबेल के पास चार जून तक तीन दिन थे। मिसेज़ टाउशेट को चार जून को चलना था। उसने यह निश्चय किया कि वह इन दिनों का उपयोग पैंज़ी ऑसमण्ड से मिलने में करेगी जैसाकि उसने वचन दिया था। लेकिन मैडम मरले के कारण उसे अपनी इस योजना में थोड़ा संशोधन करना पड़ा। यह महिला अभी तक कैसा टाउशेट में ही थी, लेकिन उन्हीं दिनों वह फ्लोरेंस छोड़ने वाली थी। उसका अगला पड़ाव टसकेनी की पहाड़ियों में एक पुराना महल था। वह उस शहर के एक शालीन परिवार का निवास-स्थान था (जिसे मैडम मरले के कथनानुसार वह 'हमेशा' से जानती थी)। इज़ाबेल ने दिखाई गई तस्वीरों से जाना था कि वह स्थान दीवारों से घिरा एक विशाल भवन है जहां रहना अपने में गर्व की बात हो सकती है। इज़ाबेल ने इस खुशकिस्मत महिला को बताया कि मिस्टर ऑसमण्ड ने उसे अपनी बेटी से मिल आने के लिए कहा था, लेकिन यह नहीं बताया कि उसने उसके सामने प्रेम-निवेदन भी किया था।

"मैं स्वयं सोच रही थी कि जाने से पहले उस लड़की से मिल आना चाहिए।"

"तब हम दोनों साथ-साथ जा सकती हैं," इज़ाबेल ने सोचते हुए कहा, "सोचते हुए" इसलिए कि यह सुझाव उसने विशेष उत्साह के साथ नहीं दिया। उसने पहले से अकेली जाने की बात सोच रखी थी और अब भी उसे यही बेहतर लग रहा था। वह अपनी रहस्यमय संवेदनशीलता को अपनी विवेकशील मित्र के सामने प्रकट नहीं करना चाहती थी।

मैडम मरले ने स्वयं ही सोचकर कहा, "लेकिन हम दोनों साथ क्यों जाएं ? हम दोनों को इन कुछ घंटों में बहुत-सा काम समेटना है।"

"ठीक है, मैं अकेली चली जाऊंगी।"

"मैं नहीं जानती कि तुम्हारा उस सुन्दर कुंवारे आदमी के घर में अकेली जाना ठीक है या नहीं। उसकी शादी जरूर हुई थी—लेकिन बहुत पहले।"

इज़ाबेल एकटक देखती रही, "जब मिस्टर आसमण्ड वहां है ही नहीं, तो क्या फर्क पड़ता है?"

"लोग नहीं जानते कि वह गया हुआ है।"

"लोग, तुम्हारा किनसे मतलब है?"

"सभी से। लेकिन सम्भवतः बात इससे भी स्पष्ट नहीं हुई।"

"अगर तुम जा रही थीं, तो मैं क्यों नहीं जा सकती?" इज़ाबेल ने पूछा।

"क्योंकि मैं तो एक बुढ़िया हूं, और तुम एक सुन्दर नवयुवती हो।"

"ठीक है, पर तुमने किसीको वचन नहीं दे रखा?"

"तुम्हारी अपने वचनों के बारे में क्या धारणा है?" उस प्रौढ़ महिला ने हल्के से मज़ाक के साथ पूछा।

"मुझे अपने वचनों का बहुत ख्याल रहता है। क्या इस बात से तुम्हें आश्चर्य होता है?"

"तुम ठीक कहती हो," मैडम मरले ने सोचकर कहा। "मैं सच में चाहती हूं कि तुम उस बच्ची के प्रति स्नेह रखो।"

"मैं उसके प्रति बहुत स्नेह रखना चाहती हूं।"

"तब जाकर उसे मिल आओ। इससे बड़ी बुद्धिमत्ता की बात कोई नहीं होगी। और उससे कहना कि तुम न आतीं तो मैं अवश्य आती। या बल्कि," मैडम मरले ने जोड़ा, "उससे कुछ मत कहना। उसे परवाह भी नहीं होगी।"

इज़ाबेल लोगों के बीच से गुज़रती हुई अपनी खुली गाड़ी में घुमावदार रास्ते पार करती पहाड़ी की चोटी पर बने ऑसमण्ड के मकान की ओर चली, तो वह सोच रही थी कि उसकी मित्र का इससे क्या मतलब था कि इससे बड़ी बुद्धिमत्ता की बात कोई नहीं होगी। लम्बे-लम्बे मध्यान्तरों के बाद यह महिला—जिसका स्वभाव खुले समुद्र की यात्रा का-सा था, खतरनाक सुरंगों में जाने का-सा नहीं—कभी-कभार दोहरी-सी बात कर जाती थी जोकि झूठ का अहसास कराती थी। पर इज़ाबेल आर्चर को अज्ञात लोगों के हीन निर्णयों की क्या परवाह थी? क्या मैडम मरले सोचती थी कि वह कोई भी ऐसा काम कर सकती है जो छिपे-छिपे करना पड़े? कभी नहीं। मैडम मरले का मतलब शायद कुछ और होगा—कुछ

जो वह समय की कमी के कारण चलते समय स्पष्ट नहीं कर पाई। इज़ाबेल ने सोचा कि किसी दिन वह उससे पूछेगी जरूर—ऐसी बात को वह संदिग्ध नहीं छोड़ सकती। जब उसे मिस्टर ऑस्मण्ड के ड्राइंग रूम में लाया गया तो उसने घर के किसी अन्य भाग से पैंजी को प्यानो बजाते सुना। वह छोटी-सी लड़की अपना अभ्यास कर रही थी। इज़ाबेल को यह सोचकर खुशी हुई कि लड़की अपने कर्तव्यों का इतनी लगन से पालन करती है। पैंजी अपने फ्राक को ठीक करती तत्काल अन्दर आई और आते ही उसने अपने पिता के घर में उसका स्वागत किया। उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में एक गम्भीर कोमलता थी। इज़ाबेल आधा घण्टा वहां बैठी। पैंजी पूरा वक्त उसे अदृश्य धागे से लटकती पैंटोमाइम की छोटी-सी पंख-युक्त परी की तरह लगती रही। गप न करके वह लड़की 'वार्त्तालाप' करती रही। इज़ाबेल के कामकाज में उसने उतनी ही सम्मानपूर्ण रुचि दिखलाई जितनी कि इज़ाबेल उसके कामकाज में दिखा रही थी। इज़ाबेल उसके इस व्यवहार से चकित हुई। कितने बढ़िया ढंग से वह छोटी-सी बच्ची शिक्षित थी—इज़ाबेल ने प्रशंसा भाव से मन में कहा। कितने बढ़िया ढंग से उसे ढाला और चलाया गया था! फिर भी कितनी सीधी, स्वभाविक और भोली थी वह। किसीके भी चरित्र और गुणों के सम्बन्ध में इज़ाबेल को बहुत जिज्ञासा रहती थी कि जाने किसमें क्या व्यक्तिगत रहस्य हो। अब तक वह कहीं इस सन्देह में थी कि यह नाज़ुक-सी लड़की सब कुछ जानकर चुप रहने वाली तो नहीं। उसकी अतिशय सहिष्णुता आत्म-चेतना की पराकाष्ठा तो नहीं? उसका व्यवहार अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए केवल एक दिखावा था, या उसकी निर्दोष प्रकृति की अभिव्यक्ति? इज़ाबेल ने मिस्टर ऑसमण्ड के सुन्दर-खुले और अंधेरे कमरों में कुछ समय उस लड़की के साथ बिताकर ही इसका निश्चित उत्तर पा लिया। उस समय गरमी से बचने के लिए खिड़कियों को कुछ-कुछ अंधेरा कर दिया गया था। यहां-वहां किसी बड़ी दरार में से गरमी की चमकती धूप अन्दर झांककर कहीं के फीके रंग या मैली धात में एक चमक भर रही थी। इज़ाबेल ने वहां बैठे हुए जान लिया कि पैंजी साफ और सफेद सतह का एक खाली पन्ना है जिसे बिगड़ने नहीं दिया गया। उस लड़की में न चालाकी थी, न दुराव, न गुस्सा और न ही प्रतिभा—बस दो-तीन अच्छी-सी आदतें थीं। मित्र की पहचान, गलती से बचना और अपने पुराने खिलौने या नये फ्राक का ध्यान रखना। पर इतनी कोमलता अपने में ही

शंकित करने वाली थी, क्योंकि वह आसानी से भाग्य की फेर में पड़ सकती थी। उसमें अपनी इच्छा, विरोध या महत्त्व की भावना कुछ नहीं था, जिससे वह झट से प्रभावित और चूर-चूर हो सकती थी। उस लड़की की केवल-मात्र शक्ति यह जानने में ही थी कि वह कब किससे चिपकी रहे। इज़ाबेल ने शेष कमरों को फिर से देखना चाहा तो पैंज़ी उसके साथ रहकर विभिन्न कला-कृतियों के सम्बन्ध में अपनी राय प्रकट करती रही। साथ ही वह अपनी योजनाओं, व्यस्तताओं और अपने पिता के इरादों की बात करती रही। लड़की में अहंकार नहीं था, पर यह उसे उचित लग रहा था कि इतनी सम्मानित मेहमान को वह ऐसी सब जानकारी दे दे जिसकी कि अपेक्षा की जा सकती हो।

"कृपया मुझे बताइये," पैंज़ी बोली, "क्या पापा रोम में मैडम कैथरीन से मिलने गए थे ? उन्होंने मुझसे कहा था कि अगर उनके पास समय हुआ तो वे ज़रूर जाएंगे। पापा को अपना समय बहुत प्यारा है। मेरी पढ़ाई के बारे में बात करना चाहते थे। आपको मालूम है, वह अभी खत्म नहीं हुई है ? मैं नहीं जानती कि अब वे मुझे और क्या सिखायेंगे। लेकिन ऐसा लगता है कि पढ़ाई समाप्त होने में अभी बहुत देर है। पापा ने एक दिन मुझसे कहा था कि शेष पढ़ाई वे खुद ही पूरी कराएंगे। कान्वेंट की अन्तिम एक-दो साल की पढ़ाई, जो वहां के मास्टर कराते हैं, बहुत कीमती होती है। पर पापा अमीर नहीं है। मुझे इस बात से बहुत दुःख होगा अगर पापा को मेरे लिए बहुत ज्यादा पैसा खर्च करना पड़ा। मैं नहीं समझती कि मैं इसके लायक हूं। मैं बहुत जल्दी भी नहीं सीख पाती, और मेरे पास स्मरणशक्ति भी तेज़ नहीं है। सिर्फ तब काम करती है जब कोई बड़ी मजेदार बात सुनाई जाती है, लेकिन तब नहीं जब मैं किताब पढ़ती हूं। कान्वेंट में एक लड़की थी जो कि मेरी सबसे निकट की सहेली थी। उसके घरवाले उसे वहां से ले गए क्योंकि वह चौदह साल की हो गई थी। यह इसलिए कि—आप उसे अंग्रेजी में क्या कहते हैं ?—कि वे उसके लिए कुछ धन बचा सकें। आप अंग्रेजी में इस तरह से नहीं कहतीं ? मैं नहीं जानती कि यह गलत है या ठीक। मेरे कहने का मतलब यही है कि वे पैसा उसकी शादी के लिए रखना चाहते थे। मैं नहीं जानती कि क्या पापा भी इसी मतलब से पैसा बचाना चाहते हैं—मेरी शादी के लिए। शादी पर बहुत पैसा लग जाता है।" पैंज़ी एक उसांस के साथ बोलती गई। "मेरे ख्याल में पापा को यह बचत करनी ही चाहिए। बहरहाल मैं इन सब बातों के

बारे में सोचने के लिए अभी बहुत छोटी हूं। मुझे किसी व्यक्ति की चिन्ता नहीं। मेरा मतलब है पापा को छोड़कर। अगर वे मेरे पापा न होते तो मैं उनसे शादी कर लेना चाहती। मुझे उनकी बेटी बनकर रहना ज्यादा अच्छा लगता है बनिस्बत किसी अजीब-से आदमी की पत्नी बनने के। मैं उनके बिना बहुत अकेली महसूस करती हूं। लेकिन इतनी नहीं जितनी आप सोचती होंगी। मुझे मैडम कैथरीन की अपेक्षाकृत ज्यादा याद आती है, लेकिन आप पापा से यह बात मत कहना। आप शायद उनसे फिर नहीं मिलेंगी? मुझे इस बात का बहुत अफसोस है, और पापा को भी होगा। जो भी लोग यहां आते हैं उनमें आप मुझे सबसे अच्छी लग रही हैं। यह कोई बहुत बड़ी तारीफ नहीं है, क्योंकि यहां ज्यादा लोग नहीं आते। आपके आज मुझे मिलने आने से मैं बहुत आभारी हूं—अपने घर से इतनी दूर आप आई हैं—क्योंकि मैं तो अभी एक बच्ची ही हूं। मेरे तो अभी बच्चों के ही धन्धे हैं। आपने किस उम्र में बच्चों के काम करने छोड़ दिए थे? मैं जानना चाहूंगी की आपकी उम्र कितनी है। लेकिन मैं नहीं जानती कि यह प्रश्न पूछना कहां तक सही है। कान्वेंट में तो उन्होंने हमें सिखाया था कि हमें कभी किसी-की उम्र नहीं पूछनी चाहिए। मैं ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहती जो कि उचित नहीं है। इससे लगता है जैसे तुम्हें सही शिक्षा न दी गई हो। मैं स्वयं कभी अपने लिए ऐसी बात सुनकर चकित होना नहीं चाहूंगी। पापा प्रत्येक चीज़ के लिए हिदायत छोड़ गए हैं। मैं बहुत जल्दी सो जाती हूं। जब सूरज दूसरी तरफ उतर जाता है तो मैं बागीचे में जाती हूं। पापा ने मुझे यह आदेश सख्ती से दिया था कि मैं धूप में न झुलसूं। मुझे हमेशा ही उस बाहरी दृश्य देखने में आनन्द आता है। पहाड़ियां इतनी खूबसूरत हैं। रोम में हम अपने कान्वेंट से घरों की छतों और गुम्बदों के सिवा कुछ नहीं देख पाते थे। मैं तीन घंटे प्यानों का अभ्यास करती हूं। मैं बहुत बढ़िया नहीं बजाती। आप बजाती हैं? मैं चाहती हूं कि आप मुझे बजाकर सुनाएं। पापा की इच्छा है कि मैं बढ़िया संगीत सुना करूं। मैडम मरले ने मुझे कई बार बजाकर सुनाया है। मैडम मरले में मुझे यही बात सबसे पसन्द है। उनमें बहुत दक्षता है। मुझमें कभी भी दक्षता नहीं आएगी। मेरे पास मधुर आवाज़ भी नहीं है—सिर्फ एक महीन-सी आवाज है जैसी स्लेट पर पेंसिल घिसने से निकलती है।"

इज़ाबेल ने उसकी इस सम्मानपूर्ण इच्छा को पूरा किया। हाथों से दस्ताने

उतारकर वह प्यानों पर बैठ गई। पैंज़ी उसकी बगल में खड़ी होकर उसके सफेद हाथों को सुरों पर तेज़ी से इधर-उधर घूमते देखती रही। बजाना समाप्त करके उसने बच्ची को अपने करीब लाकर चूमा और कुछ क्षण उसे देखने के बाद उससे 'गुडबाई' कहा। "अच्छी तरह से रहना" इज़ाबेल ने कहा, "अपने पिता को सुख देना।"

"मेरे ख्याल में मैं इसीलिए जी रही हूं," पैंज़ी ने जवाब दिया। वे बहुत ज़्यादा सुखी नहीं हैं। वे अपेक्षाकृत उदास व्यक्ति हैं।"

इज़ाबेल ने इस बात को दिलचस्पी से सुना और इस अनुभूति को गुप्त रखने में उसने यातना महसूस की। यह उसका गर्व था और एक विशेष प्रकार की सभ्यता जिसके कारण वह मजबूर थी। इसके अतिरिक्त कई और बातें थीं जो वह पैंजी से उसके पिता के बारे में कहना चाहती थी। लेकिन उसने तत्काल अपने को रोक लिया। कई बातें थीं जिन्हें वह उस बच्ची के मुंह से सुनकर, उससे कहलाकर खुश होती। लेकिन वह बहुत जल्दी ही सचेत हो गई। उसे इस बात की कल्पना से भय-सा लगने लगा कि वह उस बच्ची का लाभ उठाए—वह इस बात के लिए अवश्य अपने को दोषी ठहराती। वह उस हवा में जहां कि आसमण्ड उसका आभास पा सकता, अपनी विमुग्ध मनः स्थिति की छाप नहीं छोड़ जाना चाहती थी। वह वहां आई थी लेकिन वह वहां सिर्फ एक घंटे से ही तो थी। वह प्यानो के स्टूल से जल्दी से उठ गई। लेकिन उसके बाद भी वह कुछ क्षण वहां रुकी रही। उसने पैंजी का हाथ अपने हाथ में ले रखा था। उस नाजुक प्यारी-सी बच्ची को अपने पास खींचकर उसने उसे स्पर्धा से देखा। वह इस बात को अपने से स्वीकार करने के लिए विवश थी कि उसे इस प्यारी-सी बच्ची के साथ गिलबर्ट आसमण्ड की बातें करके अत्यधिक प्रसन्नता होती। लेकिन उसने कोई और शब्द नहीं कहा। उसने केवल पैंजी को एक बार और चूम लिया। वे दोनों साथ-साथ गैलरी से अहाते में खुलनेवाले दरवाज़े तक आईं। वहां हमारी छोटी-सी मेजबान रुक गई। "मैं इससे आगे नहीं आऊंगी। मैंने पापा को वचन दिया था कि मैं इनसे आगे नहीं बढ़ूंगी।"

"तुम्हारा उनकी बात मानना सही है। वे तुमसे कुछ भी अनुचित नहीं कहेंगे।"

"मैं हमेशा उनकी आज्ञा पालन करूंगी। लेकिन आप फिर कब आएंगी ?"

"लगता है कि काफी दिन नहीं आ पाऊंगी।"

"तो फिर जितनी जल्दी हो सके आइएगा। मैं तो अभी एक छोटी-सी लड़की हूं," पैंजी बोली, "लेकिन मैं हमेशा आपका इन्तजार करूंगी।" और वह छोटी-सी आकृति उस ऊंचे-से अंधेरे दरवाजे के पास खड़ी इजाबेल को मटियाला साफ दालान पार करते और खुले उजाले में से होकर उस बड़े दरवाजे से अदृश्य होते देखती रही, जिसके खुलने पर रोशनी की खुली चमक उसकी आंखों को चुंधिया गई थी।

३१

इजाबेल फ्लोरेंस वापस आई, पर कई महीने बाद। इस बीच कई घटनाएं हुईं। हमें यहां बीच के समय से मतलब नहीं है—हमारा सम्बन्ध इस समय पालाज़ो क्रेसेंतीनी में उसके लौटने के बाद की एक वासन्ती शाम से है। तब तक उपर्युक्त घटना के बाद एक वर्ष बीत चुका था। इस अवसर पर वह उन कमरों में से एक में अकेली बैठी थी जो मिसेज़ टाउशेट ने सामाजिक उपयोग के लिए रख रखे थे। उसके भाव से लग रहा था कि वह किसी आगन्तुक की प्रतीक्षा में है। ऊंची खिड़की खुली थी और हरी चिकें आधी खिंची रहने पर भी बागीचे की खुली हवा अन्दर आकर कमरे को गर्मी और खुशबू से भर रही थी। इजाबेल कुछ देर हाथ पीछे किए खिड़की के पास खड़ी रही और एक अस्पष्ट आतुरता के साथ बाहर देखती रही। अव्यवस्थित होने के कारण उसका ध्यान कहीं केन्द्रित न होकर इधर-उधर भटक रहा था। फिर भी आगन्तुक को अन्दर आने से पहले देख लेना उसका उद्देश्य नहीं था क्योंकि उस भवन में आने का रास्ता बागीचे से होकर नहीं था। बागीचे में हर समय एकान्त और निःस्तब्धता का साम्राज्य रहता था। वह बल्कि आगन्तुक के आने का पूर्वाभास अनुमान से ही प्राप्त करना चाहती थी। चेहरे को देखकर लगता था कि इसके लिए उसे काफी प्रयत्न करना पड़ रहा है। वह गम्भीर थी और जैसे बीते साल के अनुभवों का बोझ अपने पर लिए थी—वह साल जो उसने दुनिया देखने में बिताया था। उसे लगता था जैसे वह अन्तरिक्ष में घूमकर मान-

वता का जायज़ा लेती रही हो। अपनी नज़र में वह एल्बेनी की उस खुश मिजाज़ लड़की से बहुत बदल गई थी जिसने दो साल पहले गार्डनकोर्ट के लॉन में आकर यूरोप का जायज़ा लेना शुरू किया था। उसे गर्व था कि अपने कच्चे मन के अनुमान से कहीं अधिक उसने ज्ञान और जीवन का अनुभव प्राप्त कर लिया था। अगर उस समय उसके विचार वर्तमान के आसपास पंख फड़फड़ाने की जगह—अतीत की ओर चले जाते, तो कई एक रोचक चित्र उसके सामने आने लगते। इन चित्रों में लैंडस्केप भी होते और व्यक्ति-खण्ड भी—व्यक्ति-खण्डों की संख्या अपेक्षया कहीं अधिक होती। इस क्षेत्र में सामने आने वाले बहुत-से चित्रों से हम पहले से परिचित हैं। उदाहरण के लिए इनमें उसकी बहन और एडमण्ड लुडलो की पत्नी लिली होती जो कि न्यूयार्क में आकर पांच महीने उसके साथ बिता गई थी। वह अपने पति को तो नहीं पर बच्चों को साथ ले आई थी। इज़ाबेल पूरी कोमलता के साथ बच्चों के प्रति कुंवारी मौसी की भूमिका अदा करती रही थी। अन्तिम दिनों में अपनी अदालती व्यस्तताओं से समय निकालकर मिस्टर लुडलो भी भागमभाग समुद्र पार करके वहां चला आया था और पेरिस में एक महीना उनके साथ बिताकर अपनी पत्नी को वापस ले गया था। लिली के बच्चे अभी अमरीकन स्टैंडर्ड से भी टूरिस्ट उम्र के नहीं हुए थे, इसलिए उन दिनों इज़ाबेल को अपने को एक छोटे-से दायरे तक ही सीमित रखना पड़ा था। लिली और बच्चे जुलाई में उसके पास स्विट्ज़रलैंड आए थे और एल्प्स की घाटी में उन्होंने गरमी के खुशगवार दिन गुज़ारे थे। उन दिनों क्यारियां फूलों से भरी थीं और शाम को स्त्रियों और बच्चों के घूमने के लिए शाहबलूत की घनी छायाएं अच्छे विश्राम-स्थलों का काम देती थीं। उसके बाद वे लोग फ्रांस की राजधानी में आ गए जिसकी लिली ने काफी खर्चीले ढंग से उपासना की। पर इज़ाबेल को वह शहर शोर-भरा और खाली लगता रहा। वह उन दिनों रोम की स्मृतियों का उसी तरह इस्तेमाल करती रही जैसे किसी दम घोटने वाले कमरे में आदमी रूमाल से कोई चरपरी चीज़ निकालकर मुंह में डाल ले।

मिसेज़ लुडलो पेरिस पर कुर्बान हो रही थी, फिर भी उसके मन में कई शंकाएं और विस्मय अभी बाकी थे। इसलिए अपने पति के आने पर वह उसपर काफी झल्लाई कि वह क्यों इस सबके लिए समय नहीं निकाल पाता। वे अक्सर इज़ाबेल की बात करते। पर एडमण्ड लुडलो हमेशा की तरह इज़ाबेल के कुछ भी करने या न

करने पर न तो आश्चर्य प्रकट करता, न दुखी होता, और न ही विमूढ़ता या उत्साह प्रकट करता। मिसेज़ लुडलो की मानसिक हलचलें कई तरह की थीं। एक पल वह सोचती कि इज़ाबेल को वापस चलकर न्यूयार्क में अच्छा-सा मकान ले लेना चाहिए —जैसे रौसिटर्ज़ जिसमें काफी पेड़-पौधे थे और जो उसके अपने घर के पास ही था। दूसरे पल वह आश्चर्य प्रकट करती कि इज़ाबेल वहीं के सम्भ्रान्त वर्ग के किसी व्यक्ति से व्याह क्यों नहीं कर लेती। सम्भावनाओं के सम्बन्ध में वह अक्सर छिट-पुट ढंग से सोचती थी। यूं इज़ाबेल को मिली संपत्ति से उसे उससे कहीं अधिक सन्तोष था जितना कि स्वयं वही सम्पत्ति पाकर होता। उसे लगता था वह सम्पत्ति उसकी बहन की कुछ छोटी, पर प्रमुख आकृति के लिए एक उपयुक्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करती है। यूं इज़ाबेल अभी लिली की अपेक्षा के अनुसार विकसित नहीं हुई थी। लिली के लिए विकास का अर्थ था सुबह का आवागमन और शाम की पार्टियां। बौद्धिक रूप से चाहे इज़ाबेल काफी आगे निकल गई थी, पर मिसेज़ लुडलो की नज़र में सामाजिक सफलता इस पुरस्कार के साथ जुड़ी होनी चाहिए थी। इस सफलता के सम्बन्ध में लिली की कोई स्पष्ट धारणा नहीं थी, पर यही तो वह चाहती थी कि उस धारणा को इज़ाबेल ने एक आकार दिया होता। अब जो कुछ इज़ाबेल पा रही थी, वह तो न्यूयार्क में रहकर भी उसे मिल सकता था। मिसेज लुडलो ने अपने पति से यह जानने को कहा कि ऐसा क्या है जो इज़ाबेल को यूरोप में ही मिल सकता है और अपने शहर में नहीं। हम जानते हैं कि इज़ाबेल को सफलता मिली थी—यह एक नाज़ुक सवाल है कि अपने शहर में उसे उससे ज्यादा मिल सकती थी या कम। पर इज़ाबेल ने अपनी सफलताओं का इश्तिहार नहीं किया था और इसका कारण उदासीनता नहीं थी। उसने न तो अपनी बहन को लार्ड वारबर्टन के विषय में बतलाया था और न ही उससे मिस्टर ऑसमंड की मनःस्थिति का ज़िक्र किया था। उसकी खामोशी का कारण बस इतना ही था कि वह यह बात करना ही नहीं चाहती थी। चुप रहने का एक अपना ही रोमांस था और उस रोमांस के गहरे घूंट भरती हुई वह न तो लिली से उस सम्बन्ध में परामर्श लेना चाहती थी और न ही उस पुस्तक को हमेशा के लिए बन्द कर देना चाहती थी। पर लिली को उसके इस विवेक का ज़रा आभास नहीं था। उसकी नज़र में इज़ाबेल के कैरियर में एक विचित्र एण्टी क्लाइमेक्स था। इस धारणा की पुष्टि इस बात से होती थी कि इज़ाबेल जितना ही ऑसमंड के बारे में सोचती

थी, बाहर से उस विषय में उतनी ही खामोश रहती थी। क्योंकि यह अक्सर होता, इसलिए लिली को लगता कि इज़ाबेल में साहस ही नहीं है। खुशमिजाज़ लिली को आश्चर्य होता कि इतनी बड़ी सम्पत्ति का उत्तराधिकार पाकर भी इज़ाबेल के लिए उसका कोई अभूतपूर्व परिणाम क्यों नहीं निकला। इसमें उसकी इस धारणा की पुष्टि होती कि इज़ाबेल आम लोगों से भिन्न है।

पर अपने सम्बन्धियों के घर लौट जाने के बाद इज़ाबेल का साहस अपने शिखर को छूने लगा। वह सर्दियां पेरिस में काटने से कहीं बड़ी बात सोचने लगी। पेरिस कई लिहाज से न्यूयार्क की तरह था—गद्य के एक कटे-छंटे सुन्दर टुकड़े जैसा। मैडम मरले के घनिष्ठ सम्पर्क में रहने के कारण इज़ाबेल का मन बड़ी उड़ानें लेना सीख गया था। ३० नवम्बर के दिन लिली को यूस्टन स्टेशन से गाड़ी में चढ़ाकर वह प्लेटफार्म से बाहर निकली, तो उसे स्वतन्त्रता, साहस और निर्बाध स्वच्छन्दता की जैसी अनुभूति हुई, वैसी पहले कभी नहीं हुई थी। लिली को अपने पति और बच्चों के साथ लिवरपूल से जहाज़ पकड़ना था। इज़ाबेल को अपना आह्लाद अच्छा लग रहा था। उसे इसका अहसास था और वह जानती थी कि उसके लिए क्या बेहतर है—और वह लगातार और बेहतर की खोज में रहना चाहती थी। अन्तिम क्षण तक उस मन:स्थिति में रहने के लिए ही वह पेरिस से उन लोगों के साथ वहां तक आई थी। वह लिवरपूल तक उनके साथ चली जाती, पर एडमण्ड लुडलो ने अनुरोध करके उसे ऐसा करने से मना किया था। इससे लिली को इतना बुरा लगा था कि वह खामख्वाह ऊंटपटांग सवाल पूछने लगी थी। इज़ाबेल गाड़ी को जाते देखती रही। बच्चों में से उसका बड़ा भांजा खिड़की से बुरी तरह बाहर को उचक रहा था—उसके लिए विदाई का समय खूब हो-हल्ला करने का समय होता था। इज़ाबेल ने उसे लक्ष्य करके अपना हाथ चूमा और फिर धुंधभरी लन्दन की सड़क पर निकल आई। अब दुनिया उसके सामने थी—वह जो चाहे कर सकती थी। इसमें एक गहरा स्पन्दन था। पर उस समय उसने काफी सतर्क ढंग से अगला कार्यक्रम बनाया। वह चुपचाप यूस्टन स्टेशन से अपने होटल की तरफ चल दी। नवम्बर की सांझ का धुंधलका घिर आया था। सड़क की बत्तियां गहरी भूरी हवा में मद्धिम और लाल-सी लग रही थीं। वह अकेली थी और यूस्टन स्टेशन पिकेडिली से काफी दूर था। पर इज़ाबेल खतरे में एक विशेष सुख का अनुभव करती हुई उस रास्ते पर चलने लगी, और लगभग

जान-बूझकर, एक नया-सा स्पन्दन पाने के लिए ही, गलत रास्ते पर हो ली। उसे निराशा हुई, जब एक मेहरबान सन्तरी ने उसे फिर सही रास्ते पर डाल दिया। इर्द-गिर्द के मानव-दृश्य का उसे इतना मोह था कि लन्दन की सड़कों पर घिरी आती सांझ उसे बहुत सुखकर लग रही थी—आसपास की भीड़, जल्दी-जल्दी गुजरती बग्घियां, जगमगाती दुकानें, चमकते स्टाल और हर चीज का धुआंरा चमकता ठण्डापन। उस शाम होटल में आकर उसने मैडम मरले को लिखा कि दो-एक दिन में वह रोम के लिए चल देगी। रोम को लौटते हुए वह फ्लोरेंस के रास्ते नहीं आई—पहले वेनिस जाकर वह एन्कोना से दक्षिण के रास्ते वहां पहुंची। इस यात्रा में एक नौकरानी के सिवा कोई उसके साथ नहीं था—उसके अभिभावक उन दिनों उस इलाके में नहीं थे। रैल्फ टाउशेट कॉर्फ्यू में सर्दियां बिता रहा था और मिस स्टैकपोल को पिछले सितम्बर में 'इंटरव्यूअर' की तरफ से तार देकर अमरीका बुला लिया गया था। उस पत्र ने यूरोप के ढहते शहरों की अपेक्षा कहीं ताजा क्षेत्र हेनरीटा को अपनी प्रतिभा आजमाने के लिए पेश किया था। मिस्टर बैंटलिंग ने उसे जाते हुए वचन दिया था कि वह अमरीका आकर उससे मिलेगा। इज़ाबेल ने मिसेज़ टाउशेट को चिट्ठी लिखकर क्षमा मांग ली थी कि वह अभी फ्लोरेंस नहीं आ सकेगी, और मिसेज़ टाउशेट ने अपने ही ढंग से इसका जवाब दिया था। उन्होंने लिखा था कि क्षमा-याचना को वे एक बुलबुले से ज्यादा महत्त्व नहीं देतीं और कि वे स्वयं कभी ऐसी चीज़ का आदान-प्रदान नहीं करतीं। आदमी या तो कोई काम करे, या न करे—बस। सम्भावना की बात व्यर्थ थी—भविष्य और जीवन के आदिस्रोत की तरह। उनकी चिट्ठी खुलेपन से लिखी गई थी, पर (मिसेज़ टाउशेट की आदत के विपरीत) उतने खुले मन से नहीं जितना कि उन्होंने ज़ाहिर करना चाहा था। उन्होंने अपनी भांजी को फ्लोरेंस न आने के लिए आसानी से क्षमा कर दिया क्योंकि उन्हें लगा कि गिलबर्ट ऑसमण्ड के वहां होने का महत्व शायद अब उसके लिए पहले जितना नहीं रहा। फिर भी उन्होंने इस बात पर नज़र रखी कि गिलबर्ट किसी बहाने से रोम तो नहीं जाता। पर गिलबर्ट ने वहां जाने का अपराध नहीं किया, इससे सन्तोष हुआ।

पर इज़ाबेल ने रोम में एक पखवारा बिताने से पहले ही मैडम मरले से प्रस्ताव किया कि उन्हें कुछ दिन पूरब की तरफ हो आना चाहिए। मैडम मरले ने इसे इज़ाबेल की अस्थिरता बताकर कहा कि स्वयं उसके मन में भी बहुत दिनों

से एथेन्स और कान्स्टेंटिनोपल की तरफ जाने की इच्छा है। इसपर वे दोनों महिलाएं वहां से निकल पड़ीं और उन्होंने तीन महीने यूनान, तुर्किस्तान और मिस्र में बिताए। इज़ाबेल को इन देशों में बहुत-सी चीज़ें रुचिकर लगीं, हालांकि मैडम मरले लगातार कहती रही कि उन प्राचीनतम स्थानों पर भी, जो कि विश्राम और चिन्तन के लिए अनुकूल स्थल थे, इज़ाबेल की अस्थिरता बनी रही है। इज़ाबेल बहुत तेज़ और अन्धाधुन्ध यात्रा कर रही थी—जैसे कि कोई प्यासा आदमी प्याली के बाद प्याली पीता जाना चाहे। पर मैडम मरले, जिसकी स्थिति एक प्रच्छन्न रूप से घूम रही राजकुमारी की परिचारिका जैसी थी, उसके साथ रहकर काफी थक जाती थी। वह इज़ाबेल के निमन्त्रण पर आई थी और उस लड़की की उद्विग्न मनःस्थिति को गम्भीरता प्रदान करना अपना कर्त्तव्य समझती थी। वह अपना पार्ट वांछित कुशलता से निभा रही थी। अपने को पीछे रखकर वह एक ऐसी साथिन की स्थिति में चल रही थी जिसका खर्च सौभाग्यवश दूसरे के सिर पर था। इस स्थिति में कठिनाई कोई नहीं थी। यात्रा में जो कोई भी उनसे मिला होता, उसके लिए यह बताना कठिन होता कि उनमें से खर्च उठाने वाली कौन है और निर्भर रहने वाली कौन। साथ रहकर मैडम मरले में अधिक सहजता आ गई थी, शायद यह बात कहना सही नहीं क्योंकि इज़ाबेल ने शुरू से ही उसके व्यवहार में सहजता और खुलापन पाया था। पर तीन महीने की इस घनिष्ठता के बाद इज़ाबेल को लगा कि वह उसे पहले से ज्यादा जान गई है। उस प्रशंसनीय महिला का चरित्र अब और खुलकर सामने आ गया था—उसने अपना इतिहास अपनी दृष्टि से बताने का अपना वचन भी पूरा कर दिया था। इज़ाबेल ने इसे बहुत चाह के साथ सुना क्योंकि दूसरों की नज़र से यह इतिहास वह पहले सुन चुकी थी। इतिहास काफी शोकपूर्ण था (जहां तक मिस्टर मरले का सम्बन्ध था, वह उसके कथनानुसार एक दुःसाहसी व्यक्ति था जिसने उसके यौवन और अनुभवहीनता का अनुचित लाभ उठाया था। यह बात तब चाहे सच रही हो, पर आज की मैडम मरले को देखते हुए इसपर विश्वास करना कठिन था।) उसमें इतनी दुःखदायी और चौंकाने वाली घटनाएं थीं कि इज़ाबेल को आश्चर्य हुआ कि इतना कुछ सहने पर भी वह स्त्री अपनी ताज़गी और जीवन में दिलचस्पी कैसे बनाए रख सकी। मैडम मरले की ताज़गी को इज़ाबेल अब काफी अन्दर से जान गई थी। वह ताज़गी एक व्यावसायिक या मशीनी-सी चीज़ थी—एक कलाकार के सारंगी के

ढकने की तरह, या एक जॉकी द्वारा अपने घोड़े पर डाली गई लगाम और चादर की तरह। मैडम मरले को वह अब भी पहले जितना ही पसन्द करती थी, फिर भी परदे का एक ऐसा सिरा था जो कि उठा नहीं था। मैडम मरले जैसे एक अभिनेत्री थी जो एक खास रूप और पोशाक में ही सामने आ सकती थी। एक बार मैडम मरले ने कहा था कि वह कहीं दूर से आई है—एक पुरानी दुनिया से। इज़ाबेल इस धारणा से मुक्त नहीं हो पाती थी कि वह स्त्री एक और ही नैतिक और सामाजिक वातावरण की उपज है—कि उसका विकास किन्हीं और ही नक्षत्रों की छाया में हुआ है।

उसे लगता कि सतह से नीचे मैडम मरले की नैतिकता काफी भिन्न है। यूं तो सभ्य लोगों की नैतिकता में बहुत कुछ एक-सा होता है, पर इज़ाबेल में यह पहचानने की शक्ति थी कि कौन-से मूल्य अब गलत हो गए हैं, या दुकानदारी की भाषा में, अवमूल्यित हो गए हैं। अपने यौवन के आग्रह से वह सोचती थी कि जो नैतिकता उसकी नैतिकता से मेल नहीं खाती, वह उससे घटिया ही होनी चाहिए। इस विश्वास के कारण वह तुरन्त भांप लेती कि कहां कब मैडम मरले की बातचीत में हल्की-सी निर्दयता झलकती है, या किसी तरह का दुराव आ गया है—हालांकि साधारणतया उस स्त्री ने कोमलता का एक कला की हद तक अभ्यास कर रखा था और उसका अभिमान छल-प्रपंच की क्षुद्रता से बहुत ऊंचा जान पड़ता था। सम्भव था कि मैडम मरले ने मानवीय उद्देश्यों के सम्बन्ध में अपनी कुछ धारणाएं किसी ह्रासशील साम्राज्य के दरबार से प्राप्त की हों—उस सूची में कितना कुछ ऐसा था जिसके बारे में इज़ाबेल ने कभी सुना भी नहीं था। स्पष्टतः दुनिया में बहुत-सी चीज़ें थीं जिनके बारे में उसने नहीं सुना था, और बहुत-सी चीज़ें थीं जिनके बारे में सुनना हितकर भी नहीं था। दो-एक बार उसे सचमुच भय भी लगा था, और अनायास अपनी मित्र के बारे में उसके मुंह से निकल पड़ा था, "ईश्वर उसे क्षमा करे, वह मुझे नहीं जानती।" चाहे यह विचित्र लगे, पर इस जानकारी से उसे आघात पहुंचा था और एक आशंका मिली—अस्पष्ट-सी निराशा उस पर छा गई थी। कभी अचानक मैडम मरले की विशिष्ट प्रतिमा का कोई प्रमाण मिल जाता, तो यह निराशा कम भी हो जाती—पर विश्वास के उतार-चढ़ाव में यह एक ऊंचे निशान की तरह बनी रहती। एक बार मैडम मरले ने कहा था कि जब किसी मित्रता का विकास रुक जाता है तो उसका ह्रास होने

लगता है—अधिक चाहने और कम चाहने के बीच सन्तुलन का कोई बिन्दु नहीं है। दूसरे शब्दों में स्नेह कभी एक स्थिर बिन्दु पर नहीं रहता—या वह बढ़ता जाता है, या घटने लगता है। जो भी हो, उन दिनों इज़ाबेल को अपनी रूमानी भावना को सन्तुष्ट करने के लिए सैकड़ों उपकरण मिल रहे थे। वह पहले से कहीं अधिक क्रियाशील हो रही थी। यहां मेरा संकेत उस भावना की ओर नहीं है जो काहिरा से आते हुए पिरामिडों को देखकर या स्ट्रेट आफ् सोलामिज नामक स्थान पर एक्रोपोलिस के टूटे खम्भों पर आंखें गड़ाए हुए उसके मन में पैदा हुई—ये भावनाएं बहुत गहरी और चिरस्थायी थीं। मार्च के अन्त तक वह मिस्र-यूनान की यात्रा से लौटकर फिर रोम में आ गई। इसके कुछ दिन बाद गिलबर्ट आसमण्ड फ्लोरेंस से वहां आ पहुंचा और तीन सप्ताह वहां रुका। उन दिनों वह मैडम मरले के यहां ठहरी थी। आसमण्ड की पुरानी मित्र के यहां रहते अनिवार्यतः उसकी रोज़ उस आदमी से भेंट होती रही। अप्रैल के अन्त में उसने मिसेज़ टाउशेट को लिखा कि उनका बहुत पहले का निमन्त्रण स्वीकार करके उसे प्रसन्नता होगी और वह पालाज़ो क्रेसीतीनी चली गई। मैडम मरले तब पीछे रोम में ही रही। मिसेज़ टाउशेट उन दिनों अकेली थीं—रैल्फ तब तक कार्फ्यू में ही था। पर वह अब किसी भी दिन फ्लोरेंस आ सकता था। इज़ाबेल को उससे मिले साल से ऊपर हो गया था और वह अत्यधिक स्नेह के साथ उसका स्वागत करने के लिए तैयार थी।

३२

एक क्षण पहले इज़ाबेल खिड़की के पास खड़ी न तो रैल्फ के बारे में सोच रही थी, और न ही उन सब विषयों के बारे में जिनका मैंने अभी ज़िक्र किया है। वह अतीत में नहीं खोई थी, बल्कि तत्काल के बारे में सोच रही थी। उसे उस समय एक झगड़े की आशंका थी, और ऐसे झगड़े उसे अच्छे नहीं लगते थे। वह अपने से यह भी नहीं पूछ रही थी कि उसे अपने मेहमान से क्या कहना है। इस प्रश्न का उत्तर पहले ही तय था। वह उसे क्या कहेगा—यही एक रोचक बात

थी। कम से कम वह कोई सन्तोषजनक बात नहीं होगी—उसे इस बात का यकीन था और यह यकीन उसकी सिकुड़ी भौंहों से झलक रहा था। इससे हटकर उस-पर उन्मुक्तता छाई थी; उसने मातम छोड़ दिया था और अब उसकी वेशभूषा में काफी तड़क-भड़क थी। वह सिर्फ अपने को पहले से बड़ी महसूस करने लगी थी—काफी बड़ी—और अपने को पहले से 'मूल्यवान' समझने लगी थी जैसे कि वह किसी पुराने संग्रह की कोई अद्भुत-सी चीज़ हो। उसका अनुमान गलत नहीं था क्योंकि थोड़ी ही देर में एक नौकर ने आकर उसके आगे ट्रे में एक कार्ड पेश किया।

"साहब को अन्दर ले ओ," उसने कहा, और उस नौकर के चले जाने के बाद पुनः खिड़की से बाहर देखने लगी। मुड़कर उसने तभी देखा जब किसीके कमरे में आ जाने के बाद उसने दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ सुनी।

कैस्पर गुडवुड सामने खड़ा था—इज़ाबेल ने एक क्षण के लिए जिस रूखेपन से उसे ऊपर से नीचे तक देखा उससे उसका अभिवादन, अभिवादन नहीं लगा। यह हम अभी देख लेंगे कि कैस्पर के दिमाग की परिपक्वता इज़ाबेल जितनी ही पाई थी या नहीं। इस बीच मुझे कह देना चाहिए कि इज़ाबेल की आलोचनापूर्ण दृष्टि को उसके चेहरे पर समय का कोई असर नज़र नहीं आया। उसकी सीधी, पुष्ट और दृढ़ आकृति से न तो यौवन और न ही प्रौढ़ता का आभास मिलता था। यदि उसमें कमज़ोरी या भोलापन नहीं था, तो कोई क्रियात्मक जीवन-दृष्टि भी नहीं झलकती थी। उसके जबड़े पहले जैसे ही लगते थे—उतने ही स्वेच्छा-पूर्ण—हां, इस समय की गम्भीर स्थिति का कुछ असर उनपर ज़रूर था। उसे देखकर एक ऐसे आदमी का आभास होता था जो काफी कड़ा सफर करके आया हो। पहले वह कुछ नहीं बोल सका। मानो उसकी सांस फूली हो। इससे इज़ाबेल को कुछ सोचने का समय मिल गया, "बेचारा कितना कुछ करने के काबिल है, लेकिन अफसोस कि अपनी पूरी शक्ति बेकार गंवा रहा है। यह भी अफसोस की बात है कि व्यक्ति हरएक को सन्तुष्ट नहीं कर पाता।" उसे और चीज़ के लिए भी समय मिल गया—मिनट भर बाद यह सोचकर कहने के लिए: "मैं नहीं बता सकती कि मैंने कितना सोचा था तुम नहीं आओगे।"

"मुझे इसपर ज़रा भी सन्देह नहीं है।" और गुडवुड ने आस-पास कुर्सी के लिए नज़र दौड़ाई। वह महज़ आया ही नहीं था, बल्कि उसका इरादा जमने का

भी था।

"तुम बहुत थक गए होगे," इज़ाबेल ने बैठते हुए बड़ी दयालुता के साथ कहा, ताकि वह उसे बात करने का अवसर दे सके।

"नहीं, मैं बिल्कुल नहीं थका। क्या तुमने मुझे कभी थका हुआ देखा है ?"

"नहीं। लेकिन मैं चाहती हूं कि देखूं। तुम कब आए ?"

"कल, बड़ी रात गए। एक केंचुए जैसी छोटी गाड़ी में जिसे ये लोग एक्सप्रेस कहते हैं। ये इटालियन गाड़ियां, अमरीकन जनाज़े की रफ्तार से चलती हैं।"

"यह तो मनःस्थिति की बात है—तुम्हें लग रहा होगा कि तुम मुझे दफनाने आ रहे हो।" और इज़ाबेल स्थिति को हल्का करने के लिए एक ज़बर्दस्ती की उत्साहपूर्ण मुसकराहट होंठों पर ले आई। उसने बात अच्छी तरह से सोच रखी थी—यह मन में निश्चत कर लिया था कि उसने कोई विश्वास नहीं तोड़ा और कोई वायदा झूटा नहीं किया। लेकिन इस सबके बावजूद उसे अपने मेहमान से डर लग रहा था। उसे अपने डर से शरम आ रही थी, लेकिन उसे तसल्ली थी कि इसके अतिरिक्त उसे और किसी बात की शरम नहीं थी। कैस्पर गुडवुड उसे कड़ी नज़र से ताक रहा था—ऐसी नज़र से जिस में चतुराई ज़रा नहीं थी। उसकी मायूस आंखों की गहरी चमक इज़ाबेल पर शारीरिक वज़न की तरह पड़ रही थी।

'नहीं मैंने ऐसा नहीं सोचा था। मैं तुम्हें मृत कभी नहीं मान सकता यद्यपि चाहता हूं कि ऐसा मान सकूं," कैस्पर ने खुलकर कहा।

"मैं बहुत आभारी हूं।"

"तुम्हें मृत जानकर मुझे अधिक खुशी होगी, बजाय इसके कि तुम किसी और से शादी कर लो।"

"यह तुम्हारा स्वार्थ है।" इज़ाबेल ने आन्तरिक विश्वास के साथ कहा। अगर तुम स्वयं खुश नहीं हो, तो और लोगों को तो अधिकार दो कि वे खुश रहें।"

"बहुत सम्भव है यह स्वार्थ है, मैं तुम्हारे ऐसा कहने का ज़रा भी बुरा नहीं मान रहा—क्योंकि मुझे ऐसा महसूस ही नहीं हो रहा। अगर तुम कठोर से कठोर बात भी कहो, तो वह मेरे लिए महज़ सुई की चुभन जैसी होगी। तुमने जो व्यव-हार मेरे साथ किया है उसके बाद मुझे कभी कुछ भी महसूस नहीं होगा—मतलब

उस बात के अतिरिक्त और कुछ भी। लेकिन वह बात मुझे ज़िन्दगी-भर सालती रहेगी।"

गुडवुड ने यह बात धीमे अमरीकन लहजे में निश्चित रूखेपन के साथ कही—वास्तविकता पर किसी तरह की रंगत चढ़ाने की कोशिश उसने नहीं की। इज़ाबेल को छूने की बजाय इस लहजे ने उसे अधिक क्रुद्ध कर दिया। लेकिन उसका क्रोध एक तरह से सौभाग्य ही साबित हुआ, क्योंकि उसने उसे आगे अपने को और संभालने का कारण दे दिया। अपने को संभालने के इस प्रयत्न में ही वह थोड़ी देर के लिए कुछ अप्रासंगिक हो गई, "तुम न्यूयार्क से कब चले ?"

वह अपना सिर पीछे को फेंककर अनुमान लगाने लगा, "सत्रह दिन पहले।"

"धीमी गाड़ियों के बावजूद तुम काफी तेज़ सफ़र करके आए लगते हो।"

"मैं जितनी जल्दी पहुंच सकता था, पहुंच गया हूं। पहुंच सकता तो मैं पांच दिन पहले पहुंच गया होता।

"इससे कोई फर्क न पड़ता, मिस्टर गुडवुड," इज़ाबेल ठण्डे ढंग से मुस्कराई।

"तुम्हें—नहीं। लेकिन मुझे ज़रूर फर्क पड़ता।"

"फिर भी हासिल उससे कुछ न होता।"

"इस बात का निर्णय तो मुझे करना है।"

"ज़रूर। मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम महज़ अपने को यातना दे रहे हो।" और फिर विषय बदलने के लिए, उसने पूछा कि क्या वह हेनरीटा स्टैकपोल से मिला है। कैस्पर गुडवुड ने इस तरह उसकी ओर देखा मानो वह कह रहा हो कि वह बोस्टन से फ्लोरेंस हेनरीटा स्टैकपोल की बात करने नहीं आया है। लेकिन उसने जवाब दिया कि अमरीका छोड़ने से पहले हेनरीटा उसके साथ थी, "वह तुमसे मिलने आई थी ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"हां, वह बोस्टन में थी, और मेरे दफ्तर में आई थी। यह उस दिन की बात है जिस दिन मुझे तुम्हारा पत्र मिला था।"

"क्या तुमने यह बात उससे कही थी ?" इज़ाबेल ने व्याकुलता से पूछा।

"नहीं," कैस्पर गुडवुड ने केवल इतना ही कहा, "मैं उससे नहीं कहना चाहता था। लेकिन उसे जल्दी ही पता चल जाएगा। वह सब कुछ जान लेती है।"

"मैं उसे लिखूंगी, और तब वह मुझे लिखकर डांटेगी," इज़ाबेल ने फिर से मुसकराने की कोशिश करते हुए कहा। कैस्पर गम्भीर बना रहा, "मेरे ख्याल में

वह सीधी यहां पहुंच जाएगी," वह बोला ।

"मुझे डांटने के लिए ?"

"मैं नहीं जानता । उसका कहना था कि अभी उसने यूरोप पूरी तरह नहीं देखा।"

"अच्छा किया तुमने बता दिया," इज़ाबेल ने कहा, "मुझे इसके लिए तैयार रहना चाहिए।"

मिस्टर गुडवुड ने क्षण-भर अपनी नज़र ज़मीन पर गड़ाए रखी । फिर उसे ऊपर उठाते हुए, "क्या वह मिस्टर ऑसमण्ड को जानती है ?" उसने पूछा ।

"थोड़ा बहुत—और वह उसे पसन्द नहीं करती । लेकिन यह सच है कि मैं हैनरीटा को प्रसन्न करने के लिए शादी नहीं करूंगी," वह बोली । कैस्पर गुडवुड के हक में यही बेहतर होता—अगर इज़ाबेल हेनरीटा को थोड़ा अधिक प्रसन्न करने की सोचती । लेकिन उसने ऐसा कहा नहीं। उसने उस समय केवल इतना ही पूछा कि उसकी शादी कब होने जा रही है । जवाब में इज़ाबेल ने भी सिर्फ इतना ही कहा कि उसे अभी कुछ नहीं मालूम, "मैं इतना ही कह सकती हूं कि बहुत जल्दी। अभी मैंने यह बात तुम्हें और ऑसमण्ड की एक मित्र को छोड़कर और किसीको नहीं बताई ।"

"क्या यह एक ऐसी शादी है जिसे तुम्हारे अपने मित्र पसन्द नहीं करेंगे ?" उसने पूछा ।

"मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं । जैसा कि मैंने अभी कहा है, मैं अपने मित्रों के लिए शादी नहीं करूंगी ।"

कैस्पर बिना आश्चर्य या आलोचना के, रूखे ढंग से प्रश्न पूछता गया, "मिस्टर ऑसमण्ड कौन है और क्या है ?"

"कौन और क्या ? कोई भी नहीं और कुछ भी नहीं । लेकिन वह एक बहुत ही अच्छा और सम्मानित व्यक्ति है । वह किसी व्यापार में नहीं है," इज़ाबेल बोली, "वह धनी नहीं है । वह किसी प्रकार की विशेषता के लिए प्रसिद्ध नहीं है।"

इज़ाबेल को गुडवुड के प्रश्न बहुत बुरे लगे, लेकिन उसने अपने से कहा कि गुडवुड को जहां तक हो सके सन्तुष्ट करना उसका कर्तव्य है । पर जो सन्तोष मिस्टर गुडवुड ने ज़ाहिर किया वह बहुत कम था । वह सीधा बैठा उसे देखता

रहा, "वह कहां का रहनेवाला है ? उसकी जन्मभूमि कौन-सी है ?"

इज़ाबेल को उसके मुंह से 'रहनेवाला' सुनना कभी अच्छा नहीं लगता था, "वह रहने वाला कहीं का नहीं है। उसने अधिकतर जिन्दगी इटली में ही बिताई है।"

"तुमने अपने पत्र में लिखा था कि वह अमरीकन है। क्या उसकी कोई अपनी भूमि नहीं है ?"

"है, लेकिन वह उसे भूल गया है। वह एक छोटा-सा लड़का था, जब अमरीका छोड़ आया था।"

"क्या वह कभी वहां वापस नहीं गया ?"

"वह वापस किस लिए जाता ?" इज़ाबेल अपने उत्तर से सुर्ख होती बोली, "वह किसी व्यवसाय में नहीं है।"

"वह अपने मनोरंजन के लिए ही वापस जा सकता था। क्या उसे अमरीका पसन्द नहीं है ?"

"वह उस देश को जानता ही नहीं है। फिर वह बहुत ही शान्त और सीधा आदमी है। वह इटली से ही सन्तुष्ट है।"

"इटली से और तुम से," गुडवुड ने सीधे-सादे ढंग से, बिना सूक्तिरचना की कोशिश के कहा, "उसने आज तक किया क्या है ?" उसने फिर एकाएक पूछ लिया।

"जिसके लिए मैं उसके साथ शादी कर रही हूं ? कभी कुछ नहीं," इज़ाबेल ने जवाब दिया। उसका धीरज कुछ सख्ती में बदल गया, "अगर उसने कोई महान कार्य किए होते, तो क्या तुम मुझे क्षमा कर देते ? तुम मेरी बात छोड़ दो, मिस्टर गुडवुड। मैं एक बिलकुल साधारण आदमी के साथ शादी कर रही हूं। उसमें रुचि लेने की तुम ज़रा भी कोशिश मत करो। तुम ले ही नहीं सकते।"

"तुम्हारा मतलब है मैं उसकी प्रशंसा नहीं कर सकता; और तुम्हारा अभिप्राय यह है कि वह बिलकुल साधारण आदमी नहीं है। तुम समझती हो कि वह बहुत बड़ा, बहुत ऊंचा है। हालांकि और कोई ऐसा नहीं सोचता।"

इज़ाबेल का रंग गहरा गया। उसे अपने साथी की बात काफी सूक्ष्म लगी। यह इस बात का प्रमाण था कि वासना व्यक्ति के बोध को कितना तीव्र बना देती है, "तुम फिर इस बात पर क्यों आ जाते हो कि लोग क्या सोचते हैं ! मैं तुम्हारे

साथ मिस्टर ऑसमण्ड के बारे में बहस नहीं कर सकती।"

"ठीक है," कैस्पर गुडवुड ने तर्कसंगत ढंग से कहा। वह वहां अत्यन्त असहाय की स्थिति में बैठा रहा—मानो इसी नहीं, इसके अतिरिक्त भी किसी विषय पर वे बात न कर सकते हों।

"तुमने देखा है कि तुम्हें इस बात से कुछ हासिल नहीं हुआ," इज़ाबेल ने स्थिति को देखते हुए कहा, "कितनी कम खुशी या सन्तोष मैं तुम्हें दे सकती हूं।"

"मैंने तुमसे अधिक की आशा ही नहीं की थी।"

"मैं नहीं समझ सकती कि फिर तुम आए ही क्यों हो?"

"मैं सिर्फ इसलिए आया था कि मैं तुम्हें एक बार और देखना चाहता था—चाहे तुम कैसी भी हो।"

"मुझे इस बात की प्रसन्नता है। लेकिन अगर तुम थोड़ा और रुक जाते, तो हम लोगों की मुलाकात इससे अधिक सुखकर होती।"

"तुम्हारी शादी हो जाने तक रुक जाता? यही एक बात मैं नहीं चाहता था। तब तुम भिन्न हो जाओगी।"

"बहुत ज़्यादा नहीं। मैं तुम्हारी घनिष्ठ मित्र फिर भी बनी रहूंगी। तुम देख लोगे।"

"यह और भी बदतर होगा," मिस्टर गुडवुड ने गम्भीरता से कहा।

"तुम बहुत ही कठिन आदमी हो। मैं इसलिए तुमसे घृणा करने का वचन नहीं दे सकती कि तुम्हें स्थिति को स्वीकार करने में आसानी रहे।"

"अगर तुम ऐसा करतीं, तो मुझे ज़रा भी तकलीफ न होती।"

इज़ाबेल अपनी अधीरता को दबाए उठ खड़ी हुई और खिड़की तक चली गई। जहां वह कुछ देर बाहर की तरफ देखती खड़ी रही। जब वह मुड़ी, तब भी उसका मेहमान उसी तरह निश्चल बैठा था। वह उसके पास आकर रुक गई। अपना हाथ उसने उस कुर्सी की पीठ पर रख दिया जिसे उसने अभी खाली किया था, "तुम्हारा मतलब यह है कि तुम सिर्फ मुझे देखने के लिए ही आए थे? यह मेरे लिए नहीं, सिर्फ तुम्हारे लिए ही अच्छा हो सकता है।"

"मैं तुम्हारे गले की आवाज़ सुनना चाहता था," वह बोला।

"वह तुमने सुन ली है। अब तुम्हें पता चल गया है कि उससे कोई मधुर बात

नहीं निकलती।"

"फिर भी मुझे वह उतना ही सुख देती है।" और यह कहकर वह उठ खड़ा हुआ।

इज़ाबेल को सुबह यह जानकर दुःख और तकलीफ हुई थी कि गुडवुड फ्लोरेंस पहुंच गया है और कि उसकी अनुमति से एक घंटे के अन्दर उससे मिलने आ रहा है। उसे इससे क्रोध और निराशा हुई थी, यद्यपि उसने यह सन्देश भिजवा दिया था कि वह जब चाहे आ सकता है। वह उसे देखकर प्रसन्न नहीं हुई थी। उसके वहां होने के कई अर्थ हो सकते थे। वे अर्थ ऐसे थे कि वह उन्हें कभी स्वीकार नहीं कर सकती थी—अधिकार, गालियां, गुस्सा और यह ख्याल कि वह उसका विचार बदल सकता है। बहरहाल, ये चीजें कैस्पर के मन में चाहे रही हों, पर बाहर प्रकट नहीं हुई थीं। विचित्र बात थी कि कैस्पर का आत्म-नियन्त्रण उसे बुरा लग रहा था। गुडवुड के इर्द-गिर्द एक ऐसी मायूसी थी जो उसे झुंझला रही थी—उसके व्यवहार में एक मरदाना पुख्तगी थी जिसने कभी उसके दिल की धड़कन को तेज कर दिया था। उसने अपने भीतर व्याकुलता बढ़ती महसूस की, और अपने से कहा कि वह एक ऐसी स्त्री की तरह क्रोधित हो रही है जिसने सचमुच कोई गलती की हो। पर उसने कोई गलती नहीं की थी। सौभाग्यवश यह कड़वा घूंट उसे नहीं निगलना था। लेकिन वह चाह रही थी कि गुडवुड उससे कुछ बुरा-भला कहे। उसने सोचा था कि वह थोड़ी देर ही बैठेगा, क्योंकि उसके आने का कोई उद्देश्य, कोई औचित्य नहीं था। लेकिन अब जबकि वह चुपचाप लौटकर जा रहा था, तो इज़ाबेल को सहसा लगा कि उसने गुडवुड को अपने बारे में उससे ज़्यादा कुछ भी जानने का मौका नहीं दिया, जितना कि उसने कुछ ही शब्दों में महीना भर पहले उसे लिखकर बता दिया था—और वह यह कि उसकी सगाई हो गई है। पर अगर वह गलती पर नहीं थी, तो उसे अपने विषय में कुछ कहने की जरूरत ही क्या थी? यह इज़ाबेल की अत्यधिक उदारता ही थी जो वह चाह रही थी कि गुडवुड उसपर नाराज़ हो। अगर गुडवुड पहले से अपने को उतना सख्त न बनाए होता जितना कि उसने बना लिया था, तो इज़ाबेल की बात सुनकर उस तरह हो जाता। इज़ाबेल का स्वर ऐसा था जैसे वह अपने को कोसने के लिए उसे कोस रही हो, "मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया। मैं पूरी तरह स्वतन्त्र थी।"

"मैं यह जानता हूं," कैस्पर बोला।

"मैंने तुम्हें चेतावनी दे दी थी कि मैं जो चाहूंगी करूंगी।"

"तुमने कहा था कि सम्भवतः तुम कभी शादी नहीं करोगी। यह बात तुमने ऐसे ढंग से कही थी कि मैंने लगभग इसपर विश्वास कर लिया था।"

इज़ाबेल ने क्षण-भर के लिए इस बारे में सोचा, 'मेरे इस निश्चय पर मुझसे अधिक कोई आश्चर्यचकित नहीं होगा।"

"तुमने मुझसे कहा था कि अगर कभी मैं यह सुनूं की तुम्हारी मंगनी हो गई है तो मुझे इसपर यकीन नहीं करना चाहिए," कैस्पर कहता गया, "मैंने यह बात बीस दिन हुए तुम्हीं से सुनी थी, लेकिन मुझे याद हो आया कि तुमने क्या कहा था। मैंने सोचा हो सकता है कोई गलती लगी हो, अधिकतर इसी बात का पता करने मैं यहां आया था।"

"तुम चाहते हो कि वही बात मैं मुंह से दोहरा दूं, तो वह बहुत जल्दी किया जा सकता है। इस विषय में कहीं कोई गलती नहीं है।"

"मैंने इस बात को तभी भांप लिया था जब मैं इस कमरे में आया था।"

"तुम्हें इससे क्या लाभ होगा अगर मैं शादी न करूं ?" इज़ाबेल ने यह बात विशेष तीखेपन से पूछी।

"मैं इस स्थिति से ज्यादा उसे पसन्द करूंगा।"

"जैसा मैंने पहले भी कहा था, तुम बहुत स्वार्थी हो।"

"मैं यह बात जानता हूं। मैं लोहे जितना स्वार्थी हूं।"

"लोहा भी कभी-कभी पिघल जाता है। अगर तुम्हें सही लगा तो हम फिर मिलेंगे।"

"क्या तुम मुझे इस समय सही नहीं समझ रहीं ?"

"मैं नहीं जानती कि तुमसे क्या कहूं," इज़ाबेल ने आकस्मिक-सी सहजता के साथ कहा।

"मैं तुम्हें ज्यादा देर परेशान नहीं करूंगा," गुडवुड कहता गया, और वह दरवाज़े की तरफ एक कदम चलकर रुक गया।

"दूसरा कारण जिसके लिए मैं आया था, वह यह जानता था कि तुम अपने निश्चय के परिवर्तन के लिए क्या सफाई दोगी।"

इज़ाबेल की सहजता एकाएक चली गई, "सफाई ? क्या तुम यह समझते हो कि मैं सफाई देने के लिए बाध्य हूं ?"

मिस्टर गुडवुड ने उसे लम्बी खामोश नज़र से देखा, "तुम उस समय बहुत निश्चित थीं। मैंने उस बात को सच ही माना था।"

"मैंने भी उसे सच ही माना था। तुम समझते हो कि मैं यह बात अब तुम्हें समझाना चाहूं, तो समझा सकती हूं ?"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं समझता," गुडवुड ने जोड़ा, "लेकिन जो मैं चाहता था वह मैंने कर लिया है। मैंने तुमसे मिल लिया है।"

"तुम्हें अपनी इन यात्राओं से कितना कम लाभ होता है," कहने के साथ ही इज़ाबेल को महसूस हुआ कि उसने कितनी छोटी बात कही है।

"अगर तुम्हें कहीं लगता है कि मैं कुछ कहने पर तुला हूं—किसी भी तरह से—तो तुम्हें इस ओर से निश्चित रहना चाहिए।" इस बार वह सचमुच ही मुड़कर चल दिया। उसने न हाथ ही मिलाया और न ही विदाई के लिए कोई शब्द ही कहा। दरवाज़े पर वह कुंडी पर हाथ रखे रुक गया।" मैं कल ही फ्लोरेंस चला जाऊंगा," इतना उसने बिना किसी कम्पन के कहा।

"मुझे यह सुनकर खुशी हुई," इज़ाबेल ने उत्तेजना के साथ कहा। गुडवुड के जाने के पांच मिनट बाद वह फूटकर रो पड़ी।

३३

इसके एक घण्टा बाद उसका रोने का दौरा समाप्त हो चुका था, और उसके चेहरे से इसके सब आसार भी गायब हो चुके थे, जब उसने इस बात को अपनी आंटी के सामने खोला। मैं बात इस रूप में इसलिए कह रहा हूं कि इज़ाबेल को यकीन था मिसेज़ टाउशेट इस बात से खुश नहीं होंगी। इज़ाबेल उन्हें बताने से इसीलिए रुकी हुई थी कि वह पहले मिस्टर गुडवुड से मिल लेना चाहती थी। उसे एक विचित्र-सा अहसास था कि सब लोगों को तब तक बताना ठीक नहीं जब तक वह यह न जान ले कि गुडवुड इस बारे में क्या कहता है। गुडवुड ने उसकी आशा से बहुत कम कहा था और इसीलिए उसे अब समय बरबाद करने पर क्रोध आ रहा था। लेकिन अब वह और समय बरबाद नहीं करेगी। उसने सिर्फ तब तक इन्त-

जार किया जब तक मिसेज टाउशेट अपना दोपहर का नाश्ता करने से पहले ड्राइंग रूम में नहीं आईं। तब वह बोली, "आंट लिडिया, मुझे आपसे कुछ कहना है।"

मिसेज टाउशेट ने जैसे चिहुंककर तीखी नजर से उसकी तरफ देखा, "तुम्हें बताने की जरूरत नहीं। मैं जानती हू क्या बात है।"

"मैं नहीं जानती आपको कैसे पता है।"

"उसी तरह जैसे हवा के झोंके से मुझे पता चल जाता है कि खिड़की खुली है। तुम उस आदमी से शादी करने जा रही हो।"

"आपका मतलब किस आदमी से है?" इजाबेल ने सम्मान भाव से पूछा।

"मैडम मरले के दोस्त मिस्टर ऑसमण्ड से।"

"मैं नहीं जानती कि आप उसे मैडम मरले का दोस्त क्यों कहती हैं। क्या वह मुख्यतः इसी बात से जाना जाता है?"

"अगर वह उसका दोस्त नहीं है, तो उसे होना चाहिए—उस सब के बाद जो मैडम मरले ने उसके लिए किया है।" मिसेज टाउशेट बोली, "मैंने उस स्त्री से इसकी आशा नहीं की थी। मुझे निराशा हुई है।"

"अगर आपका मतलब है कि हमारी सगाई से मैडम मरले का कोई सम्बन्ध है तो आप गलती पर हैं," इजाबेल ने क्रूर ठण्डेपन से कहा।

"तुम्हारा मतलब यह है कि बिना किसी बाहरी चाबुक के तुम्हारा आकर्षण ही उस आदमी के लिए पर्याप्त था? तुम बिलकुल ठीक कहती हो। तुममें बहुत आकर्षण है। लेकिन वह उसे बिलकुल न जानता अगर उसे इसके लिए तैयार न किया जाता। वह अपने को बहुत समझता है और अपनी तरफ से तकलीफ उठाने वाला आदमी नहीं है। मैडम मरले ने ही उसकी तरफ से तकलीफ उठाई है।"

"उसने स्वयं भी बहुत तकलीफ उठाई है," इजाबेल ने हंसते हुए कहा।

मिसेज टाउशेट ने तीखे ढंग से सिर हिलाया, "मेरा ख्याल है उसने उठाई ही होगी, जो तुम उसे इतना पसन्द करने लगी हो।"

"मेरा ख्याल है वह आपको भी पसन्द था।"

"हां कभी पसन्द था, और इसीलिए मुझे उससे नाराजगी है।"

"आप मुझसे नाराज हो लें, लेकिन उससे न हों," लड़की बोली।

"मैं तुम्हारे साथ हमेशा नाराज रहती हूं, पर उसमें कोई सन्तोष की बात नहीं। क्या इसीलिए तुमने लार्ड वारबर्टन को इन्कार किया था?

"कृपया, उस बात पर न जाएं। मिस्टर ऑसमण्ड को मैं ही क्यों पसन्द नहीं कर सकती, जबकि और लोगों ने भी उसे पसन्द किया है ?"

"औरों ने अपने पागलपन के क्षणों में भी उससे शादी नहीं करनी चाही। उसमें कुछ भी नहीं है," मिसेज़ टाउशेट बोलीं।

"तब वह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता," इज़ाबेल बोली।

'क्या तुम समझती हो कि तुम खुश हो सकोगी ? तुम्हें पता होना चाहिए कि ऐसी बात करके कभी कोई खुश नहीं हुआ है।"

"तो मैं इसकी शुरुआत करूंगी। आदमी शादी किस चीज़ के लिए करता है ? "

"तुम किस चीज़ के लिए कर रही हो, यह तो भगवान ही जानता है। अधिकतर लोग एक साझीदार के लिए ही शादी करते हैं—अपना एक घर बनाने के लिए। लेकिन इस साझीदारी में सब कुछ तुम्हीं को देना होगा।"

"यह इसलिए कि मिस्टर ऑसमण्ड अमीर नहीं है ? क्या यही बात आप कह रही हैं ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"उसके पास न पैसा है, न नाम है, न रुतबा है। मैं इन चीज़ों को बहुत मानती हूं और मुझमें यह बात स्वीकार करने की शक्ति है। मेरे ख्याल में ये चीज़ें बहुत मूल्यवान हैं। बहुत से लोग इस चीज़ को महसूस करते हैं, और इसका प्रदर्शन भी करते हैं। लेकिन वे कारण कुछ और ही बताते हैं।"

इज़ाबेल थोड़ी देर के लिए झिझकी, "मेरे ख्याल में मैं हर ऐसी चीज़ की कद्र करती हूं जो बहुमूल्य है। मेरे मन में पैसे की बहुत कद्र है, और इसीलिए चाहती हूं कि मिस्टर ऑसमण्ड के पास भी थोड़ा पैसा हो जाए।"

"तो उसे पैसा दे दो, लेकिन शादी किसी और से कर लो।"

"मेरे लिए उसका नाम ही काफी है," लड़की कहती गई। "कितना खूबसूरत नाम है। क्या मेरा नाम इतना अच्छा है ?"

"यह और भी वजह है कि तुम कोई बेहतर नाम चुनो। अच्छे अमरीकन नाम तो कुल एक दर्जन ही हैं। तुम क्या उसपर तरस खाकर उसे शादी कर रही हो ?"

"आपको सूचना दे देना मेरा कर्त्तव्य था आंट लिडिया, लेकिन मैं नहीं समझती कि आपसे सब कुछ विस्तार से कहना भी मेरा कर्तव्य है। अगर यह कर्तव्य होता भी तो भी मेरा ख्याल है," मैं समझाने में असमर्थ रहती। इसलिए कृपया

मुझे डांटें नहीं। इस विषय पर आपसे बात करने में मैं हल्की पड़ती हूं। मैं इस विषय पर बात कर ही नहीं सकती।"

"मैं तुम्हें डांट नहीं रही, सिर्फ तुम्हारी बात का जवाब दे रही हूं। मुझे समझदारी का कुछ तो इशारा तुम्हें देना चाहिए। मुझे यह सब घटित होता नज़र आ रहा था, फिर भी मैंने कुछ कहा नहीं। मैं कभी दखल नहीं देती।"

"हां आप कभी दखल नहीं देती। इसलिए मैं आपके प्रति आभारी हूं। आप बहुत विवेक से चलती हैं।"

"यह विवेक से चलना नहीं था—पर सुविधाजनक यही था," मिसेज़ टाउशेट बोलीं, "लेकिन मैं मैडम मरले से ज़रूर बात करूंगी।"

"मैं नहीं जानती कि आप क्यों उसे हर बार बीच में ले आती हैं? वह मेरी बहुत अच्छी मित्र है।"

"सम्भवतः। लेकिन वह मेरी अच्छी मित्र नहीं साबित हुई।"

"आपका उसने क्या बिगाड़ा है?"

"उसने मुझे धोखा दिया है। उसने मुझे तुम्हारी सगाई रोकने का वचन दिया था।"

"वह इसे रोकने में असमर्थ रही होगी।"

"वह कुछ भी कर सकती है। इसीलिए मैं उसे हमेशा पसन्द करती थी। मैं जानती थी कि वह सब कुछ कर सकती है। पर सोचती थी कि वह एक वक्त पर एक ही काम करती है। लेकिन मैं नहीं जानती थी कि वह एक साथ दो-दो काम करेगी।"

"मैं नहीं जानती आपके साथ उसने क्या किया है," इज़ाबेल बोली, "वह बात आप दोनों के बीच की है। लेकिन मेरे साथ वह ईमानदार और वफ़ादार रही है।"

"वफ़ादार अवश्य रही होगी। वह चाहती थी कि तुम उसके उम्मीदवार से शादी करो। उसने मुझसे कहा था कि वह तुम पर इसीलिए नज़र रख रही थी, कि बीच में दखल देकर तुम्हें रोक सके।"

"उसने यह बात आपको प्रसन्न करने के लिए कही होगी," लड़की ने सचेत होते हुए कहा।

"मुझे धोखा देकर प्रसन्न करने के लिए? वह मुझे इससे बेहतर जानती है।

क्या मैं आज प्रसन्न हूं ?"

"मैं नहीं समझती कि आप कभी प्रसन्न होती भी हैं," इज़ाबेल को कहना पड़ा। "अगर मैडम मरले को पता था कि आप सचाई जान जाएंगी, तो उसे झूठी बनने से क्या लाभ था ?"

"उसे इससे समय मिल गया। मैं इसकी प्रतीक्षा करती रही कि वह दखल देगी और तुम आगे बढ़ती गईं। वह दरअसल तुम्हें बढ़ावा दे रही थी।"

"ठीक है। लेकिन आप यह जानती थीं कि मैं आगे बढ़ रही हूं। अगर मैडम मरले ने आपको चेतावनी दी होती, तो भी आप मुझे रोकने की कोशिश न करतीं।"

"नहीं। लेकिन कोई और ज़रूर करता।"

"आपका मतलब किससे है ?" इज़ाबेल ने अपनी आंटी की तरफ तेज़ नज़र से देखते पूछा।

मिसेज टाउशेट की छोटी-छोटी चमकती आंखों ने, अपनी स्फूर्ति के बावजूद, इज़ाबेल की नज़र का उत्तर न देकर उसे सह लिया, "क्या तुम रैल्फ की बात न सुनतीं ?"

"अगर वह मिस्टर ऑसमण्ड को बुरा-भला कहता, तो हरगिज न सुनती।"

"रैल्फ कभी किसीको बुरा-भला नहीं कहता। तुम यह बात अच्छी तरह जानती हो। वह तुम्हारी बहुत फिक्र रखता है।"

"मैं जानती हूं," इज़ाबेल बोली, "इसका मूल्य मैं आज अधिक जान रही हूं, क्योंकि वह जानता है मैं जो कुछ करती हूं, उसका कुछ कारण होता है।"

"उसे कभी आशा नहीं थी कि तुम ऐसा करोगी। मैंने उससे कहा था कि तुम ऐसा कर सकती हो। लेकिन उसने इसके खिलाफ मुझसे बहस की थी।"

"उसने बहस की वजह से बहस की होगी," लड़की मुस्कराई, "आप जब उसे आपको धोखा देने के लिए दोषी नहीं ठहरा रहीं, तो मैडम मरले पर ही क्यों तोहमत लगा रही हैं ?"

"रैल्फ ने कभी इस बात का बहाना नहीं किया कि वह तुम्हें रोकेगा।"

"मुझे यह सुनकर खुशी हुई," इज़ाबेल ने प्रसन्नता के साथ कहा, "मैं चाहूंगी," उसने तत्काल जोड़ा, "कि वह जब आए, तो आप सबसे पहले उसे मेरी सगाई के बारे में बता दें।"

"अवश्य बताऊंगी," मिसेज़ टाउशेट बोलीं, "मैं अब तुमसे और बात नहीं करूंगी। लेकिन मैं तुम्हें बताना चाहूंगी कि और लोगों से मैं अवश्य बात करूंगी।"

"जैसा आप चाहें। मेरा मतलब सिर्फ इतना ही था कि यह खबर मेरी जगह आप ही सब लोगों को दे दें।"

"मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूं। यही उचित है।" और इसके उपरान्त आंटी और भतीजी नाश्ता करने चली गईं। वहां मिसेज़ टाउशेट ने अपने वचन के अनुसार गिलबर्ट ऑसमंड के विषय में कोई बात नहीं की। थोड़ी खामोशी के बाद उन्होंने इज़ाबेल से पूछा कि घण्टा-भर पहले कौन उससे मिलने आया था।

"एक पुराना दोस्त था—एक अमरीकन," कहते हुए इज़ाबेल के गाल सुर्ख हो उठे।

"एक अमरीकन—निःसन्देह एक अमरीकन ही सुबह-सुबह दस बजे किसीसे मिलने आ सकता है।"

"उस समय साढ़े दस बजे थे। वह जल्दी में था। उसे इसी शाम को लौट जाना था।"

"क्या वह कल शाम, उचित समय पर नहीं आ सकता था?"

"वह कल रात ही यहां पहुंचा था।"

"उसने फ्लोरेंस में केवल चौबीस घंटे ही काटे हैं?" मिसेज़ टाउशेट आश्चर्य से बोलीं, "तब तो सच ही वह अमरीकन हैं।"

"हां सो तो वह है ही," इज़ाबेल अब विपरीत भाव से मन में प्रशंसा करती हुई बोली कि कैस्पर गुडवुड ने उसके लिए कितना कुछ किया है।

दो दिन बाद रैल्फ आ गया। यद्यपि इज़ाबेल को यकीन था कि मिसेज़ टाउशेट ने उसे वह बात बताने में समय नहीं लिया होगा, फिर भी पहले-पहल उसने इस बात से अनभिज्ञता-सी ही जाहिर की। उसकी पहली बात उसके स्वास्थ्य को लेकर ही हुई। इज़ाबेल के पास काफ्र्यू के बारे में पूछने के लिए काफी प्रश्न थे। रैल्फ के कमरे में आने पर उसे देखकर वह चकित हो गई थी। वह यह भूल चुकी थी कि वह कितना बीमार लगता था। काफ्र्यू में रहने के बावजूद वह उस समय बहुत बीमार लग रहा था। इज़ाबेल सोचने लगी कि क्या उसकी तबीयत सचमुच पहले से ज़्यादा खराब है, या उसे स्वयं एक बीमार आदमी के पास रहने की आदत नहीं रही। जिन्दगी में बढ़ने के साथ-साथ रैल्फ में किसी तरह का

रूढ़िगत सौन्दर्य नहीं आया था और अब उसके स्वास्थ्य की पूर्ण क्षति ने उसके व्यक्तित्व के बेढंगेपन को किसी भी तरह कम नहीं किया था। समय की मार खाकर भी उसके चेहरे के व्यंग्य और सजीवता में अन्तर नहीं आया था—वह अस्थिर ढंग से लटकती एक ऐसी लालटेन की तरह था जिसे कागज़ से ढक दिया गया हो। उसके पतले गलमोछे उसके दुबले गालों पर झूल रहे थे, और उसकी नाक की धनुषाकार हड्डी अब ज़्यादा बाहर को निकल रही थी। बहुत दुबला तो वह था ही—दुबला-लम्बा और ढीले जोड़ों वाला—पर उस ढीलेपन में संयोगवश एक तारतम्य भी था। भूरी मखमली जैकट उसकी हमेशा की पोशाक थी। उसके हाथ हमेशा जेबों में डले रहते थे। उसके हाथ-पैर जिस तरह हिलते-डुलते थे, उससे अत्यधिक शारीरिक असहायता का आभास मिलता था। उसकी बेतुकी चाल, उसकी विनोदप्रियता से कहीं अधिक उसके चरित्र की विशेषता थी—यों बीमारी में वह अपनी बेबसी का भी मज़ाक उड़ाता रहता था। शायद इसी वजह से रैल्फ दुनिया की किसी चीज़ को गम्भीरता से नहीं ले पाता था। उसे समझ नहीं आता था कि इस दुनिया में उसके अस्तित्व का मतलब ही क्या है। इज़ाबेल को रैल्फ की बदसूरती अच्छी लगती थी। उसका भोलापन उसे पसन्द था। दिनों के सम्पर्क ने उन खामियों में भी एक मिठास ला दी थी। लगता था कि रैल्फ को इन्हीं शर्तों पर आकर्षण दिया गया है। वह इतना आकर्षक लगता था कि उसके बीमार होने की बात में भी इज़ाबेल को एक सुख मिलता था। रैल्फ के स्वास्थ्य की स्थिति जैसे एक सीमा नहीं बल्कि एक तरह की बौद्धिक विशेषता थी। इससे उसे रस्मी और दुनियादारी की भावनाओं से छुट्टी मिल गई थी, और नितान्त व्यक्तिगत रूप से जीने की स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई थी। इस तरह जो रैल्फ का व्यक्तित्व बन गया था, वह बहुत लुभावना था। बीमार होने पर भी उसने अपने को बहुत बासी नहीं होने दिया था। यह जानते हुए भी कि उसकी हालत काफी खराब है, उसने अपने को बीमारों जैसा नहीं बनने दिया था। इज़ाबेल की अपने कज़िन के बारे में ऐसी ही धारणा थी। अगर उसे उसपर दया आई तो विचार करने के बाद ही। विचार करने पर काफी सहानुभूति उसके मन में उमड़ी। पर वह अपनी सहानुभूति को व्यर्थ गंवाने से हमेशा डरती थी—उसे लगता था कि ग्रहण करने वाले की अपेक्षा देने वाले के लिए यह चीज ज्यादा बहुमूल्य है। पर इस समय बिना अधिक संवेदना के भी यह जाना जा सकता था कि रैल्फ की

जीवन अवधि पहले से भी अनिश्चित हो गई थी। उस व्यक्ति की आत्मा उत्फुल्ल, उन्मुक्त और उदार थी। उसमें प्रतिभा का प्रकाश तो था, पर अपने पाण्डित्य का ज़रा भी अभिमान नहीं था। कितना दुःखदायी था कि वह मृत्यु के रास्ते पर था।

इज़ाबेल को फिर से लगा कि सचमुच कुछ लोगों के लिए ज़िन्दगी कितनी मुश्किल चीज़ है। यह सोचकर उसके चेहरे पर लज्जा की हल्की आभा आ गई कि उसकी अपनी आगे की ज़िन्दगी कितनी सुविधाजनक लग रही थी। वह रैल्फ से यह सुनने को तैयार थी कि उसकी सगाई से वह खुश नहीं है। पर उसके लिए स्नेह रखते हुए भी वह उसके कहने से स्थिति को बदलने के लिए तैयार नहीं थी। वह इसके लिए भी तैयार नहीं थी कि रैल्फ के सहानुभूति न दिखाने पर वह दुःख प्रकट करे। यह रैल्फ का अधिकार था—और यह उसके लिए स्वाभाविक ही था कि विवाह की दिशा में उसके किसी भी कदम को वह ठीक न समझे। यह परम्परा ही थी—प्राचीन परम्परा—कि एक कज़िन को अपनी कज़िन के पति से नफरत हो—एक कज़िन के स्नेह की अभिव्यक्ति का ढंग ही यह माना जाता था। इज़ाबेल को खुशी होती अगर वह रैल्फ की रुचि के अनुसार ब्याह कर सकती। पर उसका चुनाव रैल्फ के विचारों के साथ मेल खाये ही, यह अनिवार्य नहीं था। और रैल्फ के विचार क्या थे ? उसने यह मानना चाहा था कि इज़ाबेल अगर लार्ड वारबर्टन से ब्याह कर लेती तो बेहतर था—पर यह इसीलिए कि उसने लार्ड वारबर्टन को इन्कार कर दिया था। वह लार्ड वारबर्टन को स्वीकार कर लेती तो रैल्फ का स्वर कुछ दूसरा होता—उसे तो हमेशा विरोध ही करना होता था। आलोचना तो किसी भी शादी की की जा सकती थी। शादी चीज़ ही ऐसी थी कि दूसरों को हमेशा आलोचना का मौका मिल जाता था। अगर उसे खुद को मौका मिलता, तो वह स्वयं अपनी इस शादी की कितनी आलोचना कर सकती थी। पर इस समय उसका मन दूसरी तरफ था, और अच्छा था कि रैल्फ ने वह चिन्ता अपने ऊपर ले ली थी। इज़ाबेल बहुत ध्यान और सब्र से उसकी बात सुनने को तैयार थी। रैल्फ को ज़रूर इसका पता चल गया होगा, इसलिए उसकी उसे खामोशी और भी विचित्र लग रही थी। लगातार तीन दिन प्रतीक्षा करने के बाद इज़ाबेल उसकी चुप्पी से थक गई। रैल्फ को अच्छा न लगे तो भी उसे वह फर्ज पूरा तो करना ही चाहिए। हम लोग जो रैल्फ को इज़ाबेल की

अपेक्षा अधिक जानते हैं, आसानी से विश्वास कर सकते हैं कि कि पालाज़ो क्रेसेंतीनी में आने के बाद अकेले में रैल्फ यह फर्ज कई तरह से पूरा कर चुका था। उसकी मां ने आते ही पहले उसे यह खबर दी थी। रैल्फ को इससे जैसी ठंडी-सी सिहरन महसूस हुई वैसी मिसेज़ टाउशेट के वात्सल्यपूर्ण चुम्बन से भी नहीं हुई। रैल्फ को इससे धक्का ही नहीं लगा, उसने अपमानित भी महसूस किया। उसकी सारी गणना गलत निकली थी। जिस लड़की में उसने दुनिया में सबसे ज्यादा दिलचस्पी ली थी, वही हाथ से खो गई थी। एक चट्टानों से भरी नदी में बे-पतवार की नाव की तरह वह घर भर में घूमता रहा या बाग में बेंत की कुर्सी पर हैट आंखों पर डाले, सिर पीछे किये, टांगें फैलाये बैठा रहा। उसके दिल में एक सीलन-सी भर गई थी। पहले कभी कोई चीज़ उसे इतनी बुरी नहीं लगी थी। पर वह कर क्या सकता था, कह क्या सकता था? लड़की अगर दलदल में फंस चुकी थी तो क्या वह उसे दिखावे की शाबाश दे? उसे बचाने का प्रयत्न तभी किया जा सकता था, जब उसमें सफलता की आशा हो। जिस आदमी के भुलावे में वह आ गई थी, उसके भद्दे और विकृत रूप को सामने रखना तभी अच्छा कहा जा सकता था अगर यह बात उसकी समझ में आ जाए। वरना तो सिर्फ अपने को खराब करने वाली बात थी। अपने मन की बात कहने या छिपाये रखने में उसे एक-सी कोशिश करनी पड़ रही थी। 'हां' करने में इमानदारी नहीं थी और विरोध करने में सफलता की आशा नहीं थी। फिर उसे यह भी पता था—कम से कम उसका अनुमान तो था ही—कि दोनों मंगेतर आपसी वचन रोज़ दोहराते रहते होंगे। ऑसमण्ड उन दिनों पालाज़ो क्रेसेंतीनी में बहुत कम आता था, पर इज़ाबेल हर रोज़ उसे बाहर मिल लेती थी। सगाई की घोषणा हो जाने के बाद वह इसके लिए स्वतंत्र थी। उसने अपने लिए एक गाड़ी मासिक भाड़े पर तय कर ली थी क्योंकि जिस कार्य से मिसेज़ टाउशेट असन्तुष्ट थी उसमें वह किसी भी रूप में उनका आभार नहीं लेना चाहती थी। वह हर सुबह गाड़ी में बैठकर कैसीन जाती थी। सुबह के वक्त उस जंगली इलाके में कोई भी नहीं आता-जाता था। इज़ाबेल उसके सब से खामोश हिस्से में ऑसमण्ड से मिलती थी और उसके साथ इतालवी छाया में चहलकदमी करती हुई बुलबुलों का संगीत सुनती रहती थी।

३४

एक सुबह जब दोपहर के भोजन से आधा घंटा पहले वह अपनी सैर से लौटी, तो उस पैलेस के मैदान में अपनी गाड़ी से उतरकर सीढ़ियां चढ़ने की बजाय वह मैदान पार करके एक और महराबदार दरवाज़े के नीचे से होती हुई बागीचे में चली गई। इस समय इससे प्यारी जगह और कोई नहीं हो सकती थी। दोपहर की खामोशी वहां छाई थी, और वहां पेड़ों के नीचे खुली छाया बन्द खामोश खुली गुफाओं जैसी लग रही थी। रैल्फ वहां टर्प्सिकोर के बुत के नीचे स्पष्टतः उदास भाव से बैठा था। वह बुत बर्निनी की खास शैली में पतली उंगलियों और फैले वस्त्रों वाली एक जलपरी का था। रैल्फ के आराम करने के ढंग से इज़ाबेल को पहले लगा कि वह सो रहा है। घास पर उसकी हल्की आहट ने उसे जगाया नहीं, और वापस मुड़ने से पहले वह क्षण-भर के लिए रुककर उसे देखती रही। इसी बीच रैल्फ ने आंखें खोल लीं। इसपर वह एक खुरदुरी कुर्सी पर बैठ गई, जो रैल्फ की कुर्सी के साथ सटी थी। यद्यपि अपनी बेचैनी में इज़ाबेल ने रैल्फ को उसकी उदासीनता के लिए दोषी ठहराया था, लेकिन वह यह भी जानती थी कि उसके पास स्पष्टतः सोचने को बहुत कुछ है। उसने रैल्फ के इस भाव के लिए अंशतः उसकी बढ़ी हुई कमज़ोरी को ही उत्तरदायी माना और अंशतः उत्तराधिकार में मिली ज़मीन की ज़िम्मेदारी को। उसके पिता व्यापार की कुछ ऐसी उलटी-सीधी व्यवस्था कर गए थे कि मिसेज़ टाउशेट तो पहले से ही उसके विरोध में थीं, अब दूसरा साझीदार भी उसका विरोध करने लगा था। यूं व्यापार के हित में यही था कि वह फ्लोरेंस आने की बजाय इंग्लैंड जाता। उसकी मां का यही ख्याल था। उसे वहां गए महीनों हो गए थे, और बैंक के काम में वह न के बराबर दिलचस्पी ले रहा था।

"मुझे अफसोस है मैंने तुम्हें जगा दिया," इज़ाबेल बोली, "तुम थके लग रहे हो।"

"मैं काफी थका महसूस कर रहा हूं। लेकिन मैं सोया नहीं था। मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा था।"

"तो क्या उसीसे थक गए हो?"

"बहुत हद तक। सोचना कहीं पर भी नहीं पहुंचाता। सड़क बहुत लम्बी है

और मैं कहीं पहुंच ही नहीं पाता।"

"तुम किस जगह पहुंचना चाहते हो ?" इज़ाबेल ने अपना छाता बन्द करते हुए पूछा।

"इस जगह कि मैं तुम्हारी सगाई के बारे में तुमसे क्या कहूं।"

"उस बारे में ज़्यादा मत सोचो," इज़ाबेल ने हल्के भाव से कहा।

"तुम्हारा कहने का मतलब है कि मुझे इससे कोई मतलब नहीं होना चाहिए ?"

"एक हद के बाद नहीं होना चाहिए।"

"यही एक बात है, जो मैं तय करना चाहता हूं। मुझे ख्याल था कि तुम मुझसे अच्छे व्यवहार की आशा में होगी। पर मैंने तुम्हें बधाई भी नहीं दी।"

"अवश्य ही मैं इस बारे में सोचती रही हूं। मैं हैरान थी कि तुम इतने खामोश क्यों हो।"

"इसके कई-एक कारण रहे हैं। मैं अब तुम्हें बताता हूं," रैल्फ बोला। उसने अपनी टोपी उतारकर ज़मीन पर रख दी और उसकी ओर देखता रहा। फिर वह बर्निनी की छाया में पीछे को झुक गया, और अपना सिर उसने संगमरमर के बुत के साथ सटा लिया। अपने हाथ उसने कुर्सी की बांहों पर टिका लिए। वह काफी अशान्त नज़र आ रहा था। काफी देर वह संकोच में रहा। इज़ाबेल भी कुछ नहीं बोली। लोग अव्यवस्थित हों, तो इज़ाबेल को उनके लिए दुःख होने लगता था। लेकिन उसने तय कर रखा था कि वह रैल्फ को एक शब्द भी ऐसा नहीं कहने देगी जिससे उसके निश्चय के सम्मान को चोट पहुंचे। "मेरे ख्याल में मैं अपने आश्चर्य से ही नहीं मुक्त हो पाया हूं," आखिर वह बोला, "तुम्हारे इस तरह फंस जाने की मुझे बिलकुल भी आशा नहीं थी।"

"मैं नहीं जानती कि तुम इसे फंसना क्यों कहते हो ?"

"क्योंकि तुम्हें एक पिंजरे में डाल दिया जाएगा।"

"लेकिन अगर मुझे अपना पिंजरा पसन्द हो, तब तो तुम्हें कोई दुःख नहीं है न ?" उसने पूछा।

"इसी बात से तो मैं हैरान हूं। इसी बारे में मैं सोच रहा था।"

"अगर तुम यही सोच रहे थे, तब तुम कल्पना कर सकते हो कि मैंने कितना सोचा होगा। मैं सन्तुष्ट हूं कि मैं ठीक काम कर रही हूं।"

"तुम बहुत ज़्यादा बदल गई लगती हो। एक साल पहले तुम्हें अपनी स्वतंत्रता का सबसे ज़्यादा ख्याल था। तुम तो केवल ज़िन्दगी देखना चाहती थीं।"

"वह मैंने देख ली है," इज़ाबेल बोली, "अब मैं स्वीकार करती हूं कि मुझे उसका विस्तार बहुत आकर्षक नहीं लगता।"

"मैं भी यह कहकर झूठ नहीं बोलूंगा कि वह आकर्षक है। मैंने सिर्फ यही सोचा था कि तुम्हारी उसमें दिलचस्पी है, और तुम पूरे क्षेत्र को देखना चाहती हो।"

"मैंने देखा है कि कोई भी व्यक्ति व्यापक रूप में यह नहीं कर सकता। व्यक्ति को एक कोना चुनना पड़ता है, और उसी पर अपने को केन्द्रित करना पड़ता है।"

"मैं भी यही सोचता हूं। पर व्यक्ति को जितना हो सके, उतना अच्छा कोना ढूंढ़ना चाहिए। पूरी सर्दी जब मैं तुम्हारी रोचक चिट्ठियां पढ़ता रहा, तो मुझे ज़रा ख्याल नहीं था कि तुम कुछ और चुन रही हो। तुमने उस बारे में कुछ नहीं लिखा था, और तुम्हारी खामोशी ने मुझे निश्चिन्त कर दिया था।"

"यह एक ऐसा विषय नहीं था जिसके बारे में मैं तुम्हें लिख सकती। इसके अलावा मुझे भविष्य के बारे में कुछ भी पता नहीं था। यह सब कुछ अभी हाल ही में हुआ है। अगर तुम चौकन्ने भी होते," इज़ाबेल ने पूछा, "तो तुम क्या कर सकते थे?"

"मैं तुमसे कहता, थोड़ी देर और रुक जाओ।"

"किसके लिए रुक जाती?"

"थोड़ी और रोशनी के लिए," रैल्फ ने एक असंगत-सी मुस्कान के साथ कहा। उसके हाथ जेबों में चले गए थे।

"वह रोशनी कहां से आती? तुमसे?"

"हो सकता है मुझसे ही एक-दो चिनगारियां मिल जातीं।"

इज़ाबेल ने अपने दस्ताने उतार लिए थे। उन्हें घुटनों पर रखे वह उनपर हाथ फेरने लगी। इसमें जो कोमलता थी, वह आकस्मिक ही थी क्योंकि उसका भाव समझौते का नहीं था।

"तुम खामखाह इधर-उधर की बातें कर रहे हो, रैल्फ। तुम दरअसल कहना चाहते हो कि तुम्हें मिस्टर ऑसमंड पसन्द नहीं है। लेकिन यह कहते तुम डरते

हो।"

"मतलब मैं चोट पहुंचाने को तैयार हूं लेकिन वार करने से भयभीत हूं ? मैं चोट ज़रूर पहुंचाना चाहता हूं, लेकिन तुम्हें नहीं। मुझे तुम्हारी ओर से डर है, उसकी ओर से नहीं। अगर तुम उससे शादी कर लेती हो, तो मेरी बात करना कितनी गलत होगी ?"

"अगर मैं उससे शादी कर लेती हूं, तो क्या तुम्हारा मुझे इससे झटका देने का इरादा था ?"

"बिलकुल। लेकिन तुम्हें यह मूर्खता लगती है।"

"नहीं," इज़ाबेल ने थोड़ी देर के बाद कहा, "लेकिन यह बात मुझे बहुत छू गई है।"

"एक ही बात है। तुम्हारा मुझपर तरस खाना बहुत अजीब-सा लग रहा है।"

इज़ाबेल ने अपने लम्बे दस्तानों पर फिर से हाथ फेरा।

"मैं जानती हूं तुम्हें मेरे साथ बहुत सहानुभूति है। मैं उससे नहीं छूट सकती।"

"ईश्वर के लिए कोशिश भी मत करना। इस बात को हमेशा ध्यान में रखना। यह तुम्हें यकीन दिला देगी कि मैं तुम्हारी कितनी बेहतरी चाहता हूं।"

"और कि तुम मुझमें कितना कम विश्वास रखते हो।"

एक क्षण के लिए खामोशी छाई रही। "मुझे तुममें विश्वास है, लेकिन उसमें नहीं," फिर रैल्फ बोला।

इज़ाबेल ने अपनी आंखें उठाईं और रैल्फ को खुली और गहरी नज़र से देखा, "तुमने वह बात अब कह दी है, और मैं खुश हूं कि तुमने सब कुछ स्पष्ट कर दिया है। लेकिन तुम्हें इससे तकलीफ होगी।"

"तब नहीं, अगर तुम न्यायशील रहीं।"

"मैं बहुत न्यायशील हूं," इज़ाबेल बोली, "इसका इससे बेहतर क्या सबूत हो सकता है कि मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूं ? मैं नहीं जानती क्यों। मैं तब ज़रूर नाराज़ थी जब तुमने बात करनी शुरू की, लेकिन अब वह भाव समाप्त हो चुका है। सम्भवतः मुझे नाराज़ होना चाहिए था, लेकिन ऑसमण्ड ऐसा ठीक नहीं

समझेगा। वह चाहता है कि मैं सब कुछ जानूं। यही बात मुझे उसमें पसन्द है। तुम्हारा इसमें अपना कोई लाभ नहीं है, यह मैं जानती हूं। एक लड़की के रूप में मैंने तुम्हारे साथ कभी इतना अच्छा व्यवहार नहीं किया कि तुम यह चाहो कि मैं ऐसी ही बनी रहूं। तुम बहुत अच्छा परामर्श देते हो। तुमने कई बार ऐसा किया है। लेकिन मैं हमेशा खामोश रही हूं। मैंने हमेशा तुम्हारी बुद्धि में विश्वास किया है," वह खामोशी की डींग हांकती हुई भी आन्तरिक आवेश के साथ बोली। यह उसकी हार्दिक इच्छा थी कि वह न्यायशील रहे। यह बात रैल्फ के दिल को इस तरह छू गई मानो उसके द्वारा घायल किया गया कोई जन्तु उसे ही तसल्ली दे रहा हो। वह उसकी बात काटकर उसे फिर से आश्वासन देना चाहता था। एक क्षण के लिए वह अव्यवस्थित हो उठा—जो वह कह चुका था उसे शायद वह वापस ले लेता। लेकिन इज़ाबेल ने उसे मौका नहीं दिया। अपने में एक साहसिक उद्देश्य का आभास पाकर वह उसी दिशा में बढ़ती गई, "मैं जानती हूं कि तुम्हारे पास कुछ खास कहने को है। मैं उसे अवश्य सुनना चाहूंगी। क्योंकि मैं जानती हूं कि तुम जो कहोगे, तटस्थ भाव से कहोगे। मुझे इसका अहसास है। उसके बारे में बहस करना बहुत अजीब लगता है। लेकिन मैं यह बात तुमसे अवश्य कहूंगी कि अगर तुम मुझे मेरे निश्चय से हटाने की कोशिश में हो, तो यह कोशिश छोड़ दो। तुम मुझे इस निश्चय से एक इंच भी नहीं हिला सकते। तुमने ठीक कहा है कि मैं पकड़ ली गई हूं। यह भी सच है कि तुम्हें इस बातचीत के बारे में सोचकर तकलीफ होगी। लेकिन तुम्हारा दर्द तुम तक ही रहेगा। मैं तुम्हें कभी बुरा-भला नहीं कहूंगी।"

"मैं कभी नहीं सोचता कि तुम ऐसा करोगी," रैल्फ बोला, "पर मैं कभी नहीं सोचता था कि तुम इस तरह से शादी करोगी।"

"तो मेरी शादी के बारे में तुम्हारी क्या कल्पना थी?"

"मैं बता नहीं पाऊंगा। मैं नहीं सोचता था कि तुम इस तरह के आदमी के साथ विवाह करने का निश्चय करोगी।"

"मिस्टर ऑसमण्ड की तरह के व्यक्ति में क्या बुराई है? उसका इतना स्वतन्त्र और व्यक्तित्वपूर्ण होना ही मुझे उसमें सबसे ज़्यादा पसन्द है," लड़की ने कहा, "तुम उसके विरोध में क्या बात कह सकते हो? तुम तो उसे बहुत ही कम जानते हो।"

"हां," रैल्फ बोला, "मैं उसे बहुत ही कम जानता हूं, और मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि मेरे पास उसे बुरा साबित करने के लिए कुछ भी सामग्री नहीं है। लेकिन साथ ही मैं अपने को यह बात सोचने से नहीं रोक पा रहा कि तुम एक बहुत गम्भीर खतरा मोल ले रही हो।"

"विवाह हमेशा ही एक गम्भीर खतरा होता है, और ऑसमण्ड के लिए भी खतरा मेरे जितना ही गम्भीर है।"

"यह देखना उसका काम है। अगर वह डरता है, तो उसे पीछे हट जाने दो। मैं तो ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं।"

इज़ाबेल ने अपनी कुर्सी से पीछे टेक लगा ली और बांह समेटे एक क्षण अपने कज़िन को ध्यान से देखती रही, "मेरे ख्याल में मैं तुम्हें ठीक से समझी नहीं," उसने आखिर बहुत ठण्डे लहजे में कहा, "मैं नहीं जानती कि तुम क्या बात कर रहे हो।"

"मेरा ख्याल था कि तुम इससे अधिक महत्त्वपूर्ण आदमी से शादी करोगी।"

मैंने अभी कहा था कि इज़ाबेल का लहजा ठंडा था, लेकिन इस बात से जो रंग उसके चेहरे पर आया, वह एक लपट जैसा था, "किस अधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति से ? मुझे तो इतना ही काफी लगता है कि किसीका पति उसके अपने लिए ही महत्त्वपूर्ण हो।"

रैल्फ झेंप गया। अपने व्यवहार ने उसे बेचैन कर दिया था। शारीरिक रूप से उसने अपनी स्थिति को बदलना चाहा। उसने अपने-आपको सीधा कर लिया और अपनी कोहनियों को अपने घुटनों पर रखकर आगे को झुक गया। नज़र उसकी ज़मीन पर टिक गई, "मैं तुम्हें एक क्षण में बताता हूं कि मेरा क्या मतलब है," उसने तत्काल कहा। उसने अपने-आपको व्याकुल और बहुत उत्सुक महसूस किया। अब जबकि उसने बात शुरू कर ही दी थी, तो वह अपना मन पूरा खोल देना चाहता था। लेकिन फिर भी उसकी इच्छा अत्यधिक कोमल बने रहने की थी।

इज़ाबेल थोड़ी देर रुकी रही। फिर वह राजसी ढंग से बोली, "वह प्रत्येक चीज जिसकी आदमी चिन्ता करता है, ऑसमण्ड में पर्याप्त मात्रा में है। दुनिया में और भी उत्कृष्ट लोग होंगे लेकिन मैं अभी उनसे नहीं मिली। जितने लोगों को मैं जानती हूं, उनमें सबसे अच्छा व्यक्ति मिस्टर ऑसमण्ड ही है। वह मेरे लिहाज से

बहुत अच्छा, बहुत दिलचस्प और बहुत अक्लमन्द आदमी है। मैं उन चीजों से अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित हूं जो उसमें हैं, बनिस्बत उन चीज़ों के जिनकी उसमें कमी है।"

"मैंने अपने मन में तुम्हारे लिए बहुत उज्ज्वल भविष्य की कल्पना बना रखी थी," रैल्फ ने उसकी बात का जवाब दिए बिना कहा, "मैंने तुम्हारे लिए बहुत बड़े भाग्य की योजना बना रखी थी। उसमें इस प्रकार का कुछ भी नहीं था। तुम्हें इतनी आसानी से या इतनी जल्दी नीचे नहीं उतर आना था।"

"इसे तुम नीचे उतर आना कहते हो ?"

"बहरहाल, जो तुम्हारे साथ हुआ है, मेरी उसे लेकर यही धारणा है। तुम तो मुझे दूर ऊंचे, नीले आकाश में उड़ती नजर आती थीं—पुरुषों के सिरों के ऊपर एक चमकती रौशनी में तैरती-सी। अचानक कोई एक मुरझाई-सी गुलाब की कली तुम्हारी तरफ उछाल देता है—एक ऐसे तीर की तरह जिसे चूक जाना चाहिए था—और तुम सीधी नीचे धरती पर आ गिरती हो। इससे मुझे तकलीफ हुई है," रैल्फ बोला, "मुझे तकलीफ हुई है जैसेकि मैं स्वयं ही गिर गया हूं।"

इज़ाबेल के चेहरे पर दर्द और भय के चिह्न गहरे हो गए, "मैं तुम्हें ज़रा भी नहीं समझी," उसने दोहराया, "तुमने कहा है कि तुमने मेरे भविष्य की एक योजना से अपने को प्रसन्न कर रखा था—मैं इसे बिलकुल भी नहीं समझ पाई। तुम अपने को अधिक प्रसन्न मत करो, नहीं तो मैं समझूंगी कि तुम यह मेरी कीमत पर कर रहे हो।"

रैल्फ ने सिर हिलाया, "तुम इस बात को स्वीकार न करो कि मेरे मन में तुम्हारे लिए बहुत ऊंचे विचार थे, तो मुझे बुरा नहीं लगता।"

"तुम्हारा मेरे ऊंचे उड़ने और तैरने से क्या मतलब है ?" इज़ाबेल ने फिर से पूछा, "मैं कभी इससे ऊंची सतह पर नहीं चली जिसपर अब चल रही हूं। किसी भी लड़की के लिए इससे बड़ी और कोई बात नहीं कि वह एक ऐसे व्यक्ति के साथ विवाह कर ले जिसे वह पसन्द करती हो," इज़ाबेल सिद्धान्त का आश्रय लेती बोली।

"यह तुम्हारी पसन्द का आदमी ही है जिसकी हम आलोचना कर रहे हैं, डियर कज़िन। मैं यह सोचता था कि तुम्हारे लिए एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो अधिक चुस्त, बड़ा और स्वतन्त्र प्रकृति का हो," रैल्फ ने थोड़ा झिझककर

फिर जोड़ा, "मैं इस ख्याल को छोड़ ही नहीं सकता कि ऑसमण्ड थोड़ा--छोटा व्यक्ति है," उसने शब्द 'छोटा' अधिक विश्वस्त भाव से नहीं कहा। उसे डर था कि वह फिर भड़क उठेगी। लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि वह चुप रही। लग रहा था वह बात पर विचार कर रही है।

"छोटा ?" इज़ाबेल के स्वर से वह शब्द बड़ा-सा लगा।

"मेरे ख्याल में वह संकीर्ण और स्वार्थी है। वह अपने को बहुत गम्भीरता से लेता है।"

"उसके मन में अपने लिए सम्मान है। मैं उसे इसके लिए दोष नहीं दूंगी," इज़ाबेल बोली, "इससे व्यक्ति दूसरों का अधिक सम्मान कर सकता है।"

रैल्फ एक क्षण के लिए उसके संगत लहजे से आश्वस्त हो गया, "हां, लेकिन प्रत्येक चीज़ आपेक्षिक होती है। व्यक्ति को हमेशा दूसरी चीजों या व्यक्तियों की अपेक्षा से सोंचना चाहिए। मैं नहीं समझता कि मिस्टर ऑसमण्ड ऐसा करता है।"

"मुझे मुख्यत: उसके अपने साथ सम्बन्ध से मतलब है। उसमें वह बहुत अच्छा है।"

"वह सुरुचि की प्रतिमूर्ति है," रैल्फ ने यह सोचते हुए कहा कि वह किस तरह अपने को आक्षेप से बचाते हुए गिलबर्ट ऑसमण्ड के बीभत्स गुणों को उसके सामने प्रस्तुत कर सकता है, "प्रत्येक चीज़ के सम्बन्ध में उसका न्याय और अनुमान, किसी भी चीज़ से उसकी सहमति और असहमति, उसी एक कसौटी से निर्धारित होती है।"

'यह तो खुशी की बात है कि उसमें इतनी अच्छी सुरुचि है।"

"उसकी सुरुचि अवश्य बहुत अच्छी है, क्योंकि उसने तुम्हें अपनी दुलहिन के रूप में चुना है। लेकिन क्या तुमने कभी देखा है कि जब ऐसी सुरुचि को आघात पहुंचता है, तो क्या होता है ?"

"मैं आशा करती हूं कि मेरा भाग्य ऐसा नहीं होगा कि मैं अपने पति की सुरुचि को सन्तुष्ट न कर सकूं।"

इन शब्दों से अचानक रैल्फ की उत्तेजना उसके होंठों पर आ गई, "यह तुम्हारी मनमानी है। ऐसी बात तुम्हारे मुंह से अच्छी नहीं लगती। तुम्हारा व्यक्तित्व ऐसे मानदण्ड के लिए नहीं बना। एक साधारण और निष्क्रिय व्यक्ति

की रुचियों का ध्यान रखने के लिए तुम नहीं बनी।"

इज़ाबेल जल्दी से खड़ी हो गई। साथ ही वह भी खड़ा हो गया। एक क्षण खड़े-खड़े वे एक-दूसरे की तरफ देखते रहे मानो रैल्फ ने उसकी बेइज़्ज़ती कर दी हो, "तुम बहुत दूर तक जाते हो," इज़ाबेल ने कहा केवल इतना ही।

"मैंने वही कहा है जो मेरे मन में था—और मैंने यह इसलिए कहा है कि मैं तुमसे प्यार करता हूं।"

इज़ाबेल पीली पड़ गई। क्या वह भी उन थकाने वाले व्यक्तियों की ही श्रेणी में था ? उसे इस बात से एकाएक रैल्फ को एक झटका देने की इच्छा हो आई, "तब तो तुम तटस्थ होकर बात नहीं कर रहे।"

"मैं तुमसे प्यार करता हूं, लेकिन बिना किसी आशा के," रैल्फ ने अपने चेहरे पर जबरन मुस्कान लाकर कहा। लेकिन अपने अन्तिम वाक्य से उसे लगा कि वह अपनी इच्छा से कहीं अधिक कह गया है।

इज़ाबेल थोड़ी दूर चली गई और वहां खड़ी होकर बागीचे की धूप से ढकी खामोशी को देखती रही। लेकिन थोड़ी देर बाद वह रैल्फ की तरफ मुड़ आई। "मुझे डर है कि उस हालत में तुम्हारी बात करना बिल्कुल निरर्थक है। मैं इसे समझ ही नहीं सकती—लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं तुम्हारे साथ बहस नहीं कर रही, और ऐसा करना मेरे लिए असम्भव भी है। मैंने सिर्फ तुम्हारी बात सुनने की कोशिश की है। मैं तुम्हारी समझाने की कोशिश के लिए आभारी हूं," उसने शालीनता के साथ कहा। जिस गुस्से के आवेश में वह उठ खड़ी हुई थी, वह जैसे अब तक बैठ चुका था। "तुम्हारा मुझे चेतावनी देना बहुत अच्छा है, अगर तुम्हें सच ही खतरा लगता है। लेकिन मैं तुम्हें इस बात का वचन नहीं देती कि जो तुमने कहा है, मैं उसपर विचार करूंगी। मैं जितनी जल्दी हो सकेगा, इसे भूल जाऊंगी। तुम भी कोशिश करो कि भूल जाओ। तुमने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है, और कोई भी व्यक्ति इससे ज्यादा कुछ नहीं कर सकता। मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि मैं तुम्हारे बारे में क्या महसूस करती हूं या क्या सोचती हूं। अगर मैं कोशिश करूं तब भी नहीं।" वह एक क्षण के लिए रुकी, लेकिन फिर आगे बोलने लगी, "मैं तुम्हें मिस्टर ऑसमण्ड के बारे में कुछ भी नहीं समझा सकती। मैं विषय के साथ न्याय नहीं कर सकती, क्योंकि मैं उसे एक-दूसरे ही पक्ष से देखती हूं। वह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नहीं है—हां, बिल्कुल भी महत्त्वपूर्ण नहीं है। वह एक

ऐसा व्यक्ति है जो सर्वथा महत्ता से अछूता रहा है। अगर उसे छोटा कहने से तुम्हारा यही मतलब है, तो वह उतना ही छोटा है जितना कि तुम सोच सकते हो। लेकिन मैं इसे बड़ी चीज मानती हूं—मेरी जानकारी में यही सबसे बड़ी चीज है। मैं तुम्हारे साथ उस व्यक्ति को लेकर जिसके साथ मैं शादी करने जा रही हूं, बहस नहीं करूंगी," इज़ाबेल ने फिर कहा, "मुझे इस बात की ज़रा इच्छा नहीं है कि मैं मिस्टर ऑसमण्ड का पक्ष लेकर बात करूं। वह इतना कमजोर नहीं है कि उसे मेरी सहायता की ज़रूरत हो। मेरे ख्याल में यह तुम्हें भी अजीब लगेगा कि मैं उसके बारे में तुम्हारे साथ ऐसी तटस्थता से बातें करूं जैसे वह कोई भी अन्य व्यक्ति हो। मैं उसके बारे में तुम्हारे सिवा किसी और से बात करूंगी ही नहीं। तुमने एक बात कही है, तो मैं तुम्हें एक ही बार निश्चित जवाब दिए देती हूं। बताओ क्या तुम मुझसे धन के लिए विवाह करने की आशा रखते थे—ऐसे विवाह की जिसे लोग महत्त्वाकांक्षा का विवाह कहते हैं? मेरी सिर्फ एक ही महत्त्वाकांक्षा है—कि मैं स्वतन्त्र रहूं और एक अच्छी भावना के साथ जी सकूं। मेरी और भी महत्त्वाकांक्षाएं थीं, लेकिन अब वे नहीं रहीं। क्या तुम्हें मिस्टर ऑसमण्ड से इस बात की शिकायत है कि वह अमीर नहीं है? लेकिन मुझे इसीलिए वह पसन्द है। खुशकिस्मती से मेरे पास काफी पैसा है। मैं जितना आज इस बात के लिए कृतज्ञ महसूस करती हूं इतना पहले नहीं करती थी। कई क्षण ऐसे भी आए हैं जब मैंने तुम्हारे पिता की कब्र पर घुटने टेकने की इच्छा महसूस की है। मेरे ख्याल में जब उन्होंने मुझे इतना पैसा दिया तो जितना वे सोचते थे, उससे बड़ा उपकार उन्होंने किया—क्योंकि अब मैं एक गरीब आदमी के साथ शादी कर सकती हूं। एक ऐसे व्यक्ति के साथ जिसने अपनी निर्धनता को सम्मान के साथ ढोया है। मिस्टर ऑसमण्ड ने कभी घिचपिच संघर्ष नहीं किया—उसने कभी दुनियावी चीज़ों की परवाह नहीं की। अगर इसी को संकीर्ण और स्वार्थी होना कहते हैं, तो ठीक है। मैं इन शब्दों से भयभीत नहीं हूं और न ही अप्रसन्न हूं। मुझे सिर्फ इस बात का दु:ख है कि तुमने भी गलती की है। और लोग कर सकते हैं, लेकिन मैं हैरान हूं कि तुमने क्यों की। तुम्हें एक भद्र व्यक्ति को एकदम पहचान लेना चाहिए—एक बढ़िया हृदय को तुरन्त पहचान लेना चाहिए। मिस्टर ऑसमण्ड कोई गलती नहीं करता। वह सब कुछ जानता है, वह सब कुछ समझता है। उसके पास सबसे नेक कोमल और महान् आत्मा है। तुम्हें कुछ गलतफहमी

हो गई है। यह अफसोस की बात है, लेकिन मैं इसमें कुछ नहीं कर सकती। इसका सम्बन्ध मुझसे ज्यादा तुम्हीं से है।" इज़ाबेल क्षण-भर के लिए रुक गई, और अपने कज़िन को ऐसी भावना की चमक के साथ देखती रही जो उसके स्थिर स्वभाव के बिल्कुल विपरीत थी। उस भावना में रैल्फ के शब्दों से उत्पन्न आवेश-पूर्ण पीड़ा भी थी और एक आहत अभिमान भी—कि अपने चुनाव की पवित्रता और उदात्तता उसे सिद्ध करनी पड़ रही हैं। यद्यपि वह चुप हो गई, लेकिन रैल्फ फिर भी कुछ नहीं बोला। उसे लग रहा था कि इज़ाबेल अभी और बात करना चाहती है। उस लड़की के गर्व में एक विशेष अनुनय भी था और उसकी उदासी-नता में आवेश की पुट थी। "तुम किस प्रकार के आदमी के साथ चाहते थे मैं शादी करती?" उसने अचानक पूछ लिया, "तुम उड़ने और तैरने की बातें करते हो, लेकिन जब व्यक्ति शादी करता है तो वह धरती पर आ जाता है। व्यक्ति की कुछ मानवीय इच्छाएं और आवश्यकताएं होती हैं, उसके सीने में एक दिल होता है, और वह एक विशेष व्यक्ति के साथ ही विवाह करके रह सकता है। तुम्हारी मां ने मुझे इस बात के लिए कभी माफ नहीं किया कि मैं क्यों लार्ड वारबर्टन के साथ बेहतर सम्बन्ध नहीं बना सकी, और वे इस बात से त्रस्त हैं कि कैसे एक ऐसे व्यक्ति के साथ सन्तुष्ट हूं जिसके पास वारबर्टन जैसी कोई भी सुविधा नहीं है—न ज़मीन, न पदवी, न सम्मान, न मकान, न रियासत, न रुतबा, न नाम और न ही किसी प्रकार की कोई भी शानदार चीज़। उसमें इन्हीं सब चीज़ों की कमी है और यही मुझे पसन्द है। मिस्टर ऑसमण्ड एक बहुत ही अकेला, बहुत ही सुसंस्कृत और ईमानदार आदमी है। हां, उसके पास बेशुमार जायदाद नहीं है।"

रैल्फ ने इन सब बातों को बहुत ही ध्यान से सुना, जैसे कि जो कुछ उसने कहा था, वह बहुत गम्भीरतापूर्वक सोचने का विषय हो। लेकिन वास्तव में वह उस बात के विषय में बहुत कम सोच रहा था। ज्यादा वह बातों के पूरे प्रभाव को अपने में संजो रहा था। यह प्रभाव था इज़ाबेल की भावना की उत्कट सचाई का। वह गलती पर थी, लेकिन उसे ही सही मान रही थी। वह भ्रान्ति में होकर भी अपनी जगह निश्चित थी। वह उसकी बहुत सुन्दर विशिष्टता थी कि गिलबर्ट ऑसमण्ड के विषय में एक बहुत बढ़िया सिद्धान्त बना लिया था कि वह उन चीज़ों के लिए उसे प्यार नहीं करती जो कि उसमें हैं, बल्कि उसकी निर्धनता के लिए जिसे कि उसने बहुत सम्मानित रूप दे दिया था। रैल्फ को वह बात याद हो

आई जो उसने अपने पिता से कही थी—कि वह चाहता है वह लड़की इस योग्य हो जाए कि अपनी कल्पना की अपेक्षाएं पूरी कर सके। उन्होंने ऐसा ही किया था, और उस लड़की ने इस सुविधा का पूरा-पूरा लाभ उठाया था। बेचारे रैल्फ को दुःख हुआ। उसे शरम आई। इज़ाबेल ने अपने अन्तिम शब्द इतनी दृढ़ गम्भीरता से कहे थे कि उन्होंने आगे बहस की कोई गुंजाइश नहीं रहने दी थी। क्रियात्मक रूप से बात को समाप्त करने के लिए इज़ाबेल मुड़कर घर की तरफ चल दी। रैल्फ भी उसके साथ-साथ चलने लगा, और वे अहाता पार करके बड़े जीने तक आ गए। वहां पहुंचकर रैल्फ रुक गया। इज़ाबेल भी थोड़ी देर के लिए रुकी और घूमकर उसने चमकते चेहरे से उसकी तरफ देखा जिसपर आशा के विपरीत एक निश्चित कृतज्ञ भाव झलक रहा था। रैल्फ के विद्रोह ने अपने निश्चय के प्रति उसकी धारणा को और भी स्पष्ट कर दिया था। "क्या तुम ऊपर नाश्ता करने नहीं आओगे ?" उसने पूछा।

"नहीं, मुझे नाश्ता नहीं करना है, मुझे भूख नहीं है।"

"तुम्हें कुछ तो खाना चाहिए," वह बोली, "तुम तो जैसे हवा पर ही जीते हो।"

"बहुत हद तक। मैं अभी वापस बागीचे में जाकर थोड़ी और हवा खाऊंगा। मैं इतनी दूर तक तुमसे एक बात कहने के लिए आया था। मैंने तुम्हें पिछले साल कहा कि अगर तुम कभी किसी मुसीबत में फंस गईं, तो मैं अपने को बिल्कुल नाकारा समझूंगा। आज मैं ऐसा ही महसूस कर रहा हूं।"

"तुम समझते हो कि मैं मुसीबत में हूं ?"

"व्यक्ति जब गलती करता है, तो मुसीबत में ही होता है।"

"ठीक है," इज़ाबेल बोली, "मैं कभी तुमसे अपनी मुसीबत की शिकायत नहीं करूंगी," और वह सीढ़ियों के ऊपर चढ़ गई।

रैल्फ जेबों में हाथ डाले उसे ऊपर जाते देखता रहा। फिर ऊंची दीवारों के उस अहाते में रुकी ठण्डक ने उसे कंपा दिया, तो वह मुड़कर फ्लोरेंटाइन धूप का नाश्ता करने बागीचे में चला गया।

३५

इज़ाबेल जब कैसीन में अपने प्रेमी के साथ टहल रही थी, तो उसे यह बताने की उसे इच्छा नहीं हुई कि पालाज़ो क्रेसेंतीनी में उसे कितना कम पसन्द किया जाता है। उसके विवाह को लेकर जो भी असंगत विरोध उसकी आंटी और उसके कज़िन ने किया था, उसका तनिक भी असर उसपर नहीं हुआ था। उसका निष्कर्ष सिर्फ इतना ही था कि उन्हें गिलबर्ट ऑसमण्ड पसन्द नहीं है। उनकी यह नापसन्द इज़ाबेल के लिए आश्चर्य की बात नहीं थी—उसे इसका ज़रा भी अफसोस नहीं था। इससे जो प्रशंसनीय बात उभरकर सामने आई थी, वह यही थी कि वह अपने को प्रसन्न करने के लिए शादी कर रही है। और काम लोग दूसरों को प्रसन्न करने के लिए करते हैं, लेकिन यह काम व्यक्ति पूर्णतया अपने को प्रसन्न करने के लिए ही करता है। अपने प्रेमी के प्रशंसनीय व्यवहार से उसे इस सम्बन्ध में निश्चित सन्तोष मिल रहा था। गिलबर्ट ऑसमण्ड उससे प्रेम करता था। वह उस आलोचना का अधिकारी नहीं था जो रैल्फ ने उसके व्यवहार को लेकर की थी—अपनी आशापूर्ति से पहले के इने गिने हुए शान्त-सुन्दर दिनों में तो बिल्कुल ही नहीं। इस आलोचना का विशेष प्रभाव जो इज़ाबेल की आत्मा पर पड़ा वह यह था कि उसके प्रेम का आवेश केवल अपने प्रेमी को छोड़कर अन्य सबसे उसे अलग किए दे रहा है। उसे ऐसा महसूस होने लगा कि जिन-जिनको वह जानती है उन सबसे वह कट गई है—अपनी दोनों बहनों से, जिनसे उसे एक औपचारिक बधाई मिली थी, और जिन्होंने अस्पष्ट-सा आश्चर्य प्रकट किया था कि उसने किसी ऐसे व्यक्ति को क्यों नहीं चुना जिसके नाम के साथ कई-एक किंवदंतियां जुड़ी हों; हेनरीटा से जिसके सम्बन्ध में उसे विश्वास था कि वह चाहे काफी देर से करे, पर जान-बूझकर उसकी भर्त्सना ज़रूर करेगी; लार्ड वारबर्टन से जो कि अवश्य ही अपने को सांत्वना दे लेगा; गुडवुड से जो कि निश्चित ही ऐसा नहीं कर पाएगा; अपनी आंटी से, जिन्हें विवाह के सम्बन्ध में अपने खोखले और नीरस विचारों के कारण उस विषय में घृणा प्रकट करने में तनिक भी संकोच नहीं हुआ था; और रैल्फ से, जिसके उसके बारे में ऊंचे विचार सिर्फ अपनी निराशा को छिपाने का ही एक बहाना थे। रैल्फ तो चाहता था कि वह बिल्कुल शादी न करे। उसका असली मकसद यही था क्योंकि वह देखना चाहता था कि एक कुंवारी लड़की के रूप में

वह क्या-क्या साहसिक कार्य करती है। उसकी इस निराशा ने ही, कि वह गिल-बर्ट को उससे भी ज्यादा पसन्द करती है, उसे बेहद नाराज़ कर दिया था। इज़ाबेल यह सोचकर अपने को सन्तोष दे रही थी कि रैल्फ ने वे बातें गुस्से में ही कही थीं। उसके लिए ऐसा सोचना इस समय इसलिए भी आसान था कि उसके भावना के संचय में गौण आवश्यकताओं के लिए अब बहुत कम स्थान था। उसने इस स्थिति को एक घटना, बल्कि शोभा के रूप में स्वीकार कर लिया था कि गिल-बर्ट ऑसमण्ड को उस रूप में पसन्द करने का अर्थ है और सब लोगों से सम्बन्ध तोड़ लेना। अपनी इस पसन्द से उसे एक सुख का अनुभव हो रहा था—यह विस्मयजनक अनुभूति उसमें थी कि प्रेम के आकर्षण और बन्धन में पड़कर कैसा ईर्ष्यास्पद और पश्चातापहीन ज्वार मन में उठ आता है। यूं प्रेम करना अपने में ही एक महान् कार्य था जिसे परम्परागत सम्मान प्राप्त था और जिसे अपने में ही एक निहित गुण माना जाता था। यूं सुख का एक दुःखदाई पक्ष तो रहता ही है। किन्हीं दूसरों के लिए गलत होकर ही कोई चीज़ अपने लिए सही हो सकती है। अपनी सफलता का आह्लाद ऑसमण्ड के मन में एक ऊंची लपट का रूप ले रहा था—और ज्वाला बहुत बड़ी होते हुए भी उसमें धुआं बहुत कम था। उसके सुख की अनुभूति में बिखराव ज़रा नहीं था—उस सबसे अधिक आत्मचेतन व्यक्ति की उत्तेजना उत्साहपूर्ण आत्म-नियन्त्रण में ही प्रकट होती थी। अपने इस स्वभाव के कारण वह एक प्रशंसनीय प्रेमी था—इससे अपने अभिभूत और समर्पित होने की स्थिति हर समय उसके सामने रहती थी। मैं कह चुका हूं कि वह अपने को कभी भूलता नहीं था, इसलिए कोमलता और सदाशय का भाव बनाए रखना भी वह नहीं भूलता था—अपनी आंदोलित चेतना और गम्भीर भावना को चेहरे से व्यक्त करना उसके लिए कठिन नहीं था। वह इज़ाबेल से बहुत प्रसन्न था। मैडम मरले ने उसे एक बहुत ही मूल्यवान् चीज़ भेंट की थी। इससे बढ़िया और क्या हो सकता था कि वह एक ऐसी लड़की के साथ जीवन बिताए जिसका ऊंची कल्पनाओं वाला व्यक्तित्व अब ढलकर कोमल हो गया था ? क्या वह सारी कोमलता उसके लिए नहीं होगी, और उस लड़की का उत्कर्ष उस समाज के लिए जो उच्चता का सदा आदर कहता है ? इससे बड़ी खुशी की बात और क्या हो सकती थी कि उसके साथी का मन इतना सचेत और कल्पनाशील हो कि उसे कोई बात दोबारा न बतानी पड़े—जैसे कि वह एक चमकदार सुन्दर सतह हो जिसमें अपने हर विचार

का ठीक साया पड़ सकता हो ? ऑसमण्ड को अपनी बात ज्यों-की-त्यों दोहराए जाने से घृणा होती थी—यह चीज उसे बासी और फिजूल लगती थी। वह चाहता था कि दोहराए जाने की प्रक्रिया में उसमें वैसी ही ताजगी आ जाए जैसी संगीत के स्पर्श से 'शब्दों' में आ जाती है। उसके अहं ने कभी यह भोंडी इच्छा नहीं की थी कि उसकी पत्नी जड़बुद्धि हो। वह अपनी पत्नी की बुद्धि एक चांदी की प्लेट जैसी चाहता था, मिट्टी की तश्तरी जैसी नहीं—एक ऐसी प्लेट जैसी जिसे वह ताज़ा फलों से भर दे, तो वे अधिक खूबसूरत और मूल्यवान नज़र आए, और उनके बीच की बातचीत ढंग से परोसे भोजन का मजा दे। उसे चांदी का यह गुण पूर्णरूप से इज़ाबेल में नज़र आता था। वह उसकी कल्पना को अपने हाथ से ठोक-कर उसमें से ध्वनि उत्पन्न कर सकता था। वह यह अच्छी तरह जानता था—यद्यपि उससे ऐसा कहा नहीं गया था—कि उन दोनों के विवाह की बात से उस लड़की के सम्बन्धी सन्तुष्ट नहीं हैं। लेकिन उसने इज़ाबेल को हमेशा एक स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में लिया था। इसलिए उसके परिवार के दृष्टिकोण के लिए अफ-सोस ज़ाहिर करने की उसे कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती थी। फिर भी एक सुबह उसने इस बात की ओर संकेत किया, "यह हम दोनों की आर्थिक स्थिति का अन्तर है जो उन्हें पसन्द नहीं है," वह बोला, "वे समझते हैं मैं तुम्हारे धन से प्यार करता हूं।"

"तुम मेरी आंटी की बात कर रहे हो, या मेरे कज़िन की ?" इज़ाबेल ने पूछा। "तुम्हें कैसे पता है कि वे क्या सोचते हैं ?"

"तुमने मुझसे कभी नहीं कहा कि वे लोग खुश हैं। जब मैंने कुछ दिन हुए मिसेज़ टाउशेट को एक चिट्ठी लिखी, तो उन्होंने इसका जवाब ही नहीं दिया। अगर वे खुश होते तो अवश्य ही उनकी तरफ से मुझे कोई संकेत मिलता। यह सच है कि मैं गरीब हूं और तुम अमीर हो। उनकी खामोशी का वास्तविक कारण यही है। लेकिन यह भी सही है कि जब एक गरीब आदमी एक अमीर लड़की से शादी करता है, तो उसे ऐसे आक्षेप के लिए तैयार रहना चाहिए। मुझे उनकी परवाह नहीं है। मुझे केवल एक चीज से मतलब है–कि तुम्हारे मन पर इस प्रकार के सन्देह की कोई छाया नहीं होनी चाहिए। मुझे इसकी परवाह नहीं है कि वे लोग क्या सोचते हैं जिनसे मैं कुछ आशा नहीं करता—मुझमें ऐसी चिन्ता की सामर्थ्य ही नहीं है। मैंने कभी ऐसी बातों को लेकर नहीं सोचा, तो फिर आज ही

क्यों सोचूं जब कि मेरी हर अपेक्षा की पूर्ति हो रही है ? मैं झूठ नहीं बोलूंगा कि तुम्हारे पास पैसा होने की मुझे खुशी नहीं है। मुझे खुशी है। मुझे उस हर चीज की खुशी है, जो तुम्हारी है—चाहे वह पैसा हो या गुण। पैसे का पीछा करना एक भयंकर बात है, लेकिन उसे पाना एक आकर्षक चीज है। मुझे लगता है मैं काफी हद तक पैसे के प्रति अपनी अरुचि ज़ाहिर कर चुका हूं: मैंने पूरी जिन्दगी एक पैसा भी कमाने की कोशिश नहीं की। इसलिए मुझे लेकर इस प्रकार के सन्देह का कारण उन लोगों की अपेक्षा बहुत कम होना चाहिए जिन्हें हम पैसा ढूंढ़ते और छीनते देखते हैं। मेरे ख्याल में यह तुम्हारे परिवार की अपनी बात है कि वे संदेह करें। कुल मिलाकर यह उचित भी है। किसी दिन शायद वे मुझे अधिक पसन्द करें और उस दृष्टि से शायद तुम भी करो। इस बीच मेरा काम यह नहीं है कि मैं व्यर्थ की कुण्ठाएं पैदा करूं—बल्कि यह कि अपनी ज़िन्दगी और प्रेम के लिए आभार मानूं।" "तुम्हें प्यार करने से मैं बेहतर इन्सान बन गया हूं," उसने और एक अवसर पर कहा। "इसने मुझे अधिक बुद्धिमान् और सरल बना दिया है—मैं झूठ नहीं बोलूंगा—पहले से अधिक उज्जवल, बेहतर और यहां तक कि शक्तिशाली भी। मैं पहले-पहल बहुत-सी चीजें पाने के लिए इच्छुक था और उन्हें न पाकर मुझे गुस्सा आता था। लेकिन मानसिक रूप से मैं सन्तुष्ट था, जैसा कि मैंने तुम्हें एक बार बताया था। मैं इस बात से खुश रहता था कि मैंने अपनी आवश्यकताएं बहुत सीमित करली हैं। लेकिन मैं बहुत चिड़चिड़ा था। भूख और कामना के बहुत भद्दे, बेकार और घृणित दौरे मुझे पड़ते थे। अब मैं सच में ही सन्तुष्ट हूं, क्योंकि अब मैं इससे बेहतर और कुछ नहीं सोच सकता। यह बिलकुल वैसे ही है कि जैसे कोई व्यक्ति झुटपुटे में एक पुस्तक के अक्षर पढ़ने की कोशिश कर रहा हो और अचानक लैम्प अन्दर आ जाए। मैं ज़िन्दगी की किताब पर कब से आंखें गड़ाए था, लेकिन मुझे अपनी मेहनत का पुरस्कार नहीं मिल रहा था। लेकिन अब जबकि मैं उसे ठीक से पढ़ सकता हूं, मैंने देखा है कि वह एक बहुत मज़ेदार कहानी है। प्रिय इज़ाबेल, मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि किस तरह पूरी ज़िन्दगी हमारे सामने बिछी है—कितनी लम्बी गर्मी की दोपहर हमारे इन्तजार में है। यह इस इतालवी दिन के शेष भाग की तरह है, जिसमें एक सुनहरी-सी चमक है, लम्बी होती छायाएं हैं, और हवा, रोशनी तथा दृश्यपट की वह ईश्वरीय कोमलता है जिसे मैंने ज़िन्दगी भर प्यार किया है, और जिसे आज तुम भी प्यार

करती हो। मैं नहीं समझ सकता कि हम क्यों साथ-साथ खुश नहीं रहेंगे। हमें वह सब मिला है जो हमें पसन्द है—इसके अतिरिक्त हमने एक-दूसरे को पा लिया है। हमारी अपनी एक पसन्द है और कई विशिष्ट विश्वास हैं। हम मूर्ख नहीं हैं, और न ही कमीने हैं। न ही हम अन्य किसी प्रकार के अज्ञान या रूखेपन से बंधे हैं। तुम बहुत ताज़ा हो, और मैं काफी अनुभवी हूं। हमारे पास हमें सुख देने के लिए हमारी बच्ची है। हम कोशिश करके उसकी ज़िन्दगी को कुछ बनाएंगे। यह सब कोमल और मधुर है; इसमें इतालवी रंगत है।"

उन्होंने बहुत-सी योजनाएं बनाईं, लेकिन इसके साथ ही अपने लिए काफी ढील भी रखी। यह स्वाभाविक था कि फिलहाल वे इटली में ही रहें। वे इटली में ही एक-दूसरे से मिले थे, और इटली ही उन दोनों के एक-दूसरे पर पड़े पहले प्रभावों का साक्षी था: उचित ही था कि इटली ही उनके सुख का भी साक्षी हो। ऑसमंड के लिए उस जगह से अपनी पुरानी पहचान का आकर्षण था, और इज़ाबेल के मन में नयेपन की उत्तेजना थी, जिससे उसे यह आश्वासन मिलता था कि उनका भविष्य ऊंचे स्तर की सौन्दर्य चेतना पर आश्रित होगा। असीमित विस्तार की कामना के बाद इस कामना ने उसके मन में घर कर लिया था कि बिना ऐसे व्यक्तिगत कर्तव्य के जीवन का कोई अर्थ नहीं जो व्यक्ति की कार्य-शक्तियों को एक बिन्दु पर केन्द्रित कर दे। उसने रैल्फ से कहा था कि उसने एक-दो साल में "ज़िन्दगी देख ली" है, और कि वह अभी से उससे ऊब गई है—जीने से नहीं, देखने से। उसके उस आवेश, महत्त्वाकांक्षा, सिद्धान्त, स्वतन्त्रता की ऊंची भावना और उस प्रारम्भिक धारणा का क्या हुआ कि वह कभी शादी नहीं करेगी? ये चीज़ें एक अधिक आदिम अपेक्षा में डूब गई थीं—एक ऐसी अपेक्षा में जिसने कई अन्य प्रश्नों को बुहार कर अनन्त इच्छाओं की पूर्ति कर दी थी। उसने स्थिति को एक बार ही सरल कर दिया था। वह अपेक्षा आकाश के तारों की रोशनी की तरह नीचे आई थी, और उसकी व्याख्या करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। इसके लिए इतना ही काफी था कि ऑसमंड उसका प्रेमी है, उसका अपना, और कि उसे उसके लिए उपयोगी बनना है। वह उसके सामने एक नम्रता के साथ आत्म समर्पण कर सकती थी, एक प्रकार के गर्व के साथ उससे ब्याह कर सकती थी। वह केवल ले ही नहीं रही थी, बल्कि कुछ दे भी रही थी।

ऑसमंड दो-एक बार अपने साथ पैंज़ी को भी कैसीन लाया था—पैंज़ी का

कद पिछले साल से थोड़ा बढ़ गया था, लेकिन वह बहुत बड़ी नहीं हुई थी। वह हमेशा छोटी ही रहेगी, ऐसी बात हमेशा उसके पिता के भाव से झलकती थी। वह उसके सोलह साल की हो जाने पर भी उसे हाथ पकड़कर लाया था, और जब थोड़ी देर के लिए वह इज़ाबेल के पास बैठा, तो उसने लड़की से कहा कि वह उतनी देर बाहर जाकर खेल ले। पैंज़ी ने छोटी-सी ड्रेस और एक लम्बा कोट पहन रखा था। उसकी टोपी हमेशा उसके सिर के लिहाज़ से बड़ी नज़र आती थी। उसे छोटे, लेकिन तेज़ कदमों से गली के अन्त तक जाने में प्रसन्नता मिलती थी—और एक ऐसी मुस्कान के साथ चलकर वापस आने में जिसमें अनुमोदन पाने का आग्रह रहता था। इज़ाबेल को यह बहुत ज़्यादा पसन्द था, और इस पसन्द में वह वैयक्तिक स्पर्श था जिसकी बच्ची के प्यार-भरे स्वभाव को अभिलाषा थी। इज़ाबेल लड़की के आसार ध्यान से देखती थी, मानो उसकी अपनी दृष्टि से भी कुछ इसपर निर्भर करता हो—पैंज़ी को देखकर अभी से उसे लगता था कि उसके कार्य का एक अंश, उसकी ज़िम्मेदारियों का एक हिस्सा, यह भी है। उसके पिता ने उसे इस हद तक बच्ची मान रखा था कि उसने अभी तक मिस आर्चर के साथ अपने नये सम्बन्ध के बारे में उसे नहीं बताया था। "वह नहीं जानती," उसने इज़ाबेल से कहा, "वह बूझ भी नहीं सकती। वह इसे पूर्णतया स्वाभाविक समझती है कि तुम और मैं यहां आकर महज़ अच्छे मित्रों की तरह घूमते रहें। मुझे इसमें एक बहुत ही आकर्षक मासूमियत नज़र आती है। मैं चाहता हूं कि यह ऐसी ही बनी रहे। नहीं, मैं एक असफल व्यक्ति नहीं हूं, जैसा कि मैं सोचा करता था। मैं दो चीज़ों में सफल हुआ हूं। मैं उस लड़की से शादी करने जा रहा हूं जो मुझे पसन्द है, और मैं अपनी बच्ची को उस तरह पाल सका हूं जैसे कि मैं चाहता था—मतलब पुराने ढंग से।"

ऑसमंड को प्रत्येक चीज़ में 'पुराना ढंग' बहुत पसन्द था। उसका यही स्वर इज़ाबेल को बहुत अच्छा, शान्त और ईमानदारी से भरा लगता था। "मुझे लगता है कि तुम्हें तब तक यह पता नहीं चलेगा कि तुम सफल हुए हो या नहीं, जब तक कि तुम उसे बता न दो," वह बोली, "तुम्हें देखना चाहिए कि वह इस सूचना को किस तरह लेती है। वह भयभीत भी हो सकती है। या ईर्ष्या कर सकती है।"

"मुझे इसका डर नहीं है। वह तुम्हें बहुत पसन्द करती है। मैं उसे थोड़ी देर और अनभिज्ञ रहने देना चाहता हूं। यह देखने के लिए कि उसके दिमाग में यह

बात आती है या नहीं—कि हमारी सगाई अगर नहीं हुई है, तो हो जानी चाहिए।"

पैंज़ी के भोलेपन के बारे में ऑसमंड के कलात्मक और लचकीले विचारों से इज़ाबेल प्रभावित हुई, हालांकि इस विषय में उसकी अपनी धारणा एक नैतिक उत्सुकता लिए थी। इस बात से उसे कम खुशी नहीं हुई जब कुछ दिन बाद ऑसमंड ने बताया कि उसने यह बात अपनी बेटी को बता दी है। लड़की ने यह सुनकर एक बहुत ही प्यारी बात कही थी। "ओह, तब तो मुझे एक बहुत ही सुन्दर बहन मिल जाएगी।" उसे न तो आश्चर्य का अनुभव हुआ था, और न ही आशंका का। जैसे कि ऑसमंड को डर था, वह रोई भी नहीं थी।

"हो सकता है उसने पहले से बूझ लिया हो," इज़ाबेल बोली।

"ऐसा मत कहो। यह मानने से मुझे वितृष्णा होगी। मैंने सोचा था यह उसके लिए एक छोटा-सा आश्चर्य होगा, लेकिन जिस तरह से उसने इसे लिया, उससे लगता है उसमें ऊंचे सद्व्यवहार की योग्यता है। मैंने भी यही चाहा था। तुम खुद भी देख लोगी। कल वह तुम्हें स्वयं बधाई देगी।"

अगले दिन की भेंट काउंटेस जैमिनी के घर पर हुई। पैंज़ी को उसके पिता ने बता दिया था कि उसे कैसे व्यवहार करना है। वह यह जानती थी कि इज़ाबेल दोपहर को आ रही है। काउंटेस यह जानकर कि वे दोनों ननद-भौजाई बनने जा रही हैं, पहले उसके यहां हो आई थी। कासा टाउशेट पहुंचने पर काउंटेस को पता चला था कि इज़ाबेल घर पर नहीं है। लेकिन जैसे ही इस नवयुवती को काउंटेस के ड्राइंग रूम में लाया गया, पैंज़ी तत्काल यह बताने के लिए पहुंच गई कि उसकी आंटी अभी आ रही हैं। पैंज़ी वह दिन अपनी आंटी के यहां बिता रही थी। काउंटेस यह सोचती थी कि वह अब इस उम्र की हो गई है कि जब उसे लोगों के बीच उठना-बैठना सीखना चाहिए। पर इज़ाबेल का विचार था कि वह लड़की इस विषय में काउंटेस को थोड़ी शिक्षा दे सकती है। उसका यह विचार उस तौर-तरीके से ही सही सिद्ध होता था जिससे पैंज़ी ने उसके साथ बैठकर काउंटेस की प्रतीक्षा करते हुए व्यवहार किया। एक वर्ष पहले से उसके पिता का निर्णय था कि शिष्टाचार की शिक्षा के लिए उसे वापस कान्वेंट में भेजना चाहिए। मैडम कैथरीन की भी स्पष्टतः यह धारणा थी कि पैंज़ी को अब बाहरी दुनिया के लिए उपयुक्त बनाना चाहिए।

"पापा ने मुझे बताया है कि आपने उनसे विवाह करना स्वीकार कर लिया है," लड़की बोली, "यह बहुत अच्छा है। मेरे ख़्याल में आप बहुत उपयुक्त रहेंगी।"

"तुम्हारे ख्याल में मैं तुम्हारे भी उपयुक्त रहूंगी ?"

आप मेरे लिए तो बहुत ही उपयुक्त रहेंगी। लेकिन मेरे कहने का मतलब यह है कि आप और पापा एक दूसरे के बहुत उपयुक्त रहेंगे। आप दोनों ही बहुत शान्त और गम्भीर हैं। लेकिन आप उतनी शान्त नहीं हैं जितने वे हैं—या जितनी मैडम मरले हैं। लेकिन आप बहुत-से लोगों से अधिक शान्त हैं। उदाहरण के तौर पर उन्हें मेरी आंटी जैसी पत्नी नहीं लेनी चाहिए। वह हमेशा ही एक हलचल और चिड़चिड़ेपन में रहती हैं—विशेष रूप से आज। आप स्वयं ही देख लेंगी, जब वे आएंगी। कानवेंट में लोग हमसे कहते थे कि बड़ों के बारे में निर्णय लेना गलत है। लेकिन मैं समझती हूं कि यदि हम सही निर्णय लें तो उसमें कुछ गलत नहीं है। आप पापा के लिए बहुत ही अच्छी साथी साबित होंगी।"

"मेरा ख्याल है, तुम्हारे लिए भी," इज़ाबेल बोली।

"मैं पापा के लिए एक विशेष मतलब से कहती हूं। मैंने आप को पहले बता दिया है कि मैं आप के बारे में क्या सोचती हूं। मैंने तो आप को शुरू से ही बहुत पसन्द किया है। आप मेरा आदर्श रहेंगी। मैं आपका अनुसरण करने की कोशिश करूंगी, हालांकि मैं जानती हूं कि मैं इसमें कितनी कमज़ोर रहूंगी। मैं पापा के लिहाज़ से बहुत खुश हूं—वे मुझसे अधिक भी कुछ चाहते थे। आपके बिना मैं नहीं जानती कि वे कैसे रह पाते। आप मेरी सौतेली मां होंगी, लेकिन हमें इस शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए। सौतेली मां को हमेशा बेदर्द कहा जाता है, लेकिन मैं नहीं समझती कि आप मुझे तनिक भी दुःख या कष्ट पहुंचाएंगी। मुझे तनिक भी डर नहीं है।"

"मेरी अच्छी-सी छोटी-सी पैंज़ी," इज़ाबेल ने प्यार से कहा, "मैं हमेशा तुम्हारे साथ कोमल व्यवहार करूंगी।"

"ठीक है। तब, मुझे किसी चीज़ का भय नहीं है," उस बच्ची ने तुरन्त जवाब दिया।

उसने अपनी आंटी के बारे में जो विवरण दिया था, वह गलत नहीं था। काउंटेस जैमिनी ने पहले से कहीं अधिक अपने पंख फैला रखे थे। वह पंख फड़-

फड़ाती कमरे में दाखिल हुई और आते ही उसने इज़ाबेल को पहले माथे पर और फिर दोनों गालों पर चूम लिया, जैसेकि वह कोई पुरानी परम्परा हो। वह मेहमान को सोफे पर ले आई, अलग-अलग तरह से सिर घुमाकर उसने उसे देखा, और इस तरह बात करने लगी जैसे हाथ में ब्रश लिए ईज़ल के पास बैठी वह एक पहले की तैयार तस्वीर को यहां-वहां से छूकर दुरुस्त कर रही हो। "अगर तुम यह चाहती हो कि मैं तुम्हें बधाई दूं तो मुझे तुमसे इस बात के लिए क्षमा मांगनी पड़ेगी। मैं नहीं समझती कि तुम्हें इसकी परवाह भी होगी। मेरा ख्याल है कि बहुत समझदार होने से तुम्हें इस बात की जरूरत भी नहीं है कि तुम इस तरह की साधारण चीज़ों की परवाह करो। लेकिन मैं ख्याल रखती हूं कि खामखाह झूठ न बोलूं जब तक कि मुझे उससे लाभ न होता हो। मैं नहीं जानती तुमसे मुझे क्या लाभ हो सकता है—विशेषरूप से जबकि तुम मेरी कही बात पर विश्वास ही नहीं करोगी। मैं आजकल कागज़ के फूल या सुहाने लैम्पशैड्स बनाने जितनी ही बातें गढ़ती हूं—मैं नहीं जानती कैसे। मेरे लैम्पशैड्स जल जाएंगे, और मेरे गुलाब और झूठ, ज़िन्दगी से कहीं बड़े साइज के निकलेंगे। मैं अपनी खातिर खुश हूं कि तुम आसमण्ड से शादी कर रही हो। लेकिन मैं यह झूठ नहीं बोलूंगी कि मैं तुम्हारी खातिर भी खुश हूं। तुम बहुत प्रतिभावान् हो—तुम जानती हो यह बात मैंने हमेशा कही है। तुम बड़ी सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी हो, और सुन्दर हो, और साधारण नहीं हो। इसलिए तुम्हें अपने परिवार में पाना अच्छी ही बात है। तुम्हें पता है हमारा परिवार बहुत अच्छा है। ऑसमण्ड ने यह बात तुम्हें बताई होगी। मेरी मां काफी विशिष्ट थीं—उन्हें लोग अमरीकन कोरिन कहते थे। लेकिन हम बुरी तरह नीचे आ गिरे हैं, और सम्भव है तुम हमें ऊपर उठा सको। मुझे तुमपर पूरा विश्वास है। कई बातें हैं जो मैं तुमसे करना चाहती हूं। मैं किसी लड़की को विवाह के लिए बधाई नहीं देती—मेरे ख्याल में यह लोहे का जाल इतना कड़ा नहीं होना चाहिए। मैं समझती हूं पैंजी को यह सब नहीं सुनना चाहिए। पर इसीलिए तो वह मेरे पास आई है कि सामाजिकता का स्वर सीख सके। उसके यह जानने में कोई हानि नहीं है कि एक लड़की के लिए यह स्थिति कितनी भयंकर हो सकती है। जब मुझे पहली बार इस बात का पता चला कि मेरे भाई की नज़र तुम पर है, तो मैंने सोचा तुम्हें लिख दूं कि तुम उसकी बात बिल्कुल न सुनो। फिर मैंने सोचा कि यह विश्वासघात होगा और मुझे इस तरह

की चीज़ों से नफरत है। इसके अतिरिक्त जैसा मैंने कहा है, मैं स्वयं अपनी ओर से आकर्षित हो गई थी। आखिर मैं तो स्वार्थी हूं। यूं तुम कभी मेरी इज्ज़त नहीं करोगी, ज़रा भी नहीं, और हम कभी घनिष्ठ नहीं हो सकेंगी। मैं इसे ऐसे ही पसन्द करूंगी लेकिन शायद तुम न करो। लेकिन फिर भी एक दिन हम बेहतर मित्र बन जायेंगी चाहे अब तुम्हें ऐसा न लगे। मेरा पति तुम से आकर मिल लेगा, यद्यपि, जैसा कि तुम सम्भवतः जानती होगी, उसकी ऑसमण्ड के साथ बोल-चाल नहीं है। उसे सुन्दर स्त्रियों को देखने का शौक है, लेकिन मुझे तुम्हारी तरफ से डर नहीं है। पहली बात तो यह है कि वह क्या करता है इसकी मुझे ज़रा परवाह नहीं है। दूसरे तुम उसकी तिनका-भर परवाह नहीं करोगी। तुम्हें कहीं उससे ज़रा भी मतलब नहीं होगा। और वह जितना बेवकूफ है उससे वह भी तुमसे मतलब नहीं रखेगा। तुम सुन सको, तो किसी दिन मैं तुम्हें उसके बारे में सब कुछ बता दूंगी। तुम समझती हो कि मेरी भतीजी को कमरे से बाहर चली जाना चाहिए ? पैंजी तुम मेरे कमरे में जाकर थोड़ा अभ्यास कर लो।"

"कृपया उसे यहीं रहने दो," इज़ाबेल बोली, "मैं कुछ भी ऐसा सुनना नहीं चाहूंगी जो यह न सुन सके।"

३६

१८७६ के पतझड़ की एक शाम को झुटपुट होने के वक्त एक सुन्दर नवयुवक ने एक रोमन मकान की तीसरी मंजिल के छोटे से अपार्टमेन्ट के दरवाज़े की घंटी बजाई। दरवाज़ा खुलने पर उसने मैडम मरले के लिए पूछा। नौकरानी ने, जोकि एक साफ-सुथरी सादा-सी औरत थी, और जिसका चेहरा फ्रांसीसी तथा लहजा एक भद्रमहिला की परिवारिका का था, उसे एक छोटे-से ड्राइंग रूप में बैठाया और नम्रतापूर्वक उसका नाम पूछा, "मिस्टर एडवर्ड रोज़ियर," उस नवयुवक ने कहा, और बैठकर अपनी मेज़बान के आने की राह देखने लगा।

हमारे पाठक शायद भूले नहीं होंगे कि मिस्टर रोज़ियर पेरिस के अमरीकनी मण्डल का एक कीमती सदस्य था, लेकिन यह भी याद रखने की बात है कि वह

कभी-कभी उस क्षितिज से अदृश्य भी हो जाता था। उसने कई सर्दियों का कुछ भाग पाउ में बिताया था और क्योंकि वह नियमित आदतों का व्यक्ति था, इसीलिए शायद सोलह साल वह आकर्षक स्थान पर वार्षिक दौरा लगाता रहता। लेकिन १८७६ की गर्मियों में एक ऐसी घटना हो गई जिसने न केवल उसकी विचार-धारा को बल्कि उसके परम्परागत क्रम को भी बदल दिया। उसने एक महीना ऊपरी एनगेडीन में बिताया जहां सेंट मोरित्ज़ में उसकी भेंट एक आकर्षक नवयुवती से हुई। इस छोटी-सी लड़की पर तुरन्त ही उसका ध्यान केन्द्रित हो गया। उसे लगा कि वह बिलकुल उसी गृहस्त देवी की आकृति है जिसकी कि वह खोज में था। वह जल्दबाज़ नहीं था, और विवेक को कभी हाथ से नहीं जाने देता था। इसलिए उसने झटपट अपने आवेश को प्रकट नहीं होने दिया। लेकिन जब वे अलग हुए, तो उसे लगा—उस नवयुवती को नीचे इटली जाना था और उसे स्वयं जेनीवा, जहां उसे अन्य मित्रों से मिलना था—कि अगर वह उससे फिर न मिल सका तो रूमानी दृष्टि से वह बहुत अव्यवस्थित महसूस करेगा। इसका सबसे सहज तरीका यही था कि वह शरद्ऋतु में रोम जाए जहां मिस ऑसमण्ड अपने परिवार के साथ रहती थी। मिस्टर रोज़ियर इतालवी राजधानी की यात्रा पर चल दिया और पहली नवम्बर को वहां पहुंच गया। ऐसा करना चाहे बहुत सुखकर था, फिर भी हमारे नवयुवक पर इससे एक साहसिक कार्य करने का-सा बोझ पड़ रहा था। उसे डर था कि आदत न होने से वह कहीं रोम की ज़हरीली हवा न खा जाए जो कहते हैं कि नवम्बर में बस लोगों को दबोचने की प्रतीक्षा में ही रहती है। तकदीर हमेशा बहादुरों का साथ देती है। इसलिए इस वीर पुरुष को, जो दिन में तीन-तीन ग्रेन कुनीन खा रहा था, महीने के अन्त तक अपने दु:साहस के लिए दु:खी होने का कोई कारण नहीं मिला। उसने इस समय का काफी अच्छा उपयोग किया—अपना समय उसने इस नाकाम कोशिश में बिताया कि पैंज़ी ऑसमण्ड के निर्माण में कोई त्रुटि ढूंढ़ सके। लेकिन वह प्रशंसनीय ढंग से पूर्ण थी, हर लिहाज़ से सुघड़, और सच में ही एक अमूल्य टुकड़ा। उसने उसके बारे में प्रीति भाव से बहुत कुछ सोचा, जैसे कि वह एक ड्रेसडेन-चाईना की गड़रिया लड़की के बारे में सोचता। मिस ऑसमण्ड के खिलते यौवन में प्राचीनता का एक स्पर्श था। मिस्टर रोज़ियर की इस शैली में चूंकि बहुत ज़्यादा रुचि थी, इसलिए वह इसकी प्रशंसा किए बिना न रह सका। वह उस नफासत-पसन्द काल की चीज़ों का अधिक सम्मान

करता था—यह उसके मैडम मरले के ड्राइंग रूम में पड़ी चीज़ों को गौर से देखने से भी ज़ाहिर था। वह ड्राइंग रूम हर शैली के नमूनों से शोभित था, लेकिन उसमें विशेषकर पिछली दो शताब्दियों की चीजें थीं। उसने तुरन्त अपनी एक आंख पर शीशा चढ़ा लिया और चारों तरफ देखने लगा। फिर, "बाई जोव, इसके पास तो कुछ बहुत ही बढ़िया चीजें हैं," वह उत्कण्ठा से बुदबुदाया। कमरा छोटा था लेकिन सामान से बुरी तरह भरा था। फीके रेशम और ऐसी छोटी-छोटी मूर्तियों से वह लदा जान पड़ता था जो लगता था कि किसी के वहां चलने पर इधर-उधर गिर जाएंगी। रोज़ियर उठकर खड़ा हो गया और सावधानी से कदम रखता चलने लगा। वह झुककर मेज़ों पर पड़ी भिन्न-भिन्न प्रकार की चीज़ों, और गद्दों परहुई शाही हथियारों की कढ़ाई को देखता रहा। जब मैडम मरले कमरे में आई, तो उसने देखा कि वह आग के पास खड़ा उसके मेंटलपीस पर बिछे लाल रेशम के कपड़े की बड़ी लेस को बहुत पास से देख रहा है। उसने उसे बड़ी नफासत से नाक तक उठा रखा था, मानो उसे सूंघ रहा हो।

"यह पुराना वेनीशियन है," वह बोली, "खासा अच्छा है।"

"इस रूप में प्रयोग के लिए तो बहुत ही अच्छा है। इसे तो तुम्हें पहनना चाहिए।"

"लोग कहते हैं कि तुम्हारे पास पैरिस में इसी रूप में प्रयोग के लिए इससे भी बढ़िया चीज़ है।"

"लेकिन मैं उसे पहन तो नहीं सकता न," वह मुस्कराया।

"क्यों नहीं पहन सकते? यूं मेरे पास पहनने के लिए इससे बढ़िया लेस है।"

रोज़ियर की आंखें फिर कमरे में इधर-उधर भटकने लगीं, "तुम्हारे पास कुछ बहुत ही अच्छी चीजें हैं।"

"हां, लेकिन मुझे इनसे नफरत है।"

"क्या तुम इनसे मुक्ति चाहती हो?" उस नवयुवक ने जल्दी से पूछा।

"नहीं उन चीज़ों को पास रखना अच्छा होता है जिनसे तुम्हें नफरत हो। इससे नफरत वहीं चुक जाती है।"

"मुझे अपनी चीजें बहुत प्रिय हैं," रोज़ियर ने अपनी चीज़ों की याद से प्रफुल्ल होकर बैठते हुए कहा, "लेकिन मैं न अपनी चीज़ों के, और न ही तुम्हारी चीज़ों के बारे में बात करने आया हूं।" वह एक क्षण के लिए रुका, फिर अधिक

कोमलता के साथ उसने कहा, "मुझे यूरोप की सभी सुन्दर वस्तुओं की अपेक्षा मिस ऑसमण्ड में अधिक रुचि है।"

मैडम मरले की आंखें फैलकर रह गईं, "क्या तुम मुझसे यह कहने आए हो ?"

"मैं तुमसे परामर्श लेने आया हूं।"

मैडम मरले एक मित्रतापूर्ण भृकुटि के साथ उसकी तरफ देखकर अपनी ठोड़ी को अपने लम्बे सफेद हाथ से सहलाने लगी, "तुम जानते हो कि प्रेम में फंसा आदमी कभी परामर्श नहीं मांगता।"

"क्यों नहीं—अगर वह एक मुश्किल स्थिति में हो तो ? अक्सर ही प्रेम में फंसे आदमी पर ऐसी स्थिति आ जाती है। मैं पहले भी प्रेम में फंस चुका हूं, इसलिए यह बात जानता हूं। लेकिन इतना मैं कभी नहीं फंसा, सच ही इतना ज्यादा कभी नहीं। मैं विशेष रूप से यह जानना चाहता हूं कि तुम मेरी सम्भावना के बारे में क्या सोचती हो। मुझे डर है कि मिस्टर ऑसमण्ड की नज़र में—अ—मैं कोई खास चुना हुआ व्यक्ति नहीं हूं।"

"क्या तुम चाहते हो कि मैं बीच में पड़ूं ?" मैडम मरले ने अपनी सुन्दर बाहों को समेट कर अपने सुन्दर मुंह को थोड़ा बाईं तरफ को मोड़ लिया।

"तुम मेरे लिए एक अच्छा शब्द कह सको, तो मैं बहुत अभारी हूंगा। मैं मिस ऑसमण्ड को तब तक परेशान करना उचित नहीं समझता जब तक मैं यह न जान लूं कि उसका पिता अपनी अनुमति दे देगा।"

"तुम बहुत समझदार हो। यह तुम्हारे ही हक की बात है। लेकिन यह तुमने जाने कैसे सोच लिया है कि मैं तुम्हें बहुत बढ़िया आदमी समझती हूं।"

"तुम मुझपर बहुत मेहरबान रही हो," उस नवयुवक ने कहा, "इसीलिए मैं तुम्हारे पास आया हूं।"

"मैं उन सबके साथ अच्छा बरताव करती हूं जिनके पास प्राचीन वस्तुओं का अच्छा संचय है। आजकल यह बहुत ही दुर्लभ है, और कहा नहीं जा सकता कि इससे व्यक्ति को क्या न हासिल हो जाए।" इसके साथ ही मैडम मरले के मुंह के बाएं कोने ने मज़ाक का आभास दिया।

लेकिन इसके बावजूद रोज़ियर आशंकापूर्ण और सचेष्ट भाव से उसे देखता रहा, "मैंने समझा था कि तुम मुझे पसन्द करती हो।"

"मैं तुम्हें बहुत ज्यादा पसन्द करती हूं। लेकिन तुम स्वीकार करो, तो हम इसकी विवेचना नहीं करेंगे। क्षमा करना अगर मैं ऊंचे से बात करती लग रही हूं। मैं समझती हूं कि तुम एक अच्छे-खासे भले आदमी हो। लेकिन मैं तुम्हें यह भी बता दूं कि पैंजी ऑसमण्ड की शादी मेरे हाथ में नहीं है।"

"मैंने भी यह नहीं सोचा था। लेकिन उस परिवार के साथ तुम्हारी घनिष्ठता को देखते हुए मैंने समझा कि शायद तुम्हारा उन पर प्रभाव हो।"

मैडम मरले थोड़ा सोचती रही, "तुम उसके परिवार में किस-किसको गिनते हो?"

"क्यों? उसके पिता को और—तुम उसे अंग्रेजी में क्या कहती हो?—उसकी सुन्दर सौतेली मां को।"

"मिस्टर ऑसमण्ड उसका पिता है, लेकिन ऑसमण्ड की पत्नी को 'परिवार' में मानना मुश्किल है। मिसेज ऑसमण्ड का पैंजी के विवाह से कोई ताल्लुक नहीं हैं।"

"मुझे अफसोस है," मिस्टर रोजियर ने सद्भाव की एक कोमल उसांस भरकर कहा, "मेरा ख्याल है मिसेज ऑसमण्ड मेरा पक्ष लेंगी।"

"बहुत सम्भव है—अगर उसके पति ने न लिया तो।" रोजियर की भौंहें तन गईं, "क्या वह अपने पति के बिलकुल विपरीत चलती है?"

"हर चीज में। उन दोनों की विचारधारा बिलकुल भिन्न है।"

"तब," रोजियर बोला, "मुझे इसका बहुत ही अफसोस है। लेकिन इससे मुझे कोई मतलब नहीं। वह पैंजी को बहुत चाहती है।"

"हां, वह पैंजी को बहुत चाहती है।"

"और पैंजी को भी उससे बहुत स्नेह है। उसने मुझे बताया है कि वह उससे उसी तरह प्यार करती है जैसेकि वह उसकी सगी मां हो।"

"तब तो तुम्हारी उस बच्ची के साथ बहुत घनिष्ट बातें हुई लगती है," मैडम मरले बोली, "क्या तुमने उससे अपने दिल की बात कही है?"

"बिल्कुल नहीं।" मिस्टर रोजियर ने सुन्दर दस्ताने से ढका अपना हाथ उठाकर कहा, "मैं उससे तब तक नहीं कहूंगा जब तक कि मुझे उसके मां-बाप की ओर से आश्वासन नहीं मिल जाता।"

"क्या तुम हमेशा इसीके इन्तजार में रहते हो? तुम्हारे बहुत अच्छे सिद्धान्त

हैं। तुम बहुत शिष्टता का पालन करते हो।"

"मेरा ख्याल है तुम मुझपर हंस रही हो," वह नवयुवक कुर्सी से टेक लगाकर अपनी छोटी-छोटी मूंछों को सहलाता हुआ बुदबुदाया, "मैंने तुमसे यह आशा नहीं की थी, मैडम मरले।"

मैडम मरले ने धीरे-से सिर हिलाया—एक ऐसे व्यक्ति के-से धीरज से जो चीज़ों को उस जैसी नज़र से ही देखता हो, "तुम मेरे साथ न्याय नहीं कर रहे। मैं तुम्हारे व्यवहार को बहुत सुरुचिपूर्ण समझती हूं, और ऐसा ही व्यवहार तुम्हें करना चाहिए। मैं तुम्हारे बारे में यही सोचती हूं।"

"मैं लड़की को सिर्फ उत्तेजित करने के लिए ही उत्तेजित नहीं करूंगा। मैं उससे इस लिहाज़ से कहीं ज़्यादा प्यार करता हूं, गेड रोज़ियर बोला।

"मैं खुश हूं कि तुमने ऐसा कहा है," मैडम मरले कहती गई, "तुम इसे कुछ देर मुझपर छोड़ दो। मेरा ख्याल है मैं तुम्हारी सहायता कर सकती हूं।

"मुझे पता था कि तुम्हीं वह व्यक्ति हो जिसके पास मुझे आना चाहिए था।" रोज़ियर ने तुरन्त उल्लसित होकर कहा।

"तुम बहुत समझदार हुआ करते थे," मैडम मरले ने खासे रूखेपन से जवाब दिया, "जब मैं यह कहती हूं कि मैं तुम्हारी सहायता कर सकती हूं, तो इससे मेरा मतलब है अगर तुम्हारी कामना मुझे ठीक लगी तो। हमें थोड़ा सोच लेना चाहिए कि वह ठीक है या नहीं।"

"मैं बहुत भला आदमी हूं, यह तो तुम जानती हो," रोज़ियर ने गम्भीर भाव से कहा, "मैं यह नहीं कहूंगा कि मुझमें कोई त्रुटि नहीं है, लेकिन यह ज़रूर कहूंगा कि मुझमें कोई बुरी आदत नहीं है।"

"ये नकारात्मक बातें हैं, और यह हमेशा व्यक्तियों पर निर्भर करता है कि वे किन्हें बुरी आदतें कहते हैं। लेकिन तुम्हारा उजला पक्ष कौन-सा है? तुममें गुण कौन-कौन से हैं? अपनी स्पेनिश लेस और ड्रेसडेन के प्यालों के अतिरिक्त तुम्हारे पास क्या है?"

"मेरी थोड़ी-बहुत सुविधाजनक आमदनी है—साल में लगभग चालीस हज़ार फ्रैंक की। मुझमें व्यवस्था से रहने की जो कला है, उससे हम इस आय में बहुत अच्छी तरह से जी सकते हैं।"

"अच्छी तरह से तो नहीं, पर हां गुज़ारे लायक ठीक है। फिर यह इस बात

पर भी निर्भर करता है कि तुम कहां रहते हो।"

"मैं पेरिस में ही रहना चाहूंगा।"

मैडम मरले का मुंह फिर बाईं तरफ को मुड़ गया, "तब अच्छी ख्याति से नहीं रहा जा सकेगा। तुम्हें अपने चाय के प्यालों का उपयोग करना पड़ेगा, और वे इस तरह टूट जाएंगे।"

"हम ख्याति से नहीं रहना चाहते। अगर मिस ऑसमण्ड अपने लिए सब सुन्दर चीजें चाहे, तो इतनी रकम पर्याप्त है। जब लड़की उसकी तरह सुन्दर हो, तब घर थोड़े में भी अच्छी तरह चल सकता है। उसे मलमल के अतिरिक्त कुछ नहीं पहनना चाहिए—वह भी बेल-बूटों के बिना," रोज़ियर ने सोचते हुए कहा।

"क्या तुम उसे बेल-बूटों की भी इजाज़त नहीं दोगे? सच वह तुम्हारे इस सिद्धान्त के लिए बहुत आभारी होगी।"

"मैं सही बात कह रहा हूं, इसका मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं। मुझे विश्वास है, वह इस बात को स्वीकार करेगी। वह यह सब कुछ समझती है, इसीलिए मैं उसे प्यार करता हूं।

"वह एक बहुत अच्छी छोटी-सी लड़की है, बहुत सलीकेदार, और बहुत ज्यादा शालीन भी। लेकिन जहां तक मेरी जानकारी है, उसका पिता उसे कुछ भी नहीं दे सकता।"

"मैं तनिक भी इच्छा नहीं रखता कि वह कुछ दे। पर साथ ही मैं यह भी कहूंगा कि रहता वह एक अमीर आदमी की तरह है।"

"वह पैसा उसकी पत्नी का है। वह अपने साथ बहुत धन लाई है।"

"मिसेज़ ऑसमण्ड अपनी सौतेली बेटी को बहुत चाहती है। शायद वह कुछ करे।"

"एक प्रेमी होते हुए भी तुम्हारी आंखें बहुत सचेत हैं," मैडम मरले ने हंसते हुए कहा।

"मैं धन को बहुत बड़ी चीज़ समझता हूं। मैं उसके बिना भी रह सकता हूं, लेकिन मैं उसकी कद्र ज़रूर करता हूं।"

"मिसेज़ ऑसमण्ड," मैडम मरले कहती गई, "बहुत सम्भव है वह अपना पैसा अपने बच्चों के लिए रखना चाहे।"

"अपने बच्चों के लिए? लेकिन उसका तो कोई बच्चा नहीं है।"

"हो तो सकते हैं। दो साल हुए उसका एक लड़का पैदा होने के छः महीने बाद मर गया था। और बच्चों के पैदा होने की अभी सम्भावना तो है।"

"मेरी कामना है कि ज़रूर हों, अगर इससे उसे खुशी हासिल हो सके। वह बहुत अच्छी महिला है।"

"मैडम मरले को बात करने में थोड़ा समय लगा, "हां, उसके बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है। तुम उसे अच्छी कहना चाहो, तो कह सकते हो। पर हम अभी इस नतीजे पर नहीं पहुंचे कि तुम एक उपयुक्त पात्र हो। बुरी आदतें न होना आय का ज़रिया नहीं होता।"

"क्षमा करना, पर मेरे ख्याल में हो सकता है," रोज़ियर बोला।

"तुम्हारा मतलब है तुम अपने भोलेपन के सिर पर लोगों से पैसा वसूल किया करोगे?"

"मेरा ख्याल है तुम मुझे बहुत छोटा करके देख रही हो।"

"तो तुम इतने भोले नहीं हो? सच ही," मैडम मरले बोली, "चालीस हज़ार पौंड सालाना और इतना अच्छा चरित्र—निःसन्देह यह एक ऐसा सम्मिश्रण है जिसपर विचार किया जाना चाहिए। मैं यह नहीं कहती कि यह कोई उछल पड़ने की बात है, लेकिन हो सकता है कि और प्रस्ताव इससे भी खराब हों। लेकिन मुझे लगता है कि मिस्टर ऑसमण्ड इससे बेहतर प्रस्ताव की आशा कर सकता है।"

"सम्भवतः कर सकता है। लेकिन उसकी बेटी भी क्या कर सकती है? वह इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकती कि एक ऐसे व्यक्ति से शादी करे जिससे वह प्यार करती हो। वह मुझसे प्यार करती है," रोज़ियर बोला।

"करती है—यह मैं जानती हूं।"

"देखा," वह नवयुवक चिल्लाया, "मैंने कहा था न कि तुम्हीं वह व्यक्ति हो जिसके पास मुझे आना चाहिए था।"

"लेकिन मैं नहीं जानती कि तुम्हें इसका कैसे पता है, अगर तुमने उससे नहीं पूछा तो?" मैडम मरले बोली।

"ऐसे विषय में पूछने या बताने की कोई ज़रूरत नहीं होती। जैसा कि तुमने कहा है, हम दोनों बहुत भोले हैं। लेकिन तुमने यह कैसे जान लिया?"

"मैं क्योंकि भोली नहीं हूं, इसलिए अपनी चालाकी से। खैर अब बात मुझ

पर छोड़ दो। मैं तुम्हारी तरफ से पता करूंगी।"

रोज़ियर अपनी टोपी को ठीक करता उठ खड़ा हुआ, "तुमने यह बात बहुत ठण्डे लहजे में कही है। तुम्हें सिर्फ पता ही नहीं करना है कि स्थिति क्या है, बल्कि उसे मेरे अनुकूल बनाने की कोशिश भी करनी है।"

"मैं पूरी कोशिश करूंगी। तुम्हारे गुणों को अच्छी तरह सामने रखने की चेष्टा करूंगी।"

"इस सबके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। इस बीच मैं थोड़ी बात मिसेज़ ऑसमण्ड से भी कर लूंगा।"

"उससे कुछ मत कहना, नहीं तो तुम सब बिगाड़ दोगे," और मैडम मरले खड़ी हो गई।

रोज़ियर अपनी टोपी को देखता रहा। वह सोचता रहा कि क्या उसकी मेज़बान एक सही व्यक्ति है जिसके पास वह आया है, "मैं तुम्हारी बात समझा नहीं। मैं मिसेज़ ऑसमण्ड का पुराना मित्र हूं, और मेरा ख्याल है वह चाहेगी कि मैं सफल हो सकूं।"

"उसके पुराने मित्र तुम जितने चाहो बने रहो। जितने अधिक उसके पुराने मित्र रहें, उतना ही अच्छा है, क्योंकि नये मित्रों के साथ उसकी अच्छी नहीं निभती। लेकिन अभी अपना पक्ष लेकर बात करने के लिए उससे मत कहना। उसके पति के ख्याल दूसरे हो सकते हैं, और तुम्हारी हितचिन्तक होने के नाते मैं तुम्हें परामर्श दूंगी कि तुम उनके बीच मतभेद बढ़ाने की कोशिश मत करो।"

बेचारे रोज़ियर के चेहरे पर आशंका घिर आई। ढंग से बात चलाने की उसकी रुचि के विपरीत, पैंज़ी ऑसमण्ड से शादी करना उसे अब कहीं अधिक उलझन-भरा काम लग रहा था। लेकिन उसके अतिशय विवेक ने, जिसे उसने अपनी सबसे अच्छी सम्पत्ति के रूप में सतह के नीचे छिपा रखा था, उसकी सहायता की, "मैं नहीं सोचता कि मुझे मिस्टर ऑसमण्ड की इतनी चिन्ता करनी चाहिए," वह बोला।

"नहीं, लेकिन तुम्हें मिसेज़ ऑसमण्ड का तो ख्याल करना चाहिए। तुम कहते हो कि वह तुम्हारी पुरानी मित्र है। क्या तुम उसे दुःखी करना चाहोगे?"

"बिलकुल नहीं।"

"तो तुम सावधानी बरतो, और बात को तब तक के लिए छोड़ दो जब तक

मैं कुछ पता नहीं कर लेती ।"

"बात को छोड़ दूं, डियर मैडम मरले ? यह मत भूलो कि मैं उस लड़की से प्रेम करता हूं ।"

"ओह, तुम नहीं मानोगे । तुम मेरे पास आए ही क्यों, अगर तुम्हें मेरी बात नहीं माननी थी ?"

रोज़ियर ने तय किया कि उसका व्यवहार एक ऐसे विवाह-प्रार्थी जैसा ही रहना चाहिए जो अपने में विवेक की एक मूर्ति है । पर मैडम मरले को दिए वचन में उसे ऐसा कुछ नहीं लगा जिससे कभी-कभार मिस ऑसमंड के घर जाकर वह अपने मन को उत्साहित न रख सके । वह लगातार मैडम मरले की बात को लेकर सोचता रहा, और उस महिला की सतर्क ध्वनि उसके मन में उभरती रही । वह गया था उससे अपने दिल की बात कहने—पर कहीं इसमें जल्दबाज़ी तो नहीं कर बैठा ? अपने को जल्दबाज़ मानने में उसे कठिनाई हो रही थी—इस दोष का भागी वह कभी नहीं रहा था । पर मैडम मरले को तो वह सिर्फ एक महीने से ही जानता था । वह उसे खुशमिजाज लगी थी, पर इसका यह अर्थ तो नहीं था कि वह पैंज़ी ऑसमंड को लाकर उसकी बांहों में डाल देगी—चाहे वह उसके लिए अपनी बांहों को कितना ही क्यों न साधे हो ! उस महिला ने उसके प्रति उदारता दिखाई थी, और लड़की के घर के लोग उसे काफी मानते भी थे । उस घर में (रोज़ियर को आश्चर्य होता था कि जाने कैसे) वह स्त्री बिना अधिक परिचय दिखाए भी बहुत घनिष्ठ जान पड़ती थी । पर शायद उसने उस स्त्री के इन गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर देखा था । वह स्त्री खामखाह उसके लिए तकलीफ क्यों उठाएगी ? एक आकर्षक स्त्री सभी के लिए आकर्षक होती है—वह बेवकूफ था जो इसी आधार पर अपना दुखड़ा लेकर उसके पास जा पहुंचा । चाहे उसने मज़ाक में कहा था, पर हो सकता है वह सचमुच सिर्फ उसकी पुरानी चीज़ों के बारे में ही सोच रही हो । क्या उस स्त्री को लगा था कि सम्भव है वह अपनी दो-एक चीज़ें उसे उपहार में दे दे ? वह यह बात सीधे तो उससे कह नहीं सकता था—इसका मतलब होता एक भोंडी-सी रिश्वत देना । पर वह चाहता था कि किसी तरह उसे इसका आश्वासन दिला सके ।

इन्हीं विचारों को मन में लिए वह अगली बार मिसेज़ ऑसमंड के यहां गया । मिसेज़ ऑसमंड हर वृहस्पतिवार को अपने घर में पार्टी देने लगी थी—उस अवसर

पर वह सामान्य शिष्टाचार के नाते वहां पहुंच सकता था। रोज़ियर की चहेती जिस मकान में रहती थी, वह रोम के बिलकुल बीचोंबीच बनी एक बड़ी-सी स्याह इमारत थी जो फॉरनीज़ पैलेस के पास खुले पिआज़ेता के एक तरफ बनी थी। पैंज़ी का वह घर भी एक पैलेस था——रोम के लिहाज़ से पैलेस, पर रोज़ियर के शंकालु मन के लिहाज़ से एक कारागार। उसे यह एक अपशकुन जान पड़ता था कि पैंज़ी, जिसके पिता को लेकर उसका मन यूं ही आशंकित था, एक इस तरह के घरेलू किले में रहती है। उस घर का रूखा-सा रोमन नाम था। वहां से ऐतिहासिक कारनामों, क्रूरताओं, चालबाज़ियों और हिंस्र कार्यों की गन्ध आती थी। उस घर का उल्लेख 'मरे' में होता था, और जो टूरिस्ट उसे देखने आते थे, वे देखकर निराश और उदास हो जाते थे। उस घर की दीवारों पर कारावेगियो के चित्र बने थे। कई टूटी-फूटी मूर्तियां और मैले अस्थिकलश वहां थे। सीलनदार अहाते के आगे ऊंचा महराबदार बरामदा था, और अहाते में बने काईदार घेरे से एक फव्वारा फूटता रहता था। मन उलझा न होता, तो शायद पालाज़ो रोकानेरा के सम्बन्ध में रोज़ियर की राय बेहतर होती। मिसेज़ ऑसमण्ड ने उसे बताया था कि रोम में रहने का निश्चय कर लेने पर उन लोगों ने वह घर उसकी स्थानीय रंगत के कारण ही चुना था। घर में स्थानीय रंगत काफी थी। हालांकि रोज़ियर को स्थापत्य की अधिक जानकारी नहीं थी, फिर भी वह देख सकता था कि उस घर की खिड़कियों में एक सन्तुलन है और उसकी कार्नीस का हर हिस्सा उसकी महत्ता का परिचय देता है। पर रोज़ियर के दिमाग पर यह बात छाई थी कि इतिहास के रंगीन काल में युवा लड़कियों को उनके प्रेमियों से अलग रखने के लिए वहां बन्द रखा जाता था और कान्वेंट में भेजने की धमकी देकर गलत शादियों के बन्धन में बांध दिया जाता था। एक बात थी जिसके लिए, मिसेज़ ऑसमण्ड के गरम और मंजे हुए स्वागतकक्ष में पहुंचकर, वह उस घर की सराहना करता था। वह यह स्वीकार करता था कि उन लोगों के पास काफी 'अच्छी चीज़ें' हैं। ये चीज़ें ऑसमण्ड की रुचि की थीं, इज़ाबेल की नहीं। यह इज़ाबेल ने उसके पहली बार उस घर में आने पर उसे बताया था। उसे आश्चर्य हुआ था कि उन लोगों के पास उससे कहीं ज़्यादा फ्रांसीसी चीजें हैं जितनी कि उसके पास पेरिस में थीं। इस सम्बन्ध में अपनी स्पर्धा को दबाकर उसने तुरन्त मिसेज़ ऑसमण्ड के सामने इस बात को स्वीकार भी कर लिया था। मिसेज़ ऑसमण्ड से

उसे यह भी पता चला था कि उनमें से ज्यादातर चीजें मिस्टर ऑसमण्ड ने इस विवाह से पहले एकत्रित कर रखी थीं। हालांकि कई सुन्दर चीजें इन तीन सालों में भी लाई गई थीं, फिर भी सबसे अच्छी चीजें उस समय की थीं जब ऑसमण्ड को इस सम्बन्ध में इज़ाबेल का परामर्श उपलब्ध नहीं था। रोज़ियर ने इसकी व्याख्या अपने ही सिद्धान्तों के अनुसार की। उसने 'परामर्श' की जगह शब्द 'धन' रख लिया। इस बात से कि ऑसमण्ड ने अपनी सबसे सुन्दर वस्तुएं निर्धनता के दिनों में प्राप्त की थीं, उसके इस प्रिय विश्वास की पुष्टि होती थी कि एक संग्रहकर्त्ता के पास धैर्य हो, तो निर्धनता का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बृहस्पतिवार की शाम जब रोज़ियर वहां पहुंचा, तो सबसे पहले उसका ध्यान सैलून की दीवारों की तरफ गया। वहां तीन-चार चीजें थीं जिन्हें देखने की लालसा उसकी आंखों में थी। पर मैडम मरले से हुई बातचीत के बाद उसे अपनी स्थिति बहुत गम्भीर लग रही थी। इसलिए अन्दर आकर उसकी आंखें उत्सुकता-पूर्वक घर की लड़की को ढूंढ़ने लगीं। यह उत्सुकता ऐसे व्यक्ति के लिए स्वाभाविक ही थी जिसकी मुसकराहट, दहलीज़ लांघते ही, हर सुविधा को अपना अधिकार समझने लगती थी।

३७

पैंजी पहले कमरे में नहीं थी। वह एक बड़ा-सा कमरा था जिसकी गुम्बदनुमा छत थी और जिसकी दीवारें लाल रंग के बेलबूटेदार पुराने रेशमी कपड़े से ढकी थीं। इसी जगह पर मिसेज़ ऑसमण्ड साधारणतया बैठती थी, यद्यपि वह आज रात अपनी रोज़ की जगह पर नहीं थी। अत्यधिक घनिष्ट मित्र वहीं आग के आस-पास बैठते थे। वह कमरा हल्की मद्धिम रोशनी से चमकता रहता था। घर की बड़ी चीजें उसी कमरे में थीं और प्रायः हमेशा वहां फूलों की सुगन्ध भरी रहती थी। पैंज़ी इस अवसर पर इसके बाद के दूसरे कमरे में थी जो कि युवा मेहमानों के लिए था और जहां चाय सर्व की जाती थी। ऑसमण्ड चिमनी के सामने अपने हाथ पीछे किए पीछे को झुका-सा खड़ा था। वह अपना एक पांव ऊपर किए जूते

के तले को गरम कर रहा था। लगभग आधी दरजन व्यक्ति उसके आसपास बिखरे आपस में बातें कर रहे थे। लेकिन वह उन लोगों के साथ बात नहीं कर रहा था। उसकी आंखों में एक ऐसा भाव था जो कि अक्सर उनमें रहता था। वह भाव सामने की वस्तुओं से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण विषयों को लेकर सोचने का था। बिना सूचना के आए रोज़ियर की ओर उसका ध्यान नहीं गया। लेकिन वह नवयुवक शिष्टाचारवश उससे हाथ मिलाने आगे बढ़ आया, यद्यपि वह जानता था कि वह पति से नहीं पत्नी से मिलने आया है। ऑसमण्ड ने अपनी स्थिति को बदले बिना अपना बायां हाथ आगे बढ़ा दिया।

"क्या हाल-चाल है ? मेरी पत्नी यहीं कहीं है।"

"कोई बात नहीं, मैं उसे ढूंढ़ लूंगा," रोज़ियर ने प्रसन्न भाव से कहा।

ऑसमण्ड उसे ताकता रहा। इससे पहले कभी किसीने उसे उस तरह भरपूर नज़र से नहीं देखा था। "मैडम मरले ने इससे बात की है और इसे बात पसन्द नहीं है," उसने अपने मन में कहा। उसे आशा थी कि मैडम मरले वहां होगी, लेकिन वह नज़र नहीं आ रही थी। उसने सोचा सम्भव है वह किसी दूसरे कमरे में हो, या शायद बाद में आए। गिलबर्ट ऑसमण्ड जिस गुमान में रहता था, वह रोज़ियर को कभी अच्छा नहीं लगता था। पर वह जल्दी बुरा नहीं मानता था, और शिष्टाचार के मामले में कभी गलत काम नहीं करना चाहता था। उसने आसपास नज़र दौड़ाई और फिर अगले ही क्षण बोला," मैंने आज कापो दि मोते का एक बहुत अच्छा पीस देखा है।"

ऑसमण्ड ने पहले कोई जवाब नहीं दिया। फिर अपने जूते के तले को सेंकते हुए उसने कहा, "मुझे कापो दि मोते में ज़रा दिलचस्पी नहीं है।"

"मुझे आशा है तुम इन चीज़ों में अपनी रुचि खो नहीं रहे ?"

"पुराने कटोरों और प्लेटों में ? हां, मैं इनमें रुचि खो रहा हूं।"

रोज़ियर एक क्षण के लिए अपनी स्थिति की नज़ाकत को भूल गया। "तुम उनमें से किन्हीं एक-दो चीज़ों को हटाने की तो नहीं सोच रहे ?"

"नहीं, मैं किसी भी चीज़ को हटाने की नहीं सोच रहा, मिस्टर रोज़ियर," मिस्टर ऑसमण्ड ने जवाब दिया। उसकी आंखें अभी तक रोज़ियर की आंखों पर टिकी थीं।

"मतलब तुम उन्हें रख रहना चाहते हो, पर और बढ़ाना नहीं चाहते,"

रोज़ियर बोला।

"बिल्कुल। मुझे और कुछ जोड़ने की इच्छा नहीं है।"

बेचारा रोज़ियर यह जानता था कि वह झेंप गया है। उसे अपने में आत्म-विश्वास की कमी पर दुःख हो रहा था। "लेकिन मुझे है," वह सिर्फ इतना ही बुदबुदा सका। वह जानता था कि उसकी बुदबुदाहट भी वहां से चलते हुए अंशतः गुम हो गई है। उसने बगल वाले कमरे की तरफ रुख किया वहां उसे मिसेज़ ऑसमण्ड दरवाज़े से आती मिल गई। उसने काली मखमल पहन रखी थी। वह बहुत ऊंची और सुन्दर लग रही थी, लेकिन फिर भी बहुत शालीन। हम जानते हैं कि मिस्टर रोज़ियर की उसके बारे में क्या राय थी और कि मैडम मरले से उसने उसकी कितनी प्रशंसा की थी। उसकी राय का आधार वही था जिसकी वजह से रोज़ियर पैंज़ी पर आसक्त था—अर्थात् मौलिकता और अलंकरण प्रधानता के प्रति मोह। इसके अतिरिक्त अनिर्धारित मूल्यों का आग्रह भी उसमें था—श्रेय और उपलब्धि से कहीं आगे व्यक्ति की आन्तरिक दीप्ति का आग्रह—जो कि छोटी-छोटी वस्तुओं के प्रति उसकी अनुरक्ति के कारण धुंधला नहीं पड़ा था। इस समय मिसेज़ ऑसमण्ड से उसकी वह आन्तरिक अभिरुचि सन्तुष्ट हो रही थी। इन वर्षों में मिसेज़ ऑसमण्ड को अधिक समृद्ध होने में सहायता दी थी, उसके यौवन का फूल मुरझाया नहीं था—केवल कुछ शान्त होकर अपनी टहनी से लटक रहा था। उसकी वह तत्परता पहले से कम हो गई थी जिस पर ऑसमण्ड अकेले में एतराज़ किया करता था—उसमें प्रतीक्षा करने का धीरज पहले से अधिक झलकता था। बहरहाल, उस समय दरवाज़े के चौखट में खड़ी वह रोज़ियर को बहुत सम्भ्रान्त लगी। "मैं यहां बहुत आता हूं न ?" वह बोला, "पर मैं नहीं तो और कौन आएगा ?"

"हां, यहां आकर तुम्हें मैंने औरों से ज़्यादा जाना है। पर इन शिष्टाचार की बातों में पड़ने की ज़रूरत नहीं। मैं एक युवा स्त्री से तुम्हारा परिचय कराना चाहती हूं।"

"किस युवा स्त्री से ?" रोज़ियर का स्वर बहुत शालीन था, हालांकि वह इस मतलब से यहां नहीं आया था।

"वह जो गुलाबी पोशाक में आग के पास अकेली बैठी है।"

"रोज़ियर पल-भर संकोच में रहा।" क्या मिस्टर ऑसमण्ड उससे बात नहीं

कर सकता ? वह उससे छः फुट भी तो दूर नहीं है।"

मिसेज ऑसमण्ड भी थोड़ा हिचकिचाई। "वह बेचारी ज़्यादा जिन्दा-दिल नहीं है, और ऑसमण्ड को जड़ लोग पसन्द नहीं आते।"

"तो इसीलिए वह मुझसे बात करने लायक है ? यह ज़्यादती है।"

"मेरा मतलब इतना ही है कि तुम दोनों तरह से बात कर सकते हो। और तुम हो भी इतने अच्छे !"

"तुम्हारा पति भी तो इतना अच्छा है।"

"नहीं, मेरे साथ नहीं," कहते हुए इज़ाबेल हल्के से मुस्कराई।

"तब तो उसे दूसरी स्त्रियों के साथ और भी अच्छा होना चाहिए।"

"यह मैं भी उससे कहती हूं," इज़ाबेल उसी तरह मुसकराती रही।

"बात यह है कि मुझे थोड़ी चाय चाहिए," रोजियर आगे नज़र दौड़ाते हुए कहता रहा।

"यह और अच्छा है। जाकर थोड़ी चाय उस बेचारी को भी दे दो।"

"ठीक है। पर उसके बाद में उसे उसके हाल पर छोड़ दूंगा। सच बात यह है कि मिस ऑसमण्ड से थोड़ी बात करने के लिए बेचैन हूं।

"ओह," इज़ाबेल ने मुड़ते हुए कहा। "उसमें मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती।"

पांच मिनट बाद गुलाबी पोशाक वाली महिला को दूसरे कमरे में चाय देते हुए रोज़ियर सोच रहा था कि मिसेज ऑसमण्ड के सामने अपने मन की बात कह-कर उसने मैडम मरले से किया वायदा तो नहीं तोड़ा। इस तरह की बात काफी देर उस आदमी के मन में बनी रह सकती थी। पर कुछ ही देर में वह अपेक्षाकृत अधिक उच्छृंखल महसूस करने लगा। उसे चिन्ता नहीं रही कि वह क्या-क्या वायदे तोड़ रहा है। गुलाबी पोशाक वाली युवती को चाय देकर उसके अलग हट जाने के बाद, ज़्यादा देर अकेली नहीं रहना पड़ा। पैंज़ी उससे बात करने चली आई। उसके लिए चाय भी पैंज़ी ने ही बनाकर रोज़ियर को दी थी—पज़ी को चाय बनाने का बहुत शौक था। रोज़ियर ने उन दोनों की बातचीत में दखल नहीं दिया। वह अन्तर्मुख-सा बैठा अपनी प्रेयसी की ओर देखता रहा। अगर हम इस समय पैंजी को उसकी नज़र से देखने लगें, तो सहसा हमें उस आज्ञाकारिणी लड़की की याद नहीं आएगी जिसे तीन साल पहले फ्लोरेंस में कैसीन पर चहलकदमी करने भेज

दिया जाता था, क्योंकि उसके पिता को मिस आर्चर के साथ बड़ों की बातें करनी होती थीं। पर क्षण-भर बाद हमें लगेगा कि अब उन्नीस बरस की एक सुन्दर नवयुवती होकर भी पैंज़ी में कहीं कुछ कमी है—उस गुण का उसमें अत्यधिक अभाव है जिसे स्त्रियों का 'ढंग' कहा जाता है। पहरावे में ताज़गी होते हुए भी वह स्पष्टतः अपनी चुस्त पोशाक को इस तरह बचाकर चलने की कोशिश कर रही थी जैसे कि वह उस अवसर के लिए उधार मांग कर ली गई हो। इस दोष की ओर एडवर्ड रोज़ियर जैसे आदमी का ध्यान सबसे पहले जाना चाहिए था—यूं उस लड़की की कोई भी विशेषता उसकी आंखों से छिपी नहीं रहती थी। पर वह उसकी विशेषताओं को अपने ही नाम दे लेता था जो कि अक्सर अच्छे होते थे। "वह अपनी तरह की एक ही है, बस एक ही," वह अपने से कहा करता और निःसन्देह वह कभी स्वीकार न करता कि उस लड़की में 'ढंग' की कमी है। ढंग? वाह, उसका ढंग तो एक राजकुमारी जैसा है। वह किसीको नज़र न आए, तो दोष देखने वाले की आंख का होगा। वह ढंग उस तरह का आधुनिक और सचेत नहीं था कि ब्रॉडवे में उसकी धाक जम सके। वह गम्भीर गुड़िया-सी लड़की अपनी सधी हुई पोशाक में वेलास्क्वेज़ की बच्ची-सी नज़र आती थी। एडवर्ड रोज़ियर को इसकी खुशी थी कि वह पुराने ढंग से रहती है। उस लड़की की उत्सुक आंखें, सुन्दर होंठ और दुबली आकृति, सब कुछ एक बाल-प्रार्थना जैसा था। उसे अब यह जानने की उत्कट इच्छा थी कि वह लड़की उसे कितना चाहती है, और इसी वजह से वह कुर्सी पर बैठा-बैठा अस्थिर हो रहा था। उसे इससे गर्मी भी महसूस हो रही थी, और वह बार-बार अपने माथे को रूमाल से छू लेता था। पहले कभी वह ऐसे व्यग्र नहीं हुआ था। लड़की अभी बिलकुल बच्ची-सी थी, और एक बच्ची से आदमी ऐसी बात नहीं पूछ सकता था। रोज़ियर की कल्पना सदा से एक बच्ची को पाने की रही थी, पर वह बच्ची फ्रांसीसी नहीं होनी चाहिए थी, क्योंकि उलझन पैदा हो सकती थी। रोज़ियर को विश्वास था कि पैंज़ी कभी अखबार नहीं पढ़ती और कोई उपन्यास भी उसने पढ़ा होगा तो सिर्फ वाल्टर-स्काट का ही पढ़ा होगा। एक अमरीकन बच्ची—इससे बढ़िया क्या बात हो सकती थी? साफ और खुली तबीयत की लड़की, जो न कभी अकेली टहलने निकली थी, न किसी पुरुष से जिसने पत्र-व्यवहार किया था, और न किसी के साथ कोई प्रहसन देखने थियेटर में गई थी! रोज़ियर जानता था कि वह इस भोली-भाली लड़की से

सीधे अपने मन की बात करने लगे, यह उस घर के आतिथ्य का दुरुपयोग होगा। पर इस समय उसके मन में यह खतरनाक सवाल उठ रहा था कि क्या आतिथ्य ही दुनिया की सबसे पवित्र चीज़ है ? मिस ऑसमण्ड के प्रति उसकी भावना क्या उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं ? उसके अपने लिए हां—पर घर के मालिक के लिए शायद नहीं। एक बात सुविधा की थी। अगर मैडम मरले ने ऑसमण्ड को इस सम्बन्ध में सावधान कर भी दिया होगा, तो ऑसमण्ड ने लड़की को चेतावनी देना उचित नहीं समझा होगा। उसे यह लगा होगा कि लड़की को यह आभास भी नहीं होना चाहिए कि एक युवक उसके लिए मन में प्रेम पाले बैठा है। पर वह सचमुच प्रेम पाले बैठा था, और परिस्थितियों की ये सब बाधाएँ उसे झुंझला रही थीं। यह गिलबर्ट ऑसमण्ड उसका हाथ दो उंगलियों से छूकर ही क्यों रह गया ? पर ऑसमण्ड का व्यवहार रूखा होने पर भी उसे स्वयं साहस से काम लेना चाहिए। उसका साहस तब बढ़ गया जब गुलाबी पोशाक वाली जड़ लड़की को उसकी मां लेने चली आई। एक अर्थपूर्ण झूठी मुस्कराहट के साथ रोज़ियर की तरफ देखकर मां ने अपनी लड़की से कहीं अन्यत्र विजय यात्रा के लिए चलने को कहा, तो लड़की झट तैयार हो गई। मां-बेटी साथ-साथ वहां से चली गईं। अब पैंज़ी के साथ अकेले रहना उसी पर निर्भर करता था। वह पहले कभी पैंज़ी के साथ अकेला नहीं रहा था—कभी किसी बच्ची के साथ अकेला नहीं रहा था। यह एक महान् क्षण था। बेचारा रोज़ियर फिर से माथा पोंछने लगा। जिस कमरे में वे थे, उससे आगे एक और छोटा-सा कमरा था जिसे खोलकर बत्तियां जला दी गई थीं। पर लोग ज्यादा न होने से सारी शाम वह कमरा खाली पड़ा रहा था। अब भी वह खाली था। उसमें पीले गद्दे रखे थे, कई लैम्प थे और खुले दरवाज़े से वह एक अधिकृत प्रेम-मन्दिर जैसा नज़र आ रहा था। रोज़ियर पल-भर उस दरवाज़े से अन्दर देखता रहा। उसे डर लग रहा था कि कहीं पैंज़ी भाग न जाए। यह भी लग रहा था कि अगर भागने लगे तो वह उसे हाथ बढ़ाकर रोक लेगा। पर दूसरी लड़की उसे जहां छोड़ गई थी, पैंज़ी वहीं रुकी रही। कमरे के दूसरे हिस्से में जमा अतिथियों की तरफ बढ़ने का उसने कोई प्रयत्न नहीं किया। पल-भर के लिए तो रोज़ियर को लगा कि वह डर गई है, और डर के मारे ही नहीं चल पा रही। पर दूसरी ही नज़र में उसे विश्वास हो गया कि ऐसी बात नहीं है। तब उसने सोचा कि ऐसी भोली लड़की के मन में वह भाव आ ही नहीं सकता। कुछ हिचकिचाहट के बाद

उसने पैंज़ी से पूछा कि क्या वह चलकर साथ का पीला कमरा देख सकता है, जो कि इतना आकर्षक और अछूता लग रहा है। यूं वह पहले उस कमरे में ऑसमण्ड के साथ हो आया था—प्रथम फ्रांसीसी साम्राज्य काल का फरनीचर देखने तथा उसी काल की बड़ी-सी प्राचीन दीवार-घड़ी को सराहने (हालांकि उसे वह सराह नहीं सका)। इसलिए उसे लगा कि अब वह चालाकी बरतने लगा है।

"तुम अवश्य जाकर देख लो," पैंज़ी बोली, "अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें ले चलती हूं।" वह तनिक भी डरी हुई नहीं थी।

"मुझे बिलकुल यही आशा थी कि तुम ऐसा कहोगी," रोज़ियर बुदबुदाया।

वे दोनों अन्दर चले गए। रोजियर को वह कमरा वास्तव में भद्दा और ठंडा लगा। यही ख्याल शायद पैंज़ी के मन में भी आया। "यह कमरा सर्दियों के लिए नहीं है। इसका प्रयोग अधिकतर गर्मियों में होता है," वह बोली, "यह पापा की पसन्द की जगह है। उनमें बहुत सुरुचि है।"

उसमें बहुत सुरुचि है—रोज़ियर ने सोचा—लेकिन उस सुरुचि का कुछ अंश बहुत खराब है। उसने अपने आस-पास देखा। वह नहीं जानता था कि ऐसी स्थिति में क्या कहे। "क्या मिसेज़ ऑसमण्ड को इस बात की परवाह नहीं है कि उसके कमरे कैसे लगते हैं? उसके पास अपनी कोई रुचि नहीं है?" उसने पूछा।

"हां, उनकी रुचि बहुत अच्छी है—लेकिन वह अधिक साहित्य में है," पैंज़ी बोली। "और वार्तालाप में। लेकिन पापा की भी इन चीज़ों में रुचि है। मेरा ख्याल है वे सब कुछ जानते हैं।"

रोज़ियर थोड़ी देर चुप रहा। "एक बात का मुझे पता है जो वह जानता है," वह सहसा फूट पड़ा, "वह जानता है कि उसके लिए और मिसेज़ ऑसमण्ड के लिए, जो बहुत आकर्षक है, मन में सम्मान रखते हुए भी वास्तव में मैं यहां तुमसे मिलने आता हूं।"

"मुझसे मिलने के लिए?" और पैंज़ी की हल्के-से सहमी आंखें ऊपर उठ गईं।

"हां, तुमसे मिलने के लिए। मैं इसीलिए यहां आता हूं," रोज़ियर ने अधिकार से टकराने का नशा-सा महसूस करते हुए दोहराया।

पैंज़ी खुले सरल लहजे में उसे ध्यान से खड़ी देखती रही। उसे और अधिक शालीन बनाने के लिए उसके चेहरे पर झेंप की आवश्यकता नहीं थी।

"मेरा भी यही ख्याल था।"

"और यह तुम्हें बुरा नहीं लगता था ?"

"मैं बता नहीं सकती। मैं जानती ही नहीं थी। तुमने मुझसे कभी कहा ही नहीं," पैंज़ी बोली।

"मुझे डर था कि तुम्हें चोट न पहुंचे।"

"तुमसे मुझे चोट नहीं पहुंचती," वह युवा लड़की इस तरह मुस्कराती हुई बुदबुदाई जैसे उसे किसी फरिश्ते ने चूम लिया हो।

"तो तुम मुझे पसन्द करतो हो, पैंज़ी ?" रोजियर ने प्रसन्न होकर बड़ी कोमलता से पूछा।

"हां, मैं तुम्हें पसन्द करती हूं।"

वे चलकर चिमनी तक आ गए थे, जहां वह ऐतिहासिक घड़ी लटक रही थी। वे अब कमरे के काफी भीतर आ गए थे जहां से उन्हें बाहर के लोग नहीं देख सकते थे। जिस लहजे में पैंज़ी ने यह शब्द कहे थे वह रोज़ियर को, प्रकृति के उच्छ्वास की तरह लगे। उनका जवाब यही हो सकता था कि वह उसके हाथ को एक क्षण पकड़ रहे। फिर उस हाथ को वह अपने होंठों तक ले आया। पैंज़ी ने विरोध नहीं किया। वह निर्मल और विश्वस्त भाव से मुस्कराती रही। उस मुस्कराहट में एक तरह का समर्पण था। वह उसे पसन्द करती थी—उसने उसे हमेशा पसन्द किया था। अब चाहे कुछ भी हो जाए। वह उस सबके लिए तैयार है।—वह पहले से ही तैयार थी, सिर्फ उसके कहने की इन्तज़ार कर रही थी। अगर वह अब भी न कहता, तो वह अन्त तक उसका इन्तजार करती। लेकिन जब उसने कहा तो वह पेड़ पर से हिलाई खूबानी की तरह नीचे गिर आई। रोज़ियर ने महसूस किया कि अगर वह उसे अपनी तरफ खींचकर गले से लगा ले, तो भी वह एक शब्द कहे बिना उसपर झुक जाएगी और बिना किसी प्रश्न के वहां सिर टिकाए रहेगी। फिर भी उस जगह ऐसा करना जल्दबाज़ी होगी। वह जानती थी कि वह उसके लिए आता है, लेकिन फिर भी कैसे एक छोटी-सी अच्छी महिला की तरह उसने इस बात को ज़ाहिर नहीं होने दिया।

"तुम मुझे बहुत प्यारी लगती हो," वह बुदबुदाया, इस बात को मानने की कोशिश करते हुए कि आखिर अतिथि सत्कार जैसी कोई चीज होती है।

पैंज़ी ने एक क्षण के लिए अपने हाथ को देखा जहां रोज़ियर ने उसे चूमा था।

"क्या तुमने यह कहा था कि पापा जानते हैं ?"

"तुमने ही तो अभी कहा है कि वे सब कुछ जानते हैं ।"

"मेरा ख्याल है तुम्हें इसका पक्का पता कर लेना चाहिए," पैंज़ी बोली ।

"माई डियर, मुझे तुम्हारी तरफ से जो पक्का पता चल गया है," रोज़ियर उसके कान में फुसफुसाया । इसके बाद पैंज़ी एक ऐसी भावना के साथ दूसरे कमरे में लौट गई जैसे अब तुरन्त ही यह बात बड़ों के सामने रख देना आवश्यक हो ।

शेष कमरे इस बीच मैडम मरले के आगमन के प्रति सचेत हो उठे थे । वह जहां भी जाती थी, वहां एक प्रभाव पैदा कर देती थी । वह ऐसा कैसे करती थी, यह एक सूक्ष्म दर्शक भी नहीं बता सकता था । न वह ऊंचा बोलती थी, न ही ज़ोर से हंसती थी, न ही तेज़ी के साथ घूमती थी, न भड़कीले कपड़े पहनती थी, और न ही लोगों के साथ विशेष प्रशंसनीय ढंग से बात करती थी । उस ऊंची, गोरी, मुस्कराती, गम्भीर आकृति की खामोशी में ही कुछ था जो वातावरण को व्याप्त कर लेता था । लोग घूमकर देखते थे तो इसीलिए कि एकाएक यह खामोशी क्यों ! इस अवसर पर उसने वह किया जो कि सबसे अधिक खामोशी से किया जा सकता था । मिसेज़ ऑसमण्ड को आलिंगन करने के बाद, जो कि काफी आश्चर्यजनक था, वह सोफे पर बैठकर घर के मालिक से बात करने लगी । उनके बीच संक्षेप में दो-चार सामान्य शिष्टाचार की बातें हुईं—हमेशा ही लोगों के बीच वे सामान्य शिष्टाचार के प्रति हल्की-सी श्रद्धांजलि अर्पित कर लेते थे—और फिर मैडम मरले ने, जिसकी आंखें इधर-उधर भटक रही थीं, पूछा कि क्या मिस्टर रोज़ियर आज शाम वहां नहीं आया ।

उसे आए लगभग एक घंटा हो गया । लेकिन जाने वह कहां गायब हो गया है," ऑसमण्ड बोला ।

"और पैंज़ी कहां है ?"

"दूसरे कमरे में । वहां कई लोग हैं ।"

"वह भी सम्भवतः उन्हींके बीच होगा," मैडम मरले बोली ।

"तुम उससे मिलना चाहती हो ?" ऑसमण्ड ने उकसाने के लहजे में जैसे यूंही पूछ लिया ।

मैडम मरले क्षण-भर उसे देखती रही । वह उसके प्रत्येक स्वर को उसके आठवें हिस्से तक पहचानती थी । "हां, मैं उससे कहना चाहूंगी कि मैंने तुम्हें बता

दिया है वह क्या चाहता है, और कि तुम्हें इसमें खास दिलचस्पी नहीं है।"

"उससे यह मत कहना। वह तब मेरे अन्दर दिलचस्पी पैदा करने की कोशिश करने लगेगा, जो कि मैं बिलकुल नहीं चाहता। उससे कहना कि मुझे उसके प्रस्ताव से घृणा है।"

"लेकिन तुम्हें इससे घृणा तो नहीं है।"

"इससे कोई अर्थ नहीं निकलता। मुझे इससे प्यार नहीं है। मैंने उसे आज शाम स्वयं ही यह जतला भी दिया है। मैंने जान-बूझकर उससे रूखा बर्ताव किया है। उस तरह की बातें बहुत ऊबाने वाली हैं। हमें कोई जल्दी नहीं है।"

"मैं उससे कहूंगी कि तुम कुछ समय बाद सोचकर बताओगे।"

"नहीं, ऐसा मत करना। इससे वह यहां आता-जाता रहेगा।"

"अगर मैं उसे निरुत्साह कर दूंगी, तो भी वह यही करेगा।"

"हां, लेकिन उस तरह तो वह बात करेगा और समझाने की कोशिश करेगा जो कि बहुत ही थका देने वाला होगा। दूसरी तरह, वह चुप रहेगा और गहरी चाल चलेगा। इस तरह मुझे शान्त रहने देगा। मुझे एक गधे से बात करने से नफ-रत है।"

"क्या यही मिस्टर रोज़ियर के बारे में तुम्हारी राय है ?"

"वह बेहूदा आदमी है—सोलहवीं शताब्दी का।"

मैडम मरले ने अपनी आंखें झुका लीं। उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान थी। "वह एक भला आदमी है, उसका बहुत आकर्षक स्वभाव है, और इसके अलावा चालीस हज़ार फ्रैंक्स की उसकी वार्षिक आय है।"

"यह गरीबी है, आरामदेह गरीबी," ऑसमण्ड बोला। "मैंने पैंज़ी के लिए ऐसा नहीं सोच रखा।"

"ठीक है। उसने मुझे वचन दिया है कि वह पैंजी से कुछ नहीं कहेगा।"

"क्या तुम्हें उस पर विश्वास है ?" ऑसमण्ड ने अन्यमनस्क भाव से पूछा।

"पूरी तरह। पैंज़ी की उसके विषय में बहुत अच्छी राय है। लेकिन मैं नहीं सोचती कि इससे तुम्हें फर्क पड़ता है।"

"मैं नहीं समझता कि इससे कोई फर्क पड़ता हैं। और न ही मैं यह मानता हूं कि उसकी रोज़ियर के बारे में अच्छी राय है।"

"यह ख्याल और भी सुविधाजनक है," मैडम मरले ने आहिस्ता से कहा।

"क्या उसने तुमसे कहा है कि वह उससे प्यार करती है ?"

"तुमने पैंज़ी को क्या समझ रखा है ? और मुझे भी तुमने क्या समझा है ?" मैडम मरले ने एक ही क्षण में कहा।

ऑसमण्ड ने एक पैर उठाकर उसका टखना दूसरे घुटने पर आराम से टिका रखा था। उसने बड़े आत्मीय ढंग से अपने टखने को हाथ से थाम लिया—अपनी लम्बी महीन बड़ी उंगली और अंगूठे को मिलाकर उसने एक बहुत बढ़िया छल्ला-सा बना लिया था—और एक क्षण सामने देखता रहा। "ऐसी स्थिति के लिए मैं तैयार न होऊं, ऐसा नहीं। इसीलिए मैंने उसे शिक्षित किया है—सिर्फ इसी बात के लिए ताकि जब ऐसा अवसर आए, तो वह मेरी पसन्द के मुताबिक काम करे।"

"मुझे इस बात का डर नहीं है कि वह ऐसा नहीं करेगी।"

"तो फिर रुकावट कहां है ?"

"कहीं भी नहीं। लेकिन इसके साथ ही मैं तुमसे यह आग्रह करूंगी कि तुम मिस्टर रोज़ियर को चलता मत करो। उसे अपने हाथ में रखो। वह उपयोगी सिद्ध हो सकता है।"

"मैं उसे कहीं नहीं रख सकता। तुम्हीं रखो।"

"ठीक है, मैं उसे एक कोने में रखकर उसका रोज का भत्ता बांध दूंगी," मैडम मरले ने बातें करते हुए इस बीच कई बार अपने आस पास नज़र दौड़ाई। यह उसकी आदत थी। ठीक उसी तरह जैसे कि बातचीत में खामोशी के-से विराम ले आने की उसकी आदत थी। ऊपर की बात के बाद भी एक लम्बा विराम आ गया, जिसके अन्त से पहले ही उसने पैंज़ी को साथ के कमरे से आते देखा। पीछे-पीछे मिस्टर रोज़ियर था। लड़की कुछ कदम बढ़ी और फिर रुककर वह मैडम मरले और अपने पिता की ओर देखने लगी।

"रोज़ियर ने उससे बात कर ली है," मैडम मरले ऑसमण्ड से बोली।

ऑसमण्ड ने सिर नहीं घुमाया। "तुम्हारा उसके वचन में इतना विश्वास था। उसे कोड़े मारने चाहिएं।"

"वह बेचारा आत्म-स्वीकृति करना चाहता है।"

ऑसमण्ड खड़ा हो गया। उसने तीखी नज़र से अपनी बेटी की तरफ देखा। "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता," वह बुदबुदाया और वहां से चला गया।

पैंजी क्षण भर वाद मैडम मरले के पास आई। उसका ढंग एक अपरिचित की नम्रता का था। मैडम मरले ने उसका जो स्वागत किया, वह भी उतना घनिष्ठ नहीं था। उसने केवल सोफे से उठकर मित्रतापूर्ण मुस्कराहट के साथ उसकी ओर देखा।

"आप बहुत देर से आई," उस युवा बच्ची ने कोमलता से कहा।

"मेरी प्यारी बच्ची, मैं अपनी मर्जी से ज़्यादा देर से कभी नहीं आती।"

मैडम मरले पैंजी के प्रति शिष्टता दिखाने के लिए सोफे से नहीं उठी थी। वह एडवर्ड रोज़ियर की तरफ बढ़ गई। रोजियर उससे मिलने उसकी तरफ बढ़ा और जल्दी से जैसे उस बात को मन से उतारने के लिए बुदबुदाया, "मैंने उससे बात कर ली है।"

"मैं जानती हूं, मिस्टर रोज़ियर।"

"क्या उसने तुमसे कहा है?"

"हां, उसने मुझे बताया है। बाकी शाम ज़रा ठीक से व्यवहार करना, और मुझे कल पौने पांच आकर मिल लेना।" उसका भाव सहज था, और जिस ढंग से उसने अपनी पीठ फेरी, उसमें घृणा की इतनी मात्रा थी कि रोज़ियर ने मुंह में एक सभ्य गाली दे ली।

रोज़ियर का इरादा मिस्टर ऑसमण्ड से बात करने का नहीं था। उसके लिए न तो समय ही, और न जगह ही उपयुक्त थी। वह अनायास इज़ाबेल की तरफ बढ़ गया, जो कि बैठी एक बूढ़ी महिला से बात कर रही थी। वह उसके दूसरी तरफ बैठ गया। बूढ़ी महिला इतालवी थी, और रोज़ियर ने यह मान लिया कि वह अंग्रेजी नहीं समझती होगी। "तुमने अभी मुझसे कहा था कि तुम मेरी सहायता नहीं करोगी," उसने मिसेज़ ऑसमण्ड से कहना शुरू किया। "सम्भवत: अब तुम दूसरी तरह से महसूस करोगी, जब तुम यह जानोगी—यह जानोगी कि···।"

इज़ाबेल ने उसकी हिचकिचाहट का सामना किया। "जब मैं क्या जानूंगी?"

"कि पैंजी बिलकुल ठीक है।"

"इससे तुम्हारा क्या मतलब है?"

"कि हम दोनों एक समझौते पर पहुंच गए हैं।"

"पैंजी बिलकुल गलत है," इज़ाबेल बोली। "यह चलेगा नहीं।"

बेचारा रोज़ियर आधे अनुनय और आधे क्रोध के साथ देखता रहा। मन की चोट से उसका चेहरा सुर्ख हो उठा। "मेरे साथ ऐसा व्यवहार कभी नहीं किया गया," वह बोला, "आखिर मेरे विरुद्ध ऐसी क्या बात है ? मेरे बारे में साधारणतः ऐसा नहीं सोचा जाता। मैं बीस बार अब तक शादी कर सकता था।"

"यही अफसोस की बात है कि तुमने नहीं की। मेरा मतलब बीसों बार से नहीं, लेकिन ठीक से एक ही बार शादी करने से है," इज़ाबेल ने मुस्कराते हुए कहा। "तुम पैंज़ी के लिहाज़ से काफी धनी नहीं हो।"

"उसे पैसे की ज़रा परवाह नहीं है।"

"नहीं, लेकिन उसके पिता को है।"

"अरे हां। वह तो यह साबित भी कर चुका है," वह अचानक बोला।

इज़ाबेल उस महिला के प्रति बिना कोई शिष्टता प्रकट किए वहां से उठ गई। रोज़ियर ने दस मिनट के लिए अपने को गिलबर्ट ऑसमण्ड के छोटे-चित्रों के संग्रह में उलझाये रखा, जो कि बहुत सफाई के साथ छोटे मखमली परदों के आगे लगाए गए थे। लेकिन वह सिर्फ ताक रहा था, देख नहीं रहा था। उसके गाल जल रहे थे। अपना अपमान उसे बहुत कचोट रहा था। यह सच था कि इससे पहले उसके साथ ऐसा व्यवहार नहीं हुआ था। उसे इस बात की आदत नहीं थी कि उसे अच्छा न समझा जाए। वह जानता था कि वह कितना अच्छा है, और यह भ्रांति इतनी घातक न होती, तो शायद वह इसपर हंस लेता। उसने फिर पैंज़ी को ढूंढ़ने की कोशिश की, लेकिन वह अदृश्य हो चुकी थी। उसकी अब यही इच्छा थी कि वह उस घर से चला जाए। लेकिन ऐसा करने से पहले उसने एक बार और इज़ाबेल से बात की। उसे यह सोचकर अच्छा नहीं लग रहा था कि उसने अभी उस महिला से एक अप्रिय बात कर दी है—यही एक बिन्दु था जिसे लेकर उसे छोटा समझा जा सकता था।

"एक क्षण पहले जो बात मैंने मिस्टर ऑसमण्ड के बारे में कही थी, वह मुझे नहीं करनी चाहिए थी," उसने शुरू किया। "लेकिन तुम्हें मेरी स्थिति को ध्यान में रखना चाहिए।"

"मुझे याद नहीं तुमने क्या कहा था," इज़ाबेल ने बहुत रूखेपन से कहा।

"ओह, तुम तो नाराज हो, और अब कभी मेरी सहायता नहीं करोगी।"

इज़ाबेल एक क्षण के लिए खामोश रही। फिर एक और ही लहजे में उसने

कहा, "यह बात नहीं है कि मैं सहायता नहीं करूंगी। लेकिन मैं कर ही नहीं सकती।" उसका ढंग आवेशपूर्ण था।

अगर तुम थोड़ी-सी कर सको, तो मैं कभी तुम्हारे पति को एक फरिश्ते के सिवा कुछ नहीं कहूंगा।"

"प्रलोभन बहुत बड़ा है," इज़ाबेल ने गम्भीरता से कहा—'अभेद्य भाव से'—बाद में रोज़ियर ने अपने से कहा। इज़ाबेल ने सीधे उसकी आंखों में जिस तरह देखा, वह भाव भी अभेद्य था। इससे अचानक रोज़ियर को याद हो आया कि वह उसे तब से जानता है कि जब वह एक बच्ची थी। फिर भी वह दृष्टि उसकी सहन की सीमा से कहीं अधिक तीखी थी। इसके बाद वह वहां से चला आया।

३८

अगले दिन वह मैडम मरले से मिलने गया, लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि मैडम मरले ने उसे बहुत आसानी से निजात दे दी। लेकिन मैडम मरले ने उससे वचन ले लिया कि वह तब तक और आगे नहीं बढ़ेगा जब तक कि कुछ निश्चित नहीं हो जाता। मिस्टर ऑसमण्ड की कहीं ज़्यादा अपेक्षाएं थीं। यह सच था कि मिस्टर ऑसमण्ड अपनी बेटी को कोई जायदाद नहीं देने जा रहा था, इसलिए ऐसी अपेक्षाओं की खुली आलोचना की जा सकती थी—यहां तक कि कोई इसका मज़ाक भी उड़ा सकता था। लेकिन मैडम मरले ने मिस्टर रोज़ियर को समझाया कि वह ऐसा न करे। अगर वह सब्र रखेगा, तो हो सकता है उसे सफलता मिल जाय। मिस्टर ऑसमण्ड अभी उसके प्रस्ताव के हक में नहीं था, लेकिन यह चमत्कार नहीं होगा अगर वह धीरे-धीरे मान जाए। पैंज़ी अपने पिता के विरुद्ध कभी नहीं जायगी, इसका उसे यकीन रखना चाहिए। इसलिए उतावलेपन से कुछ लाभ नहीं होगा। मिस्टर ऑसमण्ड के मन को ऐसी बात के लिए अभयस्त होने की आवश्यकता है, क्योंकि उसने पहले ऐसा नहीं सोच रखा था। यह परिणाम अपने आप निकलना चाहिए—इसमें ज़बरदस्ती करना व्यर्थ है। रोज़ियर ने कहा कि इससे इस बीच उसकी स्थिति दुनिया में सबसे अधिक अशान्ति-पूर्ण रहेगी।

मैडम मरले ने उसे विश्वास दिलाया कि वह उसकी इस बात को महसूस करती है। लेकिन साथ ही यह भी ठीक बात थी कि व्यक्ति वह सब कुछ नहीं पा सकता जो वह चाहता है। इससे कोई लाभ नहीं होगा कि वह गिलबर्ट ऑसमण्ड को पत्र लिखे—गिलबर्ट ने इतनी बात कहने की जिम्मेदारी उस पर डाली है। वह चाहता है कि यह बात कुछ हफ्तों के लिए स्थगित रहे, और कि उसे कोई बात रोज़ियर के हित में कहनी होगी, तो वह स्वयं पत्र लिखकर उसे सूचना दे देगा।

"उसे यह अच्छा नहीं लगा कि तुमने पैंज़ी से बात की है। उसे यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं," मैडम मरले बोली।

"मैं उसे पूरी तरह मौका देने को तैयार हूं कि वह यह बात स्वयं मुझसे कहे।"

"तुमने ऐसा किया तो वह तुमसे और भी कुछ कहना चाहेगा जिसे सुनना तुम पसन्द नहीं करोगे। इस महीने तुम उसके घर जितना कम हो सके, उतना कम जाओ, और बाकी मुझ पर छोड़ दो।"

"जितना कम हो सके, उतना कम? लेकिन इस सम्भावना को कौन नापेगा?"

"इसे मुझे नापने दो। बृहस्पतिवार की शाम को और लोगों के साथ जाओ। लेकिन कभी अनुचित अवसरों पर मत जाओ। पैंज़ी के लिए भी मत कुलबुलाओ। यह मैं देख लूंगी कि वह सब समझ जाये। उसका छोटा-सा स्वभाव बहुत शान्त है, वह इसे काफी धीरज से लेगी।"

एडवर्ड रोज़ियर पैंज़ी के लिए काफी कुलबुलाता रहा, लेकिन उसने किया वही जो उसे समझाया गया था। पालाज़ो रोकानेरा जाने के लिए उसने अगले बृहस्पत की इन्तज़ार की। डिनर के समय वहां एक पार्टी थी। वह यद्यपि जल्दी पहुंच गया, फिर भी वहां पहले से ही काफी लोग जमा थे। ऑसमण्ड हमेशा की तरह पहले कमरे में आग के पास खड़ा दरवाज़े की तरफ देख रहा था। प्रकट रूप से अभद्रता न हो, इसलिए रोजियर को पास जाकर उससे बात करनी पड़ी।

"मुझे खुशी है तुम संकेत समझ सकते हो," पैंज़ी के पिता ने अपनी सचेत आंखों को थोड़ा बन्द करते हुए कहा।

"मैं कोई संकेत नहीं लेता। लेकिन मैंने एक सन्देश ज़रूर लिया है। मैंने उसे इसी रूप में समझा है।"

"तुमने सन्देश लिया है ? कहां से लिया है ?"

रोजियर को लगा जैसे उसकी मानहानि की जा रही हो। एक क्षण रुककर वह अपने से पूछता-सोचता रहा कि एक सच्चे प्रेमी को किस हद तक नीचे झुकना चाहिए। "सन्देश मैडम मरले ने मुझे दिया है। मेरा ख्याल है वह सन्देश तुम्हारी तरफ से था—कि तुम अभी मुझे अपनी इच्छा सामने रखने का मौका नहीं देना चाहते—वह मौका जो मैं दिल से चाहता हूं।" वह खुश हुआ कि वह काफी सख्ती के साथ बोल गया है।

"मैं नहीं जानता मैडम मरले का इसमें क्या दखल है। तुमने मैडम मरले से क्यों बात की ?"

"मैंने उसकी राय मांगी थी—इससे अधिक कुछ नहीं। मैंने ऐसा इसलिए किया कि मुझे लगता था वह तुम्हें बहुत अच्छी तरह जानती है।

"वह मुझे उतनी अच्छी तरह नहीं जानती जितना कि वह सोचती है," ऑसमण्ड बोला।

"मुझे यह सुनकर अफसोस हुआ क्योंकि उसने मुझे थोड़ा आश्वासन दिया था।"

ऑसमण्ड कुछ क्षण आग की तरफ देखता रहा। "मैं अपनी बेटी का बहुत मूल्य लगाता हूं।"

"तुम उसका मुझसे ज्यादा मूल्य नहीं लगा सकते। क्या यह बात इससे साबित नहीं होती कि मैं उससे शादी करना चाहता हूं ?"

"मैं चाहता हूं कि उसकी किसी अच्छी जगह शादी हो," आसमण्ड एक ऐसी रूखी जिद के साथ बोलता गया, जिसकी किसी दूसरी मनःस्थिति में बेचारा रोजियर अवश्य प्रशंसा करता।

"अवश्य ही उसकी मेरे साथ शादी एक अच्छी शादी होगी। वह ऐसे किसी व्यक्ति से शादी की आशा नहीं कर सकती जो मुझसे ज्यादा उसे प्यार करे—या जिसे, मैं यह भी कहने का साहस करूंगा, कि वह मुझसे ज्यादा प्यार कर सके।"

"मैं तुम्हारी इस धारणा से बंधा नहीं हूं कि मेरी लड़की किससे प्यार करती है," और ऑसमण्ड ने एक तेज ठंडी मुस्कान के साथ ऊपर देखा।

"मैं अपनी धारणा ही नहीं बता रहा। तुम्हारी लड़की ने स्वयं मुझसे यह बात कही है।"

"मुझसे नहीं कही," ऑसमण्ड बोला। अब थोड़ा-सा आगे को झुककर उसने अपनी आंखें अपने बूट के पंजों पर जमा लीं।

"उसने मुझे वचन दिया है, सर!" रोज़ियर ने तीखेपन के साथ कहा।

क्योंकि पहले वे लोग बहुत धीमे स्वर में बात कर रहे थे, इसलिए उसके इस लहजे ने बैठे हुए लोगों का ध्यान उस तरफ आकर्षित कर दिया। ऑसमण्ड ने थोड़ी देर इन्तज़ार की ताकि फिर सब कुछ ठीक हो जाए। फिर उसने बिना अविचलित होते हुए कहा, "मेरा ख्याल है उसे ऐसे किसी वचन की याद नहीं है।"

वे लोग आग की तरफ मुंह किए खड़े थे। ये अन्तिम शब्द कह चुकने के बाद घर के मालिक ने फिर कमरे की तरफ मुंह कर लिया। इससे पहले कि रोज़ियर को कुछ कहने का मौका मिलता, उसने देखा कि एक व्यक्ति—एक अजनबी—रोमन परम्परा के अनुसार बिना सूचना दिये अन्दर चला आया है, और अपने को मेज़बान के सामने प्रस्तुत करने जा रहा है। ऑसमण्ड खुलकर मुस्कराया, लेकिन कुछ भावहीन ढंग से। उस मेहमान का चेहरा खूबसूरत था, और लम्बी भूरी दाढ़ी थी। वह स्पष्टतः अंग्रेज़ था।

"लगता है तुमने मुझे पहचाना नहीं है," उसने ऐसी मुस्कराहट के साथ कहा जो ऑसमण्ड की मुस्कराहट से ज़्यादा भावपूर्ण थी।

"अरे हां, मैंने पहचान लिया है। मुझे तुमसे मिलने की बहुत कम आशा थी।"

रोज़ियर सीधे पैंज़ी की खोज में चला गया। वह हमेशा की तरह उसे दूसरे कमरे में मिली। लेकिन रास्ते में फिर मिसेज़ ऑसमण्ड मिल गई। उसने अपनी मेज़बान को अभिवादन नहीं किया। बहुत रूखेपन से उससे कहा, "तुम्हारा पति बहुत ठंडे खून का है।"

इज़ाबेल फिर उसी रहस्यपूर्ण ढंग से मुस्कराई जिसकी ओर पहले भी उसका ध्यान गया था। "तुम प्रत्येक व्यक्ति से आशा नहीं कर सकते कि वह तुम्हारी तरह गर्म खून हो।"

"मैं झूठ नहीं बोलूंगा कि मैं ठण्डे खून का हूं। लेकिन मैं शान्त ज़रूर हूं। वह अपनी बेटी को क्या सिखाता रहा है?"

"मुझे कुछ मालूम नहीं।"

"क्या तुम कोई रुचि नहीं लेतीं?" रोज़ियर ने जैसे उन शब्दों से भी झुंझ-

लाहट महसूस करते हुए पूछा।

एक क्षण के लिए वह कुछ नहीं बोली। फिर 'नहीं,' उसने अचानक कहा। उसकी आंखों में एक ऐसी तेज रौशनी चमक गई जो उसके कहे शब्द के सर्वथा विपरीत थी।

"क्षमा करना अगर इस बात को न मानूं तो। मिस आसमण्ड कहां है ?"

"कोने में खड़ी चाय बना रही है। कृपया उसे अकेली रहने दो।"

रोज़ियर ने तत्काल अपनी मित्र को देख लिया, जो बीच में मुण्डों की ओट में थी। वह उसे देखता रहा। लेकिन पैंज़ी का पूरा ध्यान अपने काम में था। "आखिर ऑसमण्ड ने उसे सिखा क्या दिया ?" उसने अनुनय के स्वर में पूछा। "वह कहता है कि पैंज़ी मुझे भूल चुकी है।"

"वह तुम्हें भूली नहीं है," इज़ाबेल ने धीमी आवाज़ में, बिना उसकी ओर देखे कहा।

"इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। अब तुम जितनी देर उचित समझो मैं उसे अकेली छोड़ दूंगा।"

उसने मुश्किल से यह बात कही थी कि इज़ाबेल के चेहरे का रंग बदल गया। रोज़ियर इस बात से चौकन्ना हो गया कि ऑसमण्ड इज़ाबेल की तरफ उस व्यक्ति के साथ आ रहा है जो कि अभी अन्दर आया था। उसे वह व्यक्ति देखने में सुन्दर और स्पष्टत: सामाजिक अनुभव रखने के बावजूद कुछ घबराया-सा लगा। "इज़ाबेल," उसके पति ने कहा, "मैं तुम्हारे एक पुराने मित्र को लेकर आया हूं।" यद्यपि मिसेज ऑसमण्ड के चेहरे पर मुस्कान थी, फिर भी अपने पुराने मित्र की मुस्कान की तरह वह पूर्णतया विश्वस्त नहीं थी। "मुझे लार्ड वारवर्टन से मिलकर बहुत खुशी हुई," वह बोली। रोज़ियर घूम कर मुड़ गया। अब, जबकि उसकी बात में दखल पड़ गया था, उसने महसूस किया कि जो वचन उसने अभी दिया था, उससे वह मुक्त हो गया है। उसने झटपट सोचा कि जो कुछ वह अब करेगा उसे मिसेज़ ऑसमण्ड नहीं देखेगी।

दरअसल इज़ाबेल ने भी, उसके साथ थोड़ा न्याय करने के लिए, थोड़ी देर उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह इतना घबरा गई थी कि वह यह नहीं जान पाई कि उसे सुख हुआ है या दु:ख। लार्ड वारबर्टन, जो कि अब उसके सामने खड़ा था, अपनी प्रतिक्रिया के बारे में बिलकुल निश्चित था। उसकी भूरी आंखों में अब

भी पहचान और स्वीकृति की वही ईमानदारी थी। वह पहले से ज़्यादा 'भारी' और प्रौढ़ लग रहा था, और वहां बड़ी दृढ़ता और सहजता के साथ खड़ा था।

"मेरा खयाल है तुम्हें मुझे यहां देखने की आशा नहीं थी," वह बोला। "लेकिन मैं अभी आकर पहुंचा हूं। असल में मैं इसी शाम यहां आया हूं। तुमने देखा है मैंने आकर तुम्हारी सेवा में पहुंचने में देर नहीं की। मैं जानता था कि बृहस्पतिवार को लोगों को घर पर बुलाती हो।"

"देखा तुम्हारे बृहस्पतिवारों की प्रसिद्धि इंग्लैंड तक पहुंच गई है," ऑसमण्ड ने अपनी पत्नी से कहा।

"लार्ड वारबंटन की यह कृपा है कि वह इतनी जल्दी यहां चला आया है। हमें बहुत खुशी है," इज़ाबेल बोली।

"हां, किसी मनहूस सराय में बैठे रहने से तो यह बेहतर जगह है," ऑसमण्ड ने कहा।

"वह होटल बहुत अच्छा जान पड़ता है। मेरे खयाल में यह वही होटल है जहां मैं तुमसे चार वर्ष पहले मिला था। तुम्हें याद है हम पहली बार यहां रोम में ही मिले थे? अब वह बात पुरानी हो गई। याद है मैंने तुम्हें वहां गुड-बाई की थी?" लार्डशिप ने अपनी मेज़बान से पूछा। "वह कैपिटल का पहला कमरा था।"

"मुझे भी याद है," ऑसमण्ड बोला। "मैं उस समय वहीं था।"

"हां, मुझे भी याद है। तुम वहीं थे। मुझे रोम छोड़ने का बहुत दुःख था—इतना दुःख था कि एक तरह से वह एक दुःखमय याद बन गई थी। उसके बाद आज से पहले मैं कभी रोम नहीं आया। लेकिन मैं जानता था तुम यहां रहती हो," इज़ाबेल का पुराना दोस्त उससे कहता गया। "पर मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि मैंने अक्सर तुम्हारे बारे में सोचा है। रहने के लिए यह बहुत आकर्षक जगह होनी चाहिए," कहकर उसने इज़ाबेल के स्थायी घर पर चारों तरफ नज़र डाली। इज़ाबेल को उस नज़र में उसके पुराने सन्ताप की हल्की-सी छाया अवश्य नज़र आई होगी।

"हमें तुमसे कभी भी मिलकर प्रसन्नता होती," ऑसमण्ड ने शिष्टता के साथ कहा।

"बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं तब से इंग्लैण्ड से बाहर निकला ही नहीं था। एक महीना पहले तक तो मैं सोचता था कि मैं अब कभी शायद सफर करूंगा ही नहीं।"

"समय-समय पर मुझे तुम्हारे समाचार मिलते रहे हैं," इज़ाबेल बोली। ऐसी चीज़ों के लिए उसके पास जो अन्तर्दृष्टि थी, उससे उसने अनुमान लगा लिया था कि उससे फिर से मिलने का वारबर्टन के लिए क्या अर्थ हो सकता है।

"मुझे आशा है तुमने कुछ बुरा नहीं सुना। मेरी ज़िन्दगी एकदम खाली ही रही है।"

"इतिहास के बेहतरीन युगों की तरह," ऑसमण्ड ने जोड़ा। उसे लग रहा था कि एक मेज़बान के रूप में उसने अपना कर्तव्य पूरी लगन के साथ पूरा कर दिया है। अपनी पत्नी के पुराने मित्र के प्रति उसने जो शिष्टता बरती, उससे अधिक उचित या सन्तुलित व्यवहार नहीं हो सकता था। वह व्यवहार समयोचित और सुनिश्चित था—नहीं था, तो केवल प्रकृत नहीं था। लार्ड वारबर्टन ने, जो स्वयं काफी हद तक प्रकृत रहता था, यह न्यूनता अवश्य लक्ष्य की होगी। "मैं तुम्हें और मिसेज़ ऑसमण्ड को साथ छोड़ देता हूं," ऑसमण्ड ने फिर कहा। "तुम लोगों के कई पुराने संस्मरण होंगे जिनमें मैं कहीं नहीं आता।"

"मुझे डर है कि तुम बहुत कुछ खो दोगे।" लार्ड वारबर्टन ने उससे कहा। उसके स्वर से ऑसमण्ड की इस उदारता के प्रति अतिरिक्त उत्साह झलकता था। फिर वह इज़ाबेल की तरफ घूम गया और उसने दृष्टि में गहन से गहन चेतना लाकर उसे देखा, जो चेतना धीरे-धीरे और गम्भीर होती गई। "मैं सच में तुमसे मिलकर प्रसन्न हूं।"

"धन्यवाद। यह तुम्हारी कृपा है।"

"जानती हो तुम बदल गई हो—थोड़ी सी?"

"वह थोड़ा हिचकिचाई। "हां—काफी।"

"मेरा मतलब बुरे से नहीं है, लेकिन मैं अच्छे के लिए भी कैसे कह सकता हूं?"

"मेरा खयाल है मुझे यह बात तुमसे कहने में कोई बाधा नहीं है।"

"अरे मेरे लिए तो—यह एक लम्बा समय रहा है। यह दुःख की बात होगी अगर मेरे चेहरे से उसका असर ज़ाहिर न हो।" वे दोनों बैठ गए और इज़ाबेल ने उससे उसकी बहनों के बारे में पूछा। उसने उसके प्रश्नों का इस तरह उत्तर दिया जैसे उसे वे दिलचस्प लग रहे हों। कुछ क्षणों में इज़ाबेल ने भांप लिया—या उसे लगा कि उसने भांप लिया है—कि वह पहले की तरह अपनी भावना का

पूरा वज़न उस पर नहीं डालेगा। समय ने अपनी सांस फूंककर उसके दिल को थोड़ी हवा दे दी थी, हालांकि उसे एकदम ठण्डा नहीं किया था। इससे इज़ाबेल के मन में समय की कद्र एकाएक बढ़ गई। उसके मित्र का भाव सचमुच एक संतुष्ट व्यक्ति का-सा था, जो लोगों की, या कम-से-कम इज़ाबेल की, इस बात को जानने के लिए सराहना करता।

"एक बात है जो मैं अधिक विलम्ब किए बिना बताना चाहूंगा," वह बोला। "मैं रैल्फ टाउशेट को अपने साथ लाया हूं।"

"अपने साथ लाए हो ?" इज़ाबेल को बहुत आश्चर्य हुआ।

"वह होटल में है। वह इतना थका था कि बाहर नहीं आ सकता था। इस-लिए वह जाकर सो गया है।"

"मैं उससे मिलने जाऊंगी, "इज़ाबेल तुरन्त बोली।

"मुझे बिलकुल यही उम्मीद थी कि तुम ऐसा करोगी। मुझे पता था कि शादी के बाद तुम उससे अधिक नहीं मिलीं, और तुम्हारे सम्बन्धी वास्तव में कुछ-कुछ औपचारिक-से रहे हैं। इसीलिए मैं झिझक रहा था—एक—एक सकपकाए बर्तानवी की तरह।"

"मैं हमेशा की तरह रैल्फ को पसन्द करती हूं," इज़ाबेल ने जवाब दिया। 'लेकिन वह रोम क्यों आया है ?" उसकी घोषणा बहुत शालीन थी, लेकिन प्रश्न थोड़ा तीखा था।

"क्योंकि उसका स्वास्थ्य बहुत खराब है, मिसेज़ ऑसमण्ड।"

"रोम उस लिहाज से उसके लिए ठीक जगह नहीं है। उसने मुझे लिखा था कि वह सर्दियों में बाहर जाने की आदत छोड़ रहा है और अब इंग्लैंड में अपने घर में ही रहेगा—अपने शब्दों में वहां के कृत्रिम मौसम में।"

"बेचारे रैल्फ को कृत्रिमता रास नहीं आती। तीन सप्ताह पहले मैं उससे मिलने गार्डनकोर्ट गया था। देखा कि वह बुरी तरह बीमार है। वह हर साल बदतर होता गया है, और अब उसमें बिलकुल शक्ति नहीं रह गई है। उसने सिगरेट पीना भी छोड़ दिया है। कृत्रिम मौसम उसने ज़रूर बना रखा था—वह घर कलकत्ते जितना गर्म था। फिर भी उसके दिमाग़ में अचानक सिसली के लिए चल देने की बात समा गई थी। मैंने इस बात को सही नहीं समझा—न उसके डाक्टरों ने, और न ही उसके और दोस्तों ने। उसकी मां, जैसा कि तुम जानती होगी, अम-

रीका में है। इसलिए उसे मना करने वाला कोई नहीं था। उसके दिमाग में यह खयाल घर कर गया था कि वह सर्दियां कैटनिया में बिताए, तभी बच सकेगा। उसने कहा कि वह नौकर और साज सामान साथ ले जाएगा, जिससे वहां सुविधा से रह सके। लेकिन वास्तव में वह अपने साथ कुछ भी नहीं लाया। मैं चाहता था वह कम-से-कम जहाज़ ले जाए ताकि थकान से बच सके। लेकिन उसने कहा कि उसे समुद्र से नफरत है और वह रास्ते में रोम में रुकना चाहता है। उसके बाद, यद्यपि मुझे यह सब बेकार लग रहा था, मैंने उसके साथ आने की योजना बना ली। मैं उस तरह से व्यवहार कर रहा हूं—तुम उसे अमरीका में क्या कहते हो ?"—एक मॉडरेटर की तरह। रैल्फ अब पहले से काफी नरम हो गया है। हमें इंग्लैंड से चले पन्द्रह दिन हो गए हैं और रास्ता भर उसकी तबीयत बहुत खराब रही है। वह गर्म नहीं रह सकता था और हम जितना और दक्खिन की तरफ आ रहे थे, उतनी ही उसे और ठण्ड महसूस हो रही थी। उसके साथ एक अच्छा आदमी है, लेकिन मुझे डर है कि इन्सानी सहायता से अब उसका कुछ नहीं बन सकता। मैं चाहता था कि वह अपने साथ किसी चतुर आदमी को लाता—मेरा मतलब है किसी तेज़ युवा डाक्टर को—लेकिन वह यह बात सुनता ही नहीं। तुम बुरा न मानो, तो मैं कहूंगा कि मिसेज़ टाउशेट के अमरीका जाने का यह बहुत असाधारण समय था।"

इज़ाबेल ने बहुत उत्कण्ठा के साथ सब सुना। उसके चेहरे पर दर्द और आश्चर्य की रेखाएं उभर आई थीं।" मेरी आंटी एक निश्चित अवधि के बाद वहां जाती हैं, और कोई भी बात उन्हें इससे रोक नहीं सकती। जब वह तारीख आती है, तो वे चल देती हैं। मेरा खयाल है कि रैल्फ मर भी रहा होता, तो वे अपने वक्त पर चल देतीं।"

"मुझे कभी-कभी लगता है कि वह सचमुच मर रहा है," लार्ड वारबर्टन बोला।

इज़ाबेल एकाएक खड़ी हो गई। "तब तो मैं उसके पास अभी जाऊंगी।"

उसने इज़ाबेल को रोका। वह अपनी बातों के इस प्रभाव से थोड़ा अस्थिर हो गया था "मेरी इस बात का यह मतलब नहीं था कि आज रात को ही ऐसा हो सकता है। इसके विपरीत, आज गाड़ी में वह बहुत बेहतर महसूस कर रहा था। इस खयाल से कि हम रोम पहुंच रहे हैं—तुम जानती हो कि उसे रोम कितना

पसन्द है—उसे बहुत शक्ति मिल रही थी। थोड़ी देर पहले जब मैंने उससे गुड-नाइट की, तो उसने बताया कि वह चाहे बहुत थका है, पर बहुत खुश भी है। तुम उससे मिलने सुबह जाना। मेरे कहने का मतलब सिर्फ इतना ही है कि मैंने उसे नहीं बताया कि मैं यहां आ रहा हूं, और उससे विदा लेने तक मैंने ऐसा सोचा भी नहीं था। फिर मुझे याद आया कि उसने बताया था तुम एक शाम लोगों को घर पर बुलाती हो, और कि वह यही बृहस्पतिवार की शाम होती है। मुझे इससे यह सूझा कि मैं तुम्हें आकर बता दूं कि वह यहां है, और कि तुम्हें उसके यहां आने तक इन्तजार में नहीं रहना चाहिए। मेरा खयाल है उसने मुझसे कहा था कि उसने तुम्हें लिखा नहीं है।" इज़ाबेल को यह लार्डवारबर्टन से कहने की ज़रूरत नहीं थी कि वह उसके कहने के अनुसार ही कार्य करेगी। वह वहां बैठी ऐसे लग रही थी जैसे एक पंखयुक्त प्राणी को पकड़ कर रोक लिया गया हो। "अलावा इसके मैं तुम्हें अपनी ओर से भी मिलना चाहता था," उसके मेहमान ने जोड़ा।

"मुझे रैल्फ की यह योजना समझ नहीं आई। मुझे यह बहुत दुःसाहसपूर्ण नज़र आती है," इज़ाबेल बोली, "मुझे यह सोचकर खुशी होती थी कि वह गार्डन-कोर्ट की मोटी दीवारों के अन्दर है।"

"वह वहां बिलकुल अकेला था। वे मोटी दीवारें ही उसकी एकमात्र साथी थी।"

"तुम उससे मिलने गए, यह तुम्हारी बहुत कृपा थी।"

"अरे, मेरे पास तो करने को कुछ था ही नहीं," लार्डबर्टन बोला।

"इसके विपरीत, हमने सुना है कि तुम कई महान् कार्य कर रहे हो। सब लोग तुम्हारा ज़िक्र एक महान् राजनीतिज्ञ के रूप में करते हैं। मैं अक्सर ही 'टाइम्स' में तुम्हारा नाम देखती हूं। वह पत्र वैसे तुम्हें सम्मान देता प्रतीत नहीं होता। तुम स्पष्टतः अब भी हमेशा की तरह उग्र और रेडिकल हो।"

"मैं अब अपने को उतना उग्र महसूस नहीं करता। तुम्हें पता ही है कि सारी दुनिया अब मेरे वाली बात कहने लगी है। लन्दन से पूरा रास्ता टाउशेंट और मैं एक तरह की पार्लियामेंट्री बहस करते आए हैं। मैंने उससे कहा कि वह अन्तिम टोरी है, और उसने कहा कि मैं गौथ्स का राजा हूं। कहता है अपने बाहरी व्यक्तित्व में भी मैं पूर्णतया उस जंगली जैसा ही नज़र आता हूं। इससे तुम देख

सकती हो कि उसमें अभी तक जान बाकी है।"

इज़ाबेल को रैल्फ के बारे में बहुत से प्रश्न पूछने थे, लेकिन उसने अपने को पूछने से रोके रखा। सोचा वह कल जाकर स्वयं ही मिल आएगी। उसे लग रहा था कि थोड़ी देर में लार्ड वारबर्टन इस विषय से ऊब जाएगा—शायद उसका इरादा कुछ अन्य विषयों पर भी बात करने का था।

इज़ाबेल को ज़्यादा-ज़्यादा यह लग रहा था कि उस आदमी ने अपने को संभाल लिया है। इससे भी बड़ी बात यह थी कि वह यह बिना किसी कड़ुवाहट के सोच रही थी। पहले वह व्यक्ति उसके लिए एक हठ और एक दबाव का प्रतिरूप रहा था—एक ऐसा प्रभाव जिसे रोकने और जिससे तर्क करने की आवश्यकता थी। इसलिए उसे फिर से सामने पाकर उसे एक विपत्ति की आशंका हुई थी। लेकिन अब वह आश्वस्त हो गई थी। वह समझ गई थी कि अब वह सिर्फ अच्छे सम्बन्ध बनाए रखना चाहता है। चाहता है कि इज़ाबेल यह समझ ले कि उसने उसे क्षमा कर दिया है, और कि सीधे उन बातों का हवाला देना उसकी सुरुचि के खिलाफ है। यह निःसन्देह एक प्रकार का बदला नहीं था। इज़ाबेल को इस प्रकार का सन्देह भी नहीं था कि वह यह प्रदर्शित करके उसे सज़ा देना चाहता है कि उसका भ्रम-निवारण हो गया है। इज़ाबेल ने उसके साथ न्याय करने के लिए यह मान लिया कि वह केवल यह दिखाकर अपने प्रति उसकी सद्भावना जानना चाहता है कि उसने स्थिति को स्वीकार कर लिया है।

वह एक स्वस्थ स्वीकृति थी—एक पुरुष की स्वीकृति, जिसमें भावुकता के घावों के लिए कोई स्थान नहीं था। ब्रिटिश राजनीति ने ही जैसे उसका इलाज कर दिया था। वह जानती थी कि ऐसा होगा। वह उन भाग्यवान लोगों के बारे में सोचकर स्पर्धा करती थी जो स्वतन्त्रतापूर्वक क्रियाशीलता के पानी में डुबकी लगाकर अपने घाव भर सकते हैं। लार्ड वारबर्टन ने अतीत के बारे में बातें ज़रूर कीं, लेकिन किसी विशेष तात्पर्य से नहीं। उसने यहां तक कहा कि इससे पहले रोम में हुई उनकी भेंट कितनी मनोरंजक थी। उसने यह भी कहा कि उसे यह सुनकर बहुत खुशी हुई थी कि उसने विवाह कर लिया है, और कि मिस्टर ऑसमंड से मिलकर वह बहुत प्रसन्न हुआ है—पहली बार उससे मिलना तो न मिलने के ही बराबर था। उसने इज़ाबेल को विवाह के अवसर पर पत्र नहीं लिखा था। लेकिन इसके लिए उसने इज़ाबेल से क्षमा नहीं मांगी। एक ही बात जो

उसकी बातों से झलक रही थी, वह यह कि दोनों पुराने और घनिष्ठ मित्र हैं। थोड़ी देर की खामोशी के बाद, जिस बीच वह सिर्फ मुस्कराता रहा, उसने आस-पास बैठे लोगों पर ऐसे नज़र डाली जैसे वे वहां बैठे 'बूझो तो जानें' का मासूम कस्बाती खेल खेल रहे हों, और बिलकुल एक घनिष्ठ मित्र की ही तरह कहा, "बहरहाल, अब तो मेरा ख्याल है तुम बहुत प्रसन्न…और वह सब जो इसके साथ कहा जाता है।"

इज़ाबेल सहसा हंस दी। लार्ड वारबर्टन की बात का स्वर उसे हास्यास्पद-सा लगा। "तुम्हारा ख्याल है कि अगर मैं प्रसन्न नहीं हूं, तो मैं यह बात तुम्हें बता दूंगी ?"

"कह नहीं सकता। लेकिन मैं नहीं जानता कि क्यों नहीं बता दोगी ?"

"तो मैं बताती हूं। सौभाग्यवश मैं बहुत प्रसन्न हूं।"

"तुम्हारा घर बहुत सुन्दर है।"

"हां, बहुत सुन्दर है। लेकिन यह दक्षता मेरी नहीं है—मेरे पति की है।"

"तुम्हारा मतलब है इसकी व्यवस्था उसने की है ?"

"हां। जब हम यहां आए थे, तो यह कुछ भी नहीं था।"

"वह बहुत होशियार होगा।"

"वह सजावट में बहुत दक्ष है," इज़ाबेल बोली।

"आजकल इस तरह की चीज़ों का बहुत फैशन है। लेकिन तुम्हारी अपनी भी तो कुछ रुचि होगी।"

"चीज़ें ठीक से लग जाएं, तो मुझे बहुत खुशी होती है। लेकिन मेरे अपने कोई विचार नहीं हैं। मैं अपनी तरफ से कोई सुझाव नहीं दे सकती।"

"तुम्हारा मतलब है कि तुम केवल लोगों के सुझाव स्वीकार कर लेती हो ?"

"अधिकांशतः। बहुत खुशी से।"

"यह जानकर मुझे खुशी हुई। मैं भी अपनी तरफ से एक सुझाव देना चाहता हूं।"

"यह तुम्हारी मेहरबानी होगी। लेकिन मैं यह ज़रूर कहूंगी कि कुछ छोटी-छोटी बातों में मैं ज़रूर दिलचस्पी लेती हूं। उदाहरण के तौर पर मैं यहां कुछ लोगों से तुम्हारा परिचय कराना चाहूंगी।"

"कृपया अभी रहने दो। मैं यहां बैठना अधिक पसन्द करूंगा। हां, उस नीली

पोशाक वाली नवयुवती से तुम चाहो, तो मेरा परिचय करा दो। उसका चेहरा बहुत आकर्षक है।"

"वह जो उस सुन्दर नवयुवक से बात कर रही है? वह मेरे पति की बेटी है।"

"तुम्हारा पति बहुत खुशकिस्मत आदमी है। कितनी प्यारी-सी छोटी लड़की है।"

"तुम्हें उससे ज़रूर परिचित होना चाहिए।"

"एक क्षण बाद—बहुत खुशी के साथ। मुझे उसे यहां से देखना बहुत अच्छा लग रहा है।" पर शीघ्र ही उसने उस लड़की की तरफ देखना छोड़ दिया। उसकी आंखें बार-बार मिसेज़ ऑसमण्ड की तरफ लौट आती थीं। "तुम्हें पता है कि वह बात जो अभी मैंने तुमसे कही थी, कि तुम बदल गई हो, गलत है?" अब वह बोला। "···अब मुझे लग रहा है कि तुम बिल्कुल वैसी ही हो।"

"फिर भी विवाह मुझे एक बहुत बड़ा परिवर्तन लगता है," इज़ाबेल ने हल्की प्रसन्नता के भाव से कहा।

"जितना परिवर्तन लोगों में आ जाता है, उससे बहुत कम तुम में आया है। तुम्हें पता है मैं अभी इस झंझट में नहीं पड़ा।"

"मुझे जानकर आश्चर्य हो रहा है।"

"तुम्हें आश्चर्य नहीं होना चाहिए, मिसेज़ ऑसमण्ड। लेकिन मैं शादी करना ज़रूर चाहता हूं," उसने अधिक सहजता के साथ जोड़ा।

"यह तो बहुत आसान बात है," इज़ाबेल ने उठते हुए कहा। बाद में उसने सोचा—और यह दर्द सम्भवत: उसके चेहरे से साफ नज़र आ रहा था—कि कम-से-कम उसे यह बात कहने का अधिकार नहीं था। शायद यह इस बात के स्पष्टत: नजर आने के कारण ही था कि लार्ड वारबर्टन ने उदारतावश उसका ध्यान इस ओर नहीं दिलाया कि उसने भी तो इसमें उसे सहयोग नहीं दिया।

एडवर्ड रोज़ियर इस बीच पैंज़ी की चाय की मेज़ के पास एक चौकी पर बैठ गया था। उसने पहले तो यह ज़ाहिर किया कि वह उसके साथ साधारण किस्म की बातें कर रहा है। पैंज़ी ने उससे पूछा कि वह नया व्यक्ति कौन है जो उसकी सौतेली मां के साथ बात कर रहा है।

"वह एक अंग्रेज लार्ड है," रोज़ियर बोला, "इससे अधिक मैं कुछ नहीं

जानता।"

"सोचती हूं उसे चाय की ज़रूरत न हो! अंग्रेज़ चाय के बहुत शौकीन होते हैं।"

"इस बात को छोड़ो। मुझे तुमसे कुछ खास बात कहनी है।"

"इतना ऊंचे मत बोलो—सब लोग सुन लेंगे," पैंज़ी बोली।

"वे नहीं सुनेंगे अगर तुम लगातार इसी तरह देखती रहो जैसे ज़िन्दगी में तुम्हारी एक मात्र इच्छा यही हो कि केतली में पानी उबल जाय।"

"वह अभी भरी है। नौकरों को कुछ पता नहीं चलता,"—और पैंज़ी ने अपनी ज़िम्मेदारी के बोझ से उसांस भरी।

"तुम जानती हो तुम्हारे पिता ने मुझसे अभी क्या कहा है? कहा है कि एक सप्ताह पहले तुमने मुझसे जो बात कही थी, उससे तुम्हारा वह मतलब नहीं था।"

"मेरा उन सब बातों से वही मतलब नहीं होता जो मैं कहती हूं। एक छोटी-सी लड़की के लिए यह सम्भव भी क्योंकर है? लेकिन जो कुछ मैं तुमसे कहती हूं, उससे मेरा वही मतलब होता है।"

"उसने मुझसे कहा है कि तुम मुझे भूल चुकी हो।"

"अरे नहीं, मैं भूलती कभी नहीं," पैंज़ी की स्थिर मुस्कराहट में साथ दांत दिखाई दे गए।

"तब सब कुछ ठीक है?"

"अरे नहीं, सब कुछ ठीक नहीं है। पापा मुझसे सख्त नाराज़ रहे हैं।"

"उन्होंने तुमसे क्या कहा है?"

"उन्होंने मुझसे पूछा था कि तुमने मुझसे क्या कहा है। मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया। तब उन्होंने मुझे मना किया कि मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती।"

"तुम्हें इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए।"

"अरे नहीं, मुझे ज़रूर परवाह करनी चाहिए। मैं पापा की बात नहीं टाल सकती।"

"मेरे जैसे प्यार करने वाले आदमी की खातिर भी नहीं—जिससे तुम भी प्यार करने का बहाना करती हो?"

पैंज़ी ने केतली का ढक्कन उठाया, और पलभर बरतन के अन्दर देखती रही, फिर उसने उसकी सुगन्धित गहराई में सात शब्द डाल दिए। कहा, "मैं भी तुमसे

उतना ही प्यार करती हूं।"

"इससे मुझे क्या लाभ होगा ?"

"ओह," पैंज़ी ने अपनी सुन्दर और अस्थिर आंखें उठाकर कहा, "यह मैं भी नहीं जानती।"

"तुम मुझे निराश कर रही हो," रोज़ियर कराहा।

पैंज़ी कुछ देर चुप रही। फिर उसने चाय की एक प्याली नौकर को पकड़ा दी। "अब और बात मत करो।"

"क्या तुम मुझे इतना ही सन्तोष दे सकती हो ?"

"पापा ने कहा था कि मुझे तुमसे बात भी नहीं करनी है।"

"तो क्या तुम इस तरह मेरा बलिदान कर दोगी ? यह बहुत ज्यादती होगी।"

"मैं चाहूंगी कि तुम थोड़ा इन्तज़ार करो," लड़की ने धीमे स्वर में कहा। फिर भी उसमें हल्की कंपकंपी स्पष्ट थी।

"तुम मुझे थोड़ी आशा बंधा दो, तो मैं अवश्य इन्तज़ार करूंगा। लेकिन तुम तो मेरी जान ही लिए ले रही हो।"

"नहीं, मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं," पैंज़ी ने कहा।

"वह कोशिश करके किसी और से तुम्हारी शादी कर देगा।"

"वह मैं कभी नहीं होने दूंगी।"

"फिर हमें इन्तज़ार किस चीज़ का करना है ?"

वह फिर हिचकिचाई। "मैं मिसेज़ ऑसमण्ड से बात करूंगी। वे हमारी सहायता करेंगी।"

"वह हमारी बहुत ज़्यादा सहायता नहीं करेगी। वह डरती है।"

"किससे डरती है ?"

"मेरा ख्याल है, तुम्हारे पिता से।"

पैंज़ी ने अपना छोटा-सा सिर हिला दिया। "वे किसी से नहीं डरतीं। हमें धीरज रखना चाहिए।"

"ओह, कितना बुरा शब्द है यह !" रोज़ियर कराहा। वह बहुत अव्यवस्थित हो गया था। अच्छे सामाजिक व्यवहार को भूलकर उसने अपना माथा हाथों में पकड़ लिया और एक उदास शालीनता से उसे सहारा दिए नीचे गालीचे को देखता रहा। तभी उसे अपने आस-पास हलचल का अहसास हुआ। जैसे ही

उसने आंखें उठाईं, उसने देखा कि पैंज़ी किसी को अभिवादन कर रही है—उसके नन्हे-से अभिवादन का ढंग अभी तक कान्वेंट वाला ही था। वह व्यक्ति था अंग्रेज़ लार्ड जिससे मिसेज़ ऑसमण्ड उसका परिचय करा रही थी।

३९

हमारे विचारवान् पाठक को सम्भवतः इस बात से आश्चर्य नहीं होगा कि रैल्फ टाउशेट अपनी कज़िन से उसकी शादी के बाद उतना नहीं मिला था जितना पहले मिला करता था—इजाबेल के विवाह को लेकर उसका दृष्टिकोण आत्मीयता-पूर्ण सहज स्वीकृति का नहीं था। उसने अपने मन की बात इज़ाबेल से कह दी थी और उसके बाद इज़ाबेल ने उसके साथ उस विषय में बात नहीं उठानी चाही थी। उस बातचीत ने उनके सम्बन्धों में एक समय—रेखा खींच दी थी। उस बातचीत से जो अन्तर आया था, उसकी रैल्फ को आशंका तो थी, पर आशा नहीं थी। उससे अपने विवाह के सम्बन्ध में इज़ाबेल का उत्साह ठण्डा नहीं पड़ा था, पर उनकी आपसी मित्रता खासे संकट में पड़ गई थी। उसके बाद गिलबर्ट के सम्बन्ध में रैल्फ की धारणा को लेकर उनमें कभी बात नहीं हुई, और इस तरह उस विषय को एक पवित्र खामोशी से ढांपकर उन्होंने आपसी व्यवहार के खुलेपन को कुछ हद तक बनाये रखा। फिर भी कहीं एक अन्तर था जिसे रैल्फ काफी हद तक महसूस करता था। उसे उस बातचीत से जो हासिल हुआ था वह यह था कि इज़ाबेल ने उसे न तो उसके लिए क्षमा किया था, और न ही क्षमा करने जा रही थी। पर इज़ाबेल सोचती थी कि उसने रैल्फ को क्षमा कर दिया है—कि वह इस बात को महत्त्व नहीं देती। क्योंकि वह एक-साथ बहुत उदार और बहुत अभिमानिनी थी, इसलिए उसकी इस धारणा में कुछ तथ्य भी था। रैल्फ की बात सच निकले या न निकले—उसने उसे एक ऐसा नुकसान पहुंचाना चाहा था जिसे एक स्त्री कभी नहीं भूल सकती। ऑसमण्ड की पत्नी के रूप में वह अब कभी रैल्फ की अच्छी मित्र नहीं रह सकेगी। यदि इस विवाह में उसे वह सुख-सुविधा मिल गई जिसकी उसे आशा थी, तो वह उस व्यक्ति से केवल घृणा ही कर सकेगी जिसने पहले से ही इस प्रिय वरदान

में बाधा डालनी चाही थी। पर यदि रैल्फ की दी चेतावनी सही निकली, तो उसकी यह कसम—कि वह यह बात कभी उसे नहीं जानने देगी—उसकी आत्मा पर इतना बोझ डाले रहेगी कि वह उसीके लिए उससे घृणा करेगी। अपनी कज़िन की शादी के बाद पहला साल रैल्फ के मन में भयावह आशंकाएं उठती रही थीं। किसीको उसका यह चिन्तन बीभत्स लगे, तो उससे कहा जा सकता है कि उस आदमी की सेहत उन दिनों बहुत अच्छी नहीं थी। अपने मन के दिलासे के लिए उसने सोच रखा था कि वह अपना व्यवहार बहुत अच्छा रखेगा। इज़ाबेल की ऑसमण्ड से शादी जून के महीने में फ्लोरेंस में हुई थी और वह उस अवसर पर वहां उपस्थित था। मिसेज़ टाउशेट ने उसे बताया था कि पहले इज़ाबेल का विचार अमरीका जाकर शादी करने का था, पर बाद में यह सोचकर कि वह इस मामले में बहुत सादगी बरतना चाहती है, और उसका तरीका यही है कि वह सबसे पास के गिरजे में जाकर थोड़े-से-थोड़े समय में शादी कर ले, उसने अपना विचार बदल लिया था—हालांकि ऑसमण्ड यही ज़ाहिर कर रहा था कि वह शादी के लिए कितनी भी लम्बी यात्रा करने को तैयार है। इसलिए शादी एक बहुत गरम दिन वहां के छोटे-से अमरीकन गिरजे में हुई। उपस्थित थे रैल्फ और मिसेज़ टाउशेट, पैंजी ऑसमण्ड और काउंटेस जैमिनी। इस समारोह में अपेक्षाकृत अधिक सादगी इसलिए भी रही कि वे दो व्यक्ति जिनके उस अवसर पर उपस्थित रहने की आशा थी और जिनसे उसमें कुछ चमक-दमक आ सकती थी, उस समय वहां नहीं थे। मैडम मरले को निमन्त्रण भेजा गया था, पर उसने रोम से निकलने में विवशता प्रकट करते हुए सुन्दर शब्दों में क्षमा मांग ली थी। हेनरीटा की, अमरीका से चलने की योजना अपने काम-काज की वजह से बीच में ही रह गई थी। इसका पता गुडवुड ने दे दिया था, इसलिए हेनरीटा को निमन्त्रण भेजा ही नहीं गया था। हेनरीटा ने भी एक पत्र लिखा था, यद्यपि मैडम मरले जैसी सुन्दर भाषा में नहीं। उसने लिखा कि वह अतलांतिक पार कर सकती, तो उस अवसर पर एक गवाह के रूप में ही नहीं, एक आलोचक के रूप में भी उपस्थित रहती। वह कुछ दिन बाद यूरोप आई और पतझड़ में इज़ाबेल से पेरिस में मिली जहां उसने इस विषय में अपनी आलोचनात्मक प्रतिभा का कुछ ज़्यादा ही खुलकर उपयोग किया। ऑसमण्ड ने, जो कि उसके कटाक्षों का मुख्य विषय था, इस पर सख्त एतराज़ किया। इससे हेनरीटा को इज़ाबेल से कहना पड़ा कि उनके बीच एक दीवार खिंच गई है। "यह तुम्हारे विवाह करने के कारण नहीं,

इस खास आदमी से विवाह करने के कारण है," उसने इज़ाबेल को बता देना अपना कर्त्तव्य समझा। रैल्फ की तरह संकोच या बाधा न रखते हुए भी वह अपने को अपनी आशा से कहीं अधिक रैल्फ से सहमत पा रही थी। पर हेनरीटा की यह दूसरी यूरोप-यात्रा बिल्कुल निष्फल नहीं रही। उन्हीं दिनों, जब ऑसमण्ड हेनरीटा को लेकर एतराज उठा रहा था और इज़ाबेल उससे कह रही थी कि वह उसकी मित्र के प्रति बहुत अनुदार हैं, वहां मिस्टर बैटलिंग का आविर्भाव हुआ और उसने हेनरीटा से प्रस्ताव किया कि वे दोनों जल्दी से स्पेन हो आएं। हेनरीटा ने स्पेन से अपने मेगज़ीन को जो पत्र भेजे, वे उसके अब तक प्रकाशित पत्रों में सबसे अच्छे थे—विशेष रूप से आल्हाम्ब्रा से लिखा एक पत्र 'बंजर और चांदनी' जिसे उसका मास्टरपीस माना गया। इज़ाबेल को निराशा हुई कि ऑसमण्ड हेनरीटा को केवल एक दिलचस्प लड़की मानकर क्यों नहीं चल सका। उसे यह भी लगा कि कहीं ऑसमण्ड की विनोदवृत्ति—या हास्यवृत्ति—में ही तो दोष नहीं है। फिर भी उसका ख्याल था कि हेनरीटा के विक्षोभ से उसके अपने वर्तमान सुख में अन्तर नहीं पड़ता। ऑसमण्ड को उन दोनों की मित्रता बहुत असंगत जान पड़ती थी—उसका ख्याल था कि वे एक-दूसरी से बहुत भिन्न हैं। उसका ख्याल था कि मिस्टर बैंटलिंग की सहचारिणी बहुत साधारण दर्जे की महिला है, और साथ ही बहुत भ्रष्ट भी है। इस दूसरे आरोप का इज़ाबेल ने इतना कड़ा विरोध किया कि ऑसमण्ड को फिर से अपनी पत्नी की कुछ अभिरुचियों की विचित्रता पर आश्चर्य हुआ। इज़ाबेल ने इसकी व्याख्या इस रूप में की कि अपने से बिल्कुल अलग तरह के लोगों को जानने में उसकी बहुत दिलचस्पी है। "तो तुम अपनी धोबिन से भी मित्रता क्यों नहीं कर लेतीं ?" ऑसमण्ड ने पूछा। इज़ाबेल ने इसका उत्तर दिया कि उसकी धोबिन उसमें उतनी दिलचस्पी नहीं लेगी जितनी कि हेनरीटा लेती है।

विवाह के बाद प्रायः दो साल रैल्फ इज़ाबेल से नहीं मिल सका। जो शुरू की सर्दियां इज़ाबेल ने रोम में बिताईं, उन दिनों वह सानरेमो में रहा। वसन्त में उसकी मां भी वहीं चली आईं। बाद में बैंक के काम आज की देख-भाल के लिए वे उसे साथ इंग्लैण्ड ले गईं—हालांकि इस काम के लिए वे उसे राजी नहीं कर सकीं। रैल्फ ने सानरेमो का वह मकान लीज़ पर ले रखा था। उस छोटे-से विला में वह एक सर्दियां और रहा। पर दूसरे साल अप्रैल के अन्त में वह रोम चला आया।

इज़ाबेल से मिलने की उस समय उसके मन में उत्कट अभिलाषा थी—उसकी शादी के बाद वह पहली बार उससे मिला। बीच-बीच में इज़ाबेल उसे पत्र लिखती रही थी। पर उसके पत्रों से वह जो जानना चाहता था, नहीं जान पाता था। उसने अपनी मां से भी जानना चाहा था कि इज़ाबेल का जीवन कैसा कट रहा है। उसकी मां ने सिर्फ इतना ही उत्तर दिया था कि जैसा वह चाहती थी, ठीक वैसा ही कट रहा है। मिसेज़ टाउशेट के पास अदृश्य को देख पाने की प्रतिभा नहीं थी, और इज़ाबेल से उनकी अब घनिष्ठता भी नहीं रही थी क्योंकि वे उससे बहुत कम मिलती थीं। इज़ाबेल बहुत सम्मानपूर्ण ज़िन्दगी व्यतीत करती जान पड़ती थी, फिर भी मिसेज़ टाउशेट का ख्याल था कि उसने बहुत गलत शादी की है। फ्लोरेंस में गाहे-बगाहे उनकी काउंटेस जेमिनी से मुठभेड़ हो जाती थी, हालांकि वे उससे बचना चाहती थी। काउंटेस को देखकर उन्हें ऑसमण्ड की, और ऑसमण्ड के नाम से इज़ाबेल की याद हो आती थी। उन दिनों काउंटेस को लेकर ज़्यादा अपवाद नहीं था, पर इसका मिसेज़ टाउशेट की नज़र में कुछ अर्थ नहीं था क्योंकि इससे यही सिद्ध होता था कि पहले उसका कितना अपवाद रहा है! मैडम मरले को देखकर उन्हें सीधे इज़ाबेल की याद आ सकती थी, पर इधर मैडम मरले के साथ उनके सम्बन्ध में एक स्पष्ट परिवर्तन आ गया था। मिसेज़ टाउशेट ने बिना किसी घुमाव-फिराव के मैडम मरले को बता दिया था कि इस मामले में उसने बहुत चालबाजी बरती है। मैडम मरले, जो कभी किसी से नहीं झगड़ती थी, बल्कि किसी भी व्यक्ति को इस लायक ही नहीं समझती थी, और जो बरसों बिना झुंझलाए मिसेज़ टाउशेट के साथ रहने का चमत्कार दिखा चुकी थी, इस बात पर सहसा बिगड़ उठी थी, और उसने कहा था कि वह इसका जवाब देकर ओछी नहीं बनना चाहती। फिर भी उसने (बिना ओछी पड़े) कहा कि उसका व्यवहार बहुत सीधा रहा है; वह जो देखती रही है, उसीमें विश्वास करती रही है। उसे लगता था कि इज़ाबेल विवाह के लिए उत्सुक नहीं है, और न ही ऑसमण्ड अपनी चाह प्रकट करने के लिए उत्सुक है। (ऑसमण्ड के बार-बार इज़ाबेल से मिलने आने का अर्थ इतना ही था कि वह अपने घर में बहुत ऊब जाता था और केवल मनोरंजन के लिए वहां से चला आता था।) इज़ाबेल ने अपनी भावना अपने तक ही सीमित रखी थी, और मिस्र और यूनान की यात्रा से उसने एक तरह से उसकी आंखों में धूल डाली थी। अब विवाह हो गया था, तो ठीक ही था—इसमें स्कैण्डल की कोई बात नहीं थी। पर कि उसने

इसमें कोई दोहरी या इकहरी चाल चली, यह आक्षेप वह सुनने को तैयार नहीं थी। निःसन्देह मिसेज टाउशेट के इस रुख से उसके बरसों के निखरे स्वभाव को जो चोट पहुंची, उसीके कारण वह कई महीनों के लिए इंग्लैण्ड में जा रही, क्योंकि वहां कोई उस पर आक्षेप करने वाला नहीं था। मिसेज टाउशेट ने उसके साथ ज्यादती की थी—ऐसी ज्यादती जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता था। पर वह यह दुःख सहकर भी खामोश थी—उसके आत्म सम्मान में अपनी ही एक ऊंचाई थी।

रैल्फ अपनी आंखों से सब कुछ देखना चाहता था, पर उसे फिर से लग रहा था कि इज़ाबेल को चेतावनी देकर उसने कितनी बड़ी बेवकूफी की थी! उसने एक गलत पत्ता चल दिया था जिससे अब वह बाजी हार गया था। उसे अब न कुछ नजर आएगा, न पता चलेगा—क्योंकि इज़ाबेल उसके सामने हमेशा एक नकली चेहरा लगाए रहेगी। उसे चाहिए यह था कि उसके ब्याह की बहुत सी खुशी जाहिर करता ताकि बाद में, पैंदा निकल जाने पर इज़ाबेल उससे यह कहने का सन्तोष प्राप्त कर सकती कि वह भी कितना बेसमझ साबित हुआ। इज़ाबेल की वास्तविक स्थिति को जानने के लिए वह खुशी से यह विशेषण स्वीकार कर लेता। अब इज़ा-बेल न तो उसकी आशंकाओं के लिए उसे ताना देती थी, और न ही यह दिखावा करती थी कि उसका अपना विश्वास सही था। उसने जो चेहरा चढ़ा रखा था, वह उसके असली चेहरे को पूरी तरह छिपाए था। उस चेहरे पर लिखी गम्भीरता इतनी स्थिर और मशीनी-सी थी कि वह एक भाव न लगकर, एक अभिनय, बल्कि एक विज्ञापन जान पड़ती थी। उसका बच्चा गुजर गया था—यह एक शोक था। पर वह इस शोक की भी बात नहीं करती थी, क्योंकि उसमें जितना कुछ कहने को था, अब वह रैल्फ से नहीं कह सकती थी। फिर वह एक बीती घटना थी—छः महीने पहले की—और वह मातम के चिह्न उतार चुकी थी। वह दुनियादारी की जिन्दगी बिताती लग रही थी—लोग अक्सर उसकी 'आकर्षक स्थिति' की बात करते थे। लोगों को लगता था कि वह स्पर्धेय जीवन बिताती है—कुछ लोग तो उससे परिचित होना ही बड़ी बात समझते थे। उसका घर हरएक के लिए खुला नहीं था और सप्ताह में एक शाम वह कुछ चुने हुए लोगों को अपने यहां बुलाती थी। वह काफी शान के साथ रहती थी, पर यह चीज उसकी मण्डली में रहकर ही जानी जा सकती थी। यूं उसके और उसके पति के साधारण जीवन में ऐसा कुछ नहीं था जिसे

देखकर प्रशंसा, आलोचना या अचम्भे का भाव मन में जागे। रैल्फ के ख्याल में इसका श्रेय ऑसमण्ड को था, क्योंकि चाहकर एक खास प्रभाव पैदा करने का गुण इज़ाबेल में नहीं था। रैल्फ को लगता कि इज़ाबेल अब प्यार करती है गति को, आह्लाद को, देर तक बाहर रहने को, घुड़सवारी को, थकान को। उसमें एक उत्सुकता है, दावतों पर जाने की, मनोरंजन पाने की, यहां तक कि ऊबने की भी—और इसके साथ ही नये लोगों से परिचित होने की, चर्चित लोगों से मिलने की, रोम के आस-पास घूमने की और वहां के प्राचीन समाज के सबसे गदले खंडहरों से एक सम्बन्ध स्थापित करने की। इस सबमें वह विवेक नहीं था जो पहले उस लड़की की सर्वतोमुखी विकास की कामना में नज़र आता था, और—जिस पर वह फब्तियां कसा करता था। अब इज़ाबेल के कुछ आवेगों में एक ऐसी आक्रामकता थी, उसके कुछ प्रयोगों में एक ऐसी क्रूरता थी, कि रैल्फ को देखकर आश्चर्य होता था। उसे लगता कि इज़ाबेल अब पहले से तेज बोलती है, तेज़ चलती है और सांस भी तेज़ लेती है। जहां पहले वह विशुद्ध सत्य के लिए उत्सुक रहती थी, वहां अब अतिशयोक्तियों में जीने लगी थी। जहां पहले वह सहज मतभेद के बौद्धिक विलास में दिलचस्पी लेती थी (वह सबसे अधिक सुन्दर तब नज़र आती थीज ब तर्क करते हुए उसे मुंह-की खानी पड़ती और वह उस आघात को एक पंख की मार की तरह बुहार देती), वहां अब लगता था कि उसे कुछ भी ऐसा नहीं लगता जिस पर मतभेद रखने या सहमत होने की ज़रूरत हो। उसकी उत्सुकता का स्थान एक उदासीनता ने ले लिया था, पर अपनी उदासीनता के बावजूद उसकी व्यस्तता पहले से कहीं बढ़ गई थी। वह पहले जितनी ही दुबली लगती थी—और पहले से अधिक सुन्दर—इस लिहाज़ से वह पहले से बड़ी ज़रा नहीं लगती थी। फिर भी उसकी व्यक्तिगत व्यवस्था में ऐसी अतिरिक्तता और चमक-दमक आ गई थी जिससे उसके सौन्दर्य में एक उद्धतता का स्पर्श नज़र आता था। बेचारी संवेदनशील इज़ाबेल—यह किस विपरीतता का देश था उसमें ? वह अपने हल्के कदमों पर ढेरों कपड़े का बोझ लिए चलती थी। उसका प्रतिभाशाली सिर सजावट से लदा रहता था। वह स्वतन्त्र, उत्सुक लड़की अब बिल्कुल बदल गई थी—वह अब एक ऐसी भद्र महिला थी जो जैसे किसी चीज़ का प्रतिनिधित्व कर रही थी। लेकिन इज़ाबेल किस चीज़ का प्रतिनिधित्व कर रही थी ? इस सवाल का रैल्फ के पास एक ही जवाब था कि वह गिलबर्ट ऑसमण्ड का प्रतिनिधित्व कर रही है। "क्या काम है यह भी !"

रैल्फ दुःख के साथ कहता। जिन्दगी का रहस्य उसे आश्चर्य-चकित किए था।

वह ऑसमण्ड को पहचान गया था—हर तरह से पहचान गया था। उसने जान लिया था कि कैसे वह आदमी हर चीज़ पर प्रतिबन्ध रखता है—कैसे वह दोनों के जीने के ढंग को नियन्त्रित और संचालित करता है। ऑसमण्ड उन दिनों फार्म में था—उसे ऐसी सामग्री मिल गई थीं जिस पर वह अपनी प्रतिभा की आज़माइश कर सकता था। उसकी आंख हमेशा इस पर रहती थी कि वह क्या प्रभाव पैदा कर सकता है। इसके लिए वह ओछे साधन नहीं अपनाता था, पर उसकी कला जितनी महान थी, उद्देश्य उतने ही ओछे थे। इज़ाबेल ने जिस व्यक्ति को कहीं बड़ी नैतिकता का प्रतिनिधि माना था, वास्तव में उसका सचेष्ट प्रयत्न इतना ही था कि वह अपने को, तथा अपने घर को दूसरों से अलग प्रमाणित कर सके—दुनिया को दिखा सके कि वह जो कुछ भी करता है, उसमें अपनी ही एक मौलिकता रहती है। "अब उसके पास बेहतर साधन हो गए हैं," रैल्फ अपने से कहता, "पहले की तुलना में अब उसके पास बहुत ज़्यादा साधन हैं।" रैल्फ की दृष्टि बहुत तीक्ष्ण थी, पर इतनी तीक्ष्ण कभी नहीं रही थी जितनी यह जानने में हो उठी थी कि बाहर से आधारभूत मूल्यों का दावा करता हुआ भी ऑसमण्ड अन्दर से दुनियादारी के लिए ही जीता है। वह आदमी दुनिया का मालिक होने का झूठा दावा करता था। वास्तव में वह दुनिया का गुलाम था और जिस हद तक दुनिया का ध्यान खींच सकता, उसी हद तक अपने को सफल मानता था। रात-दिन उस आदमी को इसीका ध्यान रहता था, पर दुनिया इतनी मूर्ख थी कि इस चालाकी को पकड़ नहीं पाती थी। वह हर चीज़ में दिखावा करता था, हालांकि गौर से न देखने पर उसमें स्वाभाविकता की भ्रान्ति हो सकती थी। रैल्फ ने और कोई ऐसा आदमी नहीं देखा था जो हर तरफ इतना ख्याल रखता हो। उसकी सुरुचि, अध्ययन, गुण, संग्रह—सभी एक उद्देश्य के लिए थे। फ्लोरेंस में पहाड़ी की चोटी पर बना उसका मकान उसके वर्षों के सचेत दृष्टिकोण को ही व्यक्त करता था। उसका एकान्त, अपनी लड़की से उसका प्रेम, उसका सद्व्यव-हार, दुर्व्यवहार, सब कुछ उस आदर्शभावना के अनुसार होते थे जो अपने सम्बन्ध में उसने बना रखी थी। उसकी महत्त्वाकांक्षा दुनिया को खुश करने की न होकर यह थी कि दुनिया की उत्सुकता जगाकर और उसे सन्तुष्ट करने से इन्कार करके, अपने को खुश कर सके। इस तरह दुनिया को छलने में वह अपने को महान सम-

झता था। सीधे अपनी खुशी के लिए उसने कोई काम किया था, तो यह कि इज़ाबेल आर्चर से उसने शादी की थी, हालांकि इस स्थिति में भी इज़ाबेल आर्चर, जो कि उस पर मन्त्र-मुग्ध हो उठी थी, दुनिया का प्रतिनिधित्व करती थी। रैल्फ का दृष्टिकोण निश्चित था। उसे उस दृष्टिकोण के कारण कष्ट उठाना पड़ा था, इसलिए वह उसे बदल नहीं सकता था। वह महीना भर रोम में रहा। इस दौरान ऑसमण्ड को वह अपना विरोधी नहीं लगा। इस भावना को भी रैल्फ ने उसी तरह अपने सिद्धान्त में समा लिया था जैसे वह हर चीज़ को समा लेता था।

ऑसमण्ड की नज़र में रैल्फ का कोई महत्त्व नहीं था—एक मित्र के रूप में ही नहीं, किसी भी रूप में। वह इज़ाबेल का कज़िन था और बहुत बीमार था—बस इसी आधार पर वह उससे बरताव करता था। उसने रैल्फ से उसके स्वास्थ्य के बारे में और मिसेज़ टाउशेट के बारे में सवाल पूछे थे और पूछा था कि कहां कितनी सर्दी पड़ती है, और कि उसे अपना होटल पसन्द है या नहीं। जितनी बार रैल्फ उससे मिला, उसने उससे कोई अनावश्यक बात नहीं की। पर रैल्फ को चलते वक्त कहीं अहसास था कि ऑसमण्ड ने इज़ाबेल पर ज़ोर डाला है कि वह इस आदमी से इतना न मिला करे। उसे रैल्फ से ईर्ष्या नहीं थी, पर उसका ख्याल था कि इज़ाबेल अपनी पहले की मित्रता का बहुत मूल्य चुका रही है। क्योंकि रैल्फ नहीं चाहता था कि इज़ाबेल को बहुत ज़्यादा मूल्य चुकाना पड़े, इसलिए मन में यह अहसास गहरा होते ही वह वहां से चल दिया। उसके चले जाने से इज़ाबेल की एक व्यस्तता छिन गई—वह निरन्तर इस आश्चर्य में रहती थी कि वह कौन-सी शक्ति है जो इस आदमी को जीवित रखे है। उसका ख्याल था कि यह शक्ति रैल्फ की बातचीत है—बातचीत अब वह पहले से भी अच्छी करता था। पहले की तरह अटपटे ढंग से चहलकदमी करना रैल्फ ने छोड़ दिया था। वह दिन भर कुर्सी पर—किसी भी कुर्सी पर—बैठा रहता था। दूसरे की सहायता पर वह इतना निर्भर करता था कि यदि वह इतने विचारपूर्ण ढंग से बातचीत न करता, तो लगता कि शायद वह अन्धा है। पाठक उसके सम्बन्ध में इज़ाबेल से कहीं अधिक जानता है, इसलिए उसके हाथ में इस रहस्य की कुंजी दी जा सकती है। जो चीज़ रैल्फ को जीवित रखे थी, वह यह थी कि जिस व्यक्ति में उसकी सबसे ज़्यादा दिलचस्पी थी, उसे उसने अभी काफी नहीं देखा था—जितना देखा था, उससे वह सन्तुष्ट नहीं था। अभी बहुत कुछ आगे आने को था और वह उससे वंचित नहीं

रहना चाहता था। वह देखना चाहता था कि पत्नी की वजह से पति का क्या बनता है, या पति की वजह से पत्नी का क्या बनता है। अभी नाटक का पहला अंक चल रहा था, और वह पूरा नाटक देखना चाहता था। उसे इस निश्चय में सफलता मिली, क्योंकि इससे अठारह महीने उसने और निकाल दिए, जिसके बाद वह लॉर्ड वारबर्टन के साथ दोबारा रोम आया। यदि रैल्फ को उसके विस्मय ने जीवित रखा था, तो बहुत कुछ वही भाव मन में लिए—इस उत्तेजना के साथ कि वह उसे किस हाल में देखेगी—इज़ाबेल वारबर्टन से सूचना पाने के अगले रोज़ उस कमरे में जा पहुंची जहां वह ठहरा था।

वह घण्टा भर उसके पास रही। उसके बाद भी वह कई बार वहां गई। गिलबर्ट ऑसमण्ड भी समय पर पहुंचता रहा। उनके गाड़ी भेजने पर रैल्फ भी कई बार पालाज़ो रोकानेरा में आया। एक पखवारे के बाद रैल्फ ने लॉर्ड वारबर्टन से कहा कि वह अब सिसिली नहीं जाएगा। वे लोग साथ-साथ खाना खाकर उठे थे। चिमनी के पास आकर लार्ड वारबर्टन ने मुंह में सिगार लगाया ही था कि अचानक बाहर निकाल लिया।

"सिसिली नहीं जाओगे? तो कहां जाओगे?"

"ख्याल है कहीं नहीं जाऊंगा," रैल्फ ने सोफे पर बैठे हुए बिना शरमसार हुए कहा।

"तुम्हारा मतलब है तुम इंग्लैंड लौट जाओगे?"

"नहीं, डियर, नहीं। मैं रोम में ही रहूंगा।"

"रोम तुम्हारे लिए ठीक जगह नहीं है। यह काफी गरम नहीं है।"

"यहीं चल जाएगा। मैं चला लूंगा। देखो, मैं यहां कितना स्वस्थ रहा हूं।"

लॉर्ड वारबर्टन सिगार के कश खींचता पलभर उसकी तरफ देखता रहा। "सफर में तुम्हारी जो हालत थी, उससे तो तुम बेहतर ही लग रहे हो। मुझे तो हैरानी होती है कि तुम उस सफर से बच कैसे आये। लेकिन तुम्हारी हालत मैं समझ नहीं पा रहा। मेरी तो राय यही है कि तुम्हें सिसिली जाकर कुछ दिन कोशिश कर देखना चाहिए।"

"मैं और कोशिश नहीं कर सकता", रैल्फ बोला। "मैं काफी कोशिश करके देख चुका हूं। इससे ज्यादा कोशिश मेरे बस की नहीं। मैं वह सफर बर्दाश्त नहीं कर सकूंगा। सोचो स्किला से चैरिब्डिस के बीच सफर में मेरी क्या हालत होगी।

मैं सिसिली के मैदान में नहीं मरना चाहता—वहां के प्रोसर्पाइन की तरह प्लुटो-नियन छाया में दम नहीं तोड़ना चाहता।"

"तो आखिर तुम यहां आये ही क्यों ?" लार्ड वारबर्टन ने पूछा।

"क्योंकि मुझे ऐसा ही ठीक लगता था। लेकिन मुझे लगता है यह अब चलेगा नहीं। अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कहां हूं। मैं सब इलाज करके देख चुका हूं। चूंकि मैं यहां हूं, इसलिए यहीं रहूंगा। मेरी एक भी कज़िन सिसिली में नहीं है—वह भी ऐसी जिसकी शादी हुई हो।"

"तुम्हारी कज़िन सच में ही एक आकर्षण है। लेकिन डाक्टर क्या कहता है ?"

"मैंने उससे नहीं पूछा, और मैं उसकी ज़रा परवाह नहीं करता। अगर मैं यहां मर जाता हूं, तो मिसेज़ ऑसमण्ड मुझे दफना देगी। लेकिन मैं यहां नहीं मरूंगा।"

"मैं भी यही चाहता हूं", लार्ड वारबर्टन कुछ सोचता हुआ सिगार पीता रहा। "लेकिन मैं यह ज़रूर कहूंगा," वह फिर बोला, "कि अपनी तरफ से मैं खुश हूं कि तुमने सिसिली जाने पर ज़ोर नहीं दिया। मुझे भी उस यात्रा से बहुत डर लगता है।"

"हां, लेकिन तुम्हारे जाने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता। मेरे मन में तुम्हें अपने साथ गाड़ी में घसीट कर ले जाने का ज़रा भी ख्याल नहीं था," रैल्फ बोला।

"मैं ज़रूर तुम्हारे साथ जाता, और वहां तुम्हारी व्यवस्था कर के आता," लार्ड वारबर्टन बोला।

"तुम बहुत अच्छे क्रिश्चियन हो। बहुत नेक आदमी हो।"

"फिर मैं यहां वापस लौट आता।"

"और यहां से इंग्लैण्ड चले जाते।"

"नहीं, नहीं, मैं यहीं रहता।"

"तब," रैल्फ बोला, "अगर हम दोनों यहीं रहने पर तुले हैं, तो मैं नहीं समझ सकता कि सिसिली कहां से आ जाता है !"

उसका साथी खामोश था। वह बैठा आग की तरफ देखता रहा। आखिर, ऊपर की तरफ देखते हुए, "एक बात पूछता हूं। बताओ," वह अचानक फूट

पड़ा, "क्या तुमने सच ही सिसिली जाने की सोची थी—जब हम वहां से चले थे ?"

"ओह ! पहले मुझे प्रश्न करने दो। तुम क्या मेरे साथ सचमुच प्लैटोनिक भाव से ही आए थे ?"

"मैं नहीं जानता इससे तुम्हारा क्या मतलब है। मैं बाहर आना चाहता था।"

"मुझे सन्देह है कि हम दोनों अपना-अपना खेल खेलते रहे हैं।"

"अपनी बात करो। मैंने थोड़ी देर यहां रुकने की अपनी इच्छा को छिपाकर नहीं रखा।"

"हां, मुझे याद है तुमने कहा था कि तुम यहां के विदेश मंत्री से मिलना चाहते हो।"

"मैं उससे तीन बार मिल चुका हूं। वह बहुत आकर्षक व्यक्ति है।"

"मेरे ख्याल में तुम भूल गए हो कि तुम किस लिए यहां आये थे," रैल्फ बोला।

"हो सकता है," उसके साथी ने अतिरिक्त गम्भीरता के साथ कहा।

ये दोनों भले आदमी उस जाति से थे जो अपनी बातों को गोपनीय न रखने की विशेषता नहीं रखती। ये दोनों लन्दन से रोम तक साथ-साथ आये थे—पर दोनों के मन में जो बात सब से ऊपर थी, उसका उन्होंने एक-दूसरे से ज़िक्र नहीं किया था। यह एक पुराना विषय था जिस पर दोनों ने कभी बहस की थी, लेकिन अब उस बात ने उनके बीच अपनी स्वीकृत जगह खो दी थी। अब रोम पहुंच कर भी, जहां बहुत-सी चीज़ें उस विषय की याद दिला सकती थीं, उन्होंने अपनी खामोशी बनाए रखी थी।

"फिर भी मैं तुम्हें डाक्टर की राय लेने का परामर्श दूंगा," लार्ड वारबर्टन थोड़ी देर बाद अचानक बोल उठा।

"डाक्टर की राय तो सब गड़बड़ कर देगी। मैं जब तक उससे बच सकूं, बचता रहता हूं।"

"तो फिर मिसेज़ ऑसमण्ड क्या सोचती हैं ?" रैल्फ के मित्र ने पूछा।

"मैंने उसे बताया नहीं। वह सम्भवतः कहेगी कि रोम बहुत ठंडा है, यहां तक कि मेरे साथ काटानिया चलने का प्रस्ताव कर देगी। वह यह कर सकती है।"

"तुम्हारी जगह मैं होता तो मुझे यह बहुत अच्छा लगता।"

"उसके पति को यह अच्छा नहीं लगेगा।"

"हां, वह मैं सोच सकता हूं। हालांकि मुझे लगता है कि तुम्हें इसकी परवाह नहीं है। यह उसका अपना मामला है।"

"मैं उन दोनों के बीच मुसीबत नहीं खड़ी करना चाहता," रैल्फ बोला।

"मतलब वहां पहले ही काफी मुसीबत है ?"

"बस तैयारी ही है। उसके मेरे साथ बाहर जाने से विस्फोट हो सकता है। ऑसमण्ड अपनी पत्नी के कज़िन को पसन्द नहीं करता।"

"तब तो ज़रूर ही वह हंगामा खड़ा करेगा। लेकिन तुम यहीं बने रहो, तो इस बात से यह नहीं चिढ़ेगा ?

"यही मैं देखना चाहता हूं। उसने तब भी एक बार ऐसा किया था जब मैं पिछली बार रोम में था। उस समय, मैंने यह अपना कर्तव्य समझा था कि मैं यहां से चला जाऊं। अब मैं समझता हूं कि यहां रह कर इज़ावेल की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है।"

"माई डियर टाउशेट, तुम्हारी रक्षा शक्ति—।" लार्ड वारबर्टन एक मुस्कराहट के साथ बोला। लेकिन उसने अपने साथी के चेहरे पर कुछ ऐसा भाव देखा कि वह रुक गया। "तुम्हारे इस जगह रह कर उसकी रक्षा करने की बात मुझे अच्छी लग रही है," उसने बात बदल कर कहा।

थोड़ी देर रैल्फ कुछ नहीं बोला। "यह सच है कि मुझ में रक्षा करने की शक्ति कम है," आखिर वह बोला। "लेकिन मेरी आक्रामक शक्ति चूंकि और भी कम है, इसलिए हो सकता है ऑसमण्ड मुझे इस काबिल न समझे कि अपना गोला-बारूद मेरे ऊपर खराब करें।" फिर भी, उसने साथ ही जोड़ा, "कुछ बातें हैं जिन्हें देखने के लिए मैं उत्सुक हूं।"

"तो तुम अपनी उत्सुकता की खातिर अपने स्वास्थ्य को कुरबान कर रहे हो ?"

"मुझे अपने स्वास्थ्य में कोई दिलचस्पी नहीं है। लेकिन मिसेज़ ऑसमण्ड में मुझे बेहद दिलचस्पी है।"

"वह मुझें भी है। लेकिन उतनी नहीं जितनी कभी हुआ करती थी," लार्ड वारबर्टन ने जल्दी से जोड़ा। यह उन संकेतों में से था जिन्हें मुंह पर लाने का उसे

मौका नहीं मिला था।

"तुम्हें क्या वह काफी खुश नज़र आती है ?" रैल्फ ने उसके विश्वास से साहस पाकर पूछा।

"मैं नहीं जानता। मैंने इस विषय में कभी सोचा ही नहीं। उसने मुझसे उस रात यही कहा था कि वह बहुत खुश है।"

"हां, तुमसे उसने यही कहा होगा," रैल्फ ने मुस्कराते हुए कहा।

"यह मैं नहीं जानता। मुझे लगता है कि मैं ही वह व्यक्ति हूं, जिससे वह अपने दुःख की शिकायत कर सकती थी।"

"शिकायत ? वह कभी शिकायत नहीं करेगी। उसे जो करना था वह कर चुकी है—और यह वह जानती है। तुमसे तो वह कभी शिकायत नहीं करेगी। इस बात में वह बहुत सावधान है।"

"उसे सावधान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं फिर से उससे प्रेम करने का इरादा नहीं रखता।"

"मुझे यह सुनकर खुशी हुई। तुम्हारे कर्तव्य को लेकर तो ज़रा भी सन्देह नहीं किया जा सकता।"

"नहीं," लार्ड वारबर्टन ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "बिल्कुल नहीं।"

"मुझे एक बात पूछने की अनुमति हो," रैल्फ कहता गया। "क्या इसी वास्तविकता को प्रकट करने के लिए, कि तुम अब उससे प्रेम नहीं करना चाहते, तुम उस छोटी लड़की के प्रति इतना सद्भाव दिखलाते हो ?"

लार्ड वारबर्टन थोड़ा चौंक गया। वह उठा और आग के पास खड़ा होकर गहरी नज़र से उस तरफ देखता रहा।

"क्या यह तुम्हें असंगत लगता है ?"

"असंगत ? बिल्कुल नहीं। अगर तुम सचमुच उसे पसन्द करते हो।"

"मुझे वह बहुत ही छोटी-सी प्यारी-सी चीज़ लगती है। उस उम्र की कोई लड़की पहले मुझे कभी इतनी अच्छी नहीं लगी।"

"वह बहुत ही प्यारी-सी चीज़ है। कम से कम उसमें कोई आडम्बर नहीं है।"

"यह सच है कि हमारी उम्र में काफी फर्क है—बीस साल से भी ज़्यादा का।"

"वारबर्टन," रैल्फ बोला, "क्या तुम सचमुच गम्भीर हो ?"

"बिल्कुल गम्भीर—कम से कम जिस हद तक मैं आगे बढ़ा हूं।"

"मुझे खुशी है। ईश्वर हमारी सहायता करे," रैल्फ बोला। "ऑसमण्ड भी इससे कितना प्रसन्न होगा।"

उसके साथी की भवें तन गई। "मैं कहता हूं बात को गलत मत लो। मैं उसकी लड़की से इसलिए विवाह नहीं करूंगा कि उसे प्रसन्न कर सकूं।"

"लेकिन फिर भी अपनी विपरीत बुद्धि से वह प्रसन्न तो होगा ही।"

"उसे मैं उतना अच्छा नहीं लगता," लार्ड वारबर्टन बोला।

"उतना अच्छा ? माई डियर वारबर्टन, तुम्हारी स्थिति की सबसे बड़ी कमजोरी ही यह है कि तुम्हारे साथ सम्बन्ध रखने के लिए यह ज़रूरी नहीं कि लोग तुम्हें पसन्द करें। लेकिन मैं जिस हालत में हूं, उसमें मुझे इस विश्वास से खुशी होगी कि लोग मुझसे प्यार करते हैं।"

लार्ड वारबर्टन उस मन:स्थिति में नहीं था कि सामान्य सिद्धान्तों के प्रति न्याय कर सकता—वह एक विशेप विषय में सोच रहा था। "तुम समझते हो वह इससे प्रसन्न होगी ?"

"वह लड़की ? ज़रूर प्रसन्न होगी।"

"नहीं, मेरा मतलब मिसेज़ ऑसमंड से है।"

क्षण-भर रैल्फ उसे देखता रहा। "मेरे मित्र, इस बात से उसे क्या मतलब है ?"

"यह उस पर है। उसे पैंजी बहुत प्रिय है।"

"यह बिलकुल सच है।" और रैल्फ धीरे से उठ खड़ा हुआ। "यह एक दिलचस्प प्रश्न है कि पैंजी के प्रति उसका स्नेह उसे कहां तक ले जाता है।" अपनी भौंहें सिकोड़े और हाथ जेबों में डाले वह क्षण-भर खड़ा रहा। "मुझे आशा है कि तुम अपने मन में पूरी तरह निश्चित हो," आखिर वह फूट पड़ा। "असल में मुझे बात कहनी आ नहीं रही।"

"तुम्हें सब कहना आता है। सब कुछ कहना आता है।"

"देखो बात ज़रा भद्दी-सी है। मुझे आशा है कि मिस ऑसमण्ड के गुणों में सबसे मुख्य गुण यह नहीं है कि वह—अ—अपनी सौतेली मां के इतना निकट रहती है ?"

"तौबा टाउशेट।" लार्ड वारबर्टन गुस्से से चिल्लाया। "आखिर तुमने मुझे समझ क्या रखा है ?"

४०

विवाह के बाद इज़ाबेल की मैडम मरले से ज्यादा मुलाकात नहीं हुई थी। इस बीच वह महिला काफी-काफी अरसा रोम से बाहर रही थी। एक बार उसने छः महीने इंग्लैंड में बिताए थे, फिर एक बार सर्दियों का काफी हिस्सा पेरिस में काटा था। वह और भी कई दूर के मित्रों से मिलने गई थी और इस विचार को कार्यान्वित कर रही थी कि भविष्य में वह पहले की तरह जमकर रोम में नहीं रहेगी। पहले भी वहां जमकर रहने का उसके लिए इतना ही अर्थ था कि उसने पिन्शियन के एक ऐसे भाग में जहां खूब धूप आती थी, एक अपार्टमेंट स्थायी रूप से ले रखा था। वह अपार्टमेंट तब भी अक्सर खाली पड़ा रहता था—अब सम्भावना थी कि वह बिलकुल ही खाली रहे। यह एक ऐसी सम्भावना थी जिससे कभी इज़ाबेल को बहुत दुःख हुआ होता। घनिष्ठता के बाद मैडम मरले के सम्बन्ध में उसकी धारणा में थोड़ा अन्तर आया था, पर मुख्यतः उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था—अब भी वह काफी हद तक चकित भाव से उसकी प्रशंसा करती थी। मैडम मरले का व्यक्तित्व सब तरह के अस्त्रों से सुसज्जित था—सामाजिक युद्ध के लिए एक स्त्री का इस तरह सुसज्जित होना प्रशंसा का विषय लगता था। वह अपना झण्डा सावधानी से उठाती थी और चमकते फौलाद के अपने अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग इतनी कुशलता से करती थी कि इज़ाबेल को वह इस कार्य में सिद्धहस्त जान पड़ती थी। वह स्त्री न कभी थकती थी, न हताश होती थी, न ही कभी उसे आराम या सहारे की जरूरत महसूस होती थी। उसके अपने ही विचार थे जिनमें से कई एक वह इज़ाबेल के सामने व्यक्त कर चुकी थी। इज़ाबेल जानती थी अपने अतिशय आत्म-नियन्त्रण की तह में उसकी सुसंस्कृत मित्र एक समृद्ध चेतना लिए है। परन्तु उसकी इच्छा ही उसके जीवन की स्वामिनी थी—उसकी चाल-ढाल में एक विशेष साहस नजर आता था। जीना जैसे एक कुशलता-

पूर्ण कला थी जिसका रहस्य उसने पा लिया था। स्वयं इज़ाबेल ज्यों-ज्यों बड़ी हो रही थी, त्यों-त्यों हताशा और ग्लानि जैसे भावों से उसका परिचय बढ़ता जा रहा था। कुछ ऐसे भी दिन आते थे जब दुनिया उसे अंधेरी नज़र आती थी। वह एक तीव्रता के साथ अपने से पूछती थी कि वह आखिर जीवित किसलिए है। पहले उसकी आदत उत्साह, आकस्मिक सम्भावनाओं तथा किसी नये साहसिक कार्य की कल्पना के सहारे जीने की थी। छुटपन में वह एक खुशी से दूसरी खुशी की ओर, बिना किसी जड़तापूर्ण मध्यान्तर के बढ़ती रही थी। पर मैडम मरले ने अपने उत्साह को दबा लिया था—अब उसे किसी चीज़ से प्यार नहीं होता था। वह केवल अपने तर्क और बुद्धि के सहारे जीती थी। कभी-कभी ऐसा समय आता था जब इज़ाबेल कुछ भी देकर यह कला सीख लेना चाहती—मैडम मरले वहां पास में होती, तो इसके लिए वह उससे अनुनय भी करती। वह जान गई थी कि ऊपर से, चांदी के कवच की तरह एक सख्त सतह बनाए रखने का कितना लाभ होता है।

पर जैसा मैंने कहा है, उन सर्दियों तक जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है, मैडम मरले फिर से लगातार रोम में रहने के लिए नहीं आयी। इन सर्दियों में शादी के बाद पहली बार इज़ाबेल का उस महिला से काफी मिलना-जुलना हुआ। पर इस बीच इज़ाबेल की इच्छाएं और अपेक्षाएं काफी बदल चुकी थीं। अब वह परामर्श के लिए मैडम मरले के पास न जाती—उस महिला की चतुराई का रहस्य जानने की इच्छा अब उसके मन में नहीं थी। अपनी मुसीबत अब उसे अपने तक ही रखनी थी—जीवन की कठिनाइयां अपनी पराजय स्वीकार करने से कम नहीं हो सकती थीं। मैडम मरले उसके लिए उपयोगी थी और निःसन्देह किसी भी समुदाय की शोभा बढ़ा सकती थी, पर क्या सूक्ष्म अव्यवस्था के क्षणों में वह दूसरों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकती थी? इज़ाबेल हमेशा सोचती थी कि उस महिला का सबसे बड़ा लाभ यही उठाया जा सकता है कि व्यक्ति उसका अनुकरण करे—उसकी तरह दृढ़ और प्रसन्न रहने का प्रयत्न करे। मैडम मरले कभी अव्यवस्था का अनुभव नहीं करती थी, और यह सोचकर इज़ाबेल ने पचासवीं बार अपनी अव्यवस्था को भी बुहार देने का निश्चय किया। दिनों के व्यवधान के बाद मैडम मरले के साथ फिर से आदान-प्रदान आरम्भ होने पर उसे लगा कि वह स्त्री वास्तव में बहुत भिन्न है। वह बहुत तटस्थ रहती है और यह डर उसे हद से ज्यादा रहता है कि वह कोई विवेकहीन कार्य न कर बैठे। हम जानते हैं कि रैल्फ

टाउशेट की राय में उसका यह गुण, यह स्वर, बहुत अतिरंजित था, और आम भाषा में कहा जाय, तो वह इन चीज़ों पर ज़रूरत से ज़्यादा बल देती थी। इज़ाबेल इस बात से सहमत नहीं होती थी—वह इस अभियोग को समझ ही नहीं पाती थी। उसकी धारणा थी कि मैडम मरले सुरुचि और 'सौम्यता' की मूर्ति है। लेकिन ऑसमण्ड परिवार के अन्दरूनी मामलों को लेकर उसकी चुप्पी इज़ाबेल को भी ज़रूरत से ज़्यादा गहरी लग रही थी। यह सुरुचि न होकर, उसका उल्लंघन था। मैडम मरले को इसका बहुत ज़्यादा ध्यान रहता था कि इज़ाबेल की शादी हो चुकी है और अब उसकी दिलचस्पियां दूसरी हैं। वह, मैडम मरले, चाहे ऑसमण्ड और उसकी नन्ही-सी पैंज़ी को अच्छी तरह जानती थी—और किसी-की भी अपेक्षा ज़्यादा जानती थी—फिर भी वह उनके अन्तरंग जीवन का एक भाग नहीं थी। वह बहुत सतर्क रहती थी, और जब तक ज़ोर देकर पूछा न जाय, उस विषय में कोई बात नहीं करती थी। वह खामखाह दखल नहीं देना चाहती थी। एक दिन खुले मन से यह बात मैडम मरले ने इज़ाबेल से कह भी दी।

"मेरा सतर्क रहना ज़रूरी है" वह बोली। "नहीं तो हो सकता है मैं अनजाने में तुम्हें चोट पहुंचा बैठूं। मेरा इरादा कितना ही अच्छा क्यों न हो, तुम्हारा चोट खाना गलत नहीं होगा। मैं तुम्हारे पति को तुमसे कहीं पहले से जानती हूं, और नहीं चाहती कि यह चीज मेरे खिलाफ जाय। तुममें मूर्खता हो, तो तुम ईर्ष्या भी कर सकती हो। पर यह मैं निश्चित रूप से जानती हूं कि तुममें मूर्खता नहीं है। पर मूर्ख मैं भी नहीं हूं, इसलिए किसी मुसीबत में फंसना नहीं चाहती। किसी को थोड़ी-सी क्षति अनजाने ही पहुंच जाती है—व्यक्ति जान भी नहीं पाता कि कब उससे गलती हो जाती है। यूं, मैं तुम्हारे पति से प्रेम ही करना चाहती, तो उसके लिए दस साल मेरे पास थे, और रुकावट डालने वाला कोई नहीं था। इसलिए मैं आज, जबकि मैं पहले से कहीं कम आकर्षक रह गयी हूं, इसका आरम्भ नहीं कर सकती। मैं आज कुछ कहने की अनधिकार चेष्टा करने लगूं, तो तुम शायद ऐसा नहीं सोचोगी—तुम्हें लगेगा कि मैं कुछ चीज़ों के अन्तर को भूल रही हूं। मैं उन्हें हरगिज नहीं भूलना चाहती। यह सच है कि एक अच्छे मित्र को हमेशा ऐसा ख्याल नहीं आता—व्यक्ति को अपने अच्छे मित्रों की ओर से अन्याय का सन्देह नहीं होता। मुझे तुम्हारी ओर से ऐसा सन्देह बिलकुल नहीं है—मुझे सन्देह है केवल मानव-स्वभाव को लेकर। यह मत समझो कि मैं अपने को असुविधा

में पाती हूं—मैं हर वक्त अपने पर नज़र नहीं रखती। यह चीज़ मैं इस समय तुम-से बात करके भी प्रमाणित कर रही हूं। मैं जो कहना चाहती हूं, वह इतना ही है कि कभी अगर सचमुच तुम्हें ईर्ष्या हो, तो मुझे लगेगा कि इसमें कुछ दोष मेरा भी है। वह दोष, निःसन्देह, तुम्हारे पति का नहीं होगा।"

इज़ाबेल की मिसेज़ टाउशेट के इस दृष्टिकोण पर विचार करने के लिए तीन साल मिल चुके थे कि गिलबर्ट ऑसमण्ड का व्याह मैडम मरले ने कराया है। हमें पता है कि शुरू में यह बात उसे कैसी लगी थी। मैडम मरले ने ऑसमण्ड का व्याह भले ही कराया हो, इज़ाबेल आर्चर का व्याह निःसन्देह उसने नहीं कराया था। यह काम जाने किसका था—कुदरत का, दैवयोग का, भाग्य का या जीवन के किसी शाश्वत रहस्य का। मिसेज़ टाउशेट को शिकायत मैडम मरले के किये से उतनी नहीं थी जितनी उसके दोहरे व्यवहार से—कि यह व्याह कराके भी वह इस अपराध की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेना चाहती। इज़ाबेल को यह कोई बड़ा अपराध नहीं लगता। मैडम मरले उसके जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण मित्रता के लिए उत्तरदायी थी, यह उसकी नज़र में पाप नहीं था। विवाह से पहले, जब वह अभी काफी अन्तर्मुख थी, अपनी आंट के मुंह से यह सुनकर उसे लगा था जैसे एक दार्शनिक इतिहासकार उसके सामने इसकी व्याख्या कर रहा हो। मैडम मरले ने यदि उसकी स्थिति को बदलना चाहा था, तो यह कोई बुरा विचार नहीं था। उसके साथ मैडम मरले ने हर बात खुलकर की थी—गिलबर्ट ऑसमण्ड के प्रति अपना प्रशंसाभाव उसने छिपाया नहीं था। पर विवाह के बाद इज़ाबेल को लगा था कि ऑसमण्ड मैडम मरले के बारे में उस सहजता से बात नहीं करता। बातचीत के दौरान अपनी सामाजिक माला के इस सबसे गोल और चिकने मनके को वह उंगली से छूता भी नहीं था।

"तुम्हें मैडम मरले पसन्द नहीं हैं क्या?" एक बार इज़ाबेल ने उससे पूछा था। "वह तुम्हें इतना मानती है!"

"मैं तुम्हें हमेशा के लिए बता दूं," ऑसमण्ड ने उत्तर दिया था, "कि पहले मैं उसे जितना पसन्द करता था, उतना अब नहीं करता। मुझे कहते शरम आती है, पर मैं उससे ऊब गया हूं। वह अस्वाभाविक रूप से अच्छी है। मुझे खुशी है कि वह इटली में नहीं है—इसमें मुझे एक तरह की सुविधा और नैतिक विश्रान्ति का अनुभव होता है। उसकी ज़्यादा बात करके उसे फिर से बीच में न ले आओ—उसके वापस आने में अभी बहुत दिन हैं।"

पर मैडम मरले ने वापस आने में उतनी देर नहीं की जितनी देर करने से वह अपनी खोयी हुई सुविधाएं फिर से न पा सकती। पर इस बीच वह काफी बदल गयी थी, और इज़ाबेल भी अब पहले जैसी नहीं रही थी। स्थिति की चेतना उसमें पहले जितनी ही तीव्र थी, पर अब वह उतनी सन्तोषप्रद नहीं थी। असन्तुष्ट मन में और चाहे जिस चीज़ की कमी रहे, युक्तियों की कमी कभी नहीं रहती—युक्तियां उसमें उसी तरह लहलहाती हैं जैसे जून के महीने में बटरकप्स। गिलबर्ट ऑसमण्ड की शादी में मैडम मरले का हाथ था या नहीं, इसपर उसने विचार करना छोड़ दिया था, क्योंकि उस महिला के प्रति आभार महसूस करने को ज़्यादा कुछ नहीं था। समय गुज़रने के साथ वह और भी कम होता गया था, और एक बार इज़ाबेल ने अपने से यह भी कहा कि उस स्त्री के बगैर शायद यह सब न हुआ होता। पर यह विचार तुरन्त दब गया—वह आतंकित हो उठी कि वह ऐसा कैसे सोच गयी। "चाहे जो हो, मुझे उसके प्रति अन्याय नहीं करना चाहिए," उसने कहा। "जो भी बोझ है, वह मुझे अपने पर लेना चाहिए, दूसरों पर नहीं डालना चाहिए। इस दृष्टि की परीक्षा, मैडम मरले की उस चतुर आत्म-स्वीकृति के सामने हुई जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है—क्योंकि मैडम मरले के निर्मल विवेक और स्पष्ट धारणाओं में कहीं कुछ था जो झुंझलाने वाला था और उपहास की तरह जान पड़ता था। इज़ाबेल के मन में आज कुछ भी स्पष्ट नहीं था—वहां थी केवल खेद की संकुलता और भय की उलझन। मैडम मरले की उपर्युक्त बात सुनकर मुड़ते हुए उसे अपने में एक असहायता का अनुभव हुआ। मैडम मरले उसके विचारों के सम्बन्ध में कितना कम जानती थी! वह स्वयं भी बतला सकने में कितनी असमर्थ थी! ईर्ष्या—उसे और गिलबर्ट को लेकर ईर्ष्या? तब तक यह विचार उसके लिए निराधार था। सच, यदि वह ईर्ष्या कर सकती, तो उसीमें उसे एक ताज़गी महसूस होती! ईर्ष्या रखना अपने में ही क्या सुख का एक लक्षण नहीं है? मैडम मरले बहुत समझदार थी—इतनी कि शायद सोच रही थी कि इज़ाबेल जितना अपने को जानती है, वह उसे उससे ज़्यादा जानती है। इज़ाबेल कोई भी निर्णय झटपट कर डालती थी—इनमें कई निर्णय बहुत उदात्त होते थे। पर (उसके दिल की गहराई में) पहले कभी आज की तरह उनका उत्कर्ष नहीं रहा था। यूं तो सभी निर्णय एक ही श्रेणी में आते थे—संक्षेप में उनका रूप था एक निश्चय, और वह यह कि यदि उसे दुःख उठाना है, तो वह उसकी अपनी गलती

से नहीं होना चाहिए। उसकी उन्मुक्त आत्मा की सदैव यह इच्छा रहती थी कि अपनी तरफ से सब अच्छे से अच्छा करे, और इसमें अब तक कभी उसे गम्भीर रूप से निरुत्साह नहीं होना पड़ा था। इसलिए वह न्याय का पक्ष लिए रहना चाहती थी और हीन प्रतिशोध के स्तर पर नहीं उतरना चाहती थी। उसे लग रहा था कि अपनी निराशा के साथ मैडम मरले का सम्बन्ध जोड़ना एक हीन प्रतिशोध होगा—विशेषरूप से इसलिए कि उससे प्राप्त सुख बहुत छिछला होगा। उस सुख से मन की कड़वाहट चाहे कुछ दूर हो, पर उसके बन्धन नहीं खुल सकेंगे। वह यह बहाना नहीं कर सकती थी कि उसने जो कुछ किया, खुली आंखों से नहीं किया—किसी भी लड़की को निर्णय लेने की उससे ज़्यादा स्वतन्त्रता नहीं रही थी। यह ठीक है कि प्यार में पड़कर एक लड़की उतनी स्वतन्त्र नहीं रह जाती, परन्तु उसकी भूल का मूल स्रोत उसके अन्दर ही था। उसे किसी षड्यन्त्र या फंदे में नहीं फंसाया गया था। उसने देखकर और सोचकर ही अपना चुनाव किया था। ऐसी गलती कर चुकने पर उसे सुधारने का एक स्त्री के पास एक ही रास्ता रह जाता है—कि चुपचाप उसे स्वीकार कर ले (ओह कितनी बड़ी विडम्बना है!) जीवन पर्यन्त बनी रहने वाली एक ही भूल करना काफी था—दूसरी भूल करने से पहली का परिमार्जन नहीं हो सकता था। आत्म-नियन्त्रण की इस प्रतिज्ञा में कहीं एक श्रेष्ठता थी जिससे इज़ाबेल चल रही थी। पर इस सबको दृष्टि में रखते हुए मैडम मरले का सावधानी बरतना उचित ही था।

रैल्फ टाउशेट के रोम आने के महीना-भर बाद, एक दिन इज़ाबेल पैंज़ी के साथ घूमकर घर वापस आई। पैंज़ी के प्रति उसका आभार केवल सही काम करने के निश्चय के कारण ही नहीं था, बल्कि उसमें उसकी वह आन्तरिक कोमलता भी थी जोकि पवित्र और कोमल वस्तुओं के प्रति उसके मन में बनी रहती थी। पैंज़ी उसे प्रिय लगती थी। जीवन में और कुछ भी ऐसा नहीं था जिसमें पैंज़ी के स्नेह जैसी शुभ्रता हो और जिसके प्रति उसके मन में इतना स्पष्ट माधुर्य हो। पैंज़ी एक कोमल छाया जैसी थी—अपने हाथ में लिए एक छोटे हाथ जैसी। जहां तक पैंज़ी का सवाल था, उस लड़की के मन में केवल स्नेह ही नहीं, एक उत्कट विश्वास भी था। उस लड़की की निर्भरता से इज़ाबेल को अत्यधिक सुख मिलता था—जहां और सब उद्देश्य पिछड़ जाते, वहां वह लड़की एक बड़ा कारण बन जाती थी। इज़ाबेल अपने से कहती कि व्यक्ति को अपना कर्त्तव्य स्वयं ढूंढ़ना होता है,

और जहां तक बन पड़े व्यक्ति को उसे ढूंढ़ना चाहिए। पैंज़ी की सहानुभूति एक सीधी भर्त्सना की तरह थी—जैसे कह रही हो कि यह एक अवसर है, चाहे बहुत बड़ा नहीं, पर एक निश्चित अवसर। किस चीज़ का अवसर यह कहना इज़ाबेल के लिए भी कठिन था—साधरणतया वह लड़की जितना अपने लिए कर सकती थी, उससे ज़्यादा उसके लिए कर सकने का अवसर उसे कहा जा सकता था। उन दिनों इज़ाबेल यह सोचकर मुस्करा सकती थी कि पैंज़ी कभी बहुत अनिश्चित रहती थी। उसे अब लगता कि पैंज़ी की अनिश्चितता केवल उसका अपना ही दृष्टिभ्रम था, क्योंकि वह यह विश्वास नहीं कर पाती थी कि कोई भी किसीको खुश रखने के लिए इतना-इतना कुछ कर सकता है। पर तभी से वह इस कोमल गुण को कार्यरूप में देखती आई थी और अब तक उसका मूल्य जान गई थी। यह गुण पैंज़ी के समूचे व्यक्तित्व में था—एक खास ज़ीनियस की तरह। किसी तरह का गर्व उसमें बाधा नहीं डालता था। पैंज़ी अपने विजय-क्षेत्र का विस्तार होते जाने पर भी उसके लिए कोई श्रेय नहीं लेती थी। प्रायः वे दोनों साथ-साथ रहती थीं। बहुत कम ही कभी मिसेज़ ऑसमण्ड अपनी सौतेली बेटी से अलग नज़र आती थी। इज़ाबेल पैंज़ी का साथ पसन्द करती थी—उसे लगता था जैसे वह एक-से फूलों का एक गुलदस्ता हाथ में लिए हो। उसके लिए यह एक धार्मिक दायित्व-सा बन गया था कि वह कभी किसी भी उत्तेजना के अन्तर्गत पैंज़ी की उपेक्षा न करे। पैंज़ी अपने पिता को छोड़कर और किसीके साथ उतनी खुश नहीं रहती थी जितनी इज़ाबेल के साथ। गिलबर्ट को वह बहुत चाहती थी, क्योंकि वह पितृत्व में एक विशेष सुख का अनुभव करने के कारण उसके साथ हमेशा बहुत कोमल व्यवहार करता था। इज़ाबेल जानती थी कि पैंज़ी को उसका साथ कितना पसन्द है और उसे खुश रखने के लिए वह कितनी कोशिश करती है। पैंज़ी ने जैसे सोच रखा था कि वह नकारात्मक रूप से ही उसे सबसे ज़्यादा खुशी दे सकती है—अर्थात् उसे कोई कष्ट न देकर। निसन्देह इस धारणा का घर की कष्टपूर्ण स्थिति के साथ काई सम्बन्ध नहीं था। वह प्रायः जान-बूझकर खामोश बनी रहती और सूझ-बूझ के साथ नम्रता का व्यवहार करती। इज़ाबेल के प्रस्तावों को स्वीकार करने में वह अपनी उत्सुकता को कभी प्रबल न होने देती, जिससे यह न लगे कि वह शायद अन्यथा सोच रही थी। वह न कभी बात को टोकती, और न कभी लोगों के बारे में कुछ पूछती। चाहे समर्थन पाकर उसे खुशी होती थी—यहां तक

कि वह उससे पीली पड़ जाती थी—पर हाथ बढ़ाकर समर्थन पाने का प्रयत्न वह नहीं करती थी। वह केवल उत्कंठा के साथ उसकी प्रतीक्षा करती थी और इस दृष्टिकोण के कारण समय गुजरने के साथ उसकी आंखों का भाव अत्यधिक सुंदर होता जा रहा था। पालाज़ो-रोकानेरा में बिताई दूसरी सर्दियों के दौरान जब उसने पार्टियों और नृत्यों में जाना शुरू किया, तो प्रायः यह सोचकर कि इज़ाबेल थक न गई हो, वह सही वक्त पर उससे वापस चलने का प्रस्ताव कर देती। इज़ाबेल यह जानती थी कि लड़की को देर तक नृत्य करने में अपार सुख मिलता है, इसलिए उसके त्याग की वह दिल से सराहना करती थी। परी के-से थिरकते पैरों वाली उस लड़की को सामाजिक जीवन में कोई दोष नज़र नहीं आता था। उसकी उबा देने वाली बातें भी उसे अच्छी लगती थीं—डिनर पार्टियों की जड़ता, दरवाज़ों पर धक्कम-धक्का और गाड़ी के लिए लम्बा इन्तज़ार, सभी कुछ। दिन में वह अपनी सौतेली मां के साथ गाड़ी में बैठी इस तरह स्थिरता और सराहना का भाव लिए थोड़ा आगे को झुकी मुसकराती रहती जैसे कि जीवन में पहली बार उसे घूमने ले जाया जा रहा हो।

जिस दिन का मैं ज़िक्र कर रहा हूं, उस दिन वे शहर के दरवाज़ों के बाहर घूमने निकल गई थीं। आधे घंटे के बाद गाड़ी को सड़क के किनारे इन्तज़ार के लिए छोड़कर वे केम्पैग्ना की छोटी-छोटी घास पर टहलती रही थीं। सर्दी के दिन होने पर भी घास में जहां-तहां कोमल फूल उगे थे। इज़ाबेल प्रायः रोज कुछ देर तेज़ कदमों से इस तरह टहलती थी, हालांकि वह तेज़ी अब उसमें नहीं रही थी जो यूरोप आने के समय थी। पैंज़ी को यह व्यायाम ज्यादा पसन्द नहीं था, फिर भी उसे अच्छा लगता था, क्योंकि उसे सभी कुछ अच्छा लगता था। वह हल्की लहरिया चाल से अपनी सौतेली मां के साथ-साथ चलती रहती। बाद में रोम में लौटने पर इज़ाबेल पिन्शियन या विला बोरगीज़ का चक्कर काटकर लड़की की रुचि को सम्मानित करती। आते हुए इज़ाबेल ने धूप में चमकती एक क्यारी से कुछ फूल इकट्ठे किए थे और पालाज़ो-रोकानेरा में पहुंचकर वह उन्हें पानी में रखने के लिए सीधी अपने कमरे की ओर चली गई। जाते हुए वह उस ड्राइंग-रूम से गुज़री जिसका प्रायः वही उपयोग करती थी। यह कमरा उस एण्टी चेम्बर से दूसरे नम्बर पर था जिसके अन्दर ज़ीने से होकर रास्ता जाता था और जो गिलबर्ट ऑसमण्ड के विशाल उपकरणों के बावजूद अपनी विस्तृत नग्नता को छिपा नहीं

पाता था। अचानक ड्राइंग-रूम की दहलीज़ के पास वह रुक गई। इसका कारण यह था कि उसे एक विशेष आभास मिला था। यह आभास अभूतपूर्व नहीं था। फिर भी उसमें कुछ अवश्य नया था। बिना आहट के चलने के कारण वह सामने के दृश्य को कुछ देर बिना किसी तरह की बाधा के देख सकी। मैडम मरले अपना बॉनेट पहने वहां खड़ी थी और गिलबर्ट ऑसमण्ड उससे बात कर रहा था। पल-भर उसके आने का उन्हें पता नहीं चला। उन्हें बात करते इज़ाबेल ने पहले भी देखा था, पर जो नहीं देखा था, या कम से कम लक्ष्य नहीं किया था, वह था पल-भर के लिए उनकी बातचीत का एक आत्मीयतापूर्ण चुप्पी में बदल जाना। उसे एकाएक लगा कि उसके अन्दर आने से वे लोग चौंक जाएंगे। मैडम मरले आग से कुछ दूर गालीचे पर खड़ी थी। ऑसमण्ड एक गहरी कुर्सी में बैठा पीछे को झुककर उसकी ओर देख रहा था। मैडम मरले का सिर हमेशा की तरह सीधा था पर आंखें ऑसमण्ड की ओर झुकी थीं। इज़ाबेल को जो चीज़ विशेष लगी वह यह थी कि मैडम मरले खड़ी थी और ऑसमण्ड बैठा था। सबसे पहले उसका ध्यान इस अस्वाभाविकता की ओर ही गया। फिर उसने लक्ष्य किया कि अपने विचार-विनिमय में वे लोग एक अनिश्चित विराम पर आ पहुंचे हैं और आमने-सामने रहकर पुराने मित्रों की-सी उस स्वतन्त्रता के साथ कुछ सोच रहे हैं जिसमें बिना मुंह से कुछ कहे विचार-विनिमय हो जाता है। इसमें स्तम्भित होने की कोई बात नहीं थी। पुरानी मित्रता तो उन दोनों में थी ही—पर इसमें कहीं एक चित्र था, जो रोशनी की आकस्मिक चमक की तरह क्षण-भर ही उसके सामने रहा। उन दोनों की स्थिति, और एक-दूसरे में डूबी नज़र से लगा जैसे कोई चीज़ उसने पकड़ ली हो। पर ठीक से देख पाने तक वह आभास मिट गया। मैडम मरले ने उसे देखकर बिना अपनी जगह से हिले उसका स्वागत किया, पर ऑसमण्ड उसे देखते ही सहसा अपनी जगह से उछलकर खड़ा हो गया। उसने मुंह में बुदबुदाकर घूमने जाने की इच्छा प्रकट की और मैडम मरले से इजाज़त लेकर कमरे से चला गया।

"मैं तुमसे मिलने आई थी," मैडम मरले बोली, "सोचा था तुम लौट आई होगी। पर तुम नहीं थीं, इसलिए इन्तज़ार के लिए रुक गई।"

"ऑसमण्ड ने तुमसे बैठने को नहीं कहा?" इज़ाबेल ने मुस्कराकर पूछा।

मैडम मरले इधर-उधर देखने लगी। "हां, नहीं कहा। मैं बस जा ही रही थी।"

"अब तो रुको।"

"हां, हां। मैं खास काम से आई थी। मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

"मैं तुमसे पहले भी कह चुकी हूं," इज़ाबेल बोली, "कि बहुत खास ही बात हो तो तुम इस घर में आती हो।"

"और मैं तुम्हें बता चुकी हूं कि मैं यहां आऊं या यहां से परे रहूं, दोनों के पीछे एक ही कारण होता है, और वह है तुम्हारे प्रति मेरा स्नेह।"

"हां, तुम यह मुझे बता चुकी हो।"

"इस समय तुम्हारी बात से लग रहा है, जैसे तुम्हें इसमें विश्वास न हो," मैडम मरले बोलीं।

"ओह!" इज़ाबेल ने उत्तर दिया। "तुम्हारे इरादों की गहराई पर मुझे कभी सन्देह नहीं होता।"

"पर मेरे शब्दों की सचाई पर तुम्हें सन्देह होने लगता है।"

इज़ाबेल ने संजीदगी से सिर हिलाया। "तुम्हारी हमेशा मुझपर कृपा दृष्टि रही है।"

"हां, जब-जब तुमने मुझे इसका अवसर दिया है। हमेशा तुम उसे स्वीकार नहीं करतीं, और तब तुम्हें अकेली छोड़ देना पड़ता है। पर आज मैं तुमपर कोई कृपा करने नहीं आई, एक और ही वजह से आई हूं। मैं अपनी एक मुसीबत तुम्हें सौंपकर उससे छुटकारा पाने आई हूं। तुम्हारे पति से मैं उसीकी बात कर रही थी।"

"यह आश्चर्य की बात है, क्योंकि वह मुसीबतें पसन्द नहीं करता।"

"खास तार से दूसरों की, यह मैं अच्छी तरह जानती हूं। तुम भी पसन्द करो या न करो, तुम्हें मेरी सहायता करनी ही होगी। बात मिस्टर रोजियर को लेकर है।"

"ओह!" इज़ाबेल सोचती हुई बोली। "तो मुसीबत उसकी है, तुम्हारी नहीं।"

"उसने वह मेरे ऊपर लाद दी है। वह हफ्ते में दस बार पैंज़ी के बारे में बात करने मेरे यहां आता है।"

"हां, वह उससे ब्याह करना चाहता है। मुझे पता है।"

मैडम मरले हिचकिचाई। "तुम्हारे पति की बातों से मुझे लगा कि तुम्हें पता नहीं है।"

"उसे कैसे पता होगा कि मुझे पता है ? उसने कभी इस बारे में मुझसे बात नहीं की।"

"यह शायद इसलिए कि उसे पता ही नहीं कि इस बारे में बात कैसे करनी चाहिए ?"

"जो भी हो, यह सवाल इस तरह का है कि वह इसमें कोई गलती नहीं कर सकता।"

"हां, आमतौर से उसकी सूझ-बूझ ठीक काम करती है। पर आज नहीं कर रही।"

"तुमने उसे कोई सलाह नहीं दी ?" इज़ाबेल ने पूछा।

मैडम मरले चेष्टा के साथ खुलकर मुसकराई। "तुम्हें पता है तुम्हारा व्यवहार कुछ रूखा है ?"

"इसपर मेरा कुछ वश नहीं है। मिस्टर रोज़ियर ने मुझसे भी बात की है।"

"उसका भी कारण वही है। तुम बच्ची के इतनी निकट हो।"

"ओह !" इज़ाबेल बोली। "मुझसे बेचारे को क्या तसल्ली मिली होगी ! तुम्हें मैं रूखी लग रही हूं। तो उसे जाने कैसी लगी हूंगी।"

"उसे ख्याल होगा कि तुमने जितना किया है, उससे ज्यादा कर सकती हो।"

"मैं कुछ भी नहीं कर सकती।"

"फिर भी मुझसे तो ज्यादा ही कर सकती हो। उसने पता नहीं मेरे और पैंज़ी के बीच क्या रहस्यमय सम्बन्ध खोज लिया है कि शुरू से ही वह मेरे पास आता रहा है—जैसे कि उसका भाग्य मेरे ही हाथों में हो। अब भी वह आता रहता है—मुझे उकसाने, यह जानने कि कोई आशा है या नहीं, और अपना मन उंड़ेलने।"

"वह लड़की से बहुत प्यार करता है।"

"हां, अपने लिहाज से बहुत करता है।"

"तुम यह भी कह सकती हो, कि पैंज़ी के लिहाज से भी बहुत करता है।"

मैडम मरले की आंखें पल-भर झुकी रहीं। "तुम्हें लड़की सुन्दर नहीं लगती ?"

"इतनी प्यारी बच्ची हो ही नहीं सकती—पर उसकी अपनी सीमाएं हैं।"

"मिस्टर रोज़ियर के लिए उससे प्रेम करना बहुत आसान है। उसकी सीमाएं

कम नहीं हैं।"

"नहीं," इज़ाबेल बोली। "वह बेचारा तो बस एक जेबी रूमाल जितना है —फीते के बार्डर वाले छोटे-से रूमाल जितना।" इधर उसके हास्य में काफी व्यंग्य का पुट आ गया था, पर उस समय मिस्टर रोज़ियर जैसे मासूम व्यक्ति पर उसका प्रयोग उसे स्वयं लज्जाजनक लगा।

"वह कह रहा था कि लड़की उसे बहुत पसन्द करती है," मैडम मरले बोली।

"मैं नहीं जानती। मैंने लड़की से यह बात पूछी नहीं।"

"कभी थोड़ा टटोलने की कोशिश भी नहीं की?"

"यह काम मेरा नहीं, उसके पिता का है।"

"ओह, तुम इन बातों पर बहुत जाती हो," मैडम मरले बोली।

"मुझे अपने लिए सही-गलत का खुद पता है।"

मैडम मरले फिर मुसकराई। "तुम्हारी मदद करना आसान नहीं है।"

"मेरी मदद करना?" इज़ाबेल बहुत गम्भीर होकर बोली। "तुम्हारा मतलब?"

"तुम आसानी से नाराज़ हो जाती हो। देखती नहीं हो कि मैं सावधान रहकर कितनी बुद्धिमत्ता बरतती हूं? खैर, मैंने ऑसमण्ड को बता दिया है और तुम्हें भी बता रही हूं कि मिस पैंज़ी और मिस्टर एडवर्ड रोज़ियर के प्रेम-सम्बन्ध से मुझे कुछ भी लेना-देना नहीं है। मैं पैंज़ी से उसके विषय में बात नहीं कर सकती, क्योंकि मेरी नज़र में पति बनने के लिए वही एक आदर्श व्यक्ति नहीं है।"

इज़ाबेल पल-भर सोचती रही, फिर मुसकराकर बोली, "तो ऐसा नहीं कि तुम्हें कुछ लेना-देना नहीं है।" इसके बाद उसने कुछ दूसरे स्वर में कहा, "तुम्हें इसमें बहुत ज़्यादा दिलचस्पी नहीं होनी चाहिए।"

मैडम मरले धीरे से उठ खड़ी हुई। उसकी दृष्टि में इज़ाबेल को क्षण-भर के लिए फिर वही आभास मिला जो वह कुछ देर पहले पा चुकी थी। पर इस बार मैडम मरले ने इसे लक्ष्य नहीं किया। "अगली बार रोजियर से पूछोगी तो तुम्हें पता चल जाएगा।"

"मैं उससे नहीं पूछ सकती। वह अब हमारे यहां नहीं आता। गिलबर्ट ने उसे जतला दिया है कि यहां उसका स्वागत नहीं होगा।"

"अरे हां।" मैडम मरले बोली। "यह तो मैं भूल ही गई थी, हालांकि वह

इस बात का रोना रोता रहता है। कहता है ऑसमण्ड ने उसका अपमान किया है। फिर भी ऑसमण्ड उससे उतनी घृणा नहीं करता जितनी कि वह समझता है।" वह उठी इस तरह से थी जैसे कि बात समाप्त कर रही हो। पर इधर-उधर देखती हुई वह रुकी रही। लगता था अभी उसे और भी कुछ कहना है। इज़ाबेल ने यह लक्ष्य किया, और यह भी कि वह क्या कहना चाहती है। पर अपने ही कारणों से उसने उसके लिए रास्ता नहीं खोलना चाहा।

"यह तुमने रोज़ियर को बताया होगा। तो उसे खुशी हुई होगी," उसने मुसकराकर कहा।

"मैंने ज़रूर उसे बताया है। इस हद तक तो मैंने उसे उत्साहित किया ही है। मैंने उसे सब्र रखने को कहा है, और कहा है कि वह ज़बान बन्द रखे, तो स्थिति उतनी निराशाजनक नहीं है। दुर्भाग्यवश उसपर ईर्ष्या का भूत सवार हो गया है।"

"ईर्ष्या का ?"

"उसे लॉर्ड वारबर्टन से ईर्ष्या है। कहता है, वह आदमी हर समय यहीं बना रहता है।"

इज़ाबेल थकान के कारण अब तक बैठी रही थी, पर इसपर वह भी उठ खड़ी हुई। "ओह !" उसने आहिस्ता से अंगीठी की तरफ बढ़ते हुए इतना ही कहा। मैडम मरले उसे पास से गुज़रते, और मेंटलग्लास के सामने एक बिखरी लट को संभालते देखती रही।

"मिस्टर रोज़ियर का कहना है, कि लार्ड वारबर्टन पैंज़ी से प्रेम करने लगे, यह असम्भव बात नहीं है," मैडम मरले कहती रही।

इज़ाबेल कुछ देर खामोश रही। फिर आईने से चेहरा हटाकर गम्भीर पर कोमल स्वर में बोली, "सच बात है—इसमें कुछ भी असम्भव नहीं।"

"मुझे भी मिस्टर रोज़ियर के सामने यह स्वीकार करना पड़ा। तुम्हारे पति का भी यही ख्याल है।"

"यह मैं नहीं जानती।"

"तुम उससे पूछ लो, तो जान जाओगी।"

"मैं उससे नहीं पूछूंगी," इज़ाबेल ने कहा।

"क्षमा करना, मैं भूल गई थी—तुम यह पहले ही स्पष्ट कर चुकी हो,"

मैडम मरले बोली, "लार्ड वारवर्टन के व्यवहार को तुम मुझसे कहीं ज्यादा समझ सकती हो।"

"मुझे तुम्हें यह बताने में कोई हर्ज नहीं लगता कि सचमुच लार्ड वारवर्टन मेरी सौतेली लड़की को बहुत पसन्द करता है।"

क्षण-भर के लिए मैडम मरले की दृष्टि में फिर वही भाव आया। "पसन्द करने से तुम्हारा भी वही मतलब है जो मिस्टर रोज़ियर का है ?"

"मिस्टर रोज़ियर का क्या मतलब है, यह मैं नहीं जानती। पर लार्ड वार-बर्टन ने मुझे बताया है कि पैंज़ी उसे बहुत आकर्षक लगती है।"

"और तुमने यह बात कभी ऑसमण्ड से नहीं कही ?" ये शब्द तुरन्त और अनायास, जैसे मैडम मरले के होंठों से फूटकर बाहर निकल पड़े।

इज़ाबेल की आंखें उसके चेहरे पर स्थिर हो गईं। "मेरा ख्याल है, समय आने पर उसे ज़रूर पता चल जाएगा। लार्ड वारबर्टन के पास अपनी ज़बान है, और वह बात करना जानता है।"

मैडम मरले को तुरन्त अहसास हो गया कि वह अस्वाभाविक रूप से जल्दी से बात कह गई है, और यह सोचकर—उसके गाल लाल हो गए। उसने अपने उद्वेग को संभलने का समय दिया, और इस तरह बोली, जैसे मन में इसी विषय में सोचती रही हो। "गरीब रोज़ियर से ब्याह करने से तो यह कहीं अच्छा होगा।"

"हां, कहीं अच्छा।"

"सच बहुत सुखकर बात होगी। बहुत बढ़िया रहेगी यह शादी। लार्ड वार-बर्टन यह बहुत नेक काम करेगा।"

"क्या नेक काम करेगा ?"

"कि ऐसी मामूली लड़की को वह इस नज़र से देखे।"

"मुझे ऐसा नहीं लगता।"

"यह तुम्हारी उदारता है। पर आखिर पैंज़ी ऑसमण्ड···"

"पैंज़ी ऑसमण्ड जैसी सुन्दर लड़की से उसका आज तक परिचय नहीं हुआ !" इज़ाबेल तीखे स्वर में बोली।

मैडम मरले चौंक गई, और स्वाभाविक रूप से थोड़ा अचकचा भी गई। "ओह, अभी पल-भर पहले मुझे लग रहा था कि तुम्हें लड़की में ऐसा खास कुछ नहीं लगता।"

"मैंने कहा था कि लड़की की अपनी सीमाएं हैं, और वे हैं। लार्ड वारबर्टन की अपनी सीमाएं हैं।"

"इस तरह तो हम सभीकी अपनी सीमाएं हैं। यह और भी अच्छा है, अगर लार्ड वारबर्टन में उतने से अधिक कुछ नहीं है, जितने की कि पैंज़ी अधिकारिणी है। पर वह लड़की मिस्टर रोज़ियर को चाहती है, तो मैं उसे उतने की अधिकारिणी नहीं मानूंगी। यह तो बहुत ही असंगत बात है।"

"मिस्टर रोज़ियर तो ऐसे ही जान खाता है !" इज़ाबेल एकाएक बोल गई।

"मैं तुमसे सहमत हूं। मुझे खुशी है कि तुम मुझसे यह आशा नहीं करती कि मैं उसे बढ़ावा दूं। आगे से वह कभी मेरे यहां आयेगा, तो उसे मेरा दरवाज़ा बन्द मिलेगा।" और मैडम मरले अपना लबादा समेटती चलनेके लिए तैयार हो गई। पर इज़ाबेल की एक तुच्छ-सी प्रार्थना ने उसे दरवाज़े की तरफ बढ़ने से रोक दिया।

"जो भी है, तुम उस बेचारे से रूखा बरताव मत करना।"

मैडम मरले के कन्धे और भौंहें सिकुड़ गईं, और वह इज़ाबेल की ओर देखती रही। "तुम्हारी परस्पर-विरोधी बातें मेरी समझ में नहीं आती। निस्सन्देह मैं उससे मीठा व्यवहार नहीं कर सकती, क्योंकि वह केवल दिखावा होगा। मैं चाहती हूं कि पैंज़ी की लार्ड वारबर्टन से शादी हो जाये।"

"तुम्हें वारबर्टन के प्रस्ताव करने तक अभी इन्तज़ार करना चाहिए।"

"तुम्हारी बात सच है, तो वह प्रस्ताव करेगा ही।" क्षण-भर बाद मैडम मरले ने फिर कहा, "खास तौर से अगर तुम उसे प्रेरित करो।"

"मैं प्रेरित करूं ?"

"यह बिल्कुल तुम्हारे हाथ की बात है।"

इज़ाबेल की भौंहें तन गईं। "यह तुमसे किसने कहा है ?"

"मिसेज़ टाऊशेट ने। तुमने कभी ऐसा कुछ नहीं कहा।" मैडम मरले मुसकराई।

"मैंने हरगिज ऐसी कोई बात नहीं कही।"

"तुम बता सकती थीं—जब हम एक-दूसरी से भेद की बातें किया करती थीं, तब ऐसा अवसर आ सकता था। पर तुमने मुझे बहुत कम बातें बताईं थीं। मुझे तब से कई बार ऐसा लगा है।"

खुद इज़ाबेल को भी कई बार ऐसा लगता था और उसे इससे सन्तोष मिलता

था। पर इस समय उसने यह स्वीकार नहीं किया—शायद वह यह ज़ाहिर नहीं होने देना चाहती थी कि उसे इसकी खुशी है। "तुम्हें सब बताने के लिए मेरी मौसी जो थी।" उसने सिर्फ इतना ही कहा।

"उन्होंने मुझे बताया था कि तुमने लार्ड वारबर्टन का ब्याह का प्रस्ताव ठुकरा दिया था। वे इससे बहुत परेशान थीं, और हमेशा इसी बारे में बात करती रहती थी। पर मेरा ख्याल है तुमने जो किया ठीक ही किया। पर तुमने लार्ड वारबर्टन से स्वयं ब्याह नहीं किया तो इसकी क्षतिपूर्ति किसी और से उसका ब्याह करा के कर दो।"

मैडम मरले के चेहरे पर जो चमक और अभिव्यंजना थी, उसके प्रतिबिम्ब से यत्नपूर्वक अपने चेहरे को बचाती हुई, इज़ाबेल बात सुनती रही। पर क्षण-भर बाद ही उसने बहुत नम्र और युक्तिसंगत ढंग से कहा—"यदि ऐसा हो सके तो पैंज़ी के लिहाज़ से मुझे बहुत खुशी होगी।" मैडम मरले ने इसे एक अच्छा शगुन समझकर आशातीत कोमलता के साथ उसे आलिंगन किया और विजय भाव के साथ वहां से चली गई।

४१

उस शाम पहली बार ऑसमण्ड ने इस विषय को उठाया। वह काफी देर से ड्राइंग-रूम में आया, जहां वह अकेली बैठी थी। शाम उन्होंने घर पर ही बिताई थी, और पैंजी तब तक सो चुकी थी। ऑसमण्ड डिनर के बाद से उस छोटे-से कक्ष में बैठा रहा था, जिसमें उसने अपनी किताबें लगा रखी थीं। और जिसे वह अपनी स्टडी कहता था। दस बजे लार्ड वारबर्टन आया था। जब उसे पता होता कि इज़ाबेल घर पर होगी तो वह हमेशा इसी तरह चला आता था। वह कहीं और जा रहा था, और आधा घंटा बैठा था। उससे रैल्फ का समाचार पूछने के बाद इज़ाबेल ने जान-बूझकर और बात नहीं की। वह चाहती थी कि वह उसकी सौतेली बेटी से बात करे। वह पढ़ने का बहाना करती रही, और कुछ देर के बाद प्यानो के पास चली गई। उसके मन में कमरे से चले जाने की बात भी आई। धीरे-धीरे

उसे यह विचार अच्छा लगने लगा था कि पैंजी सुन्दर लॉकले के स्वामी की पत्नी बन जाए—हालांकि शुरू में बात जिस तरह सामने आई थी, उससे उसे उत्साह नहीं हुआ था। मसाला अन्दर पहले से जमा था—मिस मरले उस शाम उसमें तीली लगा गई थी। जब इज़ाबेल दुखी होती तो हमेशा किसी उद्यम की खोज करती—यह उसका स्वभाव भी था, सिद्धांत भी। वह इस विचार को नहीं छोड़ पाती थी कि दुःख एक तरह का रोग है—कष्ट में रहने की विपरीत स्थिति है कुछ करने लगना। कुछ 'करना'—चाहे वह भी एक पलायन था, और कुछ हद तक शायद एक उपचार भी। फिर वह अपने को यह विश्वास भी दिलाना चाहती थी कि अपने पति के सन्तोष के लिए उसने सब कुछ किया है—वह उसकी ही पत्नी की अशक्तता के स्वप्नों से आक्रांत नहीं रहना चाहती थी। वह जानती थी कि एक इंगलिश भद्र व्यक्ति से पैंजी का विवाह हो जाए तो ऑसमण्ड को बहुत खुशी होगी—विशेष रूप से, क्योंकि वह व्यक्ति इतने अच्छे चरित्र का था। इज़ाबेल को लग रहा था कि इस चीज़ को कार्यान्वित करने का दायित्व यदि वह अपने पर ले ले,तो वह एक अच्छी पत्नी का कर्तव्य पूरा करेगी। वह चाहती थी कि वह ऐसी हो सके—दिल से और सप्रमाण वह अपने को इसका विश्वास दिलाना चाहती थी। इस काम को हाथ में लेने में और भी सुविधा थी। उसे व्यस्त रहने को कुछ चाहिए था, और यह काम उसे व्यस्त रख सकता था। इससे बल्कि उसका मन-बहलाव भी हो सकता था, और यदि सचमुच मन-बहलाव हो सके तो शायद वह बच भी जाए। फिर इसमें लार्ड वारबर्टन का भी भला था, क्योंकि वह उस सुन्दर लड़की के साथ बहुत प्रसन्न रहता था। हालांकि लगता कुछ 'बेजोड़'-सा था, पर लगने को तो बहुत-सी बातें लगा करती हैं। यूं पैंजी किसीको भी आकृष्ट कर सकती थी—पर शायद लार्ड वारबर्टन को छोड़कर। इज़ाबेल के खयाल में लार्ड वारबर्टन के लिहाज से वह लड़की बहुत छोटी, बहुत दुबली और शायद बहुत बनावटी भी थी। वह हमेशा एक छोटी गुड़िया-सी लगती थी, और यह वह गुण नहीं था जिसकी लार्ड वारबर्टन को खोज थी। पर पुरुषों को किस चीज़ की खोज होती है, यह कौन कह सकता है? उन्हें जो मिल जाए, उसीकी उन्हें खोज होती है, और देखने के बाद उन्हें पता चलता है कि किस चीज़ को देखकर उन्हें खुशी हासिल हो सकती है। इन मामलों में सिद्धांत कोई नहीं था, और कोई भी चीज़ किसी दूसरी चीज़ से ज्यादा स्वाभाविक या अवपेक्षित नहीं कही जा सकती थी। यह अजीब लगता

था कि जो आदमी उसे चाहता रहा हो, वह उससे इतनी अलग पैंजी जैसी लड़की को चाहने लगे—पर शायद वह जितना सोचता था उतना उसे चाहता नहीं था। और अगर चाहता था तो अब तक बिल्कुल उसे लगाव से बाहर आ चुका था। उस असफलता के बाद यह स्वाभाविक ही था कि वह सफलता के लिए बिल्कुल किसी दूसरी ही तरह की लड़की की ओर ध्यान दे। मैं कह चुका हूं कि पहले इज़ाबेल इस सम्बन्ध में उत्साहित नहीं थी, पर उस दिन वह उत्साहित होने के पश्चात् काफी प्रसन्न भी हुई। अपने पति को सुख देने के विचार से अब भी कहीं उसे खुशी हासिल हो सकती थी, यह आश्चर्य की बात थी। पर दुःख था कि एडवर्ड रोज़ियर उनके रास्ते में आ चुका था।

इस विचार से उसके चेहरे पर आई चमक कुछ धुंधली पड़ गई। दुर्भाग्यवश इज़ाबेल को इस बात का बहुत विश्वास था कि पैंजी मिस्टर रोज़ियर को और सब युवकों से अच्छा समझती है—जैसे कि वह इस सम्बन्ध में पैंजी से आमने-सामने बात कर चुकी हो। इस विश्वास से उसे ऊब हो रही थी क्योंकि वह जान-बूझकर अपने को इस जानकारी से बचाती रही थी। उतनी ही ऊब इस बात से भी हो रही थी कि मिस्टर रोज़ियर के दिमाग में भी यह चीज़ घर कर चुकी थी। रोज़ियर निःसंदेह वारबर्टन से बहुत हल्का पड़ता था। अन्तर उतना दोनों की सम्पत्ति में नहीं था जितना कि पुरुष और पुरुष के रूप में था। इस तुलना में अम-रीकन युवक का पलड़ा बहुत हल्का पड़ता था। अंग्रेज़ भद्र व्यक्ति की अपेक्षा वह कहीं अधिक बेकार सामाजिक व्यक्ति था। पैंजी का विवाह एक ज़मीदार राज-नीतिज्ञ से हो, इसका कोई विशेष कारण नहीं था, पर ऐसा आदमी उसे चाहने लगे तो और किसी का उसमें दखल नहीं था—पैंज़ी एक सुन्दर छोटे मोती जैसी पत्नी बनकर उसके साथ रह सकती थी।

पाठक को यह लग सकता है कि मिसेज़ ऑसमण्ड सहसा सिनिकल हो उठी थी, क्योंकि अन्ततः वह इस निश्चय पर पहुंची कि इस कठिनाई पर काबू पाया जा सकता है। बेचारे रोज़ियर के रूप में जो एक बाधा थी वह बहुत भयानक नहीं थी। छोटी-मोटी बाधाओं को हमेशा दूर किया जा सकता था। इज़ाबेल अच्छी तरह जानती थी कि पैंज़ी के निश्चय को दृष्टि में रखकर वह नहीं चल रही—वह निश्चय बहुत कड़ा हो, तो असुविधा हो सकती थी। पर उसका खयाल था कि ज़रा सा इशारा मिलने पर वह बात को तूल नहीं देगी और खामखाह ज़िद

पर नहीं अड़ी रहेगी। पैंज़ी का स्वभाव ऐसा था कि उसके लिए हां कहना जितना आसान था, ना कहना उतना आसान नहीं था। चिपकना उस लड़की की आदत थी। पर किस चीज़ से चिपक रही है। इसका उसके लिए विशेष महत्त्व नहीं था। लार्ड वारबर्टन आसानी से मिस्टर रोज़ियर की जगह ले सकता था, क्योंकि लड़की उसे पसन्द थी—वह खुले मन से, इज़ाबेल के सामने अपनी भावना प्रकट कर चुका था। उसने जवाब में लार्ड वारबर्टन से इतना ही कहा था कि हिन्दुस्तान के बारे में उसने जो कुछ बताया है वह सब बहुत दिलचस्प है। पैंजी के प्रति वारबर्टन का व्यवहार बहुत सही और खुलेपन का था। इज़ाबेल खुद यह देख चुकी थी, और यह भी कि वह उस लड़की के सामने ज़रा भी ऊंचा उठकर बात नहीं करता, जिससे लगे कि वह लड़की की उम्र और सादगी का लिहाज़ कर रहा है। वह ऐसे जतलाता था जैसे पैंज़ी उसकी हर बात उसी आसानी से समझ जाती हो जैसे कि वह प्रचलित संगीत-नाटकों की बात समझ जाती थी। संगीत के उतार-चढ़ाव को समझने के लिहाज़ से इतना काफी था। वारबर्टन उसके प्रति बहुत सावधान और कृपालु था—उतना ही जितना कि पहले गार्डनकोर्ट में एक छोटी-सी चहकती लड़की के प्रति रहा था। किसी भी लड़की पर इसका असर हो सकता था—उसे याद था कि वह स्वयं किस तरह इससे प्रभावित हुई थी। उसने अपने से कहा—कि वह अगर पैंज़ी की तरह सादा मन की होती तो प्रभाव शायद और भी गहरा पड़ता। उसका वारबर्टन को इन्कार करना सादगी नहीं थी। उसमें उतना ही उलझाव था जितना बाद में ऑसमण्ड को स्वीकार करने में रहा था। पर पैंज़ी अपनी सादगी के बावजूद सब कुछ समझती थी और उसे खुशी थी कि लार्ड वारबर्टन उससे फूलों और नाचने वाले लड़कों की बात न करके इतालवी राष्ट्र, किसानों की अवस्था, प्रसिद्ध ग्रिस्ट-टेक्स और रोमन समाज को लेकर अपनी धारणाओं के विषय में बात करता है। अपनी टेपेस्ट्री पर सुई चलाती हुई वह झुकी-झुकी मधुर आंखों से वारबर्टन को देखती रहती। जब उसकी आंखें झुकी होतीं तो भी वह छिपे-छिपे उसके व्यक्तित्व को, उसके हाथ-पैरों को, और कपड़ों को ध्यान से देखती रहती। इज़ाबेल उसे यह समझा सकती थी कि व्यक्ति के रूप में भी वह आदमी मिस्टर रोज़ियर से कहीं बेहतर है। पर इज़ाबेल को ऐसे समय आश्चर्य होता कि आखिर मिस्टर रोज़ियर इन दिनों है कहां—पालाज़ो रोकानेरा में तो वह अब बिल्कुल नज़र नहीं आता था। अपने पति को खुश करने का विचार

आश्चर्यजनक रूप से इज़ाबेल के मन में घर करता जा रहा था।

इसके आश्चर्यजनक होने के कई कारण हैं जिनका मैं यहां उल्लेख करूंगा। जिस शाम का मैं ज़िक्र कर रहा हूं, उस शाम वह लार्ड वारबर्टन के वहां रहते उसे पैंज़ी के साथ अकेला छोड़कर कमरे से चले जाने का बड़ा कदम उठाने जा रही थी। मैं इसे बड़ा कदम इसलिए कहता हूं कि गिलबर्ट ऑसमण्ड को यह ऐसा ही लगता, और इज़ाबेल उस समय अपने पति का ही दृष्टिकोण अपनाने की कोशिश कर रही थी। काफी हद तक वह इसमें सफल भी हो रही थी, पर बस थोड़ा-सा चूक गई। यह इसलिए नहीं कि उसे वहां से जाना छोटी या घटिया बात लगी, क्योंकि स्त्रियां इस तरह की बातें बहुत साफ मन से किया करती हैं, और इज़ाबेल में स्वभाव से ही अपनी जाति के गुण अपेक्षया अधिक थे। उसे रोका एक अस्पष्ट सन्देह ने—कि जाने यह ठीक है या नहीं। सो वह ड्राइंग-रूम में रुकी रही। कुछ देर बाद लार्ड वारबर्टन उठकर एक पार्टी के लिए चला गया—पैंज़ी से यह कहकर कि कल वह उसे उस पार्टी का सारा हाल बताएगा। वारबर्टन के जाने के बाद वह सोचती रही कि अगर वह पन्द्रह मिनट के लिए चली जाती तो क्या सचमुच कुछ ऐसा हो सकता था जो अब नहीं हुआ। पर फिर उसने मन ही मन कहा कि उनके अतिथि के मन में ऐसी कोई बात होती तो वह आसानी से उसे कोई इशारा दे सकता था। पैंज़ी ने वारबर्टन के जाने के बाद उसके बारे में कोई बात नहीं की और इज़ाबेल भी जान-बूझकर चुप रही। उसने निश्चय कर लिया था कि जब तक वारबर्टन अपनी तरफ से बात न करे, वह खामोश रहेगी। पर इज़ाबेल को अपनी भावना का परिचय देने के बाद वारबर्टन को इसमें जितना समय लेना चाहिए था, उसने उससे ज़्यादा समय लिया। पैंज़ी सोने चली गई और इज़ाबेल को स्वीकार करना पड़ा कि अपनी सौतेली बेटी के विचारों का उसे कुछ अनुमान नहीं है। लड़की के पारदर्शक स्वभाव के आरपार देख पाना, उस समय उसके लिए सम्भव नहीं हुआ।

वह आधा घंटा अकेली बैठी आग की तरफ देखती रही, जब तक कि उसका पति वहां नहीं आ गया। ऑसमण्ड कुछ देर चुपचाप इधर-उधर घूमता रहा, फिर बैठकर उसी की तरह आग की तरफ देखने लगा। पर इज़ाबेल की आंखें अब चिमनी की कांपती लौ से हटकर ऑसमण्ड के चेहरे पर आ टिकी थीं, और उसकी खामोशी का जायज़ा ले रही थीं। गौर से देखना उसकी आदत बन गई थी और यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि आत्म-रक्षा की भावना के साथ मिलकर यह

भावना उसका स्वभाव बनती जा रही थी। वह यथासम्भव ऑसमण्ड के विचारों का अनुमान लगाना चाह रही थी—उसके मन की बात पहले से जानकर उसका जवाब तैयार रखना चाह रही थी। जवाब तैयार रखने की उसे कभी आदत नहीं रही थी—वह अब भी यह बाद में ही सोचती थी कि उसने ऐसा-ऐसा कहा होता तो कितना अच्छा होता। पर सावधान वह जरूर रहने लग गई थी—यह सावधानी ज्यादा ऑसमण्ड के चेहरे के सामने बरतनी पड़ती थी। यह वही चेहरा था जिसे उसने फ्लोरेंटीन विला के टैरेस पर उतनी ही गम्भीर, पर शायद कम पारदर्शक आंखों से देखा था। अन्तर इतना ही था कि ब्याह के बाद ऑसमण्ड थोड़ा मोटा हो गया था। पर अब भी वह देखने वाले को अपने में विशिष्ट लग सकता था।

"लार्ड वारबर्टन आया था?" आखिर ऑसमण्ड ने पूछा।

"हां, आधा घंटा बैठकर गया है।"

"वह पैंज़ी से मिला था?"

"हां, सोफे पर उसके साथ ही बैठा था।"

"उससे काफी बात की उसने?"

"वह तो लगभग उसी से बात करता रहा।"

"मुझे लगता है कि लड़की उसका ध्यान खींच रही है। इसे यही कहते हैं न?"

"मैं अपनी तरफ से इसे कुछ नहीं कहूंगी," इज़ाबेल बोली, "इसे क्या कहना चाहिए यही जानने के लिए मैं तुम्हारा इन्तज़ार कर रही थी।"

"तुम इस चीज का कभी ख्याल नहीं करती," ऑसमण्ड ने पल-भर रुककर कहा।

"मैंने इस बार तय किया है कि तुम्हारी इच्छा के अनुसार कार्य करने का प्रयत्न करूंगी। पहले मैं प्रायः इसमें असफल रही हूं।"

ऑसमण्ड ने आहिस्ता से अपना सिर घुमाकर उसकी तरफ देखा। "क्या तुम मुझसे लड़ना चाहती हो?"

"नहीं। मैं बल्कि शान्ति से रहने का प्रयत्न कर रही हूं।"

"इससे आसान कोई बात हो ही नहीं सकती। तुम्हें पता है कि अपनी तरफ से मैं कभी नहीं लड़ता।"

"मुझे जो तुम गुस्सा दिला देते हो उसे क्या कहोगे?" इज़ाबेल ने पूछा।

"मैं कोशिश करके ऐसा नहीं करता। अगर ऐसा हो जाता है, तो स्वाभाविक

रूप से ही हो जाता है। फिर इस समय तो मैं बिल्कुल कोशिश नहीं कर रहा।"

इज़ाबेल मुस्कराई। "ख़ैर जाने दो। मैंने तय किया है कि अब कभी गुस्सा नहीं करूंगी।"

"बहुत अच्छा निश्चय है यह। तुम्हारा मिजाज़ काफी तेज है।"

"हां, तेज़ तो है," कहते हुए इज़ाबेल ने किताब परे हटा दी और पैंज़ी मेज़ पर—जो कढ़ाई की पट्टी छोड़ गई थी, उसे उसने उठा लिया।

"यह भी एक वजह है जो मैंने अपनी लड़की के इस मामले को लेकर तुमसे बात नहीं की," ऑसमण्ड बोला। वह अक्सर पैंज़ी का उल्लेख इन्हीं शब्दों में करता था। "मुझे डर था तुम विरोध करोगी—कि तुम्हारी इस बारे में अपनी राय होगी। मैंने रोज़ियर से कह दिया है कि वह अपना काम देखे।"

"तुम्हें डर था कि मैं रोज़ियर की वकालत करूंगी? तुमने नहीं देखा कि मैंने कभी तुमसे उसकी बात नहीं की?"

"मैंने कभी तुम्हें इसका मौका ही नहीं दिया। आजकल हममें बात ही इतनी कम होती है। मुझे पता है वह तुम्हारा पुराना दोस्त है।"

"हां, वह मेरा पुराना दोस्त है।" हालांकि इज़ाबेल अपने हाथ की पट्टी जितनी भी उस आदमी की परवाह नहीं करती थी, फिर भी वह एक पुराना दोस्त तो था ही। और अपने पति के सामने वह इस तरह के सम्बन्धों को छोटा नहीं करना चाहती थी। ऑसमण्ड एक विशेष ढंग से इनके प्रति घृणा प्रकट किया करता था, जिसके कारण वह इनके प्रति विशेष आदर दिखाती थी, चाहे फिर सम्बन्ध इस बार की तरह कितना ही तुच्छ क्यों न हो। कभी-कभी उसे केवल इस कारण ही कुछ स्मृतियों की कोमलता से एक लगाव महसूस होता था कि उनका सम्बन्ध उसके अविवाहित जीवन से था। "पर पैंज़ी के मामले में," वह पल-भर रुककर बोली, "मैंने उसे कोई प्रोत्साहन नहीं दिया।"

"यह खुश-किस्मती की बात है," ऑसमण्ड बोला।

"तुम्हारा मतलब है, मेरे लिहाज़ से। रोज़ियर को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।"

"उसकी बात करने का कोई फायदा नहीं है," ऑसमण्ड ने कहा, "मैंने तुम्हें बताया है कि मैंने उसे निकाल दिया है।"

"ठीक है। पर एक प्रेमी बाहर रहकर भी प्रेम कर सकता है। बल्कि कई

बार ज्यादा करने लगता है। मिस्टर रोजियर को अब भी आशा है।"

"वह चाहे तो अपना जी खुश रख सकता है। मेरी लड़की बिल्कुल खामोश रहकर भी लेडी वारबर्टन बन सकती है।"

"तुम्हें इससे खुशी होगी ?" इज़ाबेल की सादगी उतनी बनावटी नहीं थी जितनी कि लग सकती थी। वह कोई धारणा अपनी तरफ से नहीं रखना चाहती थी, क्योंकि ऑसमण्ड अकस्मात् उसकी धारणाओं का उसके विरुद्ध उपयोग कर सकता था। वह अभी-अभी स्वयं यह सोच रही थी कि पैंज़ी के लेडी वारबर्टन बन जाने से ऑसमण्ड को कितनी खुशी होगी। पर यह उसके अपने मन की बात थी। ऑसमण्ड के सामने वह तब तक यह मानने को तैयार नहीं थी जब तक कि वह अपने मुंह से यह न कह दे। लार्ड वारबर्टन इतनी बड़ी चीज है कि ऑसमण्ड परिवार अपनी आदत से कहीं ज्यादा प्रयत्न उसे पाने के लिए करे, यह वह उसके साथ मानकर चलने को तैयार नहीं थी। गिलबर्ट अक्सर यह कहा करता था कि दुनिया की कोई चीज उसके लिए बड़ी नहीं है, कि वह दुनिया के बड़े से बड़े लोगों को अपने बराबर मानकर चलता है, और कि उसकी लड़की किसी युवराज की तरफ एक बार देखकर ही उसे प्राप्त कर सकती है। यह कहने के लिए ऑसमण्ड को अपनी हमेशा की रौ से हटना पड़ता कि वह लार्ड वारबर्टन के साथ सम्बन्ध के लिए बहुत उत्सुक है और कि उसके हाथ से निकल जाने पर फिर वैसा आदमी उन्हें नहीं मिलेगा। उसे अच्छा यही लगता कि यह बात उसकी पत्नी की तरफ से कही जाए। चाहे घंटा भर पहले इज़ाबेल मन में उसे खुश करने की योजना बना रही थी, पर इस वक्त उसके सामने वह उसकी मर्जी से चलने या उसके मन के अनुसार बात करने के लिए तैयार नहीं हुई। वह अच्छी तरह जानती थी कि उसके प्रश्न का ऑसमण्ड के मन पर क्या प्रभाव पड़ेगा—कि उससे वह कितना अपमानित महसूस करेगा। ठीक है—वह भी तो उसे बेहद अपमानित करता था। बड़े अवसरों की प्रतीक्षा में रहकर साधारण अवसरों के प्रति वह कितनी उदासीनता दिखाया करता था। इज़ाबेल किसी बड़े अवसर का लाभ नहीं उठाना चाहती थी, इसलिए इस छोटे अवसर को उसने हाथ से नहीं जाने दिया।

ऑसमण्ड ने उत्तर बहुत सम्मानपूर्ण ढंग से दिया। "मुझे बहुत खुशी होगी। यह बहुत अच्छी शादी होगी। फिर एक और भी फायदा है, और वह यह कि लार्ड

वारवर्टन तुम्हारा पुराना मित्र है। इस परिवार के साथ सम्बन्ध उसे भी अच्छा लगेगा। कितनी विचित्र बात है कि पैंज़ी के सब प्रशंसक तुम्हारे पुराने मित्र हैं।"

"यह स्वाभाविक ही है कि वे लोग मुझसे मिलने आए। मुझसे मिलने आकर वे यहां पैंज़ी को देखते हैं। पैंज़ी को देखकर यह स्वभाविक ही है कि वे उससे प्रेम करने लगें।"

"मेरा भी यही ख्याल है। पर तुमपर कोई बाध्यता नहीं है।"

"पैंज़ी की लार्ड वारबर्टन से शादी हो जाए तो मुझे बहुत खुशी होगी," इज़ाबेल ने खुले ढंग से कहा, "वारबर्टन बहुत अच्छा आदमी है। तुमने लड़की के खामोश बैठने की बात कही है, पर वह बिल्कुल खामोश नहीं रहेगी। मिस्टर रोज़ियर को खो देने पर शायद वह तड़प उठेगी।"

ऑसमण्ड ने इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया—वह आग की ओर देखता बैठा रहा। "एक कुलीन महिला बनना पैंज़ी को अच्छा लगेगा," पल-भर बाद उसने कुछ कोमलता के साथ कहा, "लड़की की सबसे बड़ी इच्छा यही है कि वह एक आदमी को खुश रख सके।"

"शायद मिस्टर रोज़ियर को ही।"

"नही, मुझे।"

"शायद थोड़ा-बहुत मुझे भी," इज़ाबेल बोली।

"हां, तुम्हारी वह बहुत कद्र करती है। पर करेगी वह वही जो मैं चाहूंगा।"

"तुम्हें इसका विश्वास है तो बहुत अच्छी बात है यह," इज़ाबेल बोली।

"इस बीच मैं चाहूंगा," ऑसमण्ड ने कहा, "कि हमारा सम्भ्रान्त अतिथि लड़की से बात करे।"

"उसने बात की है—मुझसे। उसका कहना है कि लड़की अगर उसमें दिलचस्पी ले, तो उसके लिए यह बहुत खुशी की बात होगी।"

ऑसमण्ड ने जल्दी से सिर मोड़ा पर तुरन्त कहा कुछ नहीं। फिर तीखे स्वर में पूछा, "तुमने यह मुझे पहले क्यों नहीं बताया ?"

"इसका मौका ही नहीं मिला। तुम्हें पता ही है हम कैसे रहते हैं। आज पहली बार मौका मिलते ही मैंने बता दिया है।"

"तुमने उससे रोज़ियर की बात की थी ?"

"हां, थोड़ी-सी बात की थी।"

"इसकी ज़रूरत थी क्या ?"

"मैंने सोचा कि अच्छा है वह जान ले ताकि, ताकि--" और इज़ाबेल रुक गई।

"ताकि क्या ?"

"ताकि वह उसके मुताबिक ही निश्चय कर सके।"

"ताकि वह मन बदल ले—यह मतलब है तुम्हारा ?"

"नहीं। ताकि वह समय रहते बात कर सके।"

"तुम्हारी बात का यह असर तो नहीं हुआ लगता।"

"तुम्हें सब्र रखना चाहिए," इज़ाबेल बोली, "तुम जानते हो, अंग्रेज़ कितने संकोची होते हैं।"

"यह आदमी वैसा नहीं है। तुमसे प्रस्ताव करते समय उसने संकोच नहीं किया था।"

इज़ाबेल को आशंका थी कि ऑसमण्ड यह बात कहेगा। सुनकर उसे झुरझुरी-सी हुई। "क्षमा करना बहुत संकोच किया था उसने," वह बोली।

कुछ देर ऑसमण्ड ने कुछ नहीं कहा। एक पुस्तक उठाकर वह उसके पन्ने पलटने लगा, जबकि इज़ाबेल खामोश रहकर पैंज़ी की पट्टी में व्यस्त हो रही। "तुम्हारा उस आदमी पर बहुत प्रभाव होना चाहिए," आखिर ऑसमण्ड ने कहा, "तुम जब भी चाहो उसे इस चीज़ के लिए राज़ी कर सकती हो।"

बात और भी चोट पहुंचाने वाली थी, पर इज़ाबेल को लगा कि उसने बहुत स्वाभाविक ढंग से यह कहा है। कुछ देर पहले वह स्वयं भी तो यही सोच रही थी। "मेरा उस पर प्रभाव क्यों होना चाहिए ?" उसने पूछा, "मैंने ऐसा क्या किया है, जिससे वह मेरी बात मानने के लिए मजबूर हो ?"

"तुमने उससे विवाह करने से इन्कार किया है," ऑसमण्ड ने किताब पर आंख गड़ाये हुए कहा।

"इसका मुझे बहुत गुमान नहीं होना चाहिए," इज़ाबेल ने उत्तर दिया।

ऑसमण्ड किताब फेंककर उठ खड़ा हुआ, और हाथ पीछे किये आग के सामने खड़ा हो गया—"खैर, मैं इतना ही कह सकता हूं कि यह चीज़ तुम्हारे हाथ में है। और मुझे कुछ नहीं कहना है। जरा सी सद्‌भावना से तुम यह काम करा सकती हो। तुम इसपर सोच लेना और ध्यान रखना कि मैं तुम पर कितना

निर्भर कर रहा हूं।" वह कुछ देर उसका उत्तर सुनने के लिए रुका रहा। पर इज़ाबेल ने कोई उत्तर नहीं दिया, तो वह टहलता हुआ कमरे से बाहर चला गया।

४२

इज़ाबेल ने कुछ नहीं कहा क्योंकि ऑसमण्ड के शब्दों ने स्थिति उसके सामने ला दी थी और वह उसकी जांच में व्यस्त थी। उन शब्दों में कुछ था जिससे उसके अन्दर का स्पन्दन सहसा गहरा हो गया था और उसे बात करते डर लगा था। ऑसमण्ड के जाने के बाद उसने कुरसी की पीठ से टेक लगाकर आंखें मूंद लीं। उसके बाद गहरी रात तक वह विचारमग्न वहीं ड्राइंग रूम में बैठी रही। एक नौकर आग को ठीक करने कमरे में आया, तो उसने उससे नयी मोमबत्तियां मंगवाकर उससे कहा कि वह जाकर सो जाय। ऑसमण्ड ने उससे अपनी बात पर विचार करने को कहा था—वह उस पर और भी कई बातों पर विचार करती रही। मैडम मरले ने कहा था कि उसका लॉर्ड वारबर्टन पर प्रभाव है—इससे एक अप्रत्याशित-सा भाव उसके मन में जागने लगा था। क्या यह सच था कि उसके और लॉर्ड वारबर्टन के बीच अब भी कुछ शेष था—कि इसीलिए पैंज़ी से विवाह का प्रस्ताव करके वह उसका अनुमोदन चाहता था, कि इस तरह वह उसीको प्रसन्न करने की कोशिश में था? अब तक इज़ाबेल ने अपने से यह सवाल नहीं किया था क्योंकि ऐसी कोई बाध्यता नहीं आयी थी। पर अब जबकि सवाल सीधा उसके सामने था, तो उत्तर जिस रूप में नज़र आ रहा था, उससे वह डर रही थी। निश्चय ही कुछ था, लॉर्ड वारबर्टन के मन में ज़रूर था। जब वह पहले पहल रोम आया था, तो उसे लगा था कि उन दोनों के बीच का सूत्र बिल्कुल टूट चुका है। पर धीरे-धीरे उसे आभास होने लगा था कि उसका एक स्पष्ट अस्तित्व है। वह चाहे एक बाल जितना पतला था, पर कभी-कभी उसका कांपना महसूस हो जाता था। उसके अपने मन में कुछ नहीं बदला था—जो वह उस व्यक्ति के बारे में पहले सोचती थी, वही अब भी सोचती थी। यूं बदलने का कोई मतलब भी नहीं था—वह भाव उसके मन में बल्कि पहले से गहरा ही हुआ था। पर वार-

वर्टन ? क्या वह अब भी उसे और स्त्रियों की अपेक्षा अधिक मानता था ? क्या वह उन अन्तरंग क्षणों की स्मृति पर ही निर्भर रहना चाहता था जो कभी उन दोनों के बीच बीते थे ? इज़ाबेल जानती थी कि ऐसी प्रवृत्ति के कुछ लक्षण उसने देखे थे। पर उस व्यक्ति की वास्तविक आशा और प्रवृत्ति क्या थी, और बेचारी पैंज़ी के प्रति उसकी भावना, जो ऊपर से सच्ची जान पड़ती थी, किस तरह उस प्रवृत्ति के साथ घुली-मिली थी ? यदि सचमुच उसे गिलबर्ट ऑक्समण्ड की पत्नी से प्रेम था, तो इससे वह क्या सुख पाने की आशा रखता था ? यदि उसे पैंज़ी से प्रेम था, तो उसकी सौतेली मां से उसे प्रेम नहीं हो सकता था, और यदि उसकी सौतेली मां से उसे प्रेम था तो उसे पैंज़ी से प्रेम नहीं हो सकता था। यदि सचमुच उसका वारबर्टन पर प्रभाव था, तो पैंज़ी से उसका विवाह कराने के लिये उस प्रभाव का प्रयोग कहां तक ठीक था—यह जानते हुए कि वह आदमी बेचारी पैंज़ी की खातिर नहीं, उसी की खातिर ऐसा करेगा ? क्या उसका पति उससे यही सेवा चाहता था ? बहरहाल उस समय यही कर्त्तव्य उसके सामने था—यूं मन में वह स्वीकार कर रही थी कि वारबर्टन के मन से उसकी निकटता का मोह अभी गया नहीं है। यह कर्त्तव्य सुखकर नहीं था, बल्कि उससे उसे वितृष्णा हो रही थी। वह निराश-भाव से अपने से पूछ रही थी, कि क्या लार्ड वारबर्टन पैंज़ी से प्रेम का बहाना किसी और ही उद्देश्य से—अर्थात् कोई और ही अवसर पाने के लिए—कर रहा है ? पर उसने वारबर्टन को इस तरह की महीन और दोहरी मनोवृत्ति के अभियोग से मुक्त कर दिया—उसकी इच्छा खुले मन से उसपर विश्वास करने की थी। पर यदि पैंज़ी के प्रति उस आदमी का आकर्षण एक आत्म-छलना भी थी तो वह स्थिति भी धोखे की स्थिति से बेहतर नहीं थी। इज़ाबेल इन भद्दी सम्भावनाओं में तब तक उलझी रही जब तक कि उसने रास्ता बिल्कुल ही नहीं खो दिया। इनमें से कुछ सम्भावनाएं तो सामने आकर उसे बहुत ही भद्दी लग रही थी। फिर आंखें मलकर उसने अपने को इस जाल से मुक्त कर लिया। सोचा कि उसका दिमाग ठीक काम नहीं कर रहा और कि उसके पति का तो बिल्कुल ही नहीं कर रहा। लार्ड वारबर्टन की उसमें ज़रा दिलचस्पी नहीं थी और जितना वह चाहती थी, उससे ज़्यादा वह उसे कतई महत्त्व नहीं देता था। जब तक कोई विपरीत कारण सामने न आये, तब तक वह इसी में विश्वास करेगी—और कारण ऑसमण्ड की सनक से कहीं बड़ा होना चाहिए।

पर इस निश्चय से उस शाम उसे बहुत कम सांत्वना मिली। कुछ आतंक थे, जो अवकाश मिलते ही उसकी आत्मा की पूर्वभूमि में जमा होने लगते थे। वह क्यों इतने सजीव हो उठे हैं, वह नहीं समझ पा रही थी—क्या इसका कारण यह था कि उस शाम उसे अपने पति और मैडम मरले के बीच एक ऐसी एक-सूत्रता का आभास मिला था जिसका कि उसे अनुमान नहीं था। यह भाव बार-बार उसके मन में आ रहा था और वह आश्चर्य कर रही थी कि क्या उसने पहले कभी ऐसा नहीं सोचा। इसके अलावा आधा घंटा पहले ऑसमण्ड से हुई उसकी बातचीत इसका बहुत बड़ा उदाहरण थी कि वह आदमी किसी भी चीज़ को छूकर बेजान कर सकता है—उसकी किसी भी चीज़ पर नज़र डालकर उसे अस्त-व्यस्त कर सकता है। ऑसमण्ड के प्रति अपनी वफादारी का सबूत देना अच्छी बात थी, पर क्योंकि वह एक खास चीज़ चाहता था इसलिए उसके विरोध में मन में भावना जागती थी। लगता था जैसे ऑसमण्ड की नज़र में एक नहूसत हो, उसकी उपस्थिति एक महामारी की तरह हो और उसकी कृपा एक दुर्भाग्य की तरह। दोष क्या वास्तव में ऑसमण्ड में ही था या उस व्यक्ति के प्रति उसके अपने मन के अविश्वास में? यह अविश्वास ही उनके अल्पकालिक विवाहिक जीवन की स्पष्ट उपलब्धि थी। उनके बीच एक खाई थी जिसके दोनों ओर से वे आंखों में प्रतारणा का, आक्रोस लिए एक-दूसरे की तरफ देखा करते थे। यह एक विचित्र-सा विरोध था जिसका उसे पहले सपने में भी अनुमान नहीं था। इस विरोध में जो एक के लिए महान् सिद्धान्त था, वही दूसरे के लिए, घृणा का विषय था। इसमें उसका अपना कोई कसूर नहीं था —उसने कोई धोखा नहीं दिया था। वह केवल प्रशंसा और विश्वास के सहारे चली थी। उसने पहले कदम एक निर्मल विश्वास भावना से उठाए थे, पर फिर उसे लगा था कि सह-जीवन की वह लम्बी वीथिका वास्तव में एक अंधेरी तंग गली है जिसके अन्त में एक ठोस दीवार खड़ी है। सोचा था कि वह वीथिका सुख के शिखर पर ले जाएगी, जहां से सारी दुनिया नीचे नज़र आएगी। वहां से अपने में आह्लाद और विशेषता का अनुभव करते हुए नीचे नज़र डालकर दुनिया पर तरस खाएंगे, और अच्छे-बुरे का फैसला देंगे। पर उसकी जगह वह रास्ता नीचे नीचे ज़मीन की तरफ ऐसे क्षेत्रों में लेता आया था, जहां केवल अवसाद और बाधाएं ही थी, जहां से दूसरों के जीवन की सहज-स्वच्छन्द ध्वनियां अपने ऊपर से सुनाई देती जान पड़ती थी और जहां आकर असफलता की अनुभूति उत्तरोत्तर गहरी होती जाती

थी। अपने पति के प्रति उसका अविश्वास—यही तो था जिसने दुनिया को इतनी अंधेरी बना दिया था। अविश्वास जितनी जल्दी प्रकट होता हैं उतनी जल्दी उसकी व्याख्या नहीं हो सकती। वह एक ऐसा संश्लिष्ट भाव था कि उसे पकाने में न जाने कितने समय और उससे भी अधिक कितने दुःख का योग रहा था। दुःख इज़ाबेल के लिए एक क्रियाशील परिस्थिति थी। उसका रूप एक ठंडी निःस्तब्ध निराशा का नहीं एक वैचारिक आवेश, आशंका और हर दबाव की प्रतिक्रिया का था। इज़ाबेल का ख्याल था कि अपने टूटते विश्वास को वह अपने तक रख सकी है—कि सिवाय ऑसमण्ड के और किसी को इसका अनुमान नहीं। हां ऑसमण्ड जानता था और कभी-कभी उसे लगता कि वह इसमें सुख भी पाता है। यह अविश्वास धीरे-धीरे आया था। विवाहित जीवन का पहला वर्ष ऐसी आतंरिक घनिष्ठता में बीता था कि खतरे का एहसास उसे उसके अन्त में ही होना शुरू हुआ था। उसके बाद छायाएं घिरने लगी थीं—ऑसमण्ड जैसे जान-बूझकर—और दिखावे के साथ एक-एक करके बत्तियां गुल करता गया था। शुरू में अंधेरा उतना गहरा नहीं था और वह अपना रास्ता उसमें देख सकती थी। पर धीरे-धीरे वह गहरा होता गया था। अब कभी अगर वह परदा कुछ क्षणों के लिए उठ भी जाता, तो भविष्य के कुछ कोने ऐसे थे जो कि गाढ़े अंधेरे में डूबे रहते। यह सब छायाएं अपने मन की नहीं थीं, इसका उसे विश्वास था। उसने अपनी ओरसे सही और संयत रहने और केवल सचाई को ही देखने का पूरा प्रयत्न किया था। वे छायाएं उसके पति के अस्तित्व का ही एक मार्ग थीं—उसीके अंकुर और परिणाम। कारण ऑसमण्ड के कोई बुरे काम या क्षुद्रताएं नहीं थी। ऐसा कोई अभियोग वह उसपर नहीं लगाती थी। एक ही चीज़ थी और वह भी बुराइयों में नहीं आती थी। ऑसमण्ड कुछ गलत नहीं करता था, और न किसी तरह की क्रूरता दिखाता था—बात केवल इतनी ही थी कि वह उससे घृणा करता था। बस इतना ही उसका अभियोग ऑसमण्ड पर था। दुःख की बात यही थी। यह कोई बुराई नहीं थी, क्योंकि बुराई से बचाव का उपाय ढूंढ़ा जा सकता था। ऑसमण्ड ने उसे अपनी कल्पना से बहुत भिन्न पाया था—जैसी उसने सोचा था वैसी वह नहीं साबित हुई थी। पहले ऑसमण्ड का ख्याल था कि वह उसे बदल लेगा और वह भी उसकी इच्छा के अनुसार चलने का पूरा प्रयत्न करती रही थी। पर आखिर वह जो थी सो तो थी ही—इसे वह कैसे बदल सकती थी? अब किसी तरह के दिखावे या ओढ़ने का कोई फल नहीं था, क्योंकि

ऑसमण्ड उसे जान चुका था और मन में निश्चय कर चुका था। वह ऑसमण्ड से डरती नहीं थी। उसे यह आशंका भी नहीं थी कि ऑसमण्ड उसे चोट पहुंचाएगा—क्योंकि ऑसमण्ड की घृणा का यह रूप नहीं था। ऑसमण्ड यथा-सम्भव उसे कोई हत्था नहीं देना चाहता था, अपने को कभी गलत स्थिति में नहीं रखना चाहता था। इज़ाबेल जब अपनी रूखी, स्थिर आंखों से भविष्य का जायज़ा लेती, तो उसे लगता कि अपना प्रतिशोध ऑसमण्ड उससे वहां पर लेगा। वह ऑसमण्ड को कई हत्थे देगी और कई तरह से अपने को गलत स्थिति में डालेगी। कभी-कभी उसे ऑस-मण्ड पर दया भी आती। सोचती कि यदि वह मानसिक रूप से उससे छल न कर रही होती, तो कितनी पूरी तरह शारीरिक रूप से छल करती। ऑसमण्ड से परिचय होने पर उसने अपने को बहुत मिटा लेना चाहा था—अपने को अपने वास्तविक आकार से बहुत छोटी करके दिखाना चाहा था। इसका कारण यह था कि ऑसमण्ड ने अपने आकर्षण का जादू उसपर डालना चाहा था और वह असाधारण रूप से उससे प्रभावित हो गई थी। ऑसमण्ड अब बदला नहीं था। कोर्टशिप के साल में भी उसने अपना कुछ छिपाया नहीं था। पर तब तक उसने ऑसमण्ड के स्वभाव का एक अंश ही देखा था, जैसे कि चांद को कोई ग्रहण के समय ही देखे। पर अब पूरा चांद उसके सामने था—वह उस पूरे आदमी को देख रही थी। तब वह खामोश रहकर ऑशमण्ड को पूरा अवसर देती रही थी—फिर भी वह एक अंश ही था, जिसे वह एक पूरा आदमी समझ बैठी थी।

सच वह उस आकर्षण से कितना प्रभावित हुई थी! वह चीज़ समाप्त नहीं हुई थी—अब भी वैसी ही थी। वह जानती थी कि वह ऑसमंड की कौन-सी विशेषता है जिससे वह जब चाहे तब अपने को लुभावना बना लेता है। उसने प्रेम करते समय अपने को आकर्षक बनाना चाहा था, और वह क्योंकि आकृष्ठ होना चाहती थी, इसलिए ऑसमंड की सफलता में कुछ आश्चर्यजनक नहीं था। ऑसमंड की सफलता का कारण उसकी सचाई थी—इससे इन्कार करने की बात अब भी इज़ाबेल के मन में नहीं आती थी। ऑसमंड उसपर अनुरक्त था। क्यों अनुरक्त था यह भी उसने बताया था। उतनी प्रतिभाशाली स्त्री से पहले कभी उसका सम्पर्क नहीं हुआ था। यह बात सच हो सकती थी, पर उन दिनों वह और भी न जाने क्या-क्या सोच जाती थी जिसका कोई आधार नहीं था।

तब ऑसमंड उसे एक अद्‌भुत व्यक्ति लगता था—उसकी अनुरक्त आत्मा और विचलित कल्पना ऑसमंड को ऐसे ही रूप में देखती थी। एक खास तरह के नक्श उसे अच्छे लगे थे और उनमें उसने एक विशिष्ट आकृति को देखने की कल्पना की थी। उसे वह निर्धन और अकेला होते हुए भी बहुत शिष्ट लगा था—इसी से उसकी दिलचस्पी जाग आई थी और उसे लगा था कि उसे जो अवसर चाहिए वह मिल गया है। उस आदमी में उसे एक अकथ्य सौंदर्य नज़र आया था—उसकी स्थिति में, उसके मन में, उसके चेहरे में। उसे वह असहाय और प्रभावहीन भी लगा था, पर इसी भावना ने उस कोमलता को जन्म दिया था, जोकि आदर का आधार होती है। वह एक आंशकित यात्री की तरह था जो कि समुद्र की ओर देखता ज्वार की प्रतीक्षा में किनारे पर टहल रहा हो और अभी अपने पाल न खोल रहा हो। इसी सब में उसे अपने लिए अवसर नज़र आया था। वह उस आदमी की नाव को किनारे से खोलेगी; वह उसका भाग्य बनेगी। कितना अच्छा होगा उस व्यक्ति से प्रेम करना! और उसने उससे प्रेम किया था—कितनी उत्सुकता और उत्साह से अपने को समर्पित किया था। इसका बहुत कुछ कारण ऑसमंड की विशेषताएं थीं, पर उतना ही कारण उसकी अपनी योग्यता ही थी जिससे कि वह उस व्यक्ति के जीवन को समृद्ध बना सकती थी। जब वह उन कुछ सप्ताहों के उन्माद पर दृष्टिपात करती, तो उसे उसमें कहीं हल्की-सी मातृत्व भावना भी नज़र आती। यह सुख एक ऐसी स्त्री होने का था, जोकि दूसरे के लिए कुछ कर सकती है, जोकि अपने हाथों में एक दायित्व लेकर आती है। आज उसे लगता था कि उसके पास इतना पैसा न होता तो शायद वह यह चुनाव न करती। तब उसका ध्यान इंग्लैंड में अपनी कब्र में सोए मिस्टर टाउशेट की तरफ चला जाता—उनकी उदारता ही तो इस दुःख का वास्तविक स्रोत थी। कितनी विचित्र बात थी यह। कहीं मन में वह पैसा उसे एक भार की तरह लगता रहा था...एक ऐसे बोझ की तरह जिसे उसने अपनी आत्मा से हटाकर किसी और आत्मा पर डाल देना चाहा था—उसे किसी अधिक उपयुक्त पात्र को सौंप देना चाहा था। अपनी आत्मा का बोझ हल्का करने का इससे अच्छा उपाय क्या हो सकता था कि वह उसे संसार के सबसे सुरुचिपूर्ण व्यक्ति को सौंप दे? सिवाय किसी अस्पताल को दान दे देने के उस पैसे का इससे अच्छा निपटारा नहीं हो सकता था—और वैसी किसी धर्मार्थ संस्था में उसकी गिलबर्ट ऑसमण्ड से ज़्यादा

दिलचस्पी नहीं थी। उसका खयाल था कि गिलबर्ट जिस रूप में उस धन का उपयोग करेगा वह उसे अच्छा लगेगा और एक अप्रत्याशित उत्तराधिकार का सौभाग्य पाने में जो एक वज़न-सा था वह कुछ हद तक उसके मन से दूर हो जाएगा। उत्तराधिकार में सत्तर हज़ार पौंड पा लेने में कहीं कोमलता नहीं थी—कोमलता थी तो केवल देने वाले मिस्टर टाउशेट के लिए ही थी। पर गिलबर्ट ऑसमण्ड से विवाह करके यह सम्पत्ति उस तक ले जाने में यह कोमलता उसके अपने साथ भी आ जुड़ती थी। यह ठीक था कि गिलबर्ट के पास अपेक्षया कम पैसा होगा, पर यह बात उसी के सोचने की थी। अगर गिलबर्ट उससे प्रेम करता था तो उसके अधिक धनी होने पर उसे आपत्ति नहीं हो सकती थी। गिलबर्ट ने स्वयं ही यह कहने का साहस नहीं किया था कि उसके पास धन होने की उसे खुशी है ?

इस अहसास से इज़ाबेल के गाल दहकने लगे कि उसके विवाह करने के मूल में एक आरोपित सिद्धान्त रहा है—कि उसे अपने पैसे का प्रशंसनीय ढंग से उपयोग करना है। पर शीघ्र ही उसने अपने को उत्तर दे लिया कि यह पूरी कहानी नहीं है। उसने ऐसा इसलिए किया था कि एक आवेश उस पर छा गया था—उसके अपने स्नेह की गम्भीरता के साथ ऑसमण्ड के व्यक्तिगत गुणों के प्रति उत्साह इसके मूल में था। वह उसे और लोगों से अच्छा लगा था। यह आत्यन्तिक धारणा महीनों उसके जीवन को छाये रही थी—और अब भी उसका जो अंश शेष था, वह इस विश्वास के लिए काफी था कि वह और कुछ कर ही नहीं सकती थी। सब से अच्छा—अर्थात् सबसे सूक्ष्म—जो पुरुष-व्यक्तित्व उसने जाना था, वह उसकी सम्पत्ति बन गया था। उन दिनों यह भावना कि वह हाथ बढ़ाकर उसे पा सकती है, उसके लिए एक आस्था की तरह रही थी। ऑसमण्ड के मानसिक सौन्दर्य के सम्बन्ध में उसका विचार गलत नहीं था—उस तत्व को वह अब पूरी तरह जान गई थी। वह उसके साथ, बल्कि उसके अन्दर रह रही थी—वह जैसे उसका आवास बन गया था। उससे अधिक व्युत्पन्न, लचीले, सुसंस्कृत तथा उत्कृष्ट क्रियाओं में दक्ष मन से उसका कभी सम्पर्क नहीं हुआ था—और अब इसी विशिष्ट यन्त्र से उसका वास्ता पड़ रहा था। जब वह सोचती कि ऑसमण्ड अपनी जगह कितनी प्रतारणा महसूस करता होगा, तो गहरी निराशा उस पर छा जाती। तब उसे आश्चर्य होता कि वह उससे और अधिक घृणा क्यों नहीं करता। उसे अच्छी तरह याद था जब ऑसमण्ड ने उसे पहली बार इसका आभास दिया था—वह

जैसे एक घण्टी थी जिसके बजने के बाद उनके जीवन के वास्तविक नाटक के आने से परदा उठा था। एक दिन ऑसमण्ड ने उससे कहा था कि उसके कई बने हुए विचार हैं जिनसे उसे छुटकारा पा लेना चाहिए। यह ऑसमण्ड ने विवाह से पहले ही कहा था, पर तब, उसने इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया था। उसका ध्यान इसकी ओर बाद में गया था। उसे इन शब्दों को लक्षित करना चाहिए था क्योंकि ऑसमण्ड ने वे गम्भीर रूप में कहे थे। ऊपर से उन शब्दों में खास कुछ नहीं था, पर अब गहराते अनुभव के प्रकाश में देखने पर वे बहुत अर्थपूर्ण जान पड़ते थे। ऑसमण्ड ने जो कहा था, वही उसका आशय था—वह नहीं चाहता था कि अपने सुन्दर चेहरे के अतिरिक्त उसके व्यक्तित्व में अपना कुछ हो। पर उसके अपने बहुत-से विचार थे—ऑसमण्ड के अनुमान से कहीं अधिक—उससे कहीं अधिक जितने ऑसमण्ड के विवाह का प्रस्ताव करने तक उसने उसके सामने प्रकट किये थे। सच, वह ऑसमण्ड पर इतनी अनुरक्त थी कि उसने उससे इस बात का दुराव रखा था। उसके अपने बहुत-से विचार थे--पर विवाह का यही तो अर्थ था कि व्यक्ति उन्हें किसी और से बांटे। उन्हें कोई जड़ से कैसे उखाड़ सकता था? आदमी इतना ही कर सकता था कि उन्हें दबाए रखे, मुंह से जाहिर न होने दे! पर बात दर-असल यह नहीं थी कि ऑसमण्ड को उसके विचारों पर आपत्ति थी—यह तो कुछ भी बात नहीं थी। ऐसी उसकी कोई धारणाएं नहीं थी जिन्हें प्यार पाने की खातिर वह कुरबान न कर सकती। पर आसमण्ड को आपत्ति उसके पूरे चरित्र से थी—उसके महसूस करने और तय करने के ढंग से। यही चीज़ थी जो वह छिपाये रही थी। ऑसमण्ड को तब तक इसका पता नहीं चला जब तक कि उसने स्वयं नहीं जान लिया—जब तक कि पीछे से दरवाज़ा बन्द करके उसे इसका सामना नहीं करना पड़ा। वह एक खास ढंग से ज़िन्दगी को देखती थी जिसे आसमण्ड एक व्यक्तिगत आघात के रूप में लेता था। ईश्वर जानता था कि अब इस ढंग में बहुत कोमलता और सहिष्णुता आ गई थी। विचित्र बात यह थी कि उसने शुरू से इस बात का अन्दाज़ा नहीं लगाया कि आसमण्ड का अपना ढंग बहुत अलग है। उसे यह बहुत उदार, समृद्ध, ईमानदार और सभ्यतापूर्ण लगा था। क्या आसमण्ड ने उसे विश्वास नहीं दिलाया था कि उसके मन में कोई अन्ध-विश्वास, कोई जड़ सीमा या बोसीदा पूर्वाग्रह नहीं है? क्या वह ऐसा आदमी नहीं लगता था जो दुनिया की खुली हवा में रहता है, और छोटी-छोटी बातों की तरफ ध्यान नहीं

देता ? जिसे केवल सचाई और ज्ञान से मतलब है और जो सोचता है कि दो व्यक्तियों को इनकी खोज साथ-साथ करनी चाहिए ? और कि वे कहीं पहुंचे या न पहुंचे, उस खोज का एक अपना ही सुख है ? ऑसमण्ड ने यह ज़रूर कहा था कि उसे रूढ़ियों से प्यार है, पर जिस अर्थ में कहा था, उसमें वह एक उदात्त घोषणा नहीं लगती थी ? उस अर्थ में—अर्थात् जीवन में सामंजस्य व्यवस्था तथा भद्रता जैसी उदात्त वृत्तियों से प्यार करने में—वह खुलकर उसके साथ थी। इससे ऑसमण्ड की दी चेतावनी में उसे आशंका की कोई बात नहीं लगी थी। पर कुछ महीने बीतने पर जब वह उसके साथ और आगे बढ़ गई और वह उसे अपने आवास की परिधि में ले आया, तब, तब उसे अहसास हुआ कि वह दर-असल कहां पहुंच गई है।

अपने आवास की सीमाओं को देखकर उस पर जो आतंक छा गया था, उसका वह अब फिर से अनुमान लगा सकती थी। तब से वह उस चारदीवारी में बन्द थी और जीवन-भर उसे वहीं बन्द रहना था। वह अवास अंधेरे का था, मूकता का और रुंधी सांस का। ऑसमण्ड के सुन्दर मन से न वहां हवा आती थी न रोशनी। निःसन्देह यह दुःख शारीरिक नहीं था—शारीरिक दुःख का तो इलाज हो भी सकता था। वह जहां चाहे आ-जा सकती थी, उसे पूरी स्वतन्त्रता थी, और उसका पति बहुत विनम्रता बरतता था। पर वह अपने को जितनी गम्भीरता से लेता था, वह बात भयावह जान पड़ती थी। उसके सुसंस्कृत व्यवहार, चतुराई और मिठास के नीचे—उसके अच्छे स्वभाव, सहजता और जीवन बोध की तह में—उसका अहं उसी तरह छिपा था जैसे फूलों से ढके किनारे पर एक सांप। उसने ऑसमण्ड को गम्भीरता से लिया था, पर इतनी गम्भीरता से नहीं। और अब उसे ज्यादा जान लेने पर वह सोचती थी कि यह सम्भव भी क्योंकर था ? ऑसमण्ड की अपेक्षा थी कि वह उसे वही समझे जो वह स्वयं अपने को समझता था—अर्थात् यूरोप का सबसे प्रमुख व्यक्ति। पहले उसने भी यही समझा था और इसीलिए उससे विवाह भी किया था। पर इसका वास्तविक अर्थ जान लेने पर वह पीछे हट गयी थी। इस बन्धन में आकर जितने की अपेक्षा उससे की जा रही थी, उतने के लिए वह तैयार नहीं थी। इसका अर्थ था उन तीन चार ऊंचे व्यक्तिओं को छोड़कर जिनसे ऑसमण्ड को स्पर्धा थी, शेष सब को घृणा की दृष्टि से देखना, और उसके चार-छः विचारों को छोड़कर दुनिया की हर चीज़ को हेच

समझना। खैर यह भी ठीक था—यहां भी वह काफी हद तक उसके साथ चल सकती थी। ऑसमण्ड उसे बताता रहता था कि ज़िन्दगी कितनी हीन और भद्दा चीज़ है। उसीने मूर्खता, दुश्चरित्रता, और मानवजाति के अज्ञान के प्रति उसे सजग किया था। वह यह जानकर बहुत प्रभावित हुई थी कि दुनिया में कितनी नीचता है और उससे अपने को बचा सकना कितना बड़ा गुण है। पर आखिर आदमी को इसी ओछी और बुरी दुनिया में तो रहना था—उसी को तो देखना था। देखना इसलिए नहीं कि वह दुनिया को बदल सके, बचा सके या प्रकाश दे सके, बल्कि इसलिए कि उससे वह अपनी श्रेष्ठता की स्वीकृति प्राप्त कर सके। एक तरफ दुनिया घृणास्पद थी, तो दूसरी तरफ स्तर का निर्धारण भी तो उसीसे होता था। ऑसमण्ड इज़ाबेल को बताता रहा था कि उसमें कितना त्याग और कितनी उदासीनता है और कि वह सफलता के साधारण रास्तों से किस तरह बचकर चलता है। इस सबकी इज़ाबेल प्रशंसा करती रही थी। उसे यह उदासीनता बहुत महान् और यह स्वतन्त्रता बहुत ऊंची लगी थी। पर उदासीनता नाम का गुण तो उस आदमी में था ही नहीं—दूसरों के बारे में शायद ही कोई उतना सोचता हो जितना ऑसमण्ड सोचता था। जहां तक उसका अपना सवाल था, इज़ाबेल को दुनिया हमेशा दिलचस्प लगती थी और अपने साथ के लोगों के अध्ययन में उसकी विशेष रुचि थी। पर वह अपने व्यक्तिगत जीवन की सफलता के लिए अपनी उत्सुकता और सहानुभूति को छोड़ने को तैयार थी—अगर वह व्यक्ति उसे इसके लाभ का विश्वास दिला पाता। कम-से-कम इस समय उसे यही लग रहा था। ऑसमण्ड समाज की तरफ जितना ध्यान देता था, उसकी बजाय इस दृष्टि से चल सकना कहीं आसान होता।

ऑसमण्ड समाज के बगैर नहीं रह सकता था—वह जानती थी कि कभी नहीं रह सका था। जब वह उसकी तरफ से बहुत तटस्थ नज़र आता था, तब भी वह खिड़की में से उस ओर झांकता रहता था। उसकी तरह ऑसमण्ड का भी एक अपना आदर्श था—पर कितने आश्चर्य की बात थी कि दो व्यक्तियों के लिए 'सही' के मापदण्ड इतने अलग-अलग हों। ऑसमण्ड की आदर्श-धारणा थी अतिशय समृद्धि और अभिजात जीवन की संगति—वह जताना चाहता था कि कम-से-कम सार रूप में यही जीवन उसने सदा जिया है। इस आदर्श से वह घड़ी-भर के लिए भी नहीं हटना चाहता था—अगर हटना पड़ जाता, तो वह शरम से गड़ गया

होता। यहां तक भी ठीक था—इस पर भी वह सहमत हो सकती थी। पर फार्मूला एक ही होने पर भी उसके सम्बन्ध में उनके विचार, धारणाएं और आशय बिलकुल अलग-अलग पड़ जाते थे। इज़ाबेल के लिए अभिजात जीवन का अर्थ था अतिशय ज्ञान और अतिशय स्वतन्त्रता का योग—ज्ञान से कर्तव्य भावना और स्वतन्त्रता से आनन्द की प्राप्ति हो सकती थी। पर ऑस्मण्ड उस जीवन की रूपगत विशेषता को ही देखता था—उसके लिए वह एक सचेत और गिना-नापा दृष्टिकोण था। ऑसमण्ड को मोह था प्राचीन, सम्मानित और प्रचारित का। यह मोह उसे भी था, पर वह सोचती थी कि इस सबके साथ अपने मन से स्वतन्त्रता ले सकती है। परम्परा के लिए ऑसमण्ड के मन में बहुत सम्मान था। वह एक बार उससे कह चुका था कि सबसे बड़ी बात है एक परम्परा का होना, और यदि दुर्भाग्यवश किसी के पास वह न हो, तो उसे तुरन्त उसके निर्माण में जुट जाना चाहिए। उसका मतलब था कि इज़ाबेल के पास कोई परम्परा नहीं है जबकि उसके अपने पास है—हालांकि उसकी परम्परा का स्रोत क्या है, यह इज़ाबेल कभी नहीं जान सकी। पर ऑसमण्ड के पास एक नहीं कई परम्पराएं थीं, निश्चित रूप से थीं, और शीघ्र ही इज़ाबेल उन्हें जानने लगी थी। बड़ी बात यही थी कि उनका अनुसरण किया जाय—और इसकी अपेक्षा ऑसमण्ड अपने से ही नहीं, उससे भी रखता था। इज़ाबेल की धारणा थी कि जिन परम्पराओं का पालन उनके समर्थक के अतिरिक्त किसी दूसरे को भी करना हो, वे परम्पराएं बहुत ऊंचे स्तर की होनी चाहिएं। फिर भी वह इससे सहमत हो गई थी कि उसके पति के अज्ञात अतीत से चले आ रहे उस राजकीय संगीत की धुन के साथ उसे भी चलना चाहिए—हालांकि पहले उसकी गति इतनी स्वतन्त्र, इतनी अनियमित और लकीर से इतनी हटकर रही थी कि वह किसी भी ताल की गति के विपरीत पड़ती थी। कुछ चीजें थीं जो उन्हें करनी ही थीं, कुछ ढंग थे जो उन्हें अपनाने ही थे, कुछ लोग थे जिनसे उन्हें मिलना ही था या नहीं ही मिलना था। जब उसने अपने को इस कठोर व्यवस्था से घिरते पाया, तो उसके ताने बाने में हुई सारी पच्चीकारी के बावजूद उसे अंधेरे का और दम घुटने का अहसास होने लगा था जिसका कि मैंने ऊपर उल्लेख किया है। उसे लगने लगा कि वह जहां बन्द है, वहां खंडहर की मिट्टी की गन्ध आती है। उसने इसका विरोध किया था—पहले परिहास व्यंग्य और कोमलता के साथ और बाद में जब स्थिति गम्भीर होने लगी, तो व्यग्रता, आवेश और युक्तियों के साथ। उसकी

युक्तियां स्वतन्त्रता के लिए थीं—बिना अपनी विशिष्टता या रुतबे की चिन्ता किए, जैसा चाहे वैसा कर सकने के लिए। पर वह जिन आकांक्षाओं और मनोवृत्तियों के पक्ष में थी, वे एक और ही आदर्श की सूचक थीं।

तभी उसके पति का अछूता व्यक्तित्व आगे आकर तनकर खड़ा हो गया था। अब वह जो कुछ भी कहती, उसका उत्तर वह तनी हुई भौंहों से देता। उसे लगता ऑसमण्ड उसे लेकर बहुत शरमसार महसूस करता है। वह क्या सोचता था उसके बारे में—कि वह हीन, साधारण और अशिष्ट है? अब उस आदमी को पता चल गया था कि उसकी कोई परम्पराएं नहीं हैं। वह पहले यह सोच भी नहीं सका था कि वह इतनी सपाट निकलेगी। वह जो कुछ सोचती थी, वह किसी अनिवादी पत्रिका या अद्वैतवादी पादरी को ही शोभा देता था। पर अन्त में चलकर वह जान गई थी कि उसका वास्तविक दोष यही है कि उसके पास अपना निजी मन है ही क्यों। उसका मन उसी तरह ऑसमण्ड के मन का हिस्सा होना चाहिए था जैसे एक क्यारी एक बड़े बाग का हिस्सा होती है। तब ऑसमण्ड उसकी गोड़ाई करके उसमें पानी देता, उसके झाड़-झंखाड़ निकालकर कभी-कभी एक गुच्छा फूल उसमें से चुन लिया करता। यह एक दावेदार मालिक के लिए उसकी मलकियत का एक छोटा-सा टुकड़ा होता। वह इज़ाबेल को मूर्ख देखना नहीं चाहता था। बल्कि वह कुशाग्र-बुद्धि थी, इसीलिए वह उसे अच्छी लगी थी। पर वह चाहता था कि इज़ाबेल की प्रतिभा केवल उसीके पक्ष में काम करे। उसने उसे जड़मति नहीं सभझा था, समझा था कि वह उसकी बात आसानी से ग्रहण कर सकेगी। उसने सोचा था कि उसकी पत्नी उसके साथ मिलकर हर चीज़ को उसी की तरह महसूस करेगी—कि वह उसके विचारों, आकांक्षाओं और अभिरुचियों की सहभागी बन सकेगी। इज़ाबेल यह मानने के लिए बाधित थी कि एक सुसंस्कृत व्यक्ति तथा आरम्भिक रूप से कोमल भाव रखने वाले पति की यह अपेक्षा हठधर्मी नहीं थी। पर कुछ चीज़ें थीं जो वह कभी स्वीकार नहीं कर पाती थी। पहली बात कि वे भयावह रूप से भद्दी थीं। वह किसी पुरातन-पन्थी परिवार से नहीं थी फिर भी वह स्त्रीत्व और उसकी मर्यादा में विश्वास रखती थी। पर लगता था कि ऑसमण्ड का ऐसा कोई विश्वास नहीं है—उस आदमी की कुछ परम्पराओं से उसे दामन बचाना पड़ता था। क्या सभी स्त्रियां अवैध प्रेम करती थीं? क्या सभी झूठ बोलती थीं और एक खास कीमत पर बिक सकती थीं? क्या सिर्फ तीन-

चार स्त्रियां ही थीं जो अपने पतियों को धोखा नहीं देती थीं ? इज़ाबेल ऐसी बातें सुनती तो वे उसे देहाती बाड़ों की चर्चाओं से अधिक घृणास्पद लगतीं। इस घृणा की ताज़गी वहां की कृत्रिम हवा में भी बनी रहती। एक कृत्रिमता थी उसकी ननद की। क्या ऑसमण्ड हर स्त्री को काउंटेस जेमिनी समझता था ? वह स्त्री बहुत झूठ बोलती थी और उसका धोखा ज़बानी बातों तक ही सीमित नहीं था। यह अपने में ही काफी था कि ऑसमण्ड की परम्पराओं में ये बातें स्वीकृत थीं—उन्हें सब पर लागू करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। इन धारणाओं के प्रति इज़ाबेल की घृणा से ही ऑसमण्ड चिढ़ता था। वह स्वयं बहुत-सी चीज़ों से घृणा करता था और यह उसे सही लगता था कि उसकी पत्नी में भी यह गुण हो। पर उसकी पत्नी अपनी घृणा की आंच उसीकी धारणाओं पर डाले, इस खतरनाक बात की वह उसे इजाज़त नहीं देना चाहता था। उसका खयाल था कि ऐसी स्थिति आने से पहले ही वह उसकी भावनाओं पर काबू पा लेगा, पर यह जानकर कि उसका यह विश्वास गलत था, वह बुरी तरह तमतमा उठा था। जब अपनी पत्नी को लेकर किसी को ऐसी अनुभूति हो, तो वह उससे घृणा करने के सिवा और कर ही क्या सकता था ?

इज़ाबेल को पक्का विश्वास था कि वह घृणा, जो पहले ऑसमण्ड के लिए एक आश्रय और मनोरंजन रही थी, अब उसके जीवन का ध्येय और सुख बन गई थी। यह अनुभूति क्योंकि सच्ची थी, इसलिए गहरी भी थी—ऑसमण्ड को कहीं यह आभास हो गया था कि वह उसके बगैर भी रह सकती है। यह विचार स्वयं इज़ाबेल के लिए चौंकाने वाला था—उसे यह एक तरह का पतिद्रोह लगता था जिसमें आचरणहीनता की सम्भावना झलकती थी। फिर ऑसमण्ड के मन पर इसका क्या प्रभाव न हुआ होगा ? सीधी-सी बात थी कि ऑसमण्ड उससे घृणा करता था क्योंकि न तो उसकी कोई परम्पराएं थीं और न ही एक अद्वैतवादी पादरी जैसे नैतिक मानदण्ड। बेचारी इज़ाबेल तो अद्वैतवाद को कभी समझ भी नहीं पाती थी ! अब एक अनिश्चित काल से वह इसी निश्चय के साथ चल रही थी। आगे क्या आने को था—क्या भविष्य था उनका ? यही सवाल हमेशा बना रहता था। ऑसमण्ड क्या करेगा—उसे स्वयं क्या करना होगा ? वह निश्चित जानती थी कि वह ऑसमण्ड से घृणा नहीं करती क्योंकि हर थोड़े अन्तराल के बाद उसके मन में यह आवेश जागता था कि वह ऑसमण्ड को एक सुखद आश्चर्य

देकर चकित कर दे। पर प्रायः उसे डर लगने लगता और जैसा कि मैं कह चुका हूं, उसे यह आभास होने लगता कि उसने शुरू से ही ऑसमण्ड से धोखा किया है। फिर भी वे विवाहित तो थे ही—और वह जीवन भयावह था। उस सुबह तक हफ्ते भर से उनमें बात नहीं हुई थी और ऑसमण्ड का व्यवहार राख की तरह रूखा रहा था। वह जानती थी कि इसका विशेष कारण है, और वह यह कि रैल्फ टाउशेट अभी रोम में बना हुआ था। ऑसमण्ड का ख्याल था कि वह अपने कज़िन से बहुत मिलती है—हफ्ता भर पहले उसने कहा था कि उसका रैल्फ से उसके होटल में मिलने जाना शिष्टतापूर्ण नहीं है। रैल्फ की बीमारी की वजह से बहुत बुरा न लगता, तो शायद वह उस आदमी को और भी बुरा-भला कहता। पर अपने पर रोक लगाने के कारण उसकी वितृष्णा और बढ़ गई थी। इज़ाबेल के लिए घड़ी में दिखाई देते वक्त की तरह यह सब कुछ स्पष्ट था—वह साफ जानती थी कि अपने कज़िन में उसकी दिलचस्पी देखकर ऑसमण्ड का मन उबलने लगता है कि उसने अपनी पत्नी को कमरे में क्यों नहीं बन्द कर रखा—वह कर सकता, तो ज़रूर ऐसा करता। इज़ाबेल को मन में विश्वास था कि कुल मिलाकर वह ऑसमंड के प्रतिकूल नहीं चलती। पर निश्चय ही रैल्फ के प्रति वह उदासीन नहीं रह सकती थी। वह जानती थी कि अब उसकी मृत्यु बहुत पास है और कि वह फिर उसे कभी नहीं देख पाएगी। इससे उसके मन में एक कोमलता भर आती थी जिसे उसने पहले कभी नहीं जाना था। उसके अपने लिए अब कोई सुख, सुख नहीं था—ऐसी स्त्री के लिए कोई सुख हो ही कैसे सकता था जिसने अपना जीवन अपने हाथों नष्ट कर लिया हो ? उसके मन पर निरन्तर एक बोझ रहता था—हर चीज़ उसे एक स्याह रोशनी में लिपटी दिखाई देती थी। रैल्फ के आने से उस अंधेरे में जैसे एक दिया आगया था—जितनी देर वह उसके पास बैठी रहती, उतनी देर उसे अपने अन्दर का दर्द अपना न होकर उसका महसूस होता। उसे अब लगता जैसे रैल्फ उसका भाई हो। उसका कोई भाई नहीं था, पर अगर होता और दु:खी मन लिए वह उसकी मृत्यु शय्या के पास बैठती, तो वह उसे उतना ही प्यारा लगता। तो सचमुच गिलबर्ट की ईर्ष्या निराधार नहीं थी—उसे आधा घण्टा भी रैल्फ के पास बैठना पड़ता, तो उसका चेहरा उतर जाता। वे आपस में रैल्फ की बात करते हों, यह नहीं था—इस चीज़ को लेकर इज़ाबेल को शिकायत नहीं थी। रैल्फ का नाम तक कभी उनके बीच में नहीं आता था। पर रैल्फ में जो उदारता

थी, वह उसके पति में नहीं थी। रैल्फ की बातचीत में, मुस्कराहट में, बल्कि उसके रोम में होने में ही कुछ था जिससे इज़ाबेल को अपनी गति का मनहूस दायरा पहले से विशाल महसूस होता था। रैल्फ के वहां होने में उसे दुनिया की अच्छाई और सम्भावनाओं का अनुभव होता। रैल्फ में भी ऑसमण्ड जितनी प्रतिभा थी, बल्कि उससे ज्यादा थी। उसके प्रति इस आदर के कारण ही वह अपना दुःख उससे छिपाए रखना चाहती थी। छिपाने का यह काम वह बहुत ध्यान के साथ करती थी—रैल्फ से बात करते समय परदे और चिकें ठीक रखने के लिए लगातार सचेत रहती थी। वह सुबह बार-बार उसके मन में सजीव हो उठती थी—निर्जीव तो वह कभी हुई ही नहीं थी—जिस सुबह फ्लोरेंस के बागीचे में रैल्फ ने उसे ऑसमंड से सावधान रहने को कहा था। आंख बन्द करते ही वह जगह, रैल्फ की आवाज़ और वहां की भीनी गरम हवा, सब कुछ ताज़ा हो आता था। रैल्फ को कैसे इसका पता था? कैसी रहस्यमय सूझ-बूझ थी! गिलबर्ट जितना प्रतिभाशाली? यदि निर्णय ही करना हो, तो रैल्फ उससे कहीं अधिक प्रतिभाशाली था। गिलबर्ट में वह गम्भीरता और वह सन्तुलन नहीं था। तब उसने रैल्फ से कहा था कि कम से कम उससे वह कभी नहीं सुनेगा कि उसकी आशंका ठीक थी—और अब वह अपनी बात रखने के लिए सतर्क थी। यह अपने में एक व्यस्तता थी—एक आवेश, एक उमंग, एक धर्म। स्त्रियां कई बार विचित्र चीज़ों में धर्म खोज लेती हैं और इस समय रैल्फ के सामने एक स्वांग भरने में इज़ाबेल को लगता था कि वह एक भलाई का काम कर रही है। पर भलाई का काम यह तब होता अगर एक पल के लिए भी वह रैल्फ को छल सकी होती। पर अपनी तरफ से वह रैल्फ को यही जतलाने की कोशिश करती कि उस बार कितनी बुरी बात कहकर उसने उसे चोट पहुंचाई थी, कि फिर भी उसकी बीमारी को देखते हुए उसे कोई शिकायत नहीं थी—यहां तक कि वह अपने सुखी जीवन का उसके सामने खुलकर प्रदर्शन करना चाहती। रैल्फ सोफे पर लेटा-लेटा उसके इस असाधारण कृपा-भाव पर मुस्कराता रहता, और अपने को क्षमा करने के लिए उसे क्षमा कर देता। उसकी नज़र में बड़ी बात यही थी कि वह उसे अपने दुःख की पीड़ा से बचाए रखना चाहती थी—यह और बात थी कि वह जानकारी उसके लिए कहीं हितकर होती।

आग बुझने के बहुत बाद तक इज़ाबेल उस निःस्तब्ध कक्ष में रुकी रही। उसे ठण्ड का खतरा नहीं था क्योंकि उसे बुखार-सा चढ़ रहा था। पहले छोटे, फिर बड़े

घण्टे बजे···पर उसके जागरण पर समय का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसके मन पर कई-कई साये फिर रहे थे और वह असाधारण रूप से क्रियाशील थी। अच्छा था कि तकिये पर विश्राम का उपहास उड़ाने की जगह वे साये वहीं घिरे आ रहे थे जहां वह उनका सामना तो कर सकती थी। जैसा कि मैं कह चुका हूं, वह अपने को विश्वास दिला रही थी कि वह ऑसमण्ड के प्रतिकूल नहीं चलना चाहती। इसका इससे बड़ा सबूत क्या हो सकता था कि वह आधी रात तक वहां बैठी अपने को तैयार कर रही थी कि क्या हर्ज है अगर एक चिट्ठी लेटर-बक्स में डालने की तरह पैंज़ी की शादी वारबर्टन से कर दी जाए ? जब घड़ी ने चार बजाए, तो वह उठ खड़ी हुई—लैम्प कब का बुझ चुका था और मोमबत्तियां भी अन्त तक जल चुकी थी। फिर भी कमरे के बीचोंबीच आकर वह स्मृति के एक बिम्ब को देखती हुई रुक गई—वह बिम्ब था मैडम मरले और ऑसमण्ड के बीच एक अज्ञात और घनिष्ठ सम्बन्ध था।

४३

इसके तीन रात बाद इज़ाबेल पैंज़ी को एक बड़ी पार्टी में ले गई। ऑसमण्ड साथ नहीं गया, क्योंकि वह कभी डांस में नहीं जाता था। पैंज़ी हमेशा की तरह डांस में जाने के लिए उत्साहित थी। उसे चीज़ों को मिलाकर देखने की आदत नहीं थी। प्रेम करने के सुख पर लगाई गई रोक-थाम के उसने दूसरे सुखों को प्रभावित नहीं होने दिया था। शायद उसे सफलता की आशा थी—और वह सोचती थी कि समय पाकर वह अपने पिता को अपनी बात के लिए राज़ी कर लेगी। पर इज़ाबेल को लग रहा था कि ऐसा नहीं है—अधिक सम्भव यही है कि पैंज़ी ने सिर्फ एक अच्छी लड़की बनने का निश्चय कर रखा है। उसे ऐसा अवसर नहीं मिला था। और अवसरों के लिए उसके मन में बहुत आदर था। वह अब भी पहले से कम अपना ध्यान नहीं रखती थी और अपने हल्के स्कर्टों के विषय में बहुत सावधान रहती थी। अपने गुलदस्तों को वह कसकर पकड़ती थी और बीस-बीस बार उनके फूल गिनती थी। इज़ाबेल को यह विचित्र लगता क्योंकि एक बॉल के

लिए ऐसे उत्साह का अनुभव किए उसे एक मुद्दत बीत चुकी थी। पैंज़ी की काफी मांग थी और बहुत-से लोग उसके साथ नाचने को तैयार रहते थे। पार्टी में पहुंचते ही पैंज़ी ने अपना गुलदस्ता इज़ाबेल को पकड़ा दिया क्योंकि इज़ाबेल खुद नहीं नाच रही थी। कुछ देर गुलदस्ता हाथ में लिए रहने के बाद इज़ाबेल को अहसास हुआ कि एडवर्ड रोज़ियर वहां पास ही खड़ा है। वह वहां सामने ही था। उसके चेहरे पर हमेशा की विनीत मुस्कराहट की जगह एक सैनिक-सा निश्चय नज़र आ रहा था। इस भाव-परिवर्तन पर इज़ाबेल मुस्करा देती अगर उसे पता न होता कि अन्दर से उस आदमी की स्थिति शोचनीय है। यूं हमेशा उस आदमी के आसपास की गन्ध सूर्यमुखी की होती थी, बारूद की नहीं। वह पल-भर आक्रामक-से लगते कठोर भाव से उसे देखता रहा, फिर उसकी आंखें गुलदस्ते पर झुक गईं। गुलदस्ते को देखकर उसका भाव कोमल हो गया और उसने जल्दी से कहा, "यह उसका गुलदस्ता होगा—इसमें सब पैंज़ी के फूल हैं न !"

इज़ाबेल नम्रभाव से मुस्कराई। "हां, उसी का है। उसने मुझे पकड़ा दियाहै।"

"थोड़ी देर मैं पकड़ लूं ?" गरीब रोज़ियर ने पूछा।

"मुझे तुम पर भरोसा नहीं है। मुझे डर है तुम इसे लौटाओगे नहीं।"

"यह मैं भी नहीं कह सकता। मैं इसे लेकर फौरन चम्पत हो जाऊंगा। अच्छा, एक फूल तो ले सकता हूं ?"

इज़ाबेल पल भर संकोच में रही, फिर मुस्कराते हुए उसने गुलदस्ता रोज़ियर की तरफ बढ़ा दिया। "एक चुन लो। वैसे मैं तुम्हारी खातिर यह एक भयंकर काम कर रही हूं।"

"ओह मिसेज़ ऑसमण्ड, अगर तुम इतना ही कर दो तो !" रोज़ियर एक आंख के आगे शीशा करके ध्यान से फूल चुनता हुआ बोला।

"अब बटन-होल में इसे मत लगा लेना," इज़ाबेल बोली, "परमात्मा के वास्ते !"

"मैं चाहूंगा कि वह देख ले। उसने मेरे साथ नाचने से इन्कार कर दिया है, पर मैं उसे दिखाना चाहता हूं कि मुझे अब भी उस पर विश्वास है।"

"उसे दिखाना ठीक है, पर दूसरों को दिखाने की यह जगह नहीं है। उसके पिता ने उसे तुम्हारे साथ नाचने से मना किया है।"

"तो तुम मेरे लिए इतना ही कर सकती हो ? मुझे तुमसे इससे ज़्यादा की

उम्मीद थी मिसेज़ ऑसमण्ड !" रोज़ियर ने साधारण बात कहने के स्वर में कहा। "तुम्हें पता है हमारा परिचय बहुत पहले का है—बचपन के मधुर दिनों का।"

"मुझे बहुत बूढ़ी मत बनाओ," इज़ाबेल धीरज के साथ बोली। "तुम बार-बार इसकी चर्चा करते हो और मैं कभी इससे इन्कार नहीं करती। पर पुरानी मित्रता होते हुए भी मैं इतना तुम्हें बता दूं कि तुम कभी मुझसे ब्याह का प्रस्ताव करते, तो मैं उसी समय तुम्हें मना कर देती।"

"इसका मतलब है तुम्हारी नज़र में मेरी ज़रा इज़्ज़त नहीं है। तुम मुझे सिर्फ पेरिस का एक लफंगा ही समझती हो न ?"

"मैं तुम्हारी इज़्ज़त करती हूं, पर तुमसे प्रेम नहीं करती। मेरा मतलब है कि पैंज़ी की खातिर भी तुमसे प्रेम नहीं करती।"

"ठीक है, ठीक है। तुम सिर्फ मुझ पर तरस खाती हो।" कहते हुए रोज़ियर ने एक बार बिना मतलब अपने शीशे से चारों तरफ देख लिया। उसे आश्चर्य हुआ कि लोग इतने कम खुश क्यों हैं। पर अपने अभिमान के कारण उसने प्रकट नहीं होने दिया कि उसे यह दोष व्यापक नज़र आरहा है।

इज़ाबेल ने पल-भर कुछ नहीं कहा। एक गहरे दुःख में जो गम्भीरता हाव-भाव में होनी चाहिए, वह रोज़ियर में नहीं थी—बाकी चीज़ों के अलावा उसके हाथ का छोटा-सा शीशा भी इसका प्रमाण था। पर यह सोचकर सहसा इज़ाबेल का मन भीग गया कि उसके और रोज़ियर के दुःख में कहीं कुछ साझा था। फिर उसे पहले से कहीं ज्यादा यह भी अहसास हुआ कि जो उसके सामने है, वह है संसार की सबसे अधिक मन को छूने वाली चीज़—अर्थात् विपत्तियों से लड़ता प्रेम—रूमानी रूप में न होते हुए भी स्पष्ट। "तुम्हें विश्वास है कि तुम पैंज़ी से बहुत कोमल व्यवहार करोगे ?" आखिर धीमे स्वर में उसने पूछा।

रोज़ियर ने बहुत आसक्ति के साथ आंखें झुकाकर हाथ का फूल होंठों से लगा लिया। फिर उसकी ओर देखकर बोला, "तुम्हें मुझपर तो तरस आता है, थोड़ा-सा उस पर भी तरस नहीं आता ?"

'कह नहीं सकता। वह हर हालत में सुखी जीवन व्यतीत करेगी।"

"यह इस पर निर्भर करता है कि जीवन से तुम्हारा क्या मतलब है !" रोज़ियर ने ज़ोर देकर कहा। "कोई उसे यन्त्रणा दे, तो उसमें उसे सुख नहीं मिलेगा।

"ऐसा कुछ नहीं होगा।"

"मुझे सुनकर खुशी हुई। पैंज़ी जानती है कि क्या होने वाला है। तुम देख लेना।"

"मुझे पता है वह जानती है, और यह भी कि वह कभी अपने पिता की आज्ञा के विरुद्ध नहीं जाएगी। पर वह अब इधर ही आ रही है," इज़ाबेल ने फिर कहा, "इसलिए मेरा अनुरोध है कि तुम यहां से चले जाओ।"

रोज़ियर पल-भर रुका रहा—जब तक कि पैंज़ी अपने साथी की बांह में बांह डाले सामने से आती दिखाई नहीं दे गई। उसके चेहरे पर एक भरपूर नज़र डालने तक ही वह रुका, फिर गरदन सीधी किए वहां से चला गया। जिस तरह उसने इस तात्कालिक अपेक्षा के सामने आत्म-समर्पण किया, उससे इज़ाबेल को लगा कि वह आदमी सचमुच गहरा प्रेम करता है।

नाचने से पैंज़ी में कहीं अस्तव्यस्तता नहीं आती थी। अब भी नाचने के बाद वह बिल्कुल ताज़ा और सुस्थित नज़र आ रही थी। वह आकर पल-भर खड़ी रही, फिर उसने अपना गुलदस्ता वापस ले लिया। इज़ाबेल ने देखा कि वह फूलों को गिन रही है जिससे उसे लगा कि बात उसके अनुमान से कहीं गहरी है। पैंज़ी ने रोज़ियर को वहां से हटते देखा था, पर उसने इज़ाबेल से उसके बारे में बात नहीं की। वह पहले अपने साथी की बात करती रही और जब वह अभिवादन करके चला गया, तो संगीत की, नाच के फर्श की, और अपनी पोशाक की जोकि दुर्भाग्यवश पहली बार में ही थोड़ा फट गई थी। इज़ाबेल को फिर भी विश्वास था कि उसने रोज़ियर के एक फूल ले जाने की बात जान ली है—हालांकि जिस शिष्ट कर्तव्य-भावना से उसने अगले पार्टनर को साथ नाचने की अनुमति दी, उसका सम्बन्ध केवल इस जानकारी के साथ ही नहीं जोड़ा जा सकता था। अत्यधिक मानसिक अवरोध के अन्तर्गत भी सर्वथा शान्त बने रहने की वृत्ति एक ज़्यादा बड़ी व्यवस्था का भाग थी। इस बार फिर एक लजाता-सा युवक उसे साथ ले गया, पर वह अपना गुलदस्ता हाथ में लिए रही। पैंज़ी को गए अभी कुछ ही मिनट हुए थे कि इज़ाबेल ने लार्ड वारबर्टन को भीड़ में से अपनी तरफ आते देखा। पास आकर वारबर्टन ने 'गुड-ईवनिंग' की। इज़ाबेल ने परसों के बाद से उसे नहीं देखा था। वारबर्टन ने इधर-उधर नज़र डालकर पूछा, "वह छोटी-सी लड़की कहां है?" पैंज़ी के बारे में इस तरह बात करना उसकी आदत बन गई थी।

"वह नाच रही है," इज़ाबेल बोली। "यहीं कहीं तुम्हें नज़र आ जाएगी।"

वारबर्टन ने नाचते जोड़ों पर नज़र दौड़ाई और आखिर उसकी आंख पैंज़ी से मिल गई। "वह मुझे देखकर भी नोटिस नहीं करती," उसने कहा और पूछा, "तुम नहीं नाच रहीं ?"

"देख रहे हो मैं अकेली खड़ी हूं।"

"मेरे साथ भी नहीं नाचोगी ?"

"धन्यवाद ! पर मैं चाहूंगी कि तुम उस छोटी-सी लड़की के साथ ही नाचो।"

"एक से दूसरी को रुकावट नहीं पहुंचती—फिर वह अभी व्यस्त भी है।"

"हर नाच के लिए व्यस्त नहीं है। तुम अभी से उससे कह दो। वह बहुत तेज नाचती है। अच्छा है तुम ताज़ादम रहो।"

"बहुत सुन्दर नाचती है," लार्ड वारबर्टन ने आंखों से पैंज़ी का अनुसरण करते हुए कहा। "आखिरकार," फिर वह बोला, "वह मेरी तरफ देखकर मुस्कराई है।" उस व्यक्ति की सुन्दर, सहज और महत्त्वपूर्ण आकृति को पास खड़े देखकर इज़ाबेल को फिर पहले की तरह लगा कि ऐसे महत्त्व का आदमी उस छोटी-सी लड़की में कैसे दिलचस्पी रख सकता है। उसे इसमें एक असंगति-सी लगी। इसका कारण न तो पैंज़ी का नन्हा-सा आकर्षण हो सकता था, न ही वारबर्टन की अपनी कोमलता, सद्भावना या मनोरंजन की अपेक्षा—हालांकि यह अपेक्षा उसे बहुत रहती थी, सदा रहती थी। "मैं तुम्हारे साथ नाचना चाहूंगा," पल-भर बाद वारबर्टन फिर इज़ाबेल की तरफ मुड़कर बोला। "पर उससे भी ज़्यादा चाहूंगा तुम्हारे साथ बात करना।"

"हां यही बेहतर है और तुम्हारी स्थिति के अनुकूल भी है। बड़े नीतिज्ञों को वाल्ट्ज़ नहीं करना चाहिए।"

"यह ज़्यादती मत करो। तो फिर मिस ऑसमण्ड के साथ नाचने को तुमने मुझसे क्यों कहा था ?"

"वह अलग बात है। उसके साथ नाचने से लगेगा कि तुम उस पर उपकार कर रहे हो—जैसे कि सिर्फ उसके मनोरंजन के लिए नाच रहे हो।" "मेरे साथ नाचोगे तो लगेगा कि अपने मनोरंजन के लिए नाच रहे हो।"

"तो क्या मुझे अपना मनोरंजन करने का अधिकार नहीं है ?"

"ना—ब्रिटिश साम्राज्य का काम-काज हाथ में रहते तुम्हें अधिकार नहीं है।"

"जहन्नुम में जाए ब्रिटिश साम्राज्य ! तुम हमेशा उसका मजाक उड़ाती रहती हो।"

"तुम मुझसे बात करके अपना मनोरंजन करो न," इज़ाबेल बोली।

"उससे मनोरंजन होने में मुझे सन्देह है। तुम्हारी बातें हमेशा इतनी नोकदार होती हैं, कि मुझे अपना बचाव ही करते रहना पड़ता है। औरआज रात तो तुम मुझे हमेशा से ज्यादा खतरनाक लग रही हो। तो क्या तुम बिलकुल नहीं नाचोगी ?"

"मैं यह जगह नहीं छोड़ सकती। पैंजी मुझे यहीं मिलेगी।"

वारबर्टन कुछ देर चुप रहा। फिर एकाएक बोला, "तुम पैंजी पर बहुत मेहरबान हो।"

इज़ाबेल कुछ देर ताकती रही, फिर मुस्कराई। "कोई उसपर मेहरबान न हो, यह तुम सोच भी सकते हो ?"

"बिलकुल नहीं। किसी पर भी उसका क्या जादू पड़ता है, यह मैं जानता हूं। पर तुमने लगता है उसके लिए बहुत कुछ किया है।"

"मैं उसे साथ बाहर लाई हूं," इज़ाबेल अब भी मुस्कराती हुई बोली, "और इसका ख्याल रखा है कि वह ठीक कपड़े पहने।"

"तुम्हारे साथ रहकर उसे बहुत लाभ हुआ होगा। तुमने अपनी बातों से और परामर्श से उसके विकास में सहायता की है।"

"हां, वह गुलाब नहीं है, तो गुलाब के पास तो रही है।"

इज़ाबेल हंस दी—लार्ड वारबर्टन भी। पर वारबर्टन के भाव में कहीं एक कुंठा थी जिसने उसे खुलकर नहीं हंसने दिया। "हम सब चाहते हैं कि गुलाब के जितना निकट रह सकें रहें," उसने पल-भर की हिचकिचाहट के बाद कहा।

इज़ाबेल ने मुंह फेर लिया। पैंजी उसकी तरफ लौट रही थी और उसे स्थिति में यह परिवर्तन अच्छा लगा। हम जानते हैं कि इज़ाबेल लार्ड वारबर्टन को कितना पसन्द करती थी—वह उस आदमी के गुणों के अनुपात से कहीं अधिक भला उसे समझती थी। वारबर्टन की मित्रता में कुछ था जिसपर लगता था कि आवश्यकता के समय निर्भर किया जा सकता है—जैसे कि बैंक में जमा बहुत से पैसे पर। उसके पास होने पर इज़ाबेल को अच्छा लगता था—उस आदमी की बातचीत से बहुत सहारा मिलता था। वारबर्टन की आवाज़ प्रकृति की उदारता की याद दिलाती थी।

फिर भी उसकी अत्यधिक निकटता से इज़ाबेल बचना चाहती थी—नहीं चाहती थी कि वह उसकी सदभावना को एक निश्चित चीज़ मान बैठे। वह इससे डरती थी, बचना चाहती थी—नहीं चाहती थी कि वह ऐसा समझे। वह महसूस करती थी कि अगर उसने और निकट आने का प्रयत्न किया तो कहीं ऐसा न हो कि वह एकाएक चमककर उससे फासले पर खड़े होने को कहदे। पैंजी वापस आई तो उसकी पोशाक में एक और चीर आ गया, जोकि पहले चीर का स्वभाविक परिणाम था। उसने गम्भीर आंखों से वह इज़ाबेल को दिखाया। वहां बहुत से वर्दीधारी व्यक्ति थे जिनकी भयानक एड़ों से बेचारी लड़कियों की पोशाकें बरबाद हो रही थीं। तभी यह स्पष्ट हो गया कि स्त्रियों के पास कितने साधन रहते हैं। इज़ाबेल नेपैंजी के फटे कपड़े को ठीक करना शुरू किया। किसी तरह ढूढ़ कर उसने एक पिन निकाला और चीर ठीक कर दिया। साथ में वह मुस्कराती हुई पैंजी की साहस वार्ता सुनती रही। इज़ाबेल का ध्यान और उसकी सहानुभूति तुरन्त क्रियाशील हो उठी। उसी मात्रा में इनसे अलग एक और भाव, एक और सजीव अनुमान, उसके मन में जाग आया था कि कहीं लार्ड वारबर्टन उससे प्रेम करने की बात तो नहीं सोच रहा। यह ध्वनि उस समय के शब्दों की ही नहीं, और भी बहुत से शब्दों की थी, जिनका अपना एक क्रम और सन्दर्भ था। पैंजी की पोशाक में पिन लगाते हुए वह इस विषय में सोचती रही। यदि ऐसा था तो शायद अनजाने में ही था—उस आदमी को अपने इरादे का शायद स्वयं भी पता नहीं था। पर इससे उसका दोष मिट नहीं जाता था और स्थिति कुछ बेहतर नहीं हो जाती थी। जितनी जल्दी उनके सम्बन्ध ठीक दिशा में आ जायें, उतना ही अच्छा था। वारवर्टन तुरन्त पैंजी से बात करने लगा—लड़की की ओर देखकर वह जिस पवित्र लगाव के साथ मुस्कराया—वह इज़ाबेल को बहुत रहस्यमय लगा। पैंजी ने हमेशा की तरह एक विवेकपूर्ण आकांक्षा के साथ उत्तर दिया। पैंजी से बात करते हुए, वारबर्टन को बहुत झुकना पड़ता था, और लड़की की आंखें उसकी विशाल आकृति पर इस तरह ऊपर-नीचे भटकती थीं जैसे कि वह प्रदर्शनी का एक जीव हो। पैंजी हमेशा उसे डरी-सी नज़र आती थी, पर उस डर में घृणा का दुःखदायी स्पर्श नहीं झलकता था। इसके विपरीत यूं लगता था जैसे वह जानता हो कि वह जानता है वह उसे पसन्द करती है। इज़ाबेल उन्हें साथ-साथ छोड़कर कुछ देर के लिए पास खड़े एक मित्र की तरफ बढ़ गई और अगले नाच का संगीत आरम्भ होने तक उससे बात करती

रही। वह जानती थी कि पैंज़ी उस नाच के लिए भी खाली नहीं है। तभी लड़की चेहरे पर उत्साह की लालिमा लिए उसके पास चली आई। लड़की की निर्भरता के सम्बन्ध में इज़ाबेल की भी वही निर्द्वन्द्व धारणा थी, जो ऑसमण्ड की थी। उसने उसे एक बहुमूल्य और अस्थायी कर्ज़ के तौर पर उसके निश्चित पार्टनर के हाथों में सौंप दिया। इन सब बातों को लेकर, इज़ाबेल की अपनी ही कल्पनाएं और अपनी ही मर्यादाएं थीं। कुछ क्षण ऐसे होते थे, जब पैंज़ी के अत्यधिक चिपकने से उसकी नज़र में वे दोनों ही बेवकूफ लगती थी। पर ऑसमण्ड ने एक तरह से उसे अपनी बेटी की धाय का रुतबा देकर कुछ नियम उसे समझा रखे थे, जिनके अनुसार उसके साथ कुछ चीज़ों में सख्ती और कुछ में नरमी बरतनी होती थी। ऑसमण्ड की कुछ हिदायतें ऐसी थीं, जिनको वह समझती थी कि वह अक्षरशः पालन करती है। कुछ का तो शायद वह इसीलिए पालन करती थी कि ऐसा करने में वे उपहासास्पद लगने लगती थी।

पैंज़ी के चले जाने के बाद इज़ाबेल ने देखा कि लार्ड वारबर्टन फिर उसके नज़दीक आ रहा है। वह उसपर आंखें स्थिर किए उसके विचारों को पढ़ने का प्रयत्न करने लगी। पर वारबर्टन के चेहरे पर असमंजस की कोई रेखा नहीं थी। "पैंजी ने बाद में मेरे साथ नाचने का वचन दिया है," उसने कहा।

"मुझे इसकी खुशी है। तुमने कॉटिलियन के लिए उससे कह दिया है न?"

इस पर वह थोड़ा सकपका गया। "नहीं उसके लिए नहीं, क्वाड्रिल के लिए कहा है।"

"तुम होशियार आदमी नहीं हो," इज़ाबेल लगभग गुस्से में बोली, "मैंने उससे कहा था कि वह कॉटिलियन के लिए किसी और से हां न कहे क्योंकि हो सकता है तुम वह नाच उसके साथ नाचना चाहो।"

"और बेचारी लड़की क्या सोचती होगी!" लार्ड वारबर्टन खुलकर हंसा। तुम चाहती हो, तो मैं ज़रूर वह नाच उसके साथ नाचूंगा।"

"मैं चाहती हूं, तो? अगर तुम मेरे चाहने की वजह से ही उसके साथ नाचते हो, तो—!"

"मेरा ख्याल है वह मुझसे ऊबती है। लगता है उसकी कापी में कई नवयुवकों के नाम हैं।"

इज़ाबेल आंखें झुकाकर जल्दी-जल्दी सोचने लगी। लॉर्ड वारबर्टन पास से

उसे देख रहा था और वह अपने चेहरे पर उसकी नजर महसूस कर रही थी। उसका बहुत मन कर रहा था कि उससे आंखें हटा लेने को कहे। पर ऐसा न करके, पल-भर बाद अपनी आंखें उठाकर उसने कहा, "मैं समझना चाहूंगी।"

"क्या समझना चाहोगी?"

"दस दिन हुए तुमने कहा था कि तुम मेरी सौतेली लड़की से शादी करना चाहते हो। तुम यह बात भूल गए हो!"

"भूल गया हूं? मैंने आज सुबह ही मिस्टर ऑसमण्ड को इस बारे में पत्र लिखा है।"

"ओह, उसने मुझे नहीं बताया कि तुम्हारा कोई पत्र आया है।"

लार्ड वारबर्टन थोड़ा हकलाया। "मैंने···मैंने वह पत्र अभी भेजा नहीं।"

"शायद डालना तुम्हें याद नहीं रहा।"

"नहीं, पढ़कर मुझे सन्तोष नहीं हुआ। ऐसी चिट्ठी लिखना कुछ अजीब-सा होता है न! पर मैं आज रात उसे भेज दूंगा।"

"सुबह के तीन बजे?"

"मेरा मतलब है, बाद में, सुबह किसी वक्त।"

"ठीक। तो तुम अब भी उससे शादी करना चाहते हो।"

"बहुत चाहता हूं।"

"इसमें तुम्हें डर नहीं कि वह तुमसे ऊबेगी?" इस पर वारबर्टन उसे ताकता रहा, तो इज़ाबेल आगे बोली, "अगर वह आधा घण्टा तुम्हारे साथ नहीं नाच सकती, तो ज़िन्दगी भर कैसे नाचेगी?"

"मैं उसे दूसरों के साथ नाचने दूंगा," वारबर्टन ने तत्परता के साथ कहा, "जहां तक कॉटिलियन का सवाल है, मेरा ख्याल था कि शायद तुम···शायद तुम···।"

"मैं तुम्हारे साथ नाचूंगी? मैंने तो तुम्हें पहले ही मना कर दिया था।"

"हां, हां। मेरा मतलब यही था कि जब वह नाच चल रहा होगा, तब हम शायद किसी कोने में बैठकर बात कर सकें।"

"ओह!" इज़ाबेल गम्भीर होकर बोली, "तुम मेरा कुछ ज्यादा ही ख्याल रखते हो।"

कॉटिलियन के लिए पैंज़ी ने किसी और से कह दिया था—उसने विनीत

भाव से सोचा था कि लार्ड वारबर्टन का वह नाच उसके साथ नाचने का इरादा नहीं है। इज़ाबेल ने वारबर्टन से कोई और लड़की ढूंढ़ लेने को कहा, पर वार-बर्टन ने उसे विश्वास दिलाया कि वह उसके सिवा किसीके साथ नहीं नाचेगा। पर अपने मेज़बान के बहुत अनुरोध करने पर भी इज़ाबेल ने और सब निमन्त्रण इस आधार पर ठुकरा दिए थे कि वह आज बिल्कुल नहीं नाचेगी, इसलिए लॉर्ड वारबर्टन के प्रस्ताव को वह अपवाद नहीं बना सकती थी।

"यूं मुझे नाचने का शौक ही नहीं है," वारबर्टन बोला। "यह तो एक आदिम-सा मनोरंजन है। बेहतर यही है कि बैठकर बात की जाए।" और उसने इज़ाबेल को बताया कि जैसी जगह वह चाहता था वैसी एक जगह उसे वहां दिख गई है—छोटे कमरों में से एक का खामोश कोना जहां संगीत की बहुत मद्धिम आवाज़ पहुंचती है और बातचीत में बाधा नहीं डालती। इज़ाबेल ने वारबर्टन के विचार के अनुसार चलने का फैसला कर लिया था—वह मन से सन्तुष्ट होना चाहती थी। ऑसमण्ड ने कह रखा था कि वह हर वक्त लड़की पर नज़र रखे, फिर भी वह बॉलरूम से वारबर्टन के साथ निकल गई। ऑसमण्ड को सन्तोष इतने से हो सकता था कि वह जिसके साथ जा रही थी, वह उसकी लड़की का अभ्यर्थी था। बॉल रूम से निकलते हुए दरवाज़े के पास उसकी रोज़ियर से भेंट हो गई। रोज़ियर बांहें समेटे भ्रम टूटने की मुद्रा में वहां खड़ा था। इज़ाबेल ने पल-भर रुककर उससे पूछा कि वह नाच क्यों नहीं रहा।

"उसके साथ नहीं नाच सकता, तो और किसीके साथ नहीं नाचूंगा," रोज़ि-यर ने उत्तर दिया।

"तो अच्छा है वापस चले जाओ," इज़ाबेल ने यही राय देने के स्वर में कहा।

"जब तक वह यहां है, मैं नहीं जाऊंगा!" रोज़ियर ने पास से गुज़रते लॉर्ड वारबर्टन की तरफ आंख नहीं उठाई।

लॉर्ड वारबर्टन ने किन्तु उस उदास युवक को देखा और यह बताकर कि उसने उसे पहले भी कहीं देखा है, पूछा कि वह कौन है।

"यह वही युवक है जिसका मैंने तुमसे ज़िक्र किया था—जो पैंज़ी से प्रेम करता है।"

"हां, मुझे याद है। बेचारा बहुत उदास लग रहा है।"

"उसका कारण है। मेरा पति इसकी बात सुनने को तैयार नहीं।"

"ऐसी क्या वजह है ?" वारबर्टन बोला, "यह तो बहुत भला नज़र आता है।"

"इसके पास ज्यादा पैसा नहीं है, और न ही यह काफी चतुर है।"

लॉर्ड वारबर्टन दिलचस्पी के साथ सुन रहा था—रोज़ियर का वृत्तान्त उसे छू गया था। "अरे, मुझे तो लगा कि अच्छा खाता-पीता आदमी है।"

"वह तो है, पर मेरे पति की कुछ खास अपेक्षाएं हैं।"

"अच्छा, हां !" लॉर्ड वारबर्टन पल-भर के लिए रुका, फिर उसने पूछ लिया, "इस आदमी की क्या आमदनी होगी ?"

"साल में चालीस हज़ार फ्रैंक।"

"सोलह सौ पौण्ड ? पर यह तो बहुत काफी है।"

"मेरा भी यही ख्याल है। पर मेरे पति के विचार इससे बड़े हैं।"

"हां, यह तो मुझे भी लगा है कि उसके विचार बड़े हैं। यह बिल्कुल मूर्ख है क्या—यह युवक ?"

"मूर्ख ? हरगिज़ नहीं। बहुत आकर्षक आदमी है। जब यह बारह साल का था, तो मैं खुद इससे प्रेम करती थी।"

"आज भी वह बारह साल से बड़ा नज़र नहीं आता," लॉर्ड वारबर्टन ने आसपास देखते हुए अस्पष्ट-से स्वर में कहा। फिर खास पूछा, "क्या ख्याल है, यहीं बैठें ?"

"जहां कहो।" वह कमरा एक स्त्री-कक्ष जैसा था जिसमें हल्की गुलाबी रोशनी फैल रही थी। ज्योंही वे वहां दाखिल हुए, एक स्त्री और पुरुष वहां से निकलकर बाहर चले गए। "तुम्हारी मेहरबानी है कि तुम मिस्टर रोज़ियर में इतनी दिलचस्पी ले रहे हो," इज़ाबेल ने कहा।

"लगता है जैसे उसके साथ काफी बुरा सलूक हुआ है। गज भर लम्बा उसका चेहरा हो रहा है। मुझे हैरानी हुई कि इसे तकलीफ क्या है।"

"तुम न्याय-प्रिय आदमी हो," इज़ाबेल बोली, "अपने प्रतिद्वन्द्वी के लिए भी तुम अच्छा ही सोचते हो।"

लॉर्ड वारबर्टन ने एकाएक मुड़कर आंखें उसके चेहरे पर स्थिर कर दीं। तुम उसे मेरा प्रतिद्वन्द्वी कहती हो ?"

"क्यों नहीं ?—जब तुम दोनों एक ही लड़की से शादी करना चाहते हो।"

"हां, पर उसके लिए तो कोई मौका ही नहीं है !"

"तुम, जैसे भी सही, उसकी नज़र से स्थिति को देखकर यह कह रहे हो—यह मुझे पसन्द रहा है। इसका मतलब है तुममें कल्पना है !"

"तुम्हें मैं इस नजर से पसन्द हूं ?" वारबर्टन अनिश्चित नज़र से उसे देखता हुआ बोला, "तुम्हारा मतलब है कि तुम इस बात के लिए मन ही मन मुझ पर हंस रही हो।"

"हां, थोड़ा हंस भी रही हूं। पर जिस पर हंसा जाए, ऐसे व्यक्ति के रूप में भी तुम मुझे अच्छे लग रहे हो।"

"अच्छा, तो मुझे ज़रा और उसकी स्थिति से विचार करने दो। तुम्हारे ख्याल में उसके लिए क्या किया जा सकता है ?"

"मैं तुम्हारी कल्पना की प्रशंसा कर रही थी, इसलिए मैं यह तुम्हारी कल्पना पर ही छोड़ती हूं," इज़ाबेल बोली, "इस लिहाज से पैंज़ी भी तुम्हें पसन्द करेगी।"

"मिस ऑसमण्ड ? पर मुझे तो गुमान है कि वह यूं भी मुझे पसन्द करती है।"

"हां, बहुत पसन्द करती है।"

वारबर्टन पल-भर रुका रहा—वह उसके चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रहा था। "मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा। तुम यह तो नहीं कहना चाहतीं कि पैंज़ी रोज़ियर को चाहती है ?"

"मैं तुम्हें बता चुकी हूं कि मुझे ऐसा लगता है।"

वारबर्टन के गालों पर सुर्खी दौड़ गई। "तुमने तो कहा था कि पैंजी वही चाहेगी जो उसका पिता चाहेगा और मेरा अनुमान है कि उसके पिता की राय मेरे हक में है—!" फिर पल-भर रुककर उसने लजाते हुए कहा, "तुम्हें ऐसा नहीं लगता ?"

"हां, मैंने तुमसे कहा था कि लड़की की आन्तरिक इच्छा है कि वह अपने पिता को खुश रखे और शायद इसके लिए वह बहुत कुछ कर सकती है।"

"मुझे तो यह बहुत अच्छी भावना लगती है," लॉर्ड वारबर्टन ने कहा।

"निसन्देह, भावना बहुत अच्छी है।" इज़ाबेल कुछ क्षण खामोश रही। कमरा अब भी खाली था। संगीत की भरपूर ध्वनियां बीच की दीवारों से मद्धिम पड़ती हुई उन तक पहुंच रही थीं। आखिर उसने कहा, "पर पत्नी पाने के लिए ऐसी

भावना के प्रति ऋणी होना किसीको अच्छा लग सकता है, यह मैं नहीं समझती।"

"पत्नी अच्छी हो और आदमी को लगे कि उसके साथ जिन्दगी अच्छी गुज़-रेगी, तो हर्ज क्या है ?"

"हां। तुम्हें इस नज़र से ही सोचना चाहिए।"

"मैं इसी नज़र से सोचता हूं। तुम इसे ब्रिटिश वृत्ति कहोगी, मैं जानता हूं।"

"नहीं, ऐसा नहीं। मेरा विचार है कि तुमसे ब्याह करके पैंज़ी बहुत अच्छी रहेगी। तुमसे अच्छी तरह यह और कोई नहीं जानता। पर तुम उससे प्रेम नहीं करते।"

"मैं उससे प्रेम करता हूं, मिसेज़ ऑसमण्ड !"

इज़ाबेल ने सिर हिलाया। "यहां मेरे पास बैठे हुए तुम यही मानना चाहते हो कि तुम करते हो। पर मुझे ऐसा लगता नहीं।"

"मेरी हालत दरवाज़े के पास खड़े उस युवक जैसी नहीं है, यह मैं मानता हूं। पर इसमें तुम्हें अस्वाभाविक क्या लगता है ? मिस ऑसमण्ड से प्यारी लड़की दुनिया में और कौन होगी ?"

"शायद कोई नहीं। पर अच्छी युक्तियों के साथ प्रेम का कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"मैं तुमसे सहमत नहीं हूं। मुझे खुशी है कि मैं अच्छी युक्तियों के कारण ऐसा कह रहा हूं।"

"इसमें शक नहीं, पर अगर तुम वास्तविक प्रेम करते होते, तो युक्तियों की तुम्हें ज़रा परवाह न होती।"

"वास्तविक प्रेम—वास्तविक प्रेम !" लॉर्ड वारबर्टन बांहें समेटकर सिर को झुकाये थोड़ा आगे को फैलता हुआ चिल्लाया, "तुम्हें ध्यान रखना चाहिए कि मेरी उम्र अब बयालीस साल की हो चुकी है। मैं अपने को धोखा नहीं दे सकता कि मैं जैसा पहले था, वैसा ही अब भी हूं।"

"तुम्हें इसका विश्वास है", इज़ाबेल बोली, "तो ठीक है।"

वारबर्टन ने कुछ नहीं कहा—सिर पीछे किये सामने देखता बैठा रहा। फिर एकाएक उसने अपनी स्थिति बदल ली और जल्दी से इज़ाबेल की ओर नज़र डाल-कर कहा, "तुम्हारे मन में इतना अविश्वास, इतना विरोध, क्यों है ?"

इज़ाबेल की आंखें उससे मिल गईं और पल-भर वे सीधी नज़र से एक-दूसरे की तरफ देखते रहे। यदि वह सन्तुष्ट होना चाहती थी, तो वारबर्टन की नज़र में कुछ था जिससे वह सन्तुष्ट हो सकती थी। वारबर्टन के भाव में उस विचार की चमक थी जिससे इज़ाबेल अपने लिहाज़ से अस्थिर और कुछ हद तक भयभीत थी। उस भाव में आशा नहीं, संशय था, पर जो वह जानना चाहती थी, वह उसमें स्पष्ट था। वारबर्टन को पल-भर के लिए भी यह सन्देह नहीं हो सकता था कि पैंज़ी के साथ विवाह करने के उसके प्रस्ताव में वह अपने साथ सम्भावित निकटता की आशा का आभास पा रही है, और यह प्रकट हो भी जाता, तो न ही उसके उससे आशंकित होने की सम्भावना थी! उस संक्षिप्त पर अत्यन्त व्यक्तिगत दृष्टि-विनिमय में उससे कहीं गहरे अर्थ निहित थे जितने कि वे उस समय सोच सकते थे।

"माई डियर लॉर्ड वारबर्टन," इज़ाबेल ने मुस्कराकर कहा।" जहां तक मेरा सवाल है, तुम्हें जो ठीक लगे, वही तुम्हें करना चाहिए।"

यह कहकर वह उठ खड़ी हुई और साथ के कमरे में चली गई। वहां रोम की दुनिया के दो बड़े व्यक्ति उसे मिल गये जो जैसे उसी को खोज रहे थे। वह वारबर्टन की नज़र में रहकर तुरन्त उनसे बात करने लगी। बात करते हुए उसे खेद होने लगा कि वह उठकर चली क्यों आई। यह तो लगता था जैसे वह भाग आई हो—खास तौर से इसलिए कि वारबर्टन उसके पीछे नहीं आया था। पर वारबर्टन के साथ न आने की उसे खुशी थी—कम-से-कम सन्तोष तो था ही। यह सन्तोष इतना था कि वापस बॉल-रूम में जाते हुए उसे रोज़ियर अब भी वहीं दरवाज़े के पास खड़ा नज़र आया, तो वह फिर से उससे बात करने के लिए रुक गई। "तुमने अच्छा किया जो अभी गये नहीं", उसने कहा, "मैं तुम्हें थोड़ा सुख पहुंचा सकती हूं।"

"मुझे उसकी ज़रूरत भी है", रोज़ियर कोमल पर रुआंसे स्वर में बोला, "तुम्हें पास पाकर मुझे महसूस होता है कि मेरी ऑसमण्ड से भी घनिष्ठता है।"

"तुम उसकी बात मत करो, ज़रूरत होगी, तो मैं करूंगी। मैं ज़्यादा कुछ तो नहीं कर सकती, पर जो कुछ कर सकती हूं, करूंगी।"

रोज़ियर ने फिक्र-भरी तिरछी नज़र से उसे देखा, "सहसा, तुम मेरे पक्ष में किस बात से आगईं?"

"इस बात से कि तुम दरवाज़ों में रुकावट बनकर खड़े रहते हो", कहकर इज़ाबेल मुसकराई और उसके पास से निकल गई। आधा घण्टा बाद वह पैंज़ी के साथ वहां से चल दी। जीने से नीचे, और बहुत-से लौट रहे अतिथियों के बीच खड़ी होकर वे दोनों अपनी गाड़ी का इंतज़ार करने लगीं। तभी अन्दर से निकलकर लॉर्ड वारबर्टन उनके पास आगया और गाड़ी तक पहुंचने में उसने उनकी सहायता की। गाड़ी के दरवाज़े के पास खड़े होकर उसने पैंज़ी से पूछा कि उसे पार्टी अच्छी तो लगी। पैंज़ी ने उसे उत्तर देकर थकान के भाव से पीछे टेक लगा ली। तब इज़ाबेल, उंगली के इशारे से वारबर्टन को रोक कर, खिड़की से झांकती हुई कोमल स्वर में बुदबुदाई, "देखो, इसके पिता को वह पत्र भेजना भूलना नहीं!"

४४

काउंटेस जेमिनी अक्सर बहुत ऊबी रहती थी— अपने ही शब्दों में मरने की हद तक। पर ज़िन्दा वह फिर भी थी और साहस के साथ अपने भाग्य से संघर्ष कर रही थी। यह भाग्य था उस फ्लोरेंस-वासी से उसका शादी कर लेना जोकि बहुत ही बेलाग आदमी था और अपना शहर छोड़कर कहीं जाना ही नहीं चाहता था। वहां लोगों में उसका नाम था—उतना ही जितना कि लड़-झगड़कर ताश में हारने वाले एक आदमी का हो सकता है। जो उससे जीतते थे, वे भी काउंट जेमिनी को पसन्द नहीं करते थे। फ्लोरेंस में उसके नाम का महत्त्व कुछ वैसा ही था जैसा पुराने इतालवी प्रदेशों के स्थानीय सिक्कों का होता था—जो देश के किसी और हिस्से में नहीं चलते थे। रोम में उसे सिर्फ एक जड़बुद्धि फ्लोरेंस-वासी समझा जाता था, और यह स्वाभाविक ही था कि वह ज़्यादा उस शहर में नहीं जाना चाहता था जहां अपनी जड़ता को खपाने के लिए उसे ज़रूरत से ज़्यादा कोशिश करनी पड़ती थी। काउंटेस की आंखें हमेशा रोम पर लगी रहती थीं, और उसे सबसे बड़ी शिकायत यही थी कि वहां उसका अपना घर नहीं है। यह स्वीकार करते उसे शरम आती थी कि वह कितनी थोड़ी बार वहां गई है—इसकी उसे कुछ तसल्ली नहीं थी कि फ्लोरेंस में बहुत से ऐसे लोग थे जो कभी रोम गए ही

नहीं थे। वह, जब भी उसे मौका मिलता था, तब चली जाती थी—बस, इतना ही वह कह सकती थी। पर बस इतनी ही बात नहीं थी—यह तो वह कहती थी कि वह इतना ही कह सकती है। वास्तव में उसके पास कहने को बहुत कुछ था, और अक्सर वह बताया करती थी कि क्यों वह फ्लोरेंस से नफरत करती है और अपने जीवन के अन्तिम दिन सेंट पीटर्ज़ की छाया में बिताना चाहती है। उन कारणों से हमें यहां वास्ता नहीं है—संक्षेप में अक्सर वह कहती थी कि रोम एक सार्वकालिक नगर है जबकि फ्लोरेंस और सब शहरों जैसा छोटा-सा सुन्दर शहर है। काउंटेस अपने मनोरंजन के विचार को सार्वकालिकता के साथ जोड़कर देखना ही पसन्द करती थी। उसका विश्वास था कि रोम का समाज कहीं अधिक दिलचस्प है क्योंकि वहां सारी सर्दियां शाम की पार्टियों में बड़े-बड़े लोगों से भेंट हो सकती है। फ्लोरेंस में कोई बड़ा आदमी नहीं था—कम-से-कम नाम किसीका नहीं सुना जाता था। अपने भाई के विवाह के बाद से उसकी अधीरता और बढ़ गई थी—उसे पक्का विश्वास था कि उसके भाई की पत्नी उसकी अपेक्षा कहीं आकर्षक जीवन बिताती है। वह चाहे इज़ाबेल जितनी प्रतिभावान् नहीं थी, पर रोम के लिहाज़ से उसमें काफी प्रतिभा थी—खंडहरों, समाधियों, स्मारकों, संग्रहालयों, गिरजाघरों और दृश्य-पंक्तियों को छोड़कर और सब जगह वह प्रतिभा काम आ सकती थी। अपनी भाभी के बारे में वह बहुत सुनती थी और अच्छी तरह जानती थी कि वह वहां कितने मज़े से वक्त काट रही है। पालाज़ो रोकानेरा में वह सिर्फ एक बार मेहमान बनकर गई थी, और अपनी आंखों से यह सब देख आयी थी। भाई की शादी की पहली सर्दियों में वह हफ्ता भर वहां रही थी, पर तबसे वैसे सुअवसर के लिए उसे फिर प्रोत्साहन नहीं मिला था। ऑसमण्ड को उसका वहां आना पसन्द नहीं था, यह वह अच्छी तरह जानती थी। पर ऑसमण्ड की उसे परवाह ही कितनी थी? इसलिए उसके बावजूद वह चली जाती, अगर उसका पति उसे न रोकता। फिर पैसे की भी मुसीबत थी। इज़ाबेल ने उससे बहुत अच्छा बरताव किया था—काउंटेस को अपनी भाभी शुरू से ही पसन्द आई थी—ईर्ष्या में पड़कर उसके व्यक्तिगत गुणों को उसने अनदेखा नहीं किया था। उसने यह भी देखा था कि अपने जैसी मूर्ख स्त्रियों की अपेक्षा चतुर स्त्रियों से उसकी ज्यादा पटती है। मूर्ख स्त्रियां उसकी दानाई को नहीं समझ पाती थीं, जबकि चतुर स्त्रियां—वे जो वास्तव में चतुर थीं—उसकी मूर्खता को समझ जाती थी। उसे यह भी लगता, कि देखने

में और चालढाल में अलग होते हुए भी उसमें और इज़ाबेल में कहीं कुछ समानता थी जिसके आधार पर वे एक-दूसरी से मिल सकती थीं। समानता का क्षेत्र बड़ा नहीं था, पर था निश्चित और एक बार उसे छूते ही दोनों उसे जान सकती थीं। और मिसेज़ ऑसमण्ड के साथ वह जैसे एक खुशगवार आश्चर्य की छाया में रहती थी। उसे लगता था कि इज़ाबेल अब बस उसे 'हीन' समझने लगेगी—पर यह घटना लगातार टलती जाती थी। वह अपने से पूछती रहती थी कि कब यह घटना होगी और कैसे—पटाखे छूटने की तरह, नावों की दौड़ की तरह, या आपेरा के सीज़न की तरह ?—चाहे उसे इसकी परवाह नहीं थी, फिर भी उसे आश्चर्य होता था कि क्या चीज़ इसे अब तक रोके हुए है। उसकी भाभी उसे केवल सीधी सपाट दृष्टि से देखती थी जिसमें उस बेचारी के प्रति न घृणा का भाव रहता था, न प्रशंसा का। इज़ाबेल उससे घृणा करने की बात उतनी ही सोच सकती थी जितनी एक टिट्डे के चरित्र पर राय ज़ाहिर करने की। पर अपनी ननद के प्रति वह उदासीन नहीं थी, बलिक उससे थोड़ा डरती ही थी। उसे काउंटेस पर आश्चर्य होता था क्योंकि वह उसे बहुत असाधारण लगती थी। उसे लगता था काउंटेस में आत्मा तो है ही नहीं—वह एक अपनी ही तरह के चमकदार घोंघे की तरह है, जिसकी सतह पर पॉलिश है और जिसका गुलाबी होंठ जब हिलता है तो अन्दर कोई चीज़ जैसे खड़ाखड़ाने लगती है। यह खड़खड़ाहट कांउटेस के आत्मिक पक्ष की थी, जो एक ढीले पेंच की तरह उसके अन्दर लुढ़कता रहता था। वह इतनी विचित्र थी कि उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती थी—इतने अन्तर्विरोध उसमें थे कि किसी से उसकी तुलना नहीं हो सकती थी। इज़ाबेल ने उसे फिर भी बुलाया होता (काउंट को बुलाने का तो खैर कोई सवाल ही नहीं था), पर शादी के बाद ऑसमण्ड ने खुलकर यह कहा था कि एमी परले सिरे की मूर्ख है—ऐसी मूर्ख कि उसकी मूर्खता में एक जीनियत की-सी गैर ज़िम्मेदारी भी है। फिर एक बार उसने कहा था एमी के अन्दर दिल नाम की जीज़ नहीं है, और पल-भर बाद साथ यह जोड़ दिया था कि जितना दिल उसके पास था, उसे वह सेलाब-खाये विवाह के केक की तरह छोटे-छोटे टुकड़ों में लोगों को बांट चुकी हैं। वहां से बुलावा न आना एक और कारण था जो काउंटेस के फिर से रोम जाने में बाधक था। पर जिस अवसर का यहां ज़िक्र कर रहे हैं, उस अवसर पर उसे पालाज़ो रोकानेरा में आकर कई सप्ताह बिताने का निमन्त्रण मिल चुका था। प्रस्ताव ऑसमण्ड की

तरफ से था और उसने लिखा था कि काउंटेस को वहां आकर खामोश रहना होगा। जिस अर्थ में उसने यह लिखा था, वह काउंटेस समझी या नहीं, यह कहना मुश्किल है, पर शर्त चाहे जो भी हो, वह जाने के लिए तैयार हो गई। कहीं उसके मन में उत्सुकता भी थी क्योंकि पहली बार जाने पर उसे लगा था कि उसके भाई को जैसी पत्नी चाहिए थी, वैसी मिल गई है। विवाह से पहले उसे इज़ाबेल के लिए खेद हुआ था, इतना कि उसने गम्भीरतापूर्वक—अगर गम्भीरता का सम्बन्ध उसके विचारों के साथ जोड़ा जा सके, तो—यह सोचा था कि उस लड़की को पहले से होशियार कर दे। पर तब उसने वक्त निकल जाने दिया था, और बाद में उसे तसल्ली हो गई थी। ऑसमण्ड पहले की तरह ही आसमान पर चढ़ा रहता था, पर उसकी पत्नी आसानी से झुक जाने वाली नहीं थी। काउंटेस लोगों को नापने के मामले में बहुत सही नहीं थी, पर उसका ख्याल था कि इज़ाबेल अगर तनकर रहे, तो दोनों में उसी का कन्धा ऊंचा पड़ेगा। अब वह जानना चाहती थी कि इज़ाबेल तनकर रही या नहीं—ऑसमण्ड के ऊपर भी किसी को सवार देखने से बड़ी खुशी उसके लिए कोई नहीं थी।

रोम के लिए चलने से कई दिन पहले एक नौकर ने उसे रोम से आई एक मिलने वाली स्त्री का कार्ड लाकर दिया। उस पर केवल इतना लिखा था—हेनरीटा स्टैकपोल। काउंटेस ने उंगलियों से माथे को छुआ—उसे लगा कि ऐसी किसी हेनरीटा से वह कभी नहीं मिली। नौकर ने बताया कि आनेवाली का कहना है कि काउंटेस नाम से उसे न पहचान सके, तो उसे देखकर जरूर पहचान जाएगी। उसके सामने जाने से पहले काउंटेस को ध्यान हो आया कि मिसेज़ टाउशेट के यहां इस नाम की एक साहित्यकार महिला से उसकी भेंट हुई थी। पूरे जीवन में वही एक साहित्यकार स्त्री थी जिससे वह मिली थी—मतलब आधुनिक लोगों में से—क्योंकि वैसे वह स्वयं एक चुकी हुई कवयित्री की बेटी थी। उसने मिस स्टैकपोल को देखते ही पहचान लिया, खास तौर से क्योंकि मिस स्टैकपोल ज़रा भी बदली नहीं थी। मिलनसार स्वभाव की होने से काउंटेस को यह अच्छा लगा कि एक इतनी विख्यात स्त्री उससे मिलने आई है। उसने यह भी सोचा कि कहीं वह उसकी मां के कारण तो नहीं आई—कि शायद उसने अमेरिकन कोरिन का जिक्र सुना हो। उसकी मां इज़ाबेल की मित्र से कहीं भिन्न थी—काउंटेस देखते ही जान गई कि यह महिला कहीं अधिक समकालीन है। उसने यह भी धारणा

बना ली कि दूसरे देशों में साहित्कार महिलाओं के चरित्र में (व्यावसायिक चरित्र में) क्या प्रगति हो रही है। उसकी मां भीरुता के साथ अपनी कसी हुई काली मखमल में से (ओह, कितनी पुरानी थी वह पोशाक !) कन्धे उघाड़कर उन पर एक रोमन स्कार्फ ओढ़े रहती थी। चुपड़ी हुई घुंघराली लटों के ढेर में लारेल की सुनहरी माला लगाए रहती थी। अपने क्रेओल पूर्वजों की तरह वह धीमी और अस्पष्ट आवाज़ में बात करती थी, और इस बात को स्वीकार भी करती थी। अक्सर वह आहें भरती रहती थी और ज़्यादा उद्यम नहीं करती थी। पर काउंटेस देख रही थी कि हेनरीटा हमेशा ठीक से बटन बन्द किए, बाल संवारे रहती थी। उसकी चाल-ढाल बहुत चुस्त और व्यावसायिक-सी थी। उसके व्यवहार में चेष्टा से लाई गई बेतकल्लुफी झलकती थी। उसे देखकर यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह कभी बेमतलब आहें भरती होगी—यह उसी तरह लगता जैसे एक पत्र बिना पते के डाल दिया गया हो। काउंटेस को स्पष्ट अहसास हुआ कि 'इंटरव्यूअर' की संवाददाता अमेरिकन कोरिन से कहीं ज़्यादा गतिशील है। हेनरीटा ने उसे बताया कि उसके आने का कारण यह है कि फ्लोरेंस में वह केवल उसी को जानती है, और कि एक पराये शहर में आकर सिर्फ यात्रियों को ही सतही तौर पर देखकर उसे सन्तोष नहीं होता। वैसे वह मिसेज़ टाउशेट को भी जानती थी, पर एक तो वे अमरीका में थीं, और दूसरे वे फ्लोरेंस में होतीं भी, तो वह उनके पास न जाती क्योंकि उनके लिए उसके मन में खास इज़्ज़त नहीं थी।

"इसका मतलब मैं यह लूं कि मेरे लिए इज्ज़त है ?" काउंटेस ने भद्रतापूर्वक पूछ लिया।

"तुम्हें मैं उनसे ज़्यादा पसन्द करती हूं," मिस स्टैकपोल बोली, "मुझे याद है कि पहली बार मैं तुमसे मिली थी, तो तुम मुझे काफी दिलचस्प लगी थीं। ऐसा संयोगवश हुआ, या तुम्हारा स्वभाव ही ऐसा है, यह मैं नहीं कह सकती। पर तुम्हारी बातों का मुझपर खासा प्रभाव पड़ा था। बाद में मैंने उन्हें छपवा भी दिया था।"

"ओह !" काउंटेस आशंकित-सी उसकी तरफ देखती रह गई। अच्छा होता मुझे तब पता रहता।"

"बात शहर में स्त्रियों की स्थिति के बारे में थी," मिस स्टैकपोल बोली। "तुमने इस पर काफी रोशनी डाली थी।"

"स्त्रियों की स्थिति बहुत सुविधाजनक नहीं है, यही बात थी न ? और तुमने यह लिखकर छपा भी दी ?" काउंटेस ने कहा। "ज़रा मुझे दिखाओ तो सही।"

"तुम चाहती हो, तो मैं उन्हें लिखकर वह पेपर तुम्हें मंगवा दूंगी," हेनरीटा बोली। "मैंने तुम्हारा नाम नहीं दिया था। लिखा था एक ऊंचे वर्ग की स्त्री यह कहती है।"

काउंटेस ने अपने मिले हुए हाथ उछालकर एकाएक पीछे टेक लगा ली। "मुझे अफसोस है तुमने मेरा नाम नहीं दिया। मुझे पेपर में अपना नाम देखकर खुशी होती। अपने विचार तो मैं भूल गई हूं, क्योंकि मेरे कई तरह के विचार हैं। पर मैं उनके लिए शरमिन्दा नहीं हूं। मैं अपने भाई से बहुत भिन्न हूं।—तुम मेरे भाई को जानती हो न ? उसे लगता है नाम अखबारों में आना एक तरह का स्कैंडल है। तुम उसकी बातें छपवा दो, तो वह कभी तुम्हें क्षमा नहीं करेगा।"

"उसे डरने की ज़रूरत नहीं। मैं उसका कभी ज़िक्र नहीं करूंगी," मिस स्टैकपोल बहुत रूखे लहजे में बोली। "मेरे यहां आने का एक कारण यह भी है। तुम्हें पता है मिस्टर ऑसमण्ड ने मेरी सबसे प्यारी मित्र के साथ शादी की है।"

"हां, हां, तुम इज़ाबेल की मित्र थीं—मैं सोच ही रही थी कि मैं तुम्हें कैसे जानती हूं।"

"मुझे कोई एतराज़ नहीं कि मुझे इस रूप में जाना जाए," हेनरीटा बोली। "पर तुम्हारा भाई मुझे इस रूप में जानना पसन्द नहीं करता। उसकी कोशिश है कि मेरा और इज़ाबेल का सम्बन्ध टूट जाए।"

"तुम्हें ऐसा नहीं होने देना चाहिए, काउंटेस ने कहा।

"वही बात मैं तुमसे करना चाहती हूं। मैं रोम जा रही हूं।"

"मैं भी जा रही हूं," काउंटेस बोली। "हम साथ चलेंगी।"

"मुझे खुशी होगी। जब मैं अपनी यात्रा के बारे में लिखूंगी तो अपनी साथिन के तौर पर तुम्हारा ज़िक्र नाम लेकर करूंगी।"

काउंटेस झट अपनी कुरसी से उठकर हेनरीटा के पास सोफे पर आ बैठी। "वह पेपर मुझे ज़रूर भेजना। मेरे पति को यह बात पसन्द नहीं आएगी, पर मैं उसे देखने ही नहीं दूंगी। फिर उसे पढ़ना आता भी नहीं।"

हेनरीटा की बड़ी-बड़ी आंखें फैल गईं। "उसे पढ़ना नहीं आता ? यह मैं अपने पत्र में लिख सकती हूं ?"

"अपने पत्र में ?"

" 'इन्टरव्यूअर' में। वह मेरा पेपर है।"

"तुम चाहो, तो लिख देना। उसका नाम भी। तुम इज़ाबेल के पास ठहरोगी ?"

हेनरीटा सिर सीधा रखकर पल-भर चुपचाप काउंटेस को देखती रही। "उसने मुझसे नहीं कहा। मैंने उसे लिखा था कि मैं आ रही हूं, और उसने उत्तर दिया कि वह एक 'पेंशन' में मेरे लिए कमरे का इन्तज़ाम कर देगी। इसका कारण उसने नहीं लिखा।"

काउंटेस दिलचस्पी के साथ सुन रही थी। "कारण ऑसमण्ड है," उसने अर्थ-पूर्ण ढंग से कहा।

"इज़ाबेल को उसका सामना करना चाहिए," मिस स्टैकपोल बोली। "मुझे लगता है वह बहुत बदल गई है। मैंने उससे कहा था वह बदल जाएगी।"

"मुझे अफसोस है। उसे अपने ढंग से चलना चाहिए था। मेरा भाई तुम्हें क्यों पसन्द नहीं करता ?" काउंटेस ने खोज करने के ढंग से पूछा।

"पता नहीं—और न ही मुझे इसकी परवाह है। वह नहीं पसन्द करता, न करे। बल्कि कुछ लोग मुझे पसन्द करें, तो अपनी नज़र में मेरी इज़्ज़त गिर जाएगी। एक पत्रकार अच्छा काम तभी कर सकता है जब काफी लोग उससे नफरत करें। इसी से उसे पता चलता है कि उसका काम कैसा जा रहा है। और एक स्त्री को तो और भी फर्क नहीं पड़ता। पर इज़ाबेल से मुझे ऐसी आशा नहीं थी।

"तुम्हारा मतलब हैं वह भी तुमसे नफरत करती है ?"

"कह नहीं सकती। यह मैं देखना चाहती हूं। इसीलिए मैं रोम जा रही हूं।"

"ओह ! कितना उबाऊ मकसद है।" काउंटेस बोली।

"वह मुझे पहले की तरह नहीं लिखती। फर्क मुझे साफ पता चलता है," मिस स्टैकपोल कहती रही। "तुम्हें कुछ पता हो तो बता दो ताकि मैं जाने से पहले अपना रवैया तय कर लूं।"

काउंटेस का निचला होंठ ढीला हो गया और उसने आहिस्ता से कंधे हिला दिए। "मुझे भी ज़्यादा पता नहीं है। ऑसमण्ड से मेरी मुलाकात या चिट्ठी-पत्री बहुत कम होती है। मुझे भी यह उतना ही पसन्द करता है जितना तुम्हें।"

"पर तुम तो एक महिला-संवाददाता नहीं हो," हेनरीटा सोचती-सी बोली।

"मेरे लिए उसके पास और कारण हैं। फिर भी उन्होंने मुझे बुलाया है, और मुझे वहां घर पर ही ठहरना है।" काउंटेस उग्र भाव से मुस्कराई। उस समय उसका आह्लाद मिस स्टैकपोल की निराशा को नहीं देख रहा था।

हेनरीटा का भाव शान्त बना रहा। "मुझे उसने बुलाया होता, तो भी मैं न जाती। कम-से-कम सोचती यही। इसलिए अच्छा है वह दुविधा मेरे सामने नहीं आई, नहीं तो बहुत मुश्किल पड़ती। मैं उससे मुंह मोड़ना भी न चाहती और उसकी छत के नीचे रहकर मुझे खुशी भी न होती। एक 'पेंशन' में मुझे बहुत आराम रहेगा। पर बात इतनी ही नहीं।"

"रोम में इन दिनों बहुत अच्छा लगेगा," काउंटेस बोली। "बहुत से प्रतिभाशाली लोग इन दिनों वहां आए हुए हैं। लार्ड वारबर्टन का नाम तुमने सुना है?"

"सुना है? मैं उसे अच्छी तरह जानती हूं। तुम उसे बहुत प्रतिभाशाली समझती हो?" हेनरीटा ने पूछा।

"मैं उससे मिली नहीं, पर सुना है बहुत शान है उसकी। आजकल वह इज़ाबेल से प्रेम कर रहा है।"

"प्रेम कर रहा है?"

"सुना यही है। ज़्यादा बात का मुझे पता नहीं," काउंटेस सरसरी तौर पर बोली। "पर इज़ाबेल को कोई खतरा नहीं है।"

हेनरीटा पल-भर बिना कुछ कहे उसे एकटक देखती रही। फिर एकाएक उसने पूछा, "तुम रोम कब जा रही हो?"

"अभी हफ्ता भर नहीं जा रही।"

"मैं कल जा रही हूं," हेनरीटा बोली, "मैं अब और नहीं रुकूंगी।"

"यह अफसोस की बात है। पर मैं कुछ पोशाकें बनवा रही हूं। सुना है इज़ाबेल के यहां बहुत मेहमान आते हैं। पर मैं वहां तुमसे मिलूंगी—तुम्हारे 'पेंशन' में तुमसे मिलने आऊंगी।" हेनरीटा चुप बैठी रही। वह किसी सोच में खोई थी। तभी काउंटेस एकाएक बोली, "पर मैं साथ नहीं चलूंगी, तो तुम मेरे साथ अपनी यात्रा का वर्णन नहीं कर पाओगी।

मिस स्टैकपोल पर इसका कुछ असर नहीं हुआ। वह कुछ और ही सोच रही

थी, जो उसने अब कहा, "लार्ड वारबर्टन के बारे में तुम्हारी बात समझ में नहीं आई।"

"समझ में नहीं आई? मेरा मतलब इतना है कि वह बहुत अच्छा आदमी है।"

"एक विवाहित स्त्री से प्रेम करना तुम अच्छी बात समझती हो?" हेनरीटा ने अत्यधिक स्पष्टता के साथ पूछा।

काउंटेस पहले उसे ताकती रही, फिर खिलखिलाकर हंस उठी। "यह तय है कि सब अच्छे आदमी यह काम करते हैं। शादी कर लो, तो तुम्हें पता चल जाएगा।"

"यह खयाल ही मुझे शादी करने से रोके रखेगा," मिस स्टैकपोल बोली। "मुझे अपना पति चाहिए, किसी और का नहीं। तुम्हारा मतलब है कि इज़ाबेल अपराधिनी है—अपराधिनी—?" और वह आगे शब्द ढूंढ़ने के लिए रुकी रही।

"मैंने ऐसा कहा है? नहीं, मेर खयाल है अभी नहीं। मेरा मतलब है ऑस· मण्ड बहुत बिगड़ा हुआ है, और सुना है लार्ड वारबर्टन ज्यादातर वहां घर पर ही बना रहता है। तुम घबरा तो नहीं गई?"

"नहीं मैं सिर्फ जानना चाहती हूं।"

"तुम इज़ाबेल के प्रति उदार नहीं हो। तुम्हें उस पर इससे ज्यादा विश्वास होना चाहिए।" फिर जल्दी से काउंटेस ने आगे कहा, "एक बात है। तुम कहो, तो मैं उस आदमी को वहां से भगा सकती हूं।"

इसके उत्तर में पहले तो हेनरीटा की आंखों की गम्भीरता बढ़ गई। फिर उसने कहा, "तुम नहीं समझ रहीं। मेरा वह विचार नहीं जो तुम सोच रही हो। मुझे उस रूप में इज़ाबेल के लिए डर नहीं है। मुझे डर है कि वह दुःखी है, और मैं इसका कारण जानना चाहती हूं।"

काउंटेस ने एक दर्जन बार सिर हिलाया। उसके भाव में बेसब्री भी थी, व्यंग्य भी। "यह हो सकता है। पर मुझे तो यह जानना है कि आसमण्ड भी दुःखी है या नहीं।" वह मिस स्टैकपोल से थोड़ा उकता गई थी।

"अगर वह सचमुच बदल गई है, तो उसका कारण यही होगा," हेनरीटा अपनी ही बात कहती रही।

"यह तुम्हें उससे पता चल जाएगा," काउंटेस बोली।

"यही तो मुझे डर है कि वह शायद न बताए।"

"अगर ऑसमण्ड पहले की तरह खुश न हुआ, तो मुझे तो पता चल जाएगा," काउंटेस बोली।

"मुझे उसकी परवाह नहीं," हेनरीटा ने कहा।

"मुझे है। अगर इज़ाबेल दुःखी है, तो मुझे अफसोस होगा, पर मैं कुछ कर नहीं सकती। मैं कुछ कहकर उसे और दुःखी ही कर सकती हूं, पर तसल्ली नहीं दे सकती। भला उसने ऑसमण्ड से शादी की ही क्यों? मेरी बात मानती, तो कभी न करती। मैं उसे क्षमा कर सकती हूं, अगर वह उसे मज़ा चखा रही हो। अगर उसने अपने को कुचल जाने दिया है, तो मैं उस पर दया भी नहीं कर सकती। पर मुझे लगता है कि ऐसा होगा नहीं। मुझे आशा है कि वह अगर खुद दुःखी होगी, तो कम-से-कम उसे भी उतना ही दुःखी किए होगी।"

हेनरीटा उठ खड़ी हुई। उसे यह बात स्वाभाविक रूप से, बहुत कड़वी लग रही थी। उसे विश्वास था कि वह मिस्टर ऑसमण्ड को भी दुःखी नहीं देखना चाहती—उस आदमी के बारे में कल्पना दौड़ाना उसका काम नहीं था। काउंटेस से उसे निराशा हुई थी क्योंकि उस स्त्री के मन का दायरा इतना तंग होगा, यह उसने नहीं सोचा था। इसके अलावा उसमें एक भोंडापन भी था। "बेहतर यही है कि वे एक-दूसरे से प्यार करते रहें," उसने उदात्त भाव से कहा।

"ना, एक-दूसरे से प्यार वे नहीं कर सकते।"

"मुझे यही डर था। पर इससे इज़ाबेल के लिए मेरी चिन्ता बढ़ जाती है। मैं निश्चित रूप से कल जा रही हूं।"

"इज़ाबेल के भक्त बहुत हैं," काउंटेस खुलकर मुस्कराई। "मैं कह सकती हूं मुझे उस पर दया नहीं आती।"

"शायद मैं भी उसकी कुछ मदद न कर सकूं," मिस स्टैकपोल बोली—जैसे कि वह किसी भी तरह के भ्रम से अपने को बचाए रखना चाहती हो।

"पर तुम करना चाहती तो हो। यही बहुत है। शायद इसीलिए अमरीका से आई हो," काउंटेस ने सहसा कहा।

"हां, मैं उसकी देखभाल करना चाहती थी," हेनरीटा संजीदगी के साथ बोली।

काउंटेस मुस्कराती हुई उसे देखती खड़ी रही। उसकी छोटी-छोटी आंखें

चमक रही थीं, नाक उत्सुकता से कांप रही थी, और दोनों गालों पर सुर्खी दौड़ गई थी। "यह बहुत अच्छी बात है। इसीको तो न मित्रता कहते हैं।"

"क्या कहते हैं मुझे नहीं मालूम। पर मुझे लगा कि मुझे आना चाहिए।"

"उसे खुशी होनी चाहिए—वह बहुत भाग्यवान है," काउंटेस कहती रही। "उसकी चिन्ता करने वाले दूसरे लोग भी हैं। फिर वह आवेश के साथ बोली," वह मुझसे कहीं अधिक भाग्यवान है वह। मैं भी उसी की तरह दुःखी हूं। मेरा पति इतना बुरा है, ऑसमण्ड से भी बुरा। और मेरा कोई मित्र नहीं है। थे, पर वे सब अब नहीं रहे। कोई पुरुष, कोई स्त्री ऐसी नहीं जो मेरे लिए वह सब कर सके जो तुम इज़ाबेल के लिए कर रही हो।

हेनरीटा का मन छू गया। इस कड़वे उद्गार में बहुत स्वाभाविकता थी। पल-भर काउंटेस की तरफ देखती रहकर वह बोली, "देखो काउंटेस, मैं तुम्हारे लिए भी जो तुम चाहो, वह करूंगी। मैं रुक जाती हूं, और तुम्हारे साथ ही चलूंगी।"

"इसे छोड़ो," काउंटेस का स्वर सहसा बदल गया। "तुम सिर्फ पेपर में मेरा जिक्र कर देना।"

उसके पास से चलने से पहले हेनरीटा ने यह स्पष्ट कर देना उचित समझा कि वह रोम की यात्रा का किसी तरह का काल्पनिक वर्णन नहीं करेगी। मिस स्टैकपोल बहुत यथा-तथ्यवादी रिपोर्टर थी। वहां से निकलकर वह लंग आर्नो की ओर चली—पीली नदी के किनारे के उस धूप-भरे घाट की ओर जहां यात्रियों की परिचित बहुत-सी उजली-उजली सरायें एक पंक्ति में खड़ी हैं। फ्लोरेंस के रास्तों से वह पहले से परिचित थी (इन मामलों में वह बहुत तेज थी), इसलिए बहुत निश्चित चाल से वह उस छोटे-से चौराहे से बाहर पहुंच गई जिसमें से होली ट्रिनिटी के पुल को रास्ता जाता है। बायें घूमकर वह पोंटे वेशियो की तरफ आ गई और उस भव्य इमारत के सामने बने होटलों में से एक के बाहर रुक गई। यहां उसने एक छोटी-सी पाकेट बुक निकाली और उसमें से कार्ड और पेंसिल लेकर पल-भर सोचने के बाद कार्ड पर कुछ शब्द लिखे। हमें क्योंकि अधिकार है कि हम उसके कन्धों के ऊपर से झांककर देख सकें, इसलिए हम उस अधिकार का उपयोग करें, तो पढ़ सकेंगे : "एक ज़रूरी काम के लिए क्या शाम को मैं कुछ देर के लिए तुम्हें मिल सकती हूं ?" उसने यह भी लिखा कि अगले रोज़ वह रोम जा रही है।

यह दस्तावेज़ लिए वह पोर्टर के पास पहुंची जो अब दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ था। उससे उसने पूछा कि क्या मिस्टर गुडवुड अपने कमरे में है। पोर्टर ने वही उत्तर दिया जो पोर्टर हमेशा देते हैं—कि वे बीस मिनट पहले बाहर गए हैं। इस पर हेनरीटा ने कार्ड देकर कहा कि उन्हें आने पर वह दे दिया जाए। सराय से चलकर घाट के साथ-साथ वह उफिज़ी के पोर्टिको तक आ गई और वहां से होकर चित्रों की प्रसिद्ध गैलरी के बाहर पहुंच गई। अन्दर जाकर ऊंचे जीने से वह ऊपर के कक्षों में चली गई। इन कक्षों की ओर जाता लम्बा कॉरिडार जिसके एक तरफ शीशे के पर्दे हैं और जो प्राचीन आवक्ष मूर्तियों से सजा है, उस समय खाली था और सर्दी की धूप उसके मरमरी फर्श पर झिलमिला रही थी। गैलरी बहुत ठण्डी है और सर्दी में कोई ही वहां जाता है। मिस स्टैकपोल की कला-चेतना यहां हमारे अब तक के अनुभव से कहीं अधिक गहरी जान पड़ सकती है, पर आखिर उसकी कुछ अपनी रुचियां और लगाव थे। एक लगाव उसे था ट्रिब्यून के छोटे-से कोरेगियो से जिसमें कुमारी, फूस के ढेर में पड़े पवित्र शिशु के सामने घुटनों के बल बैठी ताली बजा रही है जबकि बच्चा किलकारी मारकर हंस रहा है। इस आत्मीयता-पूर्ण दृश्य पर हेनरीटा बहुत मुग्ध थी—उसके विचार में यह संसार का सबसे सुन्दर चित्र था। न्यूयार्क से रोम जाते हुए इस बार वह तीन दिन के लिए फ्लोरेंस में रुकी थी, और अपने को उसने याद दिलाया था कि ये तीन दिन बिना उस कला-कृति को फिर से देखे नहीं गुज़र जाने चाहिएं। उसका सौन्दर्य-बोध सर्वतोमुखी था, और इसमें कई बौद्धिक दायित्व आ जाते थे। वह ट्रिब्यून की तरफ मुड़ ही रही थी कि एक युवक उधर से निकलकर सामने आ गया। उसके मुंह से सहसा आश्चर्य की ध्वनि निकली क्योंकि उसने अपने को कैस्पर गुडवुड के सामने खड़े पाया।

"मैं अभी-अभी तुम्हारे होटल से होकर आई हूं," उसने कहा। "वहां मैं तुम्हारे लिए कार्ड छोड़ आई हूं।"

"मैं सम्मानित अनुभव करता हूं," कैस्पर गुडवुड ने कहा, जैसे कि वह सच-मुच ऐसा सोचता हो।

"मैं तुम्हारे सम्मान के लिए नहीं गई थी। मैं पहले भी तुमसे मिलने पहुंची हूं, और मुझे पता है तुम इसे पसन्द नहीं करते। पर मैं तुमसे थोड़ी बात करना चाहती थी।"

वह पल भर उसके हैट के बकल को देखता रहा। "जो तुम कहना चाहती हो, उसे सुनकर मुझे खुशी होगी।"

"तुम्हें मुझसे बात करना पसन्द नहीं," हेनरीटा बोली, "पर मुझे इसकी परवाह नहीं है। मुझे बात करके तुम्हारा मनोरंजन नहीं करना है। मैंने दो शब्द लिखे थे कि तुम आकर मुझसे मिल लो। पर तुम यहां मिल गए हो, तो यहीं काम निकल जाएगा।"

"मैं यहां से जा ही रहा था," गुडवुड बोला। "पर अब रुक जाऊंगा।" उसके स्वर में विनम्रता थी, उत्साह नहीं।

हेनरीटा दूसरे से ज्यादा उमंग की अपेक्षा नहीं करती थी। बात उस पर इतनी हावी थी कि वह किसी भी शर्त पर उसे कहने को तैयार थी। पर पहले उसने कैस्पर से पूछा कि उसने सब तसवीरें देख ली हैं या नहीं।

"जो देखना चाहता था देख ली हैं। मैं घण्टे भर से यहां हूं।"

"पता नहीं तुमने मेरी 'कोरेगियो' देखी है या नहीं," हेनरीटा बोली। "मैं उसीको देखने आई थी।" वह ट्रिब्यून में चली गई—पीछे, पीछे-पीछे धीमे कदमों से कैस्पर भी।

"मेरा ख्याल है मैं देख चुका हूं, पर मुझे यह नहीं पता था वह तुम्हारी है। मुझे तसवीरों की याद नहीं रहती, खासतौर से इस तरह की तसवीरों की।" हेनरीटा वह तसवीर उसे दिखा रही थी। उसने पूछा कि क्या वह उस तसवीर के बारे में ही उससे बात करना चाहती है।

"नहीं," हेनरीटा बोली। "वह विषय इतना सुखकर नहीं है।" वे एक उजले-से कमरे में अकेले थे—बहुमूल्य चित्रों से भरे उस कक्ष में सिर्फ एक पहरेदार मैडीशियन वीनस के आसपास चक्कर काट रहा था। "मैं तुमसे एक उपकार चाहती हूं," मिस स्टैकपोल ने आगे कहा।

कैस्पर गुडवुड की भवें थोड़ा तन गईं, पर उत्सुकता न दिखाने से उसने असहज महसूस नहीं किया। वह चेहरे से पहले से कहीं बड़ा नज़र आ रहा था। "कुछ ऐसी बात होगी जो मुझे अच्छी नहीं लगेगी," वह कुछ ऊंचे स्वर में बोला।

"हां अच्छी तो नहीं लगेगी। अच्छी लगने वाली बात होती, तो उसमें उपकार क्या था?"

"खैर बताओ तो सही," उसकी ध्वनि से लगता था कि उसे अपने धीरज का

अहसास है।

"तुम कहोगे कि कोई कारण नहीं है कि क्यों तुम मेरा उपकार करो। पर एक कारण है, और वह यह कि तुम चाहो, तो बदले में तुम्हारा एक उपकार कर सकती हूं।" उसके कोमल और स्थिर स्वर में प्रभाव पैदा करने का कोई प्रयत्न नहीं था, बल्कि बहुत आत्मीयता थी। बाहर से रूखापन बनाए रखने पर भी उसका साथी इससे अप्रभावित नहीं रहा। पर प्रभावित होने पर वह साधारण ढंग से इसे प्रकट नहीं होने देता था। वह न शरमाता था, न दूसरी तरफ देखता था, न अस्त-व्यस्त होता था। उलटे उसका ध्यान और केन्द्रित हो जाता था, और वह अतिरिक्त दृढ़ता से देखने लगता था। इसलिए हेनरीटा बिना उपलब्धि की चेतना के उदासीन भाव से आगे बोली, "अब वक्त है कि मैं तुम्हें बता दूं कि अगर कभी मैंने तुम्हें परेशान किया है (और मेरा ख्याल है जरूर किया है) तो इसलिए, कि मैं तुम्हारी खातिर परेशानी सह भी सकती थी। मैंने तुम्हें तकलीफ दी है जरूर, पर तुम्हारे लिए मैं तकलीफ उठा भी सकती हूं।"

गुडवुड कुछ संकोच में रहा। "तुम अब भी तकलीफ उठा रही हो।"

"हां, थोड़ी-सी। मैं चाहती हूं तुम सोच लो कि कुल मिलाकर क्या यह बेहतर नहीं कि तुम रोम चले जाओ।"

"मुझे पता था तुम यही कहोगी," वह बहुत सादगी के साथ बोला।

"तो तुमने इस पर सोचा है?"

"हां, सोचा है। बहुत ध्यान से। सब तरफ से सोचा है। वरना मैं यहां तक न आया होता। इसीलिए मैं पेरिस में दो महीने रुका रहा। मैं इस पर सोच रहा था।

"मेरा ख्याल है तुमने अपनी रुचि के कारण सोचा होगा। सोचा होगा कि तुम्हारे मन में उसके लिए आकर्षण है, इसलिए यही सबसे अच्छा है।"

"सबसे अच्छा—किसके लिए?" गुडवुड ने सवाल किया।

"सबसे पहले तुम्हारे लिए। फिर मिसेज़ ऑसमण्ड के लिए।"

"इसमें उसके लिए कुछ अच्छा नहीं है। मैं खामाखाह बनना नहीं चाहता।"

"पर सवाल है कि इससे उसकी हानि तो नहीं होगी।"

"उसे क्या फर्क पड़ता है? मिसेज़ ऑसमण्ड के लिए मेरी कोई हस्ती नहीं है। पर तुम जानना ही चाहती हो, तो मैं एक बार उससे मिलना चाहता हूं।"

"हां, और इसीलिए तुम जा रहे हो।"

"ठीक है। इससे बड़ा और क्या कारण हो सकता है ?"

"पर इससे तुम्हें हासिल क्या होगा ?" मिस स्टैकपोल बोली।

"यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता। पेरिस में मैं यही तो सोच रहा था।"

"इससे तुम और असन्तुष्ट होगे।"

" 'और' तुम कैसे कहती हो ?" गुडवुड ने कुछ सख्त स्वर में पूछा। "तुम कैसे जानती हो मैं असन्तुष्ट हूं ?"

"इसलिए, हेनरीटा कुछ संकोच के साथ बोली," कि तुम्हारा मन किसी और की तरफ नहीं गया।

"मेरे मन के बारे में तुम क्या जानती हो ?" गुडवुड सुर्ख पड़ कर बोला, "इस वक्त मेरा मन सिर्फ रोम जाने को है।"

हेनरीटा चुप रहकर उसे देखती रही। उसकी आंखों में उदासी चमक आई थी। "खैर," आखिर वह बोली, "मैं तुमसे अपने मन की बात कह देना चाहती थी। तुम समझते हो मेरा इससे कोई सरोकार नहीं, पर उस तरह तो किसी का भी किसी चीज से कोई सरोकर नहीं।"

"तुम्हारी बहुत मेहरबानी है। मैं तुम्हारी दिलचस्पी के लिए बहुत शुक्रगुजार हूं" कैस्पर गुडवुड बोला।

"मैं रोम जा रहा हूं, पर मिसेज ऑसमण्ड को कोई क्षति नहीं पहुंचाऊंगा।"

"क्षति नहीं पहुंचाओगे, पर सवाल यह हैं कि क्या उसकी सहायता कर सकोगे ?"

"उसे सहायता की आवश्यकता है ? कैस्पर ने भेदती नजर से उसे देखते हुए आहिस्ता से पूछा।

"अधिकांश स्त्रियों को रहती है," हेनरीटा ने जानबूझकर टालते हुए कहा हालांकि इस तरह बात को सामान्य धरातल पर लाने में उसे हमेशा जितनी सफलता की आशा नहीं हुई। "अगर तुम रोम जाओ," वह फिर बोली, "तो मुझे आशा है कि तुम अपने स्वार्थ में हटकर सच्ची मित्रता निभाओगे।" और मुड़कर तसवीरें देखने लगी।

कैस्पर गुडवुड उसके साथ न रहकर वहीं खड़ा उसे घूमकर तसवीरों पर नजर डालते देखता रहा। पर कुछ पल बाद वह उसके बराबर आ गया। "लगता है

तुमने उसके बारे में यहां कुछ सुना है," वह बोला, "मैं जानना चाहूंगा कि क्या सुना है।"

हेनरीटा ने ज़िन्दगी में कभी टालमटोल की बातें नहीं की थीं, और चाहे इस अवसर पर वैसा करना गलत न होता, फिर भी कुछ मिनट सोचकर उसने तय किया कि खामखाह इस अवसर को अपवाद नहीं बनाना चाहिए। "सुना तो है," उसने उत्तर दिया, "पर क्योंकि मैं नहीं चाहती कि तुम रोम जाओ, इसलिए मैं तुम्हें बताऊंगी नहीं।"

"तुम्हारी मर्ज़ी, मैं खुद देख लूंगा," वह बोला। फिर अपने स्वभाव के प्रतिकूल उसने कहा, "तुमने सुना है कि वह सुखी नहीं है!"

"तुम जाकर यह नहीं देखोगे।"

"शायद नहीं। तुम कब जा रही हो?"

"कल शाम की गाड़ी से। और तुम?"

गुडवुड कुछ देर चुप रहा। वह मिस स्टैकपोल के साथ रोम की यात्रा नहीं करना चाहता था। इस विषय में उसकी उदासीनता गिलबर्ट ऑसमण्ड जैसी न होकर भी उतनी ही स्पष्ट थी। उस उदासीनता का सम्बन्ध मिस स्टैकपोल के दोषों से न होकर उसकी विशेषताओं से ही था। वह उसे बहुत विशिष्ट और प्रतिभावान् स्त्री समझता था और सिद्धान्त रूप में उसे उस वर्ग से भी चिढ़ नहीं थी जिससे वह थी। उसका ख्याल था कि स्त्री संवाददाता एक प्रगतिशील देश की योजना का स्वाभाविक अंग है। वह उनके लिखे पत्र नहीं पढ़ता था, पर उसका विचार था कि उनका देश की समृद्धि में अपना योग है। पर उनकी स्थिति महत्त्वपूर्ण समझने के कारण ही वह सोचता था कि मिस स्टैकपोल को हर चीज़ को पहले से निश्चित मानकर नहीं चलना चाहिए। वह यह निश्चित समझती था कि वह हर समय मिसेज ऑसमण्ड के बारे में बात करने को तैयार होगा। उसके यूरोप आने के छः सप्ताह बाद वह पेरिस में उससे मिली थी, तो उसने इसी तरह उससे बात की थी, और उसके बाद भी हर मौके पर इसी तरह बात करती रही थी। वह मिसेज़ ऑसमण्ड के बारे में बिलकुल बात नहीं करना चाहता था—उसे पक्का विश्वास था कि वह हर समय उसीके बारे में नहीं सोचता। वह बहुत संयत और मितभाषी व्यक्ति था, और यह कुरेदने वाली लेखिका उसकी आत्मा के खामोश अंधेरे में हमेशा अपनी लालटेन लेकर झांकने लगती थी। मिस स्टैकपोल की इतनी दिलचस्पी उसे पसन्द नहीं थी,

बल्कि कभी-कभी तो वह निष्ठुर भाव से यह भी सोचता था कि वह उसे अकेला छोड़ दे तो, बेहतर है। इसके अलावा इस समय वह कुछ और भी सोच रहा था जिससे पता चल सकता है कि उसकी कुढ़न गिलबर्ट ऑसमण्ड से कितनी अलग थी। वह उस समय तुरन्त रोम जाना चाहता था, पर अकेला और रात की गाड़ी से। उसे यूरोप की रेलगाड़ियों से नफरत थी। उनमें आदमी को घण्टों किसी विदेशी के घुटने से घुटना और नाक से नाक मिलाये बैठे रहना पड़ता था—चाहे उस आदमी से अपने को कितनी घिन आये और मन यही करता रहे कि किसी तरह खिड़की खोली जा सके। रात को गाड़ियों की हालत हालांकि दिन से भी बदतर होती थी, पर रात को आदमी नींद में अमरीका की सैलून कार का सपना तो देख सकता था। पर वह रात की गाड़ी नहीं ले सकता था क्योंकि मिस स्टैकपोल दिन में चल रही थी—ऐसा करना एक अकेली स्त्री का अपमान होता। न ही वह उसके जाने के बाद तक रुका रह सकता था क्योंकि उस हालत में जितना रुकना पड़ता, उतने के लिए उस में धीरज नहीं था। तब वह अगले रोज भी नहीं चल सकता था। वह इससे चिन्तित था, व्यग्र था, और एक यूरोपियन रेलगाड़ी में मिस स्टैकपोल के साथ दिन बिताने के विचार से ही उसे इन्तिहा की कोफ्त हो रही थी। पर वह अकेली सफर कर रही थी, इसलिए उसका साथ देना उसका कर्त्तव्य था। यह अनिवार्यता इतनी स्पष्ट थी कि इसके बारे में कोई सवाल नहीं हो सकता था। कुछ देर काफी संजीदा रहने के बाद उसने बहुत स्पष्ट स्वर में, पर बिना पौरुष के ज़रा भी स्पर्श के कहा, "तुम कल चल रही हो तो मैं भी चल पड़ूंगा। हो सकता है साथ में रहकर मैं कुछ सहायता कर सकूं।"

"हां, मुझे भी ऐसा लगता है, मिस्टर गुडवुड," हेनरीटा अविचलित भाव से बोली।

४५

पहले यह बताने का अवसर आ चुका है कि इज़ाबेल जानती थी रैल्फ के बार-बार रोम आने से ऑसमण्ड खुश नहीं है। जिस दिन उसने लार्ड वारबर्टन को अपने

सद्भाव का ठोस प्रमाण देने के लिए बुलाया था, उससे अगले रोज़ अपने कज़िन के होटल की तरफ जाते हुए भी यह बात उसके मन में स्पष्ट थी—उसे काफी हद तक पता था कि ऑसमण्ड के विरोध के कारण क्या हैं। वह उसे ज़रा भी मानसिक स्वतन्त्रता नहीं देना चाहत था और जानता था कि रैल्फ इस तरह की स्वन्त्रता का बहुत हामी है। क्योंकि ऐसा था, इसीलिए इज़ाबेल को रैल्फ से जाकर मिलने में एक ताज़गी महसूस हो रही थी। अपने पति के विरोध के बावजूद वह इस ताज़गी का उपभोग करती थी, हालांकि अपने को विश्वास दिलाकर कि वह विवेकहीन ढंग से ऐसा नहीं करती। अब तक उसने कभी सीधे ऑसमण्ड की इच्छाओं का विरोध नहीं किया था—धर्म और कानून से वह उसका स्वामी था। कभी-कभी इस वास्तविकता के विषय में सोचते हुए वह एक अविश्वसनीय शून्य में घिर जाती थी। उसके मन पर इसका बहुत बोझ पड़ता था क्योंकि विवाह के परम्परागत आचार और पवित्रता की बात वह मन से निकाल नहीं पाती थी। उनका उल्लंघन करने के विचार से ही उसका मन भय और लज्जा से भर जाता था। एक बार आत्म-समर्पण कर चुकने के बाद यह सम्भावना ही उसने मन से निकाल दी थी क्योंकि उसे पूरा विश्वास था कि उसके पति की भी इस सम्बन्ध में वैसी ही नेक धारणाएं है जैसी उसकी अपनी। फिर भी उसे लगता था कि वह दिन दूर नहीं जब उसे वह सब कुछ लौटा लेना पड़ेगा जो उसने इतने उदात्त भाव से दिया था। ऐसी परिस्थिति बहुत नृशंस और जुगुप्सात्मक होगी, इसलिए वह उससे आंखें मूंदे रहना चाहती थी। ऑसमण्ड अपनी तरफ से कभी शुरूआत नहीं करेगा। अन्त तक इसका बोझ उस पर डाले रहेगा। अब तक ऑसमण्ड ने स्पष्ट शब्दों में उसके रैल्फ से मिलने पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया था, पर वह जानती थी कि रैल्फ जल्दी ही वहां से चला न गया, तो यह प्रतिबन्ध लग जाएगा। पर बेचारा रैल्फ जाएगा कैसे ? इस मौसम में तो यह सम्भव ही नहीं था। वह ऑसमण्ड की इच्छा को अच्छी तरह समझ सकती थी—सोचती थी कि वह जो उसका रैल्फ से मिलना बरदाश्त नही कर सकता, इसमें उसकी दृष्टि से गलत भी क्या है ? रैल्फ ऑस-मण्ड के खिलाफ कभी एक शब्द भी नहीं कहता था, पर ऑसमण्ड का खामोश कुढ़न-भरा विरोध फिर भी निराधार नहीं था। अगर ऑसमण्ड खुलकर बीच में पड़ता और अपने अधिकार का प्रयोग करता, तो उसे निर्णय लेना पड़ता जो कि आसान नहीं था। इस सम्भावना से ही उसका दिल धड़कने लगता और गाल सुर्ख

हो जाते, और मैं पहले से ही कह दूं कि किन्हीं क्षणों में वह यह भी सोचती कि रैल्फ खतरा उठाकर भी चला जाय तो बेहतर है। अपने को ऐसा सोचते पाकर उसे अपना अन्तर्मन दुर्बल लगता और वह अपने को कायर समझती, पर उससे कुछ होता नहीं। यह नहीं कि उसे रैल्फ से प्रेम कम था, पर एक गम्भीर कार्य को—अपने जीवन के एक मात्र पवित्र कार्य को—गलत करने की अपेक्षा और कुछ भी उसे बेहतर जान पड़ता था। उससे सारे बवण्डर में एक जुगुप्सा भर जाती थी। एक बार ऑसमण्ड से टूटने का अर्थ था हमेशा के लिए टूटना—परस्पर विरोधी अपेक्षाओं की खुली-स्वीकृति का अर्थ था यह मानना कि उनका सारा प्रयत्न निष्फल रहा है। उसके बाद उनके बीच क्षति-पूर्ति कभी नहीं होगी, न समझौता, न क्षमा, न औपचारिक सम्बन्ध-निर्वाह। उन्होंने केवल एक ही चीज़ के लिए प्रयत्न किया था, और वह यदि हो पाती, तो अद्भुत होती है। उसे खोने के बाद और कुछ नहीं रह जाएगा—उस सफलता का स्थान और कोई चीज़ ले सकती है, यह सोचा भी नहीं जा सकता था। फिलहाल इज़ाबेल जितनी बार ठीक लगता, उतनी बार होटेल डि पेरिस चली जाती थी—इसके औचित्य का मान उसकी रुचि से निर्धारित होता था। नैतिकता एक आन्तरिक वृत्ति है, इसका इससे बड़ा कोई प्रमाण नहीं हो सकता था। आज इज़ाबेल विशेष उन्मुक्त भाव से इस मान का प्रयोग कर रही थी। इसका एक सामान्य कारण यह तो था ही कि वह रैल्फ को अकेला मरने के लिए नहीं छोड़ सकती थी, पर साथ ही उसे उससे कुछ खास बात पूछनी भी थी। उस बात का सम्बन्ध जितना गिलबर्ट से था, उतना ही उसके अपने आप से।

बहुत शीघ्र ही वह अपनी बात पर आ गई। "मैं तुमसे एक सवाल का जवाब चाहती हूं। सवाल लार्ड वारबर्टन के बारे में है।"

"मैं सवाल का अंदाज़ा लगा सकता हूं," रैल्फ अपनी आराम कुर्सी पर से बोला। उसकी पतली टांगें पहले से कहीं ज़्यादा कुर्सी से बाहर फैली थीं।

"बहुत सम्भव है तुम अंदाज़ा लगा सकते हो। तो मुझे उसका जवाब दो।"

"यह मैंने नहीं कहा कि मैं जवाब दे सकता हूं।"

"तुम्हारी उससे घनिष्ठता है," वह बोली, "तुम उसे बहुत पास से जानते हो।

"यह सच है। पर सोचो न वह कितना अपने को छिपाता है।"

"पर क्यों छिपाता है? यह उसका स्वभाव नहीं है।"

"यह मत भूलो कि हालात ही कुछ ऐसे हैं," रैल्फ अपने तक सीमित विनोद के भाव से बोला।

"कुछ हद तक यह सही है। पर क्या वह सचमुच प्रेम करता है ?"

"बहुत ज़्यादा। इतना मैं कह सकता हूं।"

"ओह।" इज़ाबेल ने कुछ रूखेपन से कहा।

रैल्फ इस तरह उसे देखता रहा जैसे उसके विनोद में एक रहस्यमयता आ गई हो। "तुम ऐसे कह रही हो जैसे तुम्हें निराशा हुई हो।"

इज़ाबेल अपने दस्तानों पर नज़र गड़ाये, उन पर हाथ फेरती उठ खड़ी हुई। "आखिर मेरा इससे क्या सरोकार है ?"

"बहुत दार्शनिक हो रही हो," उसके कज़िन ने कहा। फिर पल-भर बाद पूछा, "मैं जान सकता हूं तुम क्या बात कर रही थीं ?"

इज़ाबेल उसे ताकती रही। "मेरा ख्याल था तुम्हें पता है। लार्ड वारबर्टन ने मुझसे कहा है···कहा है कि वह पैंज़ी से शादी करना चाहता है। मैं यह पहले भी तुम्हें बता चुकी हूं, पर तुमने इस पर कुछ कहा नहीं था। आज तुम्हें कहना होगा। तुम्हें विश्वास है कि वह उसे चाहता हैं ?"

"नहीं, पैंजी को वह नहीं चाहता," रैल्फ निश्चित स्वर में बोला।

"पर तुमने अभी-अभी कहा था कि चाहता है।"

"मैंने कहा था कि वह तुम्हें चाहता है, मिसेज़ ऑसमण्ड।" रैल्फ पल-भर चुप रहने के बाद बोला।

इजाबेल ने संजीदगी से सिर हिलाया। "तुम जानते हो यह बेवकूफी की बात है।"

"हां, हैं। पर बेवकूफी लार्ड वारबर्टन की है, मेरी नहीं।"

"इससे तो बड़ी उलझन होगी," इज़ाबेल ने कुछ सूक्ष्म गुमान के साथ कहा।

"पर मैं तुम्हें यह भी बता दूं," रैल्फ बोला, "कि मेरे सामने वह इससे इन्कार करता है।"

"तुम्हारी बड़ी मेहरबानी है कि दोनों बातें एक-साथ बता रहे हो। उसने तुमसे यह भी कहा है कि वह पैंजी से प्यार करता है ?"

"वह उसके बारे में बहुत अच्छी बातें कहता है, और बहुत अच्छे ढंग से। उसने इतना जरूर मुझसे कहा है कि पैंज़ी लोकले में अच्छी तरह खप जाएगी।"

"वह सचमुच ऐसा समझता है ?"

"ओह, वारबर्टन सचमुच जो भी समझता है…।" रैल्फ बोला।

इज़ाबेल फिर अपने दस्तानों पर हाथ फेरने लगी। दस्ताने काफी लम्बे और ढीले थे जिन पर हाथ फेरने की काफी गुंजाइश थी। पर शीघ्र ही उसने आंखें ऊपर उठाईं और एकाएक आवेश के साथ कहा," "रैल्फ, तुम बिलकुल मेरी सहायता नहीं कर रहे।"

सहायता की बात उसने पहली बार कही थी—और उन शब्दों के आवेश ने रैल्फ को हिला दिया। वह आश्वासन, दया और कोमलता के स्वर में कुछ बुदबुदाया—उसे लगा जैसे उन दोनों के बीच की खाई अब भर गई हो। इसी से अगले क्षण वह बोल उठा, "तुम सच कितनी दुःखी हो !"

पर उसके यह कहने तक इज़ाबेल ने अपने को संभाल लिया, और इससे सब से पहले यह बहाना किया कि उसने उसकी बात सुनीं ही नही। "तुम से सहायता के लिए कहना मेरी बहुत बड़ी मूर्खता है," वह झट-से मुस्कराकर बोली, "क्यों मैं ये अपने घर के झंझट तुम पर डाल रही हूं ! बात सीधी-सी है। लार्ड वारबर्टन को अपना रास्ता खुद बनाना होगा। मैं उसे पार नहीं पहुंचा सकती।"

"उसे सफलता आसानी से मिल जाएगी," रैल्फ बोला।

इज़ाबेल ने तर्क किया, "हां, पर उसे हमेशा सफलता नहीं मिली।"

"यह सच है। पर तुम जानती हो मुझे उससे कितना आश्चर्य हुआ था। क्या मिस ऑसमण्ड ऐसी है कि इस तरह के आश्चर्य का अवसर आने दे ?"

"यह अवसर बल्कि वारबर्टन की ओर से आएगा। मुझे लगता है कि वह बात को आखिर सिरे नहीं चढ़ने देगा।"

"वह कोई असम्मान-जनक कार्य नहीं करेगा," रैल्फ बोला।

"मुझे इसका विश्वास है। उसके लिए इससे अधिक सम्मान-जनक कुछ नहीं होगा कि वह इस बेचारी बच्ची को अपनी जगह पर रहने दे। वह किसी और को चाहती है और यह एक क्रूर कार्य होगा कि उससे उसका मन हटाने के लिए बड़े-बड़े प्रलोभन देकर उसकी कल्पना को फुसलाया जाय।"

"क्रूर उस दूसरे व्यक्ति के लिए होगा जिसे वह चाहती है। वारबर्टन उस व्यक्ति की चिन्ता क्यों करे ?"

"नहीं क्रूर यह पैंज़ी के लिए है। अगर बेचारे मिस्टर रोज़ियर को छोड़ देने

के लिए उसने अपने को तैयार कर लिया, तो बहुत दुःखी होगी। तुम्हें उस आदमी से प्यार नहीं, इसलिए तुम्हें बात मनोरंजक लग रही होगी। पर पैंज़ी की दृष्टि से उस आदमी में एक विशेषता है और वह यह कि वह उससे प्यार करता है। यह बात पैंज़ी पहली नज़र में जान सकती है कि लार्ड वारबर्टन उससे प्यार नहीं करता।"

"वह उससे बहुत अच्छा व्यवहार करेगा," रैल्फ बोला।

"अच्छा व्यवहार तो वह अब भी करता है। सौभाग्य से अब तक उसने पैंज़ी से कुछ ऐसा नहीं कहा जिससे वह अव्यवस्थित हो उठे। वह कल सुबह आकर बहुत शालीनता से उससे गुडबाई कह सकता है।"

"तुम्हारे पति को यह सम्बन्ध कैसा लगेगा?"

"बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा। और अच्छा न लगे, यह ठीक भी है। वह इस मामले में अपनी तसल्ली चाहता है।"

"और तसल्ली के लिए उसने तुम्हें भेजा है?" रैल्फ ने पूछ लिया।

"मैं गिलबर्ट के पहले से वारबर्टन का मित्र हूं। इसलिए मेरा वारबर्टन के इरादों में दिलचस्पी लेना स्वाभाविक है।"

"यह दिलचस्पी कि वह उन इरादों को छोड़ दे?"

इज़ाबेल भौंहें चढ़ाए पल-भर संकोच में रही। "मुझे बात समझने दो। तुम उसकी वकालत कर रहे हो?"

"हरगिज़ नहीं। वह तुम्हारी सौतेली लड़की से शादी न करे, तो मुझे खुशी होगी। वैसा करने पर तुम्हारे साथ उसका बहुत विचित्र-सा सम्बन्ध हो जाएगा।" रैल्फ मुस्कराकर बोला, "पर मुझे डर तो यह है कि कहीं तुम्हारा पति यह न समझे कि तुमने वारबर्टन को काफी हद तक परे नहीं हटाया।"

इस पर इज़ाबेल भी उसी की तरह मुस्करा दी। "वह मुझे इतना जानता है कि मुझसे इस तरह की आशा नहीं करेगा। और मैं समझती हूं कि उसका अपना भी ऐसा कोई इरादा नहीं है। मैं अपनी जगह पर सही नहीं रहूंगी, ऐसी मुझे कोई आशंका भी नहीं है।" उसने हल्के मन से कहा।

उसका नकाब क्षण-भर के लिए गिर गया था, पर तुरन्त ही उसने उसे फिर चढ़ा लिया था जिससे रैल्फ को काफी निराशा हुई। उसे उसके स्वाभाविक चेहरे की एक झलक दिखाई दे गई थी और वह चाहता था उस चेहरे के अन्दर भी झांक-

कर देख सके। इसके मन में एक पाशविक-सी इच्छा पैदा हुई थी कि इज़ाबेल को अपने पति की शिकायत करते सुने—यह कहते कि वारबर्टन के अपने से टूटने के लिए वह खुद ज़िम्मेदार है। रैल्फ निश्चित रूप से जानता था कि स्थिति यही है और उसे जैसे पहले से ही पता था कि ऐसी स्थिति में ऑसमण्ड का रोष क्या रूप ले सकता है। वह इज़ाबेल को इसकी चेतावनी देना चाहता था—उसे बताना चाहता था कि वह कहां तक स्थिति को जानता है, और कैसे उसकी दृष्टि से सोच सकता है। यह बात और थी कि इज़ाबेल उससे कहीं ज़्यादा जानती थी—वह इज़ाबेल से ज़्यादा अपनी तसल्ली के लिए उसे बताना चाहता था कि कुछ भी उससे छिपा नहीं है। वह बार-बार कोशिश करता रहा था कि इज़ाबेल ऑसमण्ड के प्रति वफादार न रहे—उसमें उसका भाव बहुत तटस्थ, क्रूर और काफी हद तक निन्दनीय था। पर इससे फर्क नहीं पड़ता था क्योंकि उसे सफलता नहीं मिली थी। वह आखिर आई क्यों थी, और क्यों यह लग रहा था कि वह उसे दोनों के बीच की अनकही स्वीकृति को तोड़ने का अवसर देना चाहती है ? वह उसे उत्तर देने की स्वतन्त्रता नहीं देना चाहती, तो उससे सलाह क्यों मांगती है ? जिन्हें वह हंसी में अपनी घरेलू उलझनें कहती है, उनके बारे में वे बात कैसे कर सकते हैं जबकि प्रधान कारण की वह चर्चा ही नहीं करना चाहती ? ये परस्पर विरोधी बातें अपने में ही विपत्ति का संकेत थी—इसलिए पहले उसने जो सहायता की याचना की थी, केवल उसी को ध्यान में रखना आवश्यक था। "फिर भी तुम लोगों में मतभेद तो होगा ही," उसने पल-भर बाद कहा। वह उत्तर न देकर ऐसे उसे देखती रही जैसे उसकी बात समझ न पाई हो, तो वह बोला, "तुम पाओगी कि तुम लोग अलग-अलग तरह से सोचते हो।"

"यह बात तो बहुत घुले-मिले दम्पतियों के लिए भी सच हो सकती है।" इज़ाबेल ने अपनी छतरी उठा ली। रैल्फ देख रहा था कि वह अव्यवस्थित हो रही है, डर रही है कि वह जाने उससे क्या कह दे। "पर इस मामले में हमारे झगड़े की कोई सम्भावना नहीं है," वह बोली। "क्योंकि इसमें सारी दिलचस्पी उसी की है। और यह स्वाभाविक भी है। पैंज़ी आखिर उसकी लड़की है, मेरी नहीं।" और 'गुडबाई' कहने के लिए उसने अपना हाथ बढ़ा दिया।

रैल्फ ने मन ही मन निश्चय कर लिया कि वह उसे बिना यह बताए नहीं जाने देगा कि वह सब जानता है। यह इतना बड़ा अवसर वह खोना नहीं चाहता

था, "तुम्हें पता है ऑसमण्ड की दिलचस्पी क्या कहने में होगी ?" वह उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोला, "यह कि तुम ईर्ष्या के कारण इस चीज़ के लिए उत्साहित नहीं हो।" वह रुक गया। इज़ाबेल के भाव ने उसे आशंकित कर दिया था।

"ईर्ष्या के कारण ?"

"उसकी लड़की से ईर्ष्या रखने के कारण।"

इज़ाबेल सुर्ख हो उठी, और उसने सिर पीछे को कर लिया। "तुम अच्छे नहीं हो," उसने ऐसे स्वर में कहा जो रैल्फ ने उसके होंठों से पहले कभी नहीं सुना था।

"तुम मुझसे खुलकर बात करो, तो तुम्हें पता चल जाएगा," रैल्फ ने उत्तर दिया।

पर वह चुप रही—केवल उसने अपना हाथ रैल्फ के हाथ से छुड़ा लिया, हालांकि रैल्फ ने उसे पकड़े रहने की कोशिश की। फिर जल्दी से वह कमरे से निकल गई। उसने तय किया कि वह पैंज़ी से बात करेगी, और इस उद्देश्य से वह उसी दिन डिनर से पहले उसके कमरे में गई। पैंज़ी तैयार हो गई थी—हमेशा समय से पहले तैयार हो जाती थी। इससे पता चलता था कि वह कितते अच्छे धीरज और कितनी सुन्दर खामोशी के साथ बैठकर इन्तज़ार कर सकती है। उस समय वह अपनी नई पोशाक पहने बैडरूम की अंगीठी के पास बैठी थी। बचपन से ही उसने जो कम-खर्ची की आदतें सीखी थीं, उनके अनुसार उसने तैयार होने के बाद कमरे की मोमबत्तियां बुझा दी थीं। अब वह उन आदतों का पालन पहले से ज़्यादा सावधानी के साथ करती थी। कमरे में केवल दो जलती लकड़ियों की रोशनी थी। पालाज़ो रोकानेरा में कमरे जितने ज़्यादा थे, उतने ही बड़े-बड़े भी थे, और पैंज़ी का कौमार्य-आवास एक बड़ा-सा कमरा था जिसकी कामदार छत स्याह और भारी लकड़ी की थी। उसके बीच बैठी उसकी छोटी-सी मालकिन मानवता के एक बिन्दु की तरह लग रही थी। इज़ाबेल को देखते ही वह झट आदर भाव से उसका स्वागत करने उठी। इज़ाबेल को पहले से कहीं ज़्यादा महसूस हुआ कि उसमें कितना संकोच और सहृदयता है। इज़ाबेल का कार्य कठिन था, और उसे उचित यही लग रहा था कि उसे यथासम्भव सादगी के साथ सम्पन्न किया जाए। उसके मन में गुस्सा और कड़ुआहट थी, पर उसने अपने को सावधान कर

रखा था कि उसे यह जाहिर नहीं होने देना है। वह यह भी नहीं चाहती थी कि वह ज्यादा गम्भीर या सख्त नजर आए जिससे कि लड़की आशंकित हो उठे। पर पैंजी को जैसे पता चल गया था कि वह उसके सामने कुछ स्वीकार करने आई है —क्योंकि जिस कुर्सी पर वह बैठी थी उसे उसने आग के थोड़ा और पास को सरका दिया और इज़ाबेल उसपर उसकी जगह बैठ गई। वह स्वयं उसके सामने एक गद्दे पर घुटनों के बल बैठ गई। अपनी सौतेली मां के चेहरे की तरफ देखते हुए उसने अपने हाथ उसके घुटनों पर रख दिए। इज़ाबेल की इच्छा थी कि वह स्वयं पैंज़ी के मुंह से सुन सके कि इसका मन लार्ड वारबर्टन में नहीं खोया है। पर यह विश्वास चाहते हुए भी वह अपने को उसे उकसाने का अधिकार नहीं देना चाहती थी। लड़की का पिता इसे परले सिरे का द्रोह समझता, इसलिए इज़ाबेल सोचे हुए थी कि पैंज़ी के मन में लार्ड वारबर्टन को प्रोत्साहित करने की इच्छा लेशमात्र भी नज़र आई, तो वह खामोश रहेगी। बिना अपनी तरफ से कुछ कहे सवाल पूछना मुश्किल काम था। पैंज़ी इतनी सादा और इज़ाबेल के अनुमान से भी इतनी ज्यादा भोली थी कि बहुत अनिश्चित-सा सवाल भी उसे डांट की तरह लग सकता था। वह जिस तरह अपनी सुन्दर और हल्के-से चमकती पोशाक में वहां आग की धुंधली रोशनी में घुटने टेके बैठी थी, जिस तरह उसके हाथ कुछ याचना और कुछ समर्पण के भाव से जुड़े थे, जिस तरह उसकी कोमल आंखें स्थिति की गम्भीरता को अपने में समेटे स्थिर भाव से उठी हुई थीं, उससे इज़ाबेल को लग रहा था जैसे वह बलिदान के लिए सजाई गई एक शहीद होने वाली बच्ची हो जिसके मन में अपने भाग्य से बचने की ज़रा-सी भी आशा न हो। इज़ाबेल ने उससे कहा कि आज तक उसने उससे इस विषय में बात नहीं की कि अपने विवाह के सम्बन्ध में वह क्या सोच रही है, पर इसका कारण उसकी उदासीनता या गैर-जानकारी नहीं है। वह केवल इस विषय में उसे स्वतन्त्र रहने देना चाहती थी। इस पर पैंज़ी आगे झुककर अपना चेहरा उसके और पास ले आई और बुदबुदाकर गहरी उत्सुकता के स्वर में बोली कि उसका बहुत मन था कि कभी उससे बात करें, और कि उसकी प्रार्थना है कि वे अब उसे इस सम्बन्ध में राय दें।

"राय देना मेरे लिए मुश्किल है," इज़ाबेल बोली। "यह मैं नहीं कर सकती। यह काम तुम्हारे पिता का है। तुम्हें उनसे राय लेनी चाहिए और उसीके मुताबिक काम करना चाहिए।"

इस पर पैंज़ी की आंखें झुक गईं, और पल-भर वह कुछ नहीं कह सकी। फिर बोली, "पापा से ज़्यादा मैं आपकी राय लेना चाहूंगी।"

"यह ठीक नहीं," इज़ाबेल ठण्डे स्वर में बोली। "मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं, पर तुम्हारे पापा तुम्हें और ज़्यादा प्यार करते हैं।"

"प्यार करने की बात नहीं। आप स्त्री हैं, इसलिए कह रही हूं," पैंज़ी पते की बात कहने के स्वर में बोली, "एक लड़की को एक पुरुष की अपेक्षा एक स्त्री से ज़्यादा अच्छी राय मिल सकती है।"

"तो मेरी राय यही है कि तुम्हें सबसे ज़्यादा अपने पिता की राय की कद्र करनी चाहिए।"

"हां, हां," बच्ची उत्सुकता से बोली, "वह तो मुझे करनी ही चाहिए।"

"पर मैं इस वक्त जो तुम्हारे ब्याह की बात कर रही हूं, वह तुम्हारे लिहाज़ से नहीं, अपने लिहाज़ से कर रही हूं," इज़ाबेल बोली। "मुझे तुमसे पता चल जाए कि तुम क्या चाहती हो और क्या आशा करती हो तो मैं उसीके अनुसार चल सकूंगी।"

पैंज़ी कुछ देर उसे ताकती रही। फिर एकाएक उसने पूछ लिया, "मैं जो भी चाहूंगी, आप कर देंगी ?"

"हां, कहने से पहले मुझे पता चलना चाहिए कि तुम क्या चाहती हो।"

इस पर पैंज़ी ने कहा कि उसकी एकमात्र इच्छा यह है कि वह मिस्टर रोज़ियर से ब्याह कर सके। मिस्टर रोज़ियर ने उससे पूछा था और उसनेकहा था कि उसके पापा राज़ी हों, तो वह ज़रूर कर लेगी। पर पापा नहीं मानते।

"ठीक है। तब वह सम्भव नहीं है," इज़ाबेल ने कहा।

"हां, सम्भव नहीं है," पैंज़ी ने कोई उसांस नहीं भरी और उसके छोटे-से चमकते चेहरे पर वही सजगता का भाव बना रहा।

"तब तुम्हें कुछ और सोचना चाहिए," इज़ाबेल बोली। इस पर पैंज़ी ने उसांस भरी और कहा कि यह भी साहस उसने किया था, पर इसमें उसे सफलता नहीं मिली।

"आदमी उसीको तो चाहता है जो उसे चाहे," वह फीकी मुस्कराहट के साथ बोली, "मुझे पता है मिस्टर रोज़ियर मुझे चाहता है।"

"उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए," इज़ाबेल ने ऊंचे से कहा, "तुम्हारे पिता ने

उसे साफ मना किया है।"

"उसका बस नहीं है। वह जानता है मैं भी उसे चाहती हूं।"

"तुम्हें तो बिलकुल ऐसा नहीं करना चाहिए। उसके चाहने का तो कारण हो सकता है, तुम्हारे चाहने का कोई कारण नहीं है।"

"चाहती हूं आप मेरे लिए कोई कारण ढूंढ़ दें," लड़की ने उस तरह कहा जैसे वह मैडोना के आगे प्रार्थना कर रही हो।

"ऐसा करने से मुझे अफसोस होगा," मैडोना उसी ठण्डे लहजे में बोली। तुम्हें पता चले कि कोई और तुम्हें चाहता है, तो तुम उसे चाहने लगोगी?"

"कोई और मुझे इतना नहीं चाह सकता जितना मिस्टर रोज़ियर चाहता है। किसी और को इसका हक ही नहीं है।"

"पर मैं मिस्टर रोज़ियर का हक स्वीकार नहीं करती," इज़ाबेल शान के साथ बोली।

पैंज़ी शशोपंज में पड़कर उसे देखती रही। इज़ाबेल इसका लाभ उठाकर उसे बताने लगी कि वह अपने पिता की बात नहीं मानेगी, तो कितना बुरा होगा। इस पर पैंज़ी ने उसे टोका कि वह ऐसा कभी नहीं करेगी—अपने पिता की अनुमति के बिना किसी से शादी नहीं करेगी। साथ ही उसने बहुत सादगी और गम्भीरता के साथ कहा कि वह मिस्टर रोज़ियर से शादी न भी कर सके, तो उसे चाहने से अपने को नहीं रोक सकेगी। लगता था उसने हमेशा के लिए क्वांरी रहने की बात मन में स्वीकार कर ली है।—पर इज़ाबेल यह सोचने के लिए स्वतन्त्र थी कि लड़की को इस चीज़ के अर्थ का कुछ पता नहीं है। थी वह बहुत साफ—अपने प्रेमी को वह छोड़ने को तैयार थी। इस महत्त्वपूर्ण कदम के बाद दूसरे की आशा की जा सकती थी, पर पैंज़ी के लिए उस दिशा में जाना सम्भव नहीं हुआ था। उसके मन में कोई कटुता नही थी, अपने पिता के लिए ज़रा भी कटुता नहीं थी, थी केवल एडवर्ड रोज़ियर के प्रति अपने लगाव की मधुरता, और एक विचित्र-सी उदात्त अनुभूति कि उस आदमी से विवाह करने की अपेक्षा अकेली रहकर वह अपनी भावना को अधिक प्रमाणित कर सकती है।

"तुम्हारे पिता चाहेंगे कि तुम किसी अधिक सम्पन्न घर में ब्याह करो," इज़ाबेल बोली, "मिस्टर रोज़ियर के पास बहुत अधिक सम्पत्ति नहीं है।"

"अधिक सम्पन्न से क्या मतलब है? क्या सिर्फ इतने से काम चल जाएगा?

मेरे पास इतना थोड़ा धन है, तो मैं दूसरे के पास बहुत बड़ी सम्पत्ति की चाह क्यों करूं ?"

"तुम्हारे पास थोड़ा धन होना ही इसका कारण है कि तुम अधिक की चाह करो," यह कहते हुए इज़ाबेल को अच्छा लगा कि कमरे में रोशनी कम है।—उसे महसूस हो रहा था कि उसके चेहरे पर कपट की भयानक छाया है। वह ऑसमण्ड के लिए यह सब कर रही थी—उसे ऑसमण्ड के लिए यह करना ही था। पैंज़ी की निश्छल आंखें स्थिर भाव से उसकी आंखों में देखती हुई, उसे लगभग अव्यवस्थित कर रही थीं। उसे शरम आ रही थी कि लड़की की चाह को वह कैसे बातों में उड़ा रही है।

"आप क्या सोचती हैं मुझे क्या करना चाहिए ?" लड़की ने कोमल स्वर में पूछा।

सवाल बहुत बड़ा था। इज़ाबेल साहसहीन अस्पष्टता का आश्रय लेकर बोली, "बस तुम्हें याद रखना चाहिए कि तुम कहां तक अपने पिता को सुख पहुंचा सकती हो।"

"मतलब वे किसी और से ब्याह करने को कहें तो कर लूं ?"

पल-भर इज़ाबेल का उत्तर जैसे रुका रहा। फिर पैंज़ी के ध्यान से पैदा हुई निःस्तब्धता में उसे अपनी आवाज़ सुनाई दी, "हां, किसी और से कर लो।"

लड़की की आंखों में पहले से ज़्यादा चुभन भर गई। इज़ाबेल को लगा कि वह उसकी सचाई पर सन्देह कर रही है। यह धारणा इससे और भी पुष्ट हुई कि पैंज़ी धीरे से अपने गद्दे से उठ खड़ी हुई। अपने छोटे-छोटे हाथों को खुले रखकर वह पल-भर खड़ी रही, फिर कांपती आवाज़ में बोली, "मेरा ख्याल है और कोई मुझसे प्रस्ताव नहीं करेगा।"

"यह सवाल उठ चुका है। कोई और भी तुमसे प्रस्ताव करने को तैयार था।"

"तैयार था, ऐसा मुझे नहीं लगता," पैंज़ी ने कहा।

"उसे अपनी सफलता का विश्वास होता, तो इसकी नौबत आ जाती।"

"उसे विश्वास होता तो ? तब तो वह तैयार नहीं ही था।"

इज़ाबेल को यह बात ज़रा तेज लगी। वह भी उठ खड़ी हुई और पल-भर आग की तरफ देखती रही। फिर उसने कहा, "लार्ड वारबर्टन तुम्हारी तरफ बहुत ध्यान देता रहा है। तुम जानती हो मैं उसीकी बात कर रही हूं।" अपनी आशा

के विपरीत उसे लग रहा था कि वह ऐसी स्थिति में पड़ गई है जहां उसे अपनी सफाई देनी है। इसलिए लार्ड वारबर्टन का ज़िक्र उसे इस भोंडेपन से करना पड़ा, जो कि उसका इरादा नहीं था।

"उसका मुझसे व्यवहार बहुत अच्छा रहा है, और मुझे वह बहुत पसन्द भी है। पर अगर आपका ख्याल हो कि वह मेरी खातिर मुझसे प्रस्ताव करेगा, तो आप गलती पर हैं।"

"हो सकता है ऐसा हो। पर तुम्हारे पिता इसे बहुत पसन्द करेंगे।"

"पैंज़ी ने हल्की-सी समझदारी की मुस्कराहट के साथ सिर हिला दिया।" सिर्फ पापा को खुश करने के लिए लार्ड वारबर्टन प्रस्ताव नहीं करेगा।

"तुम्हारे पापा चाहेंगे कि तुम उसे प्रोत्साहित करो," इज़ाबेल मशीनी ढंग से बोली।

"मैं उसे कैसे प्रोत्साहित कर सकती हूं ?"

"यह मैं नहीं जानती। यह तुम्हारे पाप को तुम्हें बताना चाहिए।"

पैंज़ा पल-भर कुछ नहीं बोली। वह पहले की तरह मुस्कराती रही। जैसे कि एक उज्ज्वल आश्वासन उसे प्राप्त हो। "तब कोई खतरा नहीं है—कोई खतरा नहीं है," आखिर वह बोली।

उसकी बात में ऐसी आस्था और उसके विश्वास में ऐसी सहजता थी कि इज़ाबेल उससे और औघड़ महसूस करने लगी। उसे लगा जैसे उसपर बेईमानी का आरोप लगाया जा रहा हो, और इससे उसका मन वितृष्णा से भर गया। अपने आत्म-सम्मान को बनाए रखने के लिए वह यह कहने को हुई कि लार्ड वारबर्टन ने उसे बताया है कि इसका खतरा रहा है। पर अपनी घबराहट में बिलकुल अलग-सी बात कह गई—कि उस आदमी का व्यवहार सचमुच बहुत अच्छा और मित्रता-पूर्ण रहा है।

"हां, उसका व्यवहार बहुत अच्छा रहा है," पैंज़ी बोली, "इसीलिए मुझे वह आदमी पसन्द है।"

"तो फिर तुम्हें इतनी कठिनाई क्यों लगती है ?"

"मुझे विश्वास रहा है कि उसे पता है कि मैं उसे—क्या करने को कहा था अपने ?—हां, प्रोत्साहित नहीं कर सकती। उसे पता है मैं ब्याह नहीं करना चाहती, और वह जतलाना चाहता है कि वह मुझे परेशान नहीं करेगा। उसके

अच्छा व्यवहार करने का यही अर्थ है। यह ऐसे है जैसे उसने मुझसे कहा हो, कि मैं तुम्हें बहुत पसन्द करता हूं, पर तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता, तो मैं यह बात फिर नहीं कहूंगा। मैं समझती हूं यही उसकी भद्रता और अच्छाई है।'' फिर और गहरी निश्चिन्तता के साथ वह बोली, "बस इतनी ही बात हुई है। फिर वह मुझे चाहता भी नहीं है। इसलिए कोई खतरा नहीं है।"

इज़ाबेल को आश्चर्य हुआ कि यह छोटी-सी दब्बू लड़की किस गहराई तक महसूस कर सकती है। उसे पैंजी की समझदारी से डर लगने लगा—एक तरह से वह उसके सामने से पीछे हटने लगी। "तुम्हें यह बात अपने पिता से कहनी चाहिए,'' उसे संयत स्वर में कहा।

"मेरा ख्याल है मुझे नहीं कहनी चाहिए,'' पैंजी खुले स्वर में बोली।

"यह तुम्हें देखना चाहिए कि वे झूठी आशा न लगाए रहें।"

"शायद यह ठीक है। पर मेरे लिए अच्छा है कि वे ऐसी आशा लगाए रहें। जब तक उन्हें विश्वास है कि लार्ड वारबर्टन का ऐसा इरादा है जैसा कि आप बता रही हैं, तब तक वे किसी और का नाम नहीं लेंगे। मुझे इसीमें फायदा है,'' लड़की स्पष्टवादिता के साथ बोली।

उसकी स्पष्टवादिता में कुछ ऐसा प्रतिभा का स्पर्श था कि इज़ाबेल ने एक लम्बी सांस ली। इससे एक बड़ी जिम्मेदारी उसके सिर से उतर गई थी। पैंजी के पास अपना ही प्रकाश काफी था, और इज़ाबेल को लग रहा था कि अपने छोटे-से संचय में से वह उसे कुछ भी प्रकाश नहीं दे सकती। फिर भी उस धारणा से वह चिपक रही थी कि उसे ऑसमण्ड के प्रति अपना कर्तव्य निभाना है, और कि उसकी बेटी से यह सब बात करने में ही उसकी प्रतिष्ठा थी। उसी भावना के अन्तर्गत उसने वहां से चलने से पहले एक और सुझाव रखा—ऐसा सुझाव जिसे रखने के बाद उसे लगा कि अपनी तरफ से उसने पूरी कोशिश कर ली है। "तुम्हारे पिता कम-से-कम इतना तो निश्चित ही समझते हैं कि तुम किसी ऊंचे घराने के आदमी से शादी करोगी।"

पैंजी खुले दरवाजे के पास खड़ी थी। इज़ाबेल के निकलने के लिए उसने परदा हटा दिया था। "मुझे मिस्टर रोज़ियर ऐसा ही जान पड़ता है,'' उसने गम्भीर स्वर में कहा।

४६

लार्ड वारबर्टन कई दिन मिसेज़ ऑसमण्ड के ड्राइंग रूम में दिखाई नहीं दिया, और इज़ाबेल यह लक्ष्य लिए बिना नहीं रही कि उसके पति ने भी उससे लार्ड वारबर्टन के लिखे किसी पत्र का ज़िक्र नहीं किया। यह भी कि ऑसमण्ड एक आतुरता की स्थिति में है और चाहे उसे यह प्रकट करना बुरा लगता है, फिर भी वह सोच रहा है कि उनका सम्मानित मित्र उनसे बहुत इंतज़ार करा रहा है। चौथे दिन के अन्त में ऑसमण्ड ने उसके न आने की ओर संकेत किया।

"वारबर्टन को क्या हुआ है ? वह तो ऐसे गायब है जैसे कोई बिल वसूल करने वाले व्यापारी के सामने से गायब होता है।"

"मुझे उसके बारे में कुछ पता नहीं है," इज़ाबेल बोली। "पिछले शुक्रवार को मैंने उसे जर्मन बाल में देखा था। तब उसने कहा था कि वह तुम्हें एक पत्र लिखने वाला है।"

"उसने मुझे कोई पत्र नहीं लिखा।"

"तुमने ज़िक्र नहीं किया, इसलिए मेरा भी यही अंदाज़ा था।"

"वह अजीब जन्तु है," ऑसमण्ड ने निष्कर्ष के रूप में कहा। इज़ाबेल ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया, तो उसने पूछा कि क्या लार्ड महोदय को एक पत्र लिपिबद्ध करने में पांच दिन लगते हैं। "उसे शब्द बनाने में इतनी कठिनाई होती है क्या ?"

"मुझे पता नहीं," इज़ाबेल को जवाब में कहना पड़ा। "मुझे उसने कभी पत्र नहीं लिखा।"

"कभी पत्र नहीं लिखा ? मेरा ख्याल था कि कभी तुम लोगों का बहुत घनिष्ठ पत्र-व्यवहार रहा है।"

इज़ाबेल ने कहा कि ऐसा कभी नहीं था, और बात को वहीं छोड़ दिया। पर अगले रोज़ शाम को ज़रा देर से ड्राइंग रूम में आने पर उसके पति ने फिर से उस विषय को उठा लिया।

"जब लार्ड वारबर्टन ने तुमसे कहा था कि वह पत्र लिखने वाला है, तो तुमने उससे क्या कहा था ?" उसने पूछा।

इज़ाबेल की ज़बान अटक-सी गई। "मैंने उससे कहा था कि वह भूले नहीं।"

"तुम्हारा ख्याल था कि ऐसा अंदेशा हो सकता है ?"

"तुम्हीं कहते हो—वह अजीब जन्तु है।"

"लगता है वह भूल गया है," ऑसमण्ड बोला, "अच्छा होगा तुम उसे याद दिला दो।"

"तुम चाहोगे कि मैं उसे लिखूं ?" इज़ाबेल ने पूछा।

"मुझे कोई एतराज़ नहीं है।"

"तुम मुझसे बहुत ज़्यादा उम्मीद करते हो।"

"हां, मैं तुमसे बहुत ज़्यादा उम्मीद रखता हूं।"

"मुझे डर है मैं तुम्हें निराश करूंगी।"

"मेरी आशाएं बहुत-सी निराशाओं के बाद भी बनी रहती हैं।"

"यह मैं जानती हूं। पर सोचो, मुझे खुद को कितनी निराशा हुई होगी। अगर तुम सचमुच लार्ड वारबर्टन को पकड़ना चाहते हो, तो यह काम तुम्हें अपने आप करना होगा।"

दो-एक मिनट ऑसमण्ड ने कुछ नहीं कहा। फिर बोला, "यह आसान नहीं होगा—जबकि तुम मेरे खिलाफ काम कर रही हो।"

इज़ाबेल चौंक गई। उसे लगा वह कांप रही है। ऑसमण्ड अधमुंदी आंखों से एक खास अंदाज़ से उसे ताक रहा था, जैसे कि बिना उसे देखे उसके बारे में सोच रहा हो। लगता था जैसे उसके मन में बहुत क्रूर विचार आ रहे हों। वह उस समय जैसे ऑसमण्ड के लिए एक असुखकर पर आवश्यक विचार मात्र थी, एक सामने स्थित व्यक्ति नहीं। उसपर इसका प्रभाव पहले कभी इतना स्पष्ट नहीं पड़ा था जितना उस समय पड़ा। "मेरा ख्याल है तुम मुझपर बहुत ओछा अभियोग लगा रहे हो," उसने उत्तर दिया।

"मेरा अभियोग इतना ही है कि तुम विश्वसनीय नहीं हो। अगर वह नहीं आ रहा है, तो इसका कारण यही है कि तुमने उसे रोक रखा है। मैं नहीं जानता कि यह बात कितनी ओछी है, पर एक स्त्री इस तरह की बात कर ज़रूर सकती है। पर मुझे सन्देह नहीं कि तुम्हें इसमें भी कोई खूबी नज़र आती है।"

"मैंने तुमसे कहा था कि अपनी तरफ से जितना बन पड़ेगा, मैं करूंगी।"

"हां, इससे तुम्हें वक्त मिल गया।"

उसके यह कहने पर वह सोचने लगी कि यह आदमी कभी उसे कितना सुन्दर

लगता था। पल-भर बाद बोली, "तुम कितना चाहते होगे कि उस आदमी के बारे में निश्चिन्त हो सको।"

बात कहते-न-कहते उसे अहसास हो आया कि उसके शब्दों का अर्थ कहां तक जा सकता है। कहते हुए उसका ध्यान वहां तक नहीं गया था। उनमें एक तुलना का भाव था—उसके और ऑसमण्ड के बीच—और यह संकेत भी था कि कभी यह वांछित खज़ाना उसकी मुट्ठी में था और उसने अपने को इतनी धनी माना था कि उसे मुट्ठी से गिर जाने दिया था। क्षण-भर के लिए वह एक उल्लास में घिर गई—इस भयावह आह्लाद में कि वह ऑसमण्ड को चोट पहुंचा सकी है। ऑसमण्ड के चेहरे से उसे तुरन्त लग गया कि उसके शब्दों का ऑसमण्ड पर पूरा प्रभाव पड़ा है, पर और किसी तरह से ऑसमण्ड ने इसे व्यक्त नहीं होने दिया। सिर्फ जल्दी से इतना ही कहा, "हां, मैं बिलकुल यही चाहता हूं।"

तभी एक नौकर एक आगन्तुक को साथ लेकर आया। अगले क्षण लार्ड वारबर्टन उनके सामने था। ऑसमण्ड को देखकर लार्ड वारबर्टन थोड़ा ठिठक गया। उसकी नज़र जल्दी से गृहस्वामिनी की ओर घूम गई। उस नज़र में बेवक्त आ पहुंचने का संकोच भी था और वहां की शंकापूर्ण स्थिति का आभास भी। फिर अपने इंग्लिश ढंग से वह आगे आया। उसकी अस्पष्ट-सी संकोचशीलता जैसे अच्छे भरण-पोषण की परिचायक थी—उसमें दोष केवल संक्रमण की कठिनाई का था। ऑसमण्ड असमंजस में पड़ गया था, उसे सहसा कुछ कहने को नहीं मिला। पर इज़ाबेल ने झट से कह दिया कि वे लोग उसीकी बात कर रहे थे। इसपर ऑसमण्ड बोला कि उन्हें पता ही नहीं चल रहा था कि उसे क्या हुआ—कि कहीं वह वहां से चला ही तो नहीं गया? "नहीं," वारबर्टन ने इसपर मुस्कराकर ऑसमण्ड की ओर देखते हुए कहा, "गया तो नहीं, पर अब जाने ही वाला हूं।" फिर वह बताने लगा कि उसे अचानक इंग्लैण्ड से बुलावा आ गया है, और वह कल नहीं तो परसों वहां से चल देगा। "मुझे अफसोस है कि बेचारे टाउशेट को छोड़कर जा रहा हूं," कहकर उसने बात समाप्त की।

पल-भर ऑसमण्ड और इज़ाबेल दोनों खामोश रहे। ऑसमण्ड ने बात सुनते हुए सिर्फ कुरसी की पीठ से टेक लगा ली। इज़ाबेल ने उसकी तरफ नहीं देखा—वह सोच सकती थी कि उसका चेहरा कैसा लग रहा होगा। उसकी आंखें आगन्तुक के चेहरे पर टिकी रहीं। लार्ड वारबर्टन उससे आंखें चुरा रहा था, इसलिए वह

बहुत आज़ादी से उसे देख सकती थी। उसके मन में यह बात भी आ रही थी कि लार्ड वारबर्टन अगर उससे आंखें मिलाए, तो उनमें अवश्य एक भाव उसे मिलेगा। क्षण-भर बाद उसने अपने पति को जैसे मज़ाक में कहते सुना, "अच्छा होगा अगर बेचारे टाउशेट को तुम साथ ही ले जाओ।"

"उसे थोड़ी गर्मी होने तक इंतज़ार करना चाहिए," लार्ड वारबर्टन ने उत्तर दिया। "मैं उसे अभी सफर करने की राय नहीं दे सकता।"

वह पाव घण्टा बैठकर इस तरह बात करता रहा जैसे अगर वे लोग इंग्लैण्ड न गए, तो अब उनके मिलने की सम्भावना ही न हो। इंग्लैण्ड आने के लिए उसने उनसे ज़ोर देकर कहा भी—कि क्यों नहीं वे अगले पतझड़ में वहां आते? अपना यह ख्याल उसे बहुत अच्छा लगा। उसने कहा कि वे आकर महीना-भर उसके पास रहें, तो अपनी सामर्थ्य-भर उनकी आवभगत करके खुशी होगी। ऑसमण्ड का खुद का कहना था कि वह सिर्फ एक ही बार इंग्लैण्ड गया है; जो कि उस जैसी प्रतिभा और अवकाश वाले आदमी के लिए बेतुकी-सी बात थी। उस जैसे आदमी के लिए वही तो देश था और निश्चय ही वहां वह मज़े से रह सकता था। फिर लार्ड वारबर्टन ने इज़ाबेल से पूछा कि उसे याद है वहां उसने कितना समय बिताया था, और कि क्या वह फिर एक बार उस देश को आज़माकर नहीं देखना चाहती? फिर एक बार गार्डनकोर्ट में जाने को उसका मन नहीं होता? गार्डनकोर्ट बहुत अच्छी जगह है। चाहे रैल्फ उसकी ठीक देखभाल नहीं करता, पर वह ऐसी जगह नहीं कि देखभाल न होने से खराब हो जाय। क्यों नहीं वे लोग आकर टाउशेट के पास ठहरते? टाउशेट ने उनसे ज़रूर कहा होगा। नहीं कहा? कितना बदतमीज़ आदमी है। लार्ड वारबर्टन ने उन्हें विश्वास दिलाया कि वह रैल्फ के कान खींचेगा। वह कहना भूल गया होगा, वैसे उनके वहां आने से उसे बहुत खुशी होगी। महीना-भर वे लोग उसके पास रहें, महीना-भर टाउशेट के पास—और जितने और लोगों को वहां जानते हैं उनसे भी मिल लें, तो उन्हें वहां जाने का कतई अफसोस नहीं होगा। फिर उसने कहा कि मिस ऑसमण्ड को भी यह अच्छा लगेगा क्योंकि वह कभी इंग्लैण्ड नहीं गई और वह उसे बता चुका है कि वह देश उसके देखने लायक है। ठीक है, उसे प्रशंसा पाने के लिए इंग्लैण्ड जाने की ज़रूरत नहीं, वह तो उसे कहीं भी मिल सकती है। पर वहां उसे बहुत-बहुत सफलता मिल सकती है—अगर इसीसे कुछ प्रेरणा मिल सकती हो। उसने यह भी पूछा कि मिस ऑसमण्ड घर

पर है या नहीं ? क्या वह उससे गुडबाई कह सकता है ? यूं उसे गुडबाई कहने का शौक नहीं, वह हमेशा इससे बचना चाहता है। उस दिन इंग्लैण्ड से चलते हुए उसने किसीसे भी गुडबाई नहीं की। उसका तो आधा इरादा यह भी था कि मिसेज़ आॅसमण्ड को इस आखिरी मुलाकात की तकलीफ दिए बिना ही रोम से चला जाए। आखिरी मुलाकतों से बढ़कर नीरस चीज़ क्या हो सकती है? जो बातें आदमी कहना चाहता है,वह कह नहीं पाता—वे सब घंटे-भर बाद याद आती हैं। दूसरी तरफ जो नहीं कहना होता, वह आदमी कह जाता है—सिर्फ इसलिए कि उसे कुछ-न-कुछ तो कहना ही चाहिए। इससे मन खराब होता है,दिमाग उलझ जाता है। उसे इस समय ऐसा ही लग रहा है जिसका असर भी वही हो रहा है। अगर मिसेज़ आॅसमण्ड को लग रहा हो कि वह कोई न कहने की बात कह रहा है, तो उसे समझना चाहिए कि ऐसा केवल उत्तेजना के कारण है। मिसेज़ आॅसमण्ड से विदा लेना कोई छोटी बात नहीं है। उसे सचमुच अफसोस है कि वह जा रहा है। पहले उसने सोचा था मिलने आने की बजाय चिट्ठी लिख दे। और अब भी चिट्ठी तो वह लिखेगा ही, क्योंकि बहुत-सी बातें उस घर से निकलते ही उसे कहने को याद हो आएंगी। उन लोगों को लौकले आने की बात गम्भीरतापूर्वक सोचनी चाहिए।

उसके वहां आने या अपने जाने की घोषणा करने में अगर कुछ बेढब बात थी, तो वह सतह पर नहीं आई। लार्ड वारबर्टन खुद अपनी उत्तेजना की बात कर रहा था, पर और किसी तरह वह जाहिर नहीं हो रही थी। इज़ाबेल देख रही थी कि एक बार पीछे हटने का निश्चय कर लेने के बाद वह शान के साथ उसका पालन कर सकता है। उसे इसकी प्रसन्नता थी। उस आदमी के लिए उसके मन में इतनी भावना तो थी ही कि वह चाहती थी ऊपर से वह अपने को फूटने न दे। लॉर्ड वारबर्टन किसी भी स्थिति में अपने को संभाले रह सकता था—प्रगल्भता के कारण नहीं, केवल सफलता के अभ्यास के कारण। इज़ाबेल महसूस कर रही थी कि इस आदमी के इस गुण को उसके पति की कोई भी कोशिश बेकार नहीं कर सकती। वहां बैठे हुए उसके मन में एक गुंझल-सा बन रहा था। एक तरफ वह वारबर्टन की बात सुन रही थी और उसे उचित जवाब दे रही थी, जो कुछ वह अपने आप कह रहा था, उसके निहित अर्थ को समझ रही थी, और सोच रही थी कि वह उसे अकेली मिलती तो उसने क्या कहा होता। दूसरी तरफ वह आॅसमण्ड की अस्थिरता को भी पूरी तरह समझ रही थी। उसके लिए उसे खेद भी

हो रहा था क्योंकि क्षति की तीखी पीड़ा सहते हुए भी वह अपने मन का गुबार नहीं निकाल सकता था। उसके मन की बहुत बड़ी आशा उसके सामने हवा हो रही थी, और उसके पास सिवा बैठकर मुस्कराने और अंगूठे हिलाने के कोई चारा नहीं था। वह खुलकर मुस्करा रहा हो, ऐसा भी नहीं था। अपने मेहमान के सामने उसने उतना ही भावहीन चेहरा बना रखा था जितना उस जैसा चतुर आदमी आसानी से बना सकता था। यह उसकी चतुरता ही थी कि वह बिलकुल सहज लग रहा था। उसके चेहरे पर निराशा न होकर उतनी ही भावहीनता थी जितना कि वह अन्दर से उस सम्बन्ध के लिए उत्सुक था। शुरू से ही यह सम्भावित सम्बन्ध उसके लिए बड़ी चीज़ रहा था, पर कभी उसने अपनी उत्सुकता अपने चेहरे पर नहीं आने दी थी। अपने सम्भावित जमाई से उसका व्यवहार वैसा ही था जैसा किसीसे भी होता। उस आदमी में उसकी दिलचस्पी जैसे उसीके हित के लिए थी —गिलबर्ट ऑसमण्ड जैसे हर तरह से सुविधा-सम्पन्न व्यक्ति को उससे निजी लाभ कोई नहीं था। प्राप्ति का यह अवसर खो जाने से उसके मन में जो क्रोध उठ रहा था, उसका हल्का-सा, सूक्ष्म-सा भी चिह्न वह बाहर प्रकट नहीं होने दे रहा था, इज़ाबेल को यदि इससे कुछ सन्तोष मिल सकता था, तो वह इस सम्बन्ध में निश्चिन्त रह सकती थी। विचित्र, बहुत विचित्र, बात थी कि इज़ाबेल को इसका सन्तोष था। वह जहां चाहती थी कि लॉर्ड वारबर्टन उसके पति के सामने ऊंचा रहे, वहां यह भी चाहती थी कि उसका पति लार्ड वारबर्टन के सामने अपनी गरदन ऊंची रखे। ऑसमण्ड की एक अपनी विशेषता थी। लार्ड वारबर्टन की तरह उसे भी अपने अभ्यास की सुविधा थी। वह अभ्यास सफलता का चाहे नहीं था, पर उतना ही अच्छा था—वह अभ्यास प्रयत्न का था। कुर्सी से पीठ लगाए वह वार-बर्टन की मित्रतापूर्ण बातों और दबी-दबी व्याख्याओं को सुन रहा था। उसे यही भाव बनाए रखना ठीक लग रहा था कि वे बातें उसकी पत्नी से कही जा रही हैं। और कुछ उसके लिए था नहीं, इसलिए वह यही सोचकर खुश था कि कितनी अच्छी तरह वह अपने को उस सबसे बाहर रख सका है, और किस तरह अपनी उदासीनता लगातार बनाए रह सका है। वह दिखाना चाह रहा था कि विदा लेने आए व्यक्ति की गतिविधि का उसके मन से कोई सम्बन्ध नहीं है। वारबर्टन का अभिनय ठीक था, पर ऑसमण्ड के अभिनय में एक प्राकृतिक पूर्णता थी। लार्ड वारबर्टन की स्थिति बहुत सहज थी। उसके रोम छोड़कर जाने में कुछ भी अस्वा-

भाविक नहीं था। उसका आशय उदारतापूर्ण था, पर वह सफल नहीं हो पाया था। वह किसी चीज़ के लिए वचनबद्ध नहीं था, इसलिए उसका सम्मान सुरक्षित था। ऑसमण्ड इसमें बहुत हल्की दिलचस्पी दिखा रहा था कि वे लोग इंग्लैण्ड जाकर उसके यहां रहे और कि पैंज़ी को वहां जाकर काफी सफलता मिल सकती है। उसने हल्के से हामी भरी थी और यह कहना इज़ाबेल पर छोड़ दिया था कि इस प्रस्ताव पर गम्भीरतापूर्वक सोचकर ही कुछ कहा जा सकता है। यह कहते हुए इज़ावेल को लगा कि उसके पति के मन में इससे कैसे कुंज लहलहा उठे होंगे जिनके बीच से वह पैंज़ी को गुज़रकर जाते देख रहा होगा।

लार्ड वारबर्टन ने पैंज़ी से गुडबाई कहने की बात कही थी, पर इज़ाबेल और ऑसमण्ड दोनों ने ही पैंज़ी को बुलाने की कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। वह ज़ाहिर करना चाहता था कि वह ज़्यादा देर नहीं रुकेगा। वह अपना हैट हाथ में लिए एक छोटी-सी कुरसी पर इस तरह बैठा था जैसे अभी उसे वहां से उठ जाना हो। पर वह बैठा रहा, बैठा रहा। इज़ाबेल को आश्चर्य होने लगा कि वह इन्तज़ार किस चीज़ का कर रहा है। उसे विश्वास था कि यह पैंज़ी के लिए नहीं है क्योंकि कुल मिलाकर शायद वह पैंज़ी से न मिलना ही पसन्द करता। निःसन्देह वह उससे अकेले में कुछ बात करने के लिए ही था। इज़ाबेल की सुनने की इच्छा नहीं थी। उसे डर था कि वह किसी चीज़ की व्याख्या करेगा, और वह व्याख्याएं नहीं सुनना चाहती थी। आखिर ऑसमण्ड एक सुरुचि-सम्पन्न व्यक्ति की तरह उठ खड़ा हुआ—उसे लगा कि इतनी देर से बैठा हुआ मेहमान शायद अन्तिम शब्द महिलाओं से ही कहना चाहेगा। "क्षमा करना," उसने कहा, "मुझे डिनर से पहले एक पत्र लिखना है। मैं देखता हूं अगर लड़की खाली है, तो। हुई तो उसे बता दूंगा कि तुम आए हो। अब जब कभी रोम आओ, हमें मिलने ज़रूर आना। हमारे इंग्लैण्ड आने के बारे में मिसेज़ ऑसमण्ड तुमसे बात कर लेंगी। ये सब फैसले यही करती है।"

हाथ मिलाने की जगह जिस तरह केवल सिर हिलाकर उसने बात समाप्त की, वह अभिवादन का सही ढंग नहीं था, पर उस अवसर के लिए यही उचित था। इज़ाबेल ने सोचा कि ऑसमण्ड के चले जाने के बाद लॉर्ड वारबर्टन के पास यह कहने का कोई बहाना नहीं रहेगा, कि, "तुम्हारा पति बहुत नाराज़ है।" यह बात उसे बहुत बुरी लगती। वह ऐसा कहता, तो वह उत्तर देती, "घबराओ नहीं। वह तुमसे घृणा नहीं करता। उसे घृणा मुझसे है।"

लॉर्ड वारबर्टन की अव्यवस्था सामने आई, ऑसमण्ड के चले जाने के बाद। उसने कुर्सी बदल ली और पास की दो-तीन चीज़ों को उठाने-रखने के बाद बोला, "मुझे आशा है वह मिस आसमण्ड को भेज देगा। मैं उससे ज़रूर मिलना चाहता हूं।"

"मुझे ख़ुशी है कि यह आखिरी बार है," इज़ाबेल बोली।

"मुझे भी ख़ुशी है। वह मुझे नहीं चाहती।"

"मुझे आश्चर्य नहीं है," वह बोला। फिर सरसरी तौर पर उसने पूछा, "तुम लोग इंग्लैंड आओगे न ?"

"मेरा ख्याल है बेहतर होगा हम न आएं।"

"देखो एक बार तुम्हारा आना बनता है। तुम्हें याद है तुम एक बार लौकले आने वाली थीं, पर आईं नहीं।"

"तब से अब तक सब कुछ बदल गया है," इज़ाबेल बोली।

"पर बदतर नहीं हुआ—जहां तक हम लोगों का सम्बन्ध है। तुम्हें अपने घर में देखकर," और केवल क्षण भर के लिए उत्तेजित रहकर उसने बात पूरी की, "मुझे बहुत संतोष होगा।"

इज़ाबेल डरी थी कि वह लम्बी व्याख्या देगा, पर उसे सिर्फ इतना ही सूझा। वे कुछ देर रैल्फ की बात करते रहे—और तभी पैंज़ी आ गई। वह डिनर के लिए तैयार थी और उसके दोनों गालों पर लाल दायरे उभर रहे थे। लार्ड वारबर्टन से हाथ मिलाकर वह एक स्थिर मुस्कराहट के साथ उसे देखती रही। लार्ड वार-बर्टन को पता नहीं था, पर इज़ाबेल देख रही थी कि वह मुस्कराहट बहुत कुछ फूट-फूटकर रोने जैसी है।

"मैं जा रहा हूं," लार्ड वारबर्टन बोला। "मैं तुमसे गुडबाई कहने आया हूं।"

"गुडबाई लार्ड वारबर्टन।" पैंज़ी का स्वर कांप गया।

"और मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि मैं तुम्हारे लिए सुख की कितनी कामना करता हूं।"

"धन्यवाद, लार्ड वारबर्टन।"

लार्ड वारबर्टन पल-भर रुका रहा। फिर बोला, "तुम बहुत सुखी रहोगी क्योंकि तुम्हारे पास एक 'गार्जियन एंजल' है।"

"मुझे विश्वास है मैं सुखी रहूंगी," पैंज़ी ने ऐसे स्वर में कहा जिसकी

विश्वस्तता में हमेशा एक प्रसन्नता मिली रहती थी।

"यह विश्वास तुम्हें बहुत दूर तक ले जाएगा। पर अगर कभी यह विश्वास तुम्हें धोखा दे, तो याद रखना···याद रखना···" और वह थोड़ा हकला गया।" कभी मुझे याद कर लिया करना," उसने हल्की हंसी के साथ कहा। फिर इज़ाबेल से हाथ मिलाकर वह चला गया।

वह कमरे से निकल गया तो इज़ाबेल को लगा कि पैंज़ी अभी रो देगी। पर पैंज़ी ने बिलकुल दूसरी ही बात की।

"आप सचमुच मेरी 'गार्जियन एंजल' हैं," उसने मीठे स्वर में कहा।

इज़ाबेल ने सिर हिलाया। "मैं एंजल-वैंजल कुछ नहीं हूं। ज्यादा से ज्यादा मैं तुम्हारी एक अच्छी मित्र हूं।"

"तो आप बहुत अच्छी मित्र हैं, क्योंकि आपके कहने से पापा ने मुझसे बहुत अच्छी तरह बात की है।"

"मैंने तुम्हारे पापा से कुछ नहीं कहा," इज़ाबेल आश्चर्य से बोली।

"उन्होंने अभी-अभी मुझसे ड्राइंग रूम में आने को कहा और बहुत प्यार से मुझे चूमा।"

"ओह !" इज़ाबेल बोली, "यह उन्होंने अपने ही मन से किया है।"

इज़ाबेल समझ सकती थी। यह ऑसमण्ड की विशेषता थी जिसे जानने के अभी और कई अवसर आने थे। पैंज़ी के साथ भी ऑसमण्ड अपने को किसी तरह की गलत स्थिति में नहीं डाल सकता था। उन लोगों का डिनर बाहर था। डिनर के बाद वे एक और आयोजन में चले गए, इसलिए देर रात से पहले इज़ाबेल ऑसमण्ड से अकेले में नहीं मिल सकी। सोने जाने से पहले पैंज़ी ने ऑसमण्ड को चूमा, तो ऑसमण्ड ने रोज़ से ज़्यादा उदारता के साथ उसे गले लगाया। इज़ाबेल के मन में आया कि कहीं इसका यह अर्थ तो नहीं कि वह जता रहा है कि उसकी बेटी अपनी सौतेली मां की चाल से आहत हुई है। खैर, इतना भाव तो उसमें था ही कि वह अपनी पत्नी से क्या अपेक्षा रखता है। वह भी पैंज़ी के पीछे जाने लगी, तो ऑसमण्ड ने उससे रुकने को कहा। कहा कि वह उससे कुछ बात करना चाहता है। फिर वह ड्राइंग रूम में चहलकदमी करने लगा जबकि इज़ाबेल लबादा पहने इन्तज़ार में खड़ी रही।

"मैं नहीं जानता तुम क्या करना चाहती हो," पल-भर बाद वह बोला, "मैं

जानना चाहूंगा, जिससे यह तय कर सकूं कि मुझे क्या करना चाहिए।"

"इस समय मैं सोना चाहती हूं। बहुत थकी हुई हूं।"

"आराम से बैठ जाओ। मैं तुम्हें ज़्यादा देर नहीं रोकूंगा। वहां नहीं—ठीक जगह पर बैठो।" और उसने चित्रात्मक ढंग से दीवान पर बिखरी गद्दियों को सहेज दिया। पर इज़ाबेल वहां नहीं बैठी, उसने पास की एक कुर्सी ले ली। आग बुझ चुकी थी, और उस बड़े से कमरे में बत्तियां बहुत कम थीं। इज़ाबेल ने अपना लबादा अच्छी तरह लपेट लिया—उसे बेहद ठण्ड लग रही थी। "मेरा ख्याल है तुम मुझे अपमानित कर रही हो," ऑसमण्ड कहता रहा। "यह बहुत बेहूदा हरकत है।"

"तुम्हारी बात मेरी समझ में बिलकुल नहीं आ रही," इज़ाबेल बोली।

"तुमने बहुत गहरा खेल खेला है और बहुत अच्छी तरह उसकी व्यवस्था की है।"

"मैंने किस चीज़ की व्यवस्था की है?"

"पर तुम्हारी व्यवस्था पूरी नहीं हुई। हम अभी उस आदमी से फिर भी मिलेंगे," फिर हाथ जेबों में डाले वह उसके सामने रुक गया—हमेशा की तरह सोचती आंखों से उसे देखता हुआ—जैसे कि उसे जतलाना चाहता हो कि वह उसके लिए विचार का विषय नहीं, एक दुखदायी घटना मात्र है।

"तुम्हारा ख्याल हो कि लार्ड वारबर्टन को मजबूर होकर यहां आना पड़ेगा, तो तुम गलती पर हो," इज़ाबेल बोली, "उसे ऐसी कोई मजबूरी नहीं है।"

"इसीकी तो मुझे शिकायत है। पर जब मैं कहता हूं कि वह आएगा, तो उसका यह मतलब नहीं कि वह किसी फर्ज़ की वजह से आएगा।"

"तो और कोई भी वजह नहीं है। मेरा ख्याल है वह रोम से काफी थक चुका है।"

"यह बेकार की बात है। रोम से कभी कोई नहीं थकता।" और ऑसमण्ड फिर टहलने लगा। "पर उसकी कोई जल्दी नहीं है," वह बोला। "उसका यह ख्याल अच्छा है कि हम लोग इंग्लैण्ड जाएं। मुझे तुम्हारे कज़िन के वहां मिलने का डर न होता, तो मैं तुम्हें राज़ी करने की कोशिश करता।"

"हो सकता है मेरा कज़िन तुम्हें वहां न मिले," इज़ाबेल बोली।

"मैं इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से जानना चाहूंगा। जहां तक सम्भव है, मैं

निश्चित रूप से जान भी लूंगा। साथ ही मैं उसका घर ज़रूर देखना चाहूंगा, जिसका कभी तुम इतना ज़िक्र करती थीं। क्या नाम है उस घर का ? गार्डन-कोर्ट। वह ज़रूर सुन्दर जगह होगी। फिर तुम्हारे मौसा की स्मृति का आग्रह भी है—तुम्हारी बातें सुन-सुनकर मैं उन्हें बहुत मानने लगा था। मैं वह जगह देखना चाहूंगा जहां वे रहे और जहां उनकी मृत्यु हुई। पर यह विस्तार की बात है। तुम्हारे मित्र ने ठीक कहा है। पैंजी को इंग्लैण्ड ज़रूर जाना चाहिए।"

"मुझे विश्वास है उसे बहुत अच्छा लगेगा," इज़ाबेल बोली।

"पर उसमें अभी बहुत दिन हैं। पतझड़ अभी बहुत दूर है," ऑसमण्ड बात करता रहा। "उससे पहले मुझे कुछ और पास की चीज़ों पर बात करनी है। अच्छा बताओ, तुम मुझे बहुत घमण्डी समझती हो ?"

"मैं तुम्हें बहुत अजीब समझती हूं।"

"तुम मुझे समझ नहीं पातीं।"

"हां, तुम जब मेरा अपमान करते हो, तब भी नहीं।"

"मैं तुम्हारा अपमान नहीं करता। मैं कुछ वास्तविकताओं की बात करता हूं। अगर तुम्हें उनसे चोट पहुंचती है, तो वह मेरा दोष नहीं। यह एक वास्तविकता है कि तुम सारी चीज़ अपने हाथ में रखे रही हो।"

"क्या तुम फिर लार्ड वारबर्टन की बात पर आ रहे हो ?" इज़ाबेल ने पूछा। "मैं तो इस नाम से ही ऊब गई हूं।"

"अभी यह नाम तुम्हें बहुत बार सुनने को मिलेगा। सिलसिला अभी खत्म कहां हुआ है ?"

इज़ाबेल ने कहा था वह उसका अपमान कर रहा है, पर अचानक उसे अहसास हुआ कि इससे उसे कोई पीड़ा नहीं हो रही। ऑसमण्ड नीचे-नीचे गिरता जा रहा था और पीड़ा इतनी ही थी कि इस गिरावट से उसका सिर चकरा रहा था। ऑसमण्ड बहुत विचित्र था, बहुत अलग, उससे बहुत दूर। फिर भी ऑसमण्ड का कुत्सित आवेश बहुत असाधारण था और वह यह जानने को उत्सुक थी कि वह अपने को कैसे सही मानता है। "मैं तुम्हें बताना चाहती हूं कि मुझे तुम्हारी कोई बात ऐसी नहीं लगती जो सुनने लायक हो," वह पल-भर बाद बोली। "पर हो सकता है मैं गलती पर हूं। हां, एक बात सुनने लायक हो सकती है, और वह यह कि तुम साफ-साफ बताओ तुम्हारा मुझपर अभियोग क्या है।"

"यही कि वारबर्टन के साथ पैंज़ी के विवाह में तुमने बाधा डाली है। अब ये शब्द तो बिल्कुल साफ हैं ?"

"उलटे मैंने उसमें काफी दिलचस्पी ली है। तुमसे मैंने कहा भी था। जब तुमने कहा कि तुम मुझपर निर्भर करते हो—यही कहा था तुमने—तो मैंने वह ज़िम्मेदारी उठा ली थी, हालांकि ऐसा करना मेरी मूर्खता ही थी।"

"यह तुम्हारा बहाना था। तुम्हारी हिचकिचाहट भी एक बहाना था, जिससे मैं तुमपर ज़्यादा विश्वास कर सकूं। फिर तुमने अपनी चतुराई का प्रयोग करके उसे परे हटा दिया।"

"तुम्हारी बात मेरी समझ में आ रही है," इज़ाबेल बोली।

"वह चिट्ठी कहां है जो तुम कहती थीं उसने मुझे लिखी है ?" ऑसमण्ड ने पूछा।

"मुझे पता नहीं। मैंने उससे नहीं पूछा।"

"तुमने उसे रास्ते में ही रोक दिया था," ऑसमण्ड बोला।

इज़ाबेल आहिस्ता से उठ खड़ी हुई। पैरों तक आते अपने सफेद लबादे में वह तिरस्कार के फरिश्ते जैसी लग रही थी जो दया के फरिश्ते का सहगोत्र है। "ओह गिलबर्ट, तुम वही आदमी हो जो कभी इतने अच्छे थे—!" वह बुदबुदायी।

"तुम्हारे लिए मैं कभी अच्छा नहीं रहा। तुम्हें जो करना था, तुमने कर लिया है। बिना यह प्रकट होने दिए, तुमने उस आदमी को रास्ते से हटा दिया है। मुझे तुमने उस स्थिति में डाल दिया है जिसमें कि तुम मुझे देखना चाहती थीं। मैं अब एक ऐसा आदमी हूं जो अपनी बेटी की शादी एक लार्ड से करना चाहता था, पर जिसे इसमें मुंह की खानी पड़ी है।"

"पैंज़ी वारबर्टन को नहीं चाहती। उसे खुशी है कि वह चला गया है।" इज़ाबेल बोली।

"उसका इस बात से कोई ताल्लुक नहीं है।"

"वारबर्टन भी पैंज़ी को नहीं चाहता !"

"यह कहना काफी नहीं है। तुम्हींने मुझसे कहा था कि वह उसे चाहता है। पता नहीं तुम यही सन्तोष क्यों चाहती थीं," ऑसमण्ड कहता रहा। "तुम कोई और सन्तोष ढूंढ़ सकती थीं। मुझे नहीं लगता कि मैंने खामखाह यह बात सोच ली थी या यह मान लिया था कि ऐसा हो सकता है। मैं इस मामले में बहुत विनम्र

और खामोश रहा हूं। यह विचार पहले मेरे मन में नहीं आया था। मेरे कुछ भी सोचने से पहले उस आदमी ने अपनी दिलचस्पी दिखानी शुरू की थी। मैंने सारी बात तुमपर छोड़ दी थी।"

"हां, तुम्हें खुशी थी कि तुमने बात मुझपर छोड़ दी है। आगे से ऐसी बातें तुम अपने ही हाथ में रखा करो।"

ऑसमण्ड पल-भर उसे देखता रहा, फिर उसने चेहरा दूसरी तरफ कर लिया। "मेरा ख्याल था कि तुम मेरी बेटी से बहुत प्यार करती हो।"

"उसके लिए आज जितना प्यार कभी मेरे मन में नहीं आया।"

"तुम्हारे प्यार की बहुत सीमाएं हैं। पर यह शायद स्वाभाविक भी है।"

"क्या तुम इतना ही मुझसे कहना चाहते थे?" कहते हुए इज़ाबेल ने एक मेज़ पर से मोमबत्ती उठा ली।

"तुम सन्तुष्ट हो गईं? मेरा इतना निराश होना काफी है?"

"कुल मिलाकर तुम निराश हो, ऐसा मुझे नहीं लगता, क्योंकि मुझे हतबुद्धि करने का तुम्हें एक और अवसर मिल गया है।"

"ऐसा नहीं है। इससे सिद्ध यह होता है कि पैंज़ी इससे भी ऊंचा लक्ष्य रख सकती है।"

"बेचारी पैंज़ी!" इज़ाबेल ने कहा और मोमबत्ती लिए वहां से मुड़ पड़ी।

४७

कैस्पर गुडवुड के रोम आने का पता इज़ाबेल को हेनरीटा से चला। यह घटना लार्ड वारबर्टन के जाने के तीन दिन बाद हुई। इससे पहले एक और घटना हो चुकी थी जो इज़ाबेल के लिए काफी महत्त्वपूर्ण थी। वह यह कि मैडम मरले कुछ दिनों के लिए फिर वहां से बाहर नेपल्ज़ में अपने एक मित्र के यहां रहने चली गई थी—पौसिलिप्पो में उस मित्र का एक अच्छा-सा विला था। मैडम मरले ने इज़ाबेल की सुख-साधना का कार्य अब छोड़ दिया था। इज़ाबेल सोचती थी कि जो स्त्री उचित-अनुचित का सबसे ज्यादा ध्यान रखती है, कहीं ऐसा तो नहीं कि

कहीं वह सबसे ज़्यादा खतरनाक भी हो। कभी-कभी रात को उसे विचित्र से सपने आते और वह अपने पति को अपनी मित्र—नहीं, उसकी मित्र—के साथ एक धुंधले और अस्पष्ट-से सहवास में देखती। उसे लगता कि मैडम मरले ने अभी उसका पीछा नहीं—छोड़ा, अभी भी वह उसके साथ न जाने क्या करने वाली है। इज़ाबेल का ध्यान इस पकड़ में न आने वाले बिन्दु पर केन्द्रित रहता, पर कभी-कभी एक अनाम-सा भय उसे रोकता। इससे जितने दिन वह सुन्दर महिला रोम से बाहर रहती, उसे लगता कि वह चैन की सांस ले सकती है। कैस्पर गुडवुड के यूरोप में होने का पता उसे पहले ही मिस स्टैकपोल से चल चुका था। हेनरीटा ने पेरिस में कैस्पर से मिलने के बाद ही उसे इस बारे में लिखा था। कैस्पर ने स्वयं उसे कोई सूचना नहीं दी थी जिससे वह सोचती थी कि शायद यूरोप आकर भी वह उससे मिलने के लिए उत्सुक न हो। उसके विवाह से पहले जब आखिरी बार कैस्पर उससे मिला था, तो उसे लगा था कि उनका सम्बन्ध अब बिलकुल टूट गया है—अगर उसे ठीक याद था, तो कैस्पर ने उस वक्त कहा था कि वह उसे आखिरी नज़र देखने आया है। तब से वह आदमी उसे अपने पहले के जीवन का सबसे दुःखदायी अवशेष लगने लगा था—एक वही था जिसे लेकर उसके मन में एक पीड़ा बनी रहती थी। उस दिन सुबह वह उसे बहुत आकस्मिक आघात पहुंचाकर गया था। उसे लगा था जैसे खुली धूप में दो नावें आपस में टकरा गई हों। आसपास कोई धुंध नहीं थी, नीचे कोई ऐसा अर्न्तप्रवाह भी नहीं था जिसे इसका कारण माना जा सकता, और वह स्वयं बहुत बचकर निकल जाना चाहती थी। पर उसका हाथ पतवार के हत्थे पर था जब वह आदमी उसकी नाव की नोक से आ टकराया था, और रूपक को पूरा किया जाए, तो हल्की नाव को उसने इस तरह हिला दिया था कि अब भी कभी-कभी उसकी चूलें हल्की आवाज़ करने लगती थीं। कैस्पर को देखकर वह आतंकित हो उठी थी क्योंकि (उसके अपने विश्वास के अनुसार) उसने जीवन में सचमुच किसीको गम्भीर क्षति पहुंचाई थी, तो वह यही आदमी था—यही आदमी था जिसका अधिकार वह उसे नहीं दे पाई थी। इस आदमी को उसने दुःख पहुंचाया था, वह उसकी बेबसी थी—पर उस आदमी का दुःख एक गम्भीर वास्तविकता थी। उसके जाने के बाद वह गुस्से से चिल्ला उठी थी—किस चीज़ पर यह वह स्वयं नहीं जानती थी। उसे लगा था कि उसका गुस्सा उस आदमी की बेमुरव्वती पर है। ऐसे समय, जब उसका सुख

अपने चरम पर था, वह आदमी अपना दुखड़ा लेकर आ पहुंचा था और उसने पूरी चेष्टा की थी कि उन पवित्र किरणों की ज्योति को मन्द कर सके। बात कैस्पर ने उग्र ढंग से नहीं की थी, पर उसका प्रभाव उग्रतापूर्ण ही था। कहीं-न-कहीं कुछ-न-कुछ उग्रता जरूर रही थी—शायद उसके अपने रोने में ही, क्योंकि उसका परिताप तीन-चार दिन तक बना रहा था।

खैर, कैस्पर की अन्तिम याचना का प्रभाव भी समाप्त हो गया था और विवाह के पहले साल में उसके बहीखाते में उस आदमी का नाम तक नहीं रहा था। उसका ज़िक्र ही जैसे एक बेकार का विषय था—ऐसे आदमी की बात सोचना बेकार था जो दूसरे को लेकर खामखाह नाराज़ और उदास हो और जिसे सुख देने के लिए कुछ भी न किया जा सकता हो। अगर वह उसकी अशान्त मनः-स्थिति पर तनिक भी सन्देह कर सकती, जैसे कि लार्ड वारबर्टन की मनःस्थिति पर करती थी, तो बात दूसरी थी। पर कैस्पर के सम्बन्ध में बात सन्देह से परे थी और इसी से उसका आक्रोश और अस्वीकृति से भरा रूप इतना अनाकर्षक लगता था। इस आदमी के दुःख की कोई क्षतिपूर्ति नहीं थी। लार्ड वारबर्टन के सम्बन्ध में वह क्षतिपूर्ति की बात सोच सकती थी, इसके सम्बन्ध में नहीं। मिस गुडवुड की क्षतिपूर्ति में न उसे विश्वास था, और न ही वह उसकी कद्र करती थी। एक रूई की फैक्टरी से किसी चीज़ की क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती थी—इज़ाबेल आर्चर से विवाह न कर सकने की तो बिलकुल ही नहीं। पर रूई की फैक्टरी के सिवा उस आदमी के पास था ही क्या—अपने आन्तरिक गुणों को छोड़ कर? ओह, आंन्तरिक गुण उसमें बहुत थे—इस सम्बन्ध में उसे किसी तरह की बाहरी सहायता चाहिए, यह वह सोच भी नहीं सकती थी। कैस्पर अपने व्यापार को और विस्तृत कर सकता था—इज़ाबेल के अनुसार वही एक क्षेत्र था जिसमें वह दावे के साथ कुछ कर सकता था। पर यह उद्योग उद्योग के लिए ही होता, व्यापार के लिए ही, इससे वह अपने अतीत को ढांपने का प्रयत्न नहीं कर सकता था। इससे उस आदमी की आकृति में एक ऐसी अकिंचनता और नग्नता आ जाती थी कि स्मृति या आशंका में भी उसका सामना एक विचित्र संघटना की तरह लगता था—उसमें उस सामाजिक आवरण का अभाव था जो इस अतिसभ्य युग में मानवीय सम्पर्क की तीक्ष्णता को साधारणतया कुछ कुन्द कर देता है। उसकी पूर्ण खामोशी, और उसके बारे में कभी किसी का भी बात न करना, उस आदमी के अकेलेपन

की धारणा को और गहरा बना देते थे। वह कभी-कभार लिली से उसके बारे में कुछ लेती थी, पर लिली को बोस्टन का कुछ पता नहीं होता था। लिली की कल्पना मैडिसन एवेन्यू के पूरब तक ही सीमित थी। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, इज़ाबेल उसके बारे में अधिक बार और अधिक निर्बाध रूप से सोचने लगी। दो-एक बार उसे पत्र लिखने का विचार भी उसके मन में आया। अपने पति से उसने कभी कैस्पर का उल्लेख नहीं किया था—उस आदमी के फ्लोरेंस आने के बारे में उसे कभी नहीं बताया था। शुरू-शुरू में इसका कारण ऑसमण्ड के प्रति अविश्वास नहीं, बल्कि यह था कि वह कैस्पर की निराशा को अपना नहीं, उसीका भेद समझती थी। उसे विश्वास था कि किसी और को वह भेद बताना ग़लत होगा। और फिर मिस्टर गुडवुड के जीवन में गिलबर्ट की दिलचस्पी ही क्या हो सकती थी? पर लिखने की बात सोचकर भी उसने गुडवुड को कभी पत्र लिखा नहीं—उसे लगा कि उस व्यक्ति की निराशा को दृष्टि में रखते हुए उसे अकेले रहने देना ही ठीक है। फिर भी उसे खुशी होती अगर वह उसे कहीं पास देख सकती। यह विचार उसे कभी नहीं आया कि यह गुडवुड से विवाह कर सकती थी। अपने विवाह के बाद और चाहे वह सौ तरह की कल्पनाएं करती रहती थी, पर यह कल्पना कभी उसके मन में उठने का साहस नहीं कर सकी। पर अपने को विपत्ति में पाकर इज़ाबेल जिस दायरे में अपने लिए सन्तोष ढूंढ़ती थी, उसका वह भी एक सदस्य था। मैं कह चुका हूं कि यह महसूस करने की आवश्यकता उसके लिए कितनी तीव्र थी कि उसके अपने दोष से उसे इतना दुःख नहीं मिलना चाहिए था। शीघ्र मृत्यु की सम्भावना उसके सामने नहीं थी, फिर भी वह दुनिया के साथ एक सहज सम्बन्ध चाहती थी जिससे अपने आध्यात्मिक पक्ष को सहेज सके। उसे बार-बार लगने लगता कि कैस्पर के साथ उसका कुछ हिसाब होना अभी बाकी है, और वह सोचती कि आज वह कैस्पर को पहले से कहीं अधिक सुविधापूर्ण शर्तें देकर ऐसा करने में समर्थ है। पर जब उसे पता चला कि वह रोम आ रहा है, तो वह आशंकित हो उठी। उसने सोचा कि जब कैस्पर को उस वस्तुस्थिति का पता चलेगा—और किसी को पता चले न चले, उसे तो पता चल ही जाएगा—तो यह कितना दुःखद होगा। उसके अन्तरंग जीवन की अव्यवस्था कैस्पर के लिए एक झूठी बेलैंस-शीट की तरह होगी। कहां गहरे में उसे लगता था कि कैस्पर ने अपना सब कुछ उसकी खुशी के लिए लगा दिया है

जबकि दूसरों ने केवल कुछ अंश ही लगाया है। तो यह एक और व्यक्ति था जिससे उसे अपना तनाव छिपाना होगा। पर कैस्पर के रोम आने के बाद वह कुछ आश्वस्त हो गयी क्योंकि कई दिन बीत जाने पर भी वह उससे मिलने नहीं आया।

मगर हेनरीटा इस तरह रुकी रहने वाली नहीं थी, इसलिए उससे मिलने का सुख-सौभाग्य इज़ाबेल को काफी प्राप्त हुआ। हेनरीटा अपनी आत्मा में कोई कसक नहीं रखना चाहती थी, इसलिए वह आते ही इस समस्या में कूद पड़ी, क्योंकि सिर्फ इसी तरह वह प्रमाणित कर सकती थी कि उसकी रुचि सतही नहीं है। गुज़रते सालों ने उसकी उन विशेषताओं को धुंधला न करके और चमका दिया था जिनके कारण वे लोग, जो उसमें इज़ाबेल जितनी दिलचस्पी नहीं रखते थे, उस पर कटाक्ष करते रहते थे, और अब भी जो प्रकट रूप से उसकी मित्रता को एक तरह के साहस का रूप दे सकती थीं। हेनरीटा हमेशा की तरह ही चुस्त-दुरुस्त और ताज़ा थी— उतनी ही साफ तेज़ और उजली। शीशे-लगे रेलवे-स्टेशनों की तरह चमकती हुई उसकी बड़ी-बड़ी आंखों के आगे किसी तरह की चिकें नहीं लगी थी और उसकी पोशाक के कलफ में या उसके विचारों के राष्ट्रीय सम्मान में ज़रा फर्क नहीं आया था। उसमें कुछ भी न बदला हो, ऐसा नहीं था—इज़ाबेल को उसमें थोड़ी अस्पष्टता का आभास ज़रूर हुआ। इधर पहले इस तरह की अस्पष्टता उसमें नहीं रही थी—वह चाहे कितने ही सवाल एक साथ पूछती, हर सवाल की पूर्णता और स्पष्टता फिर भी बनी रहती थी—उसका उद्देश्य उसमें से फूटा पड़ता था। पहले वह यूरोप आई थी यूरोप देखने के लिए, पर अब देख चुकने के बाद वहां आने का वैसा कोई उद्देश्य नहीं हो सकता था। उसने ऐसा बहाना भी नहीं किया कि उसने यह तरद्दुद एक ह्रासशील सभ्यता के परीक्षण के लिए उठाया है। इस यात्रा में पुरानी दुनिया के प्रति उसके कर्तव्य की अपेक्षा उस दुनिया से उसकी स्वतन्त्रता की ही भावना अधिक थी। "यूरोप आने में ऐसा कुछ नहीं है," उसने इज़ाबेल से कहा। "मुझे नहीं लगता कि आदमी किसी कारण से ही यहां आता है। अपने देश में रहने का फिर भी कारण हो सकता है, वह इससे कहीं महत्त्वपूर्ण है।" सो उसके फिर से रोम की तीर्थयात्रा करने का कोई महत्त्वपूर्ण कारण नहीं था। वह उस जगह को पहले देख ही नहीं, अच्छी तरह परख भी चुकी थी—इस बार तो वह सिर्फ वहां से अपने परिचय के कारण,

उस जगह को अच्छी तरह जानने के कारण ही चली आई थी। वहां आने का जितना हक किसी और को होता, उतना ही उसे भी था। इसमें कोई बात नहीं थी। वह इन दिनों कुछ अस्थिर भी थी—पर सोचा जाए तो अस्थिर होने में ही ऐसा क्या है ? पर उसके रोम आने का वास्तविक कारण रोम की नगण्यता न होकर कुछ और ही था। इजाबेल को इसे पहचानने में देर नहीं लगी। इससे हेनरीटा की मित्रता का मूल्य भी वह समझ सकी। सर्दी के दिनों में तूफानी समुद्र पार करके वह इसीलिए वहां आई थी कि उसे पता चला था इजाबेल दुःखी है। हेनरीटा अनुमान बहुत लगाती थी, पर उसका कोई अनुमान इतना सही नहीं निकला था। इजाबेल के जीवन में उस समय अधिक कुछ सन्तोषप्रद नहीं था, पर अगर होता भी तो यह आभास उसके लिए एक नितान्त व्यक्तिगत सुख का विषय होता कि उसका हेनरीटा की इतनी कद्र करना कितना सही था। वह हेनरीटा की बहुत-सी कमजोरियों को स्वीकार करती थी, पर उसका विश्वास था कि सब होते हुए भी वह एक मूल्यवान् व्यक्ति है। हेनरीटा का आना उसे अच्छा लगा—इसलिए नहीं कि उसका विश्वास सही था, बल्कि इसलिए कि एक विश्वासपात्र के सामने वह अपनी स्थिति स्वीकार कर सकी। हेनरीटा वह पहला व्यक्ति थी जिसके सामने उसने माना कि वह बहुत अव्यवस्थित है। बात खुद हेनरीटा ने ही शुरू की थी, बिना ज़रा भी देर किए, और खुलकर यह आरोप उस पर लगाया था कि वह बहुत बेहाल नज़र आ रही है। इज़ाबेल ने उससे सब कह दिया क्योंकि वह रैल्फ लार्ड वारबर्टन या कैस्पर गुडवुड नहीं था, एक स्त्री थी, एक बहन।

"हां, बेहाल तो मैं हूं," उसने आहिस्ता से कहा। कहते हुए उसे अपने से घृणा हुई। उसने प्रयत्न किया कि यथासम्भव अपना सन्तुलन बनाए रखे।

"वह तुम्हारे साथ क्या कर रहा है ?" हेनरीटा ने ऐसे पूछा जैसे एक नीम-हकीम के आपरेशन के बारे में सवाल कर रही हो।

"वह कर कुछ नहीं रहा। पर मुझे वह पसन्द नहीं करता।"

"उसे खुश करना बहुत मुश्किल है," मिस स्टैकपोल बोली। "तुम उसे छोड़ क्यों नहीं देतीं ?"

"मैं उस तरह नहीं बदल सकती," इज़ाबेल ने कहा।

"पर क्यों नहीं ? तुम यह नहीं मानना चाहतीं कि तुमने गलती की है ? तुम्हें अपना बहुत घमण्ड है।"

"मुझे अपना बहुत घमण्ड है, यह तो मैं नहीं कहती, पर मैं अपनी गलती का विज्ञापन नहीं करना चाहती। यह मुझे अच्छा नहीं लगता। इससे तो मर जाना अच्छा है।"

"तुम हमेशा ऐसा नहीं सोचोगी," हेनरीटा बोली।

"कह नहीं सकती कि यह महान् दुःख मुझे कहां ले जाएगा। पर यह मुझे लगता है कि मैं लज्जित हमेशा रहूंगी। आदमी को अपने किए को स्वीकार तो करना ही चाहिए। मैंने सारी दुनिया के सामने उससे शादी की थी। मैं बिलकुल स्वतन्त्र थी—इससे ज्यादा अपने मन से मैं क्या कर सकती थी? इसलिए अब मैं उस तरह नहीं बदल सकती," इज़ाबेल ने दोहराया।

"तुम्हें असम्भव लगता हो, फिर भी तुम बदली ज़रूर हो। तुम्हारे कहने का यह मतलब तो नहीं कि तुम्हें वह पसन्द है?"

"नहीं, मुझे वह पसन्द नहीं है," इज़ाबेल ने विरोध किया। "मैं तुम्हें बता रही हूं क्योंकि इस बात को मन में रखे-रखे मैं थक गई हू। पर इतना ही काफी है। मैं छत पर खड़ी होकर इसकी घोषणा नहीं कर सकती।"

हेनरीटा हंस दी। "तुम्हें नहीं लगता कि तुम बहुत लिहाज़ रखकर चल रही हो?"

"लिहाज़ मुझे उसका नहीं, अपना है," इज़ाबेल बोली।

यह आश्चर्यजनक नहीं था कि गिलबर्ट ऑसमण्ड को मिस स्टैकपोल का आना सुखकर नहीं लगा। जो स्त्री उसकी पत्नी को विवाहित जीवन से मुक्त होने का परामर्श दे सकती थी, उसके प्रति उसके मन में विरोध-भावना का जाग आना स्वाभाविक ही था। मिस स्टैकपोल के रोम के आने की सूचना पाते ही उसने इज़ा-बेल के सामने यह आशा प्रकट की थी कि वह अपनी 'इंटरव्यूअर' मित्र से ज्यादा नहीं मिले-जुलेगी। इज़ाबेल ने इसका उत्तर दिया था कि कम-से-कम गिलबर्ट को हेनरीटा से कोई आशंका नहीं होनी चाहिए। हेनरीटा से उसने कहा था कि वह उसे घर पर खाने के लिए नहीं बुला सकती क्योंकि ऑसमण्ड इसे पसन्द नहीं करता—पर और सब तरह से वे आसानी से मिल सकती हैं। वह अक्सर या तो हेनरीटा को अपने सिटिंग-रूम में बुला लेती या कई बार उसके साथ ड्राइव पर निकल जाती। ऐसे मौकों पर पैंज़ी सामने की सीट पर बैठी उस प्रसिद्ध लेखिका को, थोड़ा आगे को झुककर, सीधी नज़र से ताकती रहती। पैंज़ी का यह आदर-

भाव कभी-कभी हेनरीटा को चिढ़ा देता। वह इज़ाबेल से शिकायत करती कि मिस ऑसमण्ड की आंखों से लगता है जैसे वह दूसरे की कही हर बात याद रखना चाहती हो।" कोई मेरी बातें इस तरह याद रखे, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। "वह घोषणा करती है।" मैं समझती हूं मेरी बातचीत सिर्फ उस वक्त के लिए ही होती है—सुबह को अखबार की तरह। तुम्हारी सौतेली बेटी सामने बैठी हुई इस तरह लगती है, जैसे वह सभी पुराने अंक संभालकर रख रही है, और किसी दिन उन्हें मेरे खिलाफ सामने पेश कर देगी। मिस स्टैकपोल किसी भी तरह पैंजी के सम्बन्ध में अपनी धारणा बदलने के लिए अपने को तैयार नहीं कर पाती थी। उसे यह अस्वाभाविक और भौंडी-सी बात लगती थी कि बीस साल की एक लड़की में अपना कोई उत्साह ही न हो, और वह न तो एक व्यक्ति के रूप में बात कर सके और न अपना अधिकार ही जता सके। इधर इज़ाबेल को यह भी लगता था कि ऑसमण्ड दिल से चाहता है कि वह उसके सामने हेनरीटा की थोड़ी-बहुत वकालत करे, उस पर हेनरीटा से घर पर मिलने के लिए ज़ोर डाले, ताकि वह जता सके कि शिष्टाचार के नाते उसे यह सब सहना पड़ रहा है। पर उसने ऑसमण्ड के एतराज़ को तुरन्त स्वीकार कर लिया, इससे वह अपने को बहुत गलत स्थिति में पा रहा था। घृणा प्रकट करने का एक नुकसान यह है कि व्यक्ति उसके साथ-साथ सहानुभूति प्रकट करने का श्रेय अपने को नहीं दे सकता। ऑसमण्ड के लिए इस सबसे समझौता कर पाना आसान नहीं था। उसकी दृष्टि से सही स्थिति यह होती कि हेनरीटा पालाज़ो रोकानेरा में दो एक दफा खाना खाने आती और (उसकी ऊपरी भद्रता के बावजूद जो कि वह पर्याप्त मात्रा में दिखाता) वह स्वयं जान लेती कि उसके वहां आने से ऑसमण्ड को ज़रा भी खुशी नहीं हुई। पर इज़ाबेल या हेनरीटा ने उसे इसका कोई मौका ही नहीं दिया, इसलिए वह अब यह चाहता था कि न्यूयार्क से आई महिला जितनी जल्दी हो सके, वहां से चली जाए। वह इज़ाबेल का ध्यान इस ओर दिलाने से नहीं चूका कि अपनी पत्नी के मित्रों से उसे कितना कम सन्तोष मिलता है।

"तुम्हारी घनिष्ठता ज़्यादा अच्छे लोगों से नहीं है। बेहतर होगा अगर तुम कुछ नये लोग जुटाने की कोशिश करो," एक सुबह उसने इज़ाबेल से कहा। प्रसंग कुछ भी नहीं था। पर उसके स्वर में ऐसा गम्भीर चिन्तन का भाव था कि उससे बात में किसी तरह की बर्बरता और आकस्मिकता नहीं लगी। "लगता कुछ ऐसा

है जैसे तुमने दुनिया के सब ऐसे ही लोग चुने हों जिनकी मेरे साथ ज़रा ताल नहीं बैठती। तुम्हारा कज़िन है तो वह मुझे एक बददिमाग गधा लगता है—उससे घटिया जानवर की मैं कल्पना ही नहीं कर सकता। इससे ज़्यादा तकलीफदेह बात यह है कि आदमी खुलकर उससे यह बात कह भी नहीं सकता—उसकी सेहत को देखते हुए उसे उसका लिहाज़ करना पड़ता है। उसकी सबसे बड़ी खुशी ही यह है कि उसकी सेहत खराब है, इससे उसे और लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक सुविधाएं मिल जाती हैं। अगर सचमुच उसकी सेहत उतनी बुरी है तो इसका वह सिर्फ एक ही तरह से सबूत दे सकता है—पर वैसा उसका कोई इरादा नज़र नहीं आता। वह जो तुम्हारा महान् वारबर्टन है, उसके बारे में तो आदमी कहे ही क्या? जो बेरुखी उस भले आदमी ने दिखाई, उसकी तो मिसाल ही नहीं। आप किसीकी लड़की को आकर ऐसे देखते हैं, जैसे रिहायश की कोई जगह देख रहे हों। आकर थोड़ा दीवारों को ठोंका, दरवाज़े के दस्तों को आज़माया, खिड़कियों से बाहर झांककर देखा और लगभग तय कर लिया कि जगह ले लेंगे। दूसरे से पूछा कि क्या वह उसका कागज़ लिखने को तैयार होगा। पर तब और सोचकर सिर हिला दिया कि कमरे बहुत छोटे हैं, कि तीसरी मंज़िल पर रह पाना ज़रा मुश्किल होगा, और कि कोई दूसरी बेहतर जगह देखनी चाहिए। बस महीना भर मुफ्त वहां रहे, और चल दिए। यह मिस स्टैंकपोल तो खैर तुम्हारा सबसे अद्भुत आविष्कार है। मुझे तो वह एक डायन-सी नज़र आती है। नज़र पड़ते ही आदमी के शरीर की नस-नस सिहर उठती है। तुम्हें पता ही है मैंने औरत तो उसे कभी समझा ही नहीं। उसे देखकर पता है मुझे किसका ध्यान आता है? एक नई फौलादी निब की कलम का, जिससे भद्दी कुदरत में और कोई चीज़ नहीं है। उसकी बातचीत वैसी ही होती है—जैसी फौलाद की कलम की लिखाई। अच्छा बताओ वह अपनी चिट्ठियां लकीरदार कागज़ पर नहीं लिखती? वह जैसे बात करती है, ठीक वैसे ही सोचती है, वैसे ही लिखती है, वैसे ही चलती है और वैसे ही नज़र आती है। तुम कहोगी कि जब वह मेरे सामने ही नहीं पड़ती तो मुझे किस चीज़ की तकलीफ होती है? ठीक है वह मेरे सामने नहीं पड़ती। पर उसकी आवाज़ तो सारा-सारा दिन मेरे कानों में गूंजती रहती है? वह 'आवाज़' मेरे कानो में अटकी है, और उससे मेरा छुटकारा नहीं है। मुझे सब पता है वह कब क्या कहती है, और आवाज़ की किस लचक के साथ कहती है। वह मेरे बारे में

बहुत खूबसूरत बातें कहती रहती है और तुम सुन-सुनकर खुश होती रहती हो। मुझे यह बिलकुल पसन्द नहीं कि वह मेरे बारे में बात करे। मुझे इससे ऐसा लगता है जैसे कोई नौकर मेरा हैट अपने सिर पर रखकर घूम रहा है।"

पर हैनरीटा ऑसमण्ड के बारे में जितना कि वह सोचता था उससे कहीं कम बात करती थी। इज़ाबेल ऑसमण्ड को इसका विश्वास दिलाने का भी प्रयत्न करती थी। हैनरीटा के पास बात करने के कई और विषय थे जिनमें से दो में हमारे पाठक विशेष रूप से दिलचस्पी ले सकते हैं। एक तो वह इज़ाबेल को यह बताती रहती थी कि कैस्पर गुडवुड ने उसके सुखी न होने की बात अपने-आप जान ली है। हालांकि उसकी चतुराई इस बात की व्याख्या नहीं कर पाती थी कि रोम आकर भी जो गुडवुड इज़ाबेल से मिलने नहीं आता, उससे वह इज़ाबेल को क्या तसल्ली देना चाहता है। दो बार उन्होंने उसे सड़क पर देखा था पर वह जैसे बिना उन्हें देखे ही पास से गुज़र गया था। वे लोग गाड़ी में थीं, पर गुडवुड इस तरह नाक की सीध में देखकर चलता था, जैसे कि एक वक्त पर सिर्फ एक ही चीज़ उसकी आंखों में समा सकती हो। इज़ाबेल को ऐसे लगा था जैसे वह अभी परसों ही उससे मिली हो। उसका ठीक वही अन्दाज़ और वही चाल थी जब वह उससे आखिरी बात करने के बाद मिसेज़ टाउशेट के दरवाज़े से निकलकर गया था। कपड़े भी उसने उस दिन जैसे ही पहन रखे थे। इज़ाबेल को उसके गुलुबन्द का रंग अब तक याद था। पर इतना परिचित होते हुए भी उसके आकार में कुछ अजनबीपन भी था, जिससे इज़ाबेल को फिर से लगा कि उसका रोम में आना एक दुर्घटना की तरह है। वह उन्हीं दिनों काफी लम्बा-तड़ंगा था, पर अब तो पहले से भी लम्बा और ऊंचा नज़र आने लगा था। इज़ाबेल ने यह भी लक्ष्य किया कि उसके पास से गुज़रते हुए लोग एक बार मुड़कर उसकी तरफ देख लेते हैं, पर वह फरवरी के आसमान की तरफ चेहरा उठाए सीधा अपनी चाल चला जाता है।

मिस स्टैकपोल का दूसरा विषय इससे बहुत अलग था। वह इज़ाबेल थी मिस्टर बैंटलिंग के नये समाचार सुनाती रहती। वह पिछले साल अमरीका आया था और तब उसने वहां उसकी काफी खातिरदारी की थी। बैंटलिंग को वह सब कितना अच्छा लगा यह वह नहीं कह सकती थी, पर उसके अपने ख्याल में उस आदमी ने वहां काफी कुछ हासिल किया था। वह लौटते समय बिलकुल वैसा ही नहीं था जैसा कि आने के समय था। वहां आकर उसकी आंखें खुल गई थीं। उसे

पता चल गया था कि इंग्लैंड ही, सब कुछ नहीं है। अक्सर जगहों पर लोगों ने उस आदमी को बहुत पसन्द किया था और उन्हें वह बहुत सादा लगा था आम-तौर से वे अंग्रेजों को उतना सादा नहीं समझते थे। कुछ लोगों का यह भी ख्याल था कि वह बनता है—वह नहीं कह सकती थी कि वह लोग बैंटलिंग की सादगी को ही बनना समझते थे या क्या। "कई बार तो वह बहुत ही फूहड़ किस्म के सवाल पूछ लेता था। उसे ख्याल था कि सभी घरेलू नौकरानियां किसानों की लड़कियां होती हैं—या शायद सभी किसानों की लड़कियां घरेलू नौकरानियां होती हैं—इन दोनों में से एक बात थी, जाने कौन-सी। वहां की महान् स्कूल व्यवस्था को तो वह समझ ही नहीं पाया था—वह उसकी पहुंच से बाहर की चीज थी। कुल मिलाकर उसके व्यवहार से लगा था जैसे उसे आसपास हर चीज की मात्रा बहुत अधिक लगती हो, जिसमें से वह एक छोटा-सा अंश ही ग्रहण कर सकता हो। जो अंश उसने चुना था उसका सम्बन्ध होटल व्यवस्था और जल-भ्रमण से था। होटलों ने तो सचमुच उसे मुग्ध ही कर दिया था—जहां जिस होटल में भी वह ठहरा था, उसका फोटोग्राफ उसने अपने पास रख लिया था। पर उसकी मुख्य दिलचस्पी जलयानों में थी। घूमने की बड़ी-सी नाव मिल जाए तो उसे और कुछ नहीं चाहिए था। न्यूयार्क से मिलवॉकी तक उन दोनों ने साथ-साथ यात्रा की थी। रास्ते में कई दिलचस्प शहरों में वे ठहरे थे। पर जब भी आगे चलने का मौका आता, वह यही पूछता क्या वे लोग स्टीमर से नहीं जा सकते। भूगोल का उस आदमी को रत्ती-भर भी ज्ञान नहीं था। उसका ख्याल था कि बैलटीमोर एक पश्चिमी शहर है और हर वक्त उसे लगता था कि वे लोग अब मिसीसिपी में पहुंचने वाले हैं। सिवा मिसिसिपी के उसने अमरीका के किसी दरिया का नाम सुना ही नहीं था। हडसन का तो वह अस्तित्व ही स्वीकार करने को तैयार नहीं था। हालांकि यह उसे मजबूरन मानना पड़ा कि हडसन का महत्त्व साइन से कुछ कम नहीं है। उन दोनों ने कितना ही अपना समय बड़ी गाड़ियों में साथ-साथ बिताया था। बैंटलिंग हर जगह काले आदमी से आईसक्रीम मंगवा लेता था। उसे यह अविश्वसनीय-सा लगता था कि आदमी कार में बैठे-बैठे आईसक्रीम मंगवा सकता है। इंग्लैंड की कारों में कुछ भी मंगवाना सम्भव नहीं—न पंखे, न कैण्डी, न कुछ और। गर्मी के मारे बेचारे का बुरा हाल रहता था—शायद उतनी गर्मी उसने ज़िन्दगी में कभी नहीं सही थी। अब वह इंग्लैंड में शिकार कर

रहा था—हैनरीटा के शब्दों में 'शिकार मार' रहा था। अमरीका में इस तरह के मनोरंजन केवल रैड-इण्डियन लोगों के लिए थे। सफेद चमड़ी के लोग उस युग से बहुत आगे निकल आए थे, जब जानवरों का पीछा करना एक मन-बहलावा समझा जाता था। इंग्लैंड में लोग समझते हैं कि हम लोग भाले लिए और पंख लगाए घूमते हैं। पर आदतों को देखा जाए तो वह देश अंग्रेज़ों के ज़्यादा अनुकूल है। अब मिस्टर बैंटलिंग को इटली में तो उससे मिलने आने की फुर्सत मिलेगी नहीं, पर जब वह पेरिस जाएगी तो वहां आशा है कि वह ज़रूर आएगा। वह बहुत चाहता है कि एक बार वरसेल्ज़ फिर से देखे—पुराना शासन उसे बहुत पसन्द था। वह बैंटलिंग से सहमत नहीं थी, पर उसे वरसेल्ज़ इसलिए पसन्द था कि वह पुराने शासन के ध्वंस का प्रमाण था। अब कोई ड्यूक और मारक्विस वहां नहीं थे। बल्कि एक दिन तो सिवाय पांच अमरीकन परिवारों के और कोई वहां टहलता नजर नहीं आया था। बैंटलिंग की बहुत इच्छा थी कि वह फिर एक बार इंग्लैंड के बारे में लिखना शुरू करें। वह समझता था कि इस बार जो वह लिखेगी वह पहले से बेहतर होगा, क्योंकि इन दो-तीन सालों में इंग्लैंड काफी बदल गया है। वह तय किए था कि इस बार जब भी वह इंग्लैंड जाए उसे उसकी बहन लेडी पेंसिल से ज़रूर मिलना चाहिए—इस बार निमन्त्रण सीधे उसीको मिलेगा। पिछले निमन्त्रण के रहस्य पर उसने कोई प्रकाश नहीं डाला। आखिर एक दिन कैस्पर गुडवुड पालाज़ो राकेनेरा में आ पहुंचा। इज़ाबेल को एक रुक्का लिखकर उसने इसकी इजाज़त ले ली थी। इजाज़त तुरन्त मिल गई थी। इज़ाबेल ने लिखा था कि वह शाम को छः बजे घर पर होगी। दिन-भर वह सोचती रही कि वह किस मतलब से आ रहा है और क्या चाहता होगा। अब तक जो रूप इसका सामने आया था, उसमें समझौते का कोई अवकाश नहीं था। या, तो उसके मन की बात ज्यों का त्यों पूरी होनी चाहिए थी, या फिर उसे कुछ नहीं चाहिए था। पर उसका स्वागत करने में इज़ाबेल ने किसी प्रश्न को बीच में नहीं आने दिया। उसके सामने दिखावटी खुशी ओढ़ने में उसे कठिनाई नहीं हुई। इज़ाबेल का विश्वास था कि वह इसमें सफल रही है और गुडवुड ने यही समझा है कि उसे जो सूचना मिली थी, वह गलत थी। पर साथ ही इज़ाबेल को यह भी लगा कि वह इससे निराश नहीं हुआ—उसकी जगह कोई और होता तो ज़रूर निराश होता।

उसके आने का कारण इज़ाबेल नहीं जान सकी। कैस्पर ने इस सम्बन्ध में

कुछ नहीं कहा। सिवाय इसके कि वह उससे मिलना चाहता था, बस। उसके शब्दों में जैसे वह सिर्फ अपने मन बहलाव के लिए आया था। इज़ाबेल ने तत्परतापूर्वक इससे अपना ही निष्कर्ष निकाल लिया और उससे अब ऐसे फारमूले का रूप दे दिया जिससे गुडवुड की पुरानी शिकायत को दफनाया जा सकता था। अगर तो वह अपने मन बहलाव के लिए ही रोम आया था, तो यही चीज़ वह चाहती भी थी। क्योंकि इसका मतलब था कि वह अब तक अपनी मानसिक व्यथा पर काबू कर चुका था। अगर वह अपनी व्यथा पर काबू पा चुका था तो इसका मतलब था कि सब कुछ ठीक हो गया था और उस पर अब कोई ज़िम्मेदारी नहीं थी। यह सच था कि कैस्पर बहुत खुलकर अपना मनोरंजन नहीं कर पा रहा था। पर खुलना और अपने को ढीला छोड़ना उस आदमी के स्वभाव में था ही नहीं। इसलिए हर लिहाज़ से यह सोचा जा सकता था कि वह जो कुछ देख रहा है उससे सन्तुष्ट है। वह हैनरीटा का विश्वासपात्र था, पर हेनरीटा उसकी विश्वासपात्र नहीं थी। इसलिए वह आदमी क्या सोचता है इसपर उस दिशा से कोई प्रकाश नहीं पड़ सकता था। साधारण विषयों पर वह आदमी बहुत कम बात कर सकता था। इज़ाबेल को बरसों पहले उसके बारे में कहीं अपनी एक बात याद हो आई थी। "मिस्टर गुडवुड बोलता तो बहुत है, पर बात नहीं कर पाता।" बोलता वह अब भी बहुत था, पर बात उतनी ही कम करता था—हालांकि रोम में कई चीजें थीं जिनके बारे में बात की जा सकती थी। कैस्पर के आने से ऑसमण्ड के साथ इज़ाबेल के सम्बन्ध सुलझ जाते, ऐसी भी कोई बात नहीं थी। ऑसमण्ड को इज़ाबेल के सभी मित्रों से चिढ़ थी और उसकी नज़र में गुडवुड का सिवाय इसके कोई महत्त्व नहीं था कि वह इज़ाबेल के पहले के मित्रों में से है। इज़ाबेल उसका सिर्फ इतना ही परिचय दे सकती थी कि वह उसे बहुत पहले से जानती है, और इस संक्षिप्त परिचय में और तथ्यों के लिए गुंजाइश नहीं थी। गिलबर्ट से गुडवुड का परिचय उसे कराना पड़ा था, क्योंकि बृहस्पतिवार शाम को वे लोग जो डिनर दिया करते थे, उसमें गुडवुड को निमंत्रित न करना सम्भव नहीं था। वह इन डिनर पार्टियों से ऊब चुकी थी पर ऑसमण्ड उस क्रम को बनाए रखना चाहता था—उतना लोगों को अपने यहां बुलाने के लिए नहीं, जितना कुछ लोगों को न बुलाने के लिए।

गुडवुड हर बृहस्पतिवार को बहुत संजीदगी के साथ वक्त से कुछ पहले ही

पहुंच जाता। उसकी नज़र में जैसे यह एक गम्भीर अवसर होता था। कभी-कभी इज़ाबेल को उस पर गुस्सा भी आ जाता, क्योंकि वह आदमी हर शब्द का अर्थ अमिधा में लेता था। इज़ाबेल सोचती कि उस आदमी को कुछ तो पता होना चाहिए कि वह कैसे उसकी बातों से सकपका जाती है। मूर्ख वह उसे नहीं कह सकती थी—नहीं मूर्ख वह बिलकुल नहीं था—सिर्फ जरूरत से ज्यादा ईमानदार था। ऐसी ईमानदारी उसे दूसरे लोगों से बिलकुल अलग कर देती थी—इसके लिए ज़रूरत थी कि दूसरा भी उसके साथ उतना ही ईमानदार हो। यह बात इज़ाबेल के मन में तब आई थी जबकि वह सोच रही थी कि उसने शायद गुडवुड को कहीं यह विश्वास दिला दिया है कि वह एक छिछले मन की स्त्री है। गुडवुड ने कभी इस सम्बन्ध में आशंका नहीं उठाई थी, न ही कभी उससे कोई व्यक्तिगत प्रश्न पूछा। उसकी ऑसमण्ड से खासी अच्छी निभ जाती थी—आशा से कहीं ज्यादा। ऑसमण्ड की आदत थी कि उस पर यदि निर्भर किया जाए, तो हमेशा वह आदमी को निराश करने की कोशिश करता था। इसी सिद्धान्त के अनुसार उसने गुडवुड की सपाट निर्भरता को देखते हुए उसके प्रति एक ठंडा लहजा अपनाकर अपना मनोरंजन करना चाहा था। ऑसमण्ड ने इज़ाबेल से पूछा कि क्या कभी गुडवुड भी उससे विवाह करना चाहता था। उसने आश्चर्य भी प्रकट किया कि इज़ाबेल इसके लिए रजामंद क्यों नहीं हुई। वह उससे विवाह कर लेती तो कितना अच्छा होता—उसकी ज़िन्दगी जैसे एक बड़े घण्टाघर के साये में बीतती जो कि हर घण्टे के बाद टन-टन करता रहता और ऊपर की हवा में एक विचित्र सरसराहट भरता। ऑसमण्ड ने यह भी कहा कि उसे ग्रेट गुडवुड से बात करने में काफी मज़ा आता है। शुरू में तो उसे यह आसान नहीं लगा था क्योंकि उसके लिए एक ढालू ज़ीने पर लम्बी चढ़ाई चढ़ने की ज़रूरत थी ताकि ऊपर के गुंबद पर पहुंचा जा सके। पर एक बार वहां पहुंच जाने पर वहां से नज़ारा बहुत अच्छा दिखाई देता था, और थोड़ी बहुत ताज़ा हवा भी वहां थी। हम जानते हैं कि ऑसमण्ड में कई लुभाने वाली विशेषताएं भी थीं, और वह गुडवुड को उनका पूरा फायदा पहुंचा रहा था। इज़ाबेल देख रही थी कि आसमण्ड के बारे में गुडवुड की राय उसकी कामना से कहीं अच्छी है। उस दिन फ्लोरेंस में तो ऐसा लगा था जैसाकि गुडवुड पर किसी का अच्छा प्रभाव पड़ ही न सकता हो। गिलबर्ट अक्सर उसे डिनर पर बुला लेता। बाद में गुडवुड-ऑसमण्ड के साथ सिगार पीता और उससे अपना

संग्रह दिखाने को कहता। गिलबर्ट इज़ाबेल से कहता कि गुडवुड में उसे बहुत मौलिकता नजर आती है—कि वह आदमी अच्छे ढंग के एक मज़बूत इंगलिश पोर्टमेंटो की तरह है जिसके बेशुमार फीते और बकल कभी टूटने का नाम नहीं लेंगे और जिसका ताला भी बहुत बढ़िया और मज़बूत है। गुडवुड अपना काफी समय कम्पाग्ना में घुड़सवारी करते बिताता था, इसलिए इज़ाबेल को वह प्रायः शाम को ही मिलता था। एक दिन इज़ाबेल ने उससे पूछ लिया कि क्या वह उसका एक छोटा-सा काम कर सकता है। फिर मुस्कराकर उसने कहा, "कह नहीं सकती कि मुझे तुमसे अपना कोई काम कहने का हक है या नहीं।"

"तुम से ज्यादा दुनिया में किसी को हक नही है," वह बोला। "जैसा वचन मैंने तुम्हें दे रखा है, वैसा कभी किसी को नहीं दिया।"

काम यह था कि वह अकेला होटेल डि पैरिस जाकर रैल्फ को, जो कि वहां बीमार पड़ा था, देख आये, और वहां उससे जितना अच्छा व्यवहार कर सके करे। चाहे गुडवुड ने उसे कभी नहीं देखा, फिर भी वह उस बेचारे को जानता तो है ही—अगर वह गलती नहीं करती तो एक बार रैल्फ ने उसे गार्डनकोर्ट आने का निमन्त्रण भी दिया था। कैस्पर को उस निमन्त्रण की अच्छी तरह याद थी, और चाहे उसकी कल्पनाशक्ति बहुत तेज़ नहीं थी, फिर भी रोम की एक सराय में अपनी आखिरी सांस लेते उस आदमी की स्थिति का अनुमान कर पाना उसके लिए असम्भव नहीं था। वह होटेल डि पैरिस चला गया। वहां जब उसे गार्डनकोर्ट के स्वामी के पास ले जाया गया तो उसने देखा कि मिस स्टैकपोल भी वहां पास के सोफे पर बैठी है। रैल्फ टाउशेट के साथ इस महिला के सम्बन्धों में खासा परिवर्तन आ गया था। इज़ाबेल ने उससे रैल्फ से मिलने को नहीं कहा था, पर यह जानकर कि वह अपनी बीमारी के कारण बाहर नहीं निकल सकता, वह तुरन्त अपने से ही उससे मिलने पहुंच गई थी। तब से वह रोज़ उससे मिलने जाती थी—मन में यह विश्वास लिए कि वे दोनों बहुत बड़े दुश्मन हैं। "हां, हां, हम बहुत गहरे दुश्मन हैं," रैल्फ उससे कहता। उसे स्थिति में जितनी बार उससे बन पड़ता, उतनी बार वह उस पर फब्ती कसता कि वह उसे परेशान करके उसकी जान लेने आई है। वास्तव में वे बहुत अच्छे मित्र बन गए थे। हैनरीटा को आश्चर्य होता था कि पहले वह उस आदमी को पसन्द क्यों नहीं कर सकी। रैल्फ के मन में हेनरीटा के लिए अब भी वही भाव था जो पहले

था—उसे कभी सन्देह नहीं रहा था कि हेनरीटा बहुत अच्छी लड़की है। वे दोनों हर विषय में बात करते और हर विषय में उनका मतभेद रहता—केवल इज़ाबेल को छोड़कर। इज़ाबेल की बात करते हुए रैल्फ जैसे अपनी दुबली-सी उंगली अपने होंठों पर रखे रहता। पर मिस्टर बैंटलिंग के बारे में वह बहुत खुलकर बात कर लेता था—घंटों उसके और हेनरीटा के बीच मिस्टर बैंटलिंग की चर्चा होती रहती थी। चर्चा को प्रोत्साहन प्रायः उनके मतभेद से ही मिलता था। रैल्फ अपने मनोरंजन के लिए यह दृष्टिकोण अपनाये रहता था कि वह भूतपूर्व गार्ड्स-मैन, जो इतना मिलनसार है दरअसल बहुत घुन्ना है। कैस्पर गुडवुड इस वाद-विवाद में तो कोई हिस्सा नहीं ले सकता था, पर जब वह रैल्फ के साथ अकेला रह गया, तो उसे लगा कि कहां और ऐसे विषय हैं जिन पर वे लोग बात कर सकते हैं। एक विषय तो वह महिला ही थी जो अभी-अभी उठकर वहां से गई थी। कैस्पर बिना किसी तर्क के मिस स्टैकपोल की सब विशेषताएं स्वीकार करने को तैयार था—इससे ज़्यादा उसके बारे में कहने को उसके पास कुछ नहीं था। उसके बाद शुरू के हल्के-से जिक्र को छोड़कर मिसेज़ ऑसमण्ड के बारे में भी वे ज़्यादा बात नहीं कर सके—इस विषय के खतरों का गुडवुड को भी उतना ही अहसास था जितना रैल्फ को। रैल्फ को अफसोस हुआ कि वह इस आदमी के लिए, जो कि अपनी तरह का एक ही है, कुछ नहीं कर सकता—उसे यह असह्य-सा लगा कि कोई आदमी इतना भला हो—औघड़ होते हुए भी इतना भला कि कोई उसके लिए कुछ कर ही न सके। पर गुडवुड को हमेशा दूसरे के लिए कुछ न कुछ करने को मिल जाता था। और इस बार इसी दृष्टि से उसने बार-बार होटेल डि पैरिस आना शुरू कर दिया। इज़ाबेल का ख्याल था कि उसने यह बहुत चतुराई का काम किया है जो कैस्पर जैसे फालतू आदमी को तरीके से इस काम में उलझा दिया है। कैस्पर को इस तरह उसने व्यस्त कर दिया था, और रैल्फ को देख-भाल के लिए एक आदमी दे दिया था। उसकी योजना थी कि ज्यों ही मौसम ज़रा सुधरेगा वह कैस्पर को रैल्फ के साथ उत्तर की यात्रा पर भेज देगी। लार्ड वारबर्टन रैल्फ को रोम लेकर आया था और गुडवुड उसे वहां से ले जायेगा। इसमें उसे एक अच्छी संगति नज़र आ रही थी, क्योंकि अब वह बहुत उत्सुक थी कि रैल्फ वहां से चला जाए। उसे हर वक्त डर बना रहता था कि कहीं वहां उसकी आंखों के सामने ही रैल्फ की मृत्यु न हो जाय। उसे इस कल्पना से

ही डर लगता था कि उसके घर के पास ही एक सराय में यह दुर्घटना हो सकती है—जबकि उस सराय के अन्दर दाखिल होने का मौका रैल्फ के लिए इतना कम आया था। वह चाहती थी कि रैल्फ अपनी आखिरी नींद अपने ही घर में सोए—गार्डनकोर्ट के उन ऊंचे अंधेरे कमरों में से किसी एक में जहां चमकती खिड़की के कोनों पर सिरपेचें की स्याह टहनियां गुथी-उलझी होंगी। इन दिनों इज़ाबेल को गार्डनकोर्ट में एक पवित्रता का अहसास होता था। अतीत का कोई अध्याय उसके लिए अपनी पहुंच से उतना परे नहीं था। जो महीने उसने गार्डनकोर्ट में बिताए थे, उनकी याद करके उसकी आंखों में आंसू भर आते। उसे अपनी प्रवीणता का काफी मान था पर अब यह आवश्यकता भी महसूस होती थी कि वह जो कुछ संजो सके संजो ले, क्योंकि बहुत-सी घटनाएं ऐसी थीं जो उसे अपनी उपेक्षा और अवहेलना करती जान पड़ती थीं। काउंटेस जेमिनी फ्लोरेंस से वहां आ पहुंची थी—अपने साथ ढेरों ट्रंक, पोशाकें, झूठ-फरेब, बकवास खिलखिलाहट और अपने असंख्य प्रेमियों के विचित्र लिजलिजे किस्से लिए हुए। एडवर्ड रोजियर, जो जाने कहां चला गया था—यहां तक कि पैंजी को भी इसका पता नहीं था—अचानक फिर रोम में प्रकट हो गया था, और उसे लम्बे-लम्बे पत्र लिखने लगा था, जिनका कि वह उसे उत्तर नहीं देती थी। मैडम मरले भी नेपल्ज से लौट आई थी, और अजीब मुस्कराहट के साथ उसने उससे कहा था, "इस बीच लार्ड वारबर्टन को तुमने क्या कर दिया ?" जैसे कि इससे उसका कुछ सरोकार हो।

४८

फरवरी के अन्त में एक दिन रैल्फ टाउशेट ने वापस इंग्लैण्ड जाने का निश्चय कर लिया। कारण उसके अपने थे जो वह किसीको बताने के लिए बाध्य नहीं था। पर हेनरीटा स्टैकपोल को उसके इरादे का पता चला तो उसने मन ही मन कहा कि उसे पता है वह क्यों जा रहा है। पर मुंह से उसने यह प्रकट नहीं होने दिया। पल-भर बाद सोफे के पास बैठते हुए सिर्फ इतना ही कहा, "तुम्हें पता है तुम अकेले नहीं जा सकते ?"

"मेरा अकेले जाने का कतई इरादा नहीं है," रैल्फ ने जवाब दिया। "कुछ लोग मेरे साथ रहेंगे।"

" 'कुछ लोग' से तुम्हारा मतलब ? तनखाह लेने वाले नौकर ?"

"ओह।" रैल्फ पुरमज़ाक ढंग से बोला। "वे भी तो आखिर इनसान हैं।"

"कोई स्त्री भी उनमें रहेगी ?" मिस स्टैकपोल ने जिज्ञासा प्रकट की।

"तुम तो ऐसे बात कर रही हो जैसे एक दर्जन मेरे पास हों। ना, नौकरानी मेरे यहां एक भी नहीं है।"

"तो तुम इस तरह इंग्लैण्ड नहीं जा सकते," हेनरीटा शान्त स्वर में बोली। "तुम्हें एक स्त्री की देखभाल की ज़रूरत होगी।"

"वह तो पिछले पन्द्रह दिन तुमने इतनी ज़्यादा की है कि अभी काफी दिन उससे काम चल जाएगा।"

"मैंने अभी काफी देखभाल नहीं की। मेरा ख्याल है मुझे तुम्हारे साथ जाना होगा," हेनरीटा बोली।

"तुम मेरे साथ जाओगी ?" रैल्फ ने आहिस्ता से अपने को सोफे से ऊंचा उठा लिया।

"मुझे पता है तुम मुझे पसन्द नहीं करते, फिर भी मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी। तुम्हारी सेहत की बेहतरी इसीमें है कि तुम लेटे रहो।"

"रैल्फ पल-भर उसे देखता रहा," फिर धीरे से लेट गया। "मैं तुम्हें बहुत पसन्द करता हूं," उसने पल-भर बाद कहा।

मिस स्टैकपोल इस पर हंस दी, हालांकि वह कम ही कभी हंसती थी। "यह मत समझो कि इस तरह तुम मुझसे छुटकारा पा जाओगे। मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी, और उससे भी बड़ी बात यह कि तुम्हारी देखभाल करूंगी।"

"तुम बहुत अच्छी स्त्री हो," रैल्फ बोला।

"यह बात तब कहना जब मैं तुम्हें सही-सलामत घर पहुंचा दूं। यह आसान काम नहीं है। पर खैर तुम्हें जाना तो चाहिए ही।"

हेनरीटा के वहां से चलने के पहले रैल्फ ने उससे कहा, "तुम सचमुच मेरी देख-भाल करना चाहती हो ?"

"मैं कोशिश करना चाहती हूं।"

"तो मैं तुम्हें सूचना देता हूं कि मैं अपने को तुम्हारी मर्ज़ी पर छोड़ रहा हूं,

बिलकुल छोड़ रहा हूं।" और शायद यह इसी बात का प्रमाण था कि अकेला रह जाने पर कुछ पल बाद वह एकाएक खिलखिलाकर हंस उठा। उसे यह बात बहुत बेतुकी लग रही थी—और इस बात का निश्चित प्रमाण भी कि उसकी सोच-समझ और काम करने की शक्ति बिलकुल जवाब दे गई है—कि वह मिस स्टैकपोल के निरीक्षण में यूरोप के उस छोर तक यात्रा करने जा रहा है। सबसे बड़ा बेतुकापन तो यही था कि उसे इससे खुशी हो रही थी—उस खुशी में कृतज्ञता और मजे से निष्क्रिय ही रहने का भाव भी था। वह वहां से चलने के लिए उतावला था और बहुत चाह रहा था कि अपने पुराने घर को फिर से देख सके। हर चीज का अन्त अब पास ही था—उसे लगता था वह हाथ बढ़ाकर उस लक्ष्य को छू सकता है। पर वह मरना अपने घर में चाहता था। यही एक इच्छा उसके मन में शेष रह गई थी कि वह उसी बड़े से खामोश कमरे में जाकर अपने को पसार ले जिसमें उसने अपने पिता को अन्तिम बार लेटे देखा था, और वहीं से एक गर्मी की सुबह को देखता हुआ अपनी आंखें मूंद ले।

उसी दिन कैस्पर गुडवुड भी उसे मिलने आया। रैल्फ ने गुडवुड को बताया कि मिस स्टैकपोल ने उसकी जिम्मेदारी अपने हाथ में ले ली है और उसे वापस इंग्लैंड ले जा रही है। "ओह," कैस्पर बोला, "तब तो गाड़ी का पांचवां पहिया मैं रहूंगा। मिसेज ऑसमण्ड ने मुझसे वचन ले रखा है कि मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा।"

"मेरे ईश्वर! यह तो स्वर्णयुग है। तुम सब कितने अच्छे हो।"

"मेरी अच्छाई इजाबेल के लिए है, तुम्हारे लिए नहीं।"

"यह मान लिया जाए, तो वह कितनी अच्छी है," रैल्फ मुस्कराया।

"इसलिए कि वह किसी को तुम्हारे साथ भेज रही है? हां एक तरह से तो यह अच्छा ही है," गुडवुड ने मजाक को टालते हुए उत्तर दिया। "जहां तक मेरा सवाल है, मैं कह सकता हूं कि मिस स्टैकपोल के साथ अकेले यात्रा करने से मेरे लिए कहीं अच्छा कि मैं तुम दोनों के साथ यात्रा करूं।"

"और तुम्हारा बस हो तो तुम किसीके साथ न जाकर यहीं बने रहो," रैल्फ बोला, "पर तुम्हारे चलने की कोई जरूरत ही नहीं है। हेनरीटा अकेली ही काफी है।"

"यह मैं जानता हूं, पर मैं मिसेज ऑसमण्ड को वचन दे चुका हूं।"

"तुम उससे कहकर आसानी से छुट्टी पा सकते हो।"

"वह किसी हालत में भी मुझे छुट्टी नहीं देगी। वह चाहती है कि मैं तुम्हारी देख-भाल करूं। पर मुख्य बात यह नहीं है। मुख्य बात यह है कि वह मुझे रोम से भेजना चाहती है।"

"तुम इसमें से ज़रूरत से ज़्यादा मतलब निकाल रहे हो," रैल्फ बोला।

"मैं उसे उबा देता हूं।" गुडवुड कहता रहा। "उसे मुझसे करने को कोई बात नहीं सूझती। इसलिए उसने यह तरीका निकाला है।"

"ठीक है अगर उसे तुम्हारे चले जाने से ही सुविधा लगती है तो मैं तुम्हें साथ ले जाऊंगा। पर ऐसा होने की मुझे कोई वजह नज़र नहीं आती," रैल्फ पल-भर रुककर बोला।

"उसे लगता है," कैस्पर ने सादगी के साथ कहा, "कि मैं उसपर निगाह रख रहा हूं।"

"निगाह रख रहे हो?"

"यह जानने की कोशिश कर रहा हूं कि वह खुश हुई या नहीं।"

"यह जानना तो बहुत आसान है," रैल्फने बोला, "ज़ाहिरा तौर पर इतनी खुश और स्त्री मैंने नहीं देखी।"

"ठीक बात है, मुझे भी इसकी तसल्ली है," गुडवुड ने रूखे स्वर में कहा। पर रूखेपन के बावजूद उससे आगे कहे बिना नहीं रहा गया," मैं उसे देखता रहा हूं। एक पुराना मित्र होने के नाते मेरा ख्याल था कि मुझे इसका अधिकार है। वह दिखावा करना चाहती है कि वह खुश है, क्योंकि इसीके लिए वह प्रयत्नशील थी। मैंने सोचा था एक बार देख लूं कि उस खुशी का वास्तविक रूप क्या है। अब मैंने देख लिया है," उसके स्वर में एक तीखी ध्वनि आ गई। "और अब और नहीं देखना चाहता। अब मैं यहां से जाने के लिए बिलकुल तैयार हूं।"

"मुझे भी लगता है कि तुम्हें अब चले ही जाना चाहिए," रैल्फ बोला। इज़ाबेल ऑसमण्ड के बारे में उन दोनों में बस इतनी ही बात हुई।

हेनरीटा अपने चलने की तैयारी कर रही थी। उसी तैयारी में उसने कुछ शब्द काउंटेस जेमिनी से कहे। काउंटेस जेमिनी उसके मेंशन में उससे मिलने आई थी, क्योंकि पहले वह फ्लोरेंस में काउंटेस के यहां जा चुकी थी। "लार्ड वारबर्टन के बारे में तुम बहुत गलत सोचती थीं," उसने काउंटेस से कहा, "मैंने सोचा तुम्हें

यह बता तो दूं ही।"

"उसके इज़ाबेल से प्रेम की बात ? तुम्हें पता है वह दिन में तीन-तीन बार उसके यहां आता था। उसके आने-जाने के निशान अब भी वहां मौजूद हैं," काउंटेस चिल्लाकर बोली।

"वह तुम्हारी भांजी से ब्याह करना चाहता था। इसीलिए वह वहां आया करता था।"

काउंटेस पहले तो उसे ताकती रही, फिर भौंडे ढंग से हंस दी। "तो इज़ाबेल ने तुम्हें यह कहानी घड़कर सुनाई है ? मगर ऐसी बात होती तो कुछ बुरा नहीं था। वह अगर मेरी भांजी से ब्याह करना चाहता है तो कर क्यों नहीं लेता ? शायद वह ब्याह की अंगूठी खरीदने गया है, और मेरे जाने के बाद अगले महीने तक लेकर आता ही होगा।"

"वह वापस नहीं आएगा। मिस ऑसमण्ड उससे ब्याह नहीं करना चाहती।"

"लड़की काफी बातें संभाल रही है। मुझे पता था कि वह इज़ाबेल को बहुत चाहती है, पर इस हद तक चाहती है इसका पता नहीं था।"

"मुझे तुम्हारी बात समझ नहीं आ रही।" हेनरीटा ठंडे लहजे से बोली। उसकी ध्वनि यह भी थी कि काउंटेस खामखाह बुराई ढूंढ़ रही है। "मैं अपनी बात से नहीं हटूंगी। इज़ाबेल ने लार्ड वारबर्टन को कभी बढ़ावा नहीं दिया।"

"तुम्हें या मुझे इसका क्या पता हो सकता है ? हम तो इतना ही जानती हैं कि मेरा भाई कुछ भी कर सकता है।"

"तुम्हारा भाई क्या कर सकता है, यह मैं नहीं जानती," हेनरीटा गम्भीर भाव से बोली।

"मुझे यह शिकायत नहीं कि इज़ाबेल ने लार्ड वारबर्टन को बढ़ावा क्यों दिया," काउंटेस अपनी बात पर अड़ी रही। "मुझे शिकायत यह है कि उसने उसे वापस क्यों भेज दिया ? मैं उस आदमी से खासतौर पर मिलना चाहती हूं। क्या इज़ाबेल को ख्याल था कि मैं उस आदमी को फुसला लूंगी ? और यह तो साफ पता चलता है कि वह उसे मुट्ठी में किए है। घर में हर जगह उसकी मौजूदगी का पता चलता है—वह जैसे वहां हवा में भी समाया हुआ है। सचमुच वह अपनी छाप वहां छोड़ गया है और मुझे विश्वास है कि मेरा जरूर उससे सामना होगा।"

"हां-हां !" हेनरीटा पल-भर बाद अपनी उस सूझ-बूझ के साथ बोली जिससे

इण्टरव्यूअर के लिए पत्र लिखकर वह इतना पैसा कमाती थी। "इज़ाबेल की अपेक्षा तुम्हारे साथ उसे अधिक सफलता मिलेगी।"

जब हेनरीटा ने इज़ाबेल को बताया कि वह रैल्फ को साथ ले जा रही है तो इज़ाबेल ने उससे कहा कि इससे अच्छी खुशखबरी वह उसे और नहीं दे सकती थी। अपने मन के किसी कोने में उसे सदा से यह विश्वास रहा था कि हेनरीटा और रैल्फ के बीच मानसिक ताल-मेल होना ही चाहिए। "वह मुझे समझ पाता है या नहीं इसकी मुझे परवाह नहीं," हेनरीटा बोली, "बड़ी बात यह है कि उसकी मौत गाड़ी में नहीं होनी चाहिए।"

"ऐसा वह नहीं होने देगा," इज़ाबेल असीम विश्वास के साथ सिर हिलाकर बोली।

"उसका बस चलेगा, तब न। पर मुझे लगता है तुम हम सबको यहां से भेजना चाहती हो। पता नहीं तुम्हारे मन में क्या है।"

"मैं अकेली होना चाहती हूं।" इज़ाबेल बोली।

"घर में इतने लोगों के रहते, वह तो तुम हो नहीं सकतीं।"

"वे लोग कोमेडी के अभिनेता हैं। तुम लोग दर्शक हो।"

"तुम इसे कोमेडी कहती हो इज़ाबेल?" हेनरीटा ने मनहूस लहजे में पूछा।

"तुम इसे ट्रेजडी कह लो। पर मुझे असुविधा तुम लोगों के देखने से होती है।"

हेनरीटा ने अब भी पल-भर वही किया। "तुम्हारी हालत चोट खाए हरिण की-सी है, जोकि गहरी से गहरी छाया में घुस बैठना चाहता है," वह कह उठी, "तुम मुझे सचमुच बहुत असहाय नज़र आती हो।"

"मैं असहाय बिलकुल नहीं हूं। कितने ही काम हैं जो मुझे करने हैं।"

"मैं तुम्हारी नज़र से नहीं अपनी नज़र से कह रही हूं। मुझे उलझन हो रही है कि एक विशेष उद्देश्य से यहां आई भी, पर तुम्हें ज्यों की त्यों छोड़कर जा रही हूं।"

"ऐसा नहीं है," इज़ाबेल बोली, "तुम्हारे आने से मुझे काफी ताज़गी मिली है।"

"बहुत कम। उतनी ही जितनी एक खट्टे नींबू से मिल सकती है। अच्छा, मुझे एक बात का वचन दो।"

"ऐसा मैं नहीं कर सकती। अब मैं किसीको कोई वचन नहीं दूंगी। चार साल पहले एक गम्भीर वचन दिया था, जिसका मैं बहुत कम पालन कर सकी हूं।"

"उसके लिए तुम्हें प्रोत्साहन नहीं मिला। मैं तुम्हें बहुत प्रोत्साहन दूंगी। मैं तुमसे जो वचन चाहती हूं वह यह है कि हालत और खराब हो, इससे पहले ही तुम अपने पति को छोड़ दोगी।"

"और खराब ? और खराब क्या हो सकती है ?"

"यह कि तुम अपने चरित्र से डिग जाओ।"

"तुम्हारा मतलब मेरे स्वभाव से है ? वह नहीं बदलेगा," इज़ाबेल ने मुस्करा-कर उत्तर दिया। "उसका मैं खूब ख्याल रख रही हूं।" फिर मुंह दूसरी तरफ करके उसने कहा, "जिस सरसरी तौर पर तुम पति के छोड़ने की बात कर रही हो उससे मुझे बहुत बुरा लगता है। यह वही स्त्री कह सकती है जिसने कभी किसीको पति के रूप में न जाना हो।"

"देखो," हेनरीटा तर्क करने के ढंग से बोली, "हमारे पश्चिमी शहरों में यह आम होता है। हमें भविष्य का संकेत उन्हींसे लेना चाहिए," उसके तर्क का सम्बन्ध हमारे इतिहास से नहीं है, क्योंकि उसमें कई और धागे उलझे हैं।" रैल्फ के पास जाकर हेनरीटा ने उससे कहा कि वह जिस गाड़ी से कहे, उससे वह वहां से चलने को तैयार है। रैल्फ इससे तुरन्त चलने की तैयारी में लग गया। आखिर इज़ाबेल उससे मिलने के लिए आई, तो उसने भी इज़ाबेल से वही बात कही जो हेनरीटा कह चुकी थी। उसका भी ख्याल था कि इज़ाबेल उन सबसे छुटकारा पाने के लिए बहुत आतुर है।

पर इज़ाबेल ने इसका इतना ही उत्तर दिया कि रैल्फ के हाथ पर हाथ रख-कर मुस्कराती हुई धीमे स्वर में बोली, "ओह, रैल्फ !"

यह उत्तर काफी था और रैल्फ इससे सन्तुष्ट हो गया। पर उसी मज़ाक के लहजे में उसने फिर कहा, "जितना चाहता था उतना तुमसे मिलना नहीं हो सका। पर न मिलने से तो यह अच्छा ही था। फिर तुम्हारे बारे में सुनने को बहुत कुछ मिलता रहा है।"

"किससे ? तुम तो यहां बन्द पड़े रहे हो।"

"हवा से। सच और किसीसे नहीं। और किसीको मैं तुम्हारे बारे में बात नहीं करने देता था। सब तुम्हारे सौन्दर्य की प्रशंसा करते थे और मुझे यह बात

बहुत सपाट-सी लगती थी।"

"मुझे तुमसे और मिलना चाहिए था," इज़ाबेल बोली।

"सौभाग्यवश मैं विवाहित नहीं हूं। इसलिए जब कभी तुम इंग्लैण्ड आओगी तो मैं एक कुंवारे व्यक्ति की पूरी स्वतन्त्रता के साथ तुम्हारा स्वागत सत्कार कर सकूंगा।" वह इस तरह बात करता रहा जैसे कि उनका फिर से मिलना निश्चित हो, और इज़ाबेल के मन में यह धारणा बिठाने में वह सफल भी हुआ। उसने अपने सम्भावित अन्त की ओर—उस गर्मी के बाद तक जीवित न रह सकने की ओर—कोई संकेत नहीं किया।

इज़ाबेल ने भी अपनी ओर से इस सम्बन्ध में ख़ामोश रहना ही ठीक समझा। वस्तु-स्थिति तो स्पष्ट ही थी। उसकी तरफ उंगली उठाने की आवश्यकता नहीं थी। पहले के दिनों में ऐसा किया जा सकता था—हालांकि और मामलों की तरह इस मामले में भी रैल्फ का अहम् आड़े नहीं आता था। इज़ाबेल उसकी यात्रा की बात करती रही कि कहां-कहां उसे रुकना चाहिए और किस-किस चीज़ का ख्याल रखना चाहिए। "ख्याल रखने के लिए हेनरीटा है ही," रैल्फ बोला। "उसकी अन्तरात्मा बहुत महान है।"

"निस्सन्देह वह पूरी लगन से तुम्हारी देख-भाल करेगी।"

"करेगी? नहीं, कर रही है। मेरे साथ जाना वह अपना कर्त्तव्य समझती है। कर्त्तव्य क्या है, इसकी सीख तुम्हें उससे लेनी चाहिए।"

"उसकी कर्त्तव्य भावना बहुत बड़ी है," इज़ाबेल बोली। "और मैं इससे लज्जित महसूस करती हूं, क्योंकि जाना तो मुझे भी चाहिए तुम्हारे साथ।"

"तुम्हारे पति को यह अच्छा नहीं लगेगा।"

"हां उसे अच्छा नहीं लगेगा। फिर भी हो सकता है मैं चल पड़ूं।"

"तुम इतनी बड़ी कल्पना कर सकती हो, यह सचमुच चौंका देने वाली बात है। मेरी वजह से एक पति-पत्नी में झगड़ा हो—ख़ूब!"

"इसीलिए तो मैं नहीं चल रही," इज़ाबेल ने बिना अधिक स्पष्ट किए साधारण ढंग से कहा।

पर रैल्फ की समझ में पूरी बात आ गई। "हां यही तो—तुम्हें यहां कितने ही तो काम हैं।"

"वह बात नहीं है। मुझे सिर्फ डर लगता है," इज़ाबेल बोली। पल-भर बाद

उसने वही शब्द फिर दोहराए—जैसे रैल्फ को नहीं अपने को सुनाने के लिए, "मुझे सिर्फ डर लगता है।"

रैल्फ नहीं सोच सका कि उसके स्वर का क्या अर्थ लगाए—उस स्वर में एक विचित्र प्रयास था, भावना का स्पर्श उसमें नहीं था। क्या वह सबके सामने अपने दोष का प्रायश्चित्त करना चाहती थी, क्योंकि किसीने उसे दण्ड नहीं दिया था, या वह केवल जागरूक होकर आत्मविश्लेषण करने का ही प्रयत्न कर रही थी। खैर रैल्फ से इतना आसान मौका छोड़ा नहीं गया। "किससे—अपने पति से डर लगता है ?"

"अपने से डर लगता है," वह उठती हुई बोली। पल-भर खड़ी रहने के बाद उसने कहा। "अगर मैं अपने पति से डरूं तो वह तो मेरा कर्तव्य ही होगा। स्त्रियों से इसकी आशा की ही जाती है।"

"ठीक है," रैल्फ हंस दिया। "पर इसकी क्षतिपूर्ति इससे हो जाती है कि कोई-कोई पुरुष भी किसी-किसी स्त्री से बहुत डरता है।"

इज़ाबेल ने इस मज़ाक की ओर ध्यान नहीं दिया और अचानक बात का रुख बदल दिया। "हेनरीटा तुम्हारे जत्थे की अध्यक्ष रहेगी," वह आकस्मिक ढंग से बोली, "तो मिस्टर गुडवुड के लिए करने को कुछ नहीं रहेगा।"

"माई डियर इज़ाबेल," रैल्फ बोला, "उसे इसकी आदत है। उसके लिए अब कुछ रह ही नहीं गया है।"

इज़ाबेल सुर्ख हो उठी, और सहसा बोली कि उसे वहां से चलना चाहिए। पल-भर वे दोनों खड़े रहे। इज़ाबेल के दोनों हाथ रैल्फ के हाथों में थे। "तुम मेरे सबसे अच्छे मित्र रहे हो," इज़ाबेल ने कहा।

"मैं—मैं केवल तुम्हारे लिए जीना चाहता था। पर तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं है।"

इज़ाबेल के मन में यह बात और स्पष्ट हो उठी कि वह उसे अब कभी नहीं मिल सकेगी। वह इसे स्वीकार नहीं कर सकी—नहीं वह रैल्फ से इस तरह विदा नहीं ले सकती थी। "तुम मुझे बुलाओगे तो मैं ज़रूर आऊंगी," आखिर उसने कहा।

"अपने पति से तुम्हें इजाजत नहीं मिलेगी।"

"उसका इन्तज़ाम मैं कर लूंगी।"

"तो इसे मैं अपनी आखिरी खुशी के तौर पर सुरक्षित रखूंगा," रैल्फ बोला।

इसके उत्तर में इज़ाबेल ने केवल उसे चूम लिया। उस दिन बृहस्पतिवार था। शाम को गुडवुड पालाज़ो रोकानेरा आया। वह सबसे पहले आने वालों में था। कुछ समय वह ऑसमण्ड से बातें करता रहा। इज़ाबेल जब भी लोगों को बुलाती थी, ऑसमण्ड हमेशा मौजूद रहता था। गुडवुड के साथ बैठकर वह बहुत-बहुत बातें करता रहा। वह उस समय मानसिक रूप से बहुत प्रसन्न नज़र आ रहा था और निस्संकोच भाव से खुलकर बात कर रहा था। वह टांग पर टांग रखे पीछे टेक लगाकर मज़े से बात कर रहा था, और गुडवुड अस्थिर भाव से उदास-सा अपने हैट से खेलता हुआ कभी इस पहलू बैठता कभी उस पहलू, जिससे सोफा नीचे से चरमरा जाता। ऑसमण्ड के चेहरे पर एक नुकीली और छा जाने वाली मुस्कराहट थी—एक अच्छा समाचार पाकर उसका इन्द्रियबोध अधिक सजग हो गया था। उसने गुडवुड से कहा कि उसे उसके जाने का अफसोस है—वह स्वयं उसकी कमी बहुत महसूस करेगा। उसे समझदार आदमी बहुत कम मिलते हैं—रोम में तो जैसे उनका अकाल है। गुडवुड को फिर कभी वहां ज़रूर आना चाहिए। वह स्वयं हमेशा इटली में रहा है, इसलिए ऐसे आदमी से, जो सचमुच बाहर का हो, बात करके उसे बहुत ताज़गी महसूस होती है।

"मुझे रोम बहुत अच्छा लगता है," ऑसमण्ड बोला। "मगर ऐसे लोगों से मिलकर मुझे बहुत खुशी होती है, जो मेरी इस धारणा से सहमत नहीं। आज की दुनिया सच कितनी अच्छी है। तुम इतने आधुनिक हो फिर भी कितने असाधारण हो। अधिकतर आधुनिक लोग तो बिलकुल कूड़ा होते हैं। अगर भविष्य की संतान यही लोग हैं तो हम जवानी में ही मर जाना पसन्द करेंगे। ठीक है कि पुराने लोगों से भी कई बार चिढ़ होती है। कोई चीज़ दरअसल नई हो, सिर्फ दिखावा ही न हो, तो मैं और मेरी पत्नी उसे ज़रूर पसन्द करते हैं। पर दुर्भाग्यवश मूर्खता और अज्ञान नई चीज़ें नहीं हैं। पर प्रगति व प्रकाश के नाम पर वे कई-कई रूपों में हमारे सामने आते हैं। मुझे यह केवल अशिष्टता लगती है। बस यह एक नई तरह की अशिष्टता ज़रूर सामने आने लगी है, पहले वैसी अशिष्टता नहीं होती थी। इस शताब्दी से पहले तो मेरे ख्याल में अशिष्टता थी ही नहीं। पिछली शताब्दी में कहीं-कहीं अनाचार के हल्के धब्बे मिल जाएंगे। पर आज की हवा तो गर्दोगुबार से इतनी भर गई है कि नाजुक चीज़ों को तो आदमी पहचान ही नहीं सकता।

पर तुम्हें हम पसन्द करते हैं···।" यह कहकर वह पल-भर रुका, और अव्यवस्था तथा आत्मविश्वास के मिले-जुले भाव से मुस्कराता हुआ गुडवुड के घुटने पर हल्के से हाथ रखे रहा। "मैं जो बात कहने जा रहा हूं, वह बुरी और ऊंचाई से कही गई लग सकती है, पर आशा है तुम मुझे कहकर मन हल्का कर लेने दोगे। हम तुम्हें पसन्द करते हैं क्योंकि भविष्य की संगति बैठाने में तुमने हमारी सहायता की है। तुम्हारे जैसे कई लोग मिल सकें, तो कहने ही क्या हैं। मैं अपनी ओर से ही नहीं, अपनी पत्नी की ओर से भी कह रहा हूं। वह मेरी ओर से बात कर सकती है, तो मैं क्यों उसकी ओर से बात नहीं कर सकता ? हम दोनों उसी तरह एक-दूसरे से जुड़े हैं, जैसे मोमबत्ती और गुलगीर। मैं यह गलत तो नहीं सोचता न कि तुम्हारा सम्बन्ध—अ, अ—व्यवसायिक दुनिया से है। उसमें हमेशा एक खतरा रहता है पर तुम अपने को उससे बचाए रहे हो, यह हमें बड़ी बात लगती है। तुम्हें मेरी यह प्रशंसा सुरुचिहीन लग सकती है, पर सौभाग्यवश मेरी पत्नी मुझे इस वक्त बात करते नहीं सुन रही। मेरा मतलब है कि तुम वह जो मैं अभी कह रहा था न अ···अ वैसे बन सकते थे। सारी अमरीकन दुनिया तुम्हें वैसा बनाने का षड्यन्त्र किए थी। पर तुममें कोई चीज़ है जिसने उसका सामना किया है और तुम्हें बचाए रखा है। इस पर भी तुम आधुनिक हो, इतने आधुनिक कि तुम्हारे जैसा आधुनिक व्यक्ति और हमने देखा ही नहीं। तुमसे मिलकर हमेशा हमें खुशी होगी।"

मैं कह चुका हूं कि ऑसमण्ड प्रसन्न मनःस्थिति में था, और उसकी कही यह बातें इसका प्रमाण हैं। ऐसे व्यक्तिगत ढंग से बात करना उसका स्वभाव नहीं था और अगर कैस्पर गुडवुड अधिक ध्यान देता, तो उसे लगता कि कोमल गुणों की वकालत बहुत गलत हाथों में है। पर हमें विश्वास है कि ऑसमण्ड को पता था वह क्या कर रहा है। अगर उसने ऊंचे उठकर ऐसे आक्रामक ढंग से बात करने का निश्चय किया था, तो उसकी एक खासी वजह थी—गुडवुड को इतना आभास हो रहा था कि ऑसमण्ड कोई चीज़ उस पर लीप रहा है, पर कहां, इसका उसे पता नहीं चल रहा था। वह ऑसमण्ड की बात ठीक से सुन ही नहीं रहा था। उसका मन था कि इज़ाबेल से अकेले में बात कर सके, और यह विचार उसे ऑसमण्ड की ऊंची आवाज़ से ज्यादा ऊंचा सुनाई दे रहा था। वह इज़ाबेल को दूसरे लोगों से बात करते देख रहा था, और सोच रहा था जाने कब उसे फ़ुरसत मिलेगी। यह भी, कि क्या उसे इज़ाबेल से दूसरे कमरे में चलने के लिए कहना चाहिए। वह

आसमण्ड की तरह प्रसन्न मन:स्थिति में नहीं था, और आस-पास का वातावरण उसके मन में असमर्थ-सा क्रोध भर रहा था। अब तक उसे ऑसमण्ड से घृणा नहीं थी। उसका ख्याल था कि वह काफी जानकार और खुले दिल का आदमी है। इज़ाबेल आर्चर के विवाह सम्बन्धी चुनाव को लेकर उसके मन में जो धारणा थी, उसकी अपेक्षा ऑसमण्ड उसे कहीं बेहतर लगा था। खुले मैदान में ऑसमण्ड ने उसे हराया था और गुडवुड में इतनी सहिष्णुता थी कि वह इस वजह से उसे छोटा न समझे। ऑसमण्ड के बारे में अच्छी राय बनाने की कोशिश उसने नहीं की थी। वह भावुक उदारता की उड़ान होती, जिसकी योग्यता उसमें उन दिनों भी नहीं थी, जब वह वस्तुस्थिति से समझौता करने का सबसे अधिक प्रयत्न कर रहा था। उसने ज़्यादा-से-ज़्यादा इतना ही सोचा था, कि वह आदमी एमेच्योर ढंग से खासा पतिभावान होगा और कि वे बेशुमार फुरसत रहने से कुछ चुस्त बातें करके वह अपना मनोरंजन करता होगा। उस आदमी पर वह पूरा विश्वास नहीं कर सकता था। ऑसमण्ड एकाएक इस तरह उसके गुणों पर मुग्ध हो उठे यह बात उसके पल्ले नहीं पड़ रही थी। उसे सन्देह हो रहा था कि वह आदमी मन ही मन उसका मज़ा ले रहा है, जिससे उसकी इस धारणा की पुष्टि होती थी कि उसके सफल प्रतिद्वन्द्वी में कहीं दु:शीलता का स्पर्श है। यह वह जानता था कि ऑसमण्ड उसका बुरा नहीं चाहता, क्योंकि उससे उसे कोई भय नहीं है। उसे ऑसमण्ड पहले ही करारी हार दे चुका था, इसलिए हारने वाले के प्रति वह नम्रता दिखा सकता था। ठीक है कभी-कमी गुडवुड के मन में आता था कि ऑसमण्ड की मृत्यु हो जाए और उसे मार डालने की कामना भी उसके मन में जागती, पर इसका ऑसमण्ड को कुछ पता नहीं था। अभ्यास से गुडवुड ने इस कला में पूर्णता पा ली थी कि उसके उद्वेग बाहर प्रकट न हों। इस कला की साधना उसने अपने को ठगने के लिए की थी पर ठगे उससे दूसरे जाते थे। वैसे साधना में उसे बहुत अधिक सफलता भी नहीं मिली थी। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही था कि ऑसमण्ड को ऐसे बात करते सुनकर जैसे कि वह अपनी पत्नी की वजह से उसकी भावनाओं को व्यक्त करने की ज़िम्मेदारी लिए हो, उसके मन में एक खामोश खीझ घिर आई थी।

उस शाम ऑसमण्ड ने जितनी बातें कीं, उनमें से इतनी ही ध्वनि उसके कानों में रह पाई थी। उसे लग रहा था कि ऑसमण्ड पालाज़ो रोकानेरा में गृहस्थ जीवन

की सुख-शान्ति की ओर संकेत करने का पहले से कहीं अधिक प्रयत्न कर रहा है। वह बहुत सतर्क होकर यह भी प्रकट करना चाहता था कि उसकी पत्नी और वह बिलकुल एक तरह से सोचते हैं, और कि दोनों के लिए 'हम' का प्रयोग 'मैं' जितना ही स्वाभाविक है। यह सब ऐसे सचेत भाव से कहा जा रहा था, कि गरीब गुड-वुड को उससे उलझन भी हो रही थी और गुस्सा भी आ रहा था। पर वह यह सोचकर अपने को तसल्ली दे रहा था कि इज़ाबेल और उसके पति के सम्बन्ध कैसे भी हों, उसे इससे कोई सरोकार नहीं है। ऑसमण्ड इज़ाबेल के मन की बात नहीं कह रहा, इसका कोई प्रमाण उसके पास नहीं था; और ऊपर से देखने से तो यही लगता था कि इज़ाबेल को अपनी ज़िन्दगी से कोई शिकायत नहीं है। असन्तोष की हलकी-सी भी झलक इज़ाबेल ने उसके सामने नहीं आने दी थी। हां, मिस स्टैकपोल ने उसे बताया था, कि इज़ाबेल अपने भ्रम से मुक्ति पा चुकी है। पर अखबारों में लिखने के कारण मिस स्टैकपोल तो यूं ही खबरें उड़ा देती थी। समय से पहले खबर निकाल लेना उसका शौक था। फिर रोम आने के बाद से वह काफी सतर्क भी थी। उसका पथ-प्रदर्शन करना मिस स्टैकपोल ने लगभग छोड़ दिया था। हेनरीटा की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि ऐसा वह अपनी आत्मा के विरुद्ध कर रही थी। इज़ाबेल की वस्तुस्थिति जान लेने के बाद उसने कहीं अन्दर से अपने को सचेत कर लिया था। स्थिति को सुधारने के लिए कुछ भी करना हो, पर उसका यह ढंग कतई नहीं था कि वह इज़ाबेल के पुराने प्रेमियों को वह उसकी गलतियों का अहसास कराए। गुडवुड की भावनाओं में मिस स्टैक-पोल की गहरी दिलचस्पी अब भी थी, पर उसे प्रकट करने का उसका ढंग अब दूसरा था। वह उसे अमरीकन मैगज़ीनों में से कुछ विनोदपूर्ण तथा कुछ दूसरे अंश काटकर भेजती रहती थी। मैगजीनें उसके पास हर डाक से नई-नई आती थीं, और वह कैंची हाथ में लेकर ही उनके पन्ने पलटती थी। जो-जो लेख वह काटकर निकालती उन्हें वह लिफाफे में बन्द करके अपने हाथ से गुडवुड के होटल में छोड़ आती। गुडवुड उससे इज़ाबेल के बारे में कोई सवाल नहीं पूछता था—पांच हज़ार मील से आकर क्या वह स्वयं नहीं देख सकता था? इसलिए उसे यह सोचने का कोई अधिकार नहीं था कि इज़ाबेल प्रसन्न नहीं है, पर अधिकार न होने से ही उसे उलझन होती थी। उसने चाहे यह सोच रखा था कि उसे अब इसकी चिन्ता नहीं है, फिर भी इस अहसास से कि भविष्य में कम से कम उसके लिए कोई

सम्भावना नहीं है, वह कहीं अन्दर से कस जाता था। वस्तुस्थिति को जानने का सन्तोष भी उसे नहीं था—यदि इज़ाबेल प्रसन्न नहीं थी, तो भी इस जानकारी के लिए उसे विश्वासपात्र नहीं समझा गया था। वह कहीं का नहीं था, किसी काम का नहीं था, बेकार था। आखिरी बात का अहसास इज़ाबेल ने उसे रोम से भेजने की अपनी चतुराई-भरी योजना से करा दिया था। रैल्फ के लिए वह उपयोगी हो सके, इसमें उसे कोई आपत्ति नहीं थी। पर यह सोच कर वह दांत पीस लेता था कि इज़ाबेल ने दुनिया में जितने काम हो सकते हैं, उनमें से सिर्फ इसीके योग्य उसे समझा।

उस समय वह यही सोच रहा था कि कल उसे इज़ाबेल से विदा लेनी होगी, और कि वहां आकर उसने फिर एक बार वही बात जानी थी कि वहां उसकी आवश्यकता नहीं के बराबर है। इज़ाबेल के बारे में वह कुछ नहीं जान सका था—वह उसकी पहुंच जिज्ञासा और ग्रहण-शक्ति से परे थी। वह पुरानी कड़ुवाहट जिसे निगल जाने की उसने इतनी कोशिश की थी, अब भी उसके अन्दर उठ रही थी—वह जान गया था कि कुछ निराशाएं पूरी ज़िन्दगी के लिए होती हैं। ऑसमण्ड बात करता जा रहा था। गुडवुड को हल्का-सा आभास था कि वह फिर से अपनी पत्नी के साथ अपनी आत्मीयता की ओर संकेत कर रहा है। उसे लग रहा था कि वह आदमी राक्षसी कल्पना-शक्ति रखता है—वरना बिना मन में मैल रखे वह ऐसे असाधारण विषय पर लगातार बात न करता रहता। पर ऑसमण्ड की मनोवृत्ति राक्षसी थी या नहीं और इज़ाबेल उससे प्रेम करती थी या घृणा—इससे उसे क्या अन्तर पड़ता था ? इज़ाबेल चाहे ऑसमण्ड की जान से भी घृणा करे, उससे दूसरे को तो रत्ती भर लाभ होना नहीं था। "तो तुम रैल्फ टाउशेट के साथ जा रहे हो ?" आसमण्ड बोला। "तब तो काफी धीरे-धीरे सफर करोगे।"

"मुझे नहीं पता। जैसा भी वह चाहेगा।"

"तुम दूसरे का बहुत ख्याल रखते हो। मुझे कहना चाहिए कि हम तुम्हारे प्रति बहुत आभारी हैं। हम कैसा महसूस करते हैं, यह मेरी पत्नी शायद तुम्हें बता ही चुकी हो। सारी सर्दी हम लोग टाउशेट के बारे में सोचते रहे हैं। बहुत बार तो ऐसा लगता था कि वह शायद रोम से निकल ही नहीं पाएगा। उसे दरअसल आना ही नहीं चाहिए था। ऐसी हालत में सफर करना ज्यादती ही नहीं एक तरह की बेमुरव्वती भी है। टाउशेट ने मेरे और मेरी पत्नी के लिए जो लिहाज

दिखाया है वह मैं दुनिया में किसी के लिए नहीं दिखा सकता। यह ज़रूरी है कि दूसरे उसकी देख-भाल करें—और हर आदमी तुम्हारे जितना उदार तो होता नहीं।"

"मेरे पास और कोई काम ही नहीं है," कैस्पर रूखे स्वर में बोला।

ऑसमण्ड अचकचाया-सा पल-भर देखता रहा। "तुम्हें विवाह कर लेना चाहिए। फिर तुम्हारे पास बहुत कुछ करने को हो जाएगा। तब इस तरह के दया-कार्यों के लिए तुम्हारे पास इतनी फ़ुरसत नहीं रहेगी।"

"एक विवाहित व्यक्ति के रूप में तुम अपने को बहुत व्यस्त पाते हो क्या?" गुडवुड ने मशीनी ढंग से पूछ लिया।

"बात यह है—विवाहित होना अपने में एक व्यस्तता है। उसमें अधिकतर क्रिया नहीं होती, निष्क्रियता रहती है। पर इसीलिए उसकी ओर अधिक ध्यान देना पड़ता है। फिर बहुत-से काम हैं जो हम पति-पत्नी साथ-साथ करते हैं। जैसे पढ़ना, अध्ययन करना, गाना-बजाना, सैर करना और ड्राइव करना। अपने आरम्भिक परिचय के दिनों की तरह हम लोग आपस में बात भी करते हैं। अगर तुम ऊब महसूस करते हो तो मेरी बात मानों और विवाह कर लो। तब तुम्हें अपनी पत्नी से ऊब हो सकती है, अपने से कभी ऊब नहीं होगी। तुम्हें अपने से कहने को और बैठकर सोचने को कुछ-न-कुछ हमेशा मिलता रहेगा।"

"मैं ऊब महसूस नहीं करता," गुडवुड बोला। "अपने से कहने और बैठकर सोचने के लिए मेरे पास बहुत-कुछ है।"

"दूसरों से कहने की अपेक्षा ज़्यादा।" ऑसमण्ड इकहरी हंसी के साथ बोला। "अच्छा बाद में तुम कहां जाओगे? मतलब टाउशेट को उसकी स्वाभाविक रूप से देखभाल करने वालों को सौंपने के बाद? मैं समझता हूं कि अब तो उसकी मां उसकी देख-भाल करने आ रही होगी। उस छोटी-सी स्त्री का भी जवाब नहीं। अपने कर्तव्यों से बचने में वह एक ही है। गर्मियां तुम इंगलैंड में ही बिताओगे क्या?"

"मुझे पता नहीं। मेरी कोई योजना नहीं है।"

"खुशनसीब आदमी हो। बात थोड़ी मनहूस-सी है, पर आज़ादी तो इस में है ही।"

"हां आज़ादी तो है ही।"

"रोम आने की भी आज़ादी होगी न ?" कहते हुए ऑसमण्ड की नज़र कमरे में दाखिल होते कुछ नये अभ्यागतों की ओर मुड़ गई। "देखो, कभी आओ तो हमें भूलना नहीं।"

गुडवुड का विचार जल्दी लौट जाने का था, पर सारी शाम बीत जाने पर भी उसे लोगों के जमघट से बाहर अकेले में इज़ाबेल से बात करने का मौका नहीं मिला। जिस हठ के साथ वह उससे बचती रही वह गुडवुड को बहुत असंगत महसूस हो रहा था। उसके मन में खुभा कांटा वहां भी कोई न कोई अभिप्राय ढूंढ़ रहा था जहां कि प्रकट रूप से ऐसा कुछ नहीं था। देखने में तो ऐसा बिलकुल नहीं लगता था। इज़ाबेल अतिथिसत्कार की मुस्कराहट के साथ उसकी आंखों में देखती—जैसेकि कहना चाहती हो कि वह चलकर अन्य अतिथियों के मनोरंजन में उसकी सहायता करे। ऐसे संकेतों का विरोध वह रूखे अधीर भाव से करता। वह इधर-उधर घूमता हुआ इन्तज़ार करता रहा और जिन दो-एक लोगों को जानता था उनसे बात करता रहा। उन लोगों को पहली बार उसमें अन्तर्विरोध का आभास हुआ। कैस्पर गुडवुड के साथ यह बात मेल नहीं खाती थी, हालांकि दूसरों का विरोध वह बहुत करता था। पालाज़ो रोकानेरा में प्रायः संगीत चलता रहता था जो कि बहुत अच्छा होता था। वह संगीत की ओट में किसी तरह अपने को संभाले रहा, पर आखिर जब लोग जाने लगे तो उसने इज़ाबेल के पास जाकर धीमे स्वर में पूछ लिया कि क्या वह साथ के एक कमरे में चलकर उससे बात कर सकती है ? वह कमरा खाली है, यह वह पहले देख चुका था। इज़ाबेल इस तरह मुस्कराई जैसे कि उस की बात मानने जा रही हो, पर कहा उसने यह कि उसके लिए यह बिलकुल असम्भव है। "यह नहीं हो सकेगा। लोग गुडनाइट कहकर जा रहे हैं और मुझे वहीं रहना चाहिए जहां वह मुझे देख सकें।"

"तो मैं सबके जाने तक रुका रहूंगा।"

इज़ाबेल पल-भर संकोच में रही। फिर बोली, "हां यह बहुत खुशी की बात होगी।"

गुडवुड इन्तज़ार करता रहा, हालांकि इसमें बहुत समय लग गया। अन्त में बहुत-से ऐसे लोग बच रहे जो जैसे गालीचे से नत्थी हो रहे थे। काउंटेस जेमिनी कह रही थी कि आधी रात तक तो वह अपने वास्तविक रूप में आ ही नहीं सकी। पर अब जैसे उसे आभास ही नहीं था कि दावत समाप्त हो गई है। वह कुछ

पुरुषों के घेरे में आग के सामने बैठी थी। रह-रह कर वे लोग एक साथ हंस उठते थे। ऑसमण्ड वहां नज़र नहीं आ रहा था। वह लोगों को विदा देने के लिए कभी नहीं रुकता था। क्योंकि काउंटेस का क्षेत्र बढ़ता जा रहा था—जैसा-कि इतनी रात गुज़र जाने पर अक्सर होता था—इसलिए इज़ाबेल ने पेंज़ी को सोने के लिए भेज दिया था। इज़ाबेल अलग-सी बैठी थी। कहीं वह भी चाह रही थी कि उसकी ननद अब हल्के ताल पर आए और बचे-खुचे लोगों को शान्ति से विदा हो जाने दे।

"मैं इस समय तुमसे एक शब्द भी नहीं कह सकता ?" गुडवुड ने उससे पूछा।"

"वह मुस्कराती हुई तुरन्त उठ खड़ी हुई।" क्यों नहीं ? तुम चाहो तो हम कहीं और चल सकते हैं।"

काउंटेस और उसके छोटे-से घेरे को छोड़कर, वे लोग वहां से चल दिये। दहलीज़ लांघने के बाद पल-भर दोनों में से किसी ने बात नहीं की। इज़ाबेल बैठना नहीं चाहती थी। पंखे से धीरे-धीरे अपने को हवा करती हुई वह कमरे के बीच में खड़ी रही। गुडवुड को उसका आकर्षण पहला जितना ही परिचित लग रहा था—वह इन्तज़ार कर रही थी कि गुडवुड बात करे। इज़ाबेल के साथ अपने को अकेला पाकर गुडवुड की अनदबी कामना उसकी चेतना में उफन आई थी—जिससे उसकी आंखें चुंधिया रही थीं और उसे आस-पास चीजें घूमती नज़र आ रही थीं। रोशनी से चमकता खाली कमरा उसके सामने अंधेरा और धुंधला हो रहा था और इस उभरते पर्दे के पीछे उसे इज़ाबेल की चमकती आंखें और खुले होंठ नज़र आ रहे थे। यदि वह और स्पष्ट देख पाता तो उसे पता चल जाता कि इज़ाबेल की मुस्कराहट स्थिर और कुछ हद तक जबरदस्ती की है, और कि उसके अपने चेहरे के भाव से वह डरी हुई है।" मैं समझती हूं तुम गुडबाई कहना चाह रहे हो।"

"हां, पर मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा। मैं रोम से जाना नहीं चाहता।" गुडवुड ने बहुत करुण ईमानदारी के साथ जवाब दिया।

"यह मैं समझ सकती हूं। तुम यह बहुत बड़ी कृपा कर रहे हो। मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि मैं तुम्हारी कितनी आभारी हूं।"

वह पल-दो पल कुछ नहीं बोला। "इन थोड़े-से शब्दों से तुम मुझे भेज देना

चाहती हो।"

"तुम कभी फिर आना", वह चहक कर बोली।

"कभी ? मतलब आज से अधिक-से-अधिक जितने दिन बाद हो सके।"

"नहीं, मेरा यह मतलब बिलकुल नहीं है।"

"तो क्या मतलब है ? मुझे कुछ समझ नहीं आता। पर मैं जाने के लिए कह चुका हूं, इसलिए चला जाऊंगा," गुडवुड बोला।

"जब मन हो तब चले आना," इज़ाबेल ने प्रयास से अपने को हल्का बनाए रखा।

"मुझे तुम्हारे कज़िन से कुछ लेना देना नहीं है," कैस्पर फूट पड़ा।

"तो क्या यही तुम मुझे बताना चाहते थे ?"

"नहीं, मैं तुम्हें कुछ भी नहीं बताना चाहता था," और पल भर रुककर वह धीमे-स्वर में जल्दी से बोला, "तुमने अपनी ज़िन्दगी का क्या किया है ?" वह उसका उत्तर सुनने के लिए रुका, पर वह चुप रही, तो आगे बोला, "मुझे कुछ समझ नहीं आता। मैं तुम्हारी तह तक नहीं पहुंच पा रहा। मैं क्या समझूं—कि तुम मुझे क्या विश्वास दिलाना चाहती हो ?" इज़ाबेल फिर भी चुप रही, और उसकी ओर देखती रही। पर हल्के भाव का आवरण अब उसके चेहरे से हट गया था। "मुझसे कहा गया है कि तुम खुश नहीं हो। ऐसा है, तो मुझे इसका पता होना चाहिए। मेरे लिए उसका कुछ मतलब होगा, पर तुम कहती हो तुम खुश हो, पर इसके बावजूद तुम इतनी खामोश, रुखी और कठोर नजर आती हो। तुम बिलकुल बदल गई हो। तुम हर चीज़ छिपा सकती हो। मैं अपने को तुमसे बहुत दूर पाता हूं।"

"तुम दूर नहीं हो," इज़ाबेल ने कोमल पर चेतावनी के स्वर में कहा।

"फिर भी मैं तुम्हें छू नहीं पाता। मैं सच्चाई जानना चाहता हूं। क्या सब कुछ ठीक रहा है ?"

"तुम बहुत ज्यादा पूछ रहे हो।"

"हां—मैं हमेशा बहुत ज्यादा पूछता रहा हूं। पर तुम मुझे कुछ नहीं बतातीं। तुम बताये बिना कैसे रह सकती हो, मैं नहीं जानता, और मैं इसमें कहीं आता भी नहीं हूं," वह बोलते हुए प्रकट रूप से अपने पर वश रखने का प्रयत्न कर रहा था—अपनी अव्यवस्थिति को एक व्यवस्थित रूप देने का। पर इस

चेतना से कि वह उसका अन्तिम अवसर है, कि वह उससे प्रेम करके उसे खो चुका है, कि वह कुछ भी कहे वह उसे मूर्ख समझेगी, जैसे एक चाबुक खाकर उसके स्वर में गहरा कम्पन भर गया। "तुम कुछ पता नहीं चलने देतीं, और इसी से मुझे लगता है कि तुम कुछ छिपा रही हो। तुम्हारे कज़िन की मुझे रत्ती भर चिन्ता नहीं है। इसका यह मतलब नहीं कि मैं उसे पसन्द नहीं करता। मेरा मतलब है कि मैं उसे पसन्द करने की वजह से उसके साथ नहीं जा रहा। वह बिलकुल गधा होता और तुम मुझे उसके साथ जाने को कहतीं, तो भी मैं चला जाता। तुम मुझे कल साइबेरिया जाने को कहो तो मैं वहां भी चला जाऊंगा। पर तुम मुझे यहां से क्यों भेजना चाहती हो? इसका कोई कारण होना चाहिए। तुम उतनी ही सन्तुष्ट होतीं जितना कि तुम दिखाना चाहती हो, तो तुम ज़रा भी चिन्ता न करतीं। मैं तुम्हारी वास्तविकता जानना चाहता हूं, वह कितनी भी खराब क्यों न हो—क्योंकि मैं फिज़ूल ही यहां नहीं आया। मैं सोचता था कि मुझे परवाह नहीं करनी चाहिए। पर मैं आया था क्योंकि मैं अपने को विश्वास दिलाना चाहता था कि मुझे तुम्हारे बारे में अब और नहीं सोचना चाहिए। पर मैं और कुछ सोच ही नहीं सका, और तुम्हारा मुझे यहां से भेजना ठीक ही है। पर मुझे जाना ही है, तो क्यों न मैं पल-भर के लिए अपने को उंडेल लूं? यदि तुम चोट खा चुकी हो—उससे चोट खा चुकी हो—तो मेरी कही किसी बात से तुम्हें चोट नहीं पहुंचेगी। मैं तुमसे अगर कहता हूं कि मैं तुमसे प्यार करता हूं तो इसलिए कि मैं आया ही सिर्फ इस वजह से था। मेरा ख्याल था वजह दूसरी है—पर नहीं वजह यही थी। मैं यह सब न कहता, अगर मुझे विश्वास न होता कि मैं अब तुमसे नहीं मिलूंगा। यह अन्तिस अवसर है, इसलिए मुझे एक फूल तोड़ लेने दो। मुझे यह कहने का अधिकार नहीं है, मैं जानता हूं। तुम्हें सुनने का भी अधिकार नहीं है। पर तुम सुनती नहीं हो, कभी नहीं सुनती हो, हमेशा कुछ और सोचती रहती हो। इसके बाद मुझे निश्चित हो चले जाना है, इसलिए अब मेरे पास एक कारण तो रहेगा। तुम्हारा कहना कारण नहीं है—ठोस कारण नहीं है। तुम्हारे पति की बातों से भी मुझे पता नहीं चलता," वह आप्रसंगिक और लगभग असम्बद्ध ढंग से बात करता रहा। "मैं उसे नहीं समझ पाया। वह कहता है कि तुम दोनों एक दूसरे पर मुग्ध हो। पर वह मुझसे ऐसा क्यों कहता है? मेरा इससे क्या मतलब है? मैं तुमसे बात करता

हूं, तो तुम विचित्र-सी नज़र आती हो। पर तुम तो हमेशा ही विचित्र-सी नज़र आती रही हो। ज़रूर कुछ बात है जो तुम छिपा रही हो। ठीक है—मैं इसमें कौन होता हूं ? पर मैं तुमसे प्यार करता हूं।" वह बात कर रहा था, तो इज़ाबेल सचमुच विचित्र-सी लग रही थी। उसकी आंखें उस दरवाज़े की ओर मुड़ गईं जिससे वे अन्दर आये थे, और जैसे चेतावनी के रूप में उसने अपना पंखा ऊंचा उठा लिया। "तुम्हारा व्यवहार इतना अच्छा रहा है, अब उस पर पानी मत फेरो," वह धीमे स्वर में बोली।

"कोई मेरी बात नहीं सुन रहा। कितने बढ़िया ढंग से तुमने मुझे चलता करना चाहा है। मैं आज तुम्हें पहले से कहीं ज़्यादा प्यार करता हूं।"

"मुझे पता है। तभी पता चल गया था, जब तुम जाने के लिए राज़ी हो गए थे।"

तुम्हारा बस नहीं है—ठीक है, नहीं है। बस होता, तो और बात थी। पर दुर्भाग्यवश नहीं है। पर दुर्भाग्य मेरा है। मैं तुमसे कुछ नहीं चाहता—कुछ भी नहीं। मतलब मुझे अधिकार नहीं। पर मैं अपने सन्तोष के लिए एक बात पूछता हूं। वह तुम मुझे बता दो—वह तुम मुझे ज़रूर बता दो।"

"क्या बता दूं ?"

"कि क्या मुझे तुम पर दया करनी चाहिए ?"

"तुम्हें यह अच्छा लगेगा ?" इज़ाबेल ने फिर से मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए पूछा।

"तुम पर दया करना ? अवश्य अच्छा लगेगा। वह कुछ तो होगा। मैं उसके लिए अपनी ज़िन्दगी तक दे दूंगा।"

इज़ाबेल ने पंखा अपने चेहरे के आगे कर लिया जिससे केवल उसकी आंखें ही नज़र आती रहीं। पल-भर गुडवुड की आंखों में देखने के बाद उसने कहा, "इसके लिए अपनी ज़िन्दगी मत दो, पर कभी-कबार इस बारे में सोच लिया करना।" और यह कहकर वह वापस काउंटेस जेमिनी के पास चली गई।

४९

बृहस्पतिवार की जिस शाम का मैंने ऊपर उल्लेख किया है, उस शाम मैडम मरले पालाज़ो रोकानेरा नहीं आई थी। इज़ाबेल ने उसकी अनुपस्थिति को लक्ष्य तो किया, पर उसे आश्चर्य नहीं हुआ। कई बातें हो चुकी थीं जिनसे उनके सामाजिक सम्बन्ध में तनाव आ गया था। इसे ठीक से समझने के लिए हमें थोड़ा पीछे नज़र डालनी होगी। हम कह चुके हैं कि लार्ड वारबर्टन के रोम से जाने के कुछ ही समय बाद मैडम मरले नेपल्ज़ से लौट आई थी। इज़ाबेल से पहली बार मिलते ही (और उसके पक्ष में यह कहना होगा कि वे आते ही इज़ाबेल से मिलने आई थी) उसने पहला सवाल यही पूछा था लार्ड वारबर्टन अब कहां है, और उसके वहां से जाने के लिए इज़ाबेल को ही ज़िम्मेदार ठहराया था। "उसकी बात मत करो," इज़ाबेल ने उत्तर में कहा, "हम इधर उसके बारे में इतना ज़्यादा सुन चुके हैं !"

मैडम मरले ने जैसे विरोध में अपना सिर थोड़ा एक तरफ को झुका लिया, और अपने मुंह के बायें कोने से मुस्करा दी। "तुम सुन चुकी हो, ठीक है। पर मैं तो नेपल्ज़ में नहीं सुनती रही। मेरा ख्याल था वह यहां होगा और मैं पैंज़ी को बधाई दे सकूंगी।"

"तुम पैंज़ी को अब भी बधाई दे सकती हो, पर लार्ड वारबर्टन से विवाह करने के लिए नहीं।"

"यह तुम कैसे कह पा रही हो। तुम्हें पता नहीं मैंने मन में इसका निश्चय कर रखा था," मैडम मरले ने काफी आवेश के साथ पूछा, हालांकि उसके स्वर में अब भी सौजन्य बना रहा। इज़ाबेल अब अव्यवस्थित हुई क्योंकि वह भी सौजन्य बनाए रखने का निश्चय किए थी। "तो तुम्हें नेपल्ज़ नहीं जाना चाहिए था। तुम्हें यहां रहकर इस काम को सिरे चढ़ाना चाहिए था।"

"मुझे तुम पर बहुत भरोसा था। पर क्या तुम समझती हो अब कुछ नहीं हो सकता ?"

"अच्छा हो यह तुम पैंज़ी से पूछो," इज़ाबेल बोली।

"मैं उससे पूछूंगी कि तुमने उससे क्या कहा है।"

यह देखकर कि मैडम मरले नुक्ता-चीनी करने की मनःस्थिति में है, इज़ाबेल की आत्मरक्षा की भावना सहज ही जाग्रत हो आई। हम जानते हैं कि अब तक

मैडम मरले बहुत विवेक से काम लेती रही थी—नुक्ता-चीनी उसने कभी नहीं की थी—किसी तरह की दखल-अन्दाजी से वह बहुत डरती थी। पर वह सब जैसे उसने इस अवसर के लिए ही सुरक्षित रख रखा था। उसकी आंखें एक खतरनाक तेजी से चमक गईं। उसकी चेहरे पर आई झुंझलाहट को उसकी सदा की सहजता भी न छिपा सकी। मैडम मरले की निराशा से इजाबेल को आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसे यह पता नहीं था कि मैडम मरले की पैंजी के विवाह में इतनी दिलचस्पी है। जिस तरह यह भाव उसके चेहरे पर आया उससे इजावेल सहसा आतंकित हो उठी। अपने आस-पास के अंधेरे शून्य में न जाने कहां से आती एक ठंडी उपहास-पूर्ण आवाज इजाबेल ने पहले से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से सुनी। उसे लगा कि यह खुश-मिजाज, मजबूत, निश्चित और दुनियादार स्त्री जो कि हर काम क्रियात्मक और व्यक्तिगत ढंग से तुरन्त करने में विश्वास रखती है, उसके भाग्य-निर्माण में एक सशक्त सूत्र है। जितना कि इजावेल समझती रही थी, उससे वह स्त्री कहीं अधिक उसके निकट थी और यह निकटता एक आकर्षक घटना ही नहीं थी, जैसा कि उसका ख्याल था। घटना की अनुमति तो उसी दिन समाप्त हो गई थी जिस दिन उसने उस अद्भुत महिला को एक विशेष ढंग से अपने पति के साथ एकान्त में बैठे देखा था। सन्देह का कोई निश्चित अंकुर उसके मन में अभी नहीं फूटा था, पर वह अपनी मित्र को तब से ज़रा अलग-सी दृष्टि से देखने लगी थी। उसे लगने लगा था कि मैडम मरले के तब तक के व्यवहार में कहीं एक निश्चित इरादा था, जैसाकि वह पहले कहीं सोच पाती थी। इरादा था, जरूर था—इजावेल अपने से कहती रही। उसे लगता था जैसे वह एक लम्बे घातक स्वप्न से जाग गई हो। वह क्या था, जिससे उसे आभास हुआ था कि मैडम मरले का इरादा नेक नहीं रहा? केवल अविश्वास, जो कि इधर उसके मन में आकार ग्रहण कर रहा था, और जो अब इस आश्चर्य में घुल-मिलकर और बढ़ गया कि बेचारी पैंजी की खातिर वह इस तरह की चुनौती क्यों दे रही है। इस चुनौती में कुछ था, जिसने शुरू से ही उसमें प्रतिरोध की भावना जगा दी थी—यह एक अनाम-सी शक्ति थी जो मैडम मरले के अब तक के संयत और नाजुक व्यवहार से मेल नहीं खाती थी। मैडम मरले दखल-अन्दाजी से बचती रही थी पर निःसन्देह तभी तक जब तक दखल देने को कुछ नहीं था। पाठक को लग सकता है कि इजाबेल बहुत जल्दी केवल एक सन्देह के आधार पर बरसों के स्नेह-सद्भाव के सम्बन्ध में अनिश्चित

हो उठी थी। उसमें प्रतिक्रिया बहुत शीघ्र हुई, पर उसका कारण था। एक विचित्र सच्चाई उसके मन में प्रकट हो रही थी। मैडम मरले की दिलचस्पी भी वही थी जो ऑसमण्ड की थी—बस इतना ही काफी था। "मेरा ख्याल है पैंज़ी तुमसे ऐसा कुछ नहीं कहेगी, जिससे तुम्हें और गुस्सा आए," उसने मैडम मरले की अन्तिम बात के उत्तर में कहा।

"मुझे गुस्सा बिलकुल नहीं आ रहा। पर मैं स्थिति को संभालना ज़रूर चाहती हूं। तुम्हारा ख्याल है लार्ड वारबर्टन यहां से हमेशा के लिए चला गया है?"

"यह मैं नहीं कह सकती। मैं तुम्हें समझ नहीं पा रही। वह बात खत्म हो चुकी है। उसे अब जहां की तहां रहने दो। ऑसमण्ड इस बारे में मुझसे बहुत बात कर चुका है और मुझे अब इस बात को लेकर और कुछ कहना-सुनना नहीं है। मुझे विश्वास है," इज़ाबेल ने आगे जोड़ा, "कि उसे तुम्हारे साथ इस विषय में बात करके बहुत खुशी होगी।"

"वह क्या सोचता है मुझे पता है। वह कल शाम को मुझसे मिलने आया था।"

"तुम्हारे यहां पहुंचते ही? तब तो तुम्हें सब पता ही है, और तुम्हें मुझसे पूछने की ज़रूरत नहीं है।"

"मैं पूछना नहीं चाहती। कहीं मेरे मन में मेरी अपनी सहानुभूति है। मेरा मन था यह विवाह हो जाए। यह विचार मेरी कल्पना को सन्तोष देता था, जो कि बहुत कम चीज़ें दे पाती हैं।"

"तुम्हारी कल्पना को, हां। पर सम्बद्ध लोगों की कल्पना को नहीं।"

"इससे तुम्हारा मतलब है मैं सम्बद्ध नहीं हूं? सीधे सम्बद्ध नहीं हूं, यह ठीक है। पर जहां इतनी पुरानी मित्रता हो, वहां व्यक्ति की अपनी भी कुछ न कुछ दिलचस्पी तो रहती ही है। तुम भूल रही हो कि मैं पैंज़ी को कब से जानती हूं। तुम्हारा यह मतलब ज़रूर है," मैडम मरले ने आगे कहा, "कि तुम सम्बद्ध व्यक्तियों में से एक हो।"

"यह मेरा मतलब हरगिज़ नहीं है। मैं इस सबसे तंग आ चुकी हूं।"

"मैडम मरले पल-भर हिचकिचाई। "हां तुम्हारा काम पूरा हो गया है।"

"होश से बात करो," इज़ाबेल गम्भीर होकर बोली।

"मैं होश से ही बात करती हूं। जब लगता है कि नहीं कर रही, तब बल्कि ज़्यादा होश से कर रही होती हूं। तुम्हारे पति की तुम्हारे बारे में अच्छी राय नहीं है।"

इज़ाबेल ने पल-भर इसका कोई उत्तर नहीं दिया। उसका गला कड़ुआहट से रुंधा-सा गया था। जो चीज़ उसे सबसे ज़्यादा चुभी, वह मैडम मरले की धृष्टता नहीं थी—यह कहने की धृष्टता कि ऑसमण्ड उसके इतना निकट है कि वह अपनी पत्नी के विरुद्ध उससे बातें करता रहता है। वह तुरन्त यह विश्वास ही नहीं कर पाई कि बात धृष्टता के रूप में कही गई थी। मैडम मरले बहुत कम धृष्टता दिखाती थी—और तभी जब वह बिलकुल सही हो। पर यह बात सही नहीं थी। कम से कम अभी सही नहीं थी। जिस चीज़ ने जले पर नमक की तरह इज़ाबेल को छू दिया वह यह थी कि ऑसमण्ड अपने विचारों में ही नहीं शब्दों में भी उसे अपमानित करने लगा है। तुम जानना चाहोगी कि मेरी उसके बारे में क्या राय है?" आखिर उसने पूछा।

"नहीं, क्योंकि तुम कभी बताओगी नहीं। और मुझे जानकर तकलीफ होगी।"

कुछ देर व्यवधान रहा। मैडम मरले से परिचय होने के बाद से पहली बार इज़ाबेल को वह असह्य लगी। उसका मन हुआ कि वह उसके पास से चली जाए। "यह मत भूलो कि पैंज़ी बहुत सुन्दर है और निराश होने की कोई बात नहीं है," उसने सहसा कहा। उसका ख्याल था कि इससे यह बातचीत समाप्त हो जाएगी। पर मैडम मरले की उपस्थिति का विस्तार इससे कम नहीं हुआ। उसने अपना शाल अच्छी तरह लपेट लिया और उसके ऐसा करने से एक भीनी खुशबू हवा में फैल गई। "मैं निराश नहीं हूं। मेरे मन में काफी उत्साह है और मैं तुम्हें झिड़कने नहीं आई। इसलिए आई थी कि शायद मुझे सचाई का कुछ पता चल सके। मुझे पता है मैं तुमसे पूछूंगी तो तुम मुझे बता दोगी। तुममें यह एक बहुत बड़ी खूबी है कि आदमी तुम पर निर्भर कर सकता है। नहीं, तुम नहीं मानोगी कि मुझे इस बात का कितना सन्तोष है।"

"तुम किस सचाई की बात कर रही हो?" इज़ाबेल ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"यह कि लार्ड वारबर्टन ने अपना मन खुद बदल लिया, या तुम्हारे कहने से

उसने ऐसा किया ? मेरा मतलब है कि यह उसने अपनी खुशी के लिए किया या तुम्हारी खुशी के लिए ?" फिर चेहरे पर मुस्कराहट लाकर मैडम मरले कहती रही, "चाहे थोड़ा-सा मेरा विश्वास खो गया है, फिर भी सोचो मुझे तुम पर कितना-कितना विश्वास होगा जो मैं यह सवाल तुमसे पूछ रही हूं।" कुछ देर रुक-कर वह अपने शब्दों के प्रभाव का जायज़ा लेती रही। फिर बोली, "अब शहीद मत बनो। न ही असंगत बात करो, और न ही बुरा मानो। मेरा ख्याल है मैं इस तरह बात करके तुम्हारी इज्जत कर रही हूं। और कोई स्त्री नहीं है जिससे मैं इस तरह बात कर सकूं। मैं और किसी स्त्री को नहीं जानती जो कि पूछने पर सच बात बता सकती हो। क्या तुम नहीं समझती कि तुम्हारे पति को वास्तविकता का पता होना चाहिए ? यह सच है कि उसे वह ढंग नहीं आया जिससे वह सच बात तुमसे जान सके। वह खामखाह के कुलाबे भिड़ाता रहा। पर यह बात फिर भी है ही कि अगर सच बात का पता चल जाए, तो उसे अपनी लड़की के भविष्य के बारे में सोचने में आसानी रहेगी। लार्ड वारबर्टन अगर उस लड़की से ऊब गया हो तो वह एक बात है, और अफसोस की बात है। अगर तुम्हारी खुशी के लिए वह उसे छोड़ गया है तो वह दूसरी बात है। अफसोस की बात वह भी है, पर दूसरी तरह से। उस हालत में शायद तुम अपनी खुशी को तिलांजलि देना स्वीकार कर सको—इसलिए कि तुम्हारी सौतेली लड़की का विवाह हो जाए। तुम उसे मुक्त कर दो—और हमें उसे अपना लेने दो।" मैडम मरले बहुत संभल-कर आगे बढ़ रही थी—इज़ाबेल को देखकर यह निश्चय करती हुई कि आगे बात करने में कोई खतरा तो नहीं है। ज्यों-ज्यों वह बात कर रही थी, इज़ाबेल पीली पड़ती जा रही थी। उसने अपने दोनों हाथ अपनी गोदी में उलझा रखे थे। यह इसलिए नहीं कि मैडम मरले आखिर धृष्टता पर उतर आई थी, क्योंकि यह अभी उतना प्रकट नहीं था। वास्तविक विभीषिका इससे बड़ी थी। "तुम कौन हो, क्या हो ?" इज़ाबेल बुदबुदाई। "मेरे पति से तुम्हारा क्या वास्ता है ?" विचित्र बात थी कि पल-भर के लिए वह अपने को ऑसमण्ड के इतना निकट पा रही थी जैसे कि वह सचमुच उससे प्रेम करती हो।

"तुम शहीद बनकर बात कर रही हो। मुझे अफसोस है। यह मत समझो कि मैं भी ऐसा करूंगी।"

"तुम्हें मुझसे क्या लेना-देना है ?"

मैडम मरले अपने मफलर को सहलाती हुई उठ खड़ी हुई। पर उसकी आंखें इज़ाबेल के चेहरे पर टिकी रहीं, "सब-कुछ," उसने उत्तर दिया।

इज़ाबेल उठी नहीं, वहीं बैठी उसे देखती रही। उसका चेहरा प्रकाश के लिए की जा रही प्रार्थना की तरह था। पर सामने की स्त्री की आंखें उसे केवल अन्धकार लग रहीं थीं। "हाय रे दुःख।" उसने बुदबुदाकर कहा, और पीछे टेक लगा कर अपना चेहरा हाथों से ढक लिया। एक ऊंची उठती लहर-सी उस पर घिर आई कि मिसेज़ टाउशेट ठीक कहती थी। उसका विवाह मैडम मरले ने कराया था। जब तक उसने चेहरे से हाथ हटाए मैडम मरले कमरे से जा चुकी थी।

शाम को इज़ाबेल अकेली ड्राइव पर निकल गई। वह कहीं दूर जाना चाहती थी, जहां खुले आकाश के नीचे गाड़ी से उतरकर डेज़ी के फूलों पर चहलकदमी कर सके। पुराने रोम से वह बहुत पहले से अपने दिल की बातें करने लगी थी—खण्डहरों की उस दुनिया में अपनी खुशी के खण्डहर उसे उतनी अस्वभाविक विपत्ति नहीं नज़र आते थे। वह अपनी थकान उन चीज़ों के सहारे दूर कर लेती थी जो कि सदियों से टूटती-झड़ती हुई भी अभी सीधी खड़ी थीं। सुनसान जगहों की खामोशी में वह अपने अन्दर का अवसाद फेंक देती थी, जहां उसका आधुनिक रूप उसे एक अलग और वस्तु पर सत्ता दे देता था। सर्दी की दोपहर में धूप के किसी खण्ड में बैठकर या किसी ऊंचे गिरजाघर में खड़ी होकर जहां कि कोई भी नहीं आता था, वह अपने अवसाद की नगण्यता पर लगभग मुस्करा लेती थी। बृहत् रोमन इतिहास की तुलना में उसकी नगण्यता और मानव-नियति की शृंखला की घिरती अनुभूति उसे लघु से महान् की ओर ले जाती थी। रोम से उसका परिचय बहुत गहरा और बहुत कोमल था। वह उसके आवेश पर छाकर उसकी तीव्रता को कम कर देता था। मुख्य रूप से उसे वह ऐसा स्थान लगता था जहां लोगों ने दुःख सहे थे। अकेले गिरजाघरों में जहां के मरमरी खम्भे अन्धविश्वासों के खण्डहरों का रूप छोड़कर उसके सहिष्णुता के साथी बन जाते थे, और अपनी पुरानी गन्ध के कारण अनुत्तरित प्रार्थनाओं के आंगन से नज़र आते थे, खड़ी होकर उसे सदैव ऐसा अनुभव होता था। कोई भी नास्तिक इज़ाबेल से कम अनिश्चित और कोमल नहीं हो सकता था। मोमबत्तियों से घिरी अंधेरे आल्टर की तस्वीरों को देखते हुए बड़े धार्मिकों के मन में उन वस्तुओं की सांकेतिकता का वैसा गहन आभास नहीं जागता होगा, और ही न वैसे अध्यात्मिक प्रत्यक्षी-

करण के ऐसे क्षणों में से वे गुजरते होंगे। पैंजी, जैसा कि हम जानते हैं, हमेशा उसके साथ रहती थी और इधर काउंटेस जेमिनी भी अपनी गुलाबी छतरी संभाले उनके जोड़े में आ शामिल हुई थी। फिर भी अपनी मनःस्थिति और स्थान की अनुकूलता के साथ इज़ाबेल बिलकुल अकेली ही रहती थी। ऐसे अवसरों पर वह कई स्थानों का उपयोग करती थी। इनमें से सबसे सुविधाजनक स्थान था जान लातेरान के ऊंचे ठंडे मुख-द्वार के सामने की खुली घास-युक्त भूमि को घेरती नीची मुंडेर पर की सीट। वहां से कैम्पैग्ना के उस ओर एलबन माउंट की दूर तक फैली रेखा देखी जा सकता थी, और बीच का वह विशाल मैदान जो कि अब तक अपने अन्दर से गुज़री हर चीज को अपने में संजोये है। अपने कज़िन और उसके साथियों के चले जाने के वाद वह पहले से ज्यादा घूमने जाने लगी। अपनी धूमिल आत्मा को वह एक पूजा-गृह से दूसरे पूजा-गृह की ओर ले जाती। पैंज़ी या काउंटेस होतीं, तो भी एक अतीत संसार का स्पर्श उसे महसूस होता। रोम की दीवारों को पीछे छोड़कर गाड़ी उन छोटी-छोटी गलियों से आगे बढ़ती जाती जहां जंगली भौंरे बाड़ों में उलझे होते, या खेतों के नज़दीक किसी एकान्त स्थान पर उसकी प्रतीक्षा में खड़ी रहती—जबकि यह फूलों से लदी घास पर आगे-आगे चलती, या किसी ऐसे पत्थर पर बैठे रहती जिसका कि कभी कुछ उपयोग था। वहां बैठकर अपने व्यक्तिगत अवसाद के पर्दे के उस ओर वह दृष्यपट के मोहक अवसाद को देखती रहती—गाढ़ी गर्म-धूप के रंगों के कोमल उलझाव और उतार-चढ़ाव को, एकान्त मुद्राओं में स्थिर खड़े गड़रियों को, और उन पहाड़ियों को जिन पर पड़ती बादलों की छायाएं लाज की-सी हल्की आभा लिए रहती थी।

जिस शाम का मैं जिक्र कर रहा हूं, उस शाम वह निश्चय करके निकली थी कि वह मेडम मरले के बारे में नहीं सोचेगी। पर वह निश्चय व्यर्थ ही रहा और मैडम मरले की छाया निरन्तर उसके सामने घूमती रही। वह लगभग एक बच्चे के-से भय के साथ इस सम्भावना पर विमर्श कर रही थी कि क्या इतने वर्षों की उस घनिष्ठ मित्र को भी उसे वह महान् ऐतिहासिक विशेषण "दुष्ट"—देना होगा? वह इस सम्बन्ध में बाइबल तथा अन्य साहित्य-कृतियों से ही जानती थी। उसका विश्वास था कि व्यक्तिगत रूप से दुष्टता के साथ उसका कोई परिचय नहीं है। मानव-जीवन का विस्तृत परिचय पाने की उसकी अभिलाषा थी, और यद्यपि उसे सन्तोष था कि पर्याप्त मात्रा में वह उसने पा लिया है, फिर भी इस

आधार-भूत विशेषता से वह वंचित रही थी। बहुत कपटी होना भी शायद ऐतिहासिक अर्थ में दुष्ट होना नहीं था। मैडम मरले कपटी थी—बहुत, बहुत, बहुत! आण्ट लिडिया ने यह बात बहुत पहले जान ली थी और इज़ाबेल से यह कहा भी था। पर उस समय इज़ाबेल का ख्याल था उसे वस्तुओं का अधिक अच्छा अनुभव है, और मिसेज़ टाउशेट के बड़े तर्कों की अपेक्षा अपने जीवन की सहजता और अपने विश्लेषण की नेक-नीयती पर उसे अधिक भरोसा था। मैडम मरले ने यह उसकी इच्छा का ही पालन किया था जो दो मित्रों की विवाह सूत्र में बंधने में सहायता की थी। फिर भी यह कम आश्चर्य की बात नहीं थी कि मैडम मरले के मन में इस विवाह के लिए इतना आग्रह था। कुछ लोगों को विवाह तय कराने का जनून होता है—कला कला के लिए के सिद्धान्त के अनुसार। पर बहुत बड़ी कलाकार होते हुए भी मैडम मरले में यह गुण नहीं था। वह विवाह को निरर्थक समझती थी—जीवन को ही निरर्थक समझती थी। इस विशेष विवाह में उसने रुचि ली थी, पर और किसी में कभी नहीं। इससे लगता था कि मैडम मरले का शायद अपना कोई स्वार्थ था, और इज़ाबेल अपने से पूछ रही थी कि उसे इससे क्या लाभ हुआ होगा! यह जानने में उसे काफी समय लगा, और तब भी जो उसने जाना वह अधूरा ही था। उसे याद आ रहा था कि चाहे गार्डनकोर्ट में पहली बार मिलने के समय से ही मैडम मरले का व्यवहार उसे स्नेहपूर्ण लगा था, पर मिस्टर टाउशेट की मृत्यु के बाद, यह जानकर कि इज़ाबेल को दिवंगत व्यक्ति से काफी धन मिला है, उसका स्नेह दुगुना हो गया था। उसने पैसा उधार लेने का भौंडा ढंग न अपनाकर अपने लाभ के लिए एक सूक्ष्म ढंग अपनाया था और वह यह कि अपने एक घनिष्ठ मित्र को उसकी नई और विशाल सम्पत्ति के परिचय क्षेत्र में ला दिया था। मैडम मरले ने अपने घनिष्ठतम व्यक्ति को चुना था और इज़ाबेल यह स्पष्ट देख पा रही थी कि ऑसमण्ड की यही स्थिति थी। इस तरह वह इस धारणा का सामना करने के लिए विवश थी कि जिसे उसने दुनिया का सबसे कम संकीर्ण व्यक्ति समझा था, उसने एक आम आवारा की तरह उससे पैसे के लिए विवाह किया था। विचित्र बात थी कि उसे ऐसे पहले कभी नहीं लगा था। ऑसमण्ड के बारे में उसने और छोटी से छोटी बातें सोची थीं, पर यह कभी नहीं सोचा था। इससे बुरी बात वह सोच भी नहीं सकती थी और वह अपने से कह रही थी कि सबसे बुरी बात अभी होने को है। यों तो पैसे के लिए कोई भी पुरुष किसी भी

स्त्री से विवाह कर सकता है—ऐसा प्रायः होता है, पर उसे कम से कम यह बता तो देना चाहिए। वह सोच रही थी कि यदि ऑसमण्ड को पैसा ही चाहिए था तो क्या अब वह पैसा लेकर सन्तुष्ट हो जाएगा ? क्या उससे सम्पत्ति लेकर वह उसे जाने देगा ? ओह, यदि मिस्टर टाउशेट की उदारता आज इस रूप में उसकी सहायता कर सके तो कितनी बड़ी बात होगी। पर यह सोचते उसे देर नहीं लगी कि मैडम मरले ने अगर गिलबर्ट की सहायता करनी चाही थी तो अब तक उस उपहार के लिए ऑसमण्ड की कृतज्ञता समाप्त हो चुकी होगी। अपनी उत्साही सहायिका के लिए आज ऑसमण्ड के मन में क्या भावना होगी, और वह व्यंग्य-प्राण व्यक्ति उसे किन शब्दों में प्रकट करता होगा ? ड्राइव से लौटने से पहले इज़ाबेल ने अपने ही विशिष्ट ढंग से इस बीच की खामोशी को इस कोमल उद्गार से तोड़ा। "बेचारी, बेचारी, मैडम मरले।"

उसकी दया भावना शायद सार्थक हो जाती, यदि वह उसी शाम मैडम मरले के सैलोन में पुराने बहुमूल्य रेशमी परदों में से किसी एक के पीछे छिपकर खड़ी हो सकती। यह वही स्थान था जहां हम मिस्टर रोजियर के साथ एक बार हो आए हैं। उस स्थान पर लगभग छः बजे गिलबर्ट ऑसमण्ड कुरसी पर बैठा था और उसकी मेज़बान उसके सामने उसी तरह खड़ी थी, जैसे पहले एक और अवसर पर इज़ाबेल उसे देख चुकी थी। उस अवसर का उल्लेख उसके सतही महत्व के अनुसार न करके उसके वास्तविक महत्व के अनुसार पहले किया जा चुका है।

"मैं नहीं समझती तुम दुःखी हो। मेरे ख्याल में तुम्हें यह अच्छा लगता है," मैडम मरले बोली।

"मैंने कहा है मैं दुःखी हूं ?" ऑसमण्ड ने चेहरा ऐसे बना लिया, जैसे कि वह सचमुच दुःखी हो।

"पर तुम इसके विपरीत बात भी तो नहीं कहते, जो कि तुम्हें कृतज्ञतावश करनी चाहिए।"

"कृतज्ञता की बात छोड़ो," वह रूखे स्वर में बोला। "और मुझे ज़्यादा परेशान मत करो," उसने पल-भर बाद कहा।

मैडम मरले आहिस्ता से बैठ गई। उसने बाहें समेट ली थीं, और उसके सफेद हाथ उनमें से एक को सहारा दिए थे और दूसरी के लिए सजावट का काम कर रहे थे। वह बिलकुल स्थिर नजर आ रही थी और प्रकट रूप से उदास भी। "तुम

मुझे डराने की कोशिश मत करो। मैं क्या सोच रही हूं, इसका तुम्हें अन्दाजा नहीं।"

"मुझे उसकी चिन्ता भी नहीं है। मेरे पास अपना ही सोचने को बहुत है।"

"उससे तो तुम्हें बहुत खुशी होती है न।"

ऑसमण्ड ने अपना सिर कुरसी की पीठ से टिका लिया। मैडम मरले को देखती उसकी सीधी नज़र में व्यंग्य भी था, और कुछ हद तक थकान की अनुभूति भी। "तुम मुझे बहुत परेशान कर रही हो," उसने पल-भर बाद कहा, "मैं बहुत थका हुआ हूं।"

"मैं भी थकी हुई हूं," मैडम मरले बोली।

"तुम स्वयं अपने को थकाती हो। मेरी थकान अपनी वजह से नहीं है।"

"मैं तुम्हारी खातिर अपने को थकाती हूं। मैंने तुम्हें एक दिलचस्पी दे दी है। यह बहुत बड़ा उपहार है।"

"तुम उसे दिलचस्पी कहते हो?" ऑसमण्ड ने तटस्थ भाव से पूछ लिया।

"अवश्य, क्योंकि उससे तुम्हारा समय बीत जाता है।"

"समय मुझे कभी इतना लम्बा नहीं लगा जितना इन सर्दियों में लगा है।"

"तुम पहले कभी इतने अच्छे नज़र नहीं आते रहे। कभी इतने मिलनसार और प्रतिभाशाली भी नज़र नहीं आए।"

"मेरी प्रतिभा को मारो काठ," वह कुछ सोचता हुआ बुदबुदाया, "सच, तुम मुझे कितना कम जानती हो।"

"मैं तुमको नहीं जानती, तो कुछ भी नहीं जानती," मैडम मरले मुस्कराई, "तुम्हारे मन में पूरी सफलता की अनुभूति है।"

"जब तक तुम मेरे बारे में निर्णय करना नहीं छोड़तीं, तब तक वह अनुभूति मुझमें कभी नहीं आएगी।"

"वह मैंने बहुत पहले छोड़ दिया था। मैं तो पुरानी जानकारी के आधार पर कह रही हूं। पर अब तुम बात भी ज़्यादा करने लगे हो।"

ऑसमण्ड आग-बबूला हो उठा "मैं चाहता हूं कि तुम ज़रा कम बात किया करो।"

"तुम मुझे खामोश कर देना चाहते हो? तुम्हें पता है मझे बक-बक करने की आदत कभी नहीं रही। फिर भी तीन-चार बातें हैं जो मुझे पहले तुमसे कहनी

हैं। तुम्हारी पत्नी को समझ नहीं आ रहा कि वह अपना क्या करे ?" वह कहते हुए उसका स्वर बदल गया।

"क्षमा करना उसे सब समझ आता है। उसने एक सीधी लकीर खींच रखी है, और हर चीज़ अपने विचारों के अनुसार ही करना चाहती है।"

"आज उसके विचारों में बहुत खासियत आ गई लगती है।"

"निश्चित रूप से। आज पहले से कहीं ज्यादा विचार उसके मन में आते हैं।"

"मुझे तो सुबह इसका कुछ पता नहीं चला," मैडम मरले बोली। "मुझे तो उसकी मनःस्थिति बहुत साधारण बल्कि जड़-सी लगी। वह बहुत घबराई हुई थी।

"तुम सीधे यही क्यों नहीं कह देतीं कि वह बेहाल नज़र आ रही थी ?"

"नहीं मैं तुम्हें बहुत ज्यादा उत्साहित नहीं करना चाहती।"

ऑसमण्ड अभी तक अपना सिर पीछे के गद्दे से टिकाए था। उसके एक पैर का टखना दूसरे घुटने पर विश्राम कर रहा था। पल-भर उसी तरह बैठे रहने के बाद आखिर उसने कहा, "मैं जानना चाहूंगा कि तुम्हें हुआ क्या है ?"

"हुआ है···हुआ है···।" इतना कहकर मैडम मरले रुकी, फिर ग्रीष्म के आकाश की गरज की तरह एकाएक उसका आवेश फूट पड़ा, "हुआ है यह कि मैं किसी भी कीमत पर एक बार रो लेना चाहती हूं, पर रो नहीं सकती।"

"रोकर तुम्हें क्या हासिल होगा ?"

"मन वैसा हो जाएगा, जैसा तुमसे मिलने से पहले था।"

"मतलब मैंने तुम्हारे आंसुओं को सोख लिया है ? पर मैंने तुम्हें आंसू बहाते देखा है।"

"मुझे लगता है अब भी तुम मुझे रुला दोगे। मतलब भेड़िए की तरह गुर्राने पर मजबूर कर दोगे। मुझे इसकी उम्मीद भी है और जरूरत भी। आज सुबह मेरा व्यवहार बहुत दुष्टतापूर्ण था, बहुत भयंकर।"

"तुम कह रही थी कि इज़ाबेल जड़ मनःस्थिति में थी, इसलिए शायद उसे इसका पता नहीं चला होगा," ऑसमण्ड बोला।

"वह जड़ हो गई थी मेरे व्यवहार के कारण। मेरा भी वश नहीं था, क्योंकि मेरे मन में बुराई भरी थी। कह नहीं सकती कि वह अच्छाई ही हो। तुमने मेरे

आंसुओं को ही नहीं, मेरी आत्मा को भी सोख लिया है।"

"तो अपनी पत्नी की स्थिति के लिए मैं उत्तरदायी नहीं हूं ?" ऑसमण्ड बोला ,"यह खुशी की बात है कि उसपर तुम्हारे प्रभाव का लाभ मुझे मिलेगा। तुम्हें यह पता नहीं कि आत्मा अनश्वर है। उसमें अन्तर कैसे आ सकता है ?"

"मुझे उसकी अनश्वरता में विश्वास नहीं है। मेरा विश्वास है कि उसकी हत्या की जा सकती है। मेरी आत्मा के साथ यही हुआ है हालांकि वह शुरू में बहुत अच्छी थी। और इसका उत्तरदायित्व तुम पर है। तुम बहुत बुरे हो," मैडम मरले ने गम्भीर भाव से शब्दों पर ज़ोर दिया।

"क्या बात इसी तरह समाप्त होगी ?" ऑसमण्ड ने रूखे स्वर से पूछा।

"मुझे नहीं पता किस तरह समाप्त होगी। चाहती हूं मुझे पता होता बुरे लोग किस तरह समाप्त होते हैं—विशेष रूप से अपने साधारण पापों को लेकर। तुमने मुझे भी अपने जितनी बुरी बना दिया है।"

"मैं तुम्हें समझ नहीं पा रहा। मुझे तुम खासी अच्छी लगती हो," ऑसमण्ड बोला, शब्दों से प्रभाव डालने के लिए वह जान-बूझकर उनमें उदासीनता की ध्वनि ले आया था।

पर इसके विपरीत मैडम मरले का अपने पर अधिकार गुम होता जा रहा था। उसे इस तरह अपने वश से बाहर होते हमने पहले कभी नहीं देखा। उसकी आंखों की चमक धुंधली पड़ गई थी, और उसकी मुस्कराहट में एक व्यथापूर्ण प्रयास था। "जो कुछ मैंने अपने साथ किया है, उस दृष्टि से अच्छी लग रही हूं ? तुम्हारा यही मतलब है न ?"

"मेरा मतलब है अपने सदा के आकर्षण की दृष्टि से अच्छी लग रही हो," कहते हुए ऑसमण्ड भी मुस्करा दिया।

"मेरे ईश्वर।" मैडम मरले बुदबुदाई। अपनी परिपक्वता में भी वहां बैठे हुए उसे वही ढंग अपनाना पड़ा जो सुबह उसकी बातें सुनकर इज़ाबेल ने अपनाया था। अपना चेहरा झुकाकर उसने उसे दोनों हाथों से ढक लिया।

"तो अब तुम रोने ही जा रही हो ?" ऑसमण्ड ने पूछा। वह स्थिर बनी रही तो वह आगे बोला, "मैंने कभी तुमसे शिकायत की है ?"

मैडम मरले ने जल्दी से हाथ हटा लिए। "तुमने अपना बदला दूसरी तरह से लिया है—उससे लिया है।"

ऑसमण्ड ने अपना सिर और पीछे कर लिया। पल-भर वह छत की तरफ देखता रहा—लगता था जैसे अनौपचारिक रूप से ईश्वरीय शक्ति से प्रार्थना कर रहा हो। "स्त्रियों की कल्पना का भी जवाब नहीं। अन्दर से वे हमेशा छिछली होती है। बदले की बात तुम एक तीसरे दर्जे के उपन्यासकार की तरह कर रही हो।"

"तुमने शिकायत नहीं की, ठीक है। तुम अपनी जीत का मजा लेते रहे हो।"

"तुम मेरी जीत किसे कहती हो, यह जानने के लिए मैं सचमुच बहुत उत्सुक हूं।"

"तुमने अपनी पत्नी को अपने से आतंकित कर रखा है।"

ऑसमण्ड ने अपनी स्थिति बदल ली। आगे को झुककर कोहनियों को घुटनों पर रखे वह अपने पैर-तले के सुन्दर परशियन गालीचे को देखता रहा। उसका भाव कुछ ऐसा रहता था जैसे दूसरे का कोई भी जायज़ा, समय तक का, उसे स्वीकार न हो, और वह बस अपने ही जायज़े से चलना चाहता हो। इस विशेषता के कारण कभी-कभी उससे बात करते दूसरे को बहुत झुंझलाहट होती थी। "इज़ाबेल मुझसे आतंकित नहीं है, और न ही मैं चाहता हूं कि हो," आखिर उसने कहा, "तुम ऐसी बात कहकर मुझे किस चीज़ के लिए उकसाना चाहती हो?"

"मैंने सब सोच लिया है कि तुम मुझे क्या-क्या नुकसान पहुंचा सकते हो," मैडम मरले ने उत्तर दिया। "तुम्हारी पत्नी सुबह मुझसे आतंकित महसूस कर रही थी, पर वास्तव में मेरे माध्यम से वह तुम से आतंकित थी।"

"तुमने कोई न कहने की बात कह दी होगी। उसके लिए मैं ज़िम्मेदार नहीं हूं। मेरे ख्याल में तो तुम्हें उसके पास जाने की ज़रूरत ही नहीं थी, क्योंकि तुम अकेली ही सब संभाल सकती हो। यह मुझे पता है कि तुम मुझसे आतंकित नहीं हो," वह कहता रहा। "तो फिर वही कैसे आतंकित है? तुममें उससे कम साहस नहीं है। पता नहीं कहां से यह सब कूड़ा तुम्हारे दिमाग में भर गया है। अब तक तो तुम्हें मुझे जान लेना चाहिए था।" यह कहता हुआ वह उठकर चिमनी के पास चला गया। वहां खड़ा, पल-भर वह, जैसे पहली बार, चीनी मिट्टी की उन नाज़ुक और असाधारण चीज़ों को देखता रहा जिनसे चिमनी लदी थी। फिर एक प्याली उसने उठा ली और उसे हाथ में लिए मैण्टल पर बांह रखकर बोला, "तुम्हें हर चीज़ में कुछ ज़्यादा ही मतलब नज़र आता है। तुम इतना आगे बढ़

जाती हो कि वास्तविकता तुम्हारी आंखों से ओझल हो जाती है। तुम जितना सोचती हो, मैं उससे कहीं सीधा आदमी हूं।"

"मैं समझती हूं, तुम बहुत ही सीधे हो।" मैडम मरले की आंखें प्याली पर रुकी रहीं। "इसका पता मुझे समय पाकर चला है। पहले मैं तुम्हारे बारे में निर्णय लिया करती थी, पर तुम्हारे विवाह के बाद से मैं तुम्हें समझने लगी हूं। तुम मेरे लिए क्या थे, उससे कहीं ज़्यादा मैंने इस बात से तुम्हें जाना है कि तुम अपनी पत्नी के लिए क्या हो। वह प्याली कीमती है, ज़रा सावधानी से हाथ में लो।"

"इसमें पहले ही एक छोटी-सी दरार पड़ी है," ऑसमण्ड ने रूखे स्वर में कहा, और प्याली वापस रख दी। "मेरे विवाह से पहले अगर तुम मुझे नहीं समझती थीं, तो इस बक्से में मुझे बन्द कर देना तुम्हारी सख्त ज्यादती थी। पर मुझे अपने बक्से से लगाव हो गया और मैं सोचने लगा कि मैं आराम से इसमें रहूंगा। मैं ज़्यादा कुछ नहीं चाहता था—सिर्फ इतना ही चाहता था कि वह मुझे थोड़ा-बहुत पसन्द करे।"

"थोड़ा-बहुत नहीं, बहुत ज़्यादा पसन्द करे।"

"बहुत ज़्यादा ही सही। ऐसी स्थिति में आदमी ज़्यादा-से-ज़्यादा की मांग करता है। ठीक है, मैं चाहता था वह मुझे तन-मन से चाहे।"

"मैंने तुम्हें तन-मन से कभी नहीं चाहा," मैडम मरले बोली।

"पर तुम ज़ाहिर ऐसा ही करती थीं।"

"आराम से रहने की नौबत तुम्हें मेरे साथ कभी नहीं आई," मैडम मरले कहती रही।

"मेरी पत्नी ने मुझे यह सुख देने से इन्कार कर दिया है—साफ इन्कार," ऑसमण्ड बोला। "अगर तुम इसे ट्रेजडी कहना चाहती हो, तो यह ट्रेजडी उसके लिए नहीं है।"

"ट्रेजडी मेरे लिए है," मैडम मरले एक उसांस भर-कर उठ खड़ी हुई, पर उसकी आंखें मैंटल शैल्फ की चीज़ों पर रुकीं रहीं। "मुझे लगता है कि एक कपट-पूर्ण स्थिति से कितनी हानि हो सकती है, इसका मुझे कड़ा सबक मिलने वाला है।"

"वह वाक्य तो तुम जैसे किसी कापी से उधार लेकर बोल रही हो। हम

जहां भी अपने लिए सुख खोज सकें, हमें खोजना चाहिए। मेरी पत्नी मुझे पसन्द नहीं करती पर मेरी बच्ची ज़रूर करती है। मैं उसी से अपनी क्षतिपूर्ति करना चाहूंगा। सौभाग्यवश मुझे उसमें कोई दोष नज़र नहीं आता।"

"ओह !" मैंडम मरले धीमे स्वर में बोली, "यदि मेरे पास भी कोई बच्चा होता…!"

ऑसमण्ड पल-भर प्रतीक्षा करता रहा, फिर औपचारिक ढंग से उसने कहा, "व्यक्ति दूसरे के बच्चे में भी बहुत रुचि ले सकता है।"

"कापी के वाक्य तुम मुझसे ज़्यादा बोलते हो। खैर, कहीं तो हम साथ हैं।"

"तुम इस ख्याल से कह रही हो कि मुझसे तुम्हें क्या नुकसान पहुंच सकता है ?" ऑसमण्ड ने पूछा।

"नहीं, इस ख्याल से कि मुझसे तुम्हें क्या फायदा पहुंच सकता है। मुझे इज़ाबेल से इसीलिए ईर्ष्या होने लगी थी। मैं चाहती हूं कि यह काम मेरे ऊपर रहे," यह कहते हुए उसके चेहरे पर आया रूखा, कड़वा भाव उसकी स्वाभाविक ताज़गी में परिवर्तित हो गया।

ऑसमण्ड ने अपना हैट और छाता उठा लिया। हैट को बांह पर दो-एक बार झटक कर उसने कहा, "मेरा ख्याल है यह बात तुम्हें मुझ पर छोड़ देनी चाहिए।"

ऑसमण्ड के चले जाने के बाद मैंडम मरले ने पहला काम यह किया कि मैंटल शैल्फ से वह पतली काफी की प्याली उठाकर जिसमें दरार होने की बात ऑसमण्ड ने कही थी, सूनी-सी नज़र से उसे देखती रही। फिर वह अस्पष्ट रूप से कराह उठी, "तो क्या मैंने व्यर्थ ही यह सब दुष्टता की है ?"

५०

चूंकि काउंटेस जेमिनी पुराने स्मारकों से परिचित नहीं थी, इसलिए इज़ाबेल कभी-कभी उसे उन दिलचस्प खण्डहरों के बारे में बताती रहती थी, जिससे उनकी शाम की ड्राइव पुरातत्व के पाठ का रूप ले लेती थी। काउंटेश अपनी

ननद को एक महान विदुषी समझती थी, इसलिए बिना कुछ भी आपत्ति किए वह रोमन ईंटों की बड़ी-बड़ी आकृतियों को ऐसे धैर्य के साथ देखती रहती थी जैसे वह आधुनिक पोशाकों के किसी ढेर को देखती। उसे इतिहास का ज्ञान नहीं था—हां विचित्र किस्से सुनने का शौक जरूर था। अपनी तरफ से उसका काई दावा भी नहीं था, पर रोम में रहना उसे इतना अच्छा लगता था कि वह बस प्रवाह में बहती जाना चाहती था। पालाजो रोकानेरा में रहने की अगर यह शर्त होती कि उसे 'बाथ्स आफ टाइटस' की अंधेरी सीलन में हर रोज एक घण्टा बिताना पड़ेगा, तो वह खुशी से ऐसा करने लगती। इज़ाबेल को उसका मार्ग-दर्शन करने की ऐसी आकांक्षा नहीं थी। वह खण्डहरों की तरफ मुख्य रूप से इसलिए जाती थी कि फ्लोरेंस की महिलाओं को प्रेम-संबंधों से हटकर किसी और विषय में बात की जा सके, क्योंकि काउंटेस उन सम्बन्धों की सूचनाएं देते कभी नहीं अघाती थी। यहां यह भी कहना चाहिए कि इज़ाबेल के साथ बाहर निकलकर काउंटेस अपनी ओर से किसी खोज-बीन में नहीं पड़ती थी—बस गाड़ी में बैठी-बैठी किसी भी चीज को देखकर चिल्ला उठती थी कि हाय, वह कितनी दिलचस्प है ! अब तक सारा कोलीज़ियम उसने इसी ढंग से देखा था, जिससे इज़ाबेल को खासी निराशा हुई थी। काउंटेस के लिए मन में इज्जत रखते हुए भी, इज़ाबेल को यह समझ नहीं आता था कि वह गाड़ी से उतरकर इमारत को अन्दर से क्यों नहीं देखना चाहती। पैंज़ी को घूमने का इतना कम अवसर मिलता था कि इस विषय में उसकी निजी दिलचस्पी भी कम नहीं थी। उसे कहीं मन में यह आशा रहती थी कि एक बार अन्दर जाकर, हो सकता है, काउंटेस ऊपर की मंज़िलें चढ़ने के लिए भी राज़ी हो जाए। आखिर एक दिन काउंटेस इस प्रयास के लिए रज़ामन्द हो गई। वह मार्च की शाम थी और हवा में कभी-कभी बसन्त की उड़ती गन्ध का आभास मिल जाता था। तीनों महिलाएं कोलीज़ियम के अन्दर साथ-साथ गईं, पर इज़ाबेल शेष दोनों से अलग होकर इधर-उधर घूमने लगी। वह प्राय: उन वीरान कगारों पर चढ़ जाती थी, जहां से रोम का जन-समुदाय जयजयकार किया करता था, और जहां कि दरारों में अब (जब कभी सम्भव हो) जंगली फूल खिल आते हैं। पर आज वह थकी थी, इसलिए उसका मन सुनसान अखाड़े में बैठी रहने को था। इससे उसे एक अन्तराल भी मिल गया, क्योंकि काउंटेस के साथ रहते उसे ज्यादा ध्यान काउंटेस की बातों की ओर ही

देना पड़ता था। इज़ाबेल का ख्याल था कि पैंज़ी के साथ अकेली रह जाने के बाद काउंटेस कुछ देर आरनाइड के भ्रष्टाचार की बातें नहीं करेगी। इसलिए वह नीचे बैठी रही, जबकि पैंज़ी अपनी आंट को, जिसके लिए हर चीज एक-सी थी, ईंटों के उस ढालू ज़ीने की तरफ ले गई, जिसके नीचे का बड़ा-सा लकड़ी का दरवाज़ा कैस्टोडियन को खोलना पड़ता है। बड़ा अहाता आधा छाया में था। शेष में पश्चिम से आती धूप ट्रैवरटाइन की बड़ी-बड़ी चट्टानों के पीले-लाल रंग को उघाड़ रही थी। उसे बड़े खण्डहर में वही रंग एक सजीव तत्व नज़र आता था। यहां-वहां कोई किसान या टूरिस्ट घूमता नज़र आ जाता, जिसकी आंखें क्षितिज के निर्मल एकान्त में चक्कर काटते और उतराते अबाबीलों के झुण्ड पर टिकी होतीं। तभी सहसा इज़ाबेल को अहसास हुआ, कि अखाड़े के बीचोंबीच खड़ा एक व्यक्ति उसकी ओर देख रहा है। उस आदमी का सिर उसी मुद्रा में था जिसमें कुछ सप्ताह पहले उसे देखकर उसने यह जाना था कि वह आदमी अपने इरादे के कुचले जाने पर भी उससे छोड़ने वाला नहीं है। यह मुद्रा केवल मिस्टर एडवर्ड रोज़ियर की ही हो सकती थी जो कि सचमुच उस समय उससे बात करना चाह रहा था। यह निश्चय करके कि इज़ाबेल के साथ कोई नहीं है, वह उसके पास चला आया। आकर उसने कहा कि चाहे वह उसके पत्रों का उत्तर नहीं देती, फिर भी शायद वह उसके मुंह से बात सुनते समय कान बन्द नहीं कर लेगी। इज़ाबेल ने उसे बताया कि पैंज़ी वहां पास ही है, इसलिए वह उसे पांच मिनट से ज़्यादा नहीं दे सकती। इस पर रोज़ियर ने घड़ी निकाल ली और सामने के एक टूटे ब्लॉक पर बैठ गया।

"बात छोटी-सी है," रोज़ियर बोला। "मैंने अपने संग्रह की सब कलाकृतियां बेच दी हैं।" इज़ाबेल अनायास चिहुंक उठी जैसे कि रोज़ियर ने कहा हो कि उसने अपने सब दांत निकलवा दिए हैं? "मैंने उन्हें होटल द्रुओत में नीलाम कर दिया है," रोज़ियर कहता रहा। "नीलामी तीन दिन पहले हुई है, और उन्होंने तार से मुझे सूचना दी है कि परिणाम बहुत अच्छा रहा है।"

"मुझे सुनकर खुशी हुई, पर तुम वे सुन्दर चीज़ें अपने पास ही रखे रहते तो ज़्यादा अच्छा था।"

"पर अब मेरे पास पैसा आ गया है—पचास हज़ार डालर। अब तो मिस्टर ऑसमण्ड मुझे काफी धनी समझेगा!"

"तो तुमने इसलिए यह काम किया है ?" इज़ाबेल ने आहिस्ता से पूछा।

"दुनिया में और क्या है जिसके लिए मैं यह करता। मैं इसके अलावा और कुछ सोचता ही नहीं हूं। मैं पेरिस जाकर इसका प्रबन्ध कर आया था। नीलामी के लिए मैं खुद नहीं रुका—मैं अपनी आंखों से उन चीज़ों को जाते देखता, तो मेरी जान ही निकल जाती। पर मैं अच्छे हाथों में उन्हें सौंप आया था और उनकी अच्छी कीमत वसूल हो गई है। पर अनैमल की चीज़ें मैंने नहीं बेचीं। पैसा मेरी जेब में है, इसलिए अब ऑसमण्ड मुझे गरीब नहीं कह सकता," उसने उद्धत भाव से कहा।

"अब वह कहेगा कि तुम मूर्ख हो," इज़ाबेल बोली, जैसे कि यह बात ऑस-मण्ड ने पहले कभी न कही हो।

रोज़ियर ने तीखी नज़र से उसकी तरफ देखा। "तुम्हारा मतलब है उन चीज़ों के न रहने से मैं कुछ भी नहीं रहा ? मैं जो कुछ था उन्हीं की वजह से था ? पैरिस में भी लोग यही कहते थे। उनकी बातों में ज़रा भी छिपाव नहीं था पर उन्होंने पैंज़ी को नहीं देखा था।"

"तुम सचमुच सफलता के हकदार हो," इज़ाबेल ने सहानुभूति के साथ कहा।

"तुम्हारे इस स्वर में वही उदासीनता है जो कि इससे उलट बात कहते समय होती, और उसकी उद्वेग-भरी आंखें प्रश्नात्मक भाव से इज़ाबेल की आंखों में देखती रहीं। उसका भाव उस व्यक्ति का था जो सप्ताह भर पैरिस में बातचीत का विषय बने रहने के कारण अपने को छः इंच ऊंचा महसूस कर रहा हो, पर जिसके मन में इस सन्देह की चुभन भी हो कि दो एक लोग ऐसे हैं जो उसके आकार में वृद्धि होने के बावजूद उसे बौना समझते हैं। "मेरे पीछे यहां जो कुछ हुआ है उसका मुझे पता है," उसने बात जारी रखी। "पैंज़ी के लार्ड वारबर्टन को इन्कार कर देने के बाद अब ऑसमण्ड क्या चाह रहा है ?"

"कि पैंज़ी किसी और सम्भ्रान्त व्यक्ति से विवाह करे," इज़ाबेल बोली।

"वह कौन-सा संभ्रान्त व्यक्ति है ?"

"जिस किसीको भी ऑसमण्ड चुनेगा।"

"रोज़ियर अपनी घड़ी जेब में डालता, धीरे से उठ खड़ा हुआ। तुम किसी का मज़ाक उड़ा रही हो, पर मुझे लगता है कि इस बार वह व्यक्ति मैं नहीं हूं।"

"मैं मज़ाक उड़ाना नहीं चाहती थी," इज़ाबेल बोली। "मैं बहुत कम मज़ाक

करती हूं। खैर अब तुम्हें चले जाना चाहिए।"

"मैं यहां बिलकुल ठीक हूं," रोज़ियर ने बिना हिले घोषणा की। यह घोषणा उसने काफी ऊंचे स्वर में की—अपने पैरों पर अपना सन्तुलन बनाए रखते हुए, और इस तरह कोलीज़ियम में चारों तरफ देखते हुए जैसे कि वहां दर्शकों की भीड़ जमा हो। पर एकाएक उसके चेहरे का रंग बदल गया क्योंकि दर्शकों की संख्या उसकी आशा से अधिक हो गई थी—इज़ाबेल ने घूमकर देखा कि काउंटेस और पैंज़ी चक्कर लगाने के बाद वापस आ रही हैं। "तुम्हें अब सचमुच चले जाना चाहिए," उसने जल्दी से कहा।

"ओह, तुम मुझ पर कुछ तो दया करो!" एडवर्ड रोज़ियर की आवाज़, अभी-अभी जो उसने घोषणा की थी, उससे बहुत भिन्न हो उठी। फिर उस व्यक्ति की तरह, जिसे मुसीबत के वक्त अचानक कोई अच्छी बात सूझ गई हो, उसने उत्सुकतापूर्वक कहा, "यह काउंटेस जेमिनी है क्या? मेरी बहुत इच्छा है मेरा इससे परिचय हो जाए।"

इजाबेल पल-भर उसे देखती रही। 'इसका भाई इसकी कोई बात नहीं मानता।"

"ओह, तुम उस आदमी को कितना बड़ा शैतान बनाकर पेश कर रही हो।" तभी काउंटेस सामने आ पहुंची। वह पैंज़ी के आगे-आगे चल रही थी। उसका चेहरा खिल रहा था—कुछ हद तक शायद यह देखकर कि उसकी भाभी एक सुन्दर युवक से बात कर रही है।

"अच्छा है तुमने अपने अनैमल नहीं बेचे," इज़ाबल ने रोज़ियर के पास से चलते हुए कहा। वह सीधी पैंज़ी के पास चली गई। पैंज़ी एडवर्ड रोज़ियर को देखकर आंखें झुकाए जहां-की-तहां रुक गई थी। इज़ाबेल ने कोमल स्वर में उससे कहा, "हम वापस गाड़ी में चल रही हैं।"

"हां काफी देर हो रही है," पैंज़ी ने और भी कोमल स्वर में कहा और बिना कुछ और कहे, या झिझके, या पीछे देखे, वह इज़ाबेल के साथ चल दी।

पर इज़ाबेल ने चलते-चलते पीछे देख लिया। मिस्टर रोज़ियर और काउंटेस ने तुरन्त आपस में परिचय कर लिया था (रोज़ियर ने हैट उतारकर झुकते-मुस्कराते हुए स्वयं अपना परिचय दे दिया था। काउंटेस की भाव-पूर्ण पीठ उसकी प्रसन्नता और दिलचस्पी का पता दे रही थी। पर यह सब शीघ्र ही ओट में रह

गया, क्योंकि इज़ाबेल और पैंज़ी गाड़ी में अपनी-अपनी जगह पर आ बैठीं। इज़ाबेल की ओर देखते हुए पैंज़ी की आंखें पहले उसकी गोद की ओर झुकी रहीं, फिर उठकर इज़ाबेल की आंखों से आ मिलीं। पैंज़ी की दोनों आंखों में से जैसे विषाद की एक-एक किरण फूट रही थी—दबी कामना की वह चिनगारी इज़ाबेल के दिल को छू गई। साथ ही स्पर्धा की एक लहर उसका आत्मा को छाकर निकल गई। इस बच्ची की आन्तरिक अभिलाषा का केन्द्र कितना निश्चित था जबकि वह स्वयं किसी रूखी निराशा में से गुजर रही थी। "मेरी बेचारी पैंज़ी!" उसने स्नेह के साथ कहा।

"आप मन बुरा न करें," पैंज़ी तुरन्त क्षमा याचना के ढंग से बोली।

फिर कुछ देर खामोशी रही—काउंटेस लौटने में बहुत देर लगा रही थी। "तुमने अपनी आंट को सब कुछ दिखा दिया? कैसा लगा उसे?" आखिर इज़ाबेल ने पूछ लिया।

"हां मैंने सब कुछ दिखा दिया है। मेरा ख्याल है उन्हें बहुत अच्छा लगा है।"

"तुम थक तो नहीं गईं?"

"नहीं बिलकुल नहीं थकी। धन्यवाद।"

काउंटेस का अब भी पता नहीं था, इसलिए इज़ाबेल ने फुटमैन से कहा कि वह कोलीज़ियम में जाकर उससे कह दे कि वे लोग इन्तज़ार कर रही हैं। फुटमैन ने वापस आकर घोषणा की कि सिग्नोरा काउंटेस कह रही हैं कि वे लोग इन्तजार न करें—वे कैब लेकर घर पहुंच जाएंगी।

मिस्टर रोज़ियर से काउंटेस की सहज सहानुभूति विकसित होने के लगभग एक सप्ताह बाद की बात है कि ज़रा देर से डिनर के लिए कपड़े बदलने जाते हुए इज़ाबेल को पैंज़ी अपने कमरे में बैठी नज़र आई। लड़की जैसे उसका इन्तज़ार ही कर रही थी। उसे देखकर वह नीची कुर्सी से उठ खड़ी हुई। "मेरी ज़्यादतियों के लिए क्षमा कीजिएगा," लड़की महीन आवाज में बोली। "आगे काफी दिन शायद ऐसा नहीं कर पाऊंगी।"

उसकी आवाज़ विचित्र लग रही थी, और उसकी खुली आंखों में भय और उत्तेजना की झलक थी। "तुम कहीं जा तो नहीं रहीं?" इज़ाबेल बोल उठी।

"मैं कान्वेंट में जा रही हूं।"

"कान्वेंट में ?"

पैंज़ी पास आ गई—इतनी पास कि अपनी बांहें इज़ाबेल के गले में डालकर सिर उसके कन्धे पर रख सके। पल-भर वह निःस्तब्ध भाव से खड़ी रही। पर इज़ाबेल ने महसूस किया कि वह कांप रही है। उस छोटे से शरीर का कम्पन वह सब कुछ कहे दे रहा था जो कि लड़की ज़बान से नहीं कह पा रही थी। फिर भी इज़ाबेल ने पूछ लिया, "पर कान्वेंट में तुम क्यों जा रही हो ?"

"क्योंकि पापा समझते हैं कि यही मेरे लिए सबसे अच्छा होगा। वे कहते हैं बीच-बीच में इस तरह एकान्त में रहना एक युवा लड़की के लिए अच्छा होता है। उनका कहना है कि दुनिया—दुनिया एक लड़की के लिए बहुत बुरी जगह है। यह अवसर वे मुझे कटकर रहने और थोड़ा-बहुत चिन्तन करने के लिए दे रहे हैं।" पैंज़ी छोटे-छोटे टुकड़ों में बात कर रही थी जैसे कि उसे स्वयं ही अपनी बात पर विश्वास न हो। फिर जैसे अपने पर पूरी तरह वश पाकर वह विजय-भाव से बोली, "मेरा ख्याल है पापा ठीक कहते हैं। इन सर्दियों में मैं दुनिया के बीच कुछ ज़्यादा ही रही हूं।"

इज़ाबेल पर इस बात का विचित्र-सा प्रभाव हुआ। लड़की जितना सोचती थी, उससे कहीं अधिक अर्थ उसे इन शब्दों में मिला। "पर यह तय कब हुआ है ?" उसने पूछा, "मुझे इसका बिलकुल पता नहीं है।"

"पापा ने अभी आधा घण्टा पहले मुझे बताया है। वे नहीं चाहते थे कि पहले से इस बारे में बात हो। सवा सात बजे मैडम कैथरीन मुझे लेने आएगी, और मुझे सिर्फ दो फ्रॉक साथ ले जानी होंगी। यह दो-चार सप्ताह की ही बात है। मुझे विश्वास है मुझे वहां जाकर अच्छा लगेगा। मैं उन सब महिलाओं से मिल लूंगी जो मुझसे इतना स्नेह किया करती थीं और उन छोटी-छोटी लड़कियों को देखा करूंगी जो अब वहां शिक्षा ले रहीं हैं। मुझे छोटी लड़कियां बहुत अच्छी लगती है," पैंज़ी अपने छोटे से आकार के अनुसार शान से बोली। "और मुझे मदर कैथरीन भी बहुत अच्छी लगती है। मैं वहां खामोश रहूंगी और बहुत कुछ सोचा करूंगी।"

इज़ाबेल सांस रोके सुनती रही। उसका मन आतंकित हो रहा था। "कभी-कभी मेरे बारे में भी सोचा करना।"

"आप जल्दी ही कभी मुझसे मिलने आएं," कहती हुई पैंज़ी रो उठी। उसका

वह स्वर अब तक के साहसपूर्ण स्वर से बहुत भिन्न था।

इज़ाबेल कुछ और नहीं कह सकी। वह कुछ समझ नहीं पा रही थी। उसे यही लग रहा था कि अपने पति को वह अब भी कितना कम जानती है। पैंज़ी की बात का उत्तर उसने एक लम्बे कोमल चुम्बन से दिया।

आधा घण्टा बाद इज़ाबेल को नौकरानी से पता चला कि मैडम कैथरीन एक कैब में आकर सिग्नोरीना को अपने साथ ले गई है। डिनर से पहले जब वह ड्राइंग-रूम में गई तो काउंटेस जेमिनी वहां अकेली बैठी थी। उसे देखते ही काउंटेस ने विचित्र ढंग से सिर हिलाकर इस घटना के सम्बन्ध में अपनी राय ज़ाहिर की। "ठीक है कुछ दिन लड़की आराम से रह लेगी।" इज़ाबेल ने सोचा यह बात अगर दिखावा है, तो जाने ऑसमण्ड क्या दिखावा करेगा। उसे हल्के से कहीं लग रहा था कि ऑसमण्ड उससे कहीं अधिक रुढ़िग्रस्त है, जितना कि वह समझती थी। ऑसमण्ड से वह इतनी सतर्क होकर बात करने लगी थी कि अन्दर आने के बाद कई मिनट तक वह पैंज़ी के जाने की बात नहीं कर सकी—एक विचित्र-सा संकोच उसपर छाया रहा। यह बात उसने तब उठाई जब वे लोग खाने की मेज़ पर बैठ गए। ऑसमण्ड से सवाल पूछना उसने छोड़ रखा था—केवल वह अपनी तरफ से ही कुछ उससे कह सकती थी। इस समय स्वाभाविक रूप से इतना ही उसकी ज़बान पर आया : "पैंज़ी के बगैर मुझे बहुत सूना-सूना लगेगा।"

ऑसमण्ड सिर एक तरफ को झुकाए पल-भर मेज़ के बीचोंबीच रखी फूलों की टोकरी को देखता रहा। "हां-हां," आखिर वह बोला, "मैंने भी यह सोचा था। तुम्हें बीच-बीच में कभी एक-आध बार उससे मिल आना चाहिए। तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा कि मैंने उसे कान्वेंट में क्यों भेजा है, पर शायद मैं तुम्हें समझा नहीं सकूंगा। यह कोई खास बात नहीं है। तुम्हें परेशान होने की ज़रूरत नहीं। इसीलिए मैंने तुमसे बात नहीं की थी। मुझे पता था तुम मुझसे सहमत नहीं होगी। पर मेरा हमेशा से ख्याल रहा है कि अपनी लड़की को सही शिक्षा देने के लिए यह बहुत ज़रूरी है। लड़की में अपनी ताज़गी बनी रहनी चाहिए—उसके साथ ही एक कोमलता और भोलापन। आजकल जो रंग-ढंग है, उनमें उसके मुचड़ जाने और गर्दो-गुबार से ढक जाने की बहुत सम्भावना है। पैंज़ी पर पहले ही थोड़ा बहुत गर्दो-गुबार पड़ चुका है वह कुछ ज्यादा ही इस वातावरण में घिरी रही है। समाज नाम का जो यह उफनता-उमड़ता जन-समूह है, कभी-कभी

उसे इससे बाहर भी रखना चाहिए। कान्वेंट का वातावरण बहुत शान्त, सुविधा-जनक और स्वस्थ होता है। मुझे अच्छा लगा कि वह कुछ दिन उस पुराने बाग की सुन्दर वीथियों में कुछ धार्मिक स्त्रियों के बीच घिरी रहे। उनमें कई स्त्रियां अच्छे कुल की हैं। कुछ तो बहुत ही बड़े परिवारों से हैं। वहां वह पढ़ सकती है, ड्राइंग कर सकती है। पिआनो से जी बहला सकती है। मैंने सब प्रबन्ध बहुत अच्छा कर दिया है। वह वहां रूखा-सूखा जीवन नहीं बिताएगी, केवल थोड़ा सोचने का मौका मिलेगा। और कुछ बातें हैं जो मैं समझता हूं उसे सोचनी चाहिए," ऑसमण्ड बहुत विश्वस्त और तर्कपूर्ण ढंग से बात कर रहा था। उसका सिर अब भी उसी तरह झुका था, जैसे वह फूलों की टोकरी को देख रहा हो। उसका स्वर ऐसा नहीं था जैसे वह किसीके सामने स्थिति की व्याख्या कर रहा हो, बल्कि ऐसा जैसे वह अपनी सुविधा के लिए किसी बात को शब्दों—बिम्बों—में रखकर देख रहा हो। वह पल-भर अपने द्वारा प्रस्तुत किए चित्र पर विचार करता रहा, और उससे काफी प्रसन्न हो उठा। फिर उसने कहा, "कैथलिक लोग काफी समझदार हैं। कान्वेंट एक महान् संस्था है। उनके बगैर हम नहीं चल सकते। वह हर परिवार और हर समाज के लिए आवश्यक है। वहां अच्छे रंग-ढंग और सहज जीवन की शिक्षा मिलती है। वैसे मैं अपनी लड़की को दुनिया से अलग नहीं करना चाहता। यह भी नहीं चाहता कि वह किसी और दुनिया की बात सोचने लगे। यह दुनिया बहुत अच्छी है। उसे इसी में रहना है। इसलिए इसके बारे में वह जितना सोच सके उसे सोचना चाहिए। पर सोचना चाहिए उसे सही ढंग से।"

इज़ाबेल बहुत ध्यान से इस रेखा-चित्र का अध्ययन करती रही—उसे यह बहुत ही दिलचस्प लग रहा था। उसे महसूस हो रहा था, कि दूसरे पर प्रभाव डालने की ऑसमण्ड की इच्छा उसे कहां तक ले जा सकती है—यहां तक कि अब वह अपनी बेटी की कोमल चेतना पर अपने सैद्धान्तिक नुस्खे आज़मा रहा है। उसका उद्देश्य क्या था, यह वह नहीं समझ पा रही थी। पर जितना ऑसमण्ड सोचता या चाहता था उससे कहीं ज्यादा वह समझ रही थी। उसे विश्वास था कि यह सारा रहस्यमय ताना-बाना उसी के लिए है—उसकी कल्पना पर एक विशेष प्रभाव डालने के लिए ऑसमण्ड ने तुरन्त और अस्थायी ढंग से कुछ करना चाहा था—ऐसा कुछ जो अप्रत्याशित और सुसंस्कृत लगे। पैंजी के

प्रति अपनी और उसकी भावनाओं में उसने अन्तर करना चाहा था । वह यह दिखाना चाहता था , कि अपनी लड़की को वह एक बहुमूल्य कलाकृति की तरह समझता है जिसे बहुत सावधानी से फिनिशिंग टच दिया जाना चाहिए। यदि उसका उद्देश्य इज़ाबेल पर प्रभाव डालने का था तो उसमें वह सफल रहा था , क्योंकि इससे इज़ाबैल का मन सुन्न-सा हो गया था । पैंज़ी ने अपना बचपन कान्वेंट में बिताया था और वहां काफी खुश रही थी। सिस्टर्ज़ उससे स्नेह करती थीं। वह उनसे स्नेह करती थी। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता था कि उसे वहां कोई खास कठिनाई होगी। फिर भी लड़की के मन में डर समा गया था — उसे लगा था कि उसके पिता कोई बहुत ही गाढ़ा प्रभाव उस पर डालना चाहते हैं। पुरानी प्रॉटेस्टेंट परम्परा इज़ाबेल की कल्पना में धूमिल नहीं हुई थी। वह भी ऑसमण्ड की तरह फूलों की टोकरी की तरफ देख रही थी, और अपने पति की जीनियस के इस उदाहरण पर विचार करते हुए उसे लग रहा था जैसे पैंजी इस ट्रेजेडी की हीरोइन हो। ऑसमण्ड यह प्रकट करना चाहता था कि वह किसी भी बात से चूकने वाला नहीं है, और इज़ाबेल के लिए वहां बैठकर खाते रहने का बहाना करना मुश्किल हो रहा था । तभी अपनी ननद की ऊंची तल्ख आवाज़ से उसे कुछ सांत्वना मिली। काउंटेस भी उसी विषय में सोच रही थी, पर वह जिस निष्कर्ष पर वह पहुंची थी, वह इज़ाबेल के निष्कर्ष से भिन्न था।

"यह बहुत बेतुकी-सी बात है, ऑसमण्ड डियर," उसने कहा। "जो तुम पैंज़ी को घर से भेजने के इतने-इतने कारण ईजाद कर रहे हो। तुम साफ क्यों नहीं कहते कि तुम उसे मेरे रास्ते में नहीं आने देना चाहते थे। तुम्हें पता ही है मैं मिस्टर रोजियर के बारे में क्या सोचती हूं। सच मुझे उसमें बहुत आकर्षण लगता हैं। सच्चे प्रेम में इतना विश्वास मुझे कभी नहीं रहा जितना उससे मिल कर हुआ है। तुमने यह फैसला इसलिए किया है, कि तुम्हें विश्वास था ऐसे में पैंज़ी मुझे सहन नहीं कर सकेगी।"

ऑसमण्ड ने वाइन के गिलास से एक घूंट भरा। वह बिलकुल प्रसन्नचित लग रहा था। "माई डियर एमी," उसने कोई बहुत बड़ी बात कहने के ढंग से उत्तर दिया। "तुम्हारी क्या धारणाऐं हैं , इसका मुझे पता नहीं है। पर यदि कभी वे मेरी धारणाओं के विरोध में पड़ें तो मेरे लिए अधिक आसान यह होगा कि तुम्हें यहां से भेज दूं।"

५१

काउंटेस को भेजा तो नहीं गया, पर उसे लगने लगा कि अब ज्यादा दिन वह अपने भाई के यहां अतिथ्य का उपभोग नहीं कर सकेगी। उपरोक्त घटना के सप्ताह भर बाद इज़ाबेल को इंग्लैंड से एक तार मिला जो गार्डनकोर्ट से आया था और जिसके शब्दों पर मिसेज़ टाउशेट के व्यक्तित्व की छाप थी। "रैल्फ अब अधिक दिन नहीं जियेगा। यदि असुविधा न हो तो वह तुमसे मिलना चाहेगा। उसका कहना कि तुम तभी आना अगर तुम्हारे और किसी काम में बाधा न पड़ती हो। मेरी तरफ से इतना कि तुम अपने कर्त्तव्य की बहुत बात किया करती थीं और सोचा करती थीं कि वह क्या है। तुम्हें पता चल गया या नहीं, यह जानने को उत्सुक हूं। रैल्फ सचमुच मर रहा है, और कोई साथी उसके पास नहीं हैं। इज़ाबेल इस समाचार के लिए तैयार ही थी क्योंकि हैनरीटा स्टैकपोल उसे विस्तार से अपनी इंग्लैण्ड यात्रा तथा अपने गुण-ग्रही रोगी के विषय में लिख चुकी थी। इंग्लैण्ड पहुंचते-पहुंचते रैल्फ अध-मरा हो गया था। पर उसे उसने किसी तरह गार्डनकोर्ट तक पहुंचा दिया था। वहां पहुंचते ही रैल्फ बिस्तर में पड़ गया था, हैनरीटा के अनुसार, अब उसकी वहां से उठने की कोई सम्भावना नहीं थी। उसने यह भी लिखा था कि उसे एक की जगह दो रोगियों को संम्भालना पड़ा था, क्योंकि मिस्टर गुडवुड उसकी सहायता तो क्या करता, वह खुद एक और ढंग से उतना ही बीमार था जितना रैल्फ। बाद में हेनरीटा ने लिखा था कि मिसेज़ टाउशेट ने अमरीका से लौटकर रैल्फ की बाग-डोर अपने हाथ में ले ली है और उसे यह जतला दिया है कि गार्डनकोर्ट में इण्टरव्यू लेने वालों का कोई काम नहीं है। रैल्फ के राम आने के कुछ ही बाद इज़ाबेल ने ही अपनी आंट को उसकी नाज़ुक हालत के बारे में लिखा था और सुझाव दिया था कि उन्हें शीघ्र से शीघ्र यूरोप लौट आना चाहिए। मिसेज़ टाउशेट ने इस आदेश की प्राप्ति सूचना तार द्वारा दी थी, और उसके बाद उनकी ओर से दूसरा समाचार वह तार था, जिसका कि अभी उल्लेख किया गया है।

इज़ाबेल पल-भर इस दूसरे सन्देश को देखती रही। फिर उसे जेब में डालकर सीधे ऑसमण्ड की स्टडी के दरवाज़े की तरफ बढ़ गई। वहां पल-भर वह बाहर रुकी रही, फिर दरवाज़ा खोल कर अन्दर चली गई। ऑसमण्ड खिड़की के पास

की मेज़ पर बैठा था। किताबों के ढेर के आगे एक खुले पन्नों की पुस्तक उसके सामने रखी थी। पुस्तक जहां से खुली थी वह पन्ना छोटी-छोटी रंगीन प्लेटस का था। इज़ाबेल ने देखा कि वह उसमें से एक पुराने सिक्के की ड्राइंग की नकल कर रहा है। वाटर कलर्ज़ का एक बक्सा और कुछ महीन ब्रश उसके सामने रखे थे, और वह तब तक साफ कागज पर उस नाजुक और सुन्दर रंग के गोलक का चित्र उतार चुका था। दरवाज़े की तरफ उसकी पीठ थी। पर बिना मुड़कर देखे ही उसने अपनी पत्नी को पहचान लिया।

"क्षमा करना मैंने तुम्हारे काम में बाधा पहुंचाई है", इज़ाबेल ने कहा।

"मैं तुम्हारे कमरे में बिना खटखटाये कभी नहीं आता," ऑसमण्ड ने उसी तरह व्यस्त रहकर उत्तर दिया।

"मुझे याद नहीं रहा। मेरे दिमाग पर एक और ही बात छाई थी। मेरा कज़िन मर रहा है।"

"मैं नहीं मानता," ऑसमण्ड मैग्नीफाइंग ग्लास से अपनी ड्राइंग को देखता हुआ बोला। "वह तो तब भी मर रहा था जब हमारा विवाह हुआ था। वह हम सब से बाद तक जियेगा।"

इज़ाबेल ने सचेत व्यंग से भरी इस घोषणा की ओर पल-भर भी ध्यान नहीं दिया। वह अपने ही मन की बात में उलझी हुई जल्दी से बोली, "मेरी आंट ने मुझे तार देकर बुलाया है। मुझे गार्डनकोर्ट जाना होगा।"

"तुम्हें क्यों वहां जाना होगा ?" ऑसमण्ड की ध्वनि में एक तटस्थ उत्सुकता थी।

"रैल्फ की मृत्यु से पहले उससे मिलने।"

इसका ऑसमण्ड ने पल-भर कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपना ध्यान अपने काम में केन्द्रित किये रहा क्योंकि उसमें ज़रा भी असावधानी नहीं बरती जा सकती थी। "मुझे इसकी कोई ज़रूरत नज़र नहीं आती," आखिर उसने कहा। "वह तुमसे मिलने यहां आया, मुझे यह भी पसन्द नहीं था। मेरे ख्याल में उसका रोम आना गलत था। पर मैंने वह बर्दाश्त कर लिया, क्योंकि वह उसके आखिरी बार तुमसे मिलने की बात थी। अब तुम बता रही हो कि वह आखिरी बार नहीं थी। तुम बिलकुल कृतज्ञ नहीं हो।"

"कृतज्ञ किस चीज़ के लिए ?"

गिलबर्ट ऑसमण्ड ने हाथ की चीजें रख दीं। ड्राइंग पर से एक धूल के ज़रे को फूंक मार कर उड़ाया और धीरे से उठकर पहली बार अपनी पत्नी की आंखों में देखा। "इस चीज़ के लिए कि उसके यहां रहते मैंने कोई दख़ल नहीं दिया।"

"उसके लिए मैं सचमुच कृतज्ञ हूं। मुझे अच्छी तरह याद है कि तुमने कितना साफ-साफ कह दिया था कि तुम्हें उसका यहां होना पसन्द नहीं है। इसलिए जब वह चला गया था, तो मुझे खुशी हुई थी।"

"तो उसे उसके हाल पर रहने दो। उसके पीछे मत जाओ।"

इज़ाबेल की आंखें उसके चेहरे से हटकर उसकी छोटी-सी ड्राइङ्ग पर टिक गईं। "मुझे इंग्लैण्ड जाना होगा," उसने कहा। "उसे पूरा अहसास था कि झक्की तबीयत के उस सुरुचिशील व्यक्ति को उसकी ध्वनि ज़िद और मूर्खता से भरी लगेगी।"

"तुम जाओगी तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा." ऑसमण्ड ने कहा।

"मैं उसकी चिन्ता क्यों करूं? मैं न जाऊं तो भी तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा। तुम्हें मेरा कुछ भी करना या न करना अच्छा नहीं लगता। तुम यह सोचने का बहाना करोगे कि मैं झूठ कहती हूं।"

ऑसमण्ड थोड़ा पीला पड़ गया और उसके चेहरे पर ठंडी-सी मुस्कराहट आ गई। "तो क्या इसीलिए तुम्हारा जाना ज़रूरी है? अपने कज़िन को देखना उद्देश्य नहीं, उद्देश्य मुझसे बदला लेना है।"

"मैं बदले की बात बिलकुल नहीं जानती।"

"मैं जानता हूं," ऑसमण्ड बोला, "मुझे इस तरह मौका मत दो।"

"तुम मौका पाने के लिए बहुत उत्सुक हो। तुम दिल से चाहते हो कि मुझसे कोई अपराध बन पड़े।"

"उस हालत में तुम मेरी मर्ज़ी के खिलाफ चलो, इसमें मुझे खुशी होनी चाहिए।"

"अगर तुम्हारी मर्ज़ी के खिलाफ चलूं?" इज़ाबेल ने धीमे स्वर में कहा जिसका कि प्रभाव बहुत कोमल था।

"बात साफ हो जाने दो। अगर तुम आज रोम से चली जाती हो, तो वह जान-बूझकर और बहुत सोचे हुए ढंग से मेरा विरोध करना होगा।"

"सोचे हुए ढंग से तुम कैसे कहते हो? आंट का तार मुझे तीन मिनट पहले

मिला है।"

"तुम बहुत तेज़ी से सोच लेती हो। यह बहुत बड़ा गुण है। पर बात को बढ़ाने में कुछ नहीं रखा है। मेरी इच्छा तुमने जान ली है," और वह इस तरह उसकी ओर देखने लगा जैसे अब उसके लौट जाने की आशा कर रहा हो।

पर इज़ाबेल वहां से नहीं हिली। आश्चर्य की बात थी कि हिलने की सामर्थ्य ही उसमें नहीं थी। वह प्रमाणित करना चाहती थी कि वह सही है। ऑसमण्ड में यह असाधारण शक्ति थी कि वह ऐसी अपेक्षा उसके मन में पैदा कर देता था। उसकी बात इज़ाबेल की कल्पना को कहीं छू जाती थी जिससे उसका विवेक पीछे रह जाता था। "ऐसी इच्छा के लिए तुम्हारे पास कोई कारण नहीं है," वह बोली। "हां मेरे पास जाने के लिए कारण है। मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि तुम कितनी अन्यायपूर्ण बात कह रहे हो। पर मेरा ख्याल है तुम्हें स्वयं पता है। तुम मेरा विरोध सोच-समझकर कर रहे हो। इसके पीछे बहुत कलुपित भावना है।"

अपने मन में आने वाली कड़ी-से-कड़ी बात भी पहले कभी वह ऑसमण्ड के सामने मुंह पर नहीं लाती थी, इसलिए यह सब सुनना ऑसमण्ड के लिए एक नया अनुभव था। पर उसने आश्चर्य प्रकट नहीं किया। उसका ठण्डा भाव उसके इस विश्वास को प्रमाणित करता था कि कभी-न-कभी अपनी चतुराई से वह इज़ाबेल को बोलने के लिए मजबूर कर देगा। "तब तो स्थिति और भी गम्भीर है," वह बोला। फिर एक मित्रतापूर्ण परामर्श देने के ढंग से उसने कहा, "यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है।" इज़ाबेल यह जानती थी—अवसर की गरिमा के प्रति वह पूरी तरह सचेत थी। उसे पता था कि वे दोनों एक चरम तक आ पहुंचे हैं। इसलिए वह सावधान भाव से चुप रही। ऑसमण्ड बात करता रहा, "तुम कहती हो कि मेरे पास कोई कारण नहीं है, पर मेरे पास बहुत बड़ा कारण है। जो तुम करना चाहती हो, उससे मैं मन से घृणा करता हूं। मुझे यह बात बहुत असम्मानजनक, क्रूर और अशिष्टतापूर्ण लग रही है। मुझे तुम्हारे कज़िन से कोई वास्ता नहीं, न मैं उसका लिहाज़ रखने के लिए मजबूर हूं। मैं पहले ही बहुत लिहाज़ कर चुका हूं। जब तक वह यहां था, मुझे उसके साथ तुम्हारे सम्बन्ध को लेकर कांटे गड़ते रहे हैं। पर मैं यह सहता रहा क्योंकि मुझे हमेशा लगता था कि वह हफ्ते दो हफ्ते में यहां से चला जाएगा। न मैं कभी उसे अच्छा लगा हूं, न वह मुझे अच्छा लगा है। वह मुझसे घृणा करता है, इसीलिए तुम्हें वह अच्छा लगता है।" ऑसमण्ड जल्दी-

जल्दी बोल रहा था और उसके स्वर में अस्पष्ट-सा कम्पन भर गया था। "मेरी पत्नी को क्या करना चाहिए और क्या नहीं, इस सम्बन्ध में मेरा एक अपना सिद्धांत है। मैं नहीं चाहता कि सारा यूरोप पार करके वह मेरी इच्छा के विरुद्ध किसी दूसरे की तीमारदारी करने जाए। अपने कज़िन से तुम्हारा भी कोई वास्ता नहीं है—हम दोनों का कोई वास्ता नहीं है। मेरे 'हम' कहने पर तुम बहुत अर्थपूर्ण ढंग से मुस्करा रही हो, पर विश्वास करो मिसेज़ ऑसमण्ड, कि मैं 'हम' के सिवा कुछ नहीं जानता। मेरे लिए विवाह एक गम्भीर अर्थ रखता है, जो कि तुम्हारे लिए लगता है नहीं रहा। हम लोगों का किसी तरह का सम्बन्ध-विच्छेद नहीं हुआ और मैं समझता हूं कि हमारा सम्बन्ध स्थायी है। तुम और किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक मेरे निकट हो और मैं तुम्हारे निकट हूं। यह निकटता अरुचिकर हो सकती है पर जैसी भी है इसके लिए हम स्वयं ही उत्तरदायी हैं। मुझे पता है मेरा इस बात की ओर ध्यान दिलाना तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा, पर मैं जान-बूझकर ऐसा कर रहा हूं क्योंकि···क्योंकि···" वह पल-भर रुककर इस तरह देखता रहा जैसे कोई खास मार्के की बात कहने जा रहा हो। "···क्योंकि मैं समझता हूं हमें अपने किए का फल भोगने के लिए तैयार रहना चाहिए। और जिस चीज़ को मैं ज़िन्दगी में सबसे अधिक महत्त्व देता हूं, वह है व्यक्ति की सम्मान-भावना।"

गम्भीर होते हुए भी उसका स्वर कोमल था—व्यंग्य की ध्वनि अब उसमें नहीं रही थी। इस गम्भीरता ने ही इज़ाबेल के आवेश पर रोक लगा दी थी। जिस निश्चय के साथ वह कमरे में दाखिल हुई थी, वह अब महीन धागों के गुंजल में उलझ गया था। ऑसमण्ड के अन्तिम शब्द एक आदेश न होकर एक याचना की तरह थे। इज़ाबेल जानती थी कि ऑसमण्ड के मुंह से निकले आदरपूर्ण शब्द केवल उसके अहं-भाव का परिमार्जित रूप ही हो सकते हैं। फिर भी उन शब्दों में एक छा लेने वाला उत्कर्ष था, जैसा कि क्रॉस के चिह्न या एक देश के झण्डे में रहता है। ऑसमण्ड एक पवित्र और बहुमूल्य वस्तु के नाम पर बात कर रहा था—एक महान् आचरण के पालन की ओर संकेत कर रहा था। निस्सन्देह भावना की दृष्टि से वे दोनों किन्हीं भी दो उदासीन प्रेमियों की तरह एक-दूसरे से बहुत दूर थे, फिर भी क्रियात्मक रूप से वे अभी अलग नहीं हुए थे। इज़ाबेल बदली नहीं थी—उसकी पुरानी न्याय-भावना अब भी उसमें उसी तरह थी। इस अवसर पर, जबकि उसके

मन में वह अनुभूति बहुत गहन थी कि उसका पति बहुत अभिजात ढंग से अपनी कलुषित भावना को अभिव्यक्त कर रहा है, वह न्याय-भावना कुछ ऐसे स्वर में स्पन्दित होने लगी कि पल-भर के लिए इज़ाबेल को स्वयं लगा कि ऑसमण्ड उस पर विजय पा लेगा। बाहरी दिखावा बनाए रखने की दृष्टि से वह इज़ाबेल को काफी ईमानदार लग रहा था, और अपने में यह एक गुण तो था ही। दस मिनट पहले बिना सोचे एक कार्य करने की खुशी उसके मन पर छाई थी—एक अरसे से उसने इस खुशी का अनुभव नहीं किया था। पर ऑसमण्ड के उद्गार से छूकर वह भावना सहसा सहज बलिदान की भावना में बदल गई थी। पर उसने सोचा कि उसे बलिदान करना ही है, तो इतना तो ऑसमण्ड को ज़रूर बता दे कि वह बिना उसके झांसे में आए उसकी शिकार बन रही है। "मुझे पता है तुम उपहास उड़ाने की विद्या के आचार्य हो," वह बोली, "तुम स्थायी सम्बन्ध की बात कैसे कहते हो? कैसे कहते हो कि तुम इसमें सन्तुष्ट हो? जब तुम मुझ पर कपट का अभियोग लगाते हो, तो वह सम्बन्ध कहां रह जाता है? अब तुम्हारे मन में एक भयंकर सन्देह के सिवा कुछ है ही नहीं, तो तुम इससे सन्तुष्ट कैसे हो सकते हो?"

"इन सब दोषों के रहते भी मेरा मतलब भले लोगों की तरह साथ रहने से है।"

"हम भले लोगों की तरह साथ नहीं रहते," इज़ाबेल बोल उठी।

"तुम अगर इंग्लैंड जाती हो तो ज़रूर नहीं रह सकेंगे।"

"यह तो बहुत छोटी-सी बात है, बल्कि कुछ भी नहीं है। मैं इससे कहीं बड़ा काम कर सकती हूं।"

ऑसमण्ड की भौंहें थोड़ा उठ गईं, कन्धे भी। इटली में वह इतने दिन रह चुका था कि इस चालाकी को पकड़ते उसे देर नहीं लगी। "ओह, तुम अगर मुझे धमकी देने आई हो तो मैं अपनी ड्राइंग में लगा रहना चाहूंगा," कहकर वह वापस अपनी मेज़ की तरफ चला गया और जिस कागज़ पर काम कर रहा था उसे उठाकर देखने लगा।

"इसका मतलब है कि मैं अगर चली जाऊं, तो तुम मेरे वापस आने की आशा नहीं रखोगे?" इज़ाबेल बोली।

ऑसमण्ड जल्दी से मुड़ा। इज़ाबेल को लगा कि कम से कम यह काम उसने पहले से सोचकर नहीं किया। वह पल-भर उसकी ओर देखता रहा, फिर बोला,

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या ?"

"तुम्हारी बात अगर सच है," इज़ाबेल बोली, "तो इसे सिवाय विच्छेद के और समझा ही क्या जा सकता है ?" उसे सचमुच लग रहा था कि यह विच्छेद के सिवा और कुछ नहीं हो सकता। वह सचमुच जानना चाहती थी कि इसके सिवाय यह और हो ही क्या सकता है।

ऑसमण्ड अपनी मेज़ के सामने बैठ गया। "तुम मेरी अवहेलना करो, इस आधार पर मैं कतई तुमसे बात नहीं कर सकता," कहकर उसने एक छोटा-सा ब्रश हाथ में ले लिया।

इज़ाबेल पल-भर रुकी रही—और इस बीच उस सचेत भाव से उदासीन फिर भी अत्यधिक अभिव्यंजनापूर्ण आकृति की ओर देखती रही। उसके बाद वह जल्दी से कमरे से निकल आई। उसकी क्षमता, शक्ति और आवेश में फिर एक बिखराव आ गया था, और उसे लग रहा था जैसे सहसा एक ठंडे गहरे, कोहरे ने उसे घेर लिया हो। दूसरे की दुर्बलता को उभारने की ऑसमण्ड में अद्‌भुत शक्ति थी। वापस अपने कमरे की ओर जाते हुए इज़ाबेल की नजर काउंटेस जेमिनी पर पड़ी जो उस छोटे से पार्लर के खुले दरवाज़े में खड़ी थी जिसमें कई तरह की किताबें एकत्रित करके रखी गई थीं। एक खुली किताब काउंटेस के हाथ में थी। लग रहा था कि जिस पन्ने पर वह नज़र दौड़ा रही है, उसमें उसे कुछ दिलचस्प नहीं लग रहा। इज़ाबेल के कदमों की आहट पाकर काउंटेस ने सिर उठा लिया।

"ओह माई डियर," वह बोली, "तुम इतनी साहित्यिक हो, मुझे कोई रोचक-सी किताब तो पढ़ने के लिए बताओ। यहां तो हर किताब इतनी रूखी है। तुम्हारे ख्याल में यह किताब मेरे लिए अच्छी रहेगी ?"

इज़ाबेल ने किताब के शीर्षक पर नजर डाली, पर बिना पढ़े या उसकी ओर ध्यान दिए। "मैं इस समय कोई राय नहीं दे सकती। अभी-अभी एक बुरी खबर मुझे मिली है। मेरा कज़िन, रैल्फ टाउशेट, मृत्यु-शय्या पर पड़ा है।"

काउंटेस ने हाथ की किताब नीचे गिरा दी," बेचारा कितना भला था ! मुझे तुम्हारे लिए बहुत अफसोस है।

"तुम्हें पूरी बात का पता चले, तो तुम्हें और भी अफसोस होगा।"

"और क्या बात है ? तुम बहुत वैसी नज़र आ रही हो," काउंटेस बोली। "लगता है ऑसमण्ड के पास से होकर आ रही हो।"

आधा घंटा पहले कोई इज़ाबेल से कहता कि काउंटेस उससे हमदर्दी जतलाने की इच्छा रखती है तो वह बहुत उदासीन भाव से यह बात सुनती। पर इस समय वह इतनी अव्यवस्थित थी कि उसने तुरन्त काउंटेस की उड़ती हमदर्दी का दामन थाम लिया। काउंटेस की चमकती आंखों में देखते हुए उसने उत्तर दिया, "हां, मैं ऑसमण्ड के पास से होकर आ रही हूं।"

"उसने ज़रूर कोई भद्दी बात कही होगी," काउंटेस बोली, "क्या कहा है उसने—कि उसे खुशी है बेचारा टाउशेट मर रहा है?"

उसने कहा है कि मेरा इंग्लैंड जाना असम्भव है।"

काउंटेस का मन अपने हानि-लाभ को तुरन्त भांप लेता था—उसे तुरन्त लग गया कि अब रोम में रहकर वह पहले जैसी चकाचौंध की आशा नहीं कर सकती। रैल्फ की मृत्यु हो जाएगी, इज़ाबेल शोक मनाने लगेगी और डिनर-पार्टियां समाप्त हो जाएंगी। इस सम्भावना से उसके चेहरे पर एक अर्थपूर्ण मुद्रा आई, पर मुखाकृति का यह तीव्र और चित्रमय परिवर्तन उसकी निराशा की एकमात्र अभिव्यक्ति थी। उसने सोचा कि वह खेल अब तक बहुत खेला जा चुका है, और वह अपने निमन्त्रण की अवधि से कहीं अधिक दिन वहां रह चुकी है। ऐसे में अपने दुःख को भूलकर उसका ध्यान इज़ाबेल के दुःख की ओर चला गया और उसे लगा कि इज़ाबेल का दुःख काफी गहरा है। वह दुःख एक कज़िन की मृत्यु के दुःख से कहीं बड़ा था, और काउंटेस ने तुरन्त इज़ाबेल की आंखों के भाव का सम्बन्ध अपने परेशान करने वाले भाई के साथ जोड़ लिया। उसका दिल एक उल्लासपूर्ण आशा स धड़कने लगा। उसे लगा कि ऑसमण्ड पर तुरप चलने का यह सबसे अच्छा अवसर है। अगर इजाबेल सचमुच इंग्लैंड चली गई, तो वह स्वयं भी पालाज़ो रोकानेरा से. चल देगी—ऑसमण्ड के साथ वहां अकेली वह हरगिज़ नहीं रहेगी। यह होने पर भी उसके मन में उत्कट आकांक्षा थी कि इज़ाबेल इंग्लैंड चली जाए। "तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव नहीं है, माई डियर," उसने जैसे पुचकारकर कहा, "वरना, अमीर, चतुर और भली होने का तुम्हें फायदा ही क्या है?"

"हां क्या फायदा है? मुझे लगता है मेरी कमज़ोरी एक मूर्खता हैं।"

"पर आसमण्ड इसे असम्भव क्यों बताता है?" काउंटेस के स्वर से आभास होता था कि उसे सचमुच इसमें आश्चर्य है।

काउंटेस इस तरह सवाल करने लगी तो इज़ाबेल थोड़ी कठिन हो उठी—

काउंटेस ने स्नेहपूर्वक उसका जो हाथ अपने हाथ में ले रखा था, वह उसनें छुड़ा लिया। पर इस सवाल का जवाब उसने खुली कटुता के साथ दिया, "क्योंकि हम साथ रहकर इतने प्रसन्न हैं कि पन्द्रह दिन के लिये भी एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते।"

"ओह, " काउंटेस के इन शब्दों से इजाबेल ने मुहं दूसरी ओर कर लिया। जब मैं कहीं यात्रा पर जाना चाहती हूं, तो मेरा पति तो सिर्फ इतना ही कहता है कि वह मुझे पैसे नहीं दे सकता।

इजाबेल अपने कमरे में चली गई और घंटा भर वहां चहल-कदमी करती रही। किन्हीं पाठकों को लग सकता है कि वह अपने को कुछ ज्यादा ही दु:ख दे रही थी, और यह निश्चित है कि अपनी ऊंची भावनाओं की दृष्टि से वह बहुत जल्दी रुँध गई थी। उसे लग रहा था कि विवाह के दायित्व का पूरा अनुमान उसे पहली बार हो रहा है। विवाह का अर्थ था कि चुनाव का ऐसा अवसर आने पर एक स्त्री वही बात चुने जो कि उसका पति चाहता हो। "स्थिति सचमुच यही है—सचमुच यही है," वह टहलते हुए रुक कर बार-बार अपने से कहती। उसे डर अपने पति से नहीं था, न ही उसकी नाराजगी, घृणा, और बदलने की भावना से। न ही उसे यह विचार था कि बाद में वह अपने किये के बारे में क्या सोचेगी, हालांकि यह विचार प्राय: उसपर प्रतिबन्ध लगाये रहता था। उसे डर था तो केवल यह कि आंसमण्ड की इच्छा के विरुद्ध यदि वह जाना चाहेगी, तो खासी गर्मा-गर्मी पैदा होगी। दोनों के बीच एक गहरी दरार उभर आई थी—फिर भी ऑसमण्ड उसे रोकना चाहता था—उसके जाने की बात उसे आतंकित किये थी। इजाबेल जानती थी कि किसी भी आपत्ति को वह कितनी सूक्ष्मता से अनुभव करता है। वह उसके विषय में क्या सोचता है, यह इजाबेल जानती थी। वह क्या कह सकता है, यह वह अनुभव कर आई थी। फिर भी वे विवाहित थे, और विवाह का अर्थ था कि जिस व्यक्ति के साथ आल्टर पर खड़े होकर शपथें उठाई हो, उसके साथ एक स्त्री हर तरह से जुड़ी रहे। आखिर उसने सोफे पर बैठकर गद्दों के ढेर में सिर छुपा लिया।

जब उसने सिर उठाया तो काउंटेस जेमिनी उसके सामने खड़ी थी। उसके आने का इजाबेल को पता नहीं चला था। काउंटेस के पतले होठों पर एक विचित्र मुस्कराहट थी, और घण्टे भर में उसका चेहरा एक विशेष चमक से भर गया था।

कह सकते हैं कि काउंटेस सदा अपनी आत्मा की खिड़की पर खड़ी रहती थी। पर इस समय वह उससे काफी बाहर तक झुक आई थी। "मैंने दरवाज़ा खट-खटाया था," वह बोली। "पर तुमने कोई उत्तर नहीं दिया तो मैं अन्दर चली आई। मैं पिछले पांच मिनट से तुम्हें देख रही हूं। तुम बहुत दुःखी नज़र आती हो।"

"हां, पर तुम मुझे तसल्ली नहीं दे सकतीं।"

"पर मुझे कोशिश तो करने दोगी?" और काउंटेस उसके पास सोफे पर बैठ गई। वह अब भी मुस्करा रही थी और उसके भाव में एक अर्थपूर्ण उल्लास था। लगता था वह बहुत कुछ कहना चाहती है और इज़ाबेल को पहली बार लगा कि काउंटेस शायद मानवीय स्तर पर कुछ कहे। काउंटेस की चमकती आंखें इधर-उधर नाच रही थीं और उनमें एक चुभता-सा आकर्षण नज़र आ रहा था। "देखो," शीघ्र ही काउंटेस फिर बोली। "पहले तो मैं तुमसे यह कहना चाहती हूं कि तुम्हारी मनःस्थिति मेरी समझ में नहीं आ रही। तुम जाने कितनी बाधाओं, कितने तर्कों और कितने बन्धनों में जकड़ी हो। इधर तो मेरे पति ने दखल देना छोड़ दिया है, पर दस साल पहले जब मुझे पता चला कि उसकी एकमात्र आकांक्षा यह है कि मुझे दुःखी करे, तो मेरे लिए स्थिति अद्भुत ढंग से सुलझ गई थी। पर तुम्हारे साथ दिक्कत यह है कि तुम अपने को सुलझने नहीं देती।"

"एक बात मैं तुम्हें बताना चाहती हूं," काउंटेस कहती रही। "क्योंकि मैं समझती हूं कि वह तुम्हें जाननी चाहिए। शायद तुम्हें पता हो, या तुम्हें इसका अनुभव हुआ हो। यदि ऐसा है, तब तो मुझे और भी समझ में नहीं आता कि तुम अपनी मर्ज़ी से क्यों नहीं चल सकतीं?"

"तुम क्या बताना चाहती हो?" इज़ाबेल का दिल आशंका से धड़कने लगा। काउंटेस अपने को सही साबित करने जा रही थी, और यह अपने में एक अच्छा शगुन नहीं था।

पर काउंटेस अभी बात के साथ थोड़ा और खिलवाड़ करना चाहती थी। "मैं तुम्हारी जगह होती, तो बरसों पहले जान जाती। तुम्हें क्या सचमुच कभी सन्देह नहीं हुआ?"

"मुझे कुछ अन्दाज़ा नहीं है। किस बात पर मुझे सन्देह होना चाहिए था? मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पा रही हूं।"

"यह इसलिए कि तुम्हारा यह कम्बखत मन इतना साफ है। इतने साफ मन की कोई स्त्री मैंने आज तक नहीं देखी," .काउंटेस बोली।

इज़ाबेल धीरे उठ खड़ी हुई।" तुम कोई बहुत भयंकर बात मुझे बताने जा रही हो।"

"तुम इसे चाहे जो कह लो," और काउंटेस भी उठ खड़ी हुई। उसका संचित विपरीत भाव और भी स्पष्ट और भयावह हो उठा। वह पल-भर अर्थपूर्ण दृष्टि से इज़ाबेल को देखती रही, जो दृष्टि उस समय भी इज़ाबेल को ओछी लगी। फिर वह बोली, "मेरी पहली भाभी के कोई बच्चा नहीं था।"

इज़ाबेल उसे ताकती रह गई—वह जैसे आसमान से नीचे आ गिरी हो। "तुम्हारी पहली भाभी के क्या ?"

कम से कम इतना तो तुम्हें पता है ही कि ऑसमण्ड का पहले भी ब्याह हुआ था। मैंने कभी तुमसे उसकी पत्नी की बात नहीं की, क्योंकि मुझे ऐसी बात कहना अच्छा या सम्मानपूर्ण नहीं लगता था। पर जो लोग मेरी तरह ख्याल नहीं रखते, वे ज़रूर तुमसे बात करते रहे होंगे। बेचारी मुश्किल से तीन साल जीती रही, और बिना किसी बच्चे को जन्म दिये मर गई। पैंज़ी उसकी मृत्यु के बाद ही यहां आई है।"

इज़ाबेल की भौंहें संकुचित हो गई थीं, और ज़र्द होंठ आश्चर्य से खुले रह गये थे। वह समझने की कोशिश कर रही थी। उसे लग रहा था कि जितना वह समझ पा रही है, उससे कहीं अधिक समझना अभी बाकी है। "तो क्या पैंज़ी ऑसमण्ड की लड़की नहीं है ?"

"बिलकुल तुम्हारे पति की लड़की है। वह किसी और के पति की नहीं, किसी और की पत्नी की लड़की है। मेरी अच्छी इज़ाबेल," काउंटेस ने ऊंचे स्वर में कहा। "तुम तो हर क, ख, पर पूरी लकीर डाले बिना बात को समझती ही नहीं।"

"मैं समझ नहीं पा रही। किस की पत्नी थी," इज़ाबेल ने पूछा।

"एक छोटे से मनहूस स्विस की, जिसे मरे—कितने साल हो गये ?—एक दर्जन, नहीं पन्द्रह से भी ज्यादा। उसने कभी पैंज़ी को स्वीकार नहीं किया और अपनी उलझन में कभी उससे बात भी नहीं की। और वह बात करती भी क्यों ? उसकी जगह ऑसमण्ड ने ले ली और यही बेहतर भी था, हालांकि इसके लिए

उसे किस्सा घड़ना पड़ा कि प्रसव में उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी, इसलिए उस शोक और आघात के कारण उसने लड़की को काफी दिन अपने से दूर रखा, और अब उसे उसकी नर्स के यहां से ले आया है। पर वास्तव में उसकी पहली पत्नी की मृत्यु दूसरी तरह से और दूसरी जगह पर हुई थी। अगस्त में एक दिन अचानक यह कहकर वह उसे पीडमोंटेस पहाड़ पर ले गया था कि उसके स्वास्थ्य के लिए खुली हवा की आवश्यकता है। पर वहां जाकर उसकी सेहत एकाएक इतनी खराब हो गई कि वह बेचारी चल बसी। बात चल निकली। और किसी को न इससे मतलब था, न इसकी तह में जाने की ज़रूरत। इसलिए ऊपर की लीपापोती से लोकाचार निभ गया। पर मुझे पता था, हालांकि मैंने कोई खोज-बीन नहीं की। "काउंटेस बहुत सचेत भाव से कहती रही।" और तुम भी इस बात से कि मेरे और ऑसमण्ड के बीच कोई बात नहीं होती—सब समझ सकती हो। तुम्हें नहीं पता कि वह किस खामोशी से मुझे देखा करता है—जिससे कि मैं कभी यह बात मुंह पर लाऊं तो वह बात को वहीं गाड़ दे—मतलब मुझे गाड़ दे ? तुम मुझपर विश्वास कर सको, तो मैंने दायें-बायें कभी किसी से बात नहीं की। अपनी कसम खाकर कहती हूं कि जिस तरह इस समय तुम से बात कर रही हूं, मैंने पहले कभी नहीं की। बच्ची मेरे भाई की लड़की थी, इसलिए मेरी तो वह भांजी थी ही। जहां तक उसकी असली मां का सवाल था—"इतना कहकर पैंजी की आंट जैसे अनायास चुप कर गई, क्योंकि इज़ाबेल के चेहरे के भाव से लग रहा था जैसे उस चेहरे से कितनी ही आंखें उसे ताक रही हों।

काउंटेस ने कोई नाम नहीं लिया था, पर इज़ाबेल को अपने ही होंठों में उस अनिर्दिष्ट नाम की प्रतिध्वनि सुनाई दे गई। उसका सिर झूल गया और वह फिर सोफे पर बैठ गई, "यह सब तुमने मुझे क्यों बताया ?" काउंटेस को उसका यह स्वर बहुत अपरिचित-सा लगा।

"क्योंकि मुझे झुंझलाहट हो रही थी कि तुम्हें क्यों पता नहीं है। सच मुझे बहुत उलझन हो रही थी कि मैंने तुम्हें क्यों नहीं बताया, जैसे कि अब तक यह बात मैंने जाने किस मुश्किल से पचायी हो। बुरा मत मानना, पर तुम्हारे आस-पास इतना कुछ होता रहा है, और तुम्हें लगता है कुछ पता ही नहीं चलता। जो काम मैं अब कर रही हूं वह कभी नहीं कर सकी—मतलब कोई मूर्खता की हद तक भोला हो, तो उसकी सहायता मुझसे नहीं बन सकती। फिर अपने भाई की खातिर चुप्पी

साधे हुए, मेरे अन्दर का सब्र जैसे चुक गया है, और मैं सरासर झूठ बात तो कह नहीं रही हूं," काउटेस ने अपने खास ढंग से आगे जाड़ा, "असलियत बिलकुल वही है जो मैं तुम्हें बता रही हूं।"

"मुझे ऐसा ख्याल तक नहीं था" इज़ाबेल ने कहकर आंखे ऊपर उठाईं। उसके भाव से लग रहा था वह सचमुच बोखलाकर ऐसा कह रही है।

"मुझे पता था—हालांकि मुझे विश्वास नहीं आता था। तुम्हें यह कभी नहीं लगा कि छः सात साल तक ऑसमण्ड उसका प्रेमी रहा है ?"

"मुझे कुछ पता नहीं था। मुझे कभी-कभी कुछ लगता जरूर था, और उसका शायद यही मतलब था।"

"पैंज़ी को लेकर वह स्त्री बहुत चतुराई बरतती रही है—अद्भुत चतुराई।" काउंटेस ने इज़ाबेल की बात सुनकर आगे कहा।

"मेरे मन में," इज़ाबेल कहती रही, "यह विचार कभी इस तरह आया ही नहीं।" लग रहा था जैसे वह अपने अन्दर इस सम्बन्ध में छानबीन कर रही हो, "और अब मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

इज़ाबेल दुःख और असमंजस के भाव से बात कर रही थी और काउंटेस को लग रहा था कि उसके किये रहस्योद्घाटन का उतना प्रभाव नहीं पड़ा, जितना कि पड़ना चाहिए था। उसने जहां एक लपट देखने की आशा की थी वहां सिर्फ एक चिनगारी नज़र आ रही थी। इज़ाबेल अपने पर पड़े प्रभाव को ज़रा भी अतिरंजित रूप में प्रकट नहीं होने देती थी। उसके इस स्वभाव की परख, उसके जीवन के भयावह इतिहास में हो चुकी थी। "तुम्हें यह समझ नहीं आ रहा कि मिस्टर मरले के लिए उस बच्ची को स्वीकार कर पाना असम्भव था," काउंटेस फिर बोली, "वे लोग बहुत पहले से अलग रह रहे थे और मिस्टर मरले कहीं बाहर गया हुआ था—शायद दक्षिण अमरीका। अगर पहले उस स्त्री के कोई बच्चा-अच्चा था—मुझे वैसे पता नहीं है—तो वह उसे खो चुकी थी। उस स्थिति के दबाव में (क्योंकि एक भद्दा मुकाम आ पहुंचा था) उन्हें कुछ करना था, जिससे ऑसमण्ड उस बच्ची को अपना सके। ऑसमण्ड की पत्नी गुज़र चुकी थी—पर उसे गुज़रे इतना समय नहीं हुआ था कि तिथियों का थोड़ा-बहुत घपला न किया जा सके—मतलब कि जब तक किसीको सन्देह न हो। उन्होंने बस इसी बात का ध्यान रखना था। इससे स्वाभाविक और क्या बात हो सकती थी—दुनिया में

छोटी-छोटी बातों में पड़ने की फुरसत किसे है ?—कि बेचारी मिसेज़ ऑसमण्ड उस दूर की जगह पर प्रसव में जान देने से पहले अपने अल्पकालिक सुखमय जीवन का यह प्रमाण पीछे छोड़ गई। जिन दिनों वे एल्प्स में थे, ऑसमण्ड और उसकी पत्नी नेपल्स में रह रहे थे। उसके बाद वह कभी वहां नहीं गया। बस स्थान में ज़रा-परिवर्तन करने की ज़रूरत थी कि कहानी चल निकली। मेरी बेचारी भाभी कब्र से तो अपने लिए कुछ बोल नहीं सकती थी ! इधर असली मां ने अपनी चमड़ी बचाने के लिए बच्ची पर अपने अधिकार का प्रत्यक्ष दावा बिलकुल छोड़ दिया।"

"बेचारी, बेचारी, बेचारी स्त्री।" इज़ाबेल फूटकर रो उठी। दिनों से उसकी आंखों में आंसू नहीं आए थे—उसे रोने से बहुत चिढ़ रही थी। पर अब जिस तरह वह खुलकर रो उठी, उससे काउंटेस जेमिनी को और असुविधा महसूस हुई।

"यह तुम्हारी कृपा है कि तुम उस पर दया दिखा रही हो," वह परिस्थिति के विपरीत हंस दीं, "तुम्हारे तौर तरीके बस अपने ही हैं।"

यह व्यक्ति अपनी पत्नी से छल करता रहा—और विवाह के तुरन्त बाद से ही···इज़ाबेल ने सहसा अपने को रोककर कहा।

"बस यही कसर थी कि तुम उस बेचारी की वकालत करने लगो, काउंटेस बोली। हां यहां मैं तुमसे सहमत हूं कि यह सब बहुत जल्द हुआ।"

"पर मुझसे, मुझसे—?" इज़ाबेल बीच में ही रुक गई, जैसेकि उसकी बात सुनी न गई हो—जैसे कि उसकी आंखों में आया सवाल केवल उसके अपने लिए ही हो।

"तुमसे वह वफादारी बरतता रहा है? यह इसपर निर्भर करता है कि वफादारी का तुम क्या मतलब लेती हो। तुमसे विवाह करते समय वह और किसी स्त्री का प्रेमी नहीं था—मतलब सारे खतरे और सावधानी के बावजूद जिस तरह का प्रेमी वह पहले रहा था। वह स्थिति तब गुज़र चुकी थी। कम से कम अपने ही किन्हीं कारणों से वह स्त्री पछता कर पीछे हट गई थी। वह हमेशा ऊपरी दिखावे में इतना विश्वास रखती थी कि खुद ऑसमण्ड भी उससे तंग आ गया था। तुम सोच ही सकती हो कि वह अपने ढंग से कोई सुविधाजनक रास्ता नहीं ढूंढ़ सका, तो उसका क्या कारण रहा होगा। पूरा अतीत उन दोनों के बीच में था।"

"हां," इज़ाबेल के मुंह से बात मशीनी ढंग से प्रतिध्वनित हो उठी, "पूरा

अतीत उन दोनों के बीच में है।"

"यह आखिरी बात उतनी बड़ी नहीं है। पर जैसा मैंने कहा है, छः-सात साल यह चीज़ चलती रही है।"

इज़ाबेल पल-भर खामोश रही, "पर तब वह मेरा ब्याह उससे क्यों कराना चाहती थी ?"

"यही तो उसका बड़प्पन है। तुम्हारे पास पैसा था, और उसे यह भी लगता था कि तुम पैंजी की ठीक से देख-भाल करोगी।"

"बेचारी मैडम मरले—और पैंज़ी उसे ज़रा पसन्द नहीं करती," इज़ाबेल बोली।

इसीलिए तो वह ऐसी स्त्री की तलाश में थी जिसे पैंज़ी पसन्द करे। उसे पता रहता है, हर चीज़ का पता रहता है।"

"उसे यह भी पता चल जाएगा कि तुमने मुझे यह सब बता दिया है ?"

"तुम उससे कह दोगी तो उसे पता चल जाएगा। वह इसके लिए तैयार है, और पता है उसने अपने बचाव के लिए क्या उपाय सोच रखा है ? वह तुम्हें विश्वास दिला देगी कि मैं झूठ बोलती हूं। तुम्हें भी शायद ऐसा ही लग रहा हो—देखो इसे छिपाने की परेशानी में मत पड़ो। पर बात सिर्फ इतनी है कि इस बारे में मैं झूठ नहीं बोल रही। यूं मैं सैंकड़ों छोटे-छोटे झूठ बोलती रहती हूं, पर उनसे नुकसान मेरे सिवाय किसीको नहीं पहुंचता।"

इज़ाबेल को काउंटेस के सुनाये किस्से से ऐसा लग रहा था जैसे किसी फेरी वाले जिप्सी ने विचित्र वस्तुओं की एक गांठ उसके सामने उसके गालीचे पर खोल दी हो, "तो ऑसमण्ड ने उससे ब्याह क्यों नहीं कर लिया ?" आखिर उसने पूछ लिया।

"क्योंकि उसके पास पैसा नहीं था।" काउंटेस के पास हर बात का उत्तर तैयार था। यदि वह झूठ बोल रही थी, तो बहुत कुशलता से बोल रही थी, "कोई नहीं जानता, न कभी जान सकता है, कि वह कैसे गुज़ारा करती है। और वे सब सुन्दर चीज़ें उसने कैसे इकट्ठी की हैं, इसका भी पता नहीं। फिर वह भी आसमण्ड से ब्याह न करना चाहती।"

"फिर यह कैसे कहती हो वह उससे प्रेम करती रही है ?"

"वह इस रूप में उससे प्रेम नहीं करती। पहले शायद करती रही हो, और

तब शायद उससे ब्याह भी कर लेती। पर तब उसका पति जीवित था। पर जब तक मिस्टर मरले अपने पुरखों के पास पहुंचा—नहीं पुरखे तो उसके कोई थे ही नहीं—तब तक ऑसमण्ड से इस स्त्री का सम्बन्ध बदल चुका था। और इसकी महत्त्वकांक्षाएं ऊंची हो गई थीं। फिर इसे कभी यह भी नहीं लगा, "और इज़ाबेल को दुःख से पलकें झपकते छोड़कर काउंटेस आगे बढ़ गई।" यह भी नहीं लगा कि ऑसमण्ड में कोई विशेष प्रतिभा है। वह आशा करती थी कि वह किसी बड़े आदमी से विवाह कर सकेगी। यह विचार सदा उनके मन में रहा है। वह देखती रही है, प्रतीक्षा करती रही है, योजना बनाती रही है, और प्रार्थना करती रही है, पर सफलता उसे नहीं मिली। मैं मैडम मरले को एक सफल स्त्री नहीं मानती। आगे चलकर वह क्या पा ले, कह नहीं सकती। पर फिलहाल उसके हाथ में कुछ भी नहीं है। लोगों से परिचय बढ़ा लेने, और मुफ्त उनके यहां जा रहने के अलावा उसे किसी चीज़ में सफलता मिली है, तो इसीमें कि उसने तुम्हारे साथ ऑसमण्ड का ब्याह करा दिया है। यह कराया उसीने है, माई डियर। तुम ऐसे मत देखो जैसे तुम्हें इसमें सन्देह हो। मैं बरसों से इन्हें देखती आई हूं, और मुझे हर चीज़ का पता है, हर चीज़ का। लोग समझते हैं कि मेरे दिमाग के तार टूटे हैं, पर इन दोनों को मैंने पूरा दिमाग लगाकर समझने की कोशिश की है। यह मुझसे घृणा करती है, और अपनी घृणा प्रकट करने का इसका तरीका यह है कि लोगों के सामने मेरी वकालत करे। कोई अगर कह दे कि मेरे पन्द्रह प्रेमी रहे हैं, तो वह बहुत परेशान होकर उत्तर देगी कि इसमें आधे से ज्यादा झूठ है। वह बरसों से मुझसे डरती है, और मेरे बारे में लोगों से खामखाह की बुरी बातें सुनकर उसे बहुत सुख मिलता है। उसे यह भी डर रहा है कि मैं उसका भेद खोल न दूं, इसलिए जब ऑसमण्ड तुम्हारी ओर आकर्षित होने लगा था, तो एक बार इस स्त्री ने मुझे धमकी भी दी। यह बात फलोरेन्स के उसके घर की है। तुम्हें उस शाम की याद है जब यह तुम्हें वहां लेकर आई थी और हमने बागीचे में चाय पी थी? तब इसने मुझसे कहा था कि मैं अगर अपना मुंह खोलूंगी, तो यह खेल दूसरी तरफ से भी खेला जा सकता है। वह दिखाना चाहती है कि मेरी ज़िन्दगी में उससे ज्यादा बातें छिपाने की हैं। कितनी मज़ेदार तुलना होगी यह! मुझे रत्ती-भर परवाह नहीं कि वह मेरे बारे में क्या कहेगी, क्योंकि मुझे पता है तुम्हें रत्ती-भर परवाह नहीं। मेरे बारे में तुमने आज तक सिर नहीं खपाया, तो

मब क्या खपाओगी। इसलिए वह जैसे चाहे बदला ले ले। मेरा ख्याल है तुम्हें उसकी बातों से ज़्यादा धक्का नहीं लगेगा। वह अपने बारे में यह दिखाना चाहती रही है कि उस पर कोई दाग नहीं है—वह एक खिले हुए सफेद कमलिनी है, सदाचार की मूर्ति। वह सदा से इस देवता की आराधना करती रही है। सीज़र की पत्नी पर कोई आक्षेप नहीं आना चाहिए, और मैं तुम्हें बता चुकी हूं कि वह सीज़र से ही ब्याह करने की आशा करती रही है। यह एक और कारण था जो उसने ऑसमण्ड से ब्याह नहीं किया—कि उसे पैंज़ी के साथ देखकर लोग दो और दो को जोड़ने न लगें, क्योंकि दोनों की शक्लें भी मिलती हैं। उसे डर रहा है कि एक मां के रूप में वह अपने पर अधिकार खो न बैठे। वह बहुत सावधान रही है—मां के रूप में वह कभी सामने नहीं आई।"

"मां के रूप में वह सामने आई है," इज़ाबेल बोली। यह सब सुनते हुए उसका चेहरा और-और मुरझाता गया था। "अभी उस दिन उसका यह रूप मेरे सामने खुल गया था, हालांकि मैंने उसे पहचाना नहीं। एक बड़े आदमी से पैंजी के विवाह की सम्भावना थी, पर उस सम्भावना के पूरे न होने की निराशा से, उसका मुखौटा उतर गया था।"

"बस यहीं पर वह खता खायेगी," काउंटेस बोली। "वह स्वयं इस में बुरी तरह असफल रही है इसलिए चाहती है अब उसकी लड़की इसकी क्षतिपूर्ति कर दें।

उसकी लड़की ये शब्द काउंटेस के मुंह से अनायास निकले, पर इज़ाबेल इन्हें सुनकर कांप उठी। "कितनी अद्भुत बात है," वह बुदबुदाई। इस बात से वह इतनी हतप्रभ हो गई थी कि व्यक्तिगत रूप से उसका भी इस कहानी से सम्बन्ध है, इस बात को वह भूल गई थी।

"अब इससे तुम बेचारी लड़की के खिलाफ़ मत होना," काउंटेस कहती रही। "अपनी निंदनीय जन्म-कथा के बावजूद वह बेचारी बहुत भली है। मैं खुद पैंज़ी को पसन्द करती रही हूं। इसलिये नहीं कि वह उसकी बेटी है, बल्कि इसलिये कि वह अब तुम्हारी बेटी बन गई है।"

"हां, अब वह मेरी बेटी बन गई है। उस स्त्री को यह देखकर कितनी पीड़ा होती होगी कि···" कहते-कहते इज़ाबेल अपने ही विचार से सुर्ख हो उठी।

"मुझे नहीं लगता कि उसे पीड़ा होती होगी। उसे बल्कि सुख मिलता होगा। इस ब्याह से ऑसमण्ड की लड़की का रुतबा पहले से ऊंचा हो गया है। पहले वह

एक खोली में रहती थी। तुम्हें पता है उसकी मां ने क्या सोचा होगा? कि हो सकता है तुम लड़की को इतना चाहने लगो कि अपनी तरफ से उसके लिये कुछ-न-कुछ कर दो। ऑसमण्ड तो उसे कोई जायदाद दे नहीं सकता। वह कितना गरीब था इसका तो तुम्हें पता ही है। ओह, "माई डियर," काउंटेस के मुंह से निकला, "क्यों तुम्हें इतना पैसा उत्तराधिकार में मिला?" वह पल-भर के लिये रुकी—जैसे कि इज़ाबेल के चेहरे में उसे कोई विशेष बात नज़र आ रही हो। "अब यह मत कहना कि तुम सचमुच पैंज़ी को बहुत कुछ दोगी। तुम ऐसा कर सकती हो, पर मैं इसमें विश्वास नहीं करना चाहूंगी। तुम इतनी अच्छी बनने की कोशिश मत करो। ज़िन्दगी में एक बार तो थोड़ी स्वाभाविक और ओछी बनो—थोड़ी बुरी बनकर देखो कि इसका क्या सुख है।'

"मुझे बहुत विचित्र लग रहा है। मुझे यह सब जानना चाहिये था, पर जानकर मुझे अफसोस हो रहा है," इज़ाबेल बोली। "मैं तुम्हारे प्रति बहुत आभारी हूं।"

"वह तो तुम लग रही हो," काउंटेस उपहास की हंसी हंस कर बोली। "शायद हो भी और शायद नहीं भी हो। पर जैसा मैंने सोचा था वैसा असर तुम पर नहीं हुआ।"

"कैसा असर होना चाहिए था?" इज़ाबेल ने पूछा।

"जैसा कि किसी भी स्त्री पर होता, जिसका कि अपने स्वार्थ के लिए दूसरों ने इस्तेमाल किया हो।" इज़ाबेल ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप काउंटेस की आगे की बात सुनती रही। "वे दोनों एक दूसरे से बंधे रहे हैं। जब वह इससे अलग हुई—या यह उससे अलग हुआ है—उसके बाद भी। जब इनका छोटा-सा उत्सव समाप्त हो गया, तो इन्होंने आपस में समझौता कर लिया कि दोनों एक-दूसरे को पूरी स्वतन्त्रता देंगे—साथ ही एक दूसरे की प्रगति के लिये पूरा प्रयत्न भी करेंगे। तुम पूछ सकती हो कि मैं यह बात किस तरह जानती हूं। मैं जानती हूं उनके व्यवहार से। अब देख लो स्त्रियां पुरुषों की तुलना में कितनी अच्छी होती हैं। उसने ऑसमण्ड को एक पत्नी ढूंढ़ दी है, पर ऑसमण्ड ने उसके लिए एक तिनका तक नहीं तोड़ा। मैडम उसके लिये काम करती रही है, योजनाएं बनाती रही है, दुःख उठाती रही है—कितनी ही बार वह इसके लिये पैसा लाई है, पर परिणाम यह है कि यह उससे ऊब गया है। वह इसके लिये एक पुरानी

आदत की तरह है—कभी-कभी यह उसकी जरूरत भी महसूस करता है। पर अगर वह इसकी जिन्दगी से हट जाये, तो इसे जरा महसूस नहीं होगा। आज वह भी इस बात को जानती है। इसलिए तुम्हें ईर्ष्या करने की ज़रूरत नहीं।" काउंटेस ने मजाक के स्वर में बात पूरी करने की चेष्टा की।

इज़ाबेल सोफे से उठ खड़ी हुई। उसे लग रहा था, जैसे किसी ने उसे नोच लिया हो। वह ठीक के सांस नहीं ले पा रही थी। जो नयी जानकारी उसे प्राप्त हुई थी, वह उसके मस्तिष्क में गूंज रही थी। "मैं तुम्हारे प्रति बहुत आभारी हूं," उसने फिर कहा। फिर एकाएक दूसरे स्वर में पछ लिया, "तुम्हें कैसे इस सब का पता है ?"

काउंटेस के इज़ाबेल को आभार, प्रदर्शन से जितनी प्रसन्नता हुई थी, उससे ज्यादा झुंझलाहट इस सवाल से हुई। एक तीखी नज़र इज़ाबेल पर डालकर उसने कहा, "चलो यही समझ लो कि मैंने यह सब मन से घड़कर कहा।" फिर एकाएक उसका भी स्वर बदल गया और इज़ाबेल की बांह पर हाथ रखकर अपनी तीखी, चुभती मुस्कराहट के साथ वह बोली, "तो अब क्या तुम जाने का विचार छोड़ दोगी ?"

इज़ाबेल ने थोड़ा चौंककर मुंह दूसरी तरफ कर लिया। पर वह इतनी कमज़ोर पड़ गई थी कि पल-भर बाद ही उसे सहारे के लिए अपनी बांह मैंटल-शैल्फ पर रख लेनी पड़ी। मिनट-भर इस तरह खड़ी रहकर उसने अपना चक्कर खाता सिर भी बांह पर रख लिया। उसकी आंखें मुंद गई थी और होंठ पीले पड़ गये थे।

"मैंने तुम्हें बताकर अच्छा नहीं किया। तुम्हारी तबीयत खराब हो गई है," काउंटेस बोली।

"मुझे रैल्फ से ज़रूर मिलना चाहिए," इज़ाबेल कराह कर बोली। उसके स्वर में वह खेद या आकस्मिक आवेश नहीं था जिस की काउंटेस ने आशा की थी, पर उसके स्थान पर थी एक घनी गहरी उदासी।

५१

शाम को ट्यूरिन और पैरिस के लिए एक गाड़ी मिल सकती थी। काउंटेस के जाने के बाद इज़ाबेल ने जल्दी-जल्दी अपनी नौकरानी से, जो कि काफी समझदार, वफादार और फुर्तीली थी, परामर्श करके अपना निश्चय कर लिया। उसके बाद (यात्रा को छोड़कर) उसके मन में एक ही विचार रह गया कि उसे जाकर पैंज़ी से मिल लेना चाहिए—उससे वह मुंह फेरकर नहीं जा सकती थी। अब तक वह एक बार भी पैंज़ी से मिलने नहीं गई थी। ऑसमण्ड का कहना था कि अभी जाना बहुत जल्दी होगा। शाम को पांच बजे वह पिआज़ा-नावोना की एक तंग गली में बने ऊंचे-से दरवाज़े के पास अपनी गाड़ी में पहुंच गई। कान्वेंट की पोर्टेस ने, जो काफी नम्र और कोमल स्वभाव की थी, उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया। वह इस संस्था में पहले भी आ चुकी थी—पैंज़ी के साथ सिस्टर्ज़ से मिलने। वह उन स्त्रियों की कद्र करती थी। उसने देखा था कि वहां के बड़े-बड़े कमरे काफी साफ और हवादार हैं और बाग में सर्दियों में धूप और वसन्त में छाया रहती है। फिर भी वह जगह उसे पसन्द नहीं थी। उसे वह बहुत कठोर और भयानक लगती थी। किसी भी कीमत पर वह एक रात वहां नहीं काट सकती थी। आज उसे वह जगह और भी एक अच्छे-से जेलखाने जैसी लगी, क्योंकि वह जानती थी कि पैंज़ी अपनी इच्छा से वहां से नहीं निकल सकती। उस भोली लड़की के जीवन पर आज एक नया और घिनौना प्रकाश पड़ा था, पर उस उद्घाटन का गौण प्रभाव यह था कि उसे और सहारा देने की इच्छा उसके मन में जाग आई थी। पोर्टेस उसे पार्लर में प्रतीक्षा करते छोड़कर अन्दर यह सूचना देने चली गई कि कोई महिला पैंज़ी से मिलने के लिए आई हैं। पार्लर एक खुला और ठण्डा कक्ष था, जिसका साज-सामान नया-नया लग रहा था। चीनी-मिट्टी का एक बड़ा-सा स्टोव था जो जल नहीं रहा था। शीशे के ढकने में मोम के कुछ फूल थे और दीवारों पर धार्मिक चित्रों की आकृतियां खुदी थीं। कोई और अवसर होता, तो वह जगह इज़ाबेल को रोम से ज़्यादा फिलेडेलफिया जैसी लगती। पर आज वह कुछ नहीं सोच पा रही थी। उसे वह कक्ष केवल बहुत खाली और शब्दहीन लग रहा था। पांच मिनट बाद पोर्टेस एक और व्यक्ति को साथ लिए अन्दर आई।। इज़ाबेल इस ख्याल से उठी कि आने वाली कोई सिस्टर होगी। पर उसे अत्यधिक

आश्चर्य हुआ जब उसने मैडम मरले को अपने सामने देखा। इसका प्रभाव कुछ विचित्र-सा हुआ। मैडम मरले उसकी कल्पना पर इस तरह छाई थी कि उसे एकाएक सशरीर सामने देखकर उसे लगा जैसे कोई रंगों से बना चित्र सहसा हिलने-डुलने लगा हो।

दिन-भर इज़ाबेल उस स्त्री के कपट, साहस, योग्यता और सम्भावित दुःख के विषय में सोचती रही थी। उसे कमरे में आते देखकर यह सब स्याह चीज़ें जैसे एक आकस्मिक प्रकाश में कौंध गईं। मैडम मरले का वहां होना एक भद्दी-सी साक्षी की तरह था—जैसे कि वह अदालत में पेश किया जाने वाला कोई पुराना हस्ताक्षर या जीर्ण दस्तावेज़ हो। इज़ाबेल का सिर चकरा गया। यदि उसे तुरन्त बात करनी पड़ती तो उसके मुंह से कुछ भी न निकल पाता। पर ऐसी कोई आवश्यकता उसे महसूस नहीं हुई। उसे लगा कि उसे मैडम मरले से कुछ भी नहीं कहना है। इस महिला के साथ किसी चीज़ की अनिवार्य आवश्यकता कभी रहती ही नहीं थी—मैडम मरले का रंग-ढंग ऐसा था कि वह उसकी अपनी ही नहीं, दूसरों की कमियों पर भी पर्दा डाल देता था। उस समय वह कुछ अलग-सी लग रही थी। वह पोर्टेस के पीछे-पीछे धीरे से अन्दर दाखिल हुई। इज़ाबेल ने तुरन्त भांप लिया कि वह अपने हमेशा के व्यवहार का सहारा नहीं लेगी। मैडम मरले के लिए भी यह अवसर अपने में भिन्न था, और वह अपनी तात्कालिक प्रतिक्रिया के अनुसार ही चलना चाहती थी। इससे उसमें काफी संजीदगी आ गई थी। अपने चेहरे पर वह दिखावटी मुस्कराहट भी नहीं लाई। हालांकि इज़ाबेल को लगा कि वह अद्‌भुत महिला हमेशा से ज़्यादा अभिनय कर रही है, फिर भी कुल मिलाकर उसे महसूस हुआ कि उसे इतने स्वाभाविक रूप में उसने पहले कभी नहीं देखा। मैडम मरले ने इज़ाबेल पर सिर से पैर तक एक नज़र डाली, पर उदत या कठोर भाव से नहीं। भाव उसका ठंडा और कोमल था जिसमें उनकी पिछली बार की बातचीत का कोई स्पर्श नहीं था। ऐसे लग रहा था जैसे वह तब से अब के बीच एक लकीर खींच लेना चाहती हो। तब वह झुंझलाई हुई थी, अब सुस्थित थी।

"तुम अब जा सकती हो," मैडम मरले ने पोर्टेस से कहा। "पांच मिनट में यह घंटी देकर तुम्हें बुला लेगी।" इसके बाद वह इज़ाबेल की ओर मुड़ी। इज़ाबेल ने अपना ज़िक्र होने पर उसकी ओर देखना छोड़ दिया था, और उसकी आंखें कमरे की सीमाओं में इधर-उधर घूम रही थीं। वह चाह रही थी कि उसे अब

कभी मैडम मरले की ओर न देखना पड़े। "मुझे यहां देखकर तुम्हें आश्चर्य हुआ है और मैं समझती हूं, खुशी बिलकुल नहीं हुई," मैडम मरले बोलती रही। "तुम शायद सोच रही हो कि मैं क्यों आई हूं—जैसे कि तुम्हारे आने का मुझे पहले से ही पता हो। मैं मानती हूं कि यह बहुत उचित नहीं था—मुझे पहले तुमसे अनुमति ले लेनी चाहिए थी। इन शब्दों में व्यंग्य का निहित स्पर्श नहीं था। ये बहुत सादा और कोमल भाव से कहे गए थे। पर इज़ाबेल उस समय आश्चर्य और पीड़ा के समुद्र में बह रही थी, इसलिए उन शब्दों के अभिप्राय का अनुमान वह नहीं लगा सकी। "मैं बहुत देर नहीं बैठी," मैडम मरले कहती रही। "मतलब पैंज़ी के पास मैं बहुत देर नहीं रही। मैं उससे मिलने चली आई, क्योंकि आज शाम को मुझे लगा कि वह बेचारी बहुत अकेली और दुःखी न महसूस कर रही हो। यूं, एक छोटी-सी लड़की के लिए यह हितकर भी हो सकता है। मैं कह नहीं सकती क्योंकि इन लड़कियों के बारे में मैं बहुत कम जानती हूं। खैर, इस तरह रहने में कुछ सूनापन तो लग ही सकता है, इसलिए मैं चली आई थी—बस ऐसे ही। मुझे पता था तुम उससे मिलने आओगी। उसका पिता भी आएगा। पर और किसी के मिलने की मनाही है, ऐसा मुझसे नहीं कहा गया था। वह—क्या नाम है उसका?—मैडम कैथरीन बहुत अच्छी स्त्री है। उसने कोई एतराज़ नहीं किया। मैं बीस मिनट पैंज़ी के साथ रही। बहुत प्यारा-सा छोटा-सा कमरा उसे मिला है—कान्वेंट के कमरों जैसा वह बिलकुल नहीं है। उसमें प्यानो है, फूल हैं। फूल उसने बहुत अच्छी तरह लगा रखे हैं। लड़की में अपनी सुरुचि है। खैर ये मेरे कहने की बातें नहीं हैं। पर उसे देखकर मुझे खुशी हुई। चाहे तो वह एक नौकरानी भी रख सकती है, पर हां, पोशाकें वह यहां नहीं पहन सकती। वह एक छोटी-सी काली फ्रॉक पहनती है, पर बहुत सुन्दर लगती है। बाद में मैं मदर कैथरीन से मिलने गई थी। उसका कमरा भी बहुत अच्छा है। सच मुझे इन सिस्टर्ज़ का रहन-सहन धर्मस्थानों जैसा बिलकुल नहीं लगा। मदर कैथरीन की छोटी-सी शृंगार-मेज़ बहुत आकर्षक है। उसपर रखी एक चीज़ बहुत कुछ ओडिकोलोन की शीशी जैसी लग रही थी। वह पैंज़ी की बहुत प्रशंसा कर रही थी। कह रही थी कि लड़की के यहां होने से वे लोग बहुत खुश हैं। वह स्वर्ग की एक छोटी-सी देवी जैसी है और उसके चरित्र में बड़ी-बूढ़ियों के लिए भी एक आदर्श है। मैं मैडम कैथरीन के पास से चल ही रही थी कि पोर्टेस ने आकर बताया कि सिग्नो-

रीना से मिलने के लिए कोई आई हैं। मुझे तभी लगा कि तुम आई होगी; और मैंने उससे कहा कि वह अपनी जगह मुझे तुम्हारा स्वागत करने दे। वह काफी संकोच में पड़ी रही। कहने लगी कि मदर सुपीरियर को इसकी सूचना देनी चाहिए—उनके लिए यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है कि तुम्हारा स्वागत पूरे सम्मान के साथ हो। मैंने किसी तरह उसे मनाया कि मदर सुपीरियर को कष्ट न दे और कहा कि क्या उन्हें मेरे स्वागत-सत्कार पर भरोसा नहीं ?"

मैडम मरले इसी तरह बात करती रही—बात करने की कला में निपुण एक स्त्री की पूरी प्रतिभा के साथ। पर उसकी बातचीत के विराम और उतार-चढ़ाव इज़ाबेल पूरी तरह लक्ष्य कर रही थी, हालांकि उसकी आंखें मैडम मरले के चेहरे पर नहीं टिकी थीं। वह अभी ज्यादा कुछ नहीं कह पाई थी कि इज़ाबेल को अचानक उसकी आवाज टूटती महसूस हुई, जैसे श्रृंखला की एक कड़ी निकल गई हो। यह अपने में ही एक पूरा नाटक था। यह सूक्ष्म परिवर्तन एक बहुत बड़ी खोज के कारण आया था—मैडम मरले सहसा भांप गई थी कि इज़ाबेल आज बिलकुल दूसरे ही ढंग से उसकी बात सुन रही है। एक क्षण के अन्दर ही उसने अनुमान लगा लिया था कि वे दोनों अपने सम्बन्ध के अन्त पर पहुंच गई हैं, और दूसरा क्षण बीतने तक उसने इसके कारण का भी अनुमान लगा लिया था। उसके सामने खड़ी इज़ाबेल वह व्यक्ति नहीं थी जिसे वह अब तक देखती रही थी, पर एक और ही व्यक्ति थी। यह खोज बहुत बड़ी थी, और जिस क्षण उसने यह जाना, उसी क्षण से वह सर्वगुण-सम्पन्न स्त्री सहसा अटक गई और उसका उत्साह जाता रहा। पर यह एक क्षण के लिए ही हुआ। फिर उसके परिमार्जित व्यवहार का चेतन-प्रवाह लौट आया और यथा-सम्भव ठहराव के साथ आगे बढ़ने लगा। पर वह आगे बात इसीलिए कर सकी कि अन्तिम छोर उसके सामने था। उसकी सुरक्षा इसीमें थी कि वह अपने को बाहर फूटने न दे। उसने इसके लिए पूरा प्रयत्न किया, पर अपने स्वर के कम्पन को वह नहीं संभाल सकी। इसपर उसका वश नहीं चला। वह अपने मुंह से जो कुछ सुन रही थी वह स्वयं उसकी समझ में नहीं आ रहा था। उसके आत्म-विश्वास का ज्वर बैठ गया था और वह तले से घिसटती हुई किसी तरह किनारे लगने की कोशिश कर रही थी।

इज़ाबेल यह सब बहुत साफ देख रही थी, जैसे कि उसके सामने बड़े से साफ आईने में यह प्रतिबिम्बित हो। उसके लिए यह एक महान् क्षण था—यह क्षण

उसकी विजय का भी हो सकता था। मैडम मरले अपना साहस खो चुकी थी, और यह साया उसके सामने मंडरा रहा था कि उसका भेद खुल गया है। इज़ाबेल के लिए यह अपने में ही एक प्रतिशोध था—जीवन में अधिक प्रकाश का संकेत। पीठ आधी मोड़ कर खिड़की से बाहर देखते हुए, पल-भर के लिए उसने इस अनुभूति का आनन्द भी लिया। खिड़की के उस तरफ कान्वेंट का बागीचा था, पर उस पर इज़ाबेल की नज़र नहीं थी। फूटते पौधों और चमकती शाम को वह नहीं देख रही थी। उस रहस्योद्घाटन के रूखे प्रकाश में, जो कि अब तक उसके अनुभव का भाग बन चुका था, और जो इसीलिए बहुमूल्य था कि उसे वहन करने वाला पात्र इतना नाज़ुक था, वह केवल इस नग्न तथ्य को ही देख पा रही थी कि वह एक अस्त्र के तौर पर—लोहे या लकड़ी के जड़ किन्तु सुविधाजनक टुकड़े के तौर पर—इस्तेमाल की जाती रही है। इस जानकारी की सारी कटुता उसकी आत्मा में फिर से उभर आई। उसे लगा जैसे उसके होंठ अपमान का स्वाद चख रहे हों। उस क्षण यदि वह मुड़ती और कुछ कहती, तो वह एक चाबुक की-सी आवाज़ के के साथ आघात करता। पर वह आंखें मूंदे रही, और वह भयावह दृश्य सामने से ओझल हो गया। शेष रह गई संसार की सबसे चतुर स्त्री जो कि उससे कुछ फुट के फासले पर खड़ी साधारण-से-साधारण स्त्री की तरह कहने के लिए शब्द नहीं ढूंढ़ पा रही थी। इज़ाबेल का प्रतिशोध इतना ही था कि वह अब भी चुप रहे और मैडम मरले को इस असाधारण परिस्थिति से उलझने दे। ऐसे में जितना समय बीता, वह मैडम मरले के लिए बहुत लम्बा रहा होगा क्योंकि आखिर वह एक झटके के साथ बैठ गई। उसका बैठना अपने में ही उसकी असहायता की स्वीकृति थी। तब इज़ाबेल ने धीरे से आंखें घुमाकर उसपर नजर डाली। मैडम मरले बहुत पीली पड़ गई थी—उसकी आंखें इज़ाबेल के चेहरे पर टिकी थीं। इज़ाबेल ने सोचा कि वह स्त्री अब जो चाहे देखती रहे, खतरे का क्षण निकल गया है। वह उस स्त्री पर कोई आक्षेप नहीं करेगी। उसे कुछ भी बुरा-भला नहीं कहेगी। शायद इसलिए कि वह उसे अपने पक्ष से कुछ कहने का अवसर नहीं देना चाहेगी।

"मैं पैंज़ी से गुडबाई कहने आई थी," आखिर वह बोली। "मैं आज रात इंग्लैंड जा रही हूं।"

"आज रात इंग्लैंड जा रही हो ?" मैडम मरले ने आंखें उठाकर उसकी ओर देखते हुए बात दोहरा दी।

"मैं गार्डनकोर्ट जा रही हूं। रैल्फ टाउशेट मृत्यु-शैया पर पड़ा है।"

"तुम्हें सचमुच बहुत दुःख हो रहा होगा," मैडम मरले ने अपने को संभाल लिया क्योंकि उसे सहानुभूति प्रकट करने का अवसर मिल गया था। "तुम अकेली जा रही हो ?"

"हां, मेरा पति साथ नहीं जा रहा।"

मैडम मरले हल्के स्वर में कुछ बुदबुदाई जिसका अर्थ था कि दुनिया में कितने दुःख हैं। "मिस्टर टाउशेट ने कभी मुझे पसन्द नहीं किया, पर मुझे दुःख है कि वह मृत्यु शैया पर पड़ा है। तुम उसकी मां से मिलोगी ?"

"हां, वे अमरीका से लौट आई हैं।"

"वे कभी मुझ पर बहुत मेहरबान थीं, पर अब वे बदल गई हैं। और लोग भी बदल गए हैं," मैडम मरले के स्वर में एक उदात्त करुणा उभर आई। पल-भर रुककर वह बोली, "तुम फिर से उस पुराने गार्डनकोर्ट को देख सकोगी।"

"वहां मेरा ज़्यादा मन नहीं लगेगा," इज़ाबेल ने उत्तर दिया।

हां, इस शोक में लग भी कैसे सकता है ? पर जितने घर मैंने देखे हैं—और बहुत घर देखे हैं मैंने—उनमें वही एक घर ऐसा है जो मुझे रहने के लिए सबसे अच्छा लगता है। मैं घर में रहने वालों को तो कोई सन्देश नहीं भेज सकती, मैडम मरले ने कहा, "पर उस घर के लिए मैं ज़रूर अपना प्यार भेजना चाहूंगी।"

इज़ाबेल ने मुंह दूसरी तरफ कर लिया। "मुझे अब पैंज़ी के पास चलना चाहिए। मेरे पास अधिक समयन हीं है।"

उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई कि उसे किस दरवाज़े से जाना चाहिए। तभी एक दरवाजा खुला और उस घर की एक महिला सामने आ गई। उसके चेहरे पर विवेकपूर्ण मुस्कराहट थी और चोगे की लम्बी बाहों के नीचे वह अपने गदराए सफेद हाथों को धीरे-धीरे आपस में मल रही थी। इज़ाबेल ने उसे तुरन्त पहचान लिया—मैडम कैथरीन से वह पहले मिल चुकी थी। उसने उससे कहा कि वह तुरन्त मिस ऑसमण्ड से मिलना चाहती है। मैडम कैथरीन का भाव और भी विवेकपूर्ण हो उठा। वह खुलकर मुस्कराई और उसने कहा, "अच्छा है वह तुमसे मिल ले। मैं स्वयं तुम्हें उसके पास ले चलती हूं।" इसके बाद उसकी प्रसन्न और सतर्क दृष्टि मैडम मरले की ओर मुड़ गई।

"मैं थोड़ी देर यहां रुक जाऊं ?" मैडम मरले ने पूछा। "यहां मुझे बहुत

अच्छा लग रहा है।"

"आप चाहें, तो हमेशा यहीं रहें," सिस्टर जानकार भाव से हंस दी।

कमरे से निकलकर वह इज़ाबेल को कई कॉरिडोर पार करके एक लम्बे ज़ीने से ऊपर ले चली। सभी स्थान बहुत ठोस और खाली थे—साफ और प्रकाशयुक्त। इज़ाबेल ने सोचा कि कारागार भी प्रायः ऐसे ही होते हैं। मैडम कैथरीन ने धीरे-से पैंज़ी के कमरे का दरवाज़ा खोला और इज़ाबेल को अन्दर ले गई। वे दोनों आलिंगन में बंध गईं, तो वह हाथ में हाथ लिए मुस्कराती हुई उनकी तरफ देखती रही।

"तुमसे मिलकर यह कितनी खुश हो रही है," उसने कहा। "इसके लिए यह बहुत अच्छा रहेगा," कहकर उसने सबसे अच्छी कुरसी सावधानी से इज़ाबेल के लिए सरका दी। पर स्वयं वह नहीं बैठी—लग रहा था वह वहां से जाने की तैयारी कर रही है। "बच्ची कैसी लग रही है?" पल-भर रुककर उसने इज़ाबेल से पूछ लिया।

"ज़र्द लग रही है," इज़ाबेल ने उत्तर दिया।

"यह तुमसे मिलने की खुशी के कारण है। यह बहुत खुश है," सिस्टर बोली।

जैसा कि मैडम मरले ने बताया था, पैंज़ी छोटी-सी काली ड्रेस पहने थी। शायद वह उसीकी वजह से ज़र्द नज़र आ रही थी। "सब लोग मुझसे बहुत अच्छा व्यवहार करते हैं। हर चीज़ का ख्याल रखते हैं," पैंज़ी ने हर एक को अच्छा बताने की अपनी स्वाभाविक उत्सुकता के साथ कहा।

"हमें हमेशा तुम्हारा ख्याल रहता है। हमें पता है कितनी कीमती चीज़ हमारे हाथ में सौंपी गई है," मैडम कैथरीन की ध्वनि उस स्त्री की तरह थी, जिसे उपकार करने की आदत हो, और जिसकी कर्त्तव्य-भावना हर चीज़ का ध्यान रखना जानती हो। इज़ाबेल के कानों को ये शब्द सिक्के की तरह भारी लगे—इनका अर्थ था व्यक्तित्व-सम्पर्ण, और चर्च का अधिकार।

मैडम कैथरीन उन्हें अकेला छोड़ गई, तो पैंज़ी ने घुटनों के बल होकर अपनी सौतेली मां की गोदी में अपना सिर झुका लिया। कुछ क्षण वह ऐसे ही रही और इज़ाबेल उसके सिर पर हाथ फेरती रही। फिर पैंज़ी उठ खड़ी हुई और आंखें चुराती हुई कमरे में इधर उधर देखने लगी। "मैंने अपना कमरा अच्छा सजा रखा है न? घर की सब सुविधाएं यहां हैं।"

"बहुत सुन्दर है। तुम्हें सब सुविधाएं हैं," इज़ाबेल को समझ नहीं आ रहा

था कि उससे क्या कहे। एक ओर वह यह नहीं प्रकट करना चाहती थी कि वह लड़की पर दया दिखाने आई है, और दूसरी ओर वह उसकी खुशी में साथ देने का बहाना करके उसका उपहास भी नहीं उड़ाना चाहती थी। इसलिए पल-भर बाद उसने कहा, "मैं तुमसे गुडबाई कहने आई हूं। मैं इंग्लैण्ड जा रही हूं।"

पैंज़ी का सफेद चेहरा सुर्ख हो उठा। "इंग्लैण्ड ? वहां से वापस नहीं आयेंगी ?"

"पता नहीं कब वापस आऊंगी।"

"ओह !" पैंज़ी की सांस जैसे रुक गई। वह जानती थी कि उसे आलोचना करने का अधिकार नहीं है, पर उसकी ध्वनि में गहरी निराशा स्पष्ट थी।

"मेरा कज़िन मिस्टर टाउशेट बहुत बीमार है। शायद वह बचेगा नहीं। मैं उससे मिलना चाहती हूं," इज़ाबेल बोली।

"हां, आपने बताया था कि उसकी हालत ऐसी ही है। आपको ज़रूर जाना चाहिए। पापा भी जा रहे हैं क्या ?"

"नहीं, मैं अकेली जा रही हूं।"

पल-भर लड़की चुप रही। इज़ाबेल को प्रायः आश्चर्य होता था कि वह अपने पिता के साथ उसके सम्बन्ध के बारे में क्या सोचती है। उनकी आत्मीयता में उसे कुछ कमी लगती है, यह वह अपनी नज़र या अपने किसी संकेत से प्रकट नहीं होने देती थी। इज़ाबेल का विश्वास था कि लड़की इस सम्बन्ध में सोचती ज़रूर होगी और कि उसे शायद लगता होगा कि दूसरे पति-पत्नी इससे अधिक घनिष्टता के साथ जीवन बिताते हैं। पर पैंज़ी अपने विचारों में भी कभी असन्तुलन नहीं आने देती थी। वह न कभी अपनी इस सौतेली मां की आलोचना करती थी, न ही अपने महान् पिता की। ऐसी स्थिति में तो उसके दिल की धड़कन ही रुक जाती—उसे लगता जैसे कानवेंट के गिरजाघर में चित्रित दो सेन्ट्स को उसने अपने सिर उठाकर एक दूसरे को घूरते देख लिया हो। ऐसा होता, तो भी मर्यादा की रक्षा के लिए वह इस भयानक घटना का किसी से जिक्र न करती। इस तरह अपने से बड़ों के जीवन के रहस्य जानकर भी वह अनजान बनी रहना चाहती थी। "आप बहुत दूर हो जाएंगी," उसने इतना ही कहा।

"हां, दूर तो हो जाऊंगी, पर इससे कुछ फर्क नहीं पड़ेगा," इज़ाबेल बोली। "जब तक तुम यहां हो, तब तक भी तो मैं तुम से दूर ही हूं।"

"हां, पर यहां आप मुझसे मिलने आ सकती हैं—हालांकि आप बहुत कम आई हैं।"

"तुम्हारे पिता ने मुझे मना कर रखा था। आज मैं तुम्हारे मन-बहलाव के लिए कुछ भी साथ लेकर नहीं आई।"

"मुझे मन-बहलाव की ज़रूरत नहीं है। पापा इसके खिलाफ हैं।"

"तब मैं रोम में रहूं, या इंग्लैण्ड में, इससे क्या फर्क पड़ता है?"

"आप खुश नहीं हैं," पैंज़ी बोली।

"ज़्यादा खुश नहीं हूं, पर उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता।"

"मैं भी अपने से यही कहती हूं कि किसी चीज़ से कुछ फर्क नहीं पड़ता। पर मैं यहां से निकलना चाहती हूं।"

"मैं भी चाहती हूं कि तुम यहां से निकल सको।"

"मुझे यहां छोड़कर मत जाइये," पैंजी ने कोमल स्वर में कहा।

इज़ाबेल पल-भर कुछ नहीं बोली। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। "तुम अभी मेरे साथ चलना चाहोगी?" उसने पूछ लिया।

पैंज़ी ने याचना-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। "पापा ने आपसे मुझे साथ लाने को कहा है?"

"नहीं, यह मैं अपनी तरफ से कह रही हूं।"

"तब तो मैं समझती हूं मुझे इन्तज़ार करना चाहिए। पापा ने मेरे लिए कोई सन्देश भेजा है?"

"उन्हें मेरे यहां आने का कोई पता नहीं है।"

"वे समझते हैं कि इतना मेरे लिए काफी नहीं है, "पैंज़ी बोली" पर यह काफी है। सिस्टर्ज़ मेरा बहुत ख्याल रखती है, और छोटी लड़कियां मुझसे मिलने आती रहती हैं। उनमें से कुछ तो बहुत ही छोटी हैं। बड़ी प्यारी लगती हैं। फिर मेरा कमरा—आप खुद ही देख लें। सब कुछ बहुत अच्छा है। पर काफी हो चुका है। पापा चाहते थे कि मैं थोड़ा सोचूं—और मैंने बहुत कुछ सोच लिया है।

"क्या सोचा है तुमने?"

"कि मुझे पापा को कभी नाराज़ नहीं करना चाहिए।"

"यह तो तुम पहले भी जानती थीं।"

"हां, पर अब और अच्छी तरह जान गई हूं। मैं उनके लिए कुछ भी करूंगी—

कुछ भी करूंगी," पैंज़ी बोली, पर अपने मुंह से ये शब्द सुनकर एक गहरी लाली उसके चेहरे पर दौड़ गई। इज़ाबेल ने इसका अर्थ जान लिया—देख लिया कि लड़की पराजित हो गई है। अच्छा ही था ओ एडवर्ड रोज़ियर ने अपने कुछ अनैमल बचा रखे थे। इज़ाबेल ने पैंज़ी की आंखों में देखा और उसे लगा कि उनमें केवल एक प्रार्थना है कि उससे कड़ा बर्ताव न किया जाये। उसने अपना हाथ पैंज़ी के हाथ पर रख दिया—जैसे उसे यह जतलाने के लिए कि उसकी इस दृष्टि में सम्मान की कमी नहीं है। क्षण-भर के लिए लड़की के बांध का टूट जाना (चाहे यह कितनी ही खामोशी या कोमलता से हुआ हो) वास्तव में सत्य की ही अराधना थी। लड़की और किसी के सम्बन्ध में निर्णय नहीं लेती थी। पर अपने सम्बन्ध में उसने निर्णय ले लिया था। वास्तविकता क्या है, इसका उसे पता चल गया था। चीज़ों को मिलाकर देखने का अवकाश उसके पास नहीं था—उस गहन एकान्त में किसी चीज ने उसे छा लिया था। अधिकार के सामने उसने अपना सिर झुका दिया था, और केवल इतना ही चाहती थी कि अधिकार उसके प्रति क्रूरता न बरते। हां, अच्छा ही था जो एडवर्ड रोज़ियर ने कुछ चीज़ें बचा रखी थीं।

इज़ाबेल उठ खड़ी हुई। उसके पास बहुत कम समय रह गया था। अच्छा गुडबाई। मैं आज रात रोम से जा रही हूं।"

पैंज़ी ने उसका कपड़ा हाथ में ले लिया। लड़की के चेहरे में अचानक परिवर्तन आ गया था।" "आप अजीब-सी नज़र आ रही हैं। मुझे डर लग रहा है।"

"मुझसे डरने की कोई बात नहीं," इज़ाबेल बोली।

"शायद आप वापस नहीं आयेंगी।"

"शायद नहीं। मैं नहीं कह सकती।"

"ओह मिसेज़ ऑसमण्ड, आप मुझे छोड़ नहीं देंगी।"

इजाबेल को लगा कि लड़की को अब पूरा अन्दाज़ा हो गया है। "मेरी बच्ची, मैं तेरे लिए क्या कर सकती हूं ?" उसने पूछा।

"मैं नहीं जानती। पर आपके बारे में सोचकर मुझे हमेशा खुशी होती है।

"तुम मेरे बारे में हमेशा सोच सकती हो।"

आप दूर चली जाएंगी, तब नहीं। मुझे थोड़ा डर लगता है," पैंज़ी बोली।

"किससे डर लगता है ?"

"पापा से—थोड़ा-सा। और मैडम मरले से। वह अभी-अभी मुझसे मिलने आई थी।"

"तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए," इज़ाबेल ने कहा।

"वे लोग जो कहेंगे, वह मैं सब करूंगी। पर आप यहां होंगी, तो मैं ज़्यादा आसानी से कर सकूंगी।"

इज़ाबेल सोच में पड़ गई। "मैं तुम्हें छोड़ूंगी नहीं," आखिर उसने कहा। "अच्छा गुडबाई।"

पल-भर वे दोनों खामोश आलिंगन में बंधी रहीं—दो बहनों की तरह। फिर पैंज़ी कॉरिडोर से होकर ज़ीने के सिरे तक इज़ाबेल के साथ चली आई। "मैडम मरले अभी-अभी आई थी," चलते-चलते उसने कहा। इज़ाबेल ने कोई उत्तर नहीं दिया, तो वह सहसा बोली, "मुझे मैडम मरले अच्छी नहीं लगती।"

इज़ाबेल पल-भर संकोच में रही, फिर रुक गई। "तुम्हें यह कभी नहीं कहना चाहिए कि—कि तुम्हें मैडम मरले अच्छी नहीं लगती।"

पैंज़ी ने आश्चर्य के साथ उसकी ओर देखा। पर आश्चर्य उसके लिए कभी आज्ञा के उल्लंघन का कारण नहीं बन पाता था। "आगे से कभी नहीं कहूंगी," वह बहुत कोमल स्वर में बोली। ज़ीने के सिरे पर उन्हें अलग होना था। जिस कोमल पर निश्चित नियन्त्रण में पैंज़ी रह रही थी, उसके अनुसार उसे नीचे जाना मना था। इज़ाबेल नीचे उतरने लगी। जब वह नीचे पहुंच गई, तो लड़की ने ऊपर से चिल्लाकर कहा, "आप वापस आएंगी न ?" इज़ाबेल इस स्वर की कमी नहीं भूल सकी।

"हां, आऊंगी वापस।"

मैडम कैथरीन इज़ाबेल को मिल गई, और उसके साथ पार्लर के दरवाज़े तक चली आई। वहां रुककर दोनों एक मिनट बात करती रहीं। "मैं अन्दर नहीं जाऊंगी," सिस्टर ने कहा। "मैडम मरले तुम्हारा इन्तजार कर रही हैं।"

इस घोषणा से इज़ाबेल का चेहरा सख्त हो गया—वह यह पूछने को हुई कि क्या कान्वेंट से बाहर जाने का कोई और रास्ता नहीं है। पर पल-भर सोचकर उसे लगा कि उसे उस धार्मिक स्त्री पर यह प्रकट नहीं होने देना चाहिए कि वह पैंज़ी से मिलने आई दूसरी स्त्री के सामने नहीं पड़ना चाहती। सिस्टर ने धीरे-से उसकी बांह अपने हाथ में लेकर बहुत उदार और विवेकपूर्ण भाव से उसकी ओर

देखते हुए आत्मायतापूर्ण स्वर में कहा, "आप लोग अभी कितने दिन यह चाहते हैं ?"

"तुम लड़की के बारे में कह रही हो ? यह बताने में काफी समय लगेगा।"

"हमार ख्याल है काफी दिन यहां रह चुकी है," मैडम कैथरीन ने अब साफ कहा, और पार्लर का दरवाज़ा खोल दिया।

मैडम मरले उसी तरह बैठी थी, जैसे इज़ाबेल उसे छोड़ गई थी। वह अपने विचारों में इस तरह डूबी थी कि अपने स्थान से ज़रा भी नहीं हिली थी। मैडम कैथरीन ने दरवाज़ा बन्द कर दिया, तो इज़ाबेल को लगा कि वह स्त्री किसी मतलब से वहां बैठकर इस तरह सोचती रही है..। उसका सन्तुलन लौट आया था, और उसने अपने पर पूरा अधिकार पा लिया था। "मुझे लगा कि मुझे तुम्हारा इन्तजार करना चाहिए," वह विनीत भाव से बोली। "यह इसलिए नहीं कि मुझे पैंज़ी के बारे में कुछ बात कहनी हैं।"

इज़ाबेल को समझ नहीं आया कि मैडम मरले क्या बात करना चाहती है। जो उसने कहा था, उसे सुनकर भी पल-भर बाद उसने कहा, "मैडम कैथरीन कहती है कि वह यहां काफी दिन रह चुकी है।"

"हां, मुझे भी ऐसा ही लगा है। मैं तुमसे मिस्टर टाउशेट के बारे में कुछ और पूछना चाहती थी," मैडम मरले बोली। "तुम्हें लगता है कि वह सचमुच अब अपनी आखिरी सांसों पर हैं ?"

"एक तार के सिवा और कोई सूचना मेरे पास नहीं है। दुर्भाग्यवश उससे एक सम्भावना की ही पुष्टि होती है।"

"मैं तुमसे एक अजीब-सा सवाल पूछने जा रही हूं। तुम्हें अपने कज़िन से बहुत स्नेह है ?" और बात जितनी ही विचित्र मुस्कराहट उसके चेहरे पर आ गई।

"हां, मुझे उससे बहुत स्नेह है। पर मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी।"

"इसकी व्याख्या करना ज़रा मुश्किल होगा," मैडम मरले बोली। "मुझे अभी-अभी एक ख्याल आया है, जो शायद तुम्हें नहीं आया होगा। मैं चाहती हूं कि तुम्हें बता दूं। तुम्हारे कज़िन ने कभी तुम पर बहुत उपकार किया है। क्या तुम्हें इसका कुछ भी अनुमान नहीं है ?"

"उसने मुझपर कई उपकार किए हैं।"

"हां, पर एक उपकार सबसे बड़ा था। उसने तुम्हें एक धनवान स्त्री बना दिया था।

"उसने मुझे क्या···?"

मैंडम मरले अपनी सफलता से सन्तुष्ट होकर अब अधिक विजय-भाव के साथ बोली, "अच्छे विवाह के लिए जो अतिरिक्त आकर्षण चाहिए था, वह उसने तुम्हें प्रदान किया था। अगर तह में जाओ, तो तुम्हें उसीको धन्यवाद देना चाहिए।" वह रुक गई। इज़ाबेल की आंखों में एक खास भाव उभर आया था।

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझ पा रही। वह पैसा मेरे अंकल का था।"

"हां, पैसा तुम्हारे अंकल का था। पर विचार तुम्हारे कज़िन का था। अपने पिता को उसीने इसके लिए राज़ी किया था। सच माई डियर, वह रकम बहुत बड़ी थी।"

इज़ाबेल उसे ताकती खड़ी रही। उसे लग रहा था कि वह ऐसी दुनिया में जी रही है जिसमें रह-रहकर घोर विस्फोट हो रहे हैं। "पता नहीं यह सब तुम क्यों कह रही हो। तुम क्या जानती हो, मैं नहीं कह सकती।"

"मैं जानती कुछ नहीं। पर यह मेरा अनुमान है।"

इज़ाबेल दरवाज़े की तरफ बढ़ गई। उसे खोलकर पल-भर चटखनी पर हाथ रखे रही। फिर उसने अपने एकमात्र प्रतिशोध के रूप में केवल इतना ही कहा, "मैं समझती थी कि मुझे केवल तुम्हें धन्यवाद देना चाहिए।"

मैंडम मरले की आंखें झुक गईं। वह जैसे एक गर्वपूर्ण समाधी की स्थिति में वहां खड़ी रही। "तुम बहुत दुःखी हो मैं जानती हूं, पर मैं तुमसे ज्यादा दुःखी हूं।"

"यह मैं मानती हूं। मेरा ख्याल है मैं इसके बाद कभी तुमसे नहीं मिलना चाहूंगी।"

मैंडम मरले ने आंखें उठाई। "मैं अमरीका चली जाऊंगी," उसने धीरे से कहा, जबकि इज़ाबेल वहां से बाहर निकल गई।

५३

इज़ाबेल को इसमें आश्चर्य नहीं हुआ—बल्कि परिस्थिति ज़रा दूसरी होती तो उसे इसमें खुशी महसूस होती—कि चेयरिंग क्रास पर पैरिस मेल से उतरते ही वह सीधी हैनरीटा स्टैकपोल की बांहों में—या कम से कम हाथों में—पहुंच गई। उसने ट्यूरिन से हैनरीटा को तार दिया था। वह चाहे मन में निश्चित नहीं थी कि हैनरीटा उसे लेने पहुंचेगी, पर उसे इतना जरूर ख्याल था कि उसके तार का कुछ न कुछ अच्छा परिणाम निकलेगा। रोम से वहां तक की लम्बी यात्रा में उसके मन में धुन्ध-सी छाई रही थी। वह भविष्य के सम्बन्ध में अपने से कोई सवाल नहीं पूछ पा रही थी। उसने वह यात्रा जैसे दीप्तिहीन आंखों से की थी। जिन प्रदेशों में से वह गुजर कर आई थी, वे वसन्त की भरपूर हरियाली से लदे थे, पर उसे इससे कोई सुख नहीं मिला था। उसके विचार किन्हीं और प्रदेशों से गुजर रहे थे—विचित्र, धुंधले, मार्गहीन प्रदेशों से, जहां की ऋतु कभी नहीं बदलती थी—एक लम्बा, रूखा शिशिर जहां सदा-सदा के लिए छाया था। उसके पास सोचने को बहुत कुछ था, पर यह उसका चिन्तन या उसका कोई चेतन-उद्देश्य नहीं था जो उसके मन पर छाया था। उसके मन से गुज़र रहे थे, कुछ टूटे-फूटे चित्र, स्मृति की और आशा की आकस्मिक धुंधली किरणें। अतीत और भविष्य अपनी इच्छा से वहां आ-जा रहे थे, और वह उन्हें केवल कुछ उभरते बिम्बों के रूप में देख रही थी जिनके उतार-चढ़ाव की अपनी ही एक संगति थी। कितना असाधारण था इतनी-इतनी चीज़ों का एक-साथ याद आना। अब जबकि उसे भेद का पता था, जबकि उसे पता था कि क्या चीज़ उससे किस रूप से सम्बद्ध है, और कि किस-किस चीज़ के न होने से जीवन बिना पूरे पत्तों के ताश की बाजी खेलने की तरह हो जाता है—वस्तुओं का सत्य, उनके पारस्परिक सम्बन्ध, उनके अर्थ और बहुत हद तक उनका आतंक, सब कुछ एक वस्तु-परक विशालता के साथ उसके सामने उभर रहा था। हज़ारों छोटी-छोटी चीज़ें उसे याद आ रही थीं—एक कम्पन की-सी सहजता के साथ वे सजीव हो उठती थी। तब वे उसे छोटी-छोटी चीजें लगती थीं, पर अब वे सिक्के के-से बोझ से लदी जान पड़ती थीं। यूं तो वे अब भी तुच्छ ही थीं, क्योंकि उन्हें समझकर उसे क्या हासिल हो सकता था? आज किसी चीज़ का उसके लिए कोई उपयोग नहीं था। हर चीज़ का उद्देश्य और अभिप्राय समाप्त

हो चुका था। इच्छाएं भी समाप्त हो चुकी थीं—सिवाय एक इच्छा के कि उसे अपने विशाल शरणस्थल पर पहुंचना है। गार्डनकोर्ट से उसने आरम्भ किया था, और एक अस्थायी समाधान यही था कि वह उसके आच्छादित कमरों में लौट जाय। वह शक्ति लेकर वहां से चली थी और दुर्बल होकर लौट रही थी। उस स्थान ने पहले उसे विश्राम दिया था, अब उसे शान्ति दे सकता था। उसे रैल्फ की सम्भावित मृत्यु से स्पर्धा हो रही थी—व्यक्ति को इससे अच्छी विश्रान्ति और किसी रूप में नहीं मिल सकती थी। बिलकुल समाप्त हो जाना, बिलकुल छोड़ जाना और कुछ न जानना, यह विचार उतना ही मधुर था, जितना किसी गर्म देश के अंधेरे प्रकोष्ठ में बने एक मरमरी तालाब में ठंडे जल का स्नान।

रोम से आते हुए रास्ते में ऐसे भी क्षण आये कि जब उसने अपने को लगभग मृत-सी पाया था। वह एक कोने में बैठी थी, निष्क्रिय और मतिहीन—केवल इतनी अनुभूति लिए कि उसे कहीं ले जाया जा रहा है। मन में न कोई खेद था न कोई आशा—जैसे कि वह एक एट्रस्कन आकृति की तरह अपनी ही राख के भाजन पर बैठी हो। खेद के लिए अब कुछ नहीं था—सब कुछ समाप्त हो गया था। उसके फिसलने का ही नहीं, उसके पश्चात्ताप का समय भी पीछे रह गया था। खेद था तो इतना ही कि मैडम मरले इतनी—इतनी आशातीत निकली थी। यहीं उसकी समझ जवाब दे जाती—उसे शब्द न मिलते कि मैडम मरले के लिए क्या कहे, कि वह कैसी थी। पर वह जैसी भी थी, उसका खेद स्वयं मैडम मरले को ही होना चाहिए। अमरीका जाकर वह वहीं रह जाने के लिए कह रही थी—निस्संदेह वह ऐसा ही करेगी। इज़ाबेल को अब इससे कोई मतलब नहीं था, उसे केवल इतना आभास था कि मैडम मरले से उसे अब कभी नहीं मिलना चाहिए। यह विचार उसे भविष्य की ओर ले जाता जिसकी एक टूटी-फूटी झलक समय-समय पर उसके सामने आ जाती थी। वह अपने को आने वाले सालों में देखती—अब भी यह दृष्टिकोण लिए कि उसे अभी जिंदगी और जीनी है—और यह धारणा उसकी उस समय की मनःस्थिति के साथ मेल नहीं खाती थी। शायद वांछित यह था कि वह दूर चली जाए, सचमुच दूर। हरे-भूरे इंग्लैण्ड से बहुत दूर—पर प्रकटतः यह सौभाग्य उसके लिए नहीं था। उसकी आत्मा की गहराई में—त्याग की कामना के बहुत नीचे—कहीं यह अनुभूति थी कि अभी बहुत दिन उसे जिन्दगी से वास्ता रहेगा। कभी-कभी इस विश्वास से प्रेरणा, एक पुनर्जीवन-सा उसे मिलता। यह शक्ति का प्रमाण

था—इस बात का प्रमाण कि प्रसन्नता उसे फिर भी मिल सकती है। यह नहीं हो सकता था कि वह जीवित रह कर दुःख ही दुःख उठाए। वह अभी युवा थी, और अभी बहुत कुछ उसके जीवन में घटित हो सकता था। जीवित रहकर केवल दुःख सहना अपने ज़ख्मों को दोहराये जाते और बड़ा होते देखना—नहीं उसका जीवन इससे कहीं मूल्यवान था, कहीं अधिक सम्भावनापूर्ण। फिर वह सोचती कि अपने सम्बन्ध में शुभ की कल्पनाएं क्या कोरी मुर्खता ही नहीं है? यह कसे निश्चित था कि उसका जीवन मूल्यवान है। क्या सारा इतिहास मूल्यवान् वस्तुओं के विनाश की ही कहानी नहीं है? क्या अधिक सम्भावना यही नहीं थी कि जो जितना भला हो, वह उतना ही दुःख उठाये? इसका शायद यह अर्थ निकलता था कि अपने में ही कुछ क्रूरता स्वीकार करनी होगी। पर अपनी आंखों के सामने से गुजरती भविष्य की अस्पष्ट, लम्बी छाया को पहचानती रही। नहीं, वह इससे बच नहीं सकेगी, अन्त तक इसी में बनी रहेगी। तभी बीच के वर्ष फिर उसे अपनी लपेट में ले लेते और उसकी उदासीनता का सुरमई परदा उसे ढांपने लगता।

हेनरीटा ने उसे चूम लिया। उसका चमने का ढंग ऐसा था कि कहीं कोई उसे ऐसा करते देख न ले। इज़ाबेल भीड़ में खड़ी होकर इधर उधर अपनी नौकरानी को ढूंढने लगी। उसने पूछा कुछ नहीं। वह प्रतीक्षा करना चाहती थी। उसे सहसा लगने लगा था कि उसे सहायता की आवश्यकता है। हैनरीटा के मिल जाने की उसे खुशी थी, क्योंकि अपने लंदन आने में उसे कुछ भयावह-सी बात लग रही थी। स्टेशन के धुंधले और धुंए से लदे ऊंचे गुंबद को, विचित्र-सी सुरमई रोशनी को, गाढ़े अंधेरे को, और, धक्का देती भीड़ को देखकर एक डर-सा उसके स्नायुओं में भरने लगा, और उसने अपनी बांह हेनरीटा की बांह में डाल दी। उसे याद आ रहा था कि कभी वह इन चीज़ों को पसन्द करती थी—वे सब उस महान् दृश्य का भाग थीं जिसमें कुछ था जो उसके अन्तःकरण को छूता था। उसे याद आ रहा था कि पांच साल पहले सर्दी की साझं में कैसे वह भरी हुई सड़कों से गुज़रती हुई यूस्टन से पैदल आई थी। आज वह ऐसा नहीं कर सकती थी, और उसे लग रहा था जैसे वह घटना किसी और व्यक्ति के साथ हुई हो।

"कितनी अच्छी बात है कि तुम चली आईं," हेनरीटा ने ऐसे देखते हुए कहा जैसे कि इज़ाबेल की ओर से इस बात के विरोध की सम्भावना हो।

"तुम-न आतीं – न आतीं, तो पता नहीं..." इस तरह मिस स्टैकपोल ने यह मनहूस संकेत दिया कि उसे यह बात कितनी नागवार गुज़रती।

इज़ाबेल को अपनी नौकरानी नज़र नहीं आ रही थी। उसकी आंखें एक और आकृति पर रुकीं, जिससे उसे लगा वह पहले मिल चुकी है। पल-भर में ही उस ने मिस्टर बैंटलिंग के खुश-मिज़ाज चेहरे को पहचान लिया। वह कुछ दूर खड़ा था, और उमड़ती भीड़ में यह शक्ति नहीं थी कि उसे उसकी जगह से एक इंच भी हिला सके। दोनों महिलाओं के परस्पर आलिगंन करने तक वह उतने ही फासले पर रहना चाहता था।

"अरे वह मिस्टर बैंटलिग है," इज़ाबेल ने कोमल पर असम्बद्ध ढंगसे कहा, जैसे कि अब उसे चिन्ता न हो कि उसकी नौकरानी मिलती है या नहीं।

"हां, यह सब जगह मेरे साथ जाता है। इधर आओ मिस्टर बैंटलिग।" हेनरीटा चिल्लाई। इस पर वह उदार युवक परिस्थिति के अनुकूल गम्भीरता-मिली मुस्कराहट चेहरे पर लिये उनकी तरफ बढ़ आया। "यह बढ़िया बात नहीं कि यह चली आई है ?" हेनरीटा ने उससे पूछा। फिर बोलीं, "इसे सब पता है। हमारी बहुत बहस हो चुकी है। यह कहता था तुम नहीं आओगी, मैं कहती थी ज़रूर आओगी।"

"मैं समझती थी कि तुम लोग हर बात में सहमत होते हो," इज़ाबेल ने उत्तर में मुस्कराकर कहा। उसे लगा कि अब वह मुस्करा सकती है—क्षण-भर में ही मिस्टर बैंटलिग की साहसी आंखों से उसे पता चल गया था कि वह उसे अच्छा समाचार देने जा रहा है। उन आंखों का भाव ऐसा था जैसे वे कह रही हों, कि याद रखो मैं तुम्हारे कज़िन का पुराना दोस्त हूं, और मेरे ख्याल में सब ठीक-ठाक है। इज़ाबेल ने अपना हाथ उसके हाथ में दे दिया। अतिरंजित रूप में उसने कल्पना की कि वह व्यक्ति एक सुन्दर ओर निंदोष नाइट है।

"मैं हमेशा सहमत हो जाता हूं," बैंटलिग बोला। "यह नहीं हो पाती।"

"मैंने तुमसे कहा नहीं था कि नौकरानी रखना वड़ी बकवास है ?" हेनरीटा बोली। "वह भली औरत शायद पीछे कैले में ही रह गई है।"

मरने दो, "इज़ाबेल मिस्टर बैंटलिग की ओर देखती हुई बोली। वह आदमी पहले उसे कभी इतना दिलचस्प नहीं लगा था।

"तुम इज़ाबेल के पास रुको, मैं अभी देखकर आती हूं," हेनरीटा ने

आदेश दिया और पल-भर के लिये उन दोनों को अकेला छोड़ गई।

पहले तो वे दोनों खामोश रहे, फिर बैंटलिंग ने पूछ लिया कि चैनल पार करते उसे कैसा लगा।

"बहुत अच्छा लगा...नहीं-नहीं, बहुत बुरी हालत हुई, ।" इससे बैंटलिंग कुछ चकित हो रहा। इज़ाबेल फिर बोली, "मुझे पता है तुम गार्डनकोर्ट से आ रहे हो।"

"यह तुम कैसे जानती हो ?"

'कह नहीं सकती। सिर्फ तुम्हारी सूरत गार्डनकोर्ट से आ रहे व्यक्ति जैसी लगती है।"

"तुम्हारा ख्याल है मैं बहुत उदास नज़र आ रहा हूं ? वहां की स्थिति सचमुच बहुत उदास करने वाली है।"

"मुझे तुम उदास नहीं लग रहे, बल्कि बहुत अच्छे लग रहे हो," इज़ाबेल को इस सद्भाव के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ा। उसे लगा कि खामखाह की घबराहट अब उसे कभी नहीं होगी।

पर बेचारा बैंटलिंग अभी निचली सतह पर था। वह काफी शरमाकर हंसने लगा। बोला, कि वह अक्सर बहुत झुंझलाता है, और जब भी झुंझलाता है, आपे से बाहर हो जाता है। "तुम मिस स्टैकपोल से पूछ लेना। हां दो दिन पहले मैं गार्डनकोर्ट में था।"

"मेरे कज़िन से मिले थे ?"

"ज़रा-सी देर के लिए। पर वह लोगों से मिलता रहता है। परसों वारबर्टन वहां आया था। रैल्फ बिलकुल हमेशा की तरह है—सिवाय इसके कि अब बिस्तर में पड़ा है, बहुत बीमार नज़र आता है, और बोल नहीं सकता," मिस्टर बैंटलिंग कहता रहा। "फिर भी वह बहुत प्रसन्न और खुशमिज़ाज नज़र आ रहा था। उतना ही चतुर जितना कि वह हमेशा रहा है। देखकर मन बहुत खराब होता था।" भीड़ और शोर से भरे उस स्टेशन पर भी यह चित्र इज़ाबेल के सामने स्पष्ट हो उठा। "सचमुच क्या बात हाथ से निकल चुकी है ?"

"हां। मैं इसलिए वहां गया था। हमने सोचा तुम्हें इत्तला कर देनी चाहिए।"

"मैं बहुत आभारी हूं। क्या आज रात मैं वहां पहुंच सकती हूं ?"

"मुझे नहीं लगता कि हेनरीटा तुम्हें जाने देगी," बैंटलिंग बोला, "वह चाहती

है कि तुम आज उसके पास रुको। मैं टाउशेट के आदमी से कह आया था कि मुझे आज तार से खबर कर दे। घण्टा-भर पहले क्लब में उसका तार मिला है। 'खामोश और आराम से', बस इतना ही उसमें लिखा। तार दो बजे मिला है, इसलिए तुम कल तक इन्तज़ार कर सकती हो। तुम बहुत-बहुत थक गई होगी।"

"हां मैं बहुत थक गई हूं। फिर एक बार धन्यवाद।"

"ओह," मिस्टर बैंटलिंग बोला, "हमें पता था यह अन्तिम समाचार तुम्हें अच्छा लगेगा।" इससे इज़ाबेल को अस्पष्ट-सा आभास हुआ कि आखिर हेनरीटा और वह कहीं सहमत है। मिस स्टैकपोल इज़ाबेल की नौकरानी के साथ लौट आई, जिसने उसे अपनी उपयोगिता प्रमाणित करने की प्रक्रिया में धर पकड़ा था। वह बेचारी भीड़ में गुम न होकर अपनी मालकिन का सामान उतरवाने में लगी थी, जिससे इज़ाबेल अब जब चाहे स्टेशन से बाहर जा सकती थी। "तुम्हें आज रात देहात में जाने की बात नहीं सोचनी है," हेनरीटा ने उससे कहा, "कोई गाड़ी मिलती है या नहीं, इस चिन्ता में पड़ने की ज़रूरत नहीं। तुम सीधे मेरे साथ विम्पोल स्ट्रीट चल रही हो। लन्दन में इस समय रहने को कहीं एक कोना नहीं मिल सकता। फिर भी मैंने तुम्हारे लिए इन्तज़ाम कर रखा है। कोई रोमन महल तो नहीं है, पर एक रात वहां काटी जा सकती है।"

"तुम जैसा कहो," इज़ाबेल बोली।

"बस तुम्हें चलकर कुछ सवालों का जवाब देना है।"

"यह डिनर की तो कोई बात नहीं कर रही न, मिसेज़ ऑसमण्ड ?" मिस्टर बैंटलिंग ने मज़ाक के लहजे में पूछा।

हेनरीटा पल-भर जायज़ा लेती नज़र से बैंटलिंग को ताकती रही। "लगता है तुम्हें बहुत भूख लगी है। कल सुबह दस बजे तुम पैडिंग्टन स्टेशन पर पहुंच जाना।"

"मेरे लिए आने की ज़रूरत नहीं मिस्टर बैंटलिंग," इज़ाबेल बोली।

"यह मेरे लिए आएगा"' हेनरीटा इज़ाबेल को कैब की तरह ले जाती हुई बोली। बाद में विम्पोल स्ट्रीट के बड़े-से अन्धेरे पार्लर में—डिनर तब तक उसने इज़ाबेल को खिला दिया था—उसने वे सब सवाल पूछने शुरू किए जिनका उसने स्टेशन पर ज़िक्र किया था। पहला सवाल था, "तुम्हारे पति ने तुम्हारे आने में कोई अड़चन तो नहीं डाली ?"

"नहीं…अड़चन डाली हो, ऐसा मैं नहीं कह सकती।"

"उसने एतराज भी नहीं किया ?"

"एतराज़ उसने बहुत किया—पर इसे तुम अड़चन डालना नहीं कह सकतीं।"

"तो तुम इसे क्या कहोगी ?"

"बहुत आराम से हुई बातचीत।"

हेनरीटा पल-भर उसकी ओर देखती रही। फिर बोली, "बहुत तकलीफ-देह रही होगी वह ?" इज़ाबेल ने इससे इन्कार नहीं किया। पर हेनरीटा के सवालों का जवाब देने से आगे वह नहीं बढ़ी। जवाब देना आसान था, क्योंकि सवाल बहुत निश्चित थे। फिलहाल अपनी तरफ से कोई सूचना हेनरीटा को नहीं दी। हेनरीटा ने आखिर कहा, "मुझे सिर्फ एक चीज़ पर एतराज़ है। तुमने पैंज़ी को यह वचन क्यों दिया कि तुम वापस आओगी ?"

"मुझे अब खुद नहीं समझ आ रहा कि क्यों," इज़ाबेल बोली, "पर तब मैंने उसे यह वचन दिया ज़रूर था।"

"तुम्हें कारण याद नहीं आ रहा तो शायद अब तुम वापस नहीं जाना चाहोगी।"

इज़ाबेल पल-भर चुप रही। "शायद मुझे कोई और कारण मिल जाए।"

"तो वह अच्छा कारण नहीं होगा।"

"और कोई कारण न मिले, तो मेरा वचन दे आना ही कारण हो सकता है," इज़ाबेल ने कहा।

"हां, इसीलिए तो मुझे इससे घृणा है।"

"इस समय इस बात को छोड़ो। मेरे पास समय बहुत थोड़ा है। पहले आने में ही इतनी उलझन हुई है। अब वापस जाने में जाने क्या होगा ?"

"आखिर यह तो तुम जानती ही हो कि वह बेचारा कोई अड़चन नहीं डालेगा," हेनरीटा अर्थपूर्ण ढंग से बोली।

"वह ज़रूर अड़चन डालेगा," इज़ाबेल ने गम्भीर भाव से उत्तर दिया, "और वह अड़चन क्षणिक नहीं होगी। मेरी आगे की पूरी ज़िन्दगी के लिए होगी।"

कुछ मिनट वे दोनों चुप बैठी बात के इस अंश के बारे में सोचती रहीं। फिर मिस स्टैकपोल ने, इज़ाबेल की इच्छा के अनुसार, विषय बदलने के लिए सहसा कहा, "मैं लेडी पैन्सिल के यहां कुछ दिन रह आई हूं।"

"तो आखिर तुम्हें निमन्त्रण मिल गया !"

"हां, पांच साल लगे। पर इस बार वह स्वयं मुझसे मिलना चाहती थी।"

"हां, यह तो स्वाभाविक ही है।"

"तुम जितना समझती हो, उससे यह कहीं अधिक स्वाभाविक था," हेनरीटा दूर के किसी बिन्दु पर आंखें टिकाए बोली। फिर एकाएक मुड़कर उसने कहा, "इज़ाबेल आर्चर, मुझे तुमसे क्षमा मांगनी है। जानती हो क्यों ? मैं तुम्हारी तो आलोचना करती रही, और स्वयं तुमसे भी आगे बढ़ गई हूं ! मिस्टर ऑसमण्ड का जन्म तो कम-से-कम अमरीका में हुआ था।"

इज़ाबेल को उसका अभिप्राय समझने में एक पल लग गया। हेनरीटा ने इस अभिप्राय को कैसे विनम्र और चतुरतापूर्ण आवरण में प्रस्तुत किया था ! उस समय इज़ाबेल का मन स्थितियों के विनोदमय रूप की ओर बिल्कुल नहीं था। फिर भी हेनरीटा के प्रस्तुत किए चित्र पर वह सहसा हंस दी। पर तुरन्त ही उसने अपने पर अधिकार पा लिया और उचित गम्भीरता के साथ पूछ लिया, "हेनरीटा स्टैकपोल, तो क्या तुम अपना देश छोड़ने जा रही हो ?"

"हां, माई डियर इज़ाबेल ! मैं झूठमूठ इन्कार नहीं करूंगी। स्थिति जो भी है, अब सामने है, मैं मिस्टर बैंटलिंग से ब्याह करके यहीं लन्दन में रहने जा रही हूं।"

"बहुत अजीब बात लगती है," इज़ाबेल अब मुस्करा दी।

"तुम्हें ज़रूर लग रही होगी, पर मैं धीरे-धीरे यहां तक पहुंची हूं। मुझे पता है मैं क्या कर रही हूं, हालांकि मैं ठीक से इसकी व्याख्या नहीं कर सकती।"

"अपने ब्याह की व्याख्या कोई नहीं कर सकता," इज़ाबेल बोली, "और तुम्हें भी करने की ज़रूरत नहीं है। मिस्टर बैंटलिंग कोई पहेली नहीं है।"

"नहीं, न तो वह एक बुरा-सा श्लेष है, और न ही अमरीकन हास्य की ऊंची उड़ान। उसका स्वभाव बहुत अच्छा है," हेनरीटा कहती रही। "मैं बहुत सालों से उसे देख रही हूं, और उसे अन्दर तक समझती हूं। वह उतना ही स्पष्ट है, जितनी एक अच्छे प्रोस्पैक्टस की शैली। वह स्वयं साहित्यिक नहीं है, पर दूसरों में इस गुण की सराहना करता है। पर वह इसे बहुत बढ़ा-चढ़ाकर भी नहीं देखता, जैसा कि हम लोग अमरीका में करते हैं।"

"तुम सचमुच बदल गई हो," इज़ाबेल बोली, "मैं पहली बार तुम्हारे मुंह से अमरीका के खिलाफ बात सुन रही हूं।"

"मैं सिर्फ इतना ही कह रही हूं कि हम लोग मानसिकता को बहुत महत्त्व देते हैं। यह बेहूदा दोष नहीं है। पर मैं बदल जरूर गई हूं। ब्याह करने के लिए एक स्त्री को बहुत बदलना पड़ता है।"

"मुझे आशा है तुम खुश रहोगी। आखिरकार तुम यहां के जीवन को अन्दर से देख सकोगी।"

हेनरीटा ने एक अर्थपूर्ण उसांस ली। "यही वास्तव में रहस्य की कुंजी है। बाहर रहना मुझे सहन नहीं था। अब मुझे अन्दर जा सकने का पूरा अधिकार होगा," वह सहज उत्साह के साथ बोली।

इज़ाबेल का मन थोड़ा बहल गया था, पर इससे भी उसके मन में विषाद भर आया था। आखिर हेनरीटा भी एक साधारण व्यक्ति, एक साधारण स्त्री, प्रमाणित हुई—वह हेनरीटा जिसे वह आज तक एक तेज़ शोला समझती रही थी, एक शरीरहीन आवाज़। यह निराशा की बात थी कि उसमें भी अपनी व्यक्तिगत कमज़ोरियां थीं, और सामान्य भावनाएं उसे भी छा सकती थीं। मिस्टर बैंटलिंग के साथ उसकी घनिष्ठता में—उससे ब्याह करने की उसकी चाह में—ऐसा कुछ भी नहीं था जो सर्वथा मौलिक हो। बल्कि यह एक मूर्खतापूर्ण कार्य लगता था। पल-भर के लिए इज़ाबेल के मन में संसार की सारहीनता का रंग गाढ़ा हो गया। कुछ देर बाद उसने सोचा कि कम-से-कम मिस्टर बैंटलिंग में ज़रूर कुछ मौलिकता है। पर हेनरीटा अपना देश कैसे छोड़ देगी, यह उसे समझ नहीं आ रहा था। वह स्वयं उस तरह की पकड़ से निकल आई थी—पर वह देश उसके लिए उतना अपना नहीं था, जितना हेनरीटा के लिए। उसने अब हेनरीटा से पूछा कि लेडी पैंसिल के यहां रहकर उसे कैसे लगा।

"बहुत अच्छा लगा," हेनरीटा बोली। "उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि किस तरह मेरा मनोरंजन करे।"

"यही क्या तुम्हें बहुत अच्छा लगा?"

"बिल्कुल। कहने को उसे बहुत प्रतिभावान् कहा जाता है। वह भी समझती है कि वह सब कुछ जानती है। पर मेरे जैसी आज के जमाने की स्त्री को वह बिल्कुल नहीं समझती। मैं इससे कुछ अच्छी या कुछ बुरी होती, तो उसके लिए समझना आसान होता। वह ऐसे उलझन में पड़ गई थी कि बस! वह शायद समझती है कि मेरे जैसी स्त्री को कोई-न-कोई अनैतिक काम करना ही चाहिए। मैं उसके

भाई से विवाह करूं, इसे भी वैसे वह अनैतिक ही समझती है, पर उतना अनैतिक नहीं। मैं किन तत्वों से बनी हूं, यह वह कभी नहीं समझ पाएगी—कभी नहीं।"

"तब तो उसमें अपने भाई जितनी समझदारी नहीं है," इज़ाबेल बोली, "क्योंकि वह तुम्हें समझ गया है।"

"कहां समझ गया है ?" मिस स्टैकपोल ने निश्चित स्वर में कहा। "मैं समझती हूं कि वह मुझसे इसीलिए ब्याह करना चाहता है कि वह मेरे रहस्य और उसके अनुपात को समझ सके। यह बात उसके दिमाग में जमी है, और इसीका उसे आकर्षण है।"

"तुम इसे बढ़ावा देकर बहुत अच्छा कर रही हो।"

"खैर," हेनरीटा बोली, "मैं भी तो कुछ जानना चाहती हूं।" और इज़ाबेल को लगा कि हेनरीटा ने अपना देश-प्रेम छोड़ा नहीं, बल्कि वह दूसरी तरह से आक्रमण करने की सोच रही है। वह इंग्लैण्ड से ठीक से लोहा लेना चाहती है।

पर अगले दिन दस बजे मिस स्टैकपोल और मिस्टर बैंटलिंग के साथ पैडिंग्टन स्टेशन पर खड़े-खड़े इज़ाबेल को लगा कि बैंटलिंग अपनी उलझन को बहुत हल्के ढंग से ले रहा है। वह अगर सब कुछ नहीं जान चुका था, तो यह बड़ी बात तो कम-से-कम जान ही गया था कि मिस स्टैकपोल में कार्यशीलता की कमी नहीं है। यह स्पष्ट था कि पत्नी का चुनाव करते हुए उसने उस तरह के दोष से विशेष रूप से बचना चाहा था।

"हेनरीटा ने मुझे बता दिया है, और मुझे जानकर बहुत खुशी हुई है," इज़ाबेल ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा।

"मुझे पता है कि तुम्हें यह बहुत अजीब लग रहा होगा," मिस्टर बैंटलिंग ने अपने छाते का सहारा लिए हुए कहा।

"हां, अजीब तो मुझे बहुत लग रहा है।"

"पर उतना नहीं जितना मुझे लग रहा है। पर मुझे लाइन से हटकर चलना अच्छा लगता है," मिस्टर बैंटलिंग ने गम्भीर स्वर में कहा।

५४

इज़ाबेल दूसरी बार पहली बार से भी ज़्यादा खामोशी के साथ गार्डनकोर्ट पहुंची। रैल्फ टाउशेट ने घर में उतना आडम्बर नहीं रखा था, और नये नौकरों के लिए मिसेज़ ऑसमण्ड अजनबी थी। उसे सीधे उसके अपार्टमेंट में नहीं ले जाया गया। उसे ड्राइंग रूम में बैठाकर उसकी आंट के पास उसका नाम भेज दिया गया। वह बहुत देर प्रतीक्षा करती रही—मिसेज़ टाउशेट ने आने में जरा भी जल्दी नहीं दिखाई। वह बैठे-बैठे अधीर हो उठी। कुछ ऐसा भय और घबराहट उसपर छा गई जैसे कि उसके आस-पास की वस्तुएं सजीव हो उठी हों, और बीभत्स ढंग से मुंह बनाती हुई उसे इस परेशानी में देख रहीं हो। दिन अंधेरा और ठंडा था। बड़े-बड़े भूरे कमरों के कोनों में गहरा झुटपुटा-सा था। घर बिल्कुल खामोश था। इज़ाबेल को इस खामोशी की याद थी। उसके अंकल की मृत्यु के कई दिन पहले यह खामोशी सारे घर में छा गई थी। वह ड्राइंग रूम से निकलकर इधर-उधर घूमने लगी। घूमती हुई लाइब्रेरी में चली गई, फिर तसवीरों वाली गैलरी में। वहां की खामोशी में उसे अपने पैरों की गूंज सुनाई देती रही। वहां बदला कुछ नहीं था। बरसों पहले जो कुछ वहां देख रखा था, वह सब वैसा ही था—जैसे कि वह अभी कल ही वहां खड़ी रही हो। उसे उन बहुमूल्य वस्तुओं से स्पर्धा होने लगी जो कि समय के साथ ज़रा नहीं बदलतीं, बल्कि और मूल्यवान् हो जाती हैं—जबकि उनके मालिक एक-एक इंच करके अपना यौवन, सुख और सौन्दर्य खो देते हैं। उसे अहसास हुआ कि आज वह यहां वैसे ही घूम रही है, जैसे उसकी आंट उस दिन उनके घर में घूम रही थी, जब वह ऐलबेनी में उससे मिलने आई थीं। तब से वह कितना बदल गई थी—तब तो अभी शुरूआत ही हुई थी। सहसा उसे लगा कि आंट लिडिया यदि उस दिन वहां न आतीं और उसे उस तरह अकेली बैठे न देखतीं, तो शायद सब कुछ आज से भिन्न होता। उसका जीवन और तरह का होता, और शायद वह अधिक सुखी होती। गैलरी में वह एक छोटे-से चित्र के सामने रुक गई और देर तक उसकी आंखें उसपर टिकी रहीं। पर वह चित्र को नहीं देख रही थी। सोच रही थी कि उसकी आंट उस दिन एलबेनी न आई होतीं तो क्या उसने कैस्पर गुडवुड से ब्याह किया होता ?

इज़ाबेल जब लौट कर बड़े-से खाली ड्राइंग रूम में पहुंची, तभी मिसेज़

टाउशेट वहां दाखिल हुईं। वे पहले से बहुत बूढ़ी नज़र आ रही थीं, पर उनकी आंखों में उतनी ही चमक थी और गरदन भी उसी तरह तनी थी। उनके पतले होंठ निहित अर्थों का आधार स्थल जैसे लगते थे। वे बहुत सादा फैशन की भूरी पौशाक पहने थीं। पहली बार की तरह इस बार भी इज़ाबेल को आश्चर्य हुआ कि उसकी आंट ज़्यादा एक महारानी से मिलती हैं, या एक जेल की एक मैट्रन से। अपने गर्म गाल को छूते उनके होंट उसे बहुत ही पतले जान पड़े।

"मुझे आने में देर हो गई क्योंकि मैं रैल्फ के पास बैठी थी," मिसेज़ टाउशेट बोलीं। "नर्स लंच के लिए गई थी, और उसकी जगह मैं वहां पर थी। वैसे उसकी देख-भाल करने के लिए एक आदमी भी है, पर वह बहुत ही निकम्मा है। वह हमेशा खिड़की से बाहर देखता रहता है, जैसे कि वहां सचमुच कुछ देखने को हो। मैं हिलना नहीं चाहती थी, क्योंकि लग रहा था रैल्फ को नींद आ गई है, और मैं किसी तरह की आवाज़ से उसकी नींद में बाधा नहीं डालना चाहती थी। अब नर्स लौटी है, तो मैं इधर आई हूं। मुझे पता था कि घर तुम्हारे लिए नया नहीं है।"

"मैं जितना समझती थी, उससे यह मुझे कहीं अधिक परिचित लग रहा है। मैं सब जगह घूम आई हूं," इज़ाबेल ने कहा। फिर उसने पूछ लिया, "क्या रैल्फ को काफी नींद आ जाती है?"

"वह आंखें मूंदे पड़ा रहता है। हिलता-डुलता बिल्कुल नहीं। पर मैं यह नहीं कह सकती कि वह हर समय सोया रहता है।"

"मैं उससे मिल लूं? वह मुझसे बात कर सकता है?"

मिसेज़ टाउशेट ने कहा कि वे कह नहीं सकतीं। "तुम कोशिश कर सकती हो," ज़्याया-से-ज़्यादा वे इस सीमा तक ही जा सकीं। फिर उन्होंने इज़ाबेल से कहा कि वे उसे उसके कमरे में ले चलती है। "मेरा ख्याल था ये लोग तुम्हें तुम्हारे कमरे में ले गए होंगे। पर यह मेरा घर नहीं है, रैल्फ का है। ये लोग क्या करते हैं, पता नहीं। कम-से-कम तुम्हारा सामान तो इन्हें पहुंचा ही देना चाहिए था। तुम्हारे साथ ज़्यादा सामान तो होगा नहीं। और हो भी तो क्या है? मेरा ख्याल है तुम्हें तुम्हारा पहले वाला कमरा ही दिया जा रहा है। तुम्हारे आने की सूचना पाकर रैल्फ ने कहा था कि वही कमरा तुम्हें दिया जाना चाहिए।"

"उसने और भी कुछ कहा था?"

"नहीं माई डियर! वह अब पहले की तरह बक-झक नहीं कर पाता," कह-

कर मिसेज़ टाउशेट इज़ाबेल के आगे-आगे ज़ीना पार करने लगीं।

वही कमरा था। जाने क्यों इज़ाबेल को लगा कि उसके जाने के बाद कभी कोई उसमें नहीं रहा। उसका सामान वहां पहुंच चुका था। सामान ज़्यादा नहीं था, मिसेज़ टाउशेट सामान को देखती हुई पल-भर के लिए बैठ गई, तो इज़ाबेल ने पूछ लिया, "क्या सचमुच अब कोई आशा नहीं है ?"

"बिल्कुल नहीं है। कभी थी ही नहीं। उसकी जिन्दगी बहुत अच्छी नहीं रही।"

"पर बहुत सुन्दर रही है", इज़ाबेल ने अपने को अभी से अपनी आंट का विरोध करते पाया। उनके रूखे लहज़े से उसे उलझन हो रही थी।

"तुम्हारा मतलब मैं नहीं समझ पा रही हूं। स्वास्थ्य के बिना कहीं सौन्दर्य नहीं होता···सफर के लिए यह पोशाक अच्छी नहीं है।"

इज़ाबेल ने अपने कपड़ों की तरफ देखा। "मैं एक घंटे में तैयार होकर रोम से चल पड़ी थी। मैं पहली गाड़ी पकड़कर वहां से आई हूं।"

अमरीका में तुम्हारी बहनें पूछ रही थीं कि तुम कैसे कपड़े पहनती हो। उनकी मुख्य दिलचस्पी इसी बात में थी। मैं उन्हें कुछ नहीं बता सकी, पर उनका विचार ठीक था। वे कहती थीं कि तुम काले ब्रोकेड से कम कुछ नहीं पहनती होगी।"

"वे मेरी योग्यता को बढ़ाचढ़ा कर देखती हैं, और मैं उन्हें सच बात बता नहीं सकती", इज़ाबेल बोली। " लिली ने मुझे लिखा था कि आप उसके यहां खाना खाने गई थी।"

"उसने चार बार बुलाया, तब कहीं मैं एक बार गई थी। उसे चाहिए था कि दो बार से ज़्यादा मुझसे न कहती। डिनर अच्छा था—उस पर काफी खर्च हुआ होगा। पर उसके पति का तौर-तरीका अच्छा नहीं है। मुझे अमरीका में रहकर अच्छा लगा ? अच्छा क्यों लगता ? मैं मज़ा लेने के लिए तो वहां गई नहीं थी।"

बातें काफी रोचक थीं, पर शीघ्र ही मिसेज़ टाउशेट यह कहकर चली गई कि आधे घंटे बाद दोपहर के खाने के वक्त वे उससे मिलेंगी। उस अवसर पर उदास डाइनिंग रूम में छोटी-सी टेबल पर वे आमने-सामने बैठीं। यहां थोड़ी देर बाद इज़ाबेल को लगा कि उसकी आंट उतनी रूखी नहीं हैं। उस महिला की अभिव्यक्ति की असमर्थता, अपनी खेद-भावना और निराशा को प्रकट कर सकने की असमर्थता को लेकर पहले की-सी दया उसके मन में उमड़ आई। आज यदि वह स्त्री अपनी

पराजय, अपनी गलती, या किसी बात की लज्जा महसूस कर सकती, तो शायद उसे यह एक वरदान-सा लगता। मिसेज़ टाउशेट को जैसे आभास हो रहा था कि चेतना की वह समृद्धि उनके हाथ नहीं लगी, और शायद एक डिनर के बचे-खुचे टुकड़े उठाकर बाद का स्वाद लेने की तरह—वे कहीं अन्दर से कोशिश कर रही थीं कि दुःख की साक्षी या पश्चाताप के ठंडे सुख का वे अनुभव कर सकें। पर साथ ही उन्हें डर भी था, कि पश्चाताप से यदि उनका परिचय हो गया, तो वे उसमें कहीं बहुत दूर तक न चली जाएं। इज़ाबेल देख रही थी कि अपनी असफलता की धुंधली छाया उनपर घिर आई है, और वे भविष्य में अपने को एक ऐसी बूढ़ी स्त्री के रूप में देख रही हैं, जिसके पास कोई स्मृतियां नहीं हैं। उनका छोटा-सा नुकीला चेहरा दुःख से अभिभूत नज़र आ रहा था। उन्होंने इज़ाबेल को बताया कि रैल्फ अब तक उसी तरह पड़ा है, पर हो सकता है डिनर से पहले वह उससे मिल सके। फिर क्षण-भर बाद उन्होंने कहा कि लॉर्ड वारबर्टन परसों वहां आया था। यह जैसे इज़ाबेल को इस बात की चेतावनी देने के लिए था कि वह संभ्रान्त व्यक्ति वहां से दूर नहीं है, और संयोगवश उन दोनों की मुलाकात हो सकती है। इज़ाबेल ऐसे अवसर से बचना चाहती थी—वह लार्ड वारबर्टन के साथ फिर से उसी संघर्ष में पड़ने के लिए इंग्लैण्ड नहीं आई थी। पर उसने अपनी आंट से इतना ही कहा कि रैल्फ के लिए लार्ड वारबर्टन के मन में बहुत कोमल भावना है और कि रोम में वह यह बात देख चुकी है।

"आजकल उसका ध्यान दूसरी तरफ है," मिसेज़ टाउशेट बोलीं। फिर पल-भर वे चुभती नज़र से उसे देखती रहीं। इज़ाबेल को लगा कि बात में कहीं एक संकेत है और उस संकेत को समझते उसे देर नहीं लगी। पर अपनी बात से उसने यह प्रकट नहीं होने दिया। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था, और वह पल-भर का अवकाश चाहती थी। "हां, हां, हाऊस आफ् लार्ड्स है और जाने कितना कुछ है।"

"वह लार्ड्स के बारे में नहीं लेडीज के बारे में सोच रहा है। कम-से-कम एक के बारे में तो सोच ही रहा है। उसने रैल्फ को बताया था कि उसकी सगाई हो गई है।"

"तो वह ब्याह कर रहा है!" इज़ाबेल के मुंह से निकल पड़ा।

"हां, अगर उसने सगाई तोड़ न दी तो। उसका ख्याल था कि रैल्फ को उसे

बता देना चाहिए। रैल्फ शादी में ता जा नहीं सकेगा। मेरा ख्याल है शादी अब जल्दी ही होने वाली है।"

"वह कौन है जिससे वह शादी कर रहा है?"

"उसके अपने वर्ग की ही एक स्त्री है—पता नहीं, लेडी फ्लोरा या लेडी फेलीशिया या कौन।"

"मुझे बहुत खुशी है," इज़ाबेल बोली। "यह फैसला एक दम ही हुआ होगा।"

"हां एक दम ही। कुल तीन सप्ताह उनकी कोर्टशिप चली। इसकी घोषणा उन्होंने हाल ही में की है।"

"मुझे खुशी है," इज़ाबेल ने और भी ज़ोर देकर कहा। उसे पता था कि उसकी आंट उसे देख रही हैं—उसके शब्दों में कहीं अन्तर्हित कटुता ढूंढ़ना चाहती हैं। इस इच्छा से कि मिसेज टाउशेट को ऐसा कुछ देखने का अवसर न मिले, वह जल्दी से ऐसे स्वर में बोली थी जिसमें सन्तोष, बल्कि सुख की झलक थी। मिसेज टाउशेट का इस धारणा में विश्वास था कि स्त्रियां अपना विवाह हो जाने पर भी, अपने पहले के प्रेमी के विवाह की बात को अपनी अवहेलना समझती हैं। इसलिए इज़ाबेल का पहला प्रयत्न यह प्रकट करने का था कि साधारणतया यह बात चाहे सच हो, पर उसे इस समाचार से ऐसा कुछ नहीं लग रहा। पर इस बीच उसका दिल ज़्यादा तेज़ी से धड़कने लगा था। वह कुछ क्षण मिसेज टाउशेट की कही बात को भूलकर विचारमग्न-सी हो रही, पर इसका कारण एक प्रेमी को खो देना नहीं था। उसकी कल्पना आधा यूरोप लांघकर हांफती और कुछ-कुछ कांपती हुई शहर रोम में जा रुकी थी। वहां वह जैसे अपने पति के सामने पहुंचकर इस बात की घोषणा कर रही थी कि लार्ड वारबर्टन अपनी दुलहिन को लेकर गिरिजाघर में जाने वाला है। उसे अहसास नहीं था कि ऐसा बौद्धिक प्रयत्न करते समय वह कितनी पीली पड़ जाती। आखिर उसने अपने को संभाला और अपनी आंट से कहा, "कभी-न-कभी तो उसे ब्याह करना ही था।"

मिसेज़ टाउशेट पहले चुप रही, फिर अपने सिर को हल्का-सा झटका देकर सहसा बोली, "न, तुमसे मैं पार नहीं पा सकती।" इसके बाद वह चुपचाप लंच खाती रही। इज़ाबेल को लग रहा था जैसे किसी ने उसे लार्ड वारबर्टन की मृत्यु की सचना दे दी हो। उसने उस व्यक्ति को एक विवाह प्रार्थी के रूप में ही जाना

था, और अब वह किस्सा समाप्त हो गया था। अब वह पैंज़ी के लिए भी मर चुका था—पैंज़ी को पाकर शायद वह जी जाता। एक नौकर वहां आसपास घूम रहा था। मिसेज़ टाउशेट ने आखिर उससे कहा कि वह उन्हें अकेला छोड़ दे। वे खाना समाप्त कर चुकी थीं और दोनों हाथों को उलझाकर मेज़ के कोने पर रखे थीं। "मैं तुमसे तीन सवाल पूछना चाहती हूं," नौकर के चले जाने पर उन्होंने कहा।

"तीन सवाल तो बहुत होते हैं।"

"इससे कम में काम नहीं चलेगा। मैंने बहुत सोचा है। सवाल बहुत अच्छे हैं।"

"इसी का तो मुझे डर है। सबसे अच्छे सवाल ही सबसे बुरे होते हैं," इज़ाबेल ने कहा। मिसेज़ टाउशेट ने अपनी कुर्सी पीछे को सरका ली थी। इज़ाबेल मेज़ से उठकर कुछ चेतन भाव से दूर की एक खिड़की की तरफ बढ़ गई, पर उसे लगता रहा कि मिसेज़ टाउशेट की आंखें उसका पीछा कर रही हैं।

"लार्ड वारबर्टन से ब्याह न करने का तुम्हें कभी अफसोस हुआ है ?" मिसेज़ टाउशेट ने पूछा।

इज़ाबेल ने धीरे से, पर बिना किसी भारीपन के, सिर हिला दिया। "नहीं डियर आंट।"

"ठीक। यह मैं तुम्हें बता दूं कि मैं तुम्हारी हर बात पर विश्वास करती जाऊंगी।"

"आपका विश्वास करना मेरे लिए बहुत बड़ा प्रलोभन है," इज़ाबेल मुस्कराती हुई बोली।

"झूठ बोलने का प्रलोभन ? उसकी मैं तुम्हें सलाह नहीं दूंगी, क्योंकि मुझसे कोई झूठ बोले तो मैं ज़हर खाए चूहे की तरह खतरनाक हो उठती हूं। मैं तुम्हें लेकर ज़्यादा कांय-कांय नहीं करना चाहती।"

"मेरे पति की मेरे साथ नहीं निभ पाती," इज़ाबेल बोली।

"यह मैं उससे पहले ही बता सकती थी। तुम्हें लेकर कांय-कांय करने से मेरा यह मतलब नहीं है," मिसेज़ टाउशेट बोलीं। फिर उन्होंने पूछा, "सेरेना मरले को तुम अब भी पसन्द करती हो ?"

"पहले जितना नहीं। पर वह अमरीका जा रही है, इसलिए उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता।"

"अमरीका जा रही है? तब तो उसने कोई बहुत ही बुरा काम किया होगा।"

"बहुत-बहुत बुरा।"

"मैं पूछ सकती हूं उसने क्या किया है?"

"उसने मुझे अपनी सुविधा के लिए इस्तेमाल किया है।"

"ओह!" मिसेज़ टाउशेट बोलीं। "यह तो उसने मुझे भी किया है, और हर एक को करती है।"

"अब वह अमरीका को भी इस्तेमाल करेगी," इज़ाबेल फिर मुस्कराई। उसे खुशी थी कि उसके आंट के सवाल खत्म हो गए हैं।

शाम तक उसकी रैल्फ से भेंट नहीं हुई। दिन-भर रैल्फ बेहोशी में ऊंघता पड़ा रहा था। कुछ देर डाक्टर उसके पास था, पर बाद में चला गया था। यह वही स्थानीय डाक्टर था, जो उसके पिता का भी इलाज करता रहा था, और जिसे रैल्फ पसन्द करता था। वह दिन में तीन-चार बार आता था—अपने मरीज़ से उसे बहुत लगाव था। सर मैथ्यू होप ने भी रैल्फ को देखा था, पर रैल्फ ने उस विख्यात डाक्टर से तंग आकर अपनी मां से कहा था कि उसे यह सूचना भेज दी जाये कि वह चल बसा है, और कि उसे अब किसी तरह की डाक्टरी सहायता की आवश्यकता नहीं। मिसेज़ टाउशेट ने सर मैथ्यू को इतना ही लिखा था कि उनका बेटा उनसे इलाज नहीं करवाना चाहता। जिस दिन इज़ाबेल आई उस दिन कई घंटे रैल्फ संचेत नहीं हुआ। पर शाम के करीब उसने सिर उठाकर कहा कि उसे इज़ाबेल के आने का पता है। उसे कैसे पता चला, यह स्पष्ट नहीं हुआ। वह उत्तेजित न हो उठे, इसलिये यह बात उसे किसी ने बताई नहीं थी। इज़ाबेल उसके बिस्तर के पास आकर मद्धिम रोशनी में बैठ गई—कमरे में सिर्फ एक ही ढकी हुई मोमबत्ती जल रही थी। नर्स को उसने यह कहकर भेज दिया कि बाकी शाम वह स्वयं वहां बैठेगी। रैल्फ ने आंखे खोलीं और उसे पहचान लिया। असमर्थ-सा पड़ा उसका हाथ, हल्के से हिला कि इज़ाबेल उसे पकड़ ले। मुंह से वह कुछ नहीं बोल सका। उसकी आंखे फिर से मुंद गईं और इज़ाबेल का हाथ अपने हाथ में लिये वह बिल्कुल निश्चल पड़ा रहा। इज़ाबेल देर तक उसके पास बैठी रही—यहां तक कि नर्स वापस भी आ गई, पर रैल्फ और नहीं हिला-डुला उसी तरह पड़े-पड़े उसके प्राण भी निकल सकते थे—मृत्यु की छाया अभी से उस

पर।घर आई थी। यूं तो रोम में ही उसकी हालत काफी खराब लगती थी, पर अब वह और भी बदतर हो गई थी। उसके बाद अब केवल एक ही परिवर्तन सम्भव था। उसके चेहरे को एक विचित्र शान्ति ढके थी, जैसे कि वह किसी बक्से का ढकना हो। शेष केवल हड्डियों का ढांचा था। इज़ाबेल के अभिवादन के लिये जब उसने आंखे खोलीं थीं, तो इज़ाबेल को लगा था जैसे वह अनन्त शून्य में देख रही हो। नर्स को वापस आने में आधी रात हो गई थी, पर इज़ाबेल को समय उतना लम्बा नहीं लगा था। इसीलिये तो वह वहां आई थी। इज़ाबेल को यदि प्रतीक्षा ही करनी थी, तो उसका उसे पर्याप्त अवसर मिल गया। तीन दिन तीन रातें रैल्फ एक कृतज्ञतापूर्ण खामोशी में पड़ा रहा। वह उसे पहचान रहा था, और कभी-कभी बोलना भी चाहता था, पर उसके मुंह से आवाज़ नहीं निकलती थी। तब वह फिर से आंखें मूंद लेता, जैसे कि वह भी प्रतीक्षा कर रहा हो—एक ऐसे वक्त की जिसका कि आना निश्चित था। वह इतना खामोश था कि इज़ाबेल को लग रहा था आने वाला समय आ चुका है। फिर यह चेतना उसके मन में थी कि वे दोनों साथ-साथ हैं। पर सारा समय वे साथ-साथ नहीं होते थे। बहुत-सा समय वह खाली घर में घूमते हुए, और रैल्फ की आवाज़ के अतिरिक्त एक और आवाज़ सुनते हुए बिताती थी। उसे हर वक्त डर लगता रहता था, कि उसके पति का कोई पत्र न आ जाये। पर ऑसमण्ड ने उसे कुछ नहीं लिखा—केवल फ्लोरेंस से कांउटेस जैमिनी का एक पत्र उसे आया। तीसरे दिन की शाम को आखिर रैल्फ ने मुंह खोला।

"आज मैं बेहतर हूं," वह सहसा बुदबुदाया। वह उस समय चुपचाप अंधेरे में उसके पास चौकसी के लिये बैठी थी। "मुझे लगता है मैं कुछ बात कर सकता हूं।" इज़ाबेल उसके तकिये के पास घुटनों के बल बैठ गई और बोली कि वह ऐसा प्रयत्न करके अपने को थकाये नहीं। रैल्फ का चेहरा मजबूरन गम्भीर था—मुस्कराहट लाने की शक्ति उसकी मांस-पेशियों में नहीं रही थी। पर इस स्थिति में भी असंगतियों को समझने की रैल्फ की शक्ति गुम नहीं हुई थी। "थका हूं तो क्या हुआ, अब अनन्तकाल तक मुझे विश्राम ही तो करना है। बिल्कुल अंतिम बार प्रयत्न कर लेने में कोई हानि नहीं है। मृत्यु से पहले क्या लोग थोड़ा बेहतर नहीं महसूस करने लगते? मैंने अक्सर ऐसा सुना है और इसीकी मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं—तुम्हारे आने के बाद से ही कर रहा हूं। दो-तीन बार मैंने कोशिश भी की

है। मुझे डर था कि यहां बैठी-बैठी तुम थक न जाओ।" वह धीरे-धीरे बोल रहा था—इस तरह रुक-रुककर और तोड़-तोड़ कर कि वह बहुत दर्दनाक लगता था। लगता था जैसे उसकी आवाज़ दूर से आ रही हो। जब वह चुप हुआ, तो उसका चेहरा इज़ाबेल की तरफ था और उसकी बड़ी-बड़ी अपलक आंखें इज़ाबेल की आंखों में देख रही थी। "तुमने अच्छा किया जो आ गई," वह फिर बोला। "मेरा ख्याल था तुम आओगी, पर मैं निश्चित नहीं था।"

"मैं भी निश्चित नहीं थी। जब तक कि आ ही नहीं गई," इज़ाबेल बोली।

"तुम एक फ़रिश्ते की तरह मेरे बिस्तर के पास बैठी हो। तुम्हें पता है न लोग मौत के फ़रिश्ते की बात करते हैं। वह सबसे सुन्दर होता है। तुम उसी की तरह हो—जैसे कि तुम मेरी प्रतीक्षा कर रही हो।"

"मैं तुम्हारी मृत्यु की प्रतीक्षा नहीं कर रही थी। मैं—मैं प्रतीक्षा कर रही थी, इस क्षण की। यह मृत्यु नहीं है डियर रैल्फ।"

"नहीं, तुम्हारे लिये नहीं है। दूसरों को मरते देखकर अपने अन्दर जीवन का आभास व्यक्ति को सब से अधिक होता है।" यह जीवन का स्पर्श है, बचे रहने की अनुभूति। मुझे—मुझे भी यह रही है; पर अब यह अनुभूति मुझे देखकर दूसरों को ही हो सकती है। मेरे लिए सब-कुछ समाप्त हो गया है, "यह कहकर वह रुक गया। इज़ाबेल का सिर और झुक गया, यहां तक कि रैल्फ के हाथों को थामे अपने हाथों पर आ टिका। अब वह उसे देख नहीं पा रही थी, पर उसकी दूर से आती आवाज़ उसके कानों के बहुत पास आ गई थी।" इज़ाबेल, वह एकाएक कह उठा। "मैं चाहता हूं कि तुम्हारे लिये भी सब कुछ समाप्त हो गया होता।" इज़ाबेल कुछ नहीं बोली। अपना चेहरा उसी तरह गढ़ाये, वह सिसकियां भरने लगी। रैल्फ खामोश रहकर उसकी सिसकियों कि आवाज़ सुनता रहा। फिर लम्बी कराह के साथ बोला, 'ओह, यह तुमने मेरे लिये क्या किया है ?"

"और तुमने मेरे लिये क्या किया था ?" इज़ाबेल रो दी। इससे उसकी बढ़ी हुई उत्तेजना कुछ अवरुद्ध हो गई। उसे अब लाज नहीं रही थी, कुछ छिपाने की इच्छा नहीं रही थी। उसके मन में आया कि अब रैल्फ को सब—सब जान लेना चाहिये। वे अब एक दूसरे के बहुत निकट थे और रैल्फ पीड़ा की पहुंच से आगे निकल चुका था। "तुमने कभी कुछ किया था—तुम्हें पता है। रैल्फ, तुम्हीं सब कुछ रहे हो। मैंने तुम्हारे लिये क्या किया है—या आज क्या कर सकती हूं ? मैं अपनी

जान देकर भी तुम्हें बचा सकूं, तो बचा लूं। पर मैं नहीं चाहती कि तुम जीवित रहो। तुम्हें खो न दूं, इसलिये मैं स्वयं मर जाना चाहूंगी।" उसकी आवाज भी रैल्फ की तरह टूट रही थी, तथा पीड़ा और आंसुओं से रुंधी थी।

"तुम मुझे खोओगी नहीं। मुझे अपने पास रखोगी। मुझे अपने दिल में रखना। मैं अब हमेशा से कहीं ज्यादा तुम्हारे पास रहूंगा। जीवन कहीं अच्छा है इज़ाबेल, क्योंकि उसमें साथ प्यार रह सकता है। मौत भी अच्छी है—पर उसमें प्यार नहीं रह जाता।"

"मैंने कभी तुम्हें धन्यवाद नहीं दिया। मैं कभी बोली नहीं। मुझे जो होना चाहिये था, वह मैं नहीं हो सकी," इज़ाबेल कहती रही। उसके मन में यह भावना उमड़ रही थी कि वह अपने पर अभियोग लगाती हुई फूट-फूट कर रोये—अपने दुःख को अपने पर अधिकार जमा लेने दे। उसके सब कष्ट उस क्षण के लिए पिघल कर इस एक पीड़ा में परिवर्तित हो गए थे। "तुम जाने मेरे बारे में क्या सोचते रहे होगे ? पर मैं कैसे जान सकती थी ? मुझे बिल्कुल पता नहीं था। आज भी मुझे इसलिए पता है कि दुनिया में ऐसे भी लोग हैं, जो मेरे जितने मूर्ख नहीं हैं।"

"लोगों का ज़िक्र मत करो," रैल्फ बोला। लोगों को छोड़कर जाने की मुझे खुशी है।"

इज़ाबेल ने अपना सिर उठा लिया। अपने बंधे हुए हाथ भी। क्षण-भर के लिए लगा जैसे वह उसके सामने प्रार्थना कर रही हो। "यह सच है—यह सच है क्या ?" उसने पूछा।

"यह कि तुम मूर्ख रही हो ? नहीं तो," रैल्फ ने सचेत भाव से मज़ाक किया।

"कि तुमने मुझे धनवान् बनाया—कि जो कुछ मेरे पास है, वह सब तुम्हारा है ?"

रैल्फ ने सिर दूसरी तरफ कर लिया और कुछ देर चुप रहा। फिर धीरे-से उसने मुंह इज़ाबेल की तरफ कर लिया और उनकी आंखें आमने-सामने आ गईं। "उस बात का ज़िक्र मत करो।—वह अच्छा नहीं हुआ। यदि ऐसा न होता, न होता···।" वह ज़रा-सा रुका, फिर कराह उठा, "मुझे विश्वास है तुम्हारे विनाश का कारण मैं हूं।"

यह अनुभूति इज़ा बेल पर पूरी तरह छा रही थी कि रैल्फ पीड़ा की पहुंच से

परे है—कि इस दुनिया से उसका बहुत थोड़ा सम्बन्ध रह गया है। पर यह अनुभूति न होती, तो भी वह अवश्य बात करती, क्योंकि अब इस ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं था कि सत्य को वे दोनों एक साथ देख रहे हैं—और इस ज्ञान में केवल पीड़ा ही नहीं थी। "उसने पैसे के लिए मुझसे ब्याह किया था," वह बोली। वह सब कुछ कह देना चाहती थी। उसे डर था कि उसके बताने से पहले ही रैल्फ की मृत्यु न हो जाय।

रैल्फ उसे ताकता रहा, और पहली बार उसकी स्थिर पलकें नीचे को झुक गईं। पर पल-भर बाद ही उन्हें फिर उठाकर उसने कहा, "वह तुमसे बहुत प्रेम करता था।"

"हां वह मुझसे प्रेम करता था, पर मैं गरीब होती, तो वह मुझसे ब्याह न करता। मैं यह कहकर तुम्हें चोट नहीं पहुंचा रही। ऐसा मैं कैसे कर सकती हूं? मैं केवल तुम्हें बताना चाहती हूं। पहले मैं तुम्हें बताने से बचती रही हूं, पर अब सब समाप्त हो गया है"

"मुझे सब पता था," रैल्फ बोला।

"मैं यह जानती थी, और मुझे यह अच्छा नहीं लगता था। पर अब अच्छा लग रहा है।

"तुम मुझे चोट नहीं पहुंचा रहीं—बल्कि खुशी दे रही हो," यह कहते हुए खुशी की असाधारण झलक रैल्फ के स्वर में आ गई। इज़ाबेल का सिर फिर नीचे को झुक आया, और उसने अपने होंठ रैल्फ के उलटे हाथ पर रख दिए। "मुझे पता था, "रैल्फ कहता रहा।" हालांकि यह बहुत विचित्र और दुःखदायी लगता था। तुम अपनी दृष्टि से जीवन को देखना चाहती थीं, पर इसका तुम्हें अवसर नहीं मिला। तुम्हें मिला केवल अपनी उस इच्छा का दण्ड। रूढ़िगत जीवन की उसी चक्की में तुम पीस दी गई हो।"

"हां, मुझे दण्ड अवश्य मिला है," इज़ाबेल सुबकती रही।

"रैल्फ कुछ देर सुनता रहा, फिर बोला," तुम्हारे आने का उसे बहुत बुरा लगा था?"

"उसने मेरा आना लगभग असम्भव कर दिया था। पर मुझे सब चिन्ता नहीं है।"

"तो तुम लोगों का सम्बन्ध बिल्कुल समाप्त हो गया है?"

"नहीं। मुझे लगता है समाप्त कुछ भी नहीं हुआ।"

"तो तुम उसके पास वापस जा रही हो ?" रैल्फ ने पूछा।

"मैं नहीं जानती। मैं कुछ भी नहीं कह सकती। जब तक चाहूंगी मैं यहां रहूंगी। मैं कुछ सोचना नहीं चाहती—उसकी आवश्यकता भी नहीं है। तुम्हारे सिवा मुझे किसी चीज़ की चिन्ता नहीं है, और इस समय इतना ही काफी है। थोड़ा समय इसमें निकल जाएगा। यहां घुटनों के बल बैठी, तुम्हें अपनी बाहों में मरते देख कर मैं जितनी खुश हूं, उतनी एक अरसे से नहीं हो सकी। मैं चाहती हूं कि तुम भी खुश ही रहो—दुःख की कोई बात न सोचो। केवल इतना अनुभव करो कि मैं तुम्हारे पास हूं, और तुमसे प्रेम करती हूं। फिर दुःख क्यों हो ? ऐसे समय हमें दुःख से क्या लेना है ? दुःख सब से गहरी अनुभूति नहीं है—एक अनुभूति उससे भी गहरी है।"

"रैल्फ को क्षण-प्रति-क्षण बोलने में अधिक कठिनाई हो रही थी।" अपने को तैयार करने में उसे अधिक समय लेना पड़ा। पहले तो काफी देर उसने कुछ नहीं कहा, फिर केवल इतना बुदबुदाया, "तुम्हें यहीं रहना चाहिए।"

"मैं भी, जब तक उचित लगे, तब तक यहीं रहना चाहूंगी।"

"उचित लगे—उचित ?" रैल्फ ने उसके शब्दों को दोहराया। "तुम उचित अनुचित के बारे में बहुत सोचती हो"

"यह तो आदमी को सोचना ही चाहिए। तुम बहुत थक गए हो," इज़ाबेल बोली।

"हां बहुत थक गया हूं। तुमने अभी-अभी कहा था कि दुःख सब से गहरी अनुभूति नहीं है। नहीं, नहीं यह अनुभूति बहुत गहरी है। मैं अगर बच सकता, तो…।"

"मेरे लिए तुम सदा जीवित रहोगे," इज़ाबेल ने हल्के से उसकी बात काट दी। उसकी बात काटना मुश्किल नहीं था।

पर पल-भर बाद रैल्फ फिर बोला," हां, दुःख आकर चला जाता है—अब भी जा रहा है। पर प्यार बना रहता है। पता नहीं क्यों हमें इतना दुःख उठाना पड़ता है। शायद मुझे पता चल जाए। जीवन में बहुत कुछ है और तुम अभी बहुत युवा हो।"

"मैं बूढ़ी महसूस करती हूं," इज़ाबेल बोली।

"तुम फिर युवा हो जाओगी। मुझे ऐसा ही लगता है। मैं नहीं मानता—मैं

नहीं मानता—।" पर वह फिर रुक गया। उसमें बोलने कि शक्ति नहीं रही थी।

इज़ाबेल ने उससे कहा कि वह और बात न करे। "एक दूसरे को समझने के लिए हमें बात करने की ज़रूरत नहीं है," उसने कहा।

"मैं इस समय बहुत खुश हूं रैल्फ," इज़ाबेल भीगी आवाज़ में बोली।

"और याद रखो," रैल्फ कहता रहा "कि तुम्हें घृणा मिली है, तो प्यार भी मिला है—आन्तरिक प्यार।" उसके ये शब्द कठिनाई से सुनाई दिये, और सांस लम्बी होकर चलने लगी।

"ओह मेरे भाई!" इज़ाबेल और भी गहरी पस्ती के भाव से रो उठी।

५५

गार्डनकोर्ट में इज़ाबेल ने जो पहली शाम गुजारी थी, उस शाम रैल्फ ने उससे कहा था कि यदि कभी उसे काफ़ी दुःख झेलना पड़ा, तो वह जान जायेगी कि उस पुराने घर में जिस प्रेतात्मा का आभास है, वह क्या है। यह शर्त इज़ाबेल के जीवन में पूरी हो गई थी, क्योंकि अगले दिन सुबह के ठंडे-धुंधले साये में उसे लगा कि एक प्रेतात्मा उसके बिस्तर के पास खड़ी है। वह कपड़े पहने ही सो गई थी, क्योंकि उसे विश्वास था कि रैल्फ रात के अन्त तक नहीं जी सकेगा। उसका सोने को मन नहीं था। वह प्रतीक्षा कर रही थी, और यह प्रतीक्षा जाग कर ही की जा सकती थी। पर उसने आंखें मूंद रखी थीं। उसका ख्याल था कि रात बीतने से पहले ही कोई उसका दरवाज़ा खटखटायेगा। दरवाज़ा किसी ने नहीं खटखटाया, पर ज्यों ही अंधेरा हल्के प्रकाश में घुलने लगा, उसने सहसा तकिये से सिर उठा लिया, जैसे कि कहीं से उसे बुलावा आया हो। पल-भर के लिए उसे लगा कि रैल्फ उसके सामने खड़ा है। कमरे की धुन्ध में वह भी एक धुंधली आकृति की तरह है। वह पल-भर उसे ताकती रही। रैल्फ का सफेद चेहरा—उसकी कोमल आंखें—उसके सामने थीं। पर तभी उसने देखा कि कुछ भी नहीं है। वह डरी नहीं, पर उसे निश्चय अवश्य हो गया। यह निश्चय मन में लिए वह वहां से निकल पड़ी, और अन्धेरे कॉरीडोर से गुजर कर और हाल की खिड़की की धुंधली रोशनी में चमकते

अनेक के ज़ीने पर से होकर नीचे आ गई। रैल्फ के दरवाज़े के बाहर वह पल-भर रुककर सुनती रही। पर जो सुनाई दी वह थी केवल खामोशी की आवाज़। उसने हल्के हाथ से दरवाज़ा खोला, जैसे कि एक मुरदे के चेहरे से चादर हटा रही हो। मिसेज़ टाउशेट अपने बेटे के काऊच के पास स्थिर और सीधी बैठी थीं—उसका एक हाथ अपने हाथ में लिए। दूसरी तरफ डाक्टर खड़ा था, और रैल्फ की दूसरी कलाई उसकी उंगलियों में थी। दोनों नर्सें उन दोनों के बीच पैरों की तरफ खड़ी थीं। मिसेज टाउशेट ने इज़ाबेल की ओर ध्यान नहीं दिया, पर डाक्टर ने एक कड़ी नजर उस पर डाल कर आहिस्ता से रैल्फ का हाथ उसके जिस्म के बराबर ठीक से रख दिया। नर्स ने भी इज़ाबेल की तरफ कड़ी नज़र से देखा, पर, किसी के मुंह से एक शब्द नहीं निकला। पर इज़ाबेल की नज़र उसी पर थी, जिसे वह देखने आयी थी। वह चेहरा रैल्फ के जीवित चेहरे से अधिक गोरा लग रहा था। अपने पिता के उस चेहरे से वह बहुत मिलता-जुलता था जिसे छः साल पहले इज़ाबेल ने उसी तकिये पर देखा था। अपनी आंट के पास जाकर उसने बांहें उनके गले में डाल दीं। मिसेज़ टाउशेट साधारणतया किसी का दुलार नहीं चाहती थीं और न ही उससे उन्हें खुशी होती थी। पर इस समय वे समर्पण किए रहीं, और इसी भाव से जैसे उठ खड़ी हुईं। पर उनका शरीर तना हुआ था और आंखें सूखी थीं। उनका चेहरा डरावना-सा लग रहा था।

"डियर आंट लिडिया," इज़ाबेल बुदबुदाई।

"जाकर ईश्वर को धन्यवाद दो कि तुम्हारे कोई बच्चा नहीं है," मिसेज़ टाउशेट अपने को छुड़ाती हुई बोली।

इसके तीन रोज़ बाद कई एक लोग लंदन 'सीज़न' की व्यस्तता के बावजूद सुबह की गाड़ी से बर्कशायर के इस छोटे-से स्टेशन पर आये जिससे एक छोटे-से भूरे गिरिजाघर में आधा घण्टा बिता सकें। गिरिजाघर स्टेशन के पास ही था। उसी की हरियाली से भरी कब्रगाह में मिसेज़ टाउशेट ने अपने बेटे को दफ़नाया था। वे स्वयं कब्र के सिरे पर खड़ी थी। पास में इज़ाबेल खड़ी थी। इस काम में स्वयं सेवसटन उतनी दिलचस्पी नहीं दिखा रहा था जितनी मिसेज़ टाउशेट। अवसर गम्भीर था, फिर भी उसमें उतना रूखापन या भारीपन नहीं था। हर चीज़ सहज-भाव से की जा रही थी। मौसम पहले से बेहतर हो गया था। मई के रंग बदलते दिनों का वह आखिरी दिन था—गरम और बिना तेज हवा के। हवा

में पक्षियों के पर चमक रहे थे। टाउशेट की बात सोचकर दुःख तो होता था पर उतना नहीं, क्योंकि उसकी मृत्यु शान्त ढंग से हुई थी। वह कब से मृत्यु के रास्ते पर था, कब्र के लिए तैयार था। हर चीज़ की पहले से ही उम्मीद थी, और तैयारी कर ली गई थी। इज़ाबेल की आंखों में आंसू थे, पर वे दृष्टि को धुंधलाने वाले आंसू नहीं। वे आंसुओं के बावजूद दिन के सौन्दर्य की, प्रकृति के उल्लास को, पुराने इंग्लिश गिरिजाघर के माधुर्य को, और दोस्ती में के झुके हुए सिरों को देख रही थीं। लार्ड वारबर्टन वहां था और कई अपरिचित लोग थे। उसे बाद में पता चला कि उनमें से बहुत से बैंक के साथ सम्बद्ध थे। कई और परिचित लोग भी थे। इनमें मिस स्टैकपोल थी, जिसके पास ही मिस्टर बैंटलिंग खड़ा था। कैसपर गुडवुड भी था। जिसका सिर कुछ कम झुका होने से आगे से बहुत ऊंचा नज़र आ रहा था। काफी समय इज़ाबेल को लगता रहा कि गुडवुड उसकी तरफ देख रहा है। पहले कभी लोगों के बीच वह इस तरह तीखी नज़र से उसे नहीं देखता था। बाकी लोगों की आंखें गिरिजाघर की घास की तरफ झुकी थीं। इज़ाबेल ने गुड-वुड को यह पता नहीं चलने दिया कि वह उसे देखते देख रही है। वह आश्चर्य के साथ सोच रही थी कि वह आदमी अभी तक इंग्लैण्ड में कैसे हैं। उसके ख्याल में यह निश्चित था कि रैल्फ को गार्डनकोर्ट पहुंचाकर वह वहां से चला जायेगा। वह जानती थी कि इंग्लैण्ड से गुडवुड को कितनी चिढ़ है। पर वह वहीं था, बिल्कुल वहीं था, और उसके चेहरे से लगता था कि उसके वहां होने के पीछे कोई रहस्य-मय इरादा है। गुडवुड की आंखों में सहानुभूति थी, फिर भी वह उससे आंखें नहीं मिला पा रही थी। उसे इसमें उलझन होती थी। भीड़ छंटने पर गुडवुड भी वहां से अदृश्य हो गया। मिसेज़ टाउशेट से बात करने बहुत से लोग रुके, पर उससे बात करने रुकी केवल हैनरीटा स्टैकपोल। हैनरीटा रोकर चुप कर चुकी थी।

रैल्फ ने इज़ाबेल से कहा था कि उसे आशा है वह कुछ दिन गार्डनकोर्ट में रहेगी और उसने वहां से चलने की कोई जल्दी नहीं दिखाई। उसने अपने से कहा कि आंट के पास इस समय रुकना साधारण शिष्टाचार के नाते आवश्यक है। उसे यह काफी अच्छा बहाना मिल गया, नहीं तो बहाना खोजने में बड़ी मुश्किल पड़ती। उसका काम पूरा हो चुका था—वह काम जिसके लिए वह अपने पति को छोड़कर आई थी। परदेस के एक शहर में उसका पति उसकी अनुपस्थिति की एक-एक घड़ी गिन रहा था। ऐसे में वहां रुकने के लिए बहुत ही अच्छा बहाना

चाहिए था। ऑसमण्ड चाहे बहुत अच्छा पति नहीं था, पर उससे स्थिति में कोई अन्तर नहीं आता था। ब्याह एक ऐसा तथ्य था जिसके कुछ अपने ही दायित्व थे—उससे किसी को सुख कितना मिलता है, इस पर वे निर्भर नहीं करते थे। इज़ाबेल अपने पति के विषय में बहुत कम सोचती थी। पर यहां इतनी दूरी पर और उसके प्रभाव से परे रहते हुए, रोम के बारे में सोचकर एक अध्यात्मिक-सी कंपकंपी उसमें भर जाती थी। उस कल्पना में एक ठंडी-सी चुभन थी, जिसके कारण वह गाडर्नकोर्ट के गहरे-से-गहरे सायों में छिप रहना चाहती। आंखें मूंदें, सोचने से बचती हुई, वह बात को आज से कल पर टाले जाती। उसे पता था कि उसे फैसला करना होगा, पर वह कुछ भी फैसला नहीं कर पा रही थी। उसका वहां आना भी तो एक फैसला नहीं था। वह घर से चल दी थी, बस। ऑसमण्ड ने न तब उसे भेजा था और न वह अब उसे बुलायेगा। वह बात को उसी पर छोड़ देगा। पैंजी ने भी उसे कुछ नहीं लिखा था, पर इसका कारण बहुत सीधा था। उसके पिता ने उसे लिखने से मना कर दिया होगा।

मिसेज़ टाउशेट इज़ाबेल का साथ तो स्वीकार किए थीं, पर उसकी कुछ सहायता करने की स्थिति में नहीं थी। वे अपनी ही बात सोचने में लगी थीं—चाहे उत्साह के साथ नहीं, पर बहुत स्पष्टता के साथ—कि इस नयी स्थिति से उन्हें क्या-क्या सुविधायें होगीं। मिसेज़ टाउशेट आशावादी नहीं थीं, पर दुःखदायक घटनाओं में से भी वह अपने हित की बात ढूंढ लेती थीं। वे सोचती थीं कि आखिर यह घटना उन्हीं के साथ नहीं हुई, सब के साथ ऐसी घटनाएं होती हैं। मृत्यु में एक चुभन ज़रूर थी, पर मृत्यु उनके बेटे की हुई थी, उनकी अपनी नहीं। इस बात का उन्हें विश्वास था कि उनकी अपनी मृत्यु से सिवाय उनके और किसी को दुःख नहीं होगा। रैल्फ की अपेक्षा वे ज़्यादा अच्छी स्थिति में थीं क्योंकि रैल्फ जीवन की सारी सुरक्षा और सुविधायें छोड़ कर चला गया था। मिसेज़ टाउशेट के अनुसार मृत्यु में सब से बुरी बात यह थी कि दूसरे लोग मरने वाले का लाभ उठाते थे। वे स्वयं अभी इस दुनिया में मौजूद थीं—इससे अच्छा क्या हो सकता था? जिस शाम रैल्फ को दफ़नाया गया, उसी शाम उन्होंने इज़ाबेल को बता दिया कि रैल्फ अपने पीछे क्या-क्या व्यवस्था कर गया है। वह उन्हें सब कुछ बता गया था और हर बात में उनसे परामर्श लेता रहा था। उनके लिए वह पैसा नहीं छोड़ गया था—उन्हें खैर

पैसे की आवश्यकता भी नहीं थी। उन्हें वह गार्डनेकोर्ट का साज-सामान दे गया था—तसवीरों और किताबों को छोड़कर। वह साल भर वहां रह भी सकती थीं—उसके बाद वह जगह बेच दी जानी थी। जो धन इससे प्राप्त होना था उससे एक धार्मिक अस्पताल खोला जाना था—उन लोगों के लिए जो उसी रोग में ग्रस्त हों, जिससे उसकी मृत्यु हुई थी। इस सब की देख-भाल का काम वह लार्ड वारबर्टन को सौंप गया था। बाकी जायदाद बैंक से निकालकर अलग-अलग हिस्सों में बांट दी जानी थी। कुछ हिस्से वरमोंट में उसके उन कज़िन्स के लिए थे जिन्हें उसके पिता ने भी बहुत कुछ दिया था। इसके अलावा कई छोटे-छोटे उत्तराधिकार-पत्र थे।

"कुछ तो बहुत ही खास तरह के हैं," मिसेज़ टाउशेट बोलीं। "कुछ बड़ी-बड़ी रकमे वह ऐसे लोगों के लिए छोड़ गया है जिनका मैंने कभी नाम तक नहीं सुना। उसने मुझे एक सूची दी थी। मैंने उससे पूछा कि वे कौन लोग हैं तो वह बोला कि ऐसे लोग हैं जो समय-समय पर उसे पसन्द करते रहे हैं। तुम उसे पसन्द करती रही हो, ऐसा उसे नहीं लगा, क्योंकि उसका ख्याल था कि तुम्हें उसके पिता ने ही बहुत कुछ दे दिया है। इस बात से मैं भी सहमत हूं। इसका यह मतलब नहीं कि रैल्फ को इसकी कोई शिकायत थी। तसवीरें इधर-उधर बांट देनी होंगी—एक-एक यादगार के तौर पर। सबसे मूल्यवान् तसवीरें लार्ड वारबर्टन के यहां जाएंगी, और पता है अपनी लाइब्रेरी का उसने क्या किया है? यह एक अच्छा-खासा मज़ाक जान पड़ता है। लाइब्रेरी वह तुम्हारी मित्र मिस स्टैकपोल को दे गया है—उसकी साहित्यिक सेवाओं के उपलक्ष्य में। यह क्या इसलिए कि रोम से वह उसके साथ-साथ आई थी? सच, कितनी बड़ी साहित्य सेवा है यह। उनमें कई अनुपलभ्य और बहुमूल्य पुस्तकें हैं जिन्हें वह ट्रंक में लिए-लिए दुनिया भर में नहीं घूम सकती। इसलिए वह सुझाव दे गया है कि वह उन्हें नीलाम कर दे। वह अब क्रिस्टीज़ में उन्हें बेचकर उस पैसे से अपना अखबार निकाल सकती है। इसे क्या साहित्य-सेवा कहा जाएगा?"

इस प्रश्न का इज़ाबेल ने उत्तर नहीं दिया। उसके आने पर जो छोटी-सी प्रश्नावली उसके सामने रखी गई थी, यह प्रश्न उसके अतिरिक्त था। फिर साहित्य में उसकी रुचि आज पहले से भी कम थी। मिसेज़ टाउशेट ने जिन अनुपलब्ध और बहुमूल्य पुस्तकों का जिक्र किया था, उनमें से कोई एक वह शैल्फ से निकाल लेती

तो उसे पढ़ न पाती—उसका ध्यान पहले कभी इतना बिखरा नहीं रहा था। एक शाम, गिरिजाघर में हुए संस्कार के एक सप्ताह बाद, वह लाइब्रेरी में बैठकर कुछ समय बिताने की कोशिश कर रही थी, पर उसकी आंखें बार-बार हाथ की किताब से हटकर खुली खिड़की की ओर चली जाती, जहां से कि नीचे की लम्बी वीथी नज़र आती थी। वहीं से उसने एक छोटी-सी गाड़ी को दरवाज़े की ओर आते देखा। जिसके कोने में लार्ड वारबर्टन सुविधाजनक स्थिति में बैठा था। औपचारिकता में उस व्यक्ति का बहुत विश्वास था, इसलिए वर्तमान परिस्थिति में उसका मिसेज़ टाउशेट से सहानुभूति प्रकट करने लंदन से वहां आने का कष्ट करना विशेष उल्लेखनीय नहीं था। वह निःसन्देह मिसेज टाउशेट से मिलने आया था, मिसेज़ आसमण्ड से नहीं। इस धारणा की पुष्टि के लिए इज़ाबेल घर से बाहर बाग में घूमने निकल गई। गार्डनकोर्ट आने के बाद से वह घर से बहुत कम बाहर निकली थी—मौसम ऐसा नहीं था कि बाहर मैदान में घूमा जा सके। मगर यह शाम बहुत अच्छी थी, और उसे लगा कि बाहर आकर उसने अच्छा ही किया है। यह दृष्टि-संगत होते हुए भी उसे अधिक सन्तोष नहीं दे सकी। कोई उसे चहलकदमी करते देख लेता, तो उसे लगता कि उसका मन बहुत अस्थिर है। पन्द्रह मिनट बाद घर की ओर नज़र डालने पर उसने पोर्टिको से मिसेज टाउशेट को लार्ड वारबर्टन के साथ आते देखा, तो भी वह शान्त नहीं हुई। निःसन्देह आंट लिडिया ने ही लार्ड वारबर्टन को सुझाव दिया था कि उन्हें बाहर निकलकर उसे देखना चाहिए। इज़ाबेल का इस समय उन लोगों से मिलने को मन नहीं था। उसे मौका मिल जाता, तो वह किसी बड़े से पेड़ के पीछे छिप रहती। पर अब उन लोगों की नज़र उसपर पड़ चुकी थी, इसलिए आगे बढ़ने के सिवा कोई चारा नहीं था। क्योंकि गार्डनकोर्ट का लान बहुत विशाल था, इसलिए इसमें थोड़ा समय लगा। इस बीच इज़ाबेल ने देखा कि मिसेज टाउशेट के साथ चलकर आते हुए लार्ड वारबर्टन की बाहें पीछे को कसी हैं, और उसकी आंखें ज़मीन पर गड़ी हैं। वे दोनों खामोश चल रहे थे, पर सीधे इज़ाबेल की तरफ देखती हुई मिसेज़ टाउशेट की दुबली-सी निगाह में दूर से भी एक खास भाव नजर आ रहा था। वह जैसे नुकीली चुभन के साथ कह रही हो, "यह रहा वह बड़ा और भला-सा संभ्रान्त व्यक्ति जिससे तुम ब्याह कर सकती थीं।" पर लार्ड वारबर्टन की आंखें जब उठीं तो उनका भाव ऐसा नहीं था। उनका भाव था, "यह एक भद्दी-सी स्थिति है, और देखो तुम्हें इस समय

मेरी सहायता करनी होगी।" वह बहुत गम्भीर और संयत था। उससे परिचय होने के बाद से पहली बार लार्ड वारबर्टन ने बिना मुस्कराए उसे अभिवादन किया। अपने दु:ख के दिनों में भी वह सदा मुस्कराहट के साथ ही बातचीत शुरू करता रहा था। वह अपने बारे में बहुत सचेत नज़र आ रहा था।

"लार्ड वारबर्टन ने मुझसे मिलने आने की तकलीफ की है," मिसेज़ टाउशेट बोलीं। "कह रहा था कि उसे अब तक तुम्हारे यहां होने का पता नहीं था। मुझे पता है यह तुम्हारा पुराना मित्र है। मुझे पता चला कि तुम घर में नहीं हो, तो मैं इसे तुमसे मिलाने बाहर ले आई।"

"छः चालीस पर एक बहुत अच्छी गाड़ी मिलती है," लार्ड वारबर्टन ने असम्बद्ध रूप से कहना शुरू किया। "मैंने सोचा कि डिनर के वक्त तक वापस पहुंच जाऊंगा। मुझे खुशी है कि तुम अब तक गई नहीं हो।"

"मैं अब बहुत दिन यहां नहीं रहूंगी," इज़ाबेल ने कुछ व्यग्रता के साथ कहा।

"हां, वह तो है ही। पर कुछ सप्ताह तो रुकोगी। तुमने नहीं सोचा होगा कि—अ—इतनी जल्दी तुम्हें इंग्लैण्ड आना पड़ेगा।"

"हां, बहुत अचानक आना पड़ा।"

मिसेज़ टाउशेट मुंह मोड़कर जैसे जमीन की हालत का जायजा लेने लगीं। ज़मीन जैसी होनी चाहिए थी, वैसी नहीं थी। लार्ड वारबर्टन पल-भर संकोच में रहा। इज़ाबेल को लगा कि उसके पति के सम्बन्ध में कुछ पूछना चाहकर वह जैसे घबराहट में चुप कर गया है। उस व्यक्ति का भाव असाधारण रूप से गम्भीर बना रहा—या तो इसलिए कि उस घर में अभी-अभी एक मत्यु होकर हटी थी या शायद अधिक व्यक्तिगत कारणों से। यदि मुख्यतः व्यक्तिगत कारणों की थी, तो सौभाग्यवश पहले कारण का आवरण उसे प्राप्त था जिसका वह पूरा उपयोग कर सकता था। ये सब बातें इज़ाबेल के मन में घूम गईं—इसलिए नहीं कि लार्ड वारबर्टन का चेहरा उदास था, क्योंकि वह बिल्कुल अलग बात थी—बल्कि इसलिए कि उसके चेहरे पर कोई भाव था ही नहीं।

"मेरी बहनों को पता होता कि तुम यहां हो और वे तुमसे मिल सकेंगी, तो उन्हें साथ आकर बहुत खुशी होती," लार्ड वारबर्टन ने कहा। "लौटने से पहले तुम्हें जरूर उन्हें मिलने का मौका देना चाहिए।"

"मुझे बहुत खुशी होगी। उनका स्नेह सद्भाव मुझे आज तक याद है।"

"क्या एक-दो दिन के लिए तुम लाकले आ सकोगी? तुम्हारा वायदा है, तुम्हें याद होगा," कहते हुए लार्ड वारबर्टन का चेहरा थोड़ा लाल हो गया जिससे वह अधिक परिचित दिखाई देने लगा। "शायद मेरा इस समय यह कहना ठीक नहीं है, क्योंकि इन दिनों तुम लोगों से मिलने-जुलने की बात नहीं सोच रही होगी। पर उस नज़र से आने को मैं कह भी नहीं रहा। व्हिटसनटाइड के अवसर पर मेरी बहनें पांच दिन के लिए लाकले आ रही हैं। तुम ज़्यादा देर इंग्लैण्ड में नहीं रहोगी, इसलिए उन्हीं दिनों तुम भी आ सको, तो मैं और किसी को नहीं बुलाऊंगा।"

इज़ाबेल ने सोचा कि क्या वह अपनी मंगेतर को भी उसकी मां के साथ नहीं बुलाएगा। पर यह विचार उसने व्यक्त नहीं किया। "बहुत-बहुत धन्यवाद," उसने केवल इतना ही कहा। "मुझे व्हिटसनटाइड के विषय में ज़्यादा पता नहीं है।"

"पर तुमने मुझसे वायदा कर रखा है—नहीं? कि फिर कभी वहां आओगी।

इसमें एक प्रश्न था, पर इज़ाबेल ने बात को ऐसे ही निकल जाने दिया। वह पल-भर लार्ड वारबर्टन को देखती रही। देखकर पहले की तरह उसे अफसोस हुआ। "देखना तुम्हारी गाड़ी न छूट जाए?" उसने कहा। फिर बोली, "मैं तुम्हारे लिए हर खुशी की कामना करती हूं।"

लार्ड वारबर्टन पहले से ज़्यादा सुर्ख हो उठा। उसने अपनी घड़ी की तरफ देखा। "हां छः चालीस की गाड़ी है। ज़्यादा वक्त नहीं है। पर मेरी फ्लाई दरवाजे पर खड़ी है। बहुत-बहुत धन्यवाद।" यह स्पष्ट नहीं था कि वह धन्यवाद गाड़ी की याद दिलाने के लिए दे रहा था या दूसरी भावुकतापूर्ण बात के लिए। "गुडबाई मिसेज़ आसमण्ड, गुडबाई," कहकर इज़ाबेल से हाथ मिलाया पर आंखें नहीं मिला सका। फिर वह मिसेज़ टाउशेट की ओर मुड़ गया जो घूमती हुई उनके पास लौट आई थीं।

उनसे भी उसने संक्षेप में विदा ली। पल-भर बाद दोनों महिलाएं उसे लम्बे-लम्बे डग भरकर लान से जाते देख रही थी।

"आपको पक्का पता है इसका ब्याह होने वाला है?" इज़ाबेल ने अपनी आंट से पूछा।

"मुझसे ज्यादा पता तो उसे खुद होना चाहिए, और मुझे लगता है कि वह इस सम्बन्ध में बिल्कुल निश्चित है। मैंने उसे बधाई दी, तो उसने स्वीकार कर ली।"

"ओह !" इज़ाबेल बोली। "मेरी समझ के बाहर की बात है।" उसकी आंट घर के उन कामों को निबटाने के लिए लौट गईं, जिन्हें वे बीच में ही छोड़ आई थीं।

यह कहकर भी कि बात उसकी समझ से बाहर की है, इज़ाबेल बड़े-बड़े ओक वृक्षों के नीचे—जिनके लम्बे साये कई एकड़ में फैली घास पर पड़ रहे थे—टहलती हुई उस विषय में सोचती रही। कुछ क्षण बाद वह एक खुरदुरी बेंच के पास पहुंच गई। पल-भर देखने के बाद उसने उस बैंच को पहचान लिया। इतना ही नहीं कि वह बेंच उसकी देखी हुई थी, या कि वह पहले उस पर बैठ चुकी थी, बल्कि वह ऐसे स्थान पर थी जहां एक महत्त्वपूर्ण घटना हुई थी। इसीसे वह स्थान उसे परिचित लग रहा था। उसे याद आया कि छः साल पहले वह वहीं बैठी थी, जब घर के अन्दर से एक नौकर ने उसे कैस्पर गुडवुड की वह चिट्ठी लाकर दी थी जिसमें उसने लिखा था कि वह उसके पीछे-पीछे यूरोप चला आया है। उस चिट्ठी को पढ़कर उसने आंखें उठाई थीं, तो लार्ड वारबर्टन को विवाह का प्रस्ताव करने के लिए अपने सामने खड़े पाया था। यह बेंच काफी दिलचस्प और ऐतिहासिक महत्त्व की थी। इस समय वह इस तरह खड़ी उसे देखती रही जैसे कि बेंच को उससे कुछ कहना हो। वह उस बेंच पर बैठी नहीं—उसे उससे डर लग रहा था। वह केवल उसके पास खड़ी रही, और वहां खड़े-खड़े अतीत एक ऐसे भावना-प्रवाह के रूप में उसके सामने उमड़ आया, जैसा कि कुछ विशेष अवसरों पर संवेदनशील व्यक्तियों पर घिर आता है। इस उत्तेजना का प्रभाव सहसा एक थकान की अनुभूति के रूप में हुआ। इसके अपने संकोच पर वश पाकर वह उस खुरदुरी बेंच पर बैठ गई। मैं कह चुका हूं कि वह अस्थिर थी और अपने को बहुत संभाल नहीं पा रही थी। यदि कोई उस समय उसे वहां देखता तो उसकी अस्थिरता का आभास चाहे उस व्यक्ति को न भी मिलता, पर वह उस समय उसे निष्क्रियता की एक मूर्ति के रूप में अवश्य देखता। उसके लहजे में एक विचित्र उद्देश्य-हीनता थी। दोनों ओर लटकते उसके हाथ, उसकी काली पोशाक की तहों में खोये थे। उसकी आंखें अस्पष्ट-भाव से सामने देख रही थीं। घर के

अन्दंर से उसे किसी चीज़ के लिए बुलावा आने की सम्भावना नहीं थी। अपने एकान्त में दोनों महिलाएं खाना जल्दी खा लेती थीं और चाय जिस किसी भी समय पी लिया करती थीं। उसे स्वयं पता नहीं चला की वह कितनी देर वहां बैठी रही। पर सांझ गहराने के समय उसे आभास हुआ कि वह वहां अकेली नहीं है। उसने जल्दी से अपने को सीधा किया और इधर-उधर नज़र डाली। तब उसे पता चला कि उसका एकान्त एकान्त नहीं है—वह उसे कैस्पर गुडवुड के साथ बांट रही है। गुडवुड कुछ गज़ दूर खड़ा उसकी ओर देख रहा था। गदरी घास पर उसके पास आते कदमों की आहट सुनाई नहीं दी थी। इज़ाबेल को ध्यान आया कि पिछले अवसर इसी तरह लार्ड वारबर्टन ने उसे चौंकाया था।

वह तुरन्त उठ खड़ी हुई और गुडवुड उसकी नज़र पड़ते ही आगे बढ़ आया। वह मुश्किल से अभी खड़ी हुई ही थी कि अचानक गुडवुड ने एक झटके से—हालांकि उसका भाव झटका देने का न होकर न जाने कैसा था—उसे कलाई से पकड़कर फिर वहीं बिठा दिया। इज़ाबेल ने आंखें मूंद लीं। उसे इससे चोट महसूस नहीं हुई। वह स्पर्श केवल एक आदेश था जिसका कि उसने पालन किया था। पर इसमें कुछ ऐसा था जिससे वह बचना चाहती थी। उस दिन गिरजाघर में गुडवुड जिस नज़र से उसे देख रहा था, इस समय वह उससे भी कड़ी नजर से देख रहा था। पहले पल-भर गुडवुड ने कुछ नहीं कहा। इज़ाबेल ने केवल बेंच पर उसके पास आ बैठने का दवाब महसूस किया। अब वह उसकी ओर मुड़ा, तो इज़ाबेल को लगा की शायद पहले कभी कोई उसके इतना नज़दीक नहीं बैठा। इसमें एक क्षण से अधिक समय नहीं लगा। फिर इज़ाबेल ने कलाई छुड़ाकर अपनी आखें गुडवुड के चेहरे पर टिका दीं। "तुमने मुझे डरा दिया हैं," वह बोली।

"मेरा यह मकसद नहीं था," गुडवुड ने कहा। "पर थोड़ा डर भी गई हो, तो कोई बात नहीं। मैं थोड़ी देर पहले रेलगाड़ी से लंदन से आया हूं। पर सीधा यहां नहीं आ सका। स्टेशन पर एक आदमी मुझसे आगे-आगे था। वहां जो फ्लाई खड़ी थी, उसमें बैठकर उसने ड्राइवर को यहां आने का आदेश दिया। मैं तुमसे अकेले में मिलना चाहता था, इसलिए वक्त काटने के लिए मैं इधर-उधर टहलता रहा। चारों तरफ घूमकर मैं इस घर की तरफ आ रहा था जब मैंने तुम्हें यहां देखा। एक रखवाला था या जाने कौन था जो मुझे मिला। पर उसने कुछ नहीं

कहा। वह मुझे तबसे जानता था जब मैं तुम्हारे कजिन के साथ यहां आया था। जो आदमी मुझसे पहले आया था, वह जा चुका है न ? तुम अब बिल्कुल अकेली हो न ? मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।" गुडवुड जल्दी-जल्दी बात कर रहा था। वह इस समय भी उसी तरह उत्तेजित था जैसे रोम में उससे विदा लेने के समय। इज़ाबेल को आशा थी कि वह उफान बैठ जाएगा, पर वह यह देखकर संकुचित हो उठी कि वह गुडवुड पहले से ज़्यादा अस्थिर हो गया है। उसके सामने उसे वैसी अनुभूति पहले कभी नहीं हुई थी, जैसी अब हुई। उसे एक खतरे का अहसास हुआ। गुडवुड सचमुच कोई खतरनाक निश्चय करके आया लगता था। इज़ाबेल सीधी नज़र से सामने देखती रही और गुडवुड अपने दोनों घुटनों पर एक-एक हाथ रखे, थोड़ा झुककर गहरी नज़र से उसे ताकता रहा। आस-पास सांझ गहराती जा रही थी। "मुझे तुमसे कुछ बात करनी है," गुडवुड ने फिर कहा। "मैं एक खास बात करने आया हूं। मैं तुम्हें कष्ट देना नहीं चाहता, जैसे उस दिन मैंने रोम में दिया था। उसका कुछ लाभ नहीं हुआ, क्योंकि तुम दुःखी हो गई थीं। पर यह जानते हुए भी कि मैं गलत बात कर रहा हूं, मेरा अपने पर वस नहीं था। अब मैं गलत बात नहीं कर रहा। तुम भी इसे गलत मत समझना।" उसका गहरा और कठिन स्वर पल-भर में याचना में बदल गया। "मैं आज एक विशेष उद्देश्य से आया हूं। यह बिल्कुल दूसरी बात है। तब मेरा तुमसे बात करना निरर्थक था। पर आज मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूं।"

जाने डर की वजह से या इसलिए कि अंधेरे में सुनाई देता ऐसा स्वर उस समय उसे एक वरदान-सा लग रहा था, इज़ाबेल इस तरह उस आदमी की बात सुनती रही जैसे कि पहले उसने कभी नहीं सुनी थी। गुडवुड के शब्द उसकी आत्मा की गहराई में उतर रहे थे। इससे उसके पूरे अस्तित्व में एक स्तब्धता-सी आ गई थी। पल-भर बाद चेष्टा करके वह उत्तर में बोली, "तुम कैसे मेरी सहायता कर सकते हो ?" उसका स्वर धीमा था, जैसे कि वह गुडवुड की बात को काफी गम्भीर समझकर विश्वास के भाव से पूछ रही हो।

"तुम्हें इसके लिए तैयार करके कि तुम मुझ पर विश्वास कर सको। मुझे अब पता है—आज मुझे सब पता है। तुम्हें याद है मैंने रोम में तुमसे क्या पूछा था ? तब मुझे कुछ पता नहीं था, पर आज मैं एक विश्वसनीय स्रोत से सब कुछ

बहुत स्पष्ट जान चुका हूं। तुमने मुझे अपने कज़िन के साथ भेजकर बहुत अच्छा किया। वह बहुत अच्छा, बहुत बढ़िया, और बहुत नेक आदमी था। उसीने मुझे बताया था कि तुम किस स्थिति में हो। उसे मेरी भावना का अनुमान था। इसलिए उसने सब कुछ मुझे बता दिया। वह तुम्हारे परिवार का आदमी था। जब तक तुम इंग्लैण्ड में हो, तब तक के लिए वह तुम्हें मेरी देख-रेख में छोड़ गया है।" फिर एक बड़ी बात कहने की तरह वह बोला, "तुम्हें पता है आखिरी बार मैं उससे मिला, तो उसने—वहां पड़े-पड़े जहां उसकी मृत्यु हुई है—मुझसे क्या कहा था? कहा था, उसके लिये तुम सब कुछ करना—वह सब कुछ जो वह तुम्हें करने दे।"

इज़ाबेल एकाएक उठ खड़ी हुई। "तुम लोगों को मेरे बारे में बात करने का कोई हक नहीं था।"

"क्यों?—हमें इस तरह की बात करने का हक क्यों नहीं था?" गुडवुड ने भी साथ उठते हुए पूछा। "वह मर रहा था और मरते आदमी की स्थिति बिल्कुल अलग होती है।" इज़ाबेल अपने को वहां से जाने से रोके रही। वह हमेशा से ज़्यादा ध्यान से बात सुन रही थी। सच, वह आदमी पिछली बार की तरह बात नहीं कर रहा था। पिछली बार उसमें निरर्थक निरुद्देश्य आवेश था। पर इस बार उसके मन में एक विचार था जिसे वह अपनी पूरी चेतना से सूंघ पा रही थी। "पर उस बात को जाने दो," गुडवुड उसके कपड़े के छोर को हाथ से छूकर और भी व्यग्रता के साथ बोला। "टाउशेट मुझे कुछ न बताता, तो भी मुझे सब पता चल जाता। अपने कज़िन के जनाज़े के दिन तुम जैसी नज़र आ रही थीं, उसीसे तुम्हारी वास्तविक स्थिति का पता चल सकता था। अब तुम मुझे और धोखा नहीं दे सकतीं। मैं तुम्हारे साथ जितना ईमानदार हूं, तुम्हें भी मेरे साथ उतनी ही ईमानदारी बरतनी चाहिए। तुम बहुत दुःखी स्त्री हो और तुम्हारा पति बहुत भयानक शैतान है।"

इज़ाबेल ने इस तरह उसकी तरफ देखा जैसे उसने उसके मुंह पर चपत मार दी हो। "तुम पागल हो क्या?" वह बोली।

"मैं इतना होश में कभी नहीं रहा। मुझे सब नज़र आ रहा है। तुम्हें उसकी वकालत करने की ज़रूरत नहीं है। पर मैं अब उसके खिलाफ़ एक शब्द भी नहीं कहूंगा। सिर्फ तुम्हारे बारे में बात करूंगा," गुडवुड ने जल्दी से कहा।

"तुम यह दिखावा कैसे कर सकती हो कि तुम्हें कुछ नहीं हुआ है ? तुम्हें यह समझ नहीं आ रहा कि तुम्हें क्या करना चाहिए, कहां जाना चाहिए ? अब अभिनय करने का समय नहीं है। क्या तुम रोम में सदा के लिये सब कुछ नहीं छोड़ आई थीं ? टाउशेट को पता था और तुझे भी पता था कि वहां से आने की तुम्हें क्या कीमत अदा करनी पड़ेगी। क्या इसकी कीमत के तौर पर तुमने अपनी जिन्दगी कुरबान नहीं की ? कहो की है...," कहते हुए वह सहसा गुस्से से भर गया। तुम एक तो सच्चा शब्द मुंह से बोलो । जब मुझे उस भयंकर स्थिति का पता है, तो मैं तुम्हें बचाने से अपने को परे क्यों रखूं ? मैं दूर खड़ा तुम्हें अपने किये का फल भोगने दूं, तो तुम मेरे बारे में क्या सोचोगी ? टाउशेट ने मुझसे कहा था, 'बेचारी को जाने कितनी बड़ी कीमत इसकी चुकानी होगी।' वह तुम्हारा इतना निकट सम्बन्धी था, मैं उसकी कही बात तुम्हें नहीं बता सकता ?' गुडवुड फिर अपनी संजीदगी पर लौट आया। "किसी और के मुंह से सुनने से पहले मैं अपनी जान दे देता, पर टाउशेट की बात दूसरी थी । उसे यह सब कहने का हक था। उसने यह सब घर पहुंचने के बाद कहा—जबकि उसे पता था और मुझे भी पता था कि उसकी मृत्यु निश्चित है। मैं पूरी स्थिति को समझता हूं। तुम्हें वापस जाते डर लगता है। तुम बिलकुल अकेली हो । तुम्हें पता नहीं है कि तुम्हें कौन-सा रास्ता अपनाना चाहिए ? यह तुम अच्छी तरह जानती हो कि तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं है। इसीलिए मैं चाहता हूं कि तुम आज मेरे बारे में सोचो।"

"तुम्हारे बारे में ?" इजाबेल ने झुटपुटे में उसके सामने खड़े-खड़े पूछा। जिस विचार की पल-भर पहले उसे झलक-सी दिखाई दी थी, वह अब एक ठोस और भयावह रूप ग्रहण कर रहा था। सिर थोड़ा पीछे को करके वह इस तरह देखती रही, जैसे उसे आकाश में धूमकेतु नजर आ रहा हो।

"तुम्हें दिशा नहीं मिल रही, इसलिए सीधे मेरी ओर चली आओ। मैं चाहता हूं कि तुम मुझपर विश्वास करो," गुडवुड ने दोहराकर कहा, और आंखों में एक चमक लिए पल-भर रुका रहा। "तुम्हारा वापस जाना—उस डरावनी ज़िन्दगी को फिर से भोगना—किसलिए ज़रूरी है ?"

"इसलिए कि मैं तुमसे दूर रह सकूं," इज़ाबेल बोली। पर यह उसकी मन की बात का केवल एक अंश था। शेष यह था कि पहले उससे कभी किसी ने प्यार

नहीं किया था। उसे इसका विश्वास था, पर यह स्थिति भिन्न थी। यह, जैसे रेगिस्तान में उठती गर्म हवा थी, जिसके सामने बाग की खुशबूदार हवाएं मर-मिट जाती हैं। यह उसे घेरकर उसके पैरों को उखाड़े दे रही थी। इसके मांसल, कठोर, और विचित्र स्पर्श से उसके भिंचे हुए दांत खुल गए थे।

पहले उसे लगा कि उसका उत्तर सुनकर गुडवुड और अधिक आवेश से बात करने लगेगा, पर पल-भर बाद ही वह बिल्कुल शांत हो गया। वह प्रमाणित करना चाहता था कि वह बिल्कुल होश में है, और सब कुछ सोचकर आया है। "मैं तुम्हें उस जिन्दगी से बचाना चाहता हूं, और तुम एक बार मेरी बात सुन लो, तो बचा भी सकता हूं। तुम अपने साथ बहुत अन्याय करोगी, अगर तुम वापस उस दुःख में—खुले मुंह उस जहरीली हवा में सांस लेने के लिए लौट जाओ। पागलपन इस वक्त तुम पर छाया है। तुम मुझपर उसी तरह विश्वास करो जैसे कि सचमुच तुम्हारी जिम्मेदारी मेरे ऊपर हो। खुशी जब हमारे हाथ में है, इतनी आसानी से हमें मिल सकती है, तो हम उससे भागें क्यों ? मैं हमेशा, हमेशा-हमेशा के लिए तुम्हारा हूं। यह मैं एक चट्टान की तरह तुम्हारे सामने खड़ा हूं। तुम्हें चिन्ता किस बात की है ? तुम्हारे कोई बच्चा नहीं है—वह एक बाधा हो सकती थी। अब तुम्हें ऐसा कोई ख्याल नहीं है। जिन्दगी में जो कुछ बचा सकती हो, उसे तुम्हें बचा लेना चाहिए। एक अंश खो दिया है, इसीलिए सब कुछ खो देने का कोई अर्थ नहीं। यह सोचना भी तुम्हारे लिए अपमानजनक है कि तुम्हें ऊपरी दिखावे का, या दुनिया क्या कहेगी, इस बात का, ख्याल है। दुनिया की मूर्खता का तो कोई अन्त ही नहीं है। हमें उससे कोई मतलब नहीं है, कोई सरो-कार नहीं है। स्थितियां जैसी हैं, हमारे सामने हैं। वहां से चली आकर तुम एक बड़ा कदम उठा चुकी हो—इसके बाद सब कुछ स्वाभाविक है। मैं यहां खड़ा कसम खाकर कह सकता हूं कि जिस स्त्री पर जान-बूझकर इतना दुःख लाद दिया गया हो, उसके लिए कुछ भी करना, यहां तक कि सड़कों की आवारा जिन्दगी बिताना, भी जायज है। तुम्हारे दुःख का मुझे पता है, और इसीलिए मैं इस समय यहां हूं। हम जैसा चाहें कर सकते हैं—दुनिया में किसीसे हमें कोई मतलब नहीं है। इस तरह के प्रश्न में क्या है जो हमें रोक सकता है, या जिसे इसमें अड़चन डालने का ज़रा भी अधिकार है ? यह हमारे बीच की बात है, और इतने से ही यह तय हो जाती है। क्या हम पीड़ा में घुलने या डरकर रहने के लिए पैदा हुए हैं ? तुम मुझे

कभी डरने वाली नहीं लगी। तुम मुझ पर विश्वास करो, तो तुम्हें निराशा नहीं होगी। सारी दुनिया हमारे सामने है—और यह दुनिया बहुत बड़ी है। इस बारे में मुझे थोड़ी-बहुत जानकारी है।"

इज़ाबेल हल्के-से बुदबुदाई, जैसे कोई प्राणी पीड़ा से कराह रहा हो। कोई चीज थी जो गुडवुड जैसे उसे लगातार चुभो रहा था। "दुनिया बहुत छोटी है," उसने अनायास कह दिया। वह दिखाना चाहती थी कि वह कसकर उसकी बात का विरोध करती है। उसने अनायास यह कह दिया, क्योंकि वह अपने को बोलते सुनना चाहती थी, पर उसका मतलब यह नहीं था। वास्तव में दुनिया उसे इतनी बड़ी पहले कभी नहीं लगी थी। अब तो जैसे अपने बांध तोड़कर एक विशाल सागर की तरह दुनिया उसके चारों ओर फैल गई थी, और वह उसके अतल पानी में बह रही थी। उसे सहायता चाहिए थी, और सहायता एक तेज़ लहर के रूप में उसके पास आ पहुंची थी। पता नहीं गुडवुड की हर बात पर उसे विश्वास था या नहीं, पर उसे इतना जरूर लग रहा था कि गुडवुड की बांहों में घिर जाना उसके लिए तत्काल मृत्यु से कुछ ही कम सुखकर होगा। क्षण-भर वह इस आस्था के उल्लास में नीचे-नीचे डूबती गई। उसने अपने पैरों को हल्के-से झटककर अपने को संभालने और अपने नीचे एक आधार महसूस करने का प्रयत्न किया।

"जिस तरह मैं तुम्हारा हूं, उसी तरह तुम भी मेरी बन जाओ," उसने गुडवुड को कहते सुना। गुडवुड ने एकाएक तर्क करना छोड़ दिया था' और उसकी तीखी-चुभती आवाज़ अस्पष्ट ध्वनियों के गुंझल में से आती प्रतीत हो रही थी।

दार्शनिक भाषा में यह एक आत्मपरक स्थिति थी। वह गुंझल, वह समुद्र-गर्जन, सब कुछ उसके अपने चकराते सिर के अन्दर ही था। पल-भर में उसे इसकी चेतना हो आई। "मुझपर सबसे बड़ी कृपा तुम यह कर सकते हो, वह हांफती हुई बोली, "कि यहां से चले जाओ।"

"ऐसा मत कहो। मेरे प्राण मत लो," गुडवुड बोला।

इज़ाबेल ने दोनों हाथ उलझा लिए। उसकी आंखें डबडबा आई थीं। "तुम मुझसे प्यार करते हो, मुझ पर दया करना चाहते हो, तो मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो।"

झुटपुटे में गुडवुड पल-भर उसे ताकता रहा। अगले क्षण इज़ाबेल ने अपने को उसकी बांहों में और उसके होंठों को अपने होंठों पर दबते पाया। यह चुम्बन

विद्युत् के प्रकाश जैसा था, जो कि जैसे दूर तक फैलकर स्थिर हो गया था। यह असाधारण बात थी कि उसे ग्रहण करने में उसे लगा कि गुडवुड के कठोर पुरुषत्व की वे सब बातें जो उसे अच्छी नहीं लगती थी—उसके चेहरे का हर कठोर भाव, उसकी आकृति, उसकी उपस्थिति, सब कुछ—जैसे इस तरह उस पर अधिकार पाकर सार्थक और गम्भीर रूप से एकाकार हो गया था। उसने सुन रखा था कि पानी की तह में नीचे-नीचे जाते हुए कुछ ऐसे ही बिम्ब एक डूबने वाले व्यक्ति के मन में उभरते हैं। पर जब अंधेरा लौटा, तो वह मुक्त हो चुकी थी। उसने आस-पास देखा, और एकाएक वहां से चल दी। घर की खिड़कियों से आती रोशनियां लॉन में दूर-दूर तक फैली थीं। बहुत ही थोड़े समय में—क्योंकि रास्ता काफी था—अंधेरे से होकर (क्योंकि उसे नजर कुछ नहीं आ रहा था) वह घर के दरवाज़े तक पहुंच गई। वहां पहुंचकर ही वह रुकी। उसने आसपास देखा। कुछ सुनने की कोशिश की, और फिर हाथ कुंडे पर रख दिया। उसे अब तक अपनी दिशा का पता नहीं था, पर अब पता चल गया था। रास्ता बिल्कुल सीधा था।

दो दिन बाद गुडवुड ने विम्पोल स्ट्रीट के उस घर का दरवाज़ा खटखटाया जिसमें हेनरीटा स्टैकपोल ने जगह ले रखी थी। उसने कुंडे से हाथ हटाया ही था कि दरवाज़ा खुल गया और मिस स्टैकपोल उसे सामने खड़ी नज़र आई। वह हैट और जाकिट पहने थी। वह बस बाहर निकल ही रही थी। "गुड मॉर्निंग," गुडवुड ने कहा। "मैं इस ख्याल से आया था कि शायद मिसेज़ ऑसमण्ड यहां मिल जाए।"

हेनरीटा ने पल-भर उसे प्रतीक्षा में रखा। उस खामोशी में भी उसका चेहरा काफी भावपूर्ण था। फिर वह बोली, "तुम्हें कैसे लगा कि वह यहां होगी?"

"मैं आज सुबह गार्डनकोर्ट गया था। मुझे वहां नौकर ने बताया कि वह लंदन आई है। उस आदमी का ख्याल था कि उसे यहां तुम्हारे पास आना था।"

चेहरे पर बहुत कोमल भाव लिए मिस स्टैकपोल ने उसे फिर पल-भर दुविधा में रखा। "वह कल यहां आई थी, और रात-भर यहां रही। पर, सुबह वह रोम के लिए रवाना हो गई है।"

कैस्पर गुडवुड उसकी ओर नहीं देख रहा था—उसकी आंखें दहलीज़ पर टिकी थीं। "रवाना हो गई है?" वह हकलाया, और बिना ऊपर देखे या बात पूरी किए, कुछ कठिन होकर इधर-उधर देखने लगा। पर वह अपनी जगह से

हिल नहीं सका।

हेनरीटा ने बाहर निकलकर दरवाज़ा बन्द कर दिया था। अब उसने हाथ बढ़ाकर गुडवुड की बांह थाम ली। "देखो मिस्टर गुडवुड," उसने कहा, "अभी तुम थोड़ा इन्तज़ार करो।"

इस पर गुडवुड ने आंखें उठाकर उसकी ओर देखा। पर उसके चेहरे का भाव देखकर उसे वितृष्णा हुई। उसे लगा कि हेनरीटा का मतलब सिर्फ इतना ही है कि अभी तो वह युवा है।

हेनरीटा इसमें एक छिछले सुख का अनुभव करती उसे चमकती आंखों से देखती रही। गुडवुड की उम्र में खड़े-खड़े जैसे तीस साल और जुड़ गए। फिर हेनरीटा इस भाव से उसके साथ चलने लगी जैसे अब धैर्य की कुंजी उसने उस आदमी को पकड़ा दी हो।

० ० ०